जिन्होंने ऐसे परमोदार महात्माको निवास कराय निजव्ययसे लोकाहितार्थ उक्त ग्रन्थ मुद्रित कराय प्रसिद्ध किया; ऐसे परोपकारोद्यत श्रीरावत नाहरसिंहजीको शतशः धन्यवाद देते हैं, दीर्घाऽऽयु; जगदीश्वर देवें ॥ श्लोक ॥ श्रीमज्जानकीदासेन कृत्वा रामरसायनम् ॥ भूयात्तच्छ्रेयसे नृणां राघवाय समर्पितम् ॥ १ ॥ उर्वीमंडलमंडिते धनवतां प्रज्ञावतां सौख्यदे कानोडे पृथुमदिरे सुनगरे दंडयान् पुनर्दंडयन् ॥ नित्यं च प्रतिपालयन् विनयिनः पाखंडिनः खंडयन्नस्ति श्रीनृपनाहरसिंहसुमतिः सत्पण्डितान् मंडयन् ॥ २ ॥ कवित्त ॥ रामचन्द्र वारि ऋतुराज नित पूर चहैं सातसुख लीन्हे मत वेदित अनन्दके ॥ गुरु वेद पितु मातु आज्ञा अनुकूल रहैं सुजन कुटुंबी प्रजा मोदरस कंदके ॥ लक्ष्मणसो भ्राता लक्ष सत्यको सुरक्षन है शांति स्वरूप स्वच्छ अच्छ मनुचंदके ॥ अवध नरेशवारि विभूति विचारि आजु रसिकविहारी सारी नाहरनरेन्द्रके ॥ ३ ॥

इति ॥

आपका कृपापात्र–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालय–मुंबई.

इसके आगे श्रीमहाराजजीकी संस्कृतप्रशस्तिपत्रिका है,

अवश्य देखने योग्यहै.–



॥ श्रीः ॥

प्रशस्तिपत्रम् ।

पृथ्वीमण्डलमण्डनायितमहापाण्डित्यवन्मण्डितोनानादेशविदेशवासिविबुधप्रत्यक्षकल्पद्रुमः ।
धैर्यौदार्यपुरोवीर्यशौर्यमुकलाशौटीर्यशाली सदाश्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽवतान्मेदिनीम् ॥ १ ॥
धन्यं गोत्रमिदं हि भूमिवलये श्रीबैजवापायनं धन्यं तत्कनकं पुरं च विमलः शीशोदवंशः कृती ।
यत्र श्रीमदुमेदसिंहधरणीनाथात्मजो राजते श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽधिराजश्रिया ॥ २ ॥
विद्याबुद्धिविवेकनीतिनिपुणःसद्धर्मविश्रमवान्गोविप्रप्रियसर्वकार्यकरणे दक्षः सभेयप्रियः ॥
श्रीमन्नाहरसिंहरावलमहाराजानुजो भाग्यवाञ्श्रीमल्लक्ष्मणसिंहाजिद्विजयतां सौभाग्यसंपत्तिभिः ॥
श्रीमंतास्त्विह मुंबयां गुरुपदाऽऽपातात्तदास्वान्स्वादागम्यातिसुशोभितं मम महाभाग्येन मुद्रालयम् ।
दृष्ट्वं सर्वमिह कृत्यभवनं सभापिताः शास्त्रिणो मन्ये धन्यमिदं शुभागमवशाच्छ्रीवेङ्कटेशालयम् ॥
श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽत्र विप्राश्च ह्रणाः सन्मान्या अतिमानिता इति यशो लोकत्रयं व्याश्नुते ।
तच्चैतादृशसाधुवर्यरचितग्रंथप्रकाशाज्ञया सत्यं स्वानुभवप्रसिद्धमिति तान्धन्यांश्च मन्यामहे ॥ ५ ॥
श्रीजानकीप्रसादेन कविना रचितं शुभम् । सर्वार्थसाधनपरं श्रीमद्रामरसायनम् ॥ ६ ॥
अस्य प्रकाशनं कर्तुं सर्वोपकरणक्षमः । प्रेषयन्मुद्रणागारे श्रीमन्नाहरसिंहाजित् ॥ ७ ॥
तन्मया सुंदरैर्वर्णैः पुष्टचिक्कणपत्रके । स्वकीये "श्रीवेंकटेश" मुद्रायंत्रे सुमुद्रितम् ॥ ८ ॥
एतद्ग्रंथप्रकाशेन मोदतां सज्जनाः सदा । महाराजयशश्चापि त्रैलोक्यं पूरयत्वलम् ॥ ९ ॥
श्रीकृष्णदासतनयः खेमराजाभिधेयवान् । विद्वद्गुणगणप्रेमी समाशास्ते प्रशस्तिकाम् ॥ १० ॥

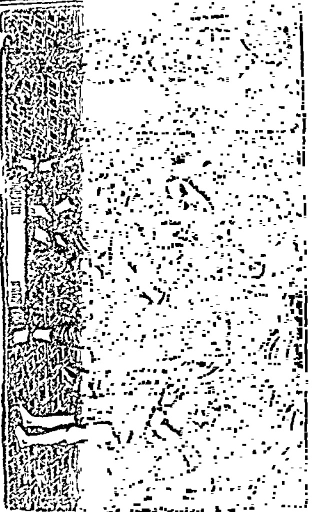
महाराजविजयाभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना.

मुंबई.

❁ श्रीरामपञ्चायतन. ❁



❁ बालकाण्डम् १. ❁

दोहा—राम चरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥



चौपाई—मनकामना सिद्धि नरपावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥

❋ श्रीरामपञ्चायतन. ❋



❋ बालकाण्डम् १. ❋

दोहा—राम चरन रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥



चौपाई—मनकामना सिद्धि नर पावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥

श्रीरामपंचायतन



अयोध्याकाण्डम्

दोहा—मुनि दुर्लभ हरि भक्तिनर, पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिश्वास ॥



चौ०—जे असि कथा पाय परि हरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड कामधेनु गृहत्यागी । खोजत आक फिरहिं पयलागी ॥

❀ आरण्यकाण्डम् ❀

दोहा–सो कुल धन्य उमा सुन, जगतपूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत ॥



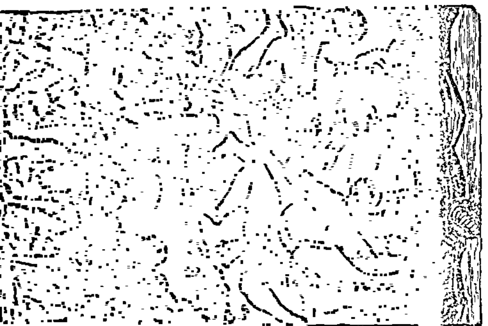
चौ०–एहि कलि काल न साधन दूजा। योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। सन्तत सुनिय राम गुण ग्रामहिं ॥

❀ श्रीरामपंचायतन ❀



❀ किष्किन्धाकाण्डम् ४ ❀

दोहा–वा . म रे वरु होइ घृत, सिकतात वरु तल ॥
विन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥



चौ०–संशृत रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाँव देइ यहि मारग सोई ॥

 श्रीरामपञ्चायतन. 

दोहा—यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जानै ते रघुपति कृपा, स्वप्नहु दुःख न होइ ॥

सुन्दरकाण्ड ५.



चौ०—तृषा जाइ वरु मृगजल पाना । वरु जामहिं शश शीश वृषाना ॥
अन्धकार वरु रविहि नशावै । रामविमुख सुख जीव न पावै ॥

❁ श्रीरामपंचायतन ❁

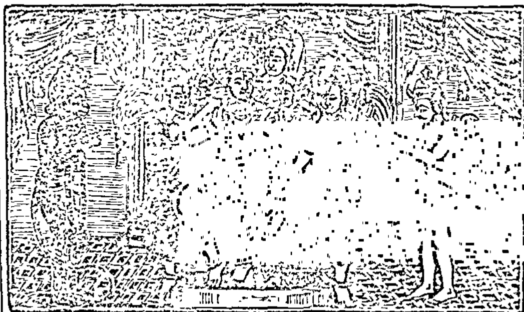
❁ किष्किन्धाकाण्डम् ४ ❁



दोहा—वारि मथे वरु होइ घृत, सिकताते वरु तेल ॥
विन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥

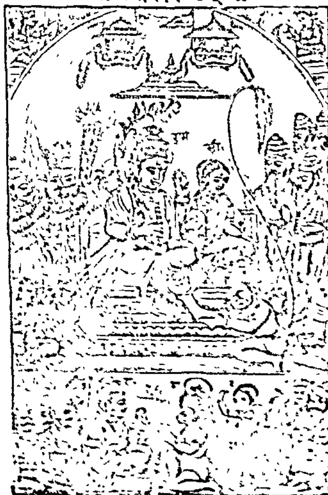
नजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
था जाहि पर होई । पाँव देइ यहि मारग सोई ॥

❀ श्रीरामपंचायतन ❀



❀ उत्तरकाण्डम् ❀

दो०—जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख सम्पति नाना बिधि पावहिं ॥
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥



सोरठा—बार बार बर मांगौं, हरषि देहु श्रीरंग ॥
पद सरोज अन पायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥

❀ श्रीरामपञ्चायतन. ❀

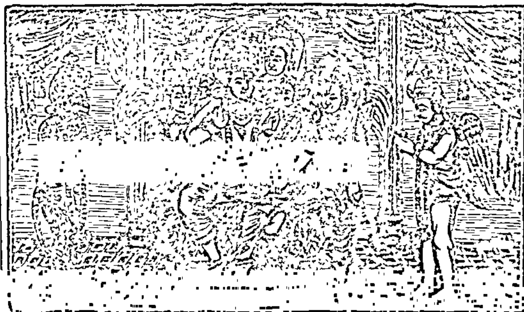
❀ लङ्काकाण्डम् ६. ❀

दोहा—समर विजय रघुवीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान ॥



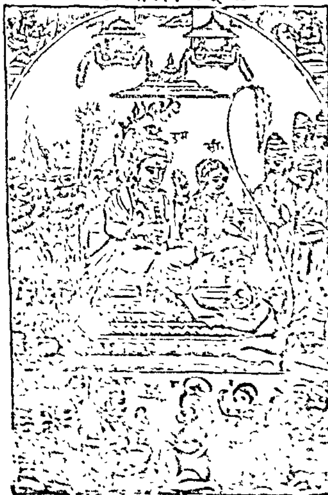
चौ०—भवभंजन गंजन संदेहा । जनरँजन सज्जन प्रिय येहा ॥
रामउपासक जे जगमाहीं । इह सम प्रिय तिन कहँ कछुनाहीं ॥

❀ श्रीरामपंचायतन ❀



❀ उत्तरकाण्डम् ❀

चौ०—जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख सम्पति नाना बिधि पावहिं॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं। अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं॥



दोहा—बार बार बर माँगौं, हरषि देहु श्रीरंग॥
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥

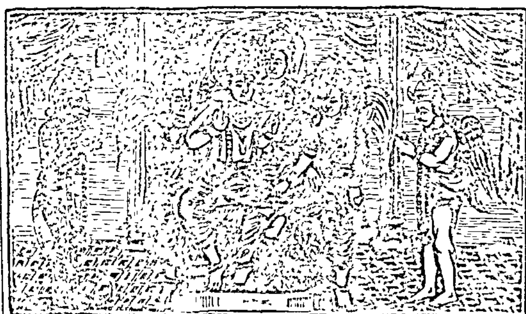
❀ श्रीरामपञ्चायतन. ❀

❀ लङ्काकाण्डम् ६. ❀

दोहा—[illegible] ॥
[illegible] ॥

चौ०—[illegible] ॥
रामउपासक जे जगमाहीं । इह सम प्रिय तिन कहँ कछुनाहीं ॥

❀ श्रीरामपंचायतन ❀



❀ उत्तरकाण्डम् ❀

चौ०—जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख सम्पति नाना विधि पावहिं॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं। अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं॥



दोहा—बार बार बर मांगौं, हरषि देहु श्रीरंग॥
पद सरोज अन पायनी, भक्ति सदा सतसंग॥

रामाश्वमेध
प्रारंभः ।



पुस्तकमिलनकाठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

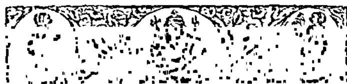
श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम् प्रेस-बंबई.

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

अथ रामरसायनकी अनुक्रमणिका ।

इति अनुक्रमणिका समाप्त

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



अथ श्रीरामरसायनप्रारम्भः ।

श्लोक-मालिनीछन्द ।

सकलसुकृतसारंचार्थधर्मस्यसारंवहुगुणगणसारंभक्तिसारंचनित्यम् ॥
प्रचुरप्रणवसारंसर्वदामोक्षसारंदशरथहृदिसारंरामनामैववंदे ॥ १ ॥

पद्य अनुष्टुप्छन्द ।

श्रीरामंसीतयासार्द्धंलक्ष्मणेनहनूमता ॥ कोटिकंदर्प्पदर्प्पघ्नंशिरसा-प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ गुरुंगणेशंगिरिशंगिरंचगरुडध्वजम् ॥ वालमीकिं-बुद्धिदंवंदेकविंकाव्यकलानिधिम् ॥ ३ ॥ दृढवद्धौभवाब्धौयद्गाथासे-तूसुविस्तरौ ॥ तुलसीसूरदासौचवंदेतौपुरुषोत्तमौ ॥ ४ ॥

उपजातिछन्द ।

अनेकजन्मार्जितदुष्कृतेनतेनोद्भवाःसंतिअपारक्लेशाः ॥
तेषांविनाशायसुभेषजंसत्सिद्धीकृतंरामरसायनंमे ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

शोभितसतीके सतीभारतीरतीके करसेवित सुतीके सुरतीके नरतीकेंहैं
विमलरतीके विरतीके विरतीके दानिशुद्ध विरतीके सुरतीके सुरतीकेंहैं
रसिकविहारी सुगतीकेसुमतीके नित्यकारक पतीके दृढहारक छतीकेंहैं
देववंदिनीके निमिवंश चंदिनीके युगनीके पदकंज मिथिलेश नंदनीकेंहैं
॥६॥ तारी ऋषिनारी वज्र अंकुशादिधारी चित्रकूट वनचारी सहचारी
त्रिपुरारीके ॥ अधम उधारी मुनि मानस विहारी सारी विपति
विदारी पूज्य कपि गिरिधारीके ॥ सोचके सँहारी पाप तमके तमारी

कहि महंत जानकी प्रसादा ❀ नाम पुकारत श्रुत मरयादा॥३२॥
सो यह नाम छंदके माँहीं ❀ कहुँ कहुँ अति अमिल लखाहीं॥
याते निज कविता मधि राखौं ❀ और नाम द्वैसो इत भाखौं॥३३॥
रसिक विहारी नाम उचारो ❀ कितहूँ है रसिकेस निहारो॥
मम कृत छंद प्रबंध सुजोऊ। तिन महँ प्रगट नाम ये दोऊ॥३४॥

दोहा–सूक्षम निज वृत्तांत में, धरो इहाँ इहि हेत॥
सुनिसज्जन निजजानि मुहि, करिहैं कृपा सचेत॥३५॥
पुनि प्रणमौं कर जोरिकै, करौ कृपाते धन्य॥
हौ सिय सिय वरके सदा, जे प्रिय रसिक अनन्य॥३६॥
निजनिज प्रकृतिप्रभावमो, औगुण निरखि अनंत॥
कृपा करो मोपै सदा, दोऊ संत असंत॥३७॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायनग्रंथे प्रथमविधाने प्रथमो विभागः॥१॥

सोरठा–शिव विरंचि सुरराय, नारदादि सनकादिकपि॥
वंदौं मन वच काय, मुनि वसिष्ट कौशिक सकल॥१॥
राम चरित अभिराम, नाम रूप लीला बहुरि॥
धाम सहित सुख धाम, बरनौं मति अनुसार कछु॥२॥
राम चरित्र अपार, नेति निगम आगम भने॥
पै निज बुधि अनुसार, कहा कहैं पुनि कहहिंगे॥३॥
राम चरित अति गूढ, बिन हरि कृपा जनात नाहिं॥
सो कह जानैं मूढ, पगे विवाद प्रमादमें॥४॥
राम उपासक होय, गहैं अनन्य उपासना॥
हरि गुरु कृपा सुजोय, राम चरित तब जानहीं॥५॥
वर उपासना ग्रंथ, हैं प्राचीन प्रमाण बहु॥
राम चरितको पंथ, जानैं सकल दिखावहीं॥६॥
पै वे बहु सतसंग, कीने बिना न पाइये॥
याते तजि जगसंग, सेव संत अभंग चित॥७॥

राम चरितको भेद, जब जानि गुरुकी कृपा ॥
तब छूटे सब खेद, राम उपासक होय दृढ ॥ ८ ॥
यातें लखि उपकार, कालि जगजीव उधार हित ॥
लघु मतिके अनुसार, राम कथा कछु रचतहां ॥ ९ ॥
पूरव ग्रंथ प्रमान, संस्कृत अरु भाषा विविध ॥
सब संमत उर आन, रास रसायन ग्रंथ किय ॥ १० ॥

दोहा—राम रसायनके विशद, हेरो आठ विधान ॥
प्रति विधान सुविभाग बहु, यथा योग अनुमान ॥ ११ ॥
निर्णय १जन्म २विवाह ३ वन ४,अरु०वियोग ५पुनि०युद्ध६ ॥
वर अभिषेक ७ विहार ८ ये, आठ विधान विशुद्ध ॥ १२ ॥
हैं बहु गुप्त प्रतक्ष जे, सिय रघुचंद्र चरित्र ॥
पूरव कथित प्रमाण जे, वरणौं परम पवित्र ॥ १३ ॥
जन्म कथातें आदिलै, मध्य चरित्र अनंत ॥
वरण तहौं साकेत निज, गुप्त वास परयंत ॥ १४ ॥
रास विलास हुलास बहु, सुख दुख योग वियोग ॥
यथा उचित सिय रामयश, कहौं सुनौ सत लोग ॥ १५ ॥
सिय रघु चंद्र चरित्र सुनि, संका करौ न कोय ॥
है प्रमाण युत सत्य सब, वर्णन कीनो जोय ॥ १६ ॥
जे जन कबहूँ नहिं सुने, राम उपासन ग्रंथ ॥
पुनि दृग भरि देखो न कहुँ, रसिक जननको पंथ ॥ १७ ॥
ते सुनि रासादिक कथा, सिय रघुवरकी सोय ॥
करि करि विविध वितर्क मन, चकित रहत चितजोय ॥ १८ ॥
चौ०जिनहिकछू शंका जियहोई ❀ ते यह यतन करौ सब कोई ॥
सीता राम उपासकहेरो ❀ तिनहूँमें अनन्य निरवेरो ॥१९॥
पुनि,तिनमें अति रसिक जु होई ❀ रसिकनमें विद्वान सु जोई ॥
ताढिगजाय करौ सतसंगा ❀ तनमनधनयुत प्रीतिअभंगा॥२०
तब ता मुख अनेक वर गाथा ❀ सुनौ चरित जे सिय रघुनाथा ॥
वरणे सुर मुनि संत अपारा ❀ग्रंथ अमितजे लघुविस्तारा २१॥

संस्कृत अरु प्राकृत हैं कोऊ ❀ परम प्रमाण वाक्य वर दोऊ ॥
लिखौं नाम ते सकल निहारौ ❀ इमि अनेक औरहु विचारौ॥२२॥

ग्रंथनाम।

चौ०हनुमंतसंहिता १ हि लखिलीजे ❀ पुनि वसिष्ठसंहिता२कहीजे ॥
अरु अगस्त्यसंहिता ३ विचारौ ❀ त्यों०निरुक्तिसंहितानिहारौ४,२३
लखौ सदाशिवसंहिता५ हि गुनि ❀ रामरसामृत सिंधु६भलोपुनि ॥
बहुरि चरण चामर ७ वर देखौ ❀ रामरास तिहि ८ सुंदर पेखो २४॥
वालमीकिरामायण ९ हेरौ ❀ सुंदररामायण १० निरखेरौ ॥
पुनि भुशुंडिरामायण ११ पेषो ❀ बहुरि महारामायण १२ देखो २५
फेरि बालरामायण १३ जानौ ❀ पुनि हनुमन्नाटक १४ दृढठानौ॥
कौशलखंड१५बहोरि विचारो ❀ अरु सियगुणवल्ली१६निरधारो २६
संग्रह उत्सवसिंधु १७ अनूपा ❀ अरु गुणावली१८सुखदसरूपा ॥
महासुंदरी तंत्र १९निहारो ❀ पुनि नवरत्न२०हि निरखिविचारो२७
इते ग्रंथ संस्कृतके पेखो ❀ पुनि पाकृत ग्रंथनको देखो ॥
अष्ट जाम२१ नाभाकृत हेरो ❀ तुलसीकृत२२सब ग्रंथ निवेरो२८
बहुरिलखौ सीतायन २३ ग्रंथा ❀ कादंबरी २४ विशद शुभपंथा ॥
नेहप्रकाश२५विशद जिय जानो ❀ पुनितरंगिनी२६परम प्रमानो२९
इनहि आदि बहु ग्रंथन माहीं ❀ सीताराम चरित्र मिलाहीं ॥
रास विलास अनेक प्रकारा ❀ समय मास ऋतुदिन अनुसारा३०
बरनौ कथा पुरातन जोई ❀ विरचें राम रसायन सोई ॥
अब इत कछु प्राचीन प्रमाना ❀ सूक्षम धरौं करौं बहु ज्ञाना॥३१॥

प्रमाण—वाल्मीकीये। अयोध्याकांडे ॥ सर्ग २ ॥

श्लोक—गांधर्वेषु भुवि श्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः ॥
कल्याणाभिजनः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥ १ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सुंदरकांडे ॥ सर्ग ॥ २८ ॥

पितुर्निदेशंनियमेनकृत्वावनान्निवृत्तश्चरितव्रतश्च ॥
स्त्रीभिस्तुमन्येविपुलेक्षणाभिःसंरंस्यसेवीतभयःकृतार्थः ॥ २ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सर्ग ३६ ॥

नमांसंराघवोभुंक्तेनचैवमधुसेवते ॥ वन्यंसुविहितंनित्यंभक्तमश्नातिपंचमम् ॥ ३ ॥ नैवदंशान्नमशकान्नकीटान्नसरीसृपान् ॥ राघवोपनयेद्गात्रात्त्वद्गतेनांतरात्मना ॥ ४ ॥ नित्यंध्यानपरोरामोनित्यंशोकपरायणः ॥ नान्यंचिंतयतेकिंचित्ससतुकामवशंगतः ॥ ५ ॥ अनिद्रःसततंरामःसुप्तेपिचनरोत्तमः ॥ सीतेतिमधुरांवाणींव्याहरन्प्रतिबुध्यते॥६॥ दृष्ट्वाफलंवापुष्पंवायच्चान्यत्स्त्रीमनोहरम् ॥ वहुशोहाप्रियेत्येवश्वसंस्त्वा६ मभिभाषते ॥ ७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ युद्धकांडे ॥ सर्ग २१ ॥

ततःसागरवेलायांदर्भानास्तीर्यराघवः ॥ अंजलिंप्राङ्मुखंकृत्वाप्रतिशिश्येमहोदधेः ॥ ८ ॥ वाहुंभुजंगभोगाभमुपधायारिसूदनः ॥ जातरूपमयैश्चैवभूषणैर्भूषितंसदा ॥९॥ मणिकांचनकेयूरमुक्ताप्रवरभूषणैः॥ भुजैःपरमनारीणामभिमृष्टमनेकधा ॥ १० ॥

पुनः ॥ तत्रैव उत्तरकांडे ॥ सर्ग ४२ ॥

अशोकवनिकांस्फीतांप्रविश्यरघुनंदनः ॥ आसनेचशुभाकारेपुष्पप्रकरभूषिते ॥ ११ ॥ कुशास्तरणसंस्तीर्णेरामःसन्निपसादह ॥ सीतामादायहस्तेनमधुमैरेयकंशुचि ॥ १२ ॥ पाययामासकाकुत्स्थःशचीमिवपुरंदरः ॥ मांसानिचसुमिष्टानिफलानिविविधानिच ॥ १३ ॥ रामस्याभ्यवहारार्थंकिंकरास्तूर्णमाहरन् ॥ उपानृत्यंश्चराजानंनृत्यगीतविशारदाः ॥ १४ ॥ अप्सरोरगसंघाश्चकिन्नरीपरिवारिताः ॥ दक्षिणारूपवत्यश्चस्त्रियःपानवशंगताः ॥ १५ ॥ उपानृत्यंतकाकुत्स्थंनृत्यगीतविशारदाः ॥ मनोभिरामारामास्तारामोरमयतांवरः ॥ १६ ॥ रमयामासधर्मात्मानित्यंपरमभूषिता ॥ सतयासीतयासार्धमासीनोविरराजह ॥ १७ ॥ रमयामासवैदेहीमहन्यहनिदेववत् ॥ तथातयोर्विहरतोःसीताराघवयोश्चिरम् ॥ १८ ॥ दशवर्षसहस्राणिशतानिसुमहात्मनोः ॥ प्राप्तयोर्विविधान्भोगानतीतःशिशिरागमः ॥ १९ ॥

पुनः ॥ निरुक्तिसंहितायाम् ॥

सौगंध्योज्वलसौकुमार्य्यकलिताकौमल्यदाकेलिदासंगीतामृतवर्षिणीप्रतिपदंप्रेयःप्रयासापहा ॥ एणाक्षीस्वकटाक्षकल्पितसुरेश्वर्यादिकाशक्तिदायद्रंद्याविबुधोत्तमोत्तमशिवाजाभ्यांजयेज्जानकी ॥ २० ॥ याःसख्यःकलिताःसताभगवतागस्त्येनतेकोटिशस्ताभिस्त्वंसममेवनाथदयितंत्वाह्लादयंतीरहः ॥ मच्चित्रेस्फुरसुंदरस्फुटगुणस्मेरायमाणाननानानाभावविनोदिनीहजनकक्षीरोदजातेसदा॥ २१ ॥ कांच्याव्रारणनंचरंगकरणंमंजीरमंजुध्वनिंश्रोतुंत्वांरमणोविहारयातितेसामादिगानोद्गतिम् ॥ संगीतंसुरसेवितंचसमयेसीते विदूरेभजन्व्यर्थंतन्नचसर्वथा सकुरुतेमानार्हमानप्रदः ॥ २२ ॥ साधर्म्येयदवाप्तमात्ममननात्सर्वात्मनातन्नवास्यादित्येवपरीक्षितुंतवसखीः कांतोयदाश्लिष्यति ॥ एकैकांहिविविक्तिचान्यवनितांत्वत्साम्यशंकीतियत्तत्तेमर्मंतुदंनमर्ममधुरामुग्धासियन्मैथिलि ॥ २३ ॥ पुनः ॥ सदाशिवसंहितायां ॥ उर्वशीमेनकारंभाराधाचंद्रावलीतथा ॥ हेमाक्षेमावरारोहापद्मगंधासुलोचना ॥ २४ ॥ हंसिनीमालिनीपद्माहारिणीमृगलोचना॥ रामस्यपरिनृत्यंतिगीतवादित्रमोहिताः ॥२५ ॥

पुनः महारामायणे।

अनंतसखिभिःसार्द्धंरामचंद्रः ससीतया ॥ स्वेच्छयाकुरुतेरासंताः कुजागात्रसंभवाः ॥ २६ ॥ मध्योवयःकिशोरश्चानंतरूपापरस्तमः ॥ किशोर्य्यःसकलाःसख्योभूपिताश्चंद्रिकादिभिः ॥ २७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥

मुनिवेषधरंरामंनीलजीमूतसन्निभम् ॥ रमंतेयोपितोभूनारूपंदृष्ट्वामदर्पयः ॥ २८ ॥ ईषद्धास्यकृतोरामोदृष्ट्वातेषामिमांगतिम्॥श्रूयंधन्यतराज्ञानंमत्प्रसादेनसांप्रतम्॥२९॥रमिनारामभूतानितेस्त्रियोरूपान्लपश्चन्न॥ अतोदेवीरघुक्रीड़ारामनाम्निवर्ततेते ॥ ३० ॥ इत्यादि ॥

चौ०—योंतौ अमित ग्रंथ विस्तारा । तिनमहँ रामचरित्र अपारा ॥
सो प्रमाण मत मैं कछु भाखो । मोपर कृपा सदा रघु राखो ३१॥
राम रसायन ग्रंथ अनूपा । प्रगट भयो शुभ मंगलरूपा ॥
यह सुग्रंथ लिख्यो जिहि कारन । सुनो सकल मैं कहौं उचारन ३२

दो०–येक दिवस मध्याह्न मधि, वालमीकिअभिराम ॥
मैं अवलोकन करतहों, सुंदरकांडललाम ॥ ३४ ॥
रावण भाषित कटु वचन, जनकसुता कृतखेद ॥
सो प्रसंग लखि दुःखते, मो हिय भयो विभेद ॥ ३५ ॥
चली अश्रुधारा दृगन, शिथिल भयो तनु मोर ॥
कछु आलस आई सुमैं, पौढि रहो तिहि ठौर ॥ ३६ ॥
नाहिं जागत सोवत नहीं, और न कछू प्रतक्ष ॥
स्वप्न नहीं अचरज महां, मोहिं भयो यह लक्ष ॥ ३७ ॥
कानन विशद विशाल तहँ, यक वट वृक्ष ललाम ॥
तापर सकल समाज युत, बैठेहैं सिय राम ॥ ३८ ॥
तहँ दंपति ढिग मैं खड़ो, पैकछु जीय उदास ॥
याते हिय अकुलाय मुहि, आई दीह उसास ॥ ३९ ॥
सुनि उसास सियराम जू, विहँसे मोदिशि हेरि ॥
इक इक फूल कदंबको, दियो दुहूं मुहि फेरि ॥ ४० ॥
ताछिन आई एक तिय, लिये चारिकपि संग ॥
करन लगी कौतुक विविध, वीनःवजाय सुढंग ॥४१ ॥
पुनि मोसन सो तिय कही, सिया राम गुण गान ॥
तुमहुँ करो हिय हुलसिकै- दंपति पद उर आन ४२ ॥
सो सुनिकै सिय राम दुहुँ, मोहिंदई मणि एक ॥
कही लेहु यह कल्पमणि, येही विमल विवेक ॥ ४३ ॥
ऋद्धि सिद्धि वर बुद्धि वहु, मणि प्रभावते होय ॥
इतनेमें मुहि धायकै, गहि लीनो कपि दोय ॥ ४४ ॥
ताछिन घिरि आये जलद, परनलगी जलधार ॥
इन माहिं मोदृग खुले, आनँद भयो अपार ॥ ४५ ॥
मैं उठि बैठो चकित चित, कीनों अमित विचार ॥
सिया राम यश कछु करौं, यही भयो निरधार ॥ ४६ ॥
यह विचारिकै करनदौं, आनँद उर उमगाय ॥
राम रसायन नाम दिय, आपहि पर्‍यो जनाय ॥ ४७ ॥

तब सिय रघुवरकी कृपा, दृढ जानी सब भाँति ॥
वर्णन लागो विमल यश,शुभ प्रगट गुण पाँति ॥ ४८ ॥
चौ०—यातेंहं यह ग्रंथ अनूपा ❀ सब सुखदानि सुमंगलरूपा ॥
जो इहि बांचि सुनै सुनावै ❀ दुहूँ लोक आनंद सुपावै ॥४९॥
सहित प्रतीति प्रीति युतनेमा ❀ पढ़ सुनै होवै सब क्षेमा ॥
विरुज अंग बल तेज अपारा ❀ वृद्धिलहे संतन परिवारा ॥५०॥
विद्या विजय विभूति बडाई ❀ सुयश सुबुद्धि सुकृत शुचिताई ॥
लहि सुख भोगि लोक इहि माहीं ❀ अंतकाल हरि रूप मिलाहीं५१॥
रामरसायन मंगलकारी ❀ तन मन धन सुखदानि निहारी॥
जो यह पढ़ै सुनै चितलाई ❀ रामकृपातिहिपर अधिकाई५२॥
यामें बहु ग्रंथनके अंगा ❀ धरे यथोचित निरखि प्रसंगा ॥
छंद अनेक नायिका नायक ❀ अलंकाररसजो जहँ लायक५३॥
भाव विविध ध्वनि व्यंग्य घनेरी ❀ कोष व्याकरण शब्द निबेरी ॥
निज लघु मतिकी गति अनुसारा ❀ विरचों ग्रंथ समेत विचारा५४॥
पै निज बुधि भरोसे नहिं आवै ❀ लखि स्वमंदता हिय सकुचावै ॥
याते सब सज्जन समुदाई ❀ दीन जानिके करौ सहाई॥५५॥
अनुचित मोर क्षमा सब कीजो ❀ जहँ अशुद्ध तहँ शुद्धकरि दीजो॥
पै यह सुधि राखियो सदाही ❀ पक्षपात नहिं रंच बनाही॥५६॥
याते विनय करौं करजोरी ❀ क्षमियो सकल ढिठाई मोरी ॥
प्राकृत और संस्कृत दोऊ ❀ कविता भेद लखे जो होऊ५७॥
पुनि बहु ग्रंथ प्रसंग निहारे ❀ पक्षवाद जिन दूरहि टारे ॥
जे ऐसे जन सुमति उतंका ❀ शुद्ध करैं ते याहि निशंका ५८॥
मैं यह ग्रंथ रचो करि हेतू ❀ सुखी होहिं सुनि बुद्धि निकेतू॥
सो सब मैं अभिलाप पुजावों ❀ दीन जानि दाया दरशावों॥५९॥
दोहा—पुनि सबसज्जन जननतें, विनय करौं करजोरि ॥
रामरसायन देखिकै, मोहिं न दीजो खोरि ॥ ६० ॥
रघुवर प्रेरित शारदा, आय बसी हिय धाम ॥
सोई वर्णन करतहे, सिय सियपति गुणग्राम ॥ ६१॥

यही भाँति पूरव रचे, वहु विधि ग्रंथ अनेक ॥
प्रथम भागके चक्रको, निरखे होत विवेक ॥ ६२ ॥
तिनहूँ ग्रंथनके रुचिर, निज विरचित बहु छंद ॥
यथा उचित या ग्रंथ में, धरिहौं निरखि प्रबंद ॥ ६३ ॥
औरहु विविध प्रसंगके, नूतन छंद प्रबंद ॥
रचिहौं प्रेरित भारती, राम चरित निरद्वंद ॥ ६४ ॥
प्रगट कियोहै शारदा, पढैं सुनैं हरि भक्त ॥
सिया रामजूकी कृपा, ग्रंथ प्रकाशै जक्त ॥ ६५ ॥
अब वंदौ श्री अवधपुर, मन वच कर्म समेत ॥
जो सिय राम विहार थल, नित्य धाम साकेत ॥ ६६ ॥
परहूते पर अवधपुर, जाते परे न और ॥
वर प्राचीन प्रमाण है, वर्णनीय वहु ठौर ॥ ६७ ॥

प्र०—अथर्वणवेदे श्रुतिः।

यायोध्यासर्ववैकुंठानांमूलाधारः मूलप्रकृतेःपरात्परातत्सद्ब्रह्ममया विरजोत्तरादिव्यरत्नकोशाढ्यातस्यांनित्यमेवसीतारामविहारस्थलमस्तीति ॥ १ ॥

पुनः ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लोकः।

श्लोक—विष्णोःपादमवंतिकांगुणवतींमध्येचकांचीपुरींनाभौ द्वारवतीं तथाच हृदये मायापुरींपुण्यदाम् ॥ ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरानासाग्रवाराणसीमेतद्ब्रह्मपदंवदंतिमुनयोयोध्यापुरींमस्तके ॥ २१ ॥ मथुराद्याः पुरःसर्वाअयोध्यापुरदासिका ॥ अयोध्यामेवसेवंतेप्रलयेप्रलयेपिच ॥ २२॥षष्टिवर्षसहस्राणिकाशीवासेपुयत्फलम्॥ तत्फलंनिमिषार्धेनकलौ दाशरथीपुरी ॥ २३ ॥ पुनः ॥ महारामायणे ॥ गोलोकाचपरंज्ञेयं साकेतान्तःपुरंप्रियम् ॥ गोप्यागोप्यतरानित्यासायोध्यातीवदुर्लभा ॥ २४ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—पुनि वंदौं सरयू सरित, राम रूप अभिराम ॥
सकल सरितकी शीश मणि,विशद विदित गुणग्राम ६८॥
सो सरयू तट विशद वर, द्वादश वन अभिराम ॥
विमल विशाल अनूप अति,सकल समै सुखधाम ॥ ६९ ॥

द्वादशवननाम ॥ काव्यछंद ॥

प्रथम–अशोक १ प्रमोद २ बहुरि–संतानक ३ जानौ ॥
पारिजात ४ मंदार ५सु–चंदन ६ चंपक ७ मानौ ॥
रमनक ८ आम्र ९ पलास १० कदम ११ सोहै–तमाल १२ घन ॥
ये सरयूके तीर अनूपमहैं द्वादश वन ॥ ७० ॥

दोहा–मृदुल भूमि शुचि पुण्य थल, सुंदर दोऊ तीर ॥
सुर पावनकारी सदा, निर्मल सरयू नीर ॥ ७१ ॥
नाम लेत नियरात सुख, दुख दुरात दरशात ॥
परसत पाप नशात जिहि, मज्जत राम मिलात ॥ ७२ ॥
श्रीसरयू जलपान करि, वसत अवधपुर माँहिं ॥
धन्य अवधवासी सकल, जिन लखि देव सिहाँहिं ॥७३॥
अवधपुरी सरयू नदी, अवध निवासी तत्व ॥
विदित प्रमाण पुराणमें, वर्णों महत महत्व ॥ ७४ ॥

पु० ॥ अगस्त्यसंहितायाम् ॥

अयोध्याचपरब्रह्मसरयूःसगुणःपुमान् ॥ तन्निवासीजगन्नाथःसत्यं सत्यंब्रवीमिते ॥३५ ॥ यथासर्वावताराणामवतारीरघूत्तमः ॥ तथासर्वेपुतीर्थेपुपावनीसरयूसरित् ॥ ३६ ॥ यावन्नजायतेतस्यांस्नानपाननिपेवणम् ॥ तावन्नजानकीनाथेप्राप्यतेभक्तिरुत्तमा ॥ ३७ ॥

पुनः ॥ पद्मपुराणे ॥

मन्वंतरसहस्रेपुकाशीवासेनयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिसरयूदर्शनेकृते ॥ ३८ ॥ प्रयागेयोनरोगत्वामावानांद्वादशंवसेत् ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ३९ ॥ मथुरायांकल्पमेकंवसतेमानवो यदि ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ४० ॥ गयाश्राद्धेन यत्पुण्यंपुरुषोत्तमदर्शने ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ४१ ॥ पुष्करेपुनरोयातिकार्तिक्यांकृत्तिकायुते ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ४२ ॥ इत्यादि ॥

दोहा–यौंहीं अमित प्रमाणहैं, वेद पुराणन माहिं ॥
ग्रंथ अपार अपार वच, कहँलों वर्णे जाहिं ॥ ७५ ॥

नाम रूप लीला बहुरि, धाम राम गुण ग्राम ॥
अमित अपार विचार कछु, वरणौं यश अभिराम ॥ ७६ ॥
सिय रघुवर वर चरित बहु, सुर मुनि किये वखान ॥
ग्रंथ लखौ प्राचीनते, जानो परम प्रमान ॥ ७७ ॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने प्रथमविधाने द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥ इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने निर्णय वर्णनोनाम प्रथमोविधानः ॥ १ ॥

अथ जन्मविधानप्रारंभः।

दोहा-श्रीसीतावर सहित पुनि, लपण समीर कुमार ॥
पुर परिजन संयुत सबहिं, वंदौं वारंवार ॥ १ ॥

चौ०-अब वणतहौं कथा प्रसंगा ❀ जाते होय अनंद अभंगा ॥
बीच बीच पुनि थल अनुमाना ❀ धरिहौं वर प्राचीन प्रमाना ॥२॥
नाय संत गुरु द्विज पद माथा ❀ विरचौं सिय रघुवर गुण गाथा ॥
सकल दोप दुख विघ्न विहाई ❀ राम कृपा सदग्रंथ वनाई ॥ ३ ॥

दोहा-प्रथम करौं श्रीरामकी, वंशावली वखान ॥
ता पाछे पुनि होय बहु, विशद कथाको गान ॥ ४ ॥

अथ वंशावली।

नारायण १ की नाभिते-कमल २ प्रगटभो आन ॥ ताते पुनि-ब्रह्मा ३ भये, विरचो सकल जहान ॥ ५ ॥ ब्रह्मातेसु-मरीचि ४ भे, तिनके-कश्यप ५ मान ॥ कश्यपके-सूरज ६ प्रगट, सूजरके-मनु ७ जान ॥ ६ ॥ मनुकेहैं-इक्ष्वाकु ८ सुत, तिनके-कुच्छ ९ विचार॥ तिनके भये-विकुच्छ १० पुनि, तिनके- बान ११ निहार ॥ ७ ॥ वान पुत्र-अनरन्य १२ नृप, तिनके-पृथु १३ पृथिपाल ॥ तिनके भये त्रिशंकु १४ जो स्वतनुस्वर्गगे हाल ॥ ८ ॥ धुंधुमार १५ तिनके भये, तिनकेहैं-युवनाश्व १६ ॥ मांधाता १७ तिनके सुजिन; भजीधरा सरवस्व ॥ ९ ॥ तिनकेंभये-सुसंधि १८ पुनि, तिनकेहैं-ध्रुवसंधि ॥ ॥१९॥ तिनके-भरत २० सुजासुकी, फैलि रही यश गांधि ॥ १० ॥

येद्दै गुरु प्रोहित सुवे. मन्त्री आठ महान ॥
दश दशरथ महाराजके, राज काज कर जान ॥ २७ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, अवध नाथ आधीन ॥
सकल सुखी सब भाँति नृप, आज्ञा पाल प्रवीन ॥२८॥
श्रीदशरथ महाराजको, अनुपम साज समाज ॥
तेज स्वरूप प्रताप बल, शोभित सुयश दराज ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

जाको नाम प्रगट प्रताप तिहुँ लोकनमें रहत सशंक दिगपाल लोकपाल सब ॥ चलत चमूके हियहूके होतभूके अति उठत भभूके शेषजूके शीश हाल तब ॥ राजनके राजा महाराजा दश स्यन्दनजू कढत सवारी घनी शस्त्र नोकशाल जब ॥ रसिक विहारी अवधेश चक्क वैनरेश सोहै और कोहै जौन जोहै झोकजाल अब ॥ ३० ॥ कर कर होतहै कठोर पीठ कच्छपकी थर थर कँपतहै ग्रीवा अहिराज की ॥ तर तर शब्द होत दाढतें बराह हूके धर धर छाती धरकात गज-राजकी ॥ छाय जात धूरि नभ मण्डल छिपाय जाति आसन डगाय जात शिव सुरराजकी ॥ रसिकविहारी जै जै सोर सरसाय जात कढत सवारी जब रघुकुल राजकी ॥ ३१ ॥ जाकी ओर भूलिहू कृपाकी कोर कीनी भूप ताके दुख दारिद परायकै जनी भये॥जाहीके भरोसे सुरपालहू निशंक रहें जाके तेज पुञ्ज शेष सहस्र फनी भये ॥ रसिकविहारी ऐसे भयेहैं न ह्वैहैं अब जैसे अवधेश धर्म थपन पनी भये ॥ जाकी प्रभुताई दई पाई प्रभुताई सब जाके धन दीनेसे कुबे-रहू धनी भये ॥ ३२॥

सो०—ऐसो अमित प्रताप, श्रीदशरथ महाराजको ॥
सो कौशलपुर आप, रैनि दिवस पालत प्रजहि ॥ ३३ ॥

चौ०अवधपुरी दशरथ रजधानी ❀ जिहि लखि अमरावती लजानी॥
चहुँदिशि विशद विचित्र ललामा ❀ सदन सरित सरमग आरामा ३४
उत्तर अरु दक्षिण दिशि माँहीं ❀ योजन तीन प्रमाण रहाँहीं ॥
पुनि पूरब पश्चिम दिगजोहै ❀ द्वादश योजन अवध वसोहै ॥

रुद्र याम लहि देखिये, तहँ बहु करि निरधार ॥
अवध नगर वृत्तांत सब, लिखो सहित विस्तार ॥५७॥

प्र० ॥रुद्रयामले ।

अयोध्यायांप्रदृश्यंतेपंचकोटिशतानिच ॥ प्रासादाश्चमहाभागेअर्बुदान्येकविंशतिः ॥ १ ॥ तन्मध्येराजराजस्यराजतेराजमंदिरम् ॥ सुविभागंमहाकक्षंताराणामिव चंद्रमाः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा–वर्णन कौशल नगरको, करौं कहा मैं मंद ॥
शारद शेष गणेशहू, भाषि न सकहिं सुछंद ॥ ५८ ॥
जहाँ चक्रवर्ती नृपति, श्रीदशरथ महाराज ॥
धर्मराज संतत करत, सकल भूप शिरताज ॥ ५९ ॥
पुर परिजन संयुत नृपति, रहत सदा सानंद ॥
विपुल विलास विभूति मय, राज्य करत निरद्वंद॥६०॥

इति श्रीरामरसायन द्वि० वि० अवधराज श्रीवर्णनोनाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

दोहा–धर्म धुरंधर भूपवर, दानी परम प्रवीन ॥
प्रवल चक्रवर्ती सदा, तिहुँ पुर जिहि स्वाधीन ॥ १ ॥

चौ०सोइकदिनदशरथमहिपाला ❀ मुकुर लखो निजवदन विशाला ॥
वृद्ध वेस चिह्नित तनु देखी ❀ नृप हिय चिंता भई विशेखी॥२॥
बीती वय किशोर तरुणाई ❀ आय वृद्धता अंगन छाई ॥
अजहूँलों सुत एकहु नाहीं ❀ पुत्रहीन यह राज्य वृथाहीं ॥ ३॥
इमि ससोच नृप सचिव समेता ❀ आतुर गये वसिष्ठ निकेता ॥
गुरुहि पूजिपद धरिनिज शीशा ❀ विनय करी कर जोरि महीशा॥४॥
सुनिनृपविनयमुदितमुनिज्ञानी ❀ बोले त्रिकालज्ञ वर बानी ॥
वेद मूल तव पुत्र भुवाला ❀ हैहैं अनि नत्रिवि यह काला॥५॥
सुनि वरवचनमुदितहियभयऊ ❀ गुरुहि वंदि भूपति गृह गयऊ ॥
तहाँ सुमंत रहसि लखि भूपा ❀ वर्णी पूर्व कथा अनूपा ॥ ६ ॥
अंग देश तुव सखा सुदेशा ❀ रोमपाद नरकंत नरेशा ॥

अश्वमेध मख सविधि करायो ॥ पुत्र हेतु पुनि यज्ञ दिढायो ॥
वेद मंत्र मय आहुति दीनी ॥ सकल सुरीति यथोचितकीनी२१ ॥

सो०—ता छिन समय निहार, अग्निदेव नररूप धरि ॥
लैकर पायस थार, यज्ञ कुण्डते प्रगटभे ॥ २२ ॥
ऋषिहि दयो सो आय, ऋषि दीनों नरनाथको ॥
भूपति उठि हरपाय, लीनों शीश चढाय कर ॥ २३ ॥
सो पायस ले भूप, चारि भाग कीने उचित ॥
यथायोग लखि रूप, तिहुँ पटरानिनको दये ॥ २४ ॥
सव पायसको अर्ध, सो नृप कौशल्यहि दियो ॥
शेपरहो तिहि अर्ध, दयो कैकयिहि मुदितह्वै ॥२५॥
शेप रहो पुनि ताहि, करि द्वै भाग महीप मणि ॥
दयो सुमित्रहि चाहि, लहि तिहुँ तिय प्रमुदित भई॥२६॥
संयुत प्रीति प्रतीत, रानी कौशल्यादि तिहुं ॥
पायस पाय पुनीत, भई गर्भवंती रुचिर ॥ २७ ॥
जादिनते नृपतीय, तिहूँ गर्भवंती भई ॥
ता दिनते सव हीय, पुर परिजन प्रमुदित महा॥२८॥
शिव विरंचि सुरराय, संयुत सुर ऋषि नाग सव ॥
नित प्रति हिय हुलसाय, राम दरश आशा लगी ॥२९॥
अमित देव नर नारि, धरि मानुप वपु अवधमें ॥
वसे अनंद विचारि, राम जन्म सुख लखन हित ॥ ३० ॥

इति श्रीरामरसायन द्वि० वि० दशरथयज्ञवर्णनो
नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

चौपाई—अव वर्णों सो सहित उमंगा ॥ विधि प्रेरित जो देव प्रसंगा ॥
जव दशरथ नृप यज्ञ सुठाना ॥ अश्वमेध वर विधि अनुमाना ॥१॥
तवते प्रथम विरंचि विचारी ॥ प्रगटे राम अवध सुखकारी ॥
तिहूँ लोकको सव दुख हरिहैं ॥ अतिविचित्र लीला वहु करिहैं ॥२॥
याते सुर गंधर्व सुनागा ॥ निज अंशन युत सकल सभागा ॥

प्रगटि वसैं महि जहँ तहँ जाई ❀ वानर ऋक्ष मनुज समुदाई ॥ ३ ॥
जो विचारि विधि आयसु दीनी ❀ सो सब उचित शीश धरि लीनी॥
रूप तेज गुण वल जिहि जैसे ❀ प्रगटे विविध अंशते तैसे ॥ ४ ॥

दोहा–प्रथम भये विधि अंशते, जाम्बवंत ऋच्छेश ॥
वाली सुरपति तेजते, कपिपति प्रगट सुदेश ॥ ५ ॥
भानु अंश सुग्रीव भे, सुरगुरुते कपि तार ॥
बहुरि गंधमादन लखौ, अंश कुवेर सुढार ॥ ६ ॥
विश्वकर्माके अंश नल, अनल तेज कपि नील ॥
हैं अश्विनीकुमार ते, द्विविद मयंद सुशील ॥ ७ ॥
पुनिसुखेन वर वरुण ते, शंभु अंश हनुमान ॥
धीर वीर तिहुँ लोकमें, जा सम कोउ न आन ॥ ८ ॥
इच्छा तनुधारी सकल, तिहुँ पुर चारी कीश ॥
यदपि तदपि हनुमंत गुण, सवते अधिक सुदीस ॥ ९ ॥
अतिसमर्थ वल तेजनिधि, कपि केसरी कुमार ॥
जन्म कथा तिनकी कहू, कहौं सुमति अनुसार ॥ १० ॥

चौ०–कपि वलवंत केसरीनामा ❀ तिनकी तिय अंजनीललामा ॥
वर वानरी स्वइच्छाचारी ❀ एकदिवस सो हर्षितभारी ११॥
करि शृंगार मानुषी रूपा ❀ विचरतही गिरि शिखर अनूपा ॥
नखशिख सकल अंग शुचि सोहै ❀ तिहि लखि पवन देव मन मोहे १२
आय वेग करि तिहि तनु परसो ❀ मनसिज अंग अंग अति सरसो॥
तिनहिं देखि अंजनी रिसानी ❀ बोली विलखि क्रोधमय बानी १३
देव मंदमति यह कह कीनो ❀ सब मम कर्म धर्म हरि लीनो ॥
कहा सुनि अंजनि वानी ❀ तुम सुंदरी वृथा रिस ठानी १४॥
न अधर्म कियो तुम पाहीं ❀ पतिव्रत भंग भयो कछु नाहीं ॥
मुदित यह मम वरदाना ❀ पैहो सुत मोसम वलवाना १५॥
पवन वचन सुनि केसरि नारी ❀ सकुची प्रगट हिये मुद भारी ॥
भई सु गर्भ अंजनी जबहीं ❀ प्रतिदिन द्विगुन तेज तनु तबहीं १६॥

योहीं गर्भ समय सब बीता ❀ आयो कातिकमास पुनीता ॥
तिथी चतुर्दशि मंगल वारा ❀ असित पक्ष दिन अंत विचारा१७॥
स्वातीनखत लगन शुभ मेषा ❀ ग्रह बलिष्ठ सब योग विशेषा ॥
भई अंजनी तबहिं प्रसूता ❀ प्रगटो सुंदर पुत्र अभूता ॥ १८ ॥
कंचन वर्ण सुअंग अनूपा ❀ अतिचंचल तनु पुष्ट सुरूपा ॥
लखि अंजनी पुत्र हरषानी ❀ जानी सत्य पवनकी वानी ॥१९॥
प्रसव अंत लागि क्षुधा विशेखी ❀ अंधकार कानन निशि देखी ॥
बिन जल फल सब रैनि बिताई ❀ प्रात होत आतुर उठि धाई ॥२०॥
सुतहि त्यागि तहँ जाय उताला ❀ खोजत फिरत अहार बिहाला ॥
सरस पत्र फल फूल सुहाये ❀ इत उत धाय उदर भरि खाये २१॥
इत बिन मात बालकपि रोवै ❀ बिलम भयो बहु क्षुधा बिगोवै ॥
ता छिन प्रगट भये रवि आई ❀ अरुण वर्तुलाकार सुहाई ॥ २२॥
अंजनि पुत्र क्षुधातुर भारी ❀ लखे पक्क फल सरिस तमारी ॥
तडकि तडाक भानु गहि लीनो ❀ बाल बुद्धि भ्रम कछु नाचीनो२३
जा छिन रविहि गहो कपिबाला ❀ ताछिन रहो ग्रहणको काला ॥
आयो भानु निकट द्रुत राहू ❀ सो लखि भयो क्रोध उर दाहू२४
पै लखि पवनपुत्र बल भारी ❀ गयो इंद्र ढिग वेगि सुरारी ॥
कहे सुरेशहि वचन रिसाई ❀ अब विरंचि नव सृष्टि बनाई॥२५॥
दूजो राहु आज रवि तोप्यो ❀ मेरो सकल पराक्रम लोप्यो ॥
सुनि सुरपतिलै कुलिश कराला ❀ चढि ऐरावत चले उताला २६
संग राहु बासव तहँ आये ❀ जहँ केशरी सुवन रवि छाये ॥
दूरहिते लखि राहुहि श्यामा ❀ कपि तिहि फल जानौ अभिरामा२७
रवि तजि गह्यो राहुको धाई ❀ सो लखिकै धाये सुरराई ॥
आवत उज्ज्वल गज कपि देखो ❀ ऐरावतहि शुभ्र फल लेखो ॥२८॥
तजि सिंहिका सुतहि तिहिं टाये ❀ सुरपति गज गहिलेको धाये ॥
आवत देखि बाल कपि योधा ❀ मारो कुलिश इन्द्र करि क्रोधा२९॥
वज्र घात पीडित कपि बाला ❀ आय गिरे गिरिपर बेहाला ॥
लागत सुरपति कुलिश अभंगा ❀ किंचित भयो वाम हनु भंगा३०॥

प्रगटि वसैं महि जहँ तहँ जाई ❋ वानर ऋक्ष मनुज समुदाई॥ ३॥
जो विचारि विधि आयसु दीनी ❋ सो सव उचित शीश धरि लीनी॥
रूप तेज गुण वल जिहि जैसे ❋ प्रगटे विविध अंशते तैसे ॥ ४॥

दोहा–प्रथम भये विधि अंशते, जाम्ववंत ऋच्छेश ॥
वाली सुरपति तेजते, कपिपति प्रगट सुदेश॥ ५॥
भानु अंश सुग्रीव भे, सुरगुरुते कपि तार॥
वहुरि गंधमादन लखौ, अंश कुवेर सुढार॥ ६॥
विश्वकर्माके अंश नल, अनल तेज कपि नील॥
हैं अश्विनीकुमार ते, द्विविद मयंद सुशील ॥ ७॥
पुनिसुखेन वर वरुण ते, शंभु अंश हनुमान॥
धीर वीर तिहुँ लोकमें, जा सम कोउ न आन॥ ८॥
इच्छा तनुधारी सकल, तिहुँ पुर चारी कीश॥
यदपि तदपि हनुमंत गुण, सवते अधिक सुदीस॥ ९॥
अतिसमर्थ वल तेजनिधि, कपि केसरी कुमार॥
जन्म कथा तिनकी कछू, कहौं सुमति अनुसार॥ १०॥

चौ०–कपि वलवंत केसरीनामा ❋ तिनकी तिय अंजनीललामा॥
वर वानरी स्वइच्छाचारी ❋ एकदिवस सो हर्षितभारी ११॥
करि शृंगार मानुषी रूपा ❋ विचरतही गिरि शिखर अनूपा॥
नखशिख सकल अंग शुचि सोहे ❋ तिहि लखि पवन देव मन मोहे१२
आय वेग करि तिहि तनु परसो ❋ मनसिज अंग अंग अति सरसो॥
तिनहिं देखि अंजनी रिसानी ❋ वोली विलखि क्रोधमय वानी १३
देव मंदमति यह कह कीनो ❋ सव मम कर्म धर्म हरि लीनो॥
पवन कहो सुनि अंजनि वानी ❋ तुम सुंदरी वृथा रिस ठानी१४॥
हीं न अधर्म कियो तुम पाहीं ❋ पतिव्रत भंग भयो कछु नाहीं॥
लेहु मुदित यह मम वरदाना ❋ पैहो सुत मोसम वलवाना१५॥
पवन वचन सुनि केसरि नारी ❋ सकुची प्रगट हिये मुद भारी॥
भई स गर्भ अंजनी जवहीं ❋ प्रतिदिन द्विगुन तेज तनु तवहीं१६॥

होहिं गर्भ समय सब बीता ❀ आयो कातिकमास पुनीता ॥
तिथी चतुर्दशि मंगल वारा ❀ असित पक्ष दिन अंत विचारा १७॥
स्वातीनखत लगन शुभ मेषा ❀ ग्रह बलिष्ठ सब योग विशेषा ॥
भई अंजनी तबहिं प्रसूता ❀ प्रगटो सुंदर पुत्र अभूता ॥ १८ ॥
कंचन वर्ण सुअंग अनूपा ❀ अतिचंचल तनु पुष्ट सुरूपा ॥
लखि अंजनी पुत्र हरषानी ❀ जानी सत्य पवनकी वानी ॥१९॥
प्रसव अंत लागि क्षुधा विशेखी ❀ अंधकार कानन निशि देखी ॥
विन जल फल सब रैनि विताई ❀ प्रात होत आतुर उठि धाई ॥२०॥
सुतहि त्यागि तहँ जाय उताला ❀ खोजत फिरत अहार बिहाला ॥
सरस पत्र फल फूल सुहाये ❀ इत उत धाय उदर भरि खाये २१॥
इत विन मात बालकपि रोवै ❀ बिलम भयो बहु क्षुधा विगोवै ॥
ता छिन प्रगट भये रवि आई ❀ अरुण वर्तुलाकार सुहाई ॥ २२॥
अंजनि पुत्र क्षुधातुर भारी ❀ लखे पक्व फल सरिस तमारी ॥
तडाकि तडाक भानु गहि लीनो ❀ बाल बुद्धि भ्रम कछु नाचीनो२३
जा छिन रविहि गहो कपिबाला ❀ ताछिन रहो ग्रहणको काला ॥
आयो भानु निकट द्रुत राहू ❀ सो लखि भयो क्रोध उर दाहू२४
पै लखि पवनपुत्र बल भारी ❀ गयो इंद्र ढिग वेगि सुरारी ॥
कहे सुरेशहि वचन रिसाई ❀ अब विरंचि नव सृष्टि बनाई॥२५॥
दूजो राहु आज रवि तोष्यो ❀ मेरो सकल पराक्रम लोप्यो ॥
सुनि सुरपतिलै कुलिश कराला ❀ चढि ऐरावत चले उताला २६
संग राहु वासव तहँ आये ❀ जहँ केशरी सुवन रवि छाये ॥
दूरहिते लखि राहुहि श्यामा ❀ कपि तिहि फल जानौ अभिरामा२७
रवि तजि गहो राहुको धाई ❀ सो लखिकै धाये सुरराई ॥
आवत उज्ज्वल गज कपि देखो ❀ ऐरावतहि शुभ्र फल लेखो ॥२८॥
तजि सिंहिका सुतहि तिहिं ठाये ❀ सुरपति गज गहिवेको धाये ॥
आवत देखि बाल कपि योधा ❀ मारो कुलिश इन्द्र करि क्रोधा२९॥
वज्र घात पीडित कपि बाला ❀ आय गिरे गिरिपर बेहाला ॥
लागत सुरपति कुलिश अभंगा ❀ किंचित भयो वाम हनु भंगा३०॥

दोहा—पवन देखि निज सुत विकल, अंक उठायो धाय ॥
तिहि लै बैठे कुपित ह्वै, गिरि कन्दर दुरि जाय ॥२१॥
मरुत कोपते जीव सब, विकल: भये तिहुँ लोक ॥
प्रलयकाल आयो अबै, यों अकुलात सशोक ॥ २२ ॥
सब इन्द्रिय मग रुद्धभे; नेक न पवन प्रचार ॥
प्राण कण्ठगत छिनकमें, भये जीव गणझार ॥ २३ ॥
सकल सुरासुर विकल ह्वै; आरत करत पुकार ॥
लखि कलेश सब अमर युत, वेगि चले करतार ॥२४॥
जहां पवन निज पुत्र युत, रहे कन्दरा धाम ॥
शिव विरंचि आदिक सकल, सुर आये तिहिं ठाम २५॥
पवन हेरि सुर मण्डली, उठे सुतहि लै अंक ॥
करि प्रणाम विधि चरणपै, पुत्रहि धरा निशंक ॥ २६ ॥
तब करता करिकै कृपा, कर फेरो शिशुमाथ ॥
पुत्र भयो प्रमुदित पवन, जान्यो जन्म सनाथ ॥२७॥
अति प्रसन्नह्वै वायु तब, कियो लोक सञ्चार ॥
विरुज भये सब जीवगण, लहों अनन्द अपार ॥ २८॥
मुदित देव गण जीव सब, जाने विगत कलेश ॥
स्वारथ परमारथ मिलित, बोले वचन सुदेश ॥ २९ ॥
सकल देव मिलि दीजिये, मारुति हित वरदान ॥
तब मघवा बोले मुदित, संयुत अर्थ प्रमान ॥ ४० ॥
वंक भयो हनु वज्रते, याते कपि सुत नाम ॥
ख्यात रहे हनुमान इव, होय तेज बल धाम ॥ ४१ ॥
पुनि प्रसन्न मम दत्तवर, यह हनुमत हित जान ॥
अमर सदा मो वज्रते, रहे अमित बलवान ॥ ४२ ॥
पुनि दिनेश निज कलन ते, दीनों सत कल अंश ॥
परमप्रकाशित अंगभो, हनुमत कपि अवतंश ॥ ४३ ॥
कहो भानु पुनि होय जब, सत वर्ष हनुमान ॥
तब हम देहैं इनहिं नर, सकल सुविद्यादान ॥ ४४ ॥

प्रमुदित वर दीनों वरुण, हनुमन्तहि सुखदाय ॥
जलते अरु मम पाशसे, रहै अवध्य सदाय ॥ ४५ ॥
यम बोले हरपाय नित, निरुज रहै बलवन्त ॥
पुनि अवध्य मम दण्डते, विचरै सकल दिगन्त ॥४६॥
हनुमन्तहि पुनि विशद वर, दीनो मुदित कुबेर ॥
चण्ड गदाते अमर ह्वै, कपि विचरै चहुँ फेर ॥ ४७ ॥
हैं त्रिशूल आदिक विविध, जो मम शस्त्र सुझारि ॥
तिन सब ते कपि अमर यों, वर दीनो त्रिपुरारि॥४८॥
कह्यो विश्वकर्मा हरपि, मम कृत जिते हथ्यार ॥
अमर होय तिन सबनिते, सन्तत पवनकुमार ॥ ४९ ॥
वर विरंचि दीनो हरपि, ब्रह्मदंड सब जोय ॥
हनूमान तिनते सदा, अवशि अवध्य सुहोय ॥ ५० ॥
पुनि विधि बोले मरुत प्रति, हो तव पुत्र अजेय ॥
चिरजीवी बलवंत शुचि, रहै सदा मति श्रेय ॥ ५१ ॥
मित्रपाल होवै अमित, कामरूप रिपु शाल ॥
वर त्रिलोकगामी प्रबल, पूज्य अंजनी लाल ॥ ५२ ॥
याविधि सुरवर दै कपिहि, गये सु निज निज धाम ॥
वन विचरत निश्शंक नित,पवनपुत्र अभिराम ॥ ५३ ॥

चौपाई-देवरदान गये सुरजबते ❀ प्रतिदिन बढ़ै तेज बल तबते ॥
हनूमान निज इच्छाचारी ❀ विचरत चहुँ नित विपिन मँझारी५४
कपि चंचल पुनि बालनिशंका ❀ वर प्रभाव अतुलित बलबंका ॥
जाय नित्य शिशु केलि कराहीं ❀ सो लखि वनचर अपर डराहीं ५५
तरुउखारि नभ ओर चलावैं ❀ धरि हलाय गिरि शिखर ढहावैं ॥
कूदैं किलकि चढ़ैं द्रुम जाई ❀ मंथैं सर सरिता जल धाई ॥५६॥
जाय मुनिनके आश्रम माहीं ❀ लै वल्कल मृगचर्म पराहीं ॥
काहू परन कुटी झकझोरें ❀ काहू नीर पात्र गहि टोरें ॥ ५७ ॥
काहूकी पादुका बहावें ❀ काहूके फल फूल नशावें ॥
जो कोऊ ऋपि रंचहु डाटैं ❀ तो तिहि धाय कोप करि काटैं५८

भय वश रहैं सबै चुप साधी ❀ पवनसुवन नित करैं उपाधी ॥
भये विकलऋषिगण वनवासी ❀ भृगु अंगिरा आदि तपरासी ॥५९॥
ते त्रिकालदर्शी मुनि ज्ञानी ❀ ज्ञान दृष्टि कपिवर गति जानी ॥
रहे मष्ट कछु दिवस बहोरी ❀ हनूमान निज वानि न छोरी ६०॥
सबही भयेविकल अति जबहीं ❀ दीनों शाप क्रोध करि तबहीं ॥
पवनपुत्र बल विस्मृत रहई ❀ संतत सरल चित्त निरवहई॥६१॥
जब कोऊ बल सुरति करावै ❀ तबहिं वीरता कपि तनु आवै ॥
इमि शापित ह्वै पवनकुमारा ❀भूले निज बल सकल अपारा ६२॥
शांत रूप विचरै वन माहीं ❀ कबौं न कछु मुनि विघ्न कराँही ॥
इहि विधि सत वर्ष वय बीती ❀ रहत सदा शाखामृग रीती ॥६३ ॥
अष्टम वर्ष प्रवेश विचारी ❀ बोले पवन समय अनुहारी ॥
जाहु पुत्र दिनकरके पासा ❀ करौ सकल विद्या अभ्यासा ॥६४॥
तुम्हैं जबहिं सब सुर वर दीना ❀ तबहीं यह दिनेश प्रण कीना ॥
हम वर विद्या सकल पढ़ैहैं ❀ वेद शास्त्र गुण विविध सिखैहैं ६५
सुनि पितु वचन मौन हनुमाना ❀ सो लखि पवन आचरज माना ॥
बोले मरुत सुवैन बहोरी ❀जान्यौ बाल केलि मत भोरी६६॥
पुत्र सु बाल बुद्धि परिहरहू ❀ विक्रम बल विद्या उर धरहु ॥
यदपि देव वर विदित प्रभावा ❀बालकेलि कल्पित तुम पावा ६७॥
तदपि परम उत्तम यह बाता ❀ रवि ढिग जाहु पढ़न हित ताता॥
ह्वै मम सुत मोसम बलवाना ❀रवि ढिग गमन सुनत चुपठाना६८
केलि कलोल वीरता करहू ❀ रवि तम गज गहिवे नभ चरहू ॥
विद्या पढन हेतु हरि पासा ❀जात होत हिय अधिक हिरासा६९
सुनि पितु वचन वीरता वाढ़ी ❀ भई पुच्छ रोमावलि ठाढ़ी ॥
नभ दिशि देखि हर्षि हनुमाना ❀ तमकि गगन कूदे,बलवाना७०॥
परे जाय उदयाचल बंका ❀तेज पुंज कपि निपट निशंका॥
औचक देखि दिनेश डराने ❀ पुनि धरि धीर भानु पहिचाने७१
धाय गहे रविपद हनुमंता ❀ दिनमणि आशिष दीन अनंता॥
[illegible] कर जोर केशरी वारे ❀ मृदुल नम्र वर वचन उचारे७२

तु सिखदै प्रभु पास पठायो ❀ गुरुपद रज सेवन मैं आयो ॥
खि सेवक हरि कृपा करीजे ❀ विद्यादान मुदित मुहिं दीजे७३
नि कपि वचन प्रसन्न तमारी ❀ एवमस्तु वर गिरा उचारी ॥
गपति बोले वचन बहोरी ❀ पवनपुत्र तव वय अति थोरी७४
म रथ कबहुँ रहत थिर नाहीं ❀ अमित वेग वर वाजि चलाहीं॥
लत संग अतिही श्रम पैहो ❀ किहि विधि विद्यामें चितदैहो७५

घनाक्षरी कवित्त।

ाम क्रोध लोभ मोह विवश प्रमादी मूढ़ संतत दरिद्री दुःखी मत्त
द भावैहै ॥ मानी अभिमानी व्यग्रचंचल अयान अति कृपण कुसंगी
ोच सकुच रहावैहै॥ आलसी अभागी अनचाही अनाचारी बहु स-
ज अनौसरी अधीर अकुलावैहै ॥ रसिकविहारी भनै भानु हनुमान
ुनौ येतनको पूरी वर विद्या नाहिं आवैहै ॥ ७६ ॥

सो०—भानु वचन सुनि वीर, नाय शीश कर जोरि दुहुँ ॥
बोले हरपि सुधीर, नाथ कही सो सत्य सब ॥ ७७ ॥
मो लघुमति अनुसार, मैं निज हिय दृढ़ कीन यह ॥
गुरुकी कृपा अपार, अगम होय सो सुगम अति ॥७८॥
मोहिं दास दृढ़ जानि, नाथ साथ निज लीजिये ॥
वर विद्या शुभ दानि, कृपा दृष्टि करि दीजिये ॥ ७९ ॥
यौंहीं बहु बतरात, बात जात अति दूरलौं ॥
पिछले पगन चलात, गगन गये रवि संगही ॥ ८० ॥
सो गति देखि दिनेश, कृपा सहित अति मुदितह्वै ॥
करन लगे उपदेश, वेद शास्त्र विद्या विशद ॥ ८१ ॥
रवि रथ आगे वीर, चलत पाछिले पगनतें ॥
विद्या पढ़ी सुधीर, स्वल्प दिवसमें पवन सुत ॥ ८२ ॥
सामादिक चहुँ वेद, व्याकरणादिकशास्त्र पट ॥
संयुत सकल विभेद, पढि रवितें कपि निपुणभे ॥ ८३ ॥
विद्या विशद अनूप, तेज धाम कपिको दई ॥
सुमति तेज बलरूप, लखि सब देव सराहहीं ॥ ८४ ॥

पुनि आदित्य दयाल, कह्यो जाहु कपि निज भवन ॥
वर विद्या सबकाल, अनभ्यास जनि राखियो ॥ ८५ ॥
गुरु आयसु धरि माथ, चरण वंदि बुधिमंत कपि ॥
कही जोरि युग हाथ, नीत प्रीत संकोच युत ॥ ८६ ॥
दोहा–नाथ कृपा करि मुहिं दई, विद्या विमल अपार ॥
गुरुतें उरण तौन जो, सेवौं जन्म हजार ॥ ८७ ॥
पै मर्याद प्रमाण यह, प्रभुहि विदित सब सोय ॥
विन दीने गुरु दक्षिणा, विद्या सफल न होय ॥ ८८ ॥
याते प्रभु करिकै कृपा, यथाशक्ति अनुमान ॥
लीजे कछु गुरु दक्षिणा, मुहि निज सेवक जान ॥ ८९ ॥
पवनपुत्रके वचन सुनि, बोले तेज निकेत ॥
सत्य धर्म मर्याद यह, भाषी सुमति सचेत ॥ ९० ॥
निरखि शक्ति तुव पवनसुत, हम जो करहिं रजाय ॥
देहु वही गुरुदक्षिणा, मम हिय अति हुलसाय ॥ ९१ ॥
अंशुमान हनुमान प्रति, भाषो सहित सनेह ॥
वीर धीर गुरु दक्षिणा, प्रीति सहित यह देह ॥ ९२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

दुष्ट दल दंडिवेको रहियो उदंड चंड मंडितह्वै कीजो वल खंडित सुरारीको ॥ सकल दराज साज साज राम काज काज संयुत समाज सुख दीजो धनुधारीको ॥ तुम हनुमान बलवान वर बुद्धिमान हूजो अनुरक्त भक्त जक्त रखवारीको ॥ देश परदेशमें हमेश सव भांति घनो राखियो आनंद सदा रसिकविहारीको ॥ ९३ ॥

चौ०–यों कहि पुनि बोले दिनराई ❀ परम प्रीति संयुत हुलसाई ॥
यह रजाय दृढ गहौ हमारी ❀ येही गुरु दक्षिणा तिहारी ॥९४॥
सुनि गुरुआयसु कपि गुणवंता ❀ दृढ करि हिय धरि लई तुरंता ॥
निरखि दिवाकर कपि धुरधर्मा ❀ ह्वै प्रमुदित वर दयो सुपर्मा॥ ९५
फलित होय विद्या तुव कीशा ❀ पूरण कृपा करें जगदीशा ॥
जे जन तुव सेवा चित लावैं ❀ते सव निज इच्छित फल पावैं९६

यों कहि कपि शिरपर कर फेरो ❀ कृपा सहित सिखवै बहुतेरो ॥
विदा किये हनुमंतहि ईशा ❀ चले हरषि गुरुपद धरि शीश९७
कूदि कुधर अस्ताचल पाहीं ❀ नभ मारगह्वै छिन माहीं ॥
आय दुहूँ पद माथ नवायो ❀ पितु जननी सुत लखि सुख पायो
विचरत सुख युत इच्छाचारी ❀ तिहूँ लोक मुद मंगल कारी ॥
रामचंद्र दरशनकी आसा ❀ लागि रही गुरु वच विश्वासा९९॥
गुरु सिख हिय धरि अंजनि लाला ❀ रसिकविहारी पाल कृपाला ॥
इमि हनुमंत जन्म गुण गाथा ❀ वर्णी यथाश्रुत भयो सनाथा१००
अब हनुमंत जन्म तिथि मासा ❀ है प्रमाण पूरब जो खासा ॥
उत्सव सिंधु ग्रंथके माँहीं ❀ है सो लिखौं सत्य इहि ठाँहीं१०१

प्र० ॥ उत्सवसिंधौ ।

ऊर्जस्यचासितेपक्षेस्वात्यांभौमेकपीश्वरः ॥
मेषलग्नेऽञ्जनागर्भाच्छिवःप्रादुरभूत्स्वयम् ॥ १ ॥

दोहा–लिखो हनूमत जन्मको, है इतिहास पुरान ॥
चैत मास पूनौ तहां, सोऊ वाक्य प्रमान ॥ १०२ ॥
कल्पभेदसों जानिये, यामें कछू न फेर ॥
वर्तमानके कल्पको, निश्चय यही निवेर ॥ १०३ ॥
उत्सवसिंधु सुग्रंथ अरु, वाल्मीकि ये दोउ ॥
होत एकता बुद्धिते, लखौ सुबुध सब कोउ ॥ १०४॥
वाल्मीकिमें है सुकछु, लिखौं इहां लखि लेहु ॥
शब्द अर्थ भावार्थते, निश्चय सकल करेहु ॥ १०५ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकाण्डे ॥ सर्ग ॥ ३५ ॥

शालिशूकनिभाभासंप्रासूतेमंतदांजना ॥ फलान्याहर्तुकामावैनिष्क्रांतागहनेवरा ॥ २॥ एषमातुर्वियोगाच्चक्षुधयाचभृशार्दितः ॥ रुरोदशिशुरत्यर्थंशिशुःशरवणेयथा ॥ ३ ॥ ततोद्यंतंविवस्वंतंजपापुष्पोत्करोपमम् ॥ ददर्शफललोभाच्चह्युत्पपातरविंप्रति ॥४॥ बालार्काभिमुखोबालेबालार्कइवमूर्तिमान् ॥ गृहीतुकामोबालार्कंप्लवनेंबरमध्यगः ॥५॥ यमेवदिवसंह्येषग्रहीतुंभास्करंप्लुतः ॥ तमेवदिवसंराहुर्जिघृक्षतिदिवाकरम् ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—जो पूरणिमा कहिय तो, सूरज ग्रहण न होय ॥
याते हनुमत जन्म तिथि, असित चतुर्दशि सोय ॥ १०६॥
पुनि स्वाती नक्षत्र सो, ज्योतिप गणित प्रमान ॥
आवै कातिक कृष्ण तिथि, इमि चतुर्दशी जान १०७॥

इति श्री०रा०र०द्वि०वि० हनुमज्जन्मवर्णनोनाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

चौ—अव वर्णों सो सकल प्रसंगा ❀ राम जन्म रस रंग उमंगा ॥
जिहि उत्सव हित सुर मुनि झारी ❀ अमित दिवस आशा उरधारी १ ॥
अवधपाल दशरथ नृप रानी ❀ कौशल्यादि तिहूँ सुखदानी ॥
जबते भई सगर्भ अनूपा ❀ तवते प्रतिदिन वढ़त सुरूपा २॥
पुरवासी सब मगन अपारा ❀ घर घर होत मंगलाचारा ॥
सुख संपति निशिदिन अधिकाई ❀ राजमहल शोभा सरसाई ॥ ३॥
राम जन्म औसर नियरायो ❀ तिहूँ लोक आनँद उमगायो ॥
लंका त्यागि और सव काहू ❀ जड चेतन तनु भरो उछाहू ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ठौर ठौर मंजुल रसाल झौर झौर फूले तरुण भयेहैं नव पल्लव लहे लहे ॥ मुदित मलिंद डोलैं निर्तत मयूर चारु करैं कमनीय कीर कोकिल कहे कहे ॥ रसिकविहारी सुखकारीहै तयारी सब देव नर नारी भारी आनँद डहे डहे ॥ औसर विलोकि राम जन्म को त्रिलोक चहूँ आपहीते होन लागे मंगल गहे गहे ॥ ५ ॥ राम सुखके निरंतर विलोकिवेको आनंद सुमिर देव हृदय उमाहैंहैं ॥ पछितायँ रहिजायँ अकुलायँ फेरि वार वार अवध निवासिन सराहैंहैं ॥ रसिकविहारी आयो औसर आनंदकारी सव सुर झारी भारी भरत उछाहैंहैं ॥ विधि विधिताई त्यागि वामदेव भयो चाहैं शंभुताजि शंभुता वशिष्टहोनचाहैंहैं ॥ ६ ॥

दोहा–राम जन्मते प्रथमहीं, लीनी विरचि विरंचि ॥
चहूँ बंधुकी पत्रिका, धरि राखी अति संचि ॥ ७ ॥
सो चतुरानन समय लखि, शेप रहे दिन तीन ॥
चारु चारिहूं कुंडली, सुरगुरुके कर दीन ॥ ८ ॥
कही विधाता देव गुरु, ये पत्री सुखदाय ॥
शुभ दिन आज वशिष्ठको, देहु अवधपुर जाय ॥ ९ ॥
सुर मंत्री सुनि मुदित है, चले अवध चित लीन ॥
वेगि आय वर पत्रिका, चहूं वशिष्ठहि दीन ॥ १० ॥
पितु विरचित लखि कुंडली, अति वशिष्ठ हुलसाय ॥
सुर गुरु संयुत वेगहीं, अविलोकत चितलाय ॥ ११ ॥

कुंडलीवर्णन–घनाक्षरी कवित्त।

चैत सित नौमी सोम नषत पुनर्वसू है शूल योग, कौलव करण शुभकारीहै ॥ कर्कहै लगन तहां सोहैं गुरु चंद्र दोऊ शनिहैं तुलाके धन केतु रिपुहारीहै ॥ भौमहैं मकर मीन कक्र मेप भानु देख मिथुन परेहैं बुध साथ तम भारीहै ॥ रसिकविहारी राम कुंडली अनूप ऐसी विशद विचित्र या विधाता निरधारीहै ॥ १२ ॥

दोहा–भरत जन्म ग्रह रामतें, ध्रुव न्यारे ध्रुव एक ॥
यह विभेद सो जानिहैं, जिनके विमल विवेक ॥१३॥
चैत शुक्ल दशमी नखत, पुष्य भौम दिन जान ॥
गंड योग तैतिल करण, भरत सुजन्म प्रमान ॥ १४ ॥
राम धर्म सो भरत तन, खेचर एक समस्त ॥
भरत कुंडली कल कलित, विधि इमि लिखी प्रसस्त१५॥
पुनि लछमन रिपुदमनको, जन्म येकही संग ॥
याते एकहि लग्न ग्रह, एक पांचहू अंग ॥ १६ ॥
चैत शुक्ल एकादशी, अश्लेपा बुधवार ॥
वृद्धियोग गर करणमें, दुहू जन्म निरधार ॥ १७ ॥
लपण शत्रुदन लग्न ग्रह, राम सरिस सब ठान ॥
चहूं कुंडली यादि विधि, विधि विरचित शुभ दान ॥१८॥

औचक उजास विकास विमल प्रकाश दश दिग आसभो ॥
तिहुँ भास भो महि खासभो अहिवासभो आकाशभो ॥ २२ ॥
तिहि देखि शेष महेश अरु अमरेश अति चित चकितभे ॥
सब देश सहित नरेश भेस दिनेशहु थिर थकितभे ॥
नहिं शेष कहुँ तम लेश सकल कलेश गो असुरेशमें ॥
रसिकेश रूप रमेश मोद प्रवेशभो अवधेशमें ॥ २३ ॥
पुनि सबहि जानो हर्ष मानो राम रूप प्रकाशभो ॥
जै जैति अवध किशोर शोर त्रिलोक सहित हुलासभो ॥
नभ जाय देव बजाय दुंदुभि सुमन झरि बहु लावहीं ॥
पुनि आय कौशल नगर लखि सुखदाय आनँद पावहीं ॥२४॥
गंधर्व किन्नर करहिं गान सु अप्सरा गण नाचहीं ॥
सब अंग पूर उमंग ढंग अभंग रंग सुराचहीं ॥
सुत मुख विलोकत कौशलाके हीय सुख न समात है ॥
मानहु निहारि मयंक पूरण सिंधु अति उमगातहै ॥ २५ ॥
नृप नारि सब सानंद अति मुख चंद लखि रघुचंदको ॥
मणि वसन भूपण वारि परसहिं अंग सुत सुख कंदको ॥
दासी जुवासी दासि दासी तेउ सुवन निहारिकै ॥
पावें सु औरहु वारि डारें वित्त वित्त विसारिकै ॥ २६ ॥
तिहि समय दशरथ राज हियको अमित सुख को कहि सकै ॥
है अकथ वरनन न जाहि वरनत शारदा रसना थकै ॥
जिहि भाग्य प्रभुता हेरि लघु लागत विभव सुरराजको ॥
तिहुँ लोक पति भो पुत्र सो महाराज सम है आजको ॥ २७ ॥
सब अवधवासी सुकृतरासी हिय हुलासी धावहीं ॥
आनन्द भरि भरि दान करि करि अमित वित्त लुटावहीं ॥
प्रति सदन शोभित हेमकुम्भ पताक वन्दनवार हैं ॥
वर नारि गावहिं सोहि लै बहु होत मंगलचार हैं ॥ २८ ॥
बहु भीर भारी भूप द्वार खुले भँडार अपार हैं ॥
जन देत दान यथेच्छ लेन सु देत सकल उदार हैं ॥

चहुँ नृत्य गान अनूप अगणित बाजने बहु बाजहीं ॥
छायो सु दुंदुभि शोर मानहुँ घोर घन घन गाजहीं ॥ २९ ॥
आनंद परमानंदके मधि और महदानंद भो ॥
सुत तीन प्रगटे बहुरि रघुवर बंधुवर निरद्वंदभो ॥
है एक राम समान श्याम जु दोय और सुरूपहैं ॥
तनु तेज शोभा सरस चारहु सुवनपरम अनूपहैं ॥ ३० ॥
सुललाम सब सुखधाम शोभित कौशला सुत रामहैं ॥
छवि मन हरत बहु भरत कैकेयी सुवन अभिरामहैं ॥
द्वै पुत्र लछमन शत्रुहन सुठिहैं सुमित्राके भले ॥
तिहुँ कल्पलतिकामे यथोचित सरस फूल मानहु फुले ॥ ३१ ॥
चहुँ बाल सुंदर तदपि सबते सरस शोभा रामकी ॥
जिहि निरखि लागत चंद मंद लाग छवि शत कामकी ॥
सुनि जन्म उत्सव अवध आवैं देव दशरथ द्वारपै ॥
अति होत मोद विनोद भारी भीर भूप अगारपै ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

प्रगटे अनूप पुत्र चारि अवधेश जूके जैजैकार जोर चहुँ ओर सोरहै उतंकु ॥ भारी भीर भूप द्वार भवन भँडार खुले दान भो अपार कोऊ जगमें रहो न रंकु ॥ दिवस भयो सो येक मासको अभूत हेरि रसिक विहारी गुणी गणक गनैंहैं अंकु ॥ रंचहु न पावैं भेद अधिक अचंभा जानि हेरि हेरि भानु फेरि फेरि कै मिलावैं संकु ॥ ३३ ॥

दोहा—भयो अमित आनंद चहुँ, प्रगटे चारि कुमार ॥
किये विधान अनेक वर, लोक वेद अनुसार ॥ ३४ ॥
छठी दिवस उत्सव महा, भयो यथोचित जान ॥
भूप भवन रनिवास मधि, अति अनंद उमगान ॥ ३५ ॥
सो०—अमित नारि नर वृंद, साजि साजि वर साज बहु ॥
आवहिं अतिसानंद, राम बधाई हित हरषि ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

नीर भरे विशद विचित्र कुंभ कंचनके शोभित सपल्लव सदीप शीशधारेहैं ॥ थार वर बानिक जड़ाऊ मणि माणिकके लीने साज

मंगल जे पूरित सँवारेहैं ॥ रसिकविहारी सुख देनी गुणऐनी तीय नख शिख अंग शुचि सकल सिंगारेहैं ॥ मंजु मृगनैनी पिकवैनी कल गान कीने वृंद वृंद आवैं नित कौशिलाके द्वारेहैं ॥ ३७ ॥

दोहा–इमि एकादश दिवस जब, बीते सहित हुलास ॥
नामकरन हित सकल जन, जुरे आय रनिवास ॥ ३८ ॥
तब वशिष्ठ शुभ समय लखि, भूपति रुचि अनुसार ॥
अर्थ सहित चहुँ सुतनके, कीने नाम उचार ॥ ३९ ॥
बहुरि चारिहू सुतनके, विधि विरचित ग्रह जोय ॥
सविधि पुजाय नृपाल युत, सबहि सुनाये सोय ॥ ४० ॥
ग्रह फल सुनि प्रमुदित नृपति, सहित सकल रनिवास ॥
दोऊ गुरु द्विज वृंद युत, पूजे सहित हुलास ॥ ४१ ॥
पुनि आनंद उछाह अति, दान मान बहु कीन ॥
पाय एकते एकसो, अपर एक इक दीन ॥ ४२ ॥
सो०–जैसो दान अपार, देत नृपति सुत जन्म सुख ॥
ताहूते अधिकार, होत सकल रनिवास नित ॥ ४३ ॥
इत नृप उत नृप नारि, पुर परिजन सेवक सखा ॥
निज निज वित्त बिसारि, करत दान सब मानयुत ४४
नृपदशरथ सजिसाज, करी सभा आनंदमय ॥
राजैं सकल समाज, यथा उचित मर्यादयुत ॥ ४५ ॥
देश देशके भूप, आये रघुवर जन्म सुनि ॥
सब सोहैं शुठि रूप, अवधनाथ दरबार बिच ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोशलाधिराज सोहैं सहित समाज साज राजैं द्विजराज दोऊ विधिते महेशते ॥ मंत्री वसुवेन देश देशके नरेश चहुं लक्षन निदेश देश शोभित सुरेशते ॥ रसिकविहारी धनेशते धनेश कोऊ शेष शेष रोष तोष कारक जलेशते ॥ दशरथ राज महाराजकी सभाते भूप भाजन रमेशते गनेशते दिनेशते ॥ ४७ ॥

सो०—या विधि अवध नरेश, विशद सभा बैठे रुचिर ॥
राजत मनहुँ रमेश, देवमंडली मध्यमें ॥ ४८ ॥
नृत्य गान रसरंग, होत कुतूहल विविध बहु ॥
सब उरभरे उमंग, राम जन्म आनन्द अति ॥ ४९ ॥
ताही छिन तहँ आय, द्वारपाल कीनी विनय ॥
सादर शीश नवाय, महाराज अवधेशसों ॥ ५० ॥
राजराज महाराज, विविध अपूरब कौतुकी ॥
सुनि प्रभु सुयश दराज, आये उत्तरदेशते ॥ ५१ ॥
जो तिन होय रजाय, तौ इत सकल सुआवहीं ॥
राज दरश वर पाय, निज इच्छित फल सो लहैं ५२॥
द्वारपालके बैन, सुनि भूपति आज्ञा दई ॥
आवैं सब गुणऐन, दरशावैं निज निज कला ॥ ५३ ॥
द्वारपाल हरपाय, शीश नाय तहँ जाय तिन ॥
दीनी मुदित रजाय, आये भूपति निकट सब ॥ ५४॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोऊ बालरूप वर विमल अनूप अति कोऊ बहु वृद्ध सिद्ध तेज तनु छायेहैं ॥ कोऊ हैं किशोर कोऊ तरुण सजोर कोऊ वसनविहीन कोऊ भूपण सजायेहैं ॥ कोऊ झुकि झूमैं कोऊ गिरि गिरि भूमैं उठैं कोऊ व्यंग्य बोलैं कोऊ नृत्य गीत लायेहैं ॥ रसिकविहारी हेरि कौतुकी अनोखे चोखे सहित समाज राज मंद मुसक्यायेहैं ॥ ५५॥

दोहा—लखि भूपहि मुद जैति कहि, सो कौतुकी सुजान ॥
करन लगे लीला रुचिर, तनु धरि विविध विधान ॥ ५६ ॥

अथ कौतुक-शंभु ॥ घनाक्षरी कवित्त।

आयो एक अंबरके मारग दिगंबर ह्वै गावत सुढंग रंग छावत [illegible]नतें ॥ कबहुं दिखावै पंच आनन दुरावै कबौं तीय बनिजावै [illegible] नटानतें ॥ रसिकविहारी कबौं खडग त्रिशूल धारी वीर [illegible] भुजा फेरत पटानतें ॥ कबौं प्रगटावै भाल ज्वाल दरशावै व्याल कबौं वारिधारा शुभ्र छोड़त जटानतें ॥ ५७ ॥

वीरभद्र।

वीर वनि आयो एक कौतुकी नरेश ढिग कह्यौ महाराज राज भवन पधारिये॥ रसिकविहारी सुखकारी साज साजे गेह रावरेहीहेत कीनी सकल तयारिये॥अशन धतूर आदि।भूर भांति भांतिनके सरश अभंग भंग नीर मद करिये॥ वृश्चिक विषोरे कारे नाग फन वीर वहु देहों यह भेटे मेरे संग जो सिधारिये॥ ५८॥

ब्रह्मा।

ताहि छिन दूजो द्विज रूप धरि बोलो वेगि आयो दूरी तेहां सुनि सुयश प्रतापको॥ वृद्धहों घनेरो पीत केश ममहेरो भूप रसिकविहारी नित्य कारी वेद जापको॥ देखौं आठ नैनते सुनौं में आठ श्रौननतें ताहू पे न पायो भेद बूझौं तव आपको॥ औरनके एक मुख मेरे क्यों बनाये चार दीजिये वताय का विगारो विधि वापको॥ ५९॥

यमधर्मराज।

एक वर कौतुकी सुकीनी है अनूपकला उछलि महीतें नभ मंडल समायगो॥ लैके संग अमित अनेक जीव जंगमको वेगहि तड़ाक पुनि ताहि ठाम आयगो॥ देखत सभाके ते सु देव भये जंतु सव आपह्व कराल रूप वहुरि दुरायगो॥ रसिकविहारी फेरि धरिके सु देश वेश वनिकै नरेश अवधेशहि रिझायगो॥ ६०॥

सनकादिक-सवैया।

आय अनाचक बीच सभा वर बालक चार सुनाचन लागे॥ नाचतहीं तिय रूप भये चहुँ चंचल चारु सु जोवन पागे॥ फेरि विलोकतहीं शिशुह्वै मचले पुनि हंसवने उड़ि भागे॥ देखतहीं रसिकेश नरेश महाअनुराग आनंदमें पागे॥ ६१॥

गणेश-कवित्त।

एक आय बोलो मेरे गेहके चरित्र भूप सत्य सुनिये पै होंती कहन डरातहीं॥ वापद भिखारी मम माता मतवारी पुनि भ्राता कोपकारी तिहुं शोचमें रहातहीं॥ रसिकविहारी महाराज बात भारी और

रावरे समीप सोऊ भापत लजातहीं ॥ माई सेर भाईहु छसेर पितु पांच सेर आपहींमें थोरो नित्य मन भर खातहीं ॥ ६२ ॥

षट्वदन ।

स्वाँगी एक आय घबरायके पुकारो धाय धर्मराज तोऊ ऐसो कलह मचोरहै ॥ धावे मात वाहन रिसाय तात वाहन पै त्योंहीं मात वाहन पै तातहू खचोर है ॥ वाहन हमारो झहराय पितु भूपणपै भूपण पिताको बंधु वाह पैत चोरहै ॥ रसिकबिहारी नृप कीजिये निसाफ आप मेरे घर नित्य यह झगरो मचोरहै ॥ ६३ ॥

इंद्र ।

एक कछु बोल डोल दैके भूप भौन बीच ओट करि बेगि कल्पवृक्ष रचि दीनोंहै ॥ रंचक दुराय चिंतामणिको बनायो मेरु रसिकबिहारी गुणी परम प्रवीनोंहै ॥ हरित तुरंग औ मतंग प्रगटाये सेत फेरी निजरूप फेरि परत न चीनोंहै ॥ निरखि अनोखे खेल बोले परितोपे नृप नीको इंद्र जाली इंद्र जाल जाल कीनोंहै ॥ ६४ ॥

नारद ।

बोलो येक आय बात सुनिये अवधराय अनुचित आप पै कहौं हौं सुनि नारिनो ॥ जोई तुम नागे तुम तातही सुनागे तात तात ही सुनागे तात तात तात नागेनो ॥ फेरि तुम नागे तुम पुत्र ही सुनागे पुत्र पुत्र को सुनागे पुत्र पुत्र पुत्र नागेनो ॥ रसिकबिहारी [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ६६ ॥ [illegible]

सुनि सकल कौतुकी हर्ष पाय। बोले सुजैति जै अवधराय ॥
तुव पुत्र चारि प्रगटे अनूप। हम सबहिं चहैं तिन दरश भूप॥७०॥
नृप रूप प्रेम कौतुकिन केर। लखि कह्यो गुरुहि करजोरि हेर ॥
इन यथायोग लै सबहिं साथ। दीजे दिखाय चहुँ सुवन नाथ॥७१॥
सुनिकै वसिष्ट ले सबहिं संग। वर उचित रीति संयुत सुढंग ॥
छविधाम चारहु सुत ललाम। दरशाय दये हिय भरि सुठाम ॥७२॥
सो सकल कौतुकिन हेरि बाल। किलकैं चलाय कर चरण लाल॥
स्वाँगी सुदेखि शोभित स्वरूप। हिय लई धारि वह छवि अनूप॥७३॥
आनंद मगन ह्वैकै अपार। कीनी सु देव वाणी उचार ॥
कहि जैति जैति कौतुकिय वृंद। गवने सु गेह जित तित सुछंद ॥७४॥
इमि राम जन्म उत्सव अभंग। चहुँ होत अवधपुर राग रंग ॥
नट भाट नर्तकी गण अपार। वर विविध कौतुकी झुंडझार ॥ ७५ ॥
द्विज वृंद और याचक अनेक। गुण मंत्र एकते अधिक एक ॥
नित आय आय अवधेश द्वार। निज निज कलान ठानैं प्रचार॥७६॥
ते सबहि यथोचित दान मान। लहि होत हीय आनँद महान ॥
लखि नृपति दान प्रतिदिनसुरेश। सकुचात डरत संयुत धनेश॥७७॥

दोहा–अवध नृपतिके दानको, कछू न पारावार ॥
शेषहु भापि सकै न जो, वरणैं युगन हजार ॥ ७८ ॥

घ० कवित्त।

दीनै अवधेश ते गयंदनके भार भूमि वार वार झूमै शीश शेष-के छिलतहैं॥ रसिकविहारी दान सुनिकै त्रिकूट कूट कंचन रजत मेरु शंकते हिलतहैं॥ संकल्प नीर भई सरिता गँभीर बहु जिनके प्रवाहना पयोधि पै झिलतहैं॥ खोजेहु अखंड नवखंड महि मंडल में एकहु न पुंगीफल तंदुल मिलतहैं ॥ ७९ ॥ अंवरते अंबर दिगंवर वरंवरभो भूपणको भूपण रहेहि भूपणनको ॥ मानको नमान मानको नमान मान देखि सूखनते रूखन मिटो-है रुखननको ॥ रसिकविहारी भये रसिकविहारी सब दूपन विदूपन भयेहि दूपननको॥ दशरथ दानके निदानको निदान यही पूपनते पूपन जनात पूपननको ॥ ८० ॥

दोहा—याहीविधि नितहोत वहु, दान विधान अपार ॥
लोक वेद कुलरीति मय, सकल मंगलाचार ॥ ८१ ॥
राम दरश हित आवहीं, सुर नर नाग अपार ॥
अवध निवासी रूप धरि, सेवत विविध प्रकार ॥ ८२ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, सुर नर सब रतधर्म ॥
कुशल हेतु चहुँ बंधुकी, संतत करत सुकर्म ॥ ८३ ॥
यौंहीं अति आनंदमें, पगे सकल पुर लोग ॥
कहत मुदित अब सफलभो, नेम धर्म जप योग ॥ ८४ ॥
मुदित अयुध्यानगरके, वासी परम सुजान ॥
वर्णत चारहु बंधुके, गुणगण रुचि अनुमान ॥ ८५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

अगम सनेह सिंधु उमगो विलोकि जाहि सज्जन चकोरनके हीय सुख है गयो॥रानी अनुमोदिनी कुमोदिनी विकासीं मंजु भूप उर भूमिमें प्रकाश अतिहीं छयो ॥ रसिकविहारी पाप ताप तमटारी लोक शोक हर शीतकर शीत करते दयो॥पूरण कलाको शुद्ध प्राची दिशि कौशिलाते स्वच्छ रामचंद्र चारु चंद्रमा उदै भयो ॥ ८६ ॥ मंजुल मृणाली मृदु कौशलादि रानी शुभ्र जिनते प्रगटि रूप अनुपम भासेंहं ॥ लोचन विशाल पत्र कोस हिय मध्य भूरि पूरित पराग कृपा विमल विलासेंहं ॥ रसिकविहारी भूप धर्म रवि तेज फूले फैली जस गंधि भक्त भ्रमर हुलासेंहं ॥ अवध तडाग भरो सलिल सनेहतामें राजपुत्र चारु चारिकमल विकासेंहं ॥ ८७ ॥

दोहा—इहि विधि पुरवासी सकल, नाम रूप गुण गान ॥
करत चारहूं बंधुके, धन्य जन्म निज जान ॥ ८८ ॥
अवध वासिनी सकल तिय, नित प्रति हिय हुलसाय ॥
बार बार चहुँ बंधुको, लखें जाय दुलराय ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

आरती उतारैं कोउ गहैं नोनवारैं कोऊ नीर फेरि डारैं कोऊ मंत्र-नतें झारैं ॥ कोऊ दुलरावैं मलरावैं हलरावैं कोउ चुटकी बजावैं को-

ऊ देति करतौंरहैं ॥ रसिकविहारी भरीं परमप्रमोद नारी सहित वि-
नोद गोद लैकै चुचुकारेहैं ॥ आय आय आनँद उमाय चित चाय
चाय धाय धाय जाय चहुँ बालक निहारैहैं ॥ ९० ॥

दोहा—सकल मातु अवधेश युत, पुर परिजन समुदाय ॥
निरखत चारहु बंधुकी, बालकेलि सुख पाय ॥ ९१ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

छोटे पद पाणि लाल छोटी आंगुरीहु लाल छोटे नख लाल छो-
टी रेषा लाल लालहैं ॥ कलित कपोल लाल लोचन ललित लाल
अधर अनूप लाल लाल मुख लालहैं॥लाल लाल भूपण वसन तन
लाल लाल रसिक विहारी सब साज भौन लालहैं ॥ लाल पालनामें
लाल फूलनकी सेज लाल खेलैं नृपलाल लै खिलौना लाल लाल
हैं ॥ ९२ ॥ झूलैं माणि मोतिनके झुमका विशाल तिनैं हेरैं टकलाय
हँस फेरि हेरि फूलैंहैं ॥ फूलैं हैं विलोकि बाल चहुँ दिशि जोधैं पुनि
होवैंहैं अधीर रोवैं सब सुधि भूलैंहैं॥ भूलैंहैं रुदन जब मातु पय प्यावैं
तब बहुरि आनंद है कलोलनमें तूलैंहैं ॥तूलैंहैं न या सुखपै कोटि
ब्रह्मलोक सुख रसिकविहारी लाल पालने सुझूलैंहैं ॥ ९३ ॥
कौशिला सु कैकयी सुमित्रा आदि रानी सबै एकनते
बालन लै एकन झिलावतीं ॥ कोऊ ले उछंग दुलरावतीं उमंग रंग
कोऊ चूमि चूमि मुख मुखसों मिलावतीं ॥ रसिकविहारी मन मुदित
हँसावतीं हैं अंगुरी ते कलित कपोलन हिलावतीं ॥ भूपन वसन
धन वारिकै लुटावतीं हैं हिय हुलसावतीं यों सुतन खिलावतीं॥९४॥
रसिकविहारी प्यार करि करि राम मात वार वार झंगुली नवीन
पहिरावै है ॥ कबहुं गुलाबी आबी धानी आसमानी कबौं कबहूं
गुलाली औ जंगाली सरसावैहै ॥ कबहूं सुरंग श्वेत नारंगी बदामी
श्याम कबहूं हरित पीत नील छवि छावैहै ॥ मानो ऋतु पावनमें
सजल पयोद श्याम संध्या समै अमित सुरूप दरशावैहै ॥ ९५ ॥
चित्रित कपोल कल कज्जल विलोकि दाठि कौशिला दरपि दीय मुन
मुख धोयोहै ॥ ता छिनकी शोभा मंजु वरणी नजाय मोपै गनिक-

विहारी जो अनूप रूप जोयो है ॥ श्याम जल बूँदें पीत रंगके झंगापे परीं तापे लसो बघना विचित्र गुन पोयो है ॥ मानों नीलगिरिपै विछायकै वघंबर सो अंबर विहाय बालचंद आय सोयो है ॥ ९६ ॥ कबौं अति रोवैं कबौं निपट अधीर होवैं कबौं नहीं सोवैं टकलायकै निहारैहैं ॥ कबौं नाहिं छीवैं मातु अंचल न पीवैं पय अंकमें रहैं ना पानि पद झझकारे हैं ॥ सुतहि विलोकि जिय जननी विहाल ह्वैकै बांधैं जंत्र तंत्र करि राई नोन वारैहैं ॥ रसिकविहारी होयँ मुदित घनेरे जब आयकै वसिष्ठ राममंत्र पढ़िझारैहैं ॥ ९७ ॥ चौंकैं चौंकि चौंकि अति रोवैं नाहिं सोवैं रंच होवैहैं अधीर क्षीर पीवतहीं भूलैरी ॥ किलकैं न नेकौ काहू हेरि हिलकैं नहेली निरखि रमैया मो हियमें दुखहूलैरी॥ रसिकविहारी मातु कौशिला सहेलिनसों कहैं कोउ लावो झारि लावै गात धूलैरी ॥ कलनापरैहै एक पल ना भयो धौं काह ललना हमारो आज पलना न झूलैरी ॥ ९८ ॥

दोहा–इहि विधि बीते मासपट, शुभदिन समय निहार ॥
अन्नप्राश नीको विशद, उत्सव भयो अपार ॥ ९९ ॥
भोजन दान विधानको, वरणौं इतो नज्ञान ॥
अकथनीय आनंद सों, बनत कियेही ध्यान ॥ १०० ॥
प्रतिदिन दशरथ भवन जो, उत्सवहोयँ सदायँ ॥
सो शतशेप गणेशपै, रंचहु कहे नजायँ ॥ १०१ ॥
नित नित होत अनंद अति, दूनो हृदय हुलास ॥
दूनो नृपसुत तेज बल, संतत करै प्रकास ॥ १०२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

दिन दिन दूनो प्रगटात रूप राघवको दिन दिन दूनो तनु तेज वरसातहै ॥ दिन दिन दूनो औध मंगल जनात चहुँ दिन दिन दूनो लंक दुख दरशातहै ॥ दिन दिन दूनोहीं सनेह उमगात उर दिन दिन दूनो नित्त चित्त हरसातहै ॥ रसिकविहारी दिन दूनो अधिकात वित्त दिन दिन दूनो सबै सुख सरसातहै ॥१०३॥शोभित सुवन चारौ कौशिला महल मध्य विचरत जानु पानि इत उत घेरि

घेरि ॥ गिरत सु भूमि उठि रोवैं पुनि जोवैं चहुँ आप चुप होवैं एक एकनको गेरि गेरि॥ धूसरित धूरि भूरि पूरित वसन अंग खेलत उमंगते अभंग रंग फेरि फेरि ॥ अति सुख छावैं मात आनंद अघावैं भावैं रसिकविहारी हुलसावैं हिय हेरि हेरि ॥ १०४ ॥ धावत वकैंया ह्वै चिरैया गहिवेको कवौं देखि परछैंया कवौं रोवत डरायकै ॥ कवौं मचलाय भूमि लोटत रिसाय कवौं चारौ भाय खेलैं एक एकन गिरायकै ॥ कवौं प्रतिबिंव मणि खंभन विलोकि हँसैं रसिक विहारी कवौं रहत चुपायकै ॥ जननी निहारि मुख हरपि उठावैं अंक तव हुलसाय रहैं अंक लपटायकै ॥१०५॥ बिथुरी लटूरी मुख सोहैं घुँघुरारी कारी रुचिर दंतूली दोय लागत पियारीहैं ॥ धूसरित धूरि अंग पूरित उमंग भरे रसिकविहारी चहुँ बंधु सुखकारीहैं ॥ करत उमाह गहि भीत उठिवेकी फेरि गिरत वहोरि जोर भरत हुँकारी-हैं ॥ सव जननीके जननीके मन मोद हेरि अवधविहारी खेलैं अजिर विहारीहैं ॥ १०६ ॥

सवैया-कवित्त।

वात कहैं तुतरात हँसात लसै जलजातसों आनन नीको॥ आँगुरी हात गहात चलात डरात चलैं निरखात महीको ॥ पायँ डगात रुकात लखात सुमात उठातहैं जीवन जीको ॥ ज्योंरसिकेश हिये लपटात त्यों नेहवढ़ात घनों जननीको ॥ १०७ ॥

दोहा-कवहूँ हठि अचगरि करैं, छिन मचलैं उमगाय ॥
मात भुरावैं जवहिं तव, मौन रहैं हरपाय ॥ १०८ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

लाऊँ मैं मिठैया औ मलैया सो खवाऊं तुमें आऊँले चकैया झंझनैया सो सुनाऊँमैं ॥ नाऊँ मैं झपैया दरपैया जोमँगाऊँ गैया द्वारे है ववैया जोडैया सो भगाऊँमैं ॥ गाऊँ मैं सुहैया गीत रसिकविहारी सुनी दया जो पपैया रंग रैया सो वजाऊँ मैं ॥ जाऊँ मैं वलैया कहै मैया जो रनैया तुम सोवो नेक भैया तो जुन्हैयाको वुलाऊँमैं ॥ १०९ ॥

दोहा—इहिविधि वालविनोद वहु, करत लखत पितृ मात ॥
प्रतिदिन तन वल रूप गुन; अधिक.अधिक अधिकात ११०

घनाक्षरी—कवित्त।

ठुमकि चलेंहं मातु संग गहि आँगुरी को ठहरें ठुनकि फेरि मछलि रहें जवै ॥ कौशला प्रमोद भरि गोदमें उठाय चूमि अति दुलरावें सुख पावें विहसें तवै ॥ रसिकविहारी नर नारी लखि लालन पे तन मन प्रान धन वारत रहें सवै ॥ नितहि मनावै मैया देया ले धनैयां कर संगतिहुँ भैया मो रमैया खेलिहें कवै ॥ १११ ॥

सो०—योंही नित प्रति माय, देव मनावें हुलसि हिय ॥
वड़े भये रघुराय, खेलत वंधु सखान मिलि ॥ ११२ ॥
नारदादि ऋषिराज, ब्रह्मादिक सुरवृंद वहु ॥
राम. दरशके काज, गुप्त रूप नित आवहीं ॥ ११३ ॥
निरखत हिय भरि नित्त, सकल सुलक्षण रामके ॥
पुलकित प्रमुदित चित्त, करत परसपर गुण कथन ११४॥
चारहु वंधु ललाम, सखन संग शोभित भले ॥
वर विनोद अभिराम, करत लखत सव मुदित मन ॥ ११५ ॥

घनाक्षरी—कवित।

हृदय हुलास भरि देवता दरश आश आवें वनिभिक्षुक बजावें द्वार तुन्तुनू ।। त्योंहीं सुरवामा होय मानुपी अनूपरूप भूप भौन भीतर सुआय नचें थुन्थुनू ।। रसिकविहारी रघुरैया तिहुँ भैया संग खेलैं धाय नूपुर बजाय पाय छुंछुनू ॥ सव नरनारी हेरि शोभा मनलोभा थकैं व्यापैं अंग अंग अनुराग भई झुंझुनू ॥ ११६ ॥ छोटे छोटे वाल संग लीने करवाल छोटी छोटी ढाल छोटे तून वान औ कमान हैं॥ छोटी शीश चौतनी सुरंग अंग छोटे झंगा कटि पट पीत छोटे छोटे पद त्रान हैं ।। छोटे कण्ठ कठुला जलजहार छोटे छोटे छोटी छोटी पैजनीं विराजैं छविमान हैं॥रसिकविहारी चहुँ वन्धु चारु छोटे छोटे धाय धाय खेलैं सवै सुपमा निधान हैं ११७ अंगन फटिक भूमि विमल विशाल तहां चारौ वाल करत कलोल

कल केलैं हैं ॥ लीने धनुबान त्यों प्रफुल्लित प्रकाश मान जग सुख-दान करकंदुक सुझेलैं हैं ॥ रसिकविहारी लपटाय रघुराय अंक तीनो भाय धाय धाय गल भुज मेलैं हैं ॥ मानौं रतिनाथ ऋतुनाथ रातिनाथ तिहूँ शुभ्र सरिपाथर सनाथ साथ खेलैं हैं ॥ ११८ ॥

दो०—यहि विधि कौशलराजके, चारहु पुत्र अनूप ॥
विहरत भूपति भवनमें, मुदित मनोहर रूप ॥ ११९ ॥
समै समै सब सविधि वर, सहित वेद कुल रीति ॥
भये अमित उत्साह चहुँ, मुण्डनादि उपवीत ॥१२०॥
पढी सकल विद्या निपुन, भये परम गुणमान ॥
चारहु सुत अवधेशके, हैं सब कला निधान ॥ १२१ ॥
धर्म कर्म धारी चतुर, दानी परम दयाल ॥
नीति प्रीति ज्ञाता बली, चारहु दशरथ लाल १२२ ॥
यदपि चारहु बन्धुवर, रूपवन्त मतिवंत ॥
तदपि सबहिते रामको, बल गुण तेज अनंत ॥१२३ ॥
राम अनन्त अनन्त गुण, सुयश चरित्र अनन्त ॥
नाम एक त्रिभुवन विदित, यों वरणें सब सन्त॥१२४॥
सो कौशलपति पुत्रके, विशद चरित नवनित्त ॥
जनक जननि पुर लोग सब,निरखत प्रमुदित चित्त॥१२५॥

सवैया-कवित्त।

कबहूँ गहि बान कमान सजैं कबहूँ रथ बाजि गयन्द चढैं ॥ कबहूँ मृगया बन खेलत हैं लखि मात पिता मन मोद बढैं ॥ कबहूँ पुर हेरनको निकसैं चतुरंग अनी चहुँ संगकढैं ॥ रसिकेस लहैं पुर लोग अनन्द भली बिरदावलि वंदि पढैं ॥ १२६ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

धर धर कम्पत हैं शेषके सहस्र शीश दिग्गज अधीर टारें नर भर आंशू अच्छ ॥ नाटके बराह डाट गोपन रुपन चाट दलन सुमेरु खल भलन पयोधि मच्छ ॥ दशरथ नंद महाराजा रामचन्द्र सूकी

सखा मातु नृप सुत जननि, यों जानैं सतभाव ॥
हैं मेरेही सुवन सब, रंच न कछू दुराव ॥ १४४ ॥
चारहु राजकुमारके, मुख्य सखा तिन नाम ॥
वर्णतहौं इनते अपर, अमित सकल अभिराम ॥ १४५ ॥

छप्पय छंद।

सुंदर १ सेपर २ वीरसेन ३ मणिभद्र ४ निहारौ ॥ तेज रूप५रसिकेश ६ कलाधर ७ हृदय विचारौ ॥ वाणरूप ८ रसरास९मनोहर १० और-गुणाकर ॥ ११ ॥ मानद १२ पुनि पत्रीस १३ बहुरि वनपाल १४ गदाधर १५ ॥ रमनेश १६ पद्मकर १७ शीलनिधि १८ रसिकविहारी जानिये ॥ रघुबीर सखा ये अष्टदश अंतरंग पहिचानिये ॥ १४६ ॥

दोहा–रसिक रसाल १ सुभद्र २ अरु, कमलाकर३श्रुति जात४॥
कुशल ५ जटाधर६वीरमणि७,भरतसखा ये सात१४७
चक्रशाल १ रसमत्त २पुनि, वातप ३ मंडन ४ मानि ॥
बहुरि विहारी५ लषनके, पंच सखा ये जानि ॥ १४८ ॥
चार शत्रुहनके सखा, संतानक १ सुखदान ॥
दमन २ राज रंजन ३ लखौ, चामीकर ४ बलवान॥१४९॥
मुख्य सखा ये जानिये, पुनि इनके स्वाधीन ॥
अष्टोत्तर शत प्रति सखा, यूथप सखा प्रवीन ॥ १५० ॥
प्रति यूथप आधीनहैं, सखा पंचशत जानि ॥
पुनि सेवक सब सखनके, इनते न्यारे मानि ॥ १५१ ॥
अरु चारहु वर बंधुके, सेवक दास अपार ॥
अंतरंग शुचि सुभगतनु, बली प्रवीन उदार ॥१५२॥
सखादास संयुत सकल, तीनहु बंधु ललाम ॥
प्रीति सहित रघुचंदको, सेवतहैं वसु याम ॥ १५३॥
बंधु सखा सेवक सबहि, रघुवर युत सनमान ॥
यथा उचित राखत सदा, प्राणहुते प्रिय जान ॥ १५४ ॥

अथ श्रीरामचंद्रजीके सखानका

निर्णय चक्र।

सखानकी संख्या.	सखानके नाम	सखाप्रति यूथप	यूथपप्रति सखा	सर्वयूथपन के सखा	प्रतिमुख्य सखाके स्वाधीन।
१	सुंदर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
२	झेपर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
३	वीरसेन	१०८	५००	५४०००	५४१०८
४	मणिभद्र	१०८	५००	५४०००	५४१०८
५	तेजरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
६	रसिकेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
७	कलाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
८	वाणरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
९	रसरास	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१०	मनोहर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
११	गुणाकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१२	मानद	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१३	पत्रीस	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१४	वनपाल	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१५	गदाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१६	रमनेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१७	पद्मकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१८	शीलनिधि	१०८	५००	५४०००	५४१०८
सर्व	१८	१९४४	९०००	९७२०००	९७३९४४

चमू चतुरङ्ग देखि दङ्ग होत देवरच्छ ॥ रसिकविहारी जवै कढत सवारी तवै आहि करि कसक कराहि रहि जात कच्छ ॥ १२७ ॥

सवैया–कवित्त।

खौर दिये शिर चंदनकी धनु वान लिये औ कसे कटि भाथै ॥ मत्त गयन्दसी चाल चलैं छविसों निरखैं सरयू सरि पाथै ॥ वाल सखा शुचि सेवक वृन्द सुबन्धु लसैं रसिकेशहुसाथै ॥ औध निवासी सवै धनि जो इहि भांति लखैं नितहीं रघुनाथै ॥ १२८ ॥

दोहा–चारहु सुत अवधेशके, संग सखा अभिराम ॥
विचरैं सरयू तीरसो, लखैं मुदित मन वाम ॥ १२९ ॥

सवैया–कवित्त।

ढोटाहैं ये अवधेशक मानों सुबाल मरालके जोटाहैं आछे॥ लाल झँगा शिर चौतनी चारु लसैं कटिमें पट पीत सुकाछे ॥ हैंरसिकेश सु एकहि वैसके संग सखा चहुँ ओरते गाँछे ॥ देखु सखी सुखधाम छटा तिहुँ बंधु ललामहैं रामके पाछे ॥ १३० ॥

दोहा–विशद विनोदी रामत्यों, तीनहु बंधु अनूप ॥
सरयू तट युत सखनके, खेलैं रचि रचि रूप ॥ १३१ ॥
जैसे वल गुण रूप निधि, चारौ दशरथ लाल ॥
संग सखा तैसें सकल, रघुवंशिनके वाल ॥ १३२ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

कोऊ धनु वान धारी कोऊ तो कृपान धारी कोऊ शक्ति धारी शूल धारी गदा धारीहैं ॥ कोऊ कुंत धारी वज्र धारी चक्र धारी कोऊ कोऊ खड्ग धारी औ उदंड दंड धारीहैं ॥ यूथप सखान पारी बंधुनकी न्यारी न्यारी ठानैं कला भारी एक येकन प्रचारीहैं ॥ सरयूके तीर खेलैं सहित उमंग रंग रसिकविहारी संग अवध विहारीहैं॥१३३॥कोऊ लै तुरंग स्याह सवजा सुरंग नील नुकरा कुमैत लाखी अवलख साजेहैं॥ चालत सुचालैं सहगाम औरु हालैं कोउ धावा कोउ कावा दै लंगूरी कोउ छाजेहैं ॥ कोउ मल्ल युद्धै ठानि रुद्धैहैं उदंड दंड मुद्गर प्रचंडफेरि कोऊ ताल वाजेहैं ॥ रसिक-विहारी कोउ वाना फेकि पट्टनते कोऊ भल्ल वानाके निशाना घालि

गाजे हैं ॥१३४॥ चीता श्वान जुर्रा कुही वाज वहिरीलै कोउ चलत अहेरी वर वीरता वखानके ॥ चंद्र कुज भागैं विधि सेनप सुभारती औ दुर्गा पत्र हेरिछोड़ें पौरुष पपानके ॥ निरखि कृपान वान वाहन सुरेश सती दुरत विहाय वल दशन नखानके ॥ रसिकविहारी अवधेशके कुमार चारु खेलत अहेर वन संयुत सखानके ॥ १३५ ॥

दोहा—कवहुँ चारहू नृप सुवन, संग सखा समुदाय ॥
रचत अनूप सुखेल वर, सरयू तट हुलसाय ॥ १३६ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

वनत रमेश राम भरत महेश होत लछमन शेष औ सुरेश शत्रुशालहैं ॥ सखन वनावैं हैं धनेश औ गणेश काहू रचत दिनेश काहू करैं निशिपालहैं ॥ काहु रूप साजैं कपि रीछ औ निषाद काहू निश्चर वनावैं काहू काहू मुनि वालहैं ॥ रसिकविहारी इमि ठानिकै अनोखो ख्याल सरयूके तीर खेलैं दशरथ लालहैं ॥ १३७ ॥ काहूकै वनाय मच्छ कच्छ जल वोरतहैं काहूको वराह रूप रचत करालहैं ॥ काहूको वनावैं मृगराज दीह देह धारी काहू लघु रूप कला करत विशालहैं॥ काहूको वनावैं गौर काहूको वनावैं श्याम काहूको कलंकी करैं करवालहैं ॥ ऐसे स्वाँग अमित सखानके वनाय हँसैं रसिकविहारी खेल खेलैं रघुलालहैं ॥ १३८ ॥

दोहा—इहि विधि नित कौशल नगर, विहरत राज कुमार ॥
खेलत खेल अनूप अति, निज इच्छा अनुसार ॥ १३९
निरखि राम गुण रूप वल, मुदित सकल पुर लोग ॥
चारु चार सुत संग वहु, सखा यथा जिहियोग ॥ १४०
सुर किन्नर आदिक विविध, नरतनु धरि हुलसाय ॥
सखा भये चहुँ वंधुके, अवध आय प्रगटाय ॥ १४१ ॥
ते प्रमुदित रघुकुल विषे, प्रगटे चारु कुमार ॥
सकल सखा नृप सुत चहूँ, वय वल वपु इकसार ॥१४२
शिशुतांते इक संगही, सव सुख भोग विनोद ॥
रचित निरंतर परस्पर, रहत सनेह प्रमोद ॥ १४३ ॥

सखा मातु नृप सुत जननि, यौं जानैं सतभाव ॥
हैं मेरेही सुवन सब, रंच न कछू दुराव ॥ १४४ ॥
चारहु राजकुमारके, मुख्य सखा तिन नाम ॥
वर्णतहौं इनते अपर, अमित सकल अभिराम ॥ १४५ ॥

छप्पय छंद ।

सुंदर १ सेपर २ वीरसेन ३ मणिभद्र ४ निहारौ ॥ तेज रूप५रसिकेश ६ कलाधर ७ हृदय विचारौ ॥ बाणरूप ८ रसरास९मनोहर १० और–गुणाकर ॥ ११ ॥ मानद १२पुनि पत्रीस १३ बहुरि वनपाल १४ गदाधर १५ ॥ रमनेश १६ पद्मकर १७ शीलनिधि १८ रसिकविहारी जानिये ॥ रघुवीर सखा ये अष्टदश अंतरंग पहिचानिये ॥ १४६ ॥

दोहा–रसिक रसाल १ सुभद्र २ अरु, कमलाकर३श्रुति जात४॥
कुशल ५ जटाधर६वीरमणि७,भरतसखा ये सात१४७
वज्रशाल १ रसमत्त २पुनि, वातप ३ मंडन ४ मानि ॥
बहुरि विहारी५ लषनके, पंच सखा ये जानि ॥ १४८ ॥
चार शत्रुहनके सखा, संतानक १ सुखदान ॥
दमन २ राज रंजन ३ लखौ, चामीकर ४ बलवान॥१४९॥
मुख्य सखा ये जानिये, पुनि इनके स्वाधीन ॥
अष्टोत्तर शत प्रति सखा, यूथप सखा प्रवीन ॥ १५० ॥
प्रति यूथप आधीनहैं, सखा पंचशत जानि ॥
पुनि सेवक सब सखनके, इनते न्यारे मानि ॥ १५१ ॥
अरु चारहु वर बंधुके, सेवक दास अपार ॥
अंतरंग शुचि सुभगतनु, बली प्रवीन उदार ॥१५२॥
सखादास संयुत सकल, तीनहु बंधु ललाम ॥
प्रीति सहित रघुचंदको, सेवतहैं वसु याम॥ १५३॥
बंधु सखा सेवक सबहि, रघुवर युत सनमान ॥
यथा उचित राखत सदा, प्राणहुते प्रिय जान ॥ १५४॥

अथ श्रीरामचंद्रजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकी संख्या.	सखानके नाम	सखाप्रति यूथप	यूथपप्रति सखा	सर्वयूथपन के सखा	प्रतिमुख्य सखाके स्वाधीन।
१	सुंदर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
२	शेपर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
३	वीरसेन	१०८	५००	५४०००	५४१०८
४	मणिभद्र	१०८	५००	५४०००	५४१०८
५	तेजरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
६	रसिकेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
७	कलाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
८	वाणरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
९	रसरास	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१०	मनोहर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
११	गुणाकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१२	मानद	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१३	पर्त्रीस	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१४	वनपाल	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१५	गदाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१६	रसनेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१७	पद्माकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१८	शीलनिधि	१०८	५००	५४०००	५४१०८
सर्व	१८	१९४४	९०००	९७२०००	९७३९४४

श्रीभरतजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकी संख्या	१	२	३	४	५	६	७	सब
सखानके नाम	रसिक रसाल	सुभद्र	कमला फर	श्रुतिजात	कुशल	जटाधर	श्रीरमणि	७
सखाप्रति यूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	७५६
यूथपप्रति सखा	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	३५००
यूथपनके सखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	३७८०००
प्रतिमुख्य सखाके स्वाधी-न सखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	३७८७५६

श्रीलक्ष्मणजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकीसंख्या	१	२	३	४	५	सब
सखानकेनाम	चक्रसाल	रसमत्त	वातप	मंडन	विहारी	५
सखाप्रतियूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	५४०
यूथपप्रतिसखा	५००	५००	५००	५००	५००	२५००
यूथपनकेसखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	२७००००
प्रतिमुख्यसखाके स्वाधीनसखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	२७०५४०

श्रीशत्रुघ्नजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकीसंख्या	१	२	३	४	सब
सखानकेनाम	संतानक	दमन	राजरंजन	चामीकर	४
सखाप्रतियूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	४३२
यूथपप्रतिसखा	५००	५००	५००	५००	२०००
यूथपनकेसखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	२१६०००
प्रतिमुख्यसखाके स्वाधीनसखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	२१६४३२

दोहा—नीति प्रीति मर्याद मय, रामधर्म धुर जान ॥
यथा योग चहुँ बंधुवर, करत काज सुखदान ॥ १५५ ॥
इहि विधि चारहु नृप सुवन, भये समर्थ सुरूप ॥
पितु ढिग सकुचे रहत अति, सो लखि प्रमुदितभूप ॥१५६॥
निरखि चतुर्दश वर्पके, सुत चारहू अनूप ॥
सकल साज मय भवन वर, चहुँन दये तव भूप ॥ १५७ ॥
रंग भवन रघुचंदको, खचित रचित मणि जाल ॥
रूप भवन शुचि भरतको, सुंदर विमल विशाल ॥१५८॥
क्रांति भवन वर लखनको, विशद प्रकाशित धाम ॥
चित्र भवन रिपुदमनको, अमल अधिक अभिराम ॥१५९॥
निज निज भवन सखान युत, रीति सहित नृप नंद ॥
हास विलास निशंक उर, करत सदा सानंद ॥ १६० ॥
पगे परसपर प्रेममें, यदपि चारहू भाय ॥
राम लपण रिपुहन भरत, तदपि मिले अधिकाय ॥ १६१॥
तिहूँ बंधू निज सखन मिलि, संयुत प्रीति प्रतीति ॥
सेवहिं श्रीरघुवीरको, सहित धर्म नृप नीति ॥ १६२ ॥
इहि विधि दशरथ राजके, चारहु कुँवर सुजान ॥
सवहि देत आनंद अति. दान ज्ञान सनमान ॥ १६३ ॥
मातु पिता पुर लोग अरु, सकल लोक नरनारि ॥
मुदित होत चहुँ बंधुको, बल गुण रूप निहारि ॥ १६४ ॥
कवि कोविद नट नर्तकी, जे जग गुणी अपार ॥
राम निकट सब आवहीं, पावहिं बहु सतकार ॥ १६५ ॥
द्विज मुनि संत गुणनिकी, सभा करत नित राम ॥
इहि विधि कौशल नगरमें, रहत मोद वसु याम ॥ १६६ ॥
सुर ब्रह्मादि प्रशंसहीं, अवध जननको भाग ॥
धन्य धन्य जे रामके, पगे परम अनुराग ॥ १६७ ॥

। श्री० रामर० द्वि० वि० श्रीरामजन्म वर्णनो नाम चतुर्थोवि० ॥ ४ ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] सुनाया ॥
[illegible] पन तन लाई ॥६॥
[illegible] रघु राजा ॥
[illegible] विनय भारी ॥७॥

दोहा—[illegible] रघु भूप वन, विचरत करत अहेर ॥
[illegible] छूटे सकल, भ्रमत कानन नग फेर ॥ ८ ॥
[illegible] दिन- क्षुधित तृषित अति भूप ॥
तहाँ नहीं जल फल कहूँ, विह्वल भये विरूप ॥ ९ ॥
ताछिन औचकहीं तहाँ, आयो यक वनपाल ॥
तिहि विलोकि ढिग टेरिकैं, निज गति कही नृपाल ॥ १० ॥
सो सुनि वेगहिं विपिनते, लायो कंद अनूप ॥
तिहिं भोजन करि तृप्त ह्वै, मुदित भये अति भूप ॥ ११ ॥
रघु प्रसन्न बोले वनप, माँगु जु तो रुचि होय ॥
मौन रह्यो मुसक्याय सो, भूपति मुख दिशि जोय ॥ १२ ॥
पुनि बोले नृप माँगु जो, अबहिं देउँ तुहि सोय ॥
[illegible] भाषी महा, दुस्तर देबो होय ॥ १३ ॥
[illegible] जो हम चहैं, काह निहारे पाई ॥
[illegible] तब नृप कह्यो, माँग जु तो मन भाई ॥ १४ ॥

सो अनखाय रिसायकै, बोलो महा उदार ॥
याही छिन इहि ठौर मुहि, स्वर्ण देहु शतभार ॥ १५ ॥
चकित भये नृप सुनतही, कीनो हृदय विचार ॥
अब याही छिन बिन दिये, धर्म सुयश हो छार ॥ १६ ॥
करि विचार भूपति तुरत, ले अनामिका रक्त ॥
तृणते पत्र सुपत्रपै, लिखो हाल कछु व्यक्त ॥ १७ ॥
बाण बाँधि तिहि धनुप धरि, छोडो वेगि नृपाल ॥
सो शर जाय कुवेर ढिग, पहुँचो अतिहि उताल ॥१८॥
लखि धनेश वह पत्र द्रुत, लै सुवर्ण बहु भार ॥
नभ मंडलह्वै भूप ढिग, वरसो आय अपार ॥ १९ ॥
चारि दंड नभते भई, बरषा हेम अखंड ॥
वनप गिरो नृप चरण पै, देखि प्रताप उदंड ॥ २० ॥
समाधान करि भूप अति, सकल कनक तिहि दीन ॥
चढ़ि तुरंग मग बूझिकै, वेगि पयान सु कीन ॥ २१ ॥
ऐसे रघु गुण अमितहैं, एक एक अधिकाय ॥
पुनि प्रताप कछु औरहू, कहौं सुनो रघुराय ॥ २२ ॥

चौ०-एक समय लंकापति रावन ॐ धरि द्विज रूप अनूप सुहावन॥
आय अवध लखि अति हरपायो ॐ पुनि रघुके रनिवास सिधायो२३
रघुरानी बहु तियन समेता ॐ सुखयुत बैठीं मुदित निकेता ॥
तहँ लंकेश विप्र तनु धारी ॐ गयो विलोकि उठीं सब नारी२४
द्विज वर जानि सकल शिर नायो ॐ हेम सिंहासन वेगि धरायो ॥
सो प्रतापमय रघु नृप केरा ॐ जटित अमोल रत्न चहुँ फेरा२५
तेजमंत सिंहासन भारी ॐ तापर दियो द्विजहि बैठारी ॥
बैठतही सब छल प्रगटाने ॐ दश शिर बीस भुजा दरशाने२६
सो देखत भागीं सब बाला ॐ धाय धसीं गृह अतिहि बिहाला
सोउरि उठि द्विज तनु पुनि कीनो ॐ रावण चलो कोऊ नहिं चीनो२७
इत सब तीय हीय भय पैठी ॐ दै कपाट शंकित चुप बैठी ॥
उत दशमुख कछु उरपि लजायो ॐ पुनि धरि धीर भूप ढिग आयो२८

ताछिन सरयू तट रघुराजा ❀ करत हुते संध्या शुचि साजा ॥
द्विज लखिकै सादर बैठारो ❀ करन लगे पुनि कृत्य सुखारो ॥ २९ ॥
औचक संध्या करत नृपाला ❀ कियो आचमन अतिहिं उताला ॥
पुनि करलै जल दर्भ सक्रोधा ❀ दक्षिण दिशि घालो नृप योधा ॥३०॥
पुनि आचमन कीन रघुराई ❀ करन लगे संध्या चित लाई ॥
सो न भेद रावण कछु जानो ❀ चकित चित्त अति जिय अकुलानो ३१
करै कल्पना अमित सुरारी ❀ बैठो चकित मौन मनमारी ॥
जब नृप सुचित भये करिनेमा ❀ तब बूझी विप्रहि सब क्षेमा ॥३२॥
दै अशीश कहि कुशल बहोरी ❀ दशमुख बोलो नृपहि निहोरी ॥
महाराज जो दर्भ चलायो ❀ सो गुण श्रवण हेतु हुलसायो ३३॥
तब नृप कही बात कछु नाहीं ❀ लंका ढिग इक धेनु चराहीं ॥
तिहि भक्षण धायो बनराई ❀ सो सुरभी मो दई दुहाई ॥ ३४ ॥
हतो केहरी गाय बचाई ❀ या हित कुश घालो अतुराई ॥
सुनि विस्मितह्वै शोक दुरायो ❀ पुनि अशीशदै भवन सिधायो॥३५॥
वेगि जाय सोई गति पेखी ❀ मृतक सिंह सुरभी मुद देखी ॥
ह्वै सशंक अति आतुर धाई ❀ सकल कथा निज तियहि सुनाई३६
मंदोदरी सुनत अकुलानी ❀ कही कंत सब लंक नशानी ॥
रघु प्रताप तुम रंच न जानो ❀ तिहि गृह माँहिं जाय छल ठानो३७
तब दशकंठ कही बिलखाई ❀ प्रिया कहा अब करौं उपाई ॥
जाते बचै प्राण परिवारा ❀ नृपति चक्रबल प्रबल अपारा ॥३८॥
तब मयसुता उपाय विचारी ❀ पतिहि संगलै भवन सिधारी ॥
तहँ जाय इक पीठ धरायो ❀ ताहि हेठ रावणहिं दुरायो ॥३९॥
निपट नग्नह्वै बसन बिहाई ❀ बैठी ताहि पीठपर आई ॥
करन लगी मंजन मिसधारी ❀ अतिहि सभीत दुहूँ पति नारी॥४०॥
इत रघु भूपहि महल बुलाई ❀ तियन दशा निज सकल सुनाई॥
जानो दशमुख छल महिपाला ❀ भये क्रोधवश लोचन लाला४१॥
तुरत भूप शुचि नीर मँगायो ❀ लै मंत्रित करि भूमि गिरायो ॥
तहँ महिने इक शर तनुधारी ❀ प्रगट भयो नृप आज्ञाकारी ॥४२॥

अति सकोप नृप दई रजाई ❀ लंकहि जाय वेग वल छाई ॥
वीसहुकर दशकंधर केरे ❀ बाँधि अवहिं आनौ मम नेरे॥४३॥
पायरजाय वाण करि कोहा ❀ गयो लंक रावण चहुँ जोहा ॥
तिया भवन पत्री दृढ़ जानो ❀ नग्न नारि लखि हिय सकुचानो४४॥
रोको द्वार शोर करि भारी ❀ कह्यो आव इत दुष्ट सुरारी ॥
लखि कराल शर कंपहि लंका ❀ भये निशाचर सकल सशंका४५
करत विचार वाण अकुलाई ❀ नग्न नारि देखौं किमिजाई ॥
पट धारे तिय जवहिं अन्हाई ❀ तव हौं गहौं रावणहिं धाई॥४६॥
इहि विधि गुणत भई वहु वारा ❀ उठत नहीं रजनीचर दारा ॥
इत विलंव लखि भूप रिसाये ❀ तीन वाण पुनि कोप पठाये४७॥
तेऊ जाय नग्न लखि नारी ❀ रुके द्वार चहुँ क्रोधित भारी ॥
तिनहुँ गये अति भयो विलंवा ❀ तव रघु कीनो कोप कदंवा ४८॥
सप्त वाण पुनि वोलि नृपाला ❀ दीनी तिनहिं रजाय कराला ॥
वाण सहित रावण गहि आवो ❀ कैलंकहि उखारि इत लावो ४९॥
सुनि रजाय सो वाण कराला ❀ गये लंक सव अतिहिं उताला ॥
पुर पहुँचत त्रिकूट चहुँ फेरा ❀ उठी ज्वाल अति भयो उजेरा ५०
भयो सिंधु खलभल महि कंपी ❀ धूरि पूरि लंका सव झंपी ॥
तव मयसुता हीय दृढ़ जानी ❀ अव सव भांति प्राणकी हानी५१
यह विचारि आतुर पटधारी ❀ आय द्वार कहि त्राहि पुकारी ॥
तृण दवाय द्विज दुहुँ कर जोरी ❀ विह्वल वोली वचन निहोरी५२
हां रघुराज शरण युत ईशा ❀ वचौ मोहिं आगे यह शीशा ॥
सुनत वैन सव शर अनुमानी ❀ है अवध्य अवला दृढ़ जानी५३॥
पुनि रघुराज शरण कहि टेरी ❀ अव कीजे कह जतन निवेरी ॥
यों विचारि शर एक उताला ❀ नृप ढिग आय कहो सव हाला५४
सुनि शरमुख तिय वैन सुदीना ❀ पुनि अवध्य अवला दृढ़ कीना ॥
ताहू पै सो शरण पुकारी ❀ सकल वात इमि हीय विचारी५५
तव वोले रघुराज कृपाला ❀ धर्म शरण रक्षण हम पाला ॥
याते चूक क्षमा सव कीनी ❀ अवला जानि अभयनिधि दीनी५६

जाहु सकल शर निज निज ठामा ❀ इमि सुनि पुनि आयो तिहिं धामा॥
कहो मानि रघु वचन प्रमाना ❀ लंका त्यागि गये सब बाना ५७
जब सब बाण गये तजि लंका ❀ तब रजनीचर भये निशंका॥
तुव कुल ऐसे बली नृपाला ❀ प्रगटे विपुल सुनौ रघुलाला ५८॥
सो रावण अब सबहिं सतावै ❀ हिये भीति रंचहु नहिं लावै॥
महि निछत्र यों दशमुख जानै ❀ मनमानै अधर्म सो ठानै ५९॥
महाबीर लंकापति रावण ❀ अस्त्र शस्त्र विद अमर सतावन॥
यहिविधिअमितव्यंग्यमुनि भाषी ❀ नारद गिरा राम उर राषी॥६०॥
इति श्रीरामर०ज०वि०रघुचारित्रवर्णनो नाम पंचमोविभागः॥ ५॥

दोहा–पुनि बोले मुनिराजसुत, रावण यदपि प्रचंड॥
तदपि भानुवंशी अधिक, ताहूते वरवंड॥ १॥
जिहि दशमुखको तेज बल, विदित लोक तिहुँ माहिं॥
अति उदंड रघुराज सो, तृणहुँ गिनों तिहि नाहिं॥ २॥
चौ०–सुनि सुनि मुख लंकेश प्रशंसा ❀ हँसि बोले रवि कुलअवतंसा॥
कहिय कछू रावण कर गाथा ❀ तब भाखी नारद ऋषिनाथा२
दोहा–सुनौ राम रावण प्रगटि, प्रथम महातप कीन॥
ह्वै प्रसन्न करतार तिहि, परम प्रबल वर दीन॥ ४॥
नर वानर तजि सबहिंते, भयो अवध्य सुरारि॥
परम प्रचंड उदंड चहुँ, कीनी विजय प्रचारि॥ ५॥
लंका वंक कुबेर ते, बरबस लई छुड़ाय॥
सैन कुटुंब समेत तहँ, दशमुख रहै सदाय॥ ६॥
अति उतंकहै लंक वर, वंक निशंक अखंड॥
यातुधानरक्षित सदा, चंड मंड़ वरिवंड॥ ७॥

घनाक्षरी कवित्त।

खाई सिंधु वितत त्रिकूट शतयोजनको तापै मणि हेममई नगर बसै निशंक॥ बीस दश योजनको आयत वितार जाके चार दृढ द्वार सबै रक्षित सुबीरबंक॥ अयुत सुलक्ष दश लक्ष कोटि कोटि

शत पूरवादि मध्य जोधा पाहरू विचारौ अंक ॥ रसिकविहारी साज अपर अपार भूरि चमू चतुरंगहे अभंग यौ उतंक लंक ॥ ८ ॥

दोहा—पुनि दशमुखके त्रासते, वहु सुर मुनि गंधर्व ॥
जाय जाय लंका सदा, सेवतहैं तिहि सर्व ॥ ९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

वेद धुनि छावैं विधि ग्रहन वतावैं गुरु शारदा वजावैं वीन गंधरव गावैंहै॥सदन समीर झारैं वरुन सुनीर ढारैं चंद्र छत्र धारैं भानु चँवर चलावैंहैं ॥ अनल सुपाककारी द्वारपाल दंडधारी देव त्रिपुरारी आय प्रातहि पुजावैंहैं ॥ रसिकविहारी तेज भारी यों दशाननको अमरसं शकयातें लंक नित जावैंहैं ॥ १० ॥

दोहा—परम प्रतापी अति वली, ऐसो निश्चरराय ॥
जाय जाय तिहुँ लोक चहुँ, विजय करी हरषाय ॥ ११ ॥

चौ०—अति वरिवंड उदंड सुरारी ❋ सुर नर नाग सवहिं दुखकारी॥
धाय धाय तिहुँलोक मँझारी ❋ हरी अमित वरवस वर नारी १२
पुनि कुवेरको धर्षित कीनो ❋ पुष्पकवर विमान हरि लीनो॥
मेघनाद तिहि सुत वलवाना ❋ सो सुरपतिहि जीति हरपाना १३

दोहा—याही विधि दशकंठ वहु, करै सदा उतपात ॥
पै तिहि वल गुण तेजते, सुर नर नाग डरात ॥ १४ ॥
एक समय कानन विषे, होत रहो वर जाग ॥
सकल अमर वैठे तहां, लीने निज निज भाग ॥ १५ ॥
ताही छिन तहँ लंकपति, आयो अति वलवंत ॥
दूरहिते तिहि देखि सुर, जहँ तहँ भगे तुरंत ॥ १६ ॥
निज निज तनु सुर गुप्त करि, धरे औरही रूप ॥
देव चरित सो रंचहू, लखो न निश्चर भूप ॥ १७ ॥
धरो सुरेश मयूर वपु, धर्मराजभे काग ॥
सरठ कुवेर सुहंसह्वै, वरुन दुरे इमि भाग ॥ १८ ॥

चौ०—इहि विधि सव रावण भयभारी ❋ दुरे रहे सुर निपट दुखारी ॥
जव दशकंठ गयो ध्रुव जाने ❋ सकल देव तव अति हरपाने १९

है निशंक निज निज तनु धारे ❀ परम प्रसन्न सुबैन उचारे ॥
जो सुर जाहि सुरूप दुराना ❀ताहि दियो सो वरवरदाना॥२०॥
मोरहि कही इंद्र हुलसाई ❀ रहौ व्याल ते अभय सदाई ॥
सहस नैन जिमि मो तनु माहीं ❀ तिमि तुव पक्ष चिह्न दरशाहीं२१॥
नील वर्ण तनु प्रथम तुमारा ❀ पै अब वर प्रभाव विस्तारा ॥
चित्रित पंख वर्ष प्रति पावो ❀ सुंदर रूप अनूप लखावो॥२२॥

दोहा—धर्मराज तव वायसहिं, वर दीनो हुलसाय ॥
विन वध मृत्यु न होय तुव, रहौ निरोग सदाय ॥ २३ ॥
पुनि जो तुमहिं करायहैं, भोजन विशद बनाय ॥
तिनके सकल कुटुंबि जन, मम पुर तृप्त रहाय ॥ २४ ॥

सो०—तव कुवेर वर दीन, हर्ष सहित कृकलासको ॥
द्रव्य सहित शिर पीन, रहै अंग कंचन सरिस ॥ २५ ॥

पद्धरीछंद।

वर वरुण दीन हंसहि अनूप। तुव श्याम श्वेत मिश्रित सुरूप ॥
तनु सकल आजते शुभ्र होय। अतिक्रांतिमंत वर विमल सोय२६

चौ०—सुर वरदै निज निज थल आये❀दुखी रहत दशमुख भय छाये॥
इमि लंकेश तेज वल भारी ❀ सुनि पुनि मुनिहि कही धनुधारी२७
कहिय मुनीश आजलग रावण ❀ कीने कर्म अनेक अपावन ॥
कहा हेत कितहूँ नहिं हारो ❀ वीर विहीन लोक भो सारो२८॥
तव नारद मुनि कही सुवानी ❀ सुनौ राम धनुसायकपानी ॥
बहुते ठौर पराजय पाई ❀ कहूं बँधो कहुँ गयो पराई॥२९॥
एक बार सो निश्चर राई ❀ लियो जाय कैलास उठाई ॥
तब शिव लखि दशमुख कर दापा❀पद अंगुष्ठ वाम गिरि चापा३०॥
दबे बीशहु भुज भूधरतर ❀ रोय कीन बहु वर्ष विनय वर ॥
तब दयालुहृ छोड़िं दये कर ❀ रावण नाम धरो ताको हर॥३१॥
कियो समर पुनि हरिसे जाई ❀ तहँते दशमुख गयो पराई ॥
सहसबाहुने सब विधि हारो ❀वाली कपि तिहिको मद गारो३२॥
पुनि रन अवध माहिं बहु बारा ❀ भिरो आय दशकंधर हारा ॥

इहि विधि अमित वार रघुराई ❀ सो बहु ठौर पराजय पाई ॥३३॥
पै वह निज भुजबल अधिकाई ❀ करत अनीति देव दुखदाई ॥
धर्म कर्म शुभ सकल निवारे ❀ द्विज सुर मुनि गोवृंद सँहारे ३४॥
दोहा–सुनि नारदमुनिके वचन; गर्भित अर्थ प्रमान ॥
बोले दुहुँ कर जोरिकै, दशरथसुत मतिमान ॥ ३५ ॥
चौ०–इमि अपराध रजनिचर कीना ❀ शापहु कोउ कबहुँ तिहि दीना ॥
सुनि बोले नारद हुलसाई ❀ भई शाप सो कहौं बुझाई ॥३६॥
एक समै अभिमान बढाई ❀ मुनिन दई लंकेश रजाई ॥
हौं भूपति ऋषि प्रजा अपारा ❀ दंड भरैं सब वित अनुसारा॥३७॥
सुनि मुनि सकल कही हम पांहीं ❀ कुश वल्कल मृगचर्म रहांहीं ॥
कंद मूल दल फल नित खांहीं ❀ यह तजि और पदारथ नांहीं॥३८॥
सुनि लंकापति कोपि सुनाई ❀ दंड न भरैं दंड सो पाई ॥
तब सब ऋषिन क्रोध उर छायो ❀ एक कुंभ अति वेगि मँगायो ३९॥
तामहँनिजानिज रुधिरनिकारो ❀ शोणित भरो सबनि घट सारो ॥
घोर शाप करि शोर सुनाई ❀ यहि घटतें रावण विनशाई ॥४०॥
यों कहि घट भेजो तिहि पासा ❀ हम मुनि करैं विपिनमें वासा ॥
है नहिं कछू भरैं कह दंडा ❀ नृप आज्ञा अति भई उदंडा॥४१॥
यातें भरो दंड हम येहू ❀ है मुनि गणको शोणित लेहू ॥
यों सुनि शाप डरपि लंकेशा ❀ वेगहि दीनो जनन निदेशा ॥४२॥
यह घटलै अति दूर सिधावो ❀ तिरहुत देश माहिं तुम जावो ॥
तहां भूमि खनि खात सुभारी ❀ ताबिच धरो कुंभ दृढ़कारी ॥४३॥
जातें फेरि न घट प्रगटावै ❀ बहुरि काह यह विघ्न जनावै ॥
सुनिजन जाययुक्तितिमिकीनी ❀ जिमि लंकेश रजायसु दीनी॥४४॥
दोहा–एक शाप यह मुनिनकी, सो जानौ रघुनाथ ॥
पुनि दूजी गंधर्वकी, भई कहौं सो गाथ ॥ ४५ ॥
एक समय मग जातहो, रावण संयुत सैन ॥
पौन लखो अति रुचिर गिरि, उर आयो तिहि चैन ॥४६॥

ताभूधर पर लंकपति, कियो मुदित विश्राम ॥
तिहि मगह्वै एक तिय कढी, सजे अंग अभिराम ॥ ४७ ॥
नारिहि लखि लंकेश तव, भापे मंजुल वैन ॥
को सुंदरी अकेलि तुम, कहां चली अधरैन ॥ ४८ ॥
तिय बोली हौं अप्सरा, इत गंधर्व रहात ॥
नल कूवर जिहि नामहै, तिन ढिग मैं नित जात ॥ ४९ ॥
सुनि बोलो ह्वै कामिनी, हौं लंकेश निहार ॥
काह लहौ गंधर्व ढिग, मो मिलि करौ विहार ॥ ५० ॥
सो सुनि तिय सब भांति ते, समुझायो लंकेश ॥
सो नहिं मानो रंचहू, ता हिय भयो कलेश ॥ ५१ ॥
ताछिन मदन विहालह्वै, गही तिया भुजवीस ॥
वरवस कियो विहार तहँ, अति निशंक दशशीश ॥ ५२ ॥
सो अप्सरा विहाल बहु, नल कूवर ढिग जाय ॥
रुदन कियो कहि निज दशा, गिरी चरण पर धाय ॥ ५३ ॥
तव गंधर्व सु ध्यान धरि, देखो सत्य सुहाल ॥
जैसो निपट अधर्म हठि, सकल कियो दशभाल ॥ ५४ ॥
ह्वै क्रोधित गंधर्व तव, दई रावणहिं शाप ॥
जाते फेरि न भूलि इमि, करै निशाचर पाप ॥ ५५ ॥
आजहिते परतीय गहि, जो हठि करै विलास ॥
तौ मम शाप प्रभावते, होय लंकपति नास ॥ ५६ ॥
रावण सुनि यह शाप दृढ़, तवहीतें भय मान ॥
गहै नारि पै शंकते, रहै ताहि रुचि जान ॥ ५७ ॥
द्वितिय शाप रावणहिं यह, घोर दई गंधर्व ॥
वेदवतीकी वात पुनि, कहौं सुनौ वह सर्व ॥ ५८ ॥

चौ०—एक समय सजि पुष्प विमाना ॐ वैठि कियो लंकेश पयाना ॥
कन्या विमल विपिन इक देखी ॐ वर सुंदरि तप रूप विशेखी ॥ ५९ ॥
निशचरपति आयो तिहि पासा ॐ कहै वचन भरि हीय हुलासा ॥
क्यों सुंदरी विपिन विच डोली ॐ कोहौ कहा नाम तुव वोली ॥ ६० ॥

शुद्ध हृदय निश्शंक सुवाला ❀ बोली विमल सुबैन विशाला ॥
कुशध्वजनाम ब्रह्मऋपि ख्याता ❀ सो मम पिता वेद वर ज्ञाता६१॥
वेद पढतहै मम पितु ज्ञानी ❀ तवहीं तिहि मुखतें प्रगटानी ॥
वेदवती याते मो नामा ❀ अर्थ सहित राखो अभिरामा६२॥
सो मम तात सत्य प्रण धारा ❀ विष्णु संग मो व्याह विचारा ॥
यहसुनिशंभु दैत्यपति कोप्यो ❀ खल मलीन सब धर्महि लोप्यो६३
अर्थ रैनि सो शंभु सिधारो ❀ सोवत मम पिताहि हति डारो ॥
तब मो मात पतिहि लै अंका ❀ जरीअनलअति दुखित निशंका६४
तबते मैं नित हरि आराधौं ❀ पितु प्रण सत्य हेतु तप साधौं ॥
सुनि दशकंठ मुदितह्वै भाखी ❀ यह अभिलाप वृथा हिय राखी६५
मम भामिनी होहु अब वाला ❀ त्यागौ तपहि कलेश कराला ॥
हौं कलेश तिहूँ पुर स्वामी ❀ मो सन्मुखकहँखगपति गामी ६६
सुनि बोली रे अधम सुरारी ❀ कह अधर्म यह बात उचारी ॥
मोहग ओट वेग खल होई ❀ पातक लगो वदन तुवजोई॥६७॥
सो सुनिरावण अधिक रिसाई ❀ खल तिहि केश गहे वरियाई ॥
ताछिन वेदवती कर हाथा ❀ भयो कृपान सरिस रघुनाथा६८॥
सो कन्या निज कर निजकेशा ❀ छिन्न किये द्रुत पाय कलेशा ॥
पुनि रावण प्रति वहु तप धारी ❀ बोलत भई क्रोध करि भारी ६९॥
रेखल हतौं तोहिं छिन माहीं ❀ पै यह बात उचित मुहिं नाहीं ॥
करौं शाप दै जो अब छारा ❀ तौ नशाय मम तप फल सारा ७०

दोहा—याते हौं पुनि जन्मलै, करौं वेगि तुवनास ॥
यौं कहि वेदवती तबै, कियो अग्निमें वास ॥ ७१ ॥
वेदवती जबहीं क्रुधित, अनल दाह तनु कीन ॥
तबहिं भये दशवदनके, दशहू वदन मलीन ॥ ७२ ॥
येही विधि लंकेशको, भई अनेकन शाप ॥
तऊ रजनिचर मंदमति, करै अमित नित पाप ॥ ७३ ॥
पै अब रावण शीश पै, फिरै काल मडरात ॥
जानि परै ध्रुव वेग सो, सहित कुटुंब नशात ॥ ७४ ॥

याही विधि बहु बार लग, नारद मुनि बहु गाथ ॥
कहे अनेक प्रसंगके, मुदित सुने रघुनाथ ॥ ७५ ॥
राम मुदित कर जोरि दुहुँ, ऋषि पद शीश नवाय ॥
बोले बंधु सखान युत, धन्य धन्य मुनि राय ॥ ७६ ॥
अहो भाग्य मम आज प्रभु, दरश कृपा करि दीन ॥
भयो कृतारथ अतिहि मैं, नाथ सुपावन कीन ॥ ७७ ॥
तब प्रसन्नह्वै मुनि कही, राम सकल गुण धाम ॥
जानत हौ सब हीयकी, हौ परिपूरण काम ॥ ७८ ॥
सुनि नारदके वचन वर, गर्भित अर्थ सहेत ॥
विहँसि राम मुनि पद गहे, बंधु सखान समेत ॥ ७९ ॥
जैति राम कहि मुनि गये, प्रमुदित सबहि सुनाय ॥
रघुवर ऋषिहि प्रशंसहीं, कहि कहि अमित प्रभाय ॥ ८० ॥
येही विधि रघुवंश मणि, नित सज्जन सतसंग ॥
करत रहत विचरत अवध, लखि सब हिये उमंग ॥ ८१ ॥
इति श्रीरामर० ज० वि० रावणवृत्तांत वर्णनोनाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा–अवध निवासी नारि नर, संयुत नृप रनिवास ॥
चरित चारहु बंधुके; लखि हिय होत हुलास ॥ १ ॥
ब्याह योग नृप सुत चहूँ, लखि सब करत विचार ॥
वधुन सहित कब देखिये, सुंदर राज कुमार ॥ २ ॥
सो इत अवध नरेशके, जब जनमे सुत चार ॥
तिहि पाछे मिथिलेश गृह, कन्या भई सुढार ॥ ३ ॥
सीरध्वज मिथिलेशकी, कन्या युगल अनूप ॥
अरु कुशध्वज नृप बंधुकी, दोय सुता सुख रूप ॥ ४ ॥
भूमिसुता मिथिलेश गृह, प्रगट भई जिहि भांति ॥
जन्म कथा तिनकी कहों, सहित रूप गुण पांति ॥ ५ ॥
चौ०-मिथिला नाम सुमंडल भारी ❀ विदित जनकपुर आनँद कारी ॥
विशद विशाल नगर शुचि सोहै ❀ निहि विलोकि सुरलोक विमोहै ॥

तहँ महीप सीरध्वज नामा ❀ तिनके कुशध्वज वंधु ललामा ॥
सो नृप परम धर्म नयनागर ❀ जिहिको यश तिहुँ लोक उजागर ॥७॥
ज्ञानीवर विरक्त भूपाला ❀ परमसंत गुणवंत विशाला ॥
सत्य विदेह देह धर राजा ❀ विमल विवेकी सकल समाजा ॥ ८ ॥
सीरध्वज अरु जनक विदेहू ❀ एकहि रूप नाम तिहु येहू ॥
पटरानी नृपकी मति ऐना ❀ धर्म रूप जिहि कहत सुनैना॥ ९ ॥

दोहा–जनक राजके पुत्र वर, वीर विशद गुण रूप ॥
लक्ष्मीनिधि यह नाम जिहि, यश विख्यात अनूप॥१०॥
प्रोहित नृप मिथिलेशके, शतानंद मतिमान ॥
वेद नीति ज्ञाता कुशल, त्रिकालज्ञ शुभदान ॥ ११ ॥
सुत संपति तिय धर्म सुख, सज्जन सहित समाज ॥
जनक नगरमें जनक नृप, करत अकंटक राज ॥ १२ ॥

चौ०–एक समय मिथिलामधि भारी ❀ परो अवर्षण काल दुखारी॥
कालहु पर दुकाल पुनि देखी ❀ चहुँ दिशि पीडित प्रजा विशेषी १३
सो कलेश लखिकै नर नाहा ❀ हृदय भयो अतिदारुण दाहा ॥
पूजन दान अनेक प्रकारा ❀ किये अमित मिथिलेश उदारा १४॥
तदपि न कहूँ रंच जल वर्षे ❀ प्रति दिन प्रजा नीरहित तरसै॥
तव भूपति सव मुनि द्विज ज्ञानी ❀ गुणी बुलाय सभावर ठानी १५॥
यथा योग सनमानि नृपाला ❀ सविनय वोले वचन रसाला ॥
सवही सुजन कृपा करि हाला ❀ कहिए जतन मिटै जिहि काला १६
वर्षे वेगि वारिधर वारी ❀ होय सकल मम प्रजा सुखारी॥
नृपति वचन सुनि सकल दृढाई ❀ यज्ञ भये विन काल नजाई॥१७॥
यह सुनि दई रजायसु राजा ❀ वेगहि सजो यज्ञ कर साजा ॥
होय शीघ्र मख सहित विधाना ❀ यथा वेद क्रतु कर्म वखाना १८॥
वेद विहित सव साज सजाई ❀ नृप कर महि शोधन विधि आई॥
कंचन हल वर विशद वनाना ❀ यथा उचित द्विज मुनिन वनावा १९
सतानंद आयसु लै राजा ❀ चले मुदित महि शोधन काजा॥
भूपति चलत सगुण वर भारी ❀ भये निरखि सव भये सुखारी२०॥

द्विजन सहित तहँ जाय नरेशा ॥ सविधि कृत्य करि सकल सुदेशा।
पुनि हल गहिकर जनक सुजाना ॥ महि शोधन अरंभ वर ठाना २१
सप्तावृत्त होत हलरेषा ॥ महिगत कुशभो अचल विशेषा।
सो हल रंच न चलै चलावा ॥ रुको सीत नृप लखि दुख पावा२२।

दोहा–औचकहीं तहँ भूमिमें, भयो प्रकाश अपार॥
लखि चौंके चित चकितह्वै, सकल लोग इकवार॥२३॥
पुनि नृप हेरे सीत ढिग, हल रेखा विस्तार॥
भूमि विवर मगह्वै कढी, प्रबल अनल सम झार॥२४॥

चौ०–बहुरि सीत संयुत इक कन्या ॥ भूदलते प्रगटी अति धन्या।
नृप विलोकि तिहि धाय उठाई ॥ दीपति दिव्य देह बहु छाई २५।
अमित तेज तनु भयो प्रकासा ॥ छायो भ्रम दशहू दिग आसा।
सो विलोकि जहँ तहँ तिहुँ लोका ॥ दौरे विपुल सु होय विशोका२६।

घनाक्षरी कवित्त ।

पद नख पानि अरु अधर कपोल नैन भ्रुकुटी सुकंठ नाभि
एडी औ चरण रेख ॥ कंज भानु पल्लव सुबिंब औ मुकर बाण चाप
कंबु कुंड फल सरिता अनूप लेख ॥ भौंर कोक कोकिल सुकीर
कमला अनंग इंद्र हरि देव वृंद कीस शफरी विशेष ॥ रसिक
विहारी सिया प्रगटत येते सब भ्रमवश धाये भये चकित सुरूप देष२७

चौ०–कन्या अमल अनूपनिहारी ॥ भयेजनक हिय अतिहि सुखारी॥
आवतही नृप अंक मझारी ॥ रुदन करन लागी सुकुमारी॥२८॥
रुदन शब्द सुनि सब जन धाये ॥ भूपति निकट वेगि ते आये॥
जे मुनि त्रिकालज्ञ वर ज्ञानी ॥ तेउर माहिं सकल गति जानी२९॥
कन्या निरखि भूप कर माहीं ॥ द्विज मुनि सब बोले नृप पाहीं॥
महाराज यह सुता अनूपा ॥ प्रगटी रमा मनौं धरि रूपा॥३०॥
आप भूमिपति भू तुव नारी ॥ महाराज यह सुतातिहारी॥
सीत द्वार महिते प्रगटानी ॥ सीता नाम सुमंगल दानी ३१॥
सुनि वर वचन मुदितह्वै राजा ॥ वंदेसब द्विज संत समाजा॥
नभते सुमन विबुध गन वरषे ॥ चहुँदिशि सकल चराचर हरषे ३२॥

त्रिविध समीर चलो सुखकारी ❀ गिरे मेघ मंडल चहुँ भारी ॥
गगन हेरि सबही हुलसाये ❀ शतानंद तब नृपहि सुनाये३३॥

दोहा–जनकराज तुव सिद्धि भो, सकल काज अब आज ॥
आय गये सुरराज बहु, लीने मेघ समाज ॥ ३४ ॥
वेगहिभवन पधारिये, साज समाज समेत ॥
भूपसुता पग धारिये, आतुर राज निकेत ॥ ३५ ॥
सुनि वर वचन महीप मणि, बहु माणि गण धन वारि ॥
सुता गोदले हरप युत, आये भवन पधारि ॥ ३६ ॥
सुभग सुनैना सदनमें, गये भूप हुलसाय ॥
सुता दई तिय गोद मधि, परम प्रमोद अघाय ॥ ३७ ॥
महरानी मन मुदितह्वै, सुतालई जब गोद ॥
तब तनुते पय स्रवित भो, बाढो परम प्रमोद ॥ ३८ ॥
ताही छिन चहुँ ओरते, माचि उठे घन घोर ॥
राचि उठे सब रंगमें, नाचि उठे वन मोर ॥ ३९ ॥
बरसन लागे मेघ जल, महि मंडल चहुँ छाय ॥
धारा धर धारा अमित, धारन धरनि समाय ॥४०॥
भई पंचदश जामलों, बरपा अमित अखंड ॥
नीर भूरते पूर महि, चहूँ ओर नवखंड ॥ ४१ ॥
मिथिला मंडल सकलमें, छायो परमानंद ॥
दुख छूटो सबही भये, जड चेतननिर्द्वन्द्व ॥ ४२ ॥
प्रमुदित प्रजा विलोकि बहु, सुखपायो मिथिलेश ॥
शोर होत चहुँ ओरते, जै जै जनक नरेश ॥ ४३ ॥
मिथिलापुरवासी सकल, सहित भूप रनिवास ॥
सिया जन्म उत्साह हित, छिन छिन कियो हुलास ॥ ४४॥
पै अपार जल वृष्टिते, उत्सव नीकी भाँति ॥
होत घनो नर तदपिहू, जिय उमंग रहिजात ॥ ४५ ॥
इहि विधि बीते पंच दिन, भूमि स्वच्छ नभ देखि ॥
उमड़ो आनँद जनकपुर, सुर नर मुद चहुँ पेखि ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

आनँद अथाह सिया जनम उछाह माँह गति नरनाहकी न परत पिछानीहै ॥ औरै दान औरै मान औरै ज्ञान औरै ध्यान औरै प्रीति नीति रीति औरै प्रगटानी है ॥ रसिकविहारी न्यारी उमँग विलोकि भारी सब नर नारी सत्य येही उर ठानी है ॥ केतो अधिकानी या विदेहकी विदेहताई आजके विदेहकी विदेहता भुलानी है ॥ ५३ ॥

सोरठा—इत नृप जनक उदार, ज्यों उमँगे आनंदमें ॥
त्यों सिय मातु अपार, दान निछावरि करहिं वहु ॥५४॥
येही विधि दिन रैन, जनकनगर उत्साह नित ॥
लखि पावें सब चैन छाके, परम प्रमोदमें ॥ ५५ ॥
अमित देव मुनि वृंद, सुरी किन्नरी आदि बहु ॥
दरश हेत सानंद, जनक द्वार नित आवहीं ॥ ५६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

शतानंद होवें विधि कौशिक महेश बने जनक स्वरूप त्यों सुरेश निज ठानें हैं ॥ अंग ज्यों कुशध्वजको धारत कुबेर त्योंही वरुण सुगालवको गात निरमानें हैं ॥ रसिकविहारी नर नारी देव देवी और वपु विरचैंहैं बहु जैसे मन मानेंहैं ॥ मिस करि आवें सब सीयके दरशहेत भीरमें न कोऊ भेद जानें ना पिछानें हैं ॥ ५७ ॥

धाय ह्वै सुधात्री धाय धाय पय प्यावें सदा पद्मा प्रोहितानी है सुनेग निरवारतीं ॥ किन्नरी नरी ह्वै पुरवासिनी सुगीत गावैं शारदा सुवासिनी ह्वै आरती उतारतीं ॥ रसिकविहारी रूप रचिके रिझावें रती जननी सखी ह्वै शची मैनादि शृंगारतीं ॥ अंग उपटावें नागकन्या नव नायन ह्वै गिरिजा गुसायन ह्वै आय नित झारतीं ॥ ५८ ॥

दोहा—जनकललीके शिशु चरित, रूप अनूप ललाम ॥
पुर परिजन पितु मातु सब, मुदित लखत बसुयाम ॥५९॥

घनाक्षरी कवित्त।

अँगुली सुपीत जरतारी ते जटित मंजु रंग रंग मणिन मढ़ीनो अंग खूलैंहै ॥ कारी निकनारी शीश लटूरी लखात लोनी शोभित डिठौना भाल सुखमा अतूलैंहै ॥ रसिकविहारी सुकुमारी दुलारी

सब लेति बलिहारी हेर हेर हिय फूलैहै ॥ कहति अलीसों अली जनक ललीको देख कमल कलीसी भली पालने सुझूलैहै ॥ ६० ॥

दोहा–निरखि सुता सुख मात नित, करैं निछावर दान ॥
पुनि पसार अंचल मुदित, माँगै रुचि वरदान ॥ ६१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

शंभु अभिषेक शुचि सविधि करैहौं सदा गिरिजा पुजैहौं बाल मुदित सुखी रहै॥ मोदक चढैहौं गणराजको घनेरे नित्य रसिकविहारी कबौं रंचन दुखी रहै ॥ द्विजन जिमैहौं दान देहौं व्रत लेहौं बहु देवी देव ग्रहन मनैहौं सो पुखीरहै ॥ अंचल पसार मात उठिकै निहोरे मात मेरी प्राण प्यारी सिया संतत सुखी रहै ॥ ६२ ॥

चौ०–यही भाँति पितु मातु अपारा ❀ करत सुकर्म अनेक प्रकारा ॥
बीते कछुक दिवस तब सीता ❀ खेलैं सखिगण संग पुनीता॥६३॥

घनाक्षरी–कवित्त।

छोटे छोटे पाँयनमें पैजनी सु छोटी छोटी नूपुर जु छोटे छोटे रुनझुन बाजैहैं ॥ छोटे छोटे कंकन चुरीहु कर छोटी छोटी छोटे श्रौन छोटे झूमकाहु छबि छाजैहैं ॥ रसिकविहारी छोटी छोटीही सहेली संग छोटे छोटे भूषन बसन सब साजे हैं ॥ धाय जाय आय माय अंक लपटाय सीय खेलैं हुलसाय मिथिलेश भौन भ्राजैहैं ॥ ६४ ॥
मंजन कराय माय सकल सजाय अंग भालपै डिठौना दियो रुचिर सुधारिकै ॥ जनकदुलारी किलकारी दै सखीन संग खेलैं धाय धाय मन मुदित निहारिकै ॥ श्रम जल पाय श्याम बिंदुसो वितारभयो हिय हुलसायो मंजु उपमा विचारिकै ॥ रसिकविहारी चंद्र मंडलमें एक ओर बैठो अलिछौना मनो पंखन पसारिकै॥६५॥

दोहा–इहिविधि बाल विनोद बहु, करत सीय सुखदानि ॥
सो विलोकि सुर परस्पर, वचन कहत अनुमानि ॥ ६६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

फूलो हिय कंज मंजु रानी कौशिलाको उत महिषी सुनैना इत नलि- [illegible] ॥ रसिकविहारी थमकोकभो विशोक उत इतहि चकोरी [illegible] अमित हुलासैहै ॥ असुर अनीत शीत भीति उत दूर भई

सकल त्रिताप दाप ताप इत नासीहै ॥ अवध चहूँघा उत छायोहै दिनेश तेज इत मिथिलामें चंद्र चंद्रिका प्रकाशीहै ॥ ६७ ॥

दोहा—यहि विधि सब सुर मुदित मन, वर्णत सिय गुण रूप ॥
जबते प्रगटी भूमिजा, तबते सुगति अनूप ॥ ६८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

हरप विपाद सुख शोक औ उमंग व्रीडा कंप तेज जड़ता सुधीर परसावैंहै ॥ देवासुर जनक पिनाक राम सिंधु लंक कीश औ हरीश संत क्रम सरसावैंहैं ॥ रसिकविहारी या अनूप गति सारी हेरि छिन छिन भारी मोद उर बरसावैंहं ॥ जनकदुलारी प्रगटीहैं तबही ते नित्य शुभाशुभ दोऊ दिन दूने दरशावैं हैं ॥ ६९ ॥

दोहा—इहिप्रकार सिय जन्मते, चहुँदिशि होत चरित्र ॥
मनहीं मनते मुदित जे, ज्ञानी परमपवित्र ॥ ७० ॥
जबते प्रगटीहैं सिया, जनकनगरमें आय ॥
तबते सुर मुनि गुप्तह्वै, नित दरशन करिजाय ॥ ७१ ॥
एक दिवस नारद प्रगट, आये जनक समीप ॥
ऋषिहि नाय शिर उचित विधि, पूजे मुदित महीप ॥ ७२ ॥
पुनि बोले नृप जोरि कर, भवन पधारिय नाथ ॥
कृपा सुता पर कीजिये, हाथ धरिय तिहि माथ ॥ ७३ ॥
सुनि प्रमुदित मुनि वर तुरत, मिथिलाधिपके संग ॥
आये अंतःपुर हिये, बाढ़ी परमउमंग ॥ ७४ ॥
निरखि सुनैना ऋषिहि उठि, सविधि पूजि शिरनाय ॥
लै सीतहि निज अंकते, मुनि पग धरी सुभाय ॥ ७५ ॥
तब नारद अतिहर्ष युत, सियहि लई निज अंक ॥
ताछिन मुनिमन मोद ज्यों, पारस पायो रंक ॥ ७६ ॥
लखि मुनिवरहि प्रसन्न चित, सविनय कही नरेश ॥
नाथ सुताके चिह्न लखि, दीजे मोहिं निदेश ॥ ७७ ॥
सुनत वचन मुनि मुदित ह्वै, नखशिख सियहि निहारि ॥
बोले नृपति विदेह सों, ज्ञानी विमल विचारि ॥ ७८ ॥

भूप सुताके अमित गुण, कहौं कहा मति मोरि ॥
शेपहु भापि सकैं न जो, वरणैं वर्प करोरि ॥ ७९ ॥
तुव पुत्रीके चिह्न जो, परे चरण कर भूप ॥
अवधनाथ सुतके सकल, येही लखे अनूप ॥ ८० ॥
सुनि त्रिकाल ज्ञाता नृपति, मुनिहि कहो कर जोरि ॥
श्रवण करनको चिह्न सो, चाहतिहै मति मोरि ॥ ८१ ॥
तब मुनि बोले रामके, लक्षण सकल अपार ॥
पैपद करके कछु कहौं, निजमतिके अनुसार ॥ ८२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

स्वस्तिक १ त्रिकोण २ बाण ३ कलपतरु ४ कंज ५ चक्र ६ वज्र ७ छत्र ८ चौंर ९ रथ १० अष्टदल ११ ऊर्द्धरेप १२ ॥ सिंहासन १३ अंकुश १४ मुकुट १५ हल १६ मूशल १७ श्री १८ वसु १९ अहि २० दंड २१ ध्वजा २२ नर २३ जवमाला २४ लेप ॥ रसिकविहारी रेप ऊरधके वाम सोहैं, एक वीस २१ताके दिशि दक्षिणसुद्धे २ विशेप॥येहैं वीस चारि चिह्न दक्षिणचरण चारु राजैं रामचंद्रके मैं मुदित भयो हौं दोप॥८३॥गोपद१पताका२शंख३ भू ४ घट ५ त्रिकोण ६ गदा ७ जंबू ८ जीव ९ सरयू१०छक्रोन ११ तिल १२ चंद १३ जान ॥ शक्ति १४ वीन १५ त्रिवली १६ पियूपसर १७ मीन १८ हंस १९ तूण २० धनु २१ वंसी २२ नैनविंव २३ शशिविंव २४ मान ॥ द्वादश १२ अनूप सरयूके दिशि दक्षिणहं एकादश १ ताके वाम ओर वर कीनो थान ॥ रसिकविहारी चिह्न चौविस विशाल येई रामपद वाम मैं विलोके मनमोद मान ॥८४ ॥ चिंतामणि १ कामधेनु २ ऊरध ३ तुरंग ४ गज५कुंभ ६ पटकोण ७ लता ८ चक्र ९ ध्वज १० भ्राजे हैं ॥ वज्र ११ पंचकोण १२ कंज १३ मंदिर १४ त्रिकोण १५ वान १६ पड्ग १७ त्रिशूल १८ मीन १९ चंद्र २० रवि२१राजैंहैं ॥ अष्टकोण२२कुंडल२३प्रसून२४ तिल २५ रंभा २६ कीट २७ माल २८ फल २९ चांद्रिका३०गिरी- श ३१ ग्राम ३२ साजैंहैं ॥ रसिकविहारी रघुचंदकर दाहिनमें विशद

बतीस वर चिह्न छवि छाजैहैं ॥ ८५ ॥ कंकण १ कदंब २ चाप ३ अंकुश ४ मलिंद ५ तुला ६ योनि ७ नरमुंड ८ रथ ९ कुंभ १० मणिमाल ११ है ॥ मास १२ शक्ति १३ तोमर १४ पयोध १५ महि १६ कीर १७ केतु १८ नलिनी १९ सरोज २० शंख २१ भानु बिंब २२ लालहै ॥ पारिजात २३ मंजरी २४ अशोक २५ मृग २६ मीन २७ सिंह २८ तारा २९ सरिता ३० पियूषकुंड ३१ शशिबाल ३२ है ॥ रसिकबिहारी ये बतीस वर चिह्ननेत रामको सुवामकर चिह्नित विशाल है ॥ ८६ ॥

दोहा–दोऊ पद कर दुहुँनके, येकहि चिह्न ललाम ॥
दक्षिण वाम जु वाम सो, दक्षिण सीताराम ॥ ८७ ॥
पुनि मुनि बोले नृपति मणि, सुनौ कहौं दृढ़ बैन ॥
राम भामिनी तुव सुता, ह्वैहै संशय है न ॥ ८८ ॥
इनकी प्रभुता जगत्में, ह्वैहै वर विख्यात ॥
रूप तेज बल गुण सहित, चिरुजीवै कुशलात ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सुंदरी सुरी औ नरी किन्नरी अनूप सदा इनकी सुतीय सर्व रैहैं अनुगामिनी ॥ देव द्विज वृंद संत सुखसर सैहैं भक्ति भुक्ति मुक्ति पैहैं गुण गैहैं दिन यामिनी ॥ रसिकबिहारी हीय मोद उमगैहैं यश प्रभुता बढैहैं औ कहैहैं राम भामिनी ॥ धर्म निरबैहैं पतिव्रतहि दिढैहैं सत्य कंत प्रिय ह्वैहैं तिहुँ लोकनकी स्वामिनी ॥ ९० ॥

दोहा–सुनि भूपति नारद वचन, बोले हिय हुलसाय ॥
सुखीरहै संतत सुता, मुनि तव कृपा प्रभाय ॥ ९१ ॥
इहि विधि मुनिवर दरशले, सियहि दई नप गोद ॥
कहि जंजं कीनो गमन, पुलकित परम प्रमोद ॥ ९२ ॥
मुनिहि चलत नृपतियसुता, संयुत उठि शिरनाय ॥
कह्यो दरश फिरि दीजिये, गेह राउरो आय ॥ ९३ ॥
दै अशीश नारद गये, इत रानी नरनाथ ॥
करत परस्पर मुनि कृपा, भो यह गेह सनाथ ॥ ९४ ॥

पुनि बोले नृप मुनि जिती, कही सत्य सब सोय ॥
विधि हरि हर नारद वचन, कबहुँ मृषा नहिं होय ॥ ९५ ॥
बैन सुनत पितु मातके, सिय हिय भयो प्रमोद ॥
सो दुराय लागीं करन, इत उत बालविनोद ॥ ९६ ॥
सिय लघु भगिनी तीन जे, बहु गुण रूप ललाम ॥
कहत मांडवी उर्मिला, श्रुतिकीरति ये नाम ॥ ९७ ॥
ते मिलि सखिगण संगमें, खेलैं खेल अनूप ॥
चहुँ नृपकन्या सकल अलि, परममनोहर रूप ॥ ९८ ॥
यद्यपि चारहु नृपसुता, हैं गुण रूप प्रधान ॥
तदपि सबहिमें जानकी, सुभग शिरोमणि मान ॥ ९९ ॥
मात पिता पुर नारि नर, लखि सिय बालविनोद ॥
छिन छिन पुलकित होत हिय, पावत परम प्रमोद ॥१००॥
जबते सिय प्रगटीं अवनि, तबते नृप मतिमान ॥
सहस धेनु तिहि हाथते, नितहि करावत दान ॥ १०१ ॥
अपर दान उत्सव अमित, समय समय अनुसार ॥
सकल यथाविधि होत नित, जिनको कथन अपार॥१०२॥
सिया जन्म दिनते जनक, करत सदा जो दान ॥
ता प्रभावते रंक बहु, भये कुबेर समान ॥ १०३ ॥
धर्म तेज पितु मातको, भाग्यवंत पुनि आप ॥
याते नित प्रति सीयको, छिन छिन बढ़ै प्रताप ॥ १०४ ॥
थोरी वय स्यानी लखत, बल गुण रूप अपार ॥
सकल कला विद्या निपुण, संतत विशद विचार ॥ १०५॥
शिशुताई ते सीय हिय, रुचै अधिक वसु ८ रीत ॥
दान१दया२शुचि३धर्म४बल५,प्रीति६नीति७संगीत८ १०६
इहि विधि जन्म अनूप भो, जनकसुताको जान ॥
शुक्लपक्ष नवमी लखौ, माधव मास प्रमान ॥ १०७ ॥
नषत उत्तरा फाल्गुनि, मध्य दिवस गुरुवार ॥
सिंह लग्नमें अवनि ते, सिय प्रगटीं सुखसार ॥ १०८ ॥

प्र० महासुंदरीतंत्रे–श्लोक।

नवम्यां शुक्लवैशाखे ह्युत्पन्ना सावनीसुता ॥ सीतामुखात्सा संजाता पालिता जनकेन च ॥ १ ॥ रामपत्नी महाभागा सीता नामेति विश्रुता ॥ तस्मिन्दिने रामभक्ताः श्रद्धाभक्तिसमन्विताः ॥ ॥ २ ॥ महोत्सवपराः सर्वे वित्तशाठ्यविवर्जिताः ॥ गीतवादित्र नृत्याद्यैः रामभक्तिपरायणाः ॥ ३ ॥ नवम्यां सितवैशाखे पुराण-पठनं तथा ॥ लक्ष्मीसूक्तं पठंस्तत्र याति रामं सनातनम् ॥ ४ ॥ सौभाग्यं धनधान्यं च पुत्रसंततिविस्तृतम् ॥ रामप्रसादाल्लभते मुच्यते सर्वपातकात् ॥ इत्यादि ॥

इति श्रीरामरसायन श्रीसीताजन्मवर्णनो

नाम सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

सोरठा–सिय गुण रूप निधान, सखी वृंद संयुत सदा ॥
सकलहीय सुखदान, जनक भवन मधि राजहीं ॥ १ ॥

चौ०–एकसमैसियसखिन समेता ❀ विचरतहीं आराम निकेता ॥
बाग विलोकिं चहूँ रुचिराई ❀ जहँ सदा ऋतुराज रहाई ॥२॥
अलि न सहित तिहि बाग मँझारी ❀ प्रमुदित फिरत विदेह दुलारी ॥
इक रसाल तरु लखि हरषानी ❀ कछुक बार तिहि तर बिलमानी२
ताछिन इक शुक शुकी अनूपा ❀ आये तहँ विचरत वर रूपा ॥
बैठे सो रसालपर दोऊ ❀ परम प्रसन्न शंक नहिं कोऊ॥४॥
करत परस्पर केलि कलोलैं ❀ प्रमुदित दुहूँ मनोहर बोलैं ॥
रुचै जोइ सोइ वरबानी ❀ कहैं सुनैं निज निज मनमानी५॥
कबहुँ शुद्ध सुर गिरा उचारैं ❀ कबहुँक नरबाणी विस्तारैं ॥
कबहूँ शुक भाषा निज बोलैं ❀ दुहूँ परस्पर जिय गति खोलैं॥६॥
मधुर शुद्ध वर सुनि शुक बानी ❀ सखिन सहित सिय हिय हुलसानी
सीता कह्यो जतन सो कीजै ❀ सुंदर शुक जोरी गहि लीजै॥७॥
वचन सुनत आली इक जाई ❀ फंद डारि गहिबेको धाई ॥
शुक उड़ि गयो हाथ नहिं आयो ❀ शुकी गही तनु फाँन फँसायो॥८॥

तिहि गहि कनक पिंजरा डारी ❀ शुकी देखि सिय भई सुखारी ॥
भूषण वसन अमोल नवीने ❀ प्रमुदित ह्वै सो आलिहि दीने९॥
पारि पिंजरा शुकी अकुलानी ❀ रोवन लगी दीन कहि बानी ॥
हा सुखदान हाय शुक प्यारे ❀ हा मम जीवन प्राण अधारे१०॥
यों कहि तलफत पिंजर नाहीं ❀ छिन छिन ताहि कल्प सम जाहीं
सिय विलोकि तिहि व्याकुल भारी ❀ लै पिंजर चुचुकारि दुलारी॥११॥
फल मेवा पकवान अनेका ❀ मीठे सरस एकते एका ॥
कनक कटोरिन सकल सजाये ❀ नीर सहित तिहि निकट धराये१२
शीश धुनै सो पंख पसारै ❀ रोवै शुक विहीन शुक नारी ॥
कछु न खाय पिवै नहिं नीरा ❀ करै विलाप सुनिपट अधीरा१२
बोली शुकी दीन ह्वै बानी ❀ हे सीता तुम परम सयानी ॥
हम पक्षी फल फूल अहारी ❀ रहैं स्वतंत्र सदा वनचारी॥१४॥
ताहू पै पुनि [illegible] ❀ कुली सगर्भ अतिहि बेहाला ॥
[illegible] ❀ लिहौ जाय शुक परम सनेही१५
[illegible] ❀ शुकी अतिहि तुम मोहिं सुहानी॥
[illegible] ❀ [illegible] ते करौं न न्यारी१६॥
[illegible] ❀ [illegible] तिया तजैना ॥
[illegible] ❀ [illegible] रोवन लागी१७॥
[illegible] ❀ [illegible] लखी उपाई ॥
[illegible] ❀ [illegible] लखी १८
[illegible] ❀ [illegible] नाहीं ॥
[illegible] ❀ [illegible] १९॥
[illegible] जनककुमारी ❀ [illegible] ॥
[illegible] ❀ [illegible] २०
[illegible] ❀ [illegible] ॥
[illegible] ❀ [illegible] २१॥
[illegible]
[illegible] २२॥

वचो फंदते तू उडि भागो ❀ अब बहु बात बनावन लागो ॥
सुनि बोलो शुक सियहि बहोरी ❀ तुव हिय होय प्रतीति न मोरी२३
सुनौ सिया शुक मोहि न जानौ ❀ हौं गंधर्व सत्य करि मानौ ॥
पक्षी देह हेतु जिहि पाई ❀ सकल कहौं वह कथा बुझाई२४॥

पद्धरीछंद ।

गंधर्वलोक मेरो सुधाम । हौं नृत्य गानकारी ललाम ॥
गंधर्विनी सु यह तीय मोरि । संगीत कला यामें करोरि ॥ २५ ॥
तिय सहित सदा सुरलोक जाउँ। सुरराज सभा सब निशि रहाउँ ॥
तहँ नित्य होत वर नृत्य गान । गंधर्व अप्सरा जुरहिं आन ॥ २६ ॥
सुरपति रजाय जब जाहि होय । तब नृत्य गान तहँ करहि सोय ॥
इहि हेतु सबै हाज़िर रहात । अमरेश सभा नित सकल जात ॥२७॥
इक दिवस तीय संयुत तहाँय । हम गये नित्य जिहि समय जाँय ॥
तिहि दिन सभा न आये सुरेश । मो जिय विचार आयो सुदेश २८॥
है अमरराजको अति विलंब । पुनि नृत्यगानकारी कदंब ॥
चलि लखिय आज अमरावतीहि । वर विशद वाटिका भावतीहि२९॥
तिहि मध्य विना वासव रजाय । सुर किन्नरादि कोऊ न जाय ॥
याते दुराय गंधर्व देह । शुक रूप धारि हम दुहुँ सनेह ॥३० ॥
नभ पंथ होय तहँ जाय दोय । मन मुदित भये आराम जोय ॥
तरुवेलि फूल फल अति अनूप । मणि हेम धाम शुचि विविध रूप३१
तिहि देखि अमित आनंद फूलि । दुहुँ गये सभाकी सुरति भूलि ॥
लहि विमल धाम पुनि तीय संग । विचरे अपार बाढी उमंग ॥३२॥
उत सभा आय राजे सुरेश । दीनी रजाय मोहित सुदेश ॥
दरबार माहिं पायो न मोहिं । थाके समस्त जन जोहि जोहि ॥ ३३ ॥
तब कियो अमित सुरराज कोप । तिहि समय होय राखो सुगोप ॥
किन्नर सु किन्नरी अमित और । ते नृत्य गान ठाने सुठोर ॥ ३४ ॥
इत अर्धरैनि लग करि विहार । तिय सहित फेर निज देहधार ॥
हौं सभा मध्य गवनो सशंक । लखि भई इन्द्र भ्रुकुटी जु वंक॥३५॥
तिहि देखि भयो मैं अति बिहाल । जान्यौं सतीय आयो जु काल ॥

कहि त्राहि त्राहि अकुलाय धाय। शिर धरो जाय सुरराज पाय॥२६॥
सहरोप कही तब इन्द्र मोहिँ। गुण पाय बढ्यो अभिमान तोहिँ॥
रेदुष्ट भंगकी नीरजाय। तिय सहित मूढ़ वध योग आय॥२७॥
कहु सत्य रहो किहि ठौर आज। क्यों करि विलंब आयो समाज॥
मिथ्या न बोल तो बचिहि प्रान। नत वध्य होय या छिन निदान २८
हौ सुनत लई दृढ़ हीय ठान। अब दुहूँ भाँति है प्राणहान॥
याते असत्य भाषौं नरंच। सो होय होय जो पूर्व संच॥२९॥
यों ठानि कहो सब सत्य हाल। सुनि भये इन्द्र दुहुँ नैन लाल॥
बोले सुरेश पुनि अतिसरोप। दुरि कियो दुष्ट तू अमित दोप॥३०॥
आज्ञा सुभंग द्वै कीन मोरि। तिय सहित मृत्यु आई सु तोरि॥
कह करों चरण गहि लीन धाय। अब हतौं तोहिं तौ धर्म जाय॥३१॥
इहि हेतु देउँ तुहि शापदंड। या समय सेप मो अति प्रचण्ड॥
हो खल उलूक तिय सहित जाय। नरलोक विपिन निर्जन बसाय३२॥
सुनि घोर शाप तिय विकल होय। द्रुत गिरी धाय तिन चरणरोय॥
हौं शरण पाहि बोली पुकार। यह दुसह शाप कीजे उधार॥३३॥
अबला विलोकि अतिहीं विहाल। पुनि कृपाकीन बहु है दयाल॥
देवेश तबै बोले सुबैन। मो शाप अन्यथा होय हैन॥३४॥
पैकहौं लाय दाया सु हीय। ह्वैहो उलूक ध्रुव पुरुप तीय॥
सत वर्ष रहौ सो देह दोउ। तिहि अंत फेरि शुकरूप होउ॥३५॥
इमि जन्म मरण भोगौ अपार। शुकयोनि वर्ष पैहौ हजार॥
पुनि रजक भवन दुहुँ प्रगट होय।दश सहस वर्ष सुख अवध जोय३६॥
सो देह त्यागि नर नारि दोउ। पुनि स्वर्ग लोक तुव वास होउ॥
इमि इन्द्र शापवश ह्वै सदाय। शुकशुकी पुरुप तिय जगरहाय॥३७॥
मुहि पूर्वजन्मको सकल ज्ञान। तुझ निकट सत्य कीनो बखान॥
याते प्रतीति मन मानि मोरि। सिय देहु वेगि मम शुकिहि छोरि३८॥

दोहा—सुनत कही सिय सखिन ते, शुक अति मोहिं सुहाय॥
याहूको गहिलेहु तौ, दोउरहैं यक ठाय॥३९॥

सुनि सीता वाणी शुकी, सब विधि होय हिरास ॥
पति वियोग दृढ़ जानिकै, तजी प्राणकी आस ॥ ५० ॥
शिर धुनि धुनि पिंजर विषे, दोऊ पंख पसारि ॥
प्राण त्यागि दीनों शुकी, सबही रहीं निहारि ॥ ५१ ॥
शुक विलोकि निज तिय मरन, रोयो विकल पुकारि ॥
निपट दीनह्वै रोषयुत, वोलो सियहि प्रचारि ॥ ५२ ॥
जनकलली कीनी भली, लये दुहुँनके प्रान ॥
याको फल भल पायहौ, कहौं कहा अब आन ॥ ५३ ॥
अवध लेहुँगो जन्ममैं, जाय रजकके भौन ॥
तब याको फल देहुँगो, जाविधि बनिहै जौन ॥ ५४ ॥
यों कहिकै शुक विकलह्वै, गिरो धरणिपै आय ॥
हाय हाय प्यारी शुकी, मोहिं गई तजि हाय ॥ ५५ ॥
बहु विलापकरि छिनकमें, शुकहु तजो निज प्रान ॥
सो लखिकै सिय सखिन युत,कीनी अमित गलान ५६॥
सोच विवश पछिताय चित, भई जानकी मौन ॥
तिहि कमला पर बाँहदै, चलीं मंद निजभौन ॥ ५७ ॥
पुनि दृगजल भरिकै सिया, सखिन कही बिलखाय ॥
सत्यप्रीति की रीति वर, लखौ अली यह आय ॥ ५८॥

सवैया कवित्त।

चित चाहको चाहक पाय सदा धिग है तिहि फेरि जु चाह विये॥
करि नीके अमीरस पान घनो धिगहै पुनि जो कटुवारि पिये ॥
जिय चाहै चलो विन प्रीतमके धिग वाहि जु धीर धरावै हिये ॥
रसिकेश कहायकै नेही तबै धिग ताहि जु मीत बिछोहै जिये५९॥

दोहा—यों कहि सिय बोलीं बहुरि,सखि हौं अति पछिताउँ ॥
मोपै बनी न बात कछु, आपहि आप लजाउँ ॥ ६० ॥
सुनि बोलीं आली सबै, स्वामिनि हौ मतिमंत ॥
होनी होय सु नहिं टरै, यौं भाषैं सब संत ॥ ६१ ॥

कहि त्राहि त्राहि अकुलाय धाय । शिर धरो जाय सुरराज पाय॥३६॥
सहरोष कही तब इन्द्र मोहिँ । गुण पाय बढ़ो अभिमान तोहिँ ॥
रेदुष्ट भंगकी नीरजाय। तिय सहित मूढ़ वध योग आय ॥ ३७ ॥
कहु सत्य रहो किहि ठौर आज । क्यों करि विलंब आयो समाज ॥
मिथ्या न बोल तौ बचिहि प्रान । नत वध्य होय या छिन निदान ३८
हौं सुनत लई दृढ़ हीय ठान । अब दुहूँ भाँति है प्राणहान ॥
याते असत्य भाषौं नरंच । सो होय होय जो पूर्व संच ॥ ३९ ॥
यौं ठानि कहो सब सत्य हाल । सुनि भये इन्द्र दुहुँ नैन लाल ॥
बोले सुरेश पुनि अतिसरोष । दुरि कियो दुष्ट तू अमित दोष ॥४०॥
आज्ञा सुभंग द्वै कीन मोरि । तिय सहित मृत्यु आई सु तोरि ॥
कह करौं चरण गहि लीन धाय । अब हतौं तोहिं तौ धर्म जाय ॥४१॥
इहि हेतु देउँ तुहि शापदंड । या समय रोष मो अति प्रचण्ड ॥
हो खल उलूक तिय सहित जाय । नरलोक विपिन निर्जन बसाय४२॥
सुनि घोर शाप तिय विकल होय । द्रुत गिरी धाय तिन चरणरोय ॥
हौं शरण पाहि बोली पुकार । यह दुसह शाप कीजे उधार ॥४३॥
अबला विलोकि अतिहीं विहाल । पुनि कृपाकीन बहु है दयाल ॥
देवेश तबै बोले सुबैन । मो शाप अन्यथा होय हैन ॥ ४४ ॥
पैकहौं लाय दाया सु हीय । ह्वैहो उलूक ध्रुव पुरुष तीय ॥
सत वर्ष रहौ सो देह दोउ । तिहि अंत फेरि शुकरूप होउ ॥४५॥
इमि जन्म मरण भोगौ अपार । शुकयोनि वर्ष पहौ हजार ॥
पुनि रजक भवन दुहुँ प्रगट होय।दश सहस वर्ष सुख अवध जोय४६॥
सो देह त्यागि नर नारि दोउ । पुनि स्वर्ग लोक तुव वास होउ ॥
इमि इन्द्र शापवश ह्वै सदाय । शुकशुकी पुरुष तिय जगरहाय॥४७॥
मुहि पूर्वजन्मको सकल ज्ञान । तुझ निकट सत्य कीनो बखान
याते प्रतीति मन मानि मोरि । सिय देहु वेगि मम शुकिहि छोरि

दोहा—सुनत कही सिय मलिन ते, शुक अति मोहिं सुहा[illegible]
याहूको गहिलेहु तौ, दोउमें यक राय ॥

दोहा–श्रीसीतापति पद कमल, वंदों मन वच काय ॥
जाकी कृपाकटाक्षतें, सकल चरित दरशाय ॥ १ ॥
जवते प्रगटीं जनकजा, जनकनगरमें आय ॥
तवते अति आनंद चहुँ, अधिक अधिक अधिकाय ॥ २ ॥
सिय गुणरूप अनूप लखि, कहत यहै सब लोग ॥
अब सुख तब जब सुभग वर, मिलै जानकी योग ॥ ३ ॥
जनकसुता गुणरूप वल, प्रतिदिन बढ़त अपार ॥
सो विलोकि पितु मात उर, आवैं व्याह विचार ॥ ४ ॥
पै नारदके वचन उर, धरे सिया पितु मात ॥
याते धीरज राखि अति, उर प्रति दिन उमगात ॥ ५ ॥
होम दान पूजन विविध, सिय मंगल हित नित्त ॥
करत रहत नृपरानि दुहुँ, श्रद्धा सहित सुचित्त ॥ ६ ॥
येही विधि निशि दिवस सब, प्रेम मगन नर नारि ॥
सिय विवाह अभिलाप हिय, रहे सकल जन धारि ॥ ७ ॥

चौ०एक दिवस नृप रानि समेता ❀ प्रमुदित बैठे रहसि निकेता ॥
ता छिन सिया मात सुखदानी ❀ बोली पतिहि जोरि युगपानी॥८॥
कंत मोहि यह परम उमाहा ❀ हग भरि कवै लखौं सिय व्याहा ॥
याते जतन कीजिये सोई ❀ सम सम्वंध वेगि जिहि होई ॥ ९ ॥
रानी वचन सुनत मिथिलेशा ❀ हर्पित वोले वचन सुदेशा ॥
प्रिया धीर धारो मन माहीं ❀ ईश कृपा कछु दुर्लभ नाहीं ॥१०॥
यों कहि भूप सभा मधि आये ❀ मान सहित जन सकल वुलाये ॥
पुनि वोले नृप सवहि सुनाई ❀ धर्म नीति मय गिरासुहाई ॥११॥
हे सीता अयोनिजा कन्या ❀ प्रगट भई अवनीतल धन्या ॥
ताको गुण वल तेज अपारा ❀ सवहि विदित का करौं उचारा॥१२॥
सो गुरु सुहृद सचिव पुरवासी ❀ सव मतिवंत ज्ञान गुण रासी ॥
सज्जन सकल सुमति अनुसारा ❀ सीय व्याह कर करौ विचारा १३॥
जनक वचन सुनि सव हरपाने ❀ धन्य धन्य कहि नृपहि वखाने ॥
ता छिन शतानंद वरज्ञानी ❀ वोले नीत धर्ममय वानी ॥ १४ ॥

चौ०–यौं कहि धाय विदेहदुलारी ❋ मंजूपा सह
जबलग मातु गहे सिय जाई ❋ तबलग धनु
निरखि मातमन विस्मय भारी ❋ चकित भई
रानी तुरतहि नृपहिं बुलाई ❋ कही सकलगति
भूपति भूमिसुता बल देखी ❋ प्रगटो उर
ईश चरित्र विचित्र विचारी ❋ नृपरानी
पुनि पुत्रिहि गहि जनक सुनैना ❋ करचूमें
करी सिया यह कह लरिकाई ❋ सुरकी हो
यौं कहि वार बार नरनाथा ❋ लखत
हरपितह्वै बोले अवनीशा ❋ कीन
है यह बात अमित भी ताकी ❋ क
यौं कहि भूपति विप्र बुलाई ❋
मणि भूपण पट वित्त अपारा ❋
आये जनक नगर नर नारी ❋
जो जो सुनै सुविस्मित होवैं ❋
इहि विधि युगलयाम दिन आयो
तब सिय मात सियहि लै संगा
करि मंजन शृंगार शुचि साज
इष्टदेव कुलदेव सप्रीती
गीत वाद्य भोजन युत द
इहि विधि कुलपति पूज
प्रमुदित हृदय सकल नर

दोहा–यौंही नृपति
होत रहत प्र
इति श्री०

इति श्रीमद्रसि

दोहा—दै पत्री इहि भाँति चहुँ, भेजे दूत अपार ॥
सिय गुण रूप विदेह प्रण, विदित भयो संसार ॥ २८ ॥
सुनि मानी महिपाल बहु, विपुल बली हुलसाय ॥
आये मिथिला नगरमें, निज निज साज सजाय ॥ २९ ॥
सन्माने सबही जनक, यथा उचित शुचि भाय ॥
पुनि दरशायो चाप नृप, निज प्रण सकल सुनाय ॥ ३० ॥
लखि कोदंड अखंड अति, परम प्रचंड उदंड ॥
भूप महाबर बंडते, हृदय भये शत खंड ॥ ३१ ॥
कोऊ नृप लखि दूरही, रहे न लायो हाथ ॥
कोऊ भूपति हेरिकै, चापहि नायो माथ ॥ ३२ ॥
कोऊ अतिमानी सुते, गहि बल कियो अपार ॥
रंचहु डगो न शंभु धनु, रहे मानि हिय हार ॥ ३३ ॥
कोऊ धनु गरुता सुनत, गवने नहीं सुठाम ॥
कोऊ आवत बीचते, लौट गये निजधाम ॥ ३४ ॥
कोऊ हठि सिय लेन हित, ठानो कुटिल बिचार ॥
युद्धकियो मिथिलेश ते, तऊ न पायो पार ॥ ३५
तन मन धन जन मान गुन, ज्ञान सान बनकान ॥
खोय गये निज निज सबै, रावणसे बलवान ॥ ३६ ॥
याही विधि आवें सदा, जनकनगर बहु भूप ॥
चाप डगत नहिं काहुते, खोय जात सब रूप ॥ ३७ ॥
जनक नगर नित रैनि दिन, भारी भीर रहात ॥
चहुँ ओरके भूप वर, इक आवत इक जात ॥ ३८ ॥
पुनि भेजे नृप पत्र वर, सकल मुनिनके धाम ॥
आये कौतुक लखनको, धनुष यज्ञ अभिराम ॥ ३९ ॥
येही विधि बहु दिवसलों, आये बली अपार ॥
डगो चाप नहि जनक तब, दुखित भये हिय हार ॥ ४० ॥
निशि दिन नृपरानी सकल, पुरजन देव मनाय ॥
कहैं सियाको व्याह वर, निरखैं ईश सहाय ॥ ४१ ॥

इति श्रीरामरसायने रा० वि० धनुषयज्ञारंभ
वर्णनो नाम पंचमोविश्रामः ॥ ५ ॥

दोहा–धेनु सुता तिहुँलोक में, हैं दोऊ अति दीन॥
इनको दुख सुख रहतहै, संत स्वामि आधीन॥ १५॥
कन्या धेनु दुहूंनको, देय सुठौर कुठौर॥
याते अधिक न है कहूँ, पुण्य पाप कछु और॥ १६॥
पुनि वर कन्या रूप बल, कुल गुण तेज निहारि॥
यथायोग जहँ होय तहँ, कीजे ब्याह विचारि॥ १७॥
शतानंदके वचन सुनि, बोले जनक नरेश॥
परम कृपाकरि आप यह, दीनो वर उपदेश॥ १८॥
सो शिर धरि उपदेश यह, कहौं यथा रुचि मोरि॥
सुनि मुनि उचित विचारि हिय, करिय रजाय बहोरि॥ १९॥
सहज उठायो सीय जो, चाप विदित सो बात॥
याते मेरे हीयमें, यह विचार ठहरात॥ २०॥
सुर नर वर कोऊ जु यह, चाप चढ़ावै आय॥
सो सुयशी सुकृती मुदित, सियहि ब्याहि लैजाय॥ २१॥

चौ०–जनकराजकी सुनि वर वानी ❀ सभा वृंद बोले शुभ जानी॥
भूप बात यह भली बिचारी ❀ धर्म नीति दुहुँ रीति सुधारी॥२२॥
सुनि पुनि वचन जनक हरषाई ❀ बोलि सचिवगण कही बुझाई॥
सिया व्याह हित हम प्रण ठाना ❀ आजहि ते यह सत्य प्रमाना२३॥
जो वरबीर पिनाक उठावै १ ❀ भंजै २ तौलै ३ तनै ४ चढावै५॥
पंचकर्म मधि एकहु करई ❀ मुदित देहुँ सीता सो वरई॥ २४॥
यह प्रण सत्य सकल संसारा ❀ वेगि यथोचित करौ प्रचारा॥
अरु सब धनुष यज्ञ कर साजा ❀ साजहु अमित कह्यो महराजा २५॥
नृप रजाय सुनि सचिव प्रवीना ❀ बहुजन बोलि निदेश सुदीना॥
सजौ वेगि सब साज सचेता ❀ लिखे पत्र पुनि रीति समेता२६॥

घनाक्षरी–कवित्त।

प्रगट भईहै एक कन्या अवनीते चारु सोई मिथिलाधिराज पुत्री प्रिय प्रानकी॥ गुण बल तेज रूप अमित अनूप याते भूपति दिढाई बात परम प्रमानकी॥ रसिकविहारी शंभु चाप अति भारी ताहि तोलन समर्थ होय काहू बलवानकी॥ आवै बरबीर तो चढावै धनु छावै यश मोद उपजावै ब्याहि जावै देउँ जानकी॥ २७॥

दोहा—दै पत्री इहि भाँति चहुँ, भेजे दूत अपार ॥
सिय गुण रूप विदेह प्रण, विदित भयो संसार ॥ २८ ॥
सुनि मानी महिपाल बहु, विपुल बली हुलसाय ॥
आये मिथिला नगरमें, निज निज साज सजाय ॥ २९ ॥
सन्माने सबही जनक, यथा उचित शुचि भाय ॥
पुनि दरशायो चाप नृप, निज प्रण सकल सुनाय ॥ ३० ॥
लखि कोदंड अखंड अति, परम प्रचंड उदंड ॥
भूप महावर बंडते, हृदय भये शत खंड ॥ ३१ ॥
कोऊ नृप लखि दूरही, रहे न लायो हाथ ॥
कोऊ भूपति हेरिकै, चापहि नायो माथ ॥ ३२ ॥
कोऊ अतिमानी सुते, गहि बल कियो अपार ॥
रंचहु डगो न शंभु धनु, रहे मानि हिय हार ॥ ३३ ॥
कोऊ धनु गरुता सुनत, गवने नहीं सुठाम ॥
कोऊ आवत बीचते, लौट गये निजधाम ॥ ३४ ॥
कोऊ हठि सिय लेन हित, ठानो कुटिल विचार ॥
युद्धकियो मिथिलेश ते, तऊ न पायो पार ॥ ३५
तन मन धन जन मान गुन, ज्ञान सान बनकान ॥
खोय गये निज निज सबै, रावणसे बलवान ॥ ३६ ॥
याही विधि आवैं सदा, जनकनगर बहु भूप ॥
चाप डगत नहि काहुते. खोय जात सब रूप ॥ ३७ ॥
जनक नगर नित रैनि दिन, भारी भीर रहात ॥
चहुँ ओरके भूप वर, इक आवत इक जात ॥ ३८ ॥
पुनि भेजे नृप पत्र वर, सकल मुनिनके धाम ॥
आये कौतुक लखनको, धनुप यज्ञ अभिराम ॥ ३९ ॥
येही विधि बहु दिवसलों, आये बली अपार ॥
डगो चाप नहिं जनक तब, दुखित भये हिय हार ॥ ४० ॥
निशि दिन नृपरानी सकल, पुरजन देव मनाय ॥
करहु सियाको व्याह वर, निरखि ईश सहाय ॥ ४१ ॥

इति श्रीरामरसायन बा० वि० धनुर्यज्ञारंभ
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

चौ०-दिशि दिशि ते बहु ऋषिगण आये ❀ मिथिला चहूँ ओर सब छाये ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❀ धनुषयज्ञ दरशन मति ठानी १॥
पै मुनि मन अति खेद रहावै ❀ पूरण होम होन नहिं पावै ॥
अनल धूम लखि निश्चर भारी ❀ करैं विघ्न ऋषि रहैं दुखारी ॥ २ ॥
कौशिक मुनि मन सोच अपारा ❀ किमि पूरण मख होय हमारा ॥
पुनि ऋषिराज सुहीय विचारी ❀ जाते बनै यज्ञ रखवारी ॥ ३ ॥
ह्वै प्रसन्न मुनि अवध सिधाये ❀ दशरथ राजद्वार पहँ आये ॥
मुनि नरेश उठि आगे आने ❀ करि प्रणाम पूजे सनमाने ४ ॥
सिंहासन पर मुनि पधराये ❀ वेगि चारहू कुवँर बुलाये ॥
ऋषि चरणन मेले तिन भूपा ❀ कौशिक भये मगनलखिरूपा५॥

सो०—पुनि करजोरि बहोरि, भूप सभाशिर नायकै ॥
किया प्रणाम निहोरि, मुनि अशीश सबहीदयो ॥ ६ ॥
पुनि वसिष्ठ द्विजवृंद, मिले यथोचित कौशिकहि ॥
बूझि कुशल सानंद, निज निज थल बैठे सकल ॥ ७ ॥
तब कर जोरि बहोरि, भूप कही ऋषि राजसों ॥
कीनी कृपा करोरि, नाथ मोहिं दरशन दियो ॥ ८ ॥
जो कुछ होय रजाय, सो शिर धरि वेगै करौं ॥
सुनि कौशिक हुलसाय, बोले दशरथ रायसों ॥ ९ ॥
यज्ञ न पूरण होत, याते हम अति दुखित हैं ॥
सदा निशाचर गोत, विघ्न करत हैं आय बहु ॥ १० ॥
याते तुव सुत राम, लषण देहु खल दलन हित ॥
हो परिपूरणकाम, सुयशरहै तिहुँ लोकमें ॥ ११ ॥
सुनि मुनि वचन नृपाल, विकल भये बहु शोचवश ॥
पुनि धरि धीर उताल, कह्यो कौशिकहि जोरिकर ॥ १२ ॥
नाथ बाल रघुनाथ, युद्ध कहा जानैं अबै ॥
सजि अनीक प्रभु साथ, हौं चलि मख रक्षा करौं ॥ १३ ॥
मुनि बोले मुनि बैन, हम कानन बासी तपी ॥
संग लेंय नहिं सैन, राम लषण याचत तुमैं ॥ १४ ॥

सुनि चुपरहे नरेश, तब वसिष्ठ बहु भाँतिते ॥
नृपहि दियो उपदेश, ज्ञान धर्म वर नीति कहि ॥ १५ ॥
तब ह्वै मुदित भुवाल, कह्यो कौशिकहि जोरि कर ॥
दुहूँ रावरे बाल, लै निज संग सिधारिये ॥ १६ ॥
पैजो होहि रजाय, राम सखा सँग रहहिं तौ ॥
सुनि बोले मुनिराय, नृपशंका निरवारिकै ॥ १७ ॥

चौ० सुनिय अवध पति वचन हमारे ❀ तुव सुत सकल प्राणते प्यारे ॥
याते राम लषण हम याचे ❀ निरखे सबै प्रेम पन साँचे १८॥
लषण रहैं रघुवरके संगा ❀ संयुत प्रीति प्रतीति उमंगा ॥
और समाज साज नहिं कोऊ ❀ केवल चहिय भूप सुत दोऊ १९॥
रंचहु कछु कलेश नहिं पैहैं ❀ गृहते सरस सुखी नित रैहैं ॥
ज्यों सुत हैं तुव प्राण अधारे ❀ तिहिते अधिक मोहिं दुहुँ प्यारे २०
सुनि भूपति दुहुँ सुतन बुलाई ❀ धर्मनीति रणरीति शिखाई ॥
कह्यो जाहु सँग दोऊ भाई ❀ निज पितु गुरु जानो ऋषिराई २१
सुनि प्रमुदित पितु पद शिरनाई ❀ लै धनु वाण सुअंग सजाई ॥
चरण वंदि सब मातन केरे ❀ दई धीर कहि वचन घनेरे २२॥
बंधु सखन मिलि मिलि बहुवारा ❀ नृपहि कियो पुनि आय जुहारा॥
पुनि प्रोहित द्विज वृंद समेता ❀ वंदन किये सुबुद्धि निकेता २३॥
तब भूपति दुहुँ सुत उर लाये ❀ गद्गद कंठ नैन जल छाये ॥
बोले मुनिहि दीन करजोरी ❀ सुनिय नाथ यह विनती मोरी २४
सो उपाय कीजे मुनिनाथा ❀ निरखौं वेगि लषण रघुनाथा ॥
यों कहि दुहुँ सुत कर गहि राई ❀ सौंपे मुनिहिं प्रतीति दिढाई २५॥
मुदित समाज ऋषिहि नृप वंदे ❀ पुनि मिलि द्विज गुरु सकल अनंदे
दै अशीश नृपहि मुनिनाथा ❀ चले राम लछमन लै साथा २६

तोमरछंद।

लै राम लछमन संग ॥ मुनि चले पुलकित अंग ॥
मग जातहीं अधबीच ॥ लखि ताड़का तिय नीच ॥ २७ ॥
आई सुभैगितकाल ॥ धाई नकोध कराल ॥

लखि कही कौशिक राम ॥ इहि हतौ यह खल वाम ॥ २८ ॥
रघुवीर आयसु मान ॥ मारो जु इक शर तान ॥
तनु भयो प्राणविहीन ॥ लखि दीन तिहि गतिदीन ॥ २९ ॥
तिहि वध विलोकि मुनीश ॥ रघुवरहि दीन अशीश ॥
दुहुँ बंधु हिय हुलसाय ॥ लीने सुहृदय लगाय ॥ ३० ॥
पुनि दुहुँनको ऋपि भूप ॥ दीने सु अस्त्र अनूप ॥
विद्या सु और अनेक ॥ इकते विशद वर एक ॥ ३१ ॥
मुनि राम लपणहि दीन ॥ भे दुहूँ बंधु प्रवीन ॥
तनु तेज बल सरसान ॥ उर अमित सुख दरशान ॥३२॥
पुनि आश्रमहिं निज आय ॥ मुनि कही अब रघुराय ॥
हम करहिं यज्ञरचाय ॥ दुहुँ बंधु रहहु सहाय ॥ ३३ ॥
है सजग नृपति किशोर ॥ दुहुँ वीर वर वर जोर ॥
मखपाल भये उतंक ॥ मुनि कियो यज्ञ निशंक ॥ ३४ ॥
दिन पंच मख मुनि कीन ॥ जब पूर्ण आहुति दीन ॥
तब उठो धूम अपार ॥ भो गगन लों विस्तार ॥ ३५ ॥
अवलोकि नभ मख धूम ॥ धाये असुर करि धूम ॥
मारीच दल युत नीच ॥ आयो सुबाहु समीच ॥ ३६ ॥
कीनि अमित उतपात ॥ तम छयो कछु न दिखात ॥
बर्षे उपल मल धूरि ॥ दशहुँदिशा भरि पूरि ॥ ३७ ॥
नभ भूमिमें चहुँ ओर ॥ बहु घोर छावत शोर ॥
कितहूँ न कोउ जनात ॥ दुहुँ बंधु अति अकुलात ॥ ३८ ॥
तब मन्त्र शर रघुवीर ॥ छोड्यो सकोप सुधीर ॥
[illegible] पुंज सब तम नाश ॥ भो दशहुदिशनि प्रकाश ॥ ३९ ॥
[illegible] बान [illegible] ॥ मारीच [illegible] ॥
सो [illegible] ॥ अरि परो जलनिधि पार ॥४०॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४१ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४२ ॥

लगि अनलशर कर दाहु ॥ भो भस्म वीर सुवाहु ॥
पुनि अपर दलहि सँहार ॥ कीनो सु पलक मझार ॥ ४३ ॥
इहि भाँति मारि सुरारि ॥ दुहुँ बंधु अंग सम्हारि ॥
आनंद हिय हुलसाय ॥ आये गहे गुरु पाय ॥ ४४ ॥
हिय लाय मुदित मुनीश ॥ दुहुँ दीन अमित अशीश ॥
आकाश अवनि मझार ॥ चहुँ भयो जैजैकार ॥ ४५ ॥
इहि भाँति ऋषि मखपाल ॥ बोले दुहूँ रघुलाल ॥
अब और काह रजाय ॥ सो भाषिये मुनिराय ॥ ४६ ॥

दोहा—सुनि बोले कौशिक हरपि, सुबल तिहारे राम ॥
निरखि यज्ञपूरण भये, हम परिपूरण काम ॥ ४७ ॥
सुनि दुहुँ बंधु सुजोरि कर, कही सकुचि शिरनाय ॥
बने बाल ते काह यह, सब रावरो प्रभाय ॥ ४८ ॥
तब दोऊ नृप सुतनसों, बोले पुनि सरबज्ञ ॥
चलो जनकपुर देखिये, रचो जनक धनुयज्ञ ॥ ४९ ॥
सुनि आज्ञा मन मुदित ह्वै, गुरु पद नायो माथ ॥
चले जनकपुर बंधु दुहुँ, कौशिक मुनिके साथ ॥ ५० ॥
चले गाधिसुत मुदित मग, वर्णत बहु इतिहास ॥
रामलषण मुनिजन सकल, सुनि हिय होत हुलास ५१
इहि विधि आये विपिन इक, लखी उपलमय बाम ॥
पूछो भेद सु मुनिहिसे, चकित चित्त ह्वै राम ॥ ५२ ॥
विश्वामित्र प्रसन्न ह्वै, कही सुनो रघुनाथ ॥
यह तिय पाहन जिमि भई, वर्णत हौं सब गाथ ॥ ५३ ॥

चौ०—गौतम ऋषि सर्वज्ञ सुजाना ❀ जिनकी कीरति विदित जहाना ॥
है तिनकी मुनिकी यह वामा ❀ अति सुंदरी अहल्या नामा ॥ ५४ ॥
या मिलि कियो अमरपति पापा ❀ उपल भई निज पतिके शापा ॥
ताको फल सुरेश भल पायो ❀ जो सहस्रभग नाम कहायो ॥ ५५ ॥
एक समय सुरराज सिधाये ❀ गौतम भवन मुदित ह्वै आये ॥
लखिमुनिनारि निपटमन लोभे ❀ मनसिज विवशचित्त अतिछोभे ५६

तहँते गये विकल निज धामा ❀ सुरपति हिये वसी मुनि वामा॥
पुनि वासव दृढ़ युक्ति विचारी ❀ जाते मिलै अहल्यानारी॥५७॥
ऋषि आश्रम आये सुरराया ❀ अर्धरैनि कीनी यह माया॥
कछु उजासभो प्रात समाना ❀ बोलन लगे पक्षिगण नाना५८॥
मंजन समय जानि मुनिराई ❀ गये वेगि तिय सदन विहाई॥
ताही दिन ऋतुते मुनि नारी ❀ भई पुनीत रीत युत सारी॥५९॥
सून भवन जव सुरपति देखा ❀ तव आये करि गौतम भेषा॥
सोमुनि तिया इन्द्र पहिचानो ❀ पै चुपरही मदन उमगानो६०॥
लखि बोली हँसि बचन सुहाये ❀ आज वेगि मंजन करि आये॥
सुनि मुनि कपट वेप सुरराई ❀ कहे वचन वहु प्रीति बढाई६१॥
तव दोऊ अनंग उमगाई ❀ कियो विहार वेगि भय छाई॥
तहँते वहुरि रूप सोधारे ❀ सुरपति शंकित चलन विचारे६२
तव तिय कही सुनिय सुरराई ❀ निज मम रक्षा करहु सदाई॥
जो मुनि भेद रंचहू पैहैं ❀ हम तुम दुहुँके प्राण नशैहैं६३
तव सुरेश वोले तिहि पाहीं ❀ रहौ निशंक शंक कछु नाहीं॥
यों कहि इन्द्र तियहि उरलाई ❀ कढ़े वेगि गृहते सचुपाई॥६४॥
इत यह इन्द्र कियो छल भूरी ❀ उत ऋषि गये जवहिं कछु दूरी॥
तव नभ दिशि हेरे मुनि ज्ञानी ❀ हैवहु निशा अवहिं यह जानी ६५
है विस्मित धरि ध्यान मुनीशा ❀ देखो सो जु कियो सुरईशा॥
क्रुधित वेगि निज भवन सिधारे ❀ वासव कढत लखो वपु धारे६६॥
तव मुनीश कटु वचन उचारी ❀ इन्द्रहि दई शाप अति भारी॥
रेखल वृपण नष्ट होजाई ❀ भग सहस्र तो तनु प्रगटाई६७॥
तुरताहिं वृपण गिरे तव ताके ❀ सुरप विकल भो विवश विथाके॥
तत्क्षण भग सहस्र सव अंगा ❀ प्रगटे स्रावित रुधिर अभंगा६८
दुखित होय सुरपति गृह गयऊ ❀ गौतम तियहि शाप तव दयऊ॥
हो अधमा तुव उपल शरीरा ❀ वन वसि सहि पवन तप नीरा६९

दोहा–सुनत शाप तिय विकल है, गिरी चरण पै धाय॥
गहे दीन अधीन वहु, विनय करी मनभाय॥ ७० ॥

तव दयालु ह्वै मुनि कही, होय न मिथ्या शाप ॥
पुनि कछु दुख भोगे विना, मिटै नहीं तुव पाप ॥ ७१ ॥
याते पाहन रूप ह्वै, वन कछु काल रहाय ॥
पुनि राघव पद परसते, होय शुद्ध हरपाय ॥ ७२ ॥
इत तिय मुनिवर शापते, भई सुपाहन रूप ॥
वृपणहीन तनु भगनते, उते विकल सुरभूप ॥ ७३ ॥
लज्जा विवश न धामते, कवहूँ कढ़त सुरेश ॥
भग सहस्र तनुमें भये, लागत निपट भदेश ॥ ७४ ॥
वासव व्याकुल देखिके, सकल देव समुदाय ॥
करि विचार ले मेपके, दीने वृपण लगाय ॥ ७५ ॥
पुनिं सव सुर गंधर्व मुनि, देवराज लेसाथ ॥
आये गौतम निकट वहु, विनय करी सुरनाथ ॥ ७६ ॥
तव मुनि वोले इन्द्रसों, घोर पाप तुव आय ॥
या कारणते चिह्नतौ, रहैं अंग सदाय ॥ ७७ ॥
पै सहस्रभगते सकल, दृग होवैं अभिराम ॥
रहे एक भग अंगमें, तीन होय तुव नाम ॥ ७८ ॥
मेप वृपण इक दूसरो, हो सहस्र भग जान ॥
सहसनैन पुनि तीसरो; सुरपति नाम प्रमान ॥ ७९ ॥
वर प्रभाव भग दृगभये, सुरह्वै पूरण काम ॥
मुनिहिवंदि वासव सहित, सकल गये निज धाम ॥ ८० ॥
सो सुरेश शुचिह्वै सुखी, अव यह पाहननारि ॥
तुव पद रजके परशकी, रही आश उरधारि ॥ ८१ ॥
याते अव रघुवीर इहि, वेगि सुपद परशाय ॥
करो अहल्या शुद्धतो, पुनि पति सेवै जाय ॥ ८२ ॥
गुरु आज्ञा सुनि सकुचिकै, राम सकल गुणधाम ॥
निज पद परसायो तुरत, भई शुद्ध वर वाम ॥ ८३ ॥
मुनिगण जैजैकार किय, तिय दिय अति हरपानि ॥
करी अहल्या विनय वहु, दीन जोरि युगपानि ॥ ८४ ॥

अस्तुति करि शिरनाय उत, गई बाम पति धाम ॥
जनकनगर गमने इतै, मुनि सँग लछमनराम ॥ ८५ ॥
सुरसरि आदिक बहु कथा, कही सुनी हरषाय ॥
मुनि दुहुँ नृपसुत जनकपुर, पहुँचे सुख सरसाय ॥ ८६ ॥
लखि सब भाँति सुपास थल, शुचि रसाल आराम ॥
दुहूँ बंधु मुनि सहित मुनि, कियो तहाँ विश्राम ॥ ८७ ॥
इति श्री० रा० र० बि० वि० विश्वामित्र आगमनवर्णनो-
नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा—कौशिक आगम सुनि जनक, शतानंदलै संग ॥
संयुत सकल समाज शुचि, आये भरे उमंग ॥ १ ॥
मुनिहिं यथोचित वंदि पुनि, तब सब कियो प्रणाम ॥
कुशल प्रश्न करि परस्पर, बैठे निज निज ठाम ॥ २ ॥
मुनिहिं प्रशंसि महीपमणि, पुनि निज विनय सुनाय ॥
निरखि रामदिशि नेह युत, बूझा हिय हुलसाय ॥ ३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

सरस सलोने लोने रूप अनहोने दोउ मंजु मृग छौने रंगे कौने जग जोहैं ये। निरखि अनंगदंग होवैं यों सुढंग अंग आनँद अभंगनै उमंग संग सोहैं ये ॥ बरसे उमेह मह नेहको अछेह देखि देह भर कोह पे लिदृ मन मोहैं ये ॥ रसिकबिहारी सुखकारी धनु बान धारी चितचोरि सुन्दर किशोर यह कोहैं ये ॥ ४ ॥

सो०—सुनि नरेश सुत नैन, मंजुलमनिगिरा नाथ हि ॥
मुनि कौशिक मृदु बैन, बोले हृदय हुलास भरि ॥ ५ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

[illegible] ॥ ६ ॥

दोहा—यौंकहि पुनि कौशिक सकल, कथा सहित विस्तार ॥
वरणी जनक नरेशसों, प्रमुदित वारंवार ॥ ७ ॥

चौ०—सुनिमुनिवचन भूपहुलसाये ❀ उठि दुहुँ बंधु सु अंक लगाये
अवधनाथकी सब कुशलाई ❀ पूछी राम सु सकल सुनाई॥८॥
शतानंद मुनि मात उधारा ❀ पायो उर आनंद अपारा ॥
उमँगि हीय दुहुँ नृपसुत भेटे ❀ दुसह शोक संभव दुख मेटे ॥९॥
पुनि मुनि मुनिहि प्रशंसन लागे ❀ सरस सनेह परस्पर पागे ॥
शतानंद अति हिय हुलसाई ❀ सबहि गाधिसुत कथा सुनाई १०
प्रथम रहे कौशिक वर भूपा ❀ शोभित राज समाज अनूपा ॥
सबल सेन चतुरंग अपारा ❀ सकल साज वरणै को पारा ११॥
एक समय वर विपिन मँझारी ❀ करि अहेर अति भये सुखारी ॥
कछुक दूर चलि लखि शुचि ठामा ❀ दल समेत कीनो विश्रामा १२
सो आश्रम वशिष्ठ ऋषि रहहीं ❀ जो विधिपुत्र विदित जग अहहीं॥
सुनि महीप प्रमुदित तहँ जाई ❀ दरशलये सादर शिरनाई॥१३॥
नृपहि यथोचित ऋषि सनमाने ❀ भप वहोरि पाहुने जाने ॥
याहित वर विचार मुनि कीना ❀ राजहि सदल निमंत्रण दीना १४
मुनि आज्ञा शिर धरि नृप आये ❀ मनही मन विस्मित सचुपाये ॥
इत वशिष्ठ ढिग ऋधि सिधि धामा ❀ कामधेनु सवला जिहि नामा १५
सो वशिष्ठकी आयसु पाई ❀ सौंज यथोचित वहु प्रगटाई ॥
असन वसन भूषण धन धामा ❀ दासी दास अमित अभिरामा १६
सुर दुर्लभते सकल पदारथ ❀ अगणित उचित अनूपयथारथ
इहिविधि सवला साज सजाई ❀ करी सदल कौशिक पहुनाई १७
नृत्य गान भोजन बहु भोगा ❀ सवनिशि पगे भूप सब लोगा॥
प्रातहोत सो कछु न दिखाना ❀ विश्वामित्र आचरजमाना॥१८॥
निरखी भूप अमित प्रभुताई ❀ मनहीं मन विस्मय अधिकाई॥
वेगि वशिष्ट निकट तब जाई ❀ करि प्रणाम बैठे सचुपाई ॥१९॥
चपल चित्त चहुँ इत उत देखी ❀ संपति वस्तु न कछु कहुँ पेखी॥
परन कुटी वल्कल इक गाई ❀ दंड कमंडलु यही लखाई २०॥

आमित अन्न कौशिक प्रगटाये ❀ नवल लोक नव धाम वसाये ॥
दूजो स्वर्ग विरचि नृपकाजा ❀ राखो तहँ त्रिशंकु ऋपि राजा७७
दोहा—एकवार कौशिक सु यह, महा आचरज कीन ॥
जाते गाधिकुमार को, भो सव तप वल छीन ॥ ७८ ॥
चौ०—पुनि ऋपि पुष्कर तीरथ जाई ❀ महा घोर तप प्रवल दिढ़ाई॥
तव हूँ एक विघ्न यह आयो ❀ अंवरीप नृप अवध सुहायो७९॥
करनलगे वर यज्ञ सुदेशा ❀ तिनको मख पशु हरो सुरेशा ॥
सो नृप पशु हेरत चहुँ धाई ❀ भृगु आश्रम पहुँचे अकुलाई८०
तहँ ऋचीक मुनि युत सुत दारा ❀ करत रहे तप प्रवल उदारा ॥
तिनके तीन पुत्र लखि राजा ❀ माँगो एक यज्ञ वलि काजा८१॥
लघु पुत्रहि माता नहिं दीनो ❀ जेठहि निज ऋचीक करि लीनो॥
रहो मध्य शुनशेफ जु नामा ❀ सो जानौं हौं एक निकामा८२॥
तव शुनशेफ दीन है भापो ❀ मोहिं लेहु नृप कोउ न रापो ॥
सुनि महीप गोलक्ष सुदीनी ❀ गहि शुनशेफहि मारग लीनी८३
भूपति पुष्कर किय विश्रामा ❀ सुनि ऋचीक सुत कौशिक नामा॥
ऋपि ढ़िग जाय कहो सव हाला ❀ गाधिसुवनहैआतिहि दयाला८४॥
तप वलदै द्वै मंत्र सिखाये ❀ कियो अभै शिर कर परशाये ॥
सो नशुशेफ हीय हुलसायो ❀ अंवरीप सँग अवध सिधायो॥८५॥
दोहा—लै शुनशेफहि सविधि जव, बाँधो जूपहि आन ॥
तव मुनि सुत सो मंत्र दुहुँ, पढ़े समय अनुमान ॥ ८६ ॥
मंत्र पढ़त सव देवगण, तुष्ट भये सुख पाय ॥
यज्ञ समापत मुनि तनय, वचो सदेह सुहाय ॥ ८७ ॥
दूजो विघ्न जु कौशिकहि, भयो तवै ऋपिराज ॥
पुनि तप ठान्यो प्रवल अति, त्यागि सकल जगकाज ८८॥
एक समै वर अप्सरा, लखि लोभे ऋपिनाथ ॥
वहुत वर्प तप त्यागिकै, रमन कियो तिहि साथ ॥ ८९ ॥
यही विधि वहु वार ऋपि, कियो अमित तप जाय ॥
[illegible] मुद्रि दुसह दुख, भये विघ्न वह आय ॥ ९० ॥

चौ०–तप महँ भये विघ्न बहु बारा ❀ जाते रहो निफल श्रमसारा॥
तऊ न कौशिक तपहि विहाई ❀ करीअमित विधि चहुँ दिशिजाई९१
पुनि बहु तप कीना ऋषि कानन ❀ तव अतिमुदित भये चतुरानन॥
आय दियो जिय रुचि वरदाना ❀ कहे ब्रह्म ऋषि युत सनमाना९२
तव कौशिक बोले करजोरी ❀ जक्तपिता इक विनती मोरी
आय वशिष्ठ ब्रह्म ऋषि भाषें ❀ सो कीजे हम यह अभिलाषें९३
ह्वै दयालु विधि वेगहि जाई ❀ कही वशिष्ठहि बहु समुझाई॥
पितु आज्ञावश मुनि तहँ आये ❀ बोलि ब्रह्मऋषि भवन सिधाये९४

दोहा–जब कौशिकहि वशिष्ठ मुनि, कहे ब्रह्मऋषि आय॥
तबते गाधिकुमार द्विज, भये सु तपबल पाय॥ ९५॥
यदपि ब्रह्मऋषि ह्वै गयो, तपबलते महिपाल॥
तदपि सुमिरि पूरबदशा, होय कबौं उरशाल॥ ९६॥
पुनि वसिष्ठ तप तेज लखि, कौशिक कीन विचार॥
जौ लग रहैं वशिष्ठ जग, तौ लग मोर नसार॥ ९७॥
यों दृढ़ ठानि विचार हिय, महि विचरत इक बार॥
मुनि वशिष्ठ आश्रम गये, आधीरैनि मँझारि॥ ९८॥
कुटी निकट तरु ओट गहि, ठाढे करत विचार॥
जो वशिष्ठ बाहर कढ़ैं, तो अब डारौं मार॥ ९९॥
सो निशि पूरण शरद शशि, छायो विशद प्रकाश॥
लखि वशिष्ठ सो शिष्य प्रति, बोले सहित हुलास॥१००॥
आज शरद शशी चंद्रिका, यों अनूप दरशाय॥
ज्यों कौशिक तप तेज जग, रहो विमल यश छाय॥१०१॥

चौ०–मुनिवशिष्ठकेवचन सुहाये ❀ कौशिकमुनिअति हिय पछिताये
विधिसुतकी विलोकि सरलाई ❀ गहे धाय पद पंकज जाई १०२
लखि कौशिक वसिष्ठ हियलाये ❀ मिले परस्पर दुहुँ हुलसाये॥
मुनि मुनि कियो परम दृढ प्रेमा ❀ हृदय शुद्ध दोऊ युत क्षेमा१०३
तबते दुहूँ मुनीशनमाहीं ❀ काहूविधि कछु अंतरनाहीं॥
इहिविधि गाधिपुत्र अवनीशा ❀ तप बल भये सु ब्रह्मऋपीशा१०४

विश्वामित्र देखि दृढठानी ❀ है यह कामधेनु सुखदानी ॥
याहीके प्रभाव मुनिराई ❀ अनुपम कीनी मम पहुनाई२१॥
यह विचारि नृप अधिक लुभाने ❀ कहे बैन बहु स्वारथ साने ॥
दास जानि मुनि कृपा करीजे ❀ एक वस्तु मुहि माँगे दीजे॥२२॥
भूषन वसन धेनु धन धामा ❀ मणि मुक्ता गज वाजि सुग्रामा॥
जो भावै सो सब कछु लेहू ❀ मुनि यह कामधेनु मुहिं देहू२३
सुनि वशिष्ठ बोले वर बैना ❀ कछू वस्तु हम रंच चहैंना ॥
है सबला यह धेनु अनूपा ❀ सो न देहिं गवनो गृहभूपा॥२४॥

दोहा—सुनि बहोरि बोले नृपति, सकल राज्य मम लेहु ॥
पै मुनिवर करिकै कृपा, यह सुरभी मुहिं देहु ॥ २५ ॥
तब पुनि कही वशिष्ठ हम, देहिं न सबला काहु ॥
तुम नृप उचित न याचिवो, यह विचारि घरजाहु ॥ २६ ॥
सुनि कौशिक करि कोप तब, दीनी तुरत रजाय ॥
बरबस धेनु छुराय लै, चले हिये हरषाय ॥ २७ ॥

सोरठा—जब नृप सदल वलिष्ठ, कामधेनु बरबस लई ॥
व्याकुल भये वशिष्ठ, तब निज धर्म विचारिकै ॥ २८ ॥
उत सबला अकुलाय, दृढ बंधन तिहि भंजिकै ॥
धाय परी मुनि पाय, बोली दीन विलाप करि ॥ २९ ॥
अनुचित कीनो काह, जाते त्यागी नाथ मुहि ॥
मुनि बोले मुनिनाह, लिये जात हठकै नृपति ॥ ३० ॥
कहो तबहिं वरगाय, जो प्रभु आज्ञा होय तौ ॥
अमित वीर प्रगटाय, कौशिक दल नाशों सबै ॥ ३१ ॥
सुनि सबलाके बैन, प्रमुदित मुनि आज्ञा दई ॥
भयो धेनु चित चैन, प्रगटे बीर सुअंगते ॥ ३२ ॥
यमन अनेक प्रकार, पह्लवादि हुंकारते ॥
प्रगटे वीर अपार, विदित जक्त बर्बर सकल ॥ ३३ ॥
बहुरि शृंगते वीर, विविध किये उत्पन्न पुनि ॥
रोम कूपते भीर, कढी मलेक्षनकी अमित ॥ ३४ ॥

योनि अंगते भूरि, यवन भये वलवान वहु ॥
रहे विविध भट पूरि, सवला तनु प्रगटायके ॥ ३५ ॥
दोहा–पह्लव सक वर्वर यवन, अरु कंबोज अपार ॥
पुनि हारीत किरात ये, म्लेक्ष सकल निरधार ॥ ३६ ॥
चौ०–धेनु अंगते वीर अपारा ❀ प्रगटि सकल नृप दल संहारा ॥
नीति जानि भूपतिहि वचायो ❀ सवला आय मुनिहि शिरनायो ३७
पुनि कौशिकके शत सुत धाये ❀ सवल शस्त्र गहि मुनि पहँ आये॥
निरखि वसिष्ट कियो हुंकारा ❀ ते सव भये तुरत जरि छारा ३८
लखि कौशिक ह्वै अमित दुखारी ❀ गे हिमि निकट सुदुर्ग मँझारी ॥
तहाँ भूप तप कीन अपारा ❀ भये प्रसन्न महेश उदारा ॥३९॥
आय कौशिकहि अस्त्र सिखाये ❀ अमित उदंड प्रत्यक्ष दिखाये ॥
लहि वहु अस्त्र भूप हरपाये ❀ सहित प्रहार निवारण पाये ४०
अग्नि अस्त्र१ ब्रह्मास्त्र२ प्रचंडा ❀ विष्णुचक्र ३गन्धर्व ४ उदंडा ।
कालपाश५द्वै शक्ति६–७सुघोरा ❀वज्र अस्त्र८कापाल९सजोरा४१।
वरुणअस्त्र१०असि११शूल१२विलापन१३प्रस्वापन१४मादन१५संतापन १६
गदा१७शक्ति१८असि१९वाण२०वज्र२१वरइनहिआदिवहुअस्त्रदियेहर४२
पाय अस्त्र वल वहु दल साजा ❀ आये पुनि वशिष्ट ढिग राजा ।
त्रिकालज्ञ मुनिवर विज्ञानी ❀ दये अस्त्र शंकर यह जानी४३।
तव वशिष्ट करि कोप प्रचंडा। ❀ लेकर ब्रह्मदंड वरिवंडा ।
वेद मात सुमिरन युत गाढे ❀ वाहर कुटीद्वार भे ठाढे ॥ ४४ ।
विश्वामित्र मंत्र वलभारी ❀ पुनि वहु संग अनीकजुझारी ।
आये मुनि सन्मुख अति क्रुद्धा ❀ कियो अपार अस्त्रमय युद्धा४५।
दोहा–जिते अस्त्र शिवदत्तते, सव घाले नृपचंड ॥
ब्रह्मदंडते मुनि सकल, विन श्रम कीने खंड ॥ ४६ ॥
अग्नि अस्त्र ब्रह्मास्त्रजे, घाले नृपति कराल ॥
ब्रह्मदंडमें सव मिले, वढ़ी अनल सम ज्वाल ॥ ४७ ॥
ताप भई तिहुँ लोकमें, सुर मुनि सव अकुलाय ॥
मुनि सन्निध द्रुत आय वहु, विनय करी समुझाय ॥ ४८

चौ०—करि त्रिशंकु इहि भाँति विचारा ❀ विश्वामित्र निकट पगधारा ॥
आतुर जाय गहे ऋषि चरना ❀ कहि प्रभु पाहि दीन दुख हरना ६३॥
नृपहि सकल बूझी ऋषिराई ❀ सो निजगति वरणी अकुलाई ॥
भूप बैन सुनि कौशिक बोले ❀ वृथा चहूँ इत उत बहु डोले ॥६४॥
अब उर धीर धरो भूपाला ❀ जैहो स्वर्ग सदेह उताला ॥
यों कहि यज्ञ साज सजवाये ❀ चहुँदिशि ते मुनि सकल बुलाये ६५॥
ऋषि रजाय सुनि सब मुनि धाये ❀ शत सुत युत वासिष्ठ नहिंआये॥
सोलखिक्रोधकौशिकहिछावा ❀ जानत हिये मुनीश प्रभावा ॥६६ ॥
याते नहिं वसिष्ठ हित भाषे ❀ दीनी सुतन शाप मन माषे ॥
शत सुत मुनिकेअबहिं नशावैं ❀ सप्तजन्म लघुयोनि सुपावैं ॥ ६७॥
कौशिक शाप देत ततकाला ❀ जरे वासिष्ठ पुत्र शत ज्वाला ॥
सोई सब निषाद कुल जाई ❀ जनमें नीच कर्म नित पाई ॥ ६८॥
तिन महँ जेठपुत्र अभिरामा ❀ रहो अनूप महोदयनामा ॥
सोई राम सखा गुह भयऊ ❀ जन्म निषाद भवन जब लयऊ ६९॥
पुनि कौशिक इत यज्ञ सुठाना ❀ कीने सकल प्रमान विधाना ॥
पै कोऊ सुर तहाँ न आये ❀ तब कौशिक बहु क्रोध समाये ७०॥
लै जल दर्भ संकलप कीना ❀ निज तप फल बहु भूपहि दीना ॥
सो प्रभावते नृपति सदेहा ❀ चले अमित प्रमुदित सुर गेहा ७१॥
देवन लखो मनुज तनुधारी ❀ नरपति आवत स्वर्ग मँझारी ॥
तब सुरगण बोले अकुलाई ❀ भूमि पतन हो वेगि पराई ॥ ७२ ॥

दोहा—सुत सुर वचन प्रभावते, पद ऊरध अधशीश ॥
स्वर्ग पंथते पलटिके, गिरन चहो अवनीश ॥ ७३ ॥
तब त्रिशंकु अति दीनह्वै, ऋषिहि कहो कर शोर ॥
त्राहि त्राहि कौशिक जबहि, सुन्यो महा रव घोर ॥ ७४ ॥
निरखि नृपहि आवत अवनि, बोले ऋषी वशिष्ठ ॥
गच्छ गच्छ भो भूपवर, तिष्ठ तिष्ठ नभतिष्ठ ॥ ७५ ॥

चौ०—यों कहि मुनि अमर्ष करि भागी ❀ रचना करी अनूपम न्यारी॥
भूपहेतु नरगीति चलाई ❀ निज प्रभाव दीनो दरसाई ॥ ७६ ॥

तब वशिष्ठ द्विज दंडको, तेज शांत सब कीन ॥
ब्रह्मदंड बल हेरिकै, नृप मुख भयो मलीन ॥ ४९ ॥
चौ०-ब्रह्मदंडकर देखि प्रतापा ❀ भूपति कही सहित संतापा ॥
धिगधिग धिग क्षत्रिय बल तोही ❀ राज साज धिग धिग धिगमोही ५०
यों गलानि उर आनि नृपाला ❀ गये बहुरि तपहेतु उताला ॥
तप बल हूजे ब्रह्म ऋषीशा ❀ यह दृढ़ प्रण कीनो अवनीशा ५१
यों विचारि बहु काल न रेशा ❀ तप कीनो सहि अमित कलेशा॥
तब विरंचि नृप संनिध आई ❀ भये राजऋषि कही बुझाई ५२ ॥
भूपति मन अभिलाष न पूरी ❀ बहुरि करन लागे तप भूरी ॥
होउँ ब्रह्मऋषि मन हठ एही ❀ सहै अपार कष्ट निज देही ५३॥
तब यह भयो विघ्न इक भारी ❀ जाते निफल गई तप सारी ॥
रविकुल नृपति नाम पृथिपाला ❀ तिनके सुत त्रिशंकु भूपाला ५४
सो त्रिशंकु नरपति मतिमाना ❀ भावीवश विचार यह ठाना ॥
काहू विधि इमि बात बनाई ❀ बसौं सदेह देवपुर जाई ॥५५॥
तब वसिष्ठ ढिग भूपति जाई ❀ करि विनती अभिलाष सुनाई ॥
सुनि मुनि कही सुनी दृढ़ राजा ❀ हम न करैं यह अनुचित काजा ५६
दोहा-तहँते भूपति वेगि उठि, करि क्रोधित दृगलाल ॥
जहँ वसिष्ठ शत सुत करत, तप तहँ आये हाल ॥ ५७ ॥
तिन प्रति निज इच्छा कही, अरु वसिष्ट संवाद ॥
कहि बोले नृप करहुसो, हो जिहि हिय अहलाद ५८॥
सुनि वसिष्ठ शत सुत कही, पितु न कियो जो काम॥
सो अनुचित हम क्यों करैं, जाहु भूप निजधाम ॥५९॥
सुनि त्रिशंकु बोले रहौ, पिता पुत्र निज ठौर ॥
तव करनी जानी अबै, हम करिहैं गुरु और ॥ ६० ॥
अनुचित इच्छा भूपकी, पुनि कृत पितु अपमान ॥
सुनि मुनि सुत नृपको दई, शाप क्रोध उर आन॥६१ ॥
शापित है चंडाल भो, नृप तब कियो विचार ॥
कौशिक ढिग जो जाउँ तौ, यह दुख मिटै अपार॥६२॥

चौ०–करि त्रिशंकु इहि भाँति विचारा ॥ विश्वामित्र निकट पगधारा ॥
आतुर जाय गहे ऋषि चरना ॥ कहि प्रभु पाहि दीन दुख हरना ६३॥
नृपहि सकल बूझी ऋषिराई ॥ सो निजगति वरणी अकुलाई ॥
भूप बैन सुनि कौशिक बोले ॥ वृथा चहूँ इत उत बहु डोले ॥६४॥
अब उर धीर धरौ भूपाला ॥ जैहौ स्वर्ग सदेह उताला ॥
यों कहि यज्ञ साज सजवाये ॥ चहुँदिशि ते मुनि सकल बुलाये ६५॥
ऋषि रजाय सुनि सब मुनि धाये ॥ शत सुत युत वसिष्ठ नहिं आये॥
सो लखि क्रोध कौशिक हिछावा ॥ जानत हिये मुनीश प्रभावा ॥६६॥
याते नाहिं वसिष्ठ हित भाषे ॥ दीनी सुतन शाप मन माषे ॥
शत सुत मुनिके अबहिं नशावैं ॥ सप्तजन्म लघुयोनि सुपावैं॥ ६७॥
कौशिक शाप देत ततकाला ॥ जरे वसिष्ठ पुत्र शत ज्वाला ॥
सोई सब निषाद कुल जाई ॥ जनमें नीच कर्म नित पाई ॥ ६८॥
तिन महँ जेष्टपुत्र अभिरामा ॥ रहो अनूप महोदयनामा ॥
सोई राम सखा गुह भयऊ ॥ जन्म निषाद भवन जब लयऊ६९॥
पुनि कौशिक इत यज्ञ सुठाना ॥ कीने सकल प्रमान विधाना ॥
पै कोऊ सुर तहाँ न आये ॥ तब कौशिक बहु क्रोध ममाये७०॥
लै जल दर्भ संकल्प कीना ॥ निज तप फल बहु भूपहि दीना ॥
सो प्रभावते नृपति सदेहा ॥ चले अमित प्रमुदित सुर गेहा७१॥
देवन लखो मनुज तनुधारी ॥ नरपति आवत स्वर्ग मँझारी ॥
तब सुरगण बोले अकुलाई ॥ भूमि पतन हो वेगि पराई ॥ ७२॥

दोहा–इत सुर वचन प्रभावते, पद ऊरध अधशीश ॥
स्वर्ग पंथते पलटिके, गिरन चहो अवनीश ॥ ७३ ॥
तब त्रिशंकु अति दीनहै, ऋषिहि कही कर शोर ॥
त्राहि त्राहि कौशिक जबहि, सुन्यो महा रव घोर॥ ७४ ॥
निरखि नृपहि आवत अवनि, बोले ऋषी वलिष्ठ ॥
गच्छ गच्छ भो भूपवर, तिष्ट तिष्ठ नभनिष्ठ ॥ ७५ ॥

चौ०–यों कहि मुनि अमर्ष करि भागे ॥ रचना करी अनूपम त्यागे॥
भूपहेतु नरगति चलाई ॥ निज प्रभाव दीनो दरसाई ॥ ७६ ॥

अमित अन्न कौशिक प्रगटाये ❀ नवल लोक नव धाम वसाये ॥
दूजो स्वर्ग विरचि नृपकाजा ❀ राखो तहँ त्रिशंकु ऋषि राजा७७
दोहा—एकबार कौशिक सु यह, महा आचरज कीन ॥
जाते गाधिकुमार को, भो सब तप बल छीन ॥ ७८ ॥
चौ०—पुनि ऋषि पुष्कर तीरथ जाई ❀ महा घोर तप प्रबल दिढ़ाई॥
तब हूँ एक विघ्न यह आयो ❀ अंबरीप नृप अवध सुहायो७९॥
करनलगे वर यज्ञ सुदेशा ❀ तिनको मख पशु हरो सुरेशा ॥
सो नृप पशु हेरत चहुँ धाई ❀ भृगु आश्रम पहुँचे अकुलाई८०
तहँ ऋचीक मुनि युत सुत दारा ❀ करत रहे तप प्रबल उदारा ॥
तिनके तीन पुत्र लखि राजा ❀ माँगो एक यज्ञ बलि काजा८१॥
लघु पुत्रहि माता नहिं दीनो ❀ जेठहि निज ऋचीक करि लीनो॥
रहो मध्य शुनशेफ जु नामा ❀ सो जानौं हौं एक निकामा८२॥
तब शुनशेफ दीन ह्वै भाषो ❀ मोहिं लेहु नृप कोउ न राषो ॥
सुनि महीप गोलक्ष सुदीनी ❀ गहि शुनशेफहि मारग लीनी८३
भूपति पुष्कर किय विश्रामा ❀ सुनि ऋचीक सुत कौशिक नामा॥
ऋषि ढिग जाय कहा सब हाला ❀ गाधिसुवनहै अतिहि दयाला८४॥
तप वलदे द्वै मंत्र सिखाये ❀ कियो अभै शिर कर परशाये ॥
सो नशुशेफ हीय हुलसायो ❀ अंबरीष सँग अवध सिधायो॥८५॥
दोहा—लै शुनशेफहि सविधि जव, बाँधो जूपहि आन ॥
तव मुनि सुत सो मंत्र दुहुँ, पढ़े समय अनुमान ॥ ८६ ॥
मंत्र पढ़त सब देवगण, तुष्ट भये सुख पाय ॥
यज्ञ समापत मुनि तनय, वचो सदेह सुहाय ॥ ८७ ॥
दूजो विघ्न जु कौशिकहि, भयो तबै ऋपिराज ॥
पुनि तप ठान्यो प्रवल अति, त्यागि सकल जगकाज ८८॥
एक समै वर अप्सरा, लखि लोभे ऋपिनाथ ॥
वहुत वर्ष तप त्यागिकै, रमन कियो तिहि साथ ॥ ८९ ॥
एही विधि वहु वार ऋपि, कियो अमित तप जाय ॥
चहूँ ओर सहि दुसह दुख, भये विघ्न वहु आय ॥ ९० ॥

चौ०-तप महँ भये विघ्न बहु बारा ❀ जाते रहो निफल श्रमसारा॥
तऊ न कौशिक तपहि विहाई ❀ करीअमित विधि चहुँ दिशिजाई९१
पुनि बहु तप कीना ऋषि कानन ❀ तव अतिमुदित भये चतुरानन॥
आय दियो जिय रुचि वरदाना ❀ कहे ब्रह्म ऋषि युत सनमाना९२
तव कौशिक बोले करजोरी ❀ जक्तपिता इक विनती मोरी
आय वशिष्ट ब्रह्म ऋषि भाषें ❀ सो कीजे हम यह अभिलाषें९३
है दयालु विधि वेगहि जाई ❀ कही वशिष्टहि बहु समुझाई॥
पितु आज्ञावश मुनि तहँ आये ❀ बोलि ब्रह्मऋषि भवन सिधाये९४

दोहा-जब कौशिकहि वशिष्ट मुनि, कहे ब्रह्मऋषि आय॥
तबते गाधिकुमार द्विज, भये सु तपबल पाय॥ ९५॥
यदपि ब्रह्मऋषि ह्वै गयो, तपबलते महिपाल॥
तदपि सुमिरि पूरबदशा, होय कबौं उरशाल॥ ९६॥
पुनि वसिष्ठ तप तेज लखि, कौशिक कीन विचार॥
जौ लग रहैं वशिष्ट जग, तौ लग मोर नसार॥ ९७॥
यों दृढ़ ठानि विचार हिय, महि विचरत इक वार॥
मुनि वशिष्ट आश्रम गये, आधीरैनि मँझारि॥ ९८॥
कुटी निकट तरु ओट गहि, ठाढे करत विचार॥
जो वशिष्ट बाहर कढै, तो अब डारौं मार॥ ९९॥
सो निशि पूरण शरद शशि, छायो विशद प्रकाश॥
लखि वशिष्ट सो शिष्य प्रति, बोले सहित हुलास॥१००॥
आज शरद शशि चंद्रिका, यों अनूप दरशाय॥
ज्यों कौशिक तप तेज जग, रहो विमल यश छाय॥१०१॥

चौ०-मुनिवशिष्टकेवचन सुहाये ❀ कौशिकमुनिअति हिय पछिताये
विधिसुतकी विलोकि सरलाई ❀ गहे धाय पद पंकज जाई १०२
लखि कौशिक वसिष्ठ हियलाये ❀ मिले परस्पर दुहुँ हुलसाये॥
मुनि मुनि कियो परम दृढ प्रेमा ❀ हृदय शुद्ध दोऊ युत क्षेमा१०३
तबते दुहुँ मुनीशनमाहीं ❀ काहूविधि कछु अंतरनाहीं॥
इहिविधि गाधिपुत्र अवनीशा ❀ तप बल भये सु ब्रह्मऋषीशा१०४

दोहा–इमि शोभा लखि बागकी, मुदित भये दुहुँ भाय ॥
लखत फिरत चहुँ ओर पुर, सानंद इत उत जाय२५ ॥
निरखत निरखत नगर बिच, आये राजकुमार ॥
धाये पुर नर नारि बहु, शोभा लखत अपार ॥ २६ ॥
जब ते लखि आये नृपति, तब ही ते बहु शोर ॥
रूप तेज बल गुण सुयश, फैलि रहो चहुँ ओर ॥ २७ ॥
बाल युवा अरु वृद्ध सब, पुरवासी नर नारि ॥
राम लषणके लखनकी, रहे आश उर धारि ॥ २८ ॥
आये पुर अवलोकिबे, सुनि सबही हुलसाय ॥
धाम पंथ इत उत चहूँ, चितवत हैं चित लाय ॥ २९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

कोऊ धायहेरैं कोऊ काहूकहँ टेरैं कोऊ जाय लखैं नेरैं कोऊ दूरिते सिधारैं हैं। कोऊ काहु बूझैं कोऊ काहुते अरुझैं कोऊ काहू हठि झूझैं कोऊ काहू को निवारैं हैं॥कोऊद्वार कोऊ हैं दिवार कोऊ छज्जनपै कोऊ तौ अटारी नर नारी यों निहारैं हैं॥रसिकबिहारी सुखकारी धनु धारी दोउ पुर अवलोकैं मंद मंदही पधारैं हैं ॥ ३० ॥ नृपति किशोर श्याम गौर द्वै अनूपरूप पुर अविलोकिबेको आये हैं बजारमें ॥ छायो शोर भारी चहुँ ओर नर नारी भीर सुरति नकाहू देह गेहकी सम्हारमें ॥ रसिकबिहारी बरबामजे सुधाम सबै आई धाय आँगन अटारी कोउद्वारमें॥ फिरैं फिरकीसी भाँत थिरकी रहैं ना नेक कोऊ खिरकीमें कोउ हिरकी किवाँरमें ॥ ३१ ॥ कोऊ मिलकी सों कछू भाँप दिलकी ना नेक हिलकी जुलैलै हिय राखैं हियकी हिलोर॥कोऊ मसकैं हैं लै उसाँस मसकै हैं उर रसकैं करेजे कसकैं हैं मैनकी मरोर ॥ कोऊ मुख अंचल छिपायकै दुराय दीठ करि करि हाय गहि जायँ नेहकी झकोर ॥ रसिकबिहारी लखि रसिकबिहारी रूप नारी हैं दुखारी भारी विरह व्यथाके जोर ॥ ३२ ॥ झुमि झुमि झूमें कोऊ हूमि हूमि हूमें कोऊ दूमि दूमि घूमें कोऊ घूमि गिरैं भू मैं हैं ॥ फेरि फेरि हेरैं कोऊ हेरि हेरि टेरैं कोऊ टेरि टेरि घेरैं कोऊ घेरि गहि

जो वरणै शोभा अस कवि को भा लघुमति छोभा रहत थकी ॥
सर सरस विभागा अनुपम बागा अगम सुलागा बुद्धिजकी ॥
द्रुम वेलि अतूला नव फल फूला सब सुख मूला छबिछाजैं ॥
बहु वरण विहंगा अगणित रंगा निज निज संगा मिलिराजैं ॥१३॥

भुजंगप्रयातछंद।

कहूंहैं कदंबा कहूंहैं रसाला ॥ कहूं दाड़िमो शिंशुपा औ तमाला ॥
कहूं पीपरो पाकरीहैं अशोका॥लवंगी लतासो कहूं लेति झोका॥१४॥
कहूँ चिंचिनी श्रीफलो हैं बदामा ॥ कहूँ नागवल्ली सुएला ललामा ॥
कहूँ वृक्ष फूले कहूँसो फरे हैं ॥ कहूँ पत्र पीरे झरे औ हरे हैं ॥ १५ ॥
कहूँ तौ गुलाबौ चमेली जुसोहै ॥ निवारी जुही सेवती चित्त मोहै ॥
कहूँ मालती और बेला विराजै ॥ कहूँ केवरो केतकी गंध छाजै १६॥
कहूँ कुंद केसरसुगन्धै झकोरैं । कहूँ सांवनी और गेंदा हिलोरैं ॥
सुवृंदारका वृंद सोहैं अनूपा । जुदौना कहूँ पानडी है सुरूपा ॥ १७ ॥
कहूँ भूमि चंपा जु गुल्चाँदनी हैं । कहूँ इश्कपेचा कि बेलैं घनी हैं ॥
कहूँ विष्णुक्रांती छटा दै रहीहैं । सुचंपा सुगंधै कहूँ छैरही हैं १८ ॥
गुलव्वास गुल्दाउदीहै जुखासी । कहूँ रौसपै राजहीनातरासी ॥
कहूँ फूल फूले कहूँ तौ कली हैं ॥ छहूँ वृक्ष बेली दुवीचे गली हैं १९॥
कहूँ तौ भली भाँति छूटैं फुहारे ॥ भरेनीर राजैं कहूँ हौज भारे ॥
कहूँ दूबसे है हरी भूमि नीकी ॥ छटा बागकी मोहनी है सुजीकी२०॥
कहूँ कोकिला कूकदैकै पुकारैं । पपीहा कहूँ शब्द ऊंचे उचारैं ॥
कहूँ शारिकाबैन मीठे सुनावैं । कहूँ कीरनीकी गिरा चित्त भावैं २१ ॥
कहूँ मोर नाचे महामोद मानैं । कहूँ भौंर गुंजैं घने प्रीति सानैं ॥
कहूँ तीतरो लाल सोहैं कपोती।कहूँ बुल्बुलों की घनी जुट्ट होती२२॥
कहूँ नीलकंठा सुश्यामा सुहावैं ॥ कहूँ तौ हरे बालवा चित्त भावैं ॥
कहूँ हंसराजा बटेरैं बनेरी । कहूँ बाज जुर्रा कुही देत फेरी ॥ २३ ॥
कहूँ तौ परेवा सु चंडूल सोहैं । कहूँ तौ चकोरी कहूँ खंजनो हैं ॥
भरे मोद पक्षी सबै मत्त डोलैं । कलोलैं करैं भावते बैन बोलैं ॥२४॥

दोहा–इमि शोभा लखि बागकी, मुदित भये दुहुँ भाय ॥
लखत फिरत चहुँ ओर पुर, सानंद इत उत जाय२५ ॥
निरखत निरखत नगर विच, आये राजकुमार ॥
धाये पुर नर नारि बहु, शोभा लखत अपार ॥ २६ ॥
जब ते लखि आये नृपति, तब ही ते बहु शोर ॥
रूप तेज बल गुण सुयश, फैलि रह्यो चहुँ ओर ॥ २७ ॥
बाल युवा अरु वृद्ध सब, पुरवासी नर नारि ॥
राम लषणके लखनकी, रहे आश उर धारि ॥ २८ ॥
आये पुर अवलोकिबे, सुनि सबही हुलसाय ॥
धाम पंथ इत उत चहूँ, चितवत हैं चित लाय ॥ २९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

कोऊ धायहेरैं कोऊ काहूकहँ टेरैं कोऊ जाय लखैं नेरैं कोऊ दूरिते सिधारैं हैं। कोऊ काहु बूझैं कोऊ काहुते अरुझैं कोऊ काहू हठि झूझैं कोऊ काहू को निवारैं हैं॥कोऊद्वार कोऊ हैं दिवार कोऊ छज्जनपै कोऊ तौ अटारी नर नारी यों निहारैं हैं॥रसिकविहारी सुखकारी धनु धारी दोउ पुर अवलोकैं मंद मंदही पधारैं हैं ॥ ३० ॥ नृपति किशोर श्याम गौर द्वै अनूपरूप पुर अविलोकिबेको आये हैं बजारमें ॥ छायो शोर भारी चहुँ ओर नर नारी भीर सुरति नकाहू देह गेहकी सम्हारमें ॥ रसिकविहारी वरबामजे सुधाम सबैं आई धाय आँगन अटारी कोऊद्वारमें॥ फिरैं फिरकीसी भाँन थिरकी रहैं ना नेक कोऊ खिरकीमें कोउ हिरकी किवाँरमें ॥ ३१ ॥ कोऊ मिलकी सों कछू भाषै दिलकी ना नेक हिलकी जुलैलै हिय राखैं हियकी हिलोर॥कोऊ ससकैं हैं लै उसाँस मसकै हैं उर रसकैं करेजे कसकैं हैं मैनकी मरोर ॥ कोऊ मुख अंचल छिपायकै दुराय दीठ करि करि हाय गहि जायँ नेहकी झकोर ॥ रसिकविहारी लखि रसिकविहारी रूप सारी हैं दुखारी भारी विरह व्यथाके जोर ॥ ३२ ॥ झूमि झूमि झूमैं कोऊ हूमि हूमि हूमैं कोऊ घूमि घूमि घूमैं कोऊ घूमि गिरैं भू मैं हैं ॥ फेरि फेरि हेरैं कोऊ हेरि हेरि टेरैं कोऊ टेरि टेरि घेरैं कोऊ घेरि गहि

जो वरणै शोभा अस कवि को भा लघुमति छोभा रहत थकी ॥
सर सरस विभागा अनुपम बागा अगम सुलागा बुद्धिजकी ॥
द्रुम वेलि अतूला नव फल फूला सब सुख मूला छविछाजैं ॥
बहु वरण विहंगा अगणित रंगा निज निज संगा मिलिराजैं ॥१३॥

भुजंगप्रयातछंद।

कहूँहैं कदंबा कहूँहैं रसाला ॥ कहूं दाड़िमो शिंशुपा औ तमाला ॥
कहूं पीपरो पाकरीहैं अशोका॥लवंगी लतासो कहूं लेति झोका॥१४॥
कहूँ चिंचिनी श्रीफलो हैं बदामा ॥ कहूँ नागवल्ली सुएला ललामा ॥
कहूं वृक्ष फूले कहूँसो फरे हैं ॥ कहूं पत्र पीरे झरे औ हरे हैं ॥ १५ ॥
कहूं तौ गुलाबौ चमेली जुसोहै ॥ निवारी जुही सेवती चित्त मोहै ॥
कहूँ मालती और वेला विराजै ॥ कहूं केवरो केतकी गंध छाजै १६॥
कहूं कुंद केसरसुगंन्धैं झकोरैं । कहूँ सांवनी और गेंदा हिलोरैं ॥
सुवृंदारका वृंद सोहैं अनूपा । जुदौना कहूँ पानडी है सुरूपा ॥ १७ ॥
कहूं भूमि चंपा जु गुल्चाँदनी हैं । कहूँ इश्कपेचा कि बेलैं घनी हैं ॥
कहूं विष्णुक्रांती छटा दे रहीहैं । सुचंपा सुगंधै कहूँ छैरही हैं १८
गुलव्वास गुलदाउदीहै जुखासी । कहूँ रौसपै राजहीनातग
कहूं फूल फूले कहूं तौ कली हैं ॥ छहूँ वृक्ष वेली दुवीचे गली
कहूं तौ भली भाँति छूटैं फुहारे ॥ भरेनीर राजैं कहूँ
कहूं दूबसे है हरी भूमि नीकी ॥ छटा वागकी मोहनी
कहूं कोकिला कूकदेकै पुकारैं । पपीहा कहूँ श
कहूं शारिकावैन मीठे सुनावैं । कहूँ कीरनीकी गि
कहूं मोर नाचे महामोद मानें । क
कहूं तीतरो लाल सोहैं कपोती॥कहूँ
कहूं नीलकंठा सुश्यामा सुहावैं ॥ व

चहुँ डोलें हैं॥ कोऊ इतरायँ अनखायँ औ रिसायँ कोऊ कोऊ बतरायँ कोऊ करत कलोलें हैं॥ रसिकविहारी नेहवश रघुलाल तिन्हैं करत निहाल प्रीति रीति अनमोलें हैं॥ कोऊ देत गारी कोऊ देत-करतारी कोऊ करैं मनुहारी कोऊ बालहँसि बोलें हैं॥ ३९॥ कोऊ कहैं श्याम तुव ग्राम है कहां सो कहो कौहै पितु मात औ बतावो कित धामहै॥ कोऊ कहैं लाल किहि देशते पधारे फेरि जैहौ किहि देश इस आये कौन कामहै॥ कोऊ कहैं मीत हम आज यों सुनीहै मुनि दोय बाल लाये एक गौर एक श्यामहै॥ रसिकविहारी पुर बालक अनंद छके वार वार बूझैं रावरोई नामरामहै॥ ४०॥ कोऊ बाल बालसों कहैं हैं हम ऐसी सुनी वीरता बढाय चाप तोरिबे सिधाये हैं॥ कोऊ कहैं कौतुक विलोकिबे पधारे दोउ कोऊ कहैं कौशिक भुराय इन लाये हैं॥ कोऊ कहैं हेरत बटोही पुर कोऊ कहैं रसिकविहारी आज भूपति बुलाये हैं॥ कोऊ कहैं जानैं हम सत्य सो बखानैं सुनौ जनकललीके ब्याहिबेको इत आये हैं॥४१॥ कोऊ बाल बोले लाल अब ना तजैंगे तुम्हैं कोऊ कहैं यार संग तेतौनाहिंटारोंगे॥ कोऊ कहैं मीत प्रीत करि मिलि रहैं सदा कोऊ कहैं श्याम कबौ रोप तो न धारैंगे॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ तौ बनैगी बात जो पै कहूं काहू कुछ दोष ना निहारैंगे॥ कोऊ कहैं प्यारे हम सकल सुखारे संग चलिहैं तिहारे जब सदन सिधारैंगे॥ ४२॥ कोऊ बाल बोले धनुशालको उताल चलौं ह्वै है अतिकाल तौ नृपाल बहु मारैंगे॥ कोऊ कहैं श्याम इत आवहु हमारे धाम दैहै मातु मेवा औ मिठाई मिलि चाखैंगे॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी हितकारी बात सुनहु हमारी तौ तिहारे कान भाँपैंगे॥ कोऊ कहैं कितहूं न जाहु अब ह्वाई रहौ जनकदुलारीकी सवारी संग राखैंगे॥ ४३॥ कोऊ जे प्रवीण प्रौढ सरस सनेही शुद्ध ते लखि अनूपरूप अधिक लुभाने हैं॥ तिनकी सुप्रीति श्याम सुंदर विलोकि साँची रसिकविहारी अतिहीय हुलसाने हैं॥ कहिरस बैन चैन दीनोंहै कमलनयन लाय निज ऐनतें अपार सनमाने हैं॥ सुख सरसाने मनमाने पहिचाने जाने सत्य प्रण ठाने

लूमें हैं ॥ रसिकविहारी मिथिला की नौल नारी सारी रूप मद छाकी मतवारी करैं धूमें हैं ॥ धाय धाय आवैं आय आय रहि जावैं जाय जाय गुण गावैं गाय गाय झुकि झुमैं हैं ॥ २३ ॥ कोऊ कहैं कारो मणिवारो है बिसारो भारो कोऊ कहैं फंदी फंदवारो वटपारोरी ॥ कोऊ कहैं निपट धुतारो ठगहारो महा कोऊ कहैं सूधौ है विचारो संगवारोरी ॥ को कहैं गोरोहै न भोरो विसवोरो सोउ जानो जनि थोरो ताहि नकिहौं निहारोरी ॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ नौल नारी अली कैसहु तुमैं है पै हमैं है प्राणप्यारोरी ॥ २४ ॥ कोई कहैं दोई ननदोई तुव आली देखे कोई कहैं दोई वहनोई तो सिधारे हैं ॥ कोई कहैं दोई जेठ तेरे तून हेरे भट्ट कोई कहैं गोरे तोरे देवर निहारे हैं ॥ रसिकविहारी पुरनारी संगवारी सबै मोदते विनोद बैन विविध उचारे हैं ॥ तौलौं एक बोली कंत साँवरे हमारे सब बोलीं यों हमारे हैं हमारे हैं हमारे हैं॥२५॥कोऊ दूरहीते दृग जोरती निहोरती हैं कोऊ चित्त चोरतीं बहोरि मुखमोरतीं ॥ कोऊ मुसक्यावतीं सुनावती हैं व्यंग्य कोऊ सैनन बुलावती हैं नैनन मरोरतीं ॥ कोऊ नीरवारतीं उतारती हैं आरती लै आनन निहारती हैं कोऊ तृण तोरतीं ॥ रसिकविहारी गुण वारी रूपवारी नारी अवधविहारीको सनेह सिंधु बोरतीं ॥ २६ ॥ कुंतल कृपाणनते काटत करेजो आन भ्रुकुटी कमान तान तानकै चढ़ाये हैं ॥ तापै नैनवाणको सँधान हठिलेवैं प्राण जनकपुरी में घमसानयों मचाये हैं ॥ रसिकविहारी एक नारी धाय वावरी सी धावरी ह्वै द्वार द्वार वचन सुनाये हैं ॥ कोऊ मृगनैनी वाम धामते ढुकाहू काम कितहूँ नजैयो दो सिकारी आज आये हैं ॥ २७ ॥ धाये पुर वालक विलोकि जुरि वृंद वृंद आये ढिम सकल विनोद मोद भीने हैं ॥ जानें नहिं सब रंक निपट निशंक चंक चंचल उतंक चपलाई चित्त दीने हैं ॥कोऊ पदपानि पट पीत,धनु वाण,कोऊ कोऊ लंक कोऊ जंघ जानु गहि लीने हैं॥रसिक-विहारी ह्वै अनंद रघुनंद तिनै कहि मृदुवैन मन भाये तोप कीने हैं ॥ २८ ॥ अंग अंग परसैं सुढंग रंगरंगरचे सहित उमंग संग संग

चहुँ डोलैं हैं ॥ कोऊ इतरायँ अनखायँ औ रिसायँ कोऊ कोऊ बतरायँ कोऊ करत कलोलैं हैं ॥ रसिकविहारी नेहवश रघुलाल तिनैं करत निहाल प्रीति रीति अनमोलैं हैं ॥ कोऊ देत गारी कोऊ देत-करतारी कोऊ करैं मनुहारी कोऊ बालहँसि बोलैं हैं ॥ ३९ ॥ कोऊ कहैं श्याम तुव ग्राम है कहां सो कहो कोहै पितु मात औ बतावो कित धामहै ॥ कोऊ कहैं लाल किहि देशते पधारे फेरि जैहौ किहि देश इत आये कौन कामहै ॥ कोऊ कहैं मीत हम आज यों सुनीहै मुनि दोय बाल लाये एक गौर एक श्यामहै ॥ रसिकविहारी पुर बालक अनंद छके बार बार बूझें रावरोई नामरामहै ॥ ४० ॥ कोऊ बाल बालसों कहैं हैं हम ऐसी सुनी वीरता बढाय चाप तोरिबे सिधाये हैं ॥ कोऊ कहैं कौतुक विलोकिवे पधारे दोउ कोऊ कहैं कौशिक भुराय इन लाये हैं ॥ कोऊ कहैं हेरत बटोही पुर कोऊ कहैं रसिकविहारी आज भूपति बुलाये हैं ॥ कोऊ कहैं जानैं हम सत्य सो बखानैं सुनौ जनकललीके व्याहिवेको इत आये हैं॥४१॥ कोऊ बाल बोले लाल अब ना तजैंगे तुम्हैं कोऊ कहैं यार संग तेतौनाहिंटारैंगे॥ कोऊ कहैं मीत प्रीत करि मिलि रहैं सदा कोऊ कहैं श्याम कबौ रोप तो न धारैंगे ॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ तौ बनैगी बात जो पै कहूं काहू कुछ दोप ना निहारैंगे ॥ कोऊ कहैं प्यारे हम सकल सुखारे संग चलिहैं तिहारे जब सदन सिधारैंगे ॥ ४२ ॥ कोऊ बाल बोले धनु-शालको उताल चलौ ह्वै है अतिकाल तौ नृपाल बहु माखैंगे ॥ कोऊ कहैं श्याम इत आवहु हमारे धाम देहैं मातु मेवा औ मिठाई मिलि चाखैंगे ॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी हितकारी बात सुनहु हमारी तौ तिहारे कान भाषैंगे ॥ कोऊ कहैं कितहूं न जाहु अब ह्याई रहौ जनकदुलारीकी सवारी संग राखैंगे ॥ ४३ ॥ कोऊ जे प्रवीण प्रौढ सरस सनेही शुद्ध ते लखि अनूपरूप अधिक लुभाने हैं ॥ तिनकी सुप्रीति श्याम सुंदर विलोकि साँची रसिकविहारी अतिहीय हुलसाने हैं ॥ कहिरस बैन चैन दीनोंहि कमलनयन लाय निज ऐनते अपार सनमाने हैं ॥ सुख सरसाने मनमाने पहिचाने जाने सत्य प्रण ठाने

लूमैं हैं ॥ रसिकविहारी मिथिला की नील नारी सारी रूप मद ह
मतवारी करैं धूमैं हैं ॥ धाय धाय आवैं आय आय रहि जावैं
जाय गुण गावैं गाय गाय झुकि झुमैं हैं ॥ ३३ ॥ कोऊ कहैं
मणिवारो है बिसारो भारो कोऊ कहैं फंदी फंदवारो वटप
कोऊ कहैं निपट धुतारो ठगहारो महा कोऊ कहैं सूधौ है
संगवारोरी ॥ को कहैं गोरोहै न भोरो विसवोरो सोउ ज
थोरो ताहि नीकेहौं निहारोरी ॥ रसिकविहारी कहैं
नारी अली कैसहु तुमैं है पै हमैं है प्राणप्यारोरी ॥ ३४
दोई ननदोई तुव आली देखे कोई कहैं दोई बहनोई त
कोई कहैं दोई जेठ तेरे तून हेरे भटू कोई कहैं गोरे
हैं ॥ रसिकविहारी पुरनारी संगवारी सबै मोदते
उचारे हैं ॥ तौलौं एक बोली कंत साँवरे ह
हमारे हैं हमारे हैं हमारे हैं॥३५॥कोऊ दूरहीते
हैं कोऊ चित्त चोरतीं बहोरि मुखमोरतीं
सुनावती हैं व्यंग्य कोऊ सैनन बुलावती
नीरवारतीं उतारती हैं आरती लै आ
तोरतीं ॥ रसिकविहारी गुण वारी ह
सनेह सिंधु बोरतीं ॥ ३६ ॥ कुंतल
भ्रुकुटी कमान तान तानकै च

दोहा–ताही औसर जनकजा, जननी आयसु पाय ॥
आई गिरिजा दरशहित, संग सखी समुदाय ॥ ५ ॥
करि मज्जन शृंगार सजि, सकल अलीन समेत ॥
पूजन सौंज अपार युत, गवनी गौरि निकेत ॥ ६ ॥
राजसुता अरु सखिनकी, शोभा अमित अनूप ॥
ध्यान किये सुख होय हिय, किमि वरणौं वह रूप ॥ ७ ॥

तोमरछंद ।

पदकंज अधिक ललाम । सुखसीम वर छबिधाम ॥
जिनकी परत महि ज्योति । सो लाल मणिमय होति ॥ ८ ॥
पुनि चरण अंगुलि मंज । मानहु मृदुल दल कंज ॥
उपमा सु और लखाय । जनु चंप कलिक सहाय ॥ ९ ॥
नख गणनकी नव क्रांति । लखि कोटि शशि द्युति भ्रांति ॥
जनु रसिक जन सुख हेत । चिंता सुमणि छबिदेत ॥ १० ॥
बिछिया ललित सुखधाम । नूपुर अधिक अभिराम ॥
रव मधुर सरस सुहात । सुनि राजहंस लजात ॥ ११ ॥
युग जानु सुंदर गोल । लखि मन बिकत बिनमोल ॥
जनु उभय कंचन खंभ । मिटिजात मनसिज दंभ ॥ १२ ॥
जंघा युगल अभिराम । जनु कदलि खंभ ललाम ॥
अतिसुभग उभय नितंब । मति कहत गहत बिलंब ॥ १३ ॥
कटि अधिक सूक्षम जान । उपमा न जगमहँ आन ॥
देखी न सुनियत लंक । ज्यों ब्रह्म निर्गुण शंक ॥ १४ ॥
लहँगा ललित लहरात । बहुबेर छबि छहरात ॥
जरतार जटित जराय । निज कर मनोज बनाय ॥ १५ ॥
जगमगत मणि गणजोत । द्युतिमंद रवि शशि होत ॥
सोहत अनूपम कोर । जनु दामिनी चहुँ ओर ॥ १६ ॥
बूटे सुललित ललाम । फैली प्रभा अभिराम ॥
सुंदर सरस सुखधाम । लखि लजत शत रतिकाम ॥ १७ ॥
मृदु उदर अधिक सुहात । जनु लसै सुरतरुपात ॥
ज्यों सिंधु सब गुणकेर । है कृपासदन निबेर ॥ १८ ॥

नेहजाल उरझानेंहैं ॥ ४४ ॥ लूटींहै लुनाई लोनी मिथिला निवासि-
ननें रसिकविहारी दुहूँ भाई प्रीति जूटीहै ॥ जूटी चहूँघाई छाई नेहकी
सचाई तव छैल रघुराई निठुराई सब छूटी है॥ छूटी धीरताई वीरताई
औ गंभीरताई अंग अतुराई चतुराई चित्तखूटी है ॥ खूटी नूर भूरके
गरूर की गरूरताई नेहमें निकाई प्रभुताई गई लूटीहै ॥ ४५ ॥ सुंदर
अनूप रूप साँवरो किशोर लोनो देखि देखि मिथिलानिवासी हुलसा
वहीं ॥ सव नर नारी एक एकते कहें हैं रुचि तोरे धनु येही तौ
अपार सुख छावहीं ॥ जनककिशोरी मिलि जोरी श्याम गोरी भली
विधिहि निहोरी करजोरी यों मनावहीं ॥ रसिकविहारी हितकारी वात
होवै वेगि सकल विचारी सत्य येही यश पावहीं ॥ ४६ ॥

चौ०-इहिविधि जनक नगर नर नारी ❀ राम लपण लखि भये सुखारी
प्रमुदित पुर विलोकि दुहुँ भाई ❀ गुरुढिग चले हीय हुलसाई४७॥
संध्या समय आय दुहुँ भ्राता ❀ गहे मुदित मुनि पद जलजाता॥
करि संध्यावंदन शुचि रीती ❀ अमित सराहत पुरजन प्रीती ४८
पुनिमुनि मुनि लछमन अरु रामा ❀ करि भोजन रजनी इक यामा॥
कहत सुनत पुरछवि अभिरामा ❀ अर्ध रैनि कीनो विश्रामा॥४९॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० पुर दर्शन वर्णनो
नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

चौ०—प्रात समै दुहुँ राजकुमारा ❀ नित्यकृत्य कीनो शुचि सारा॥
वेगि आय गुरुपद शिरनाई ❀ मुदित भये शुभ आशिप पाई१॥
गुरु पूजनको समय निहारी ❀ चले प्रसून लेन फुलवारी॥
दुहूँ बंधु नख शिख वर अंगा ❀ कर धनु शर कटि कसे निखंगा२॥
करि प्रणाम गुरु आयसु पाई ❀ गये दुहूँ नृप सुत हरपाई॥
गिरिजा वाग विचित्र अनूपा ❀ रहत जहाँ पट ऋतु धरिरूपा३॥
जाय दुहूँ नृपसुत तिहिद्वारे ❀ द्वारपाल रुचि लखि पग धारे॥
लेत प्रसून फिरत चहुँ ओरा ❀ प्रमुदित हेरत राज किशोरा॥४॥

दोहा–ताही औसर जनकजा, जननी आयसु पाय ॥
आई गिरिजा दरशहित, संग सखी समुदाय ॥ ५ ॥
करि मज्जन शृंगार साजि, सकल अलीन समेत ॥
पूजन सौंज अपार युत, गवनी गौरि निकेत ॥ ६ ॥
राजसुता अरु सखिनकी, शोभा अमित अनूप ॥
ध्यान किये सुख होय हिय, किमि वरणौं वह रूप ॥ ७ ॥

तोमरछंद।

पदकंज अधिक ललाम। सुखसीम वर छविधाम ॥
जिनकी परत महि ज्योति। सो लाल मणिमय होति ॥ ८ ॥
पुनि चरण अंगुलि मंज। मानहु मृदुल दल कंज ॥
उपमा सु और लखाय। जनु चंप कलिक सुहाय ॥ ९ ॥
नख गणनकी नव क्रांति। लखि कोटि शशि द्युति भ्रांति ॥
जनु रसिक जन सुख हेत। चिंता सुमणि छविदेत ॥ १० ॥
बिछिया ललित सुखधाम। नूपुर अधिक अभिराम ॥
रव मधुर सरस सुहात। सुनि राजहंस लजात ॥ ११ ॥
युग जानु सुंदर गोल। लखि मन बिकत बिनमोल ॥
जनु उभय कंचन खंभ। मिटिजात मनसिज दंभ ॥ १२ ॥
जंघा युगल अभिराम। जनु कदलि खंभ ललाम ॥
अतिसुभग उभय नितंब। मति कहत गहत विलंब ॥ १३ ॥
कटि अधिक सूक्ष्म जान। उपमा न जगमहँ आन ॥
देखी न सुनियत लंक। ज्यों ब्रह्म निर्गुण शंक ॥ १४ ॥
लहँगा ललित लहरात। बहुधेर छवि छहरात ॥
जरतार जटित जराय। निज कर मनोज बनाय ॥ १५ ॥
जगमगत मणि गणजोत। द्युतिमंद रवि शशि होत ॥
सोहत अनूपम कोर। जनु दामिनी चहुँ ओर ॥ १६ ॥
बूटे सुललित ललाम। फैली प्रभा अभिराम ॥
सुंदर सरस सुखधाम। लखि लजत शत रतिकाम ॥ १७ ॥
मृदु उदर अधिक सुहात। जनु लसै सुरतरुपात ॥
ज्यों सिंधु सब गुणकेर। है कृपासदन निबेर ॥ १८ ॥

नाभी सुललित गँभीर । जनुसिंधु भँवर सुधीर ॥
है सुभगता कर खानि । उपमा जु यह पुनि जानि ॥ १९ ॥
मणि जटित पदिक सुहाय। नवग्रह रहे जनु आय ॥
कंठी सुकंठ विराज । भूषण अधिक छबिछाज ॥ २० ॥
भुज मूल बाहु विशाल । मनु मृदुल पंकजनाल ॥
युग सुभग वर भुजबंद । मणि जटित क्रांति अमंद ॥ २१ ॥
कर युगल कोमल मंजु । मानौ मृदुल दलकंज ॥
कंकन सुदेश अनूप । मिलि अंग एकहि रूप ॥ २२ ॥
नव बलय की झनकार । मृदुमंद अति सुखसार ॥
मुँदरी हरित नग क्रांति । नृग साव कहि कर भ्रांति ॥ २३ ॥
पुनि कलित कंठ सहाय । जहँ पान पीक लखाय ॥
लखि लजत कंबु कपोत । भूषण सरस छविहोत ॥ २४ ॥
सोहै चिबुक छबिधाम । तिहि मध्य तिल अभिराम ॥
जनु हेम संपुट माहि । मणि नील जटित सुहाहि ॥२५ ॥
युग अधर सुंदर लाल । जनु लसत बिंब प्रवाल ॥
दंतावली छबिधाम । जनु कुंदकली ललाम ॥ २६ ॥
नासा अनूप सुढार । शुक तुंड सम सुखसार ॥
नथझूमका लहरात । मुक्ता बुलाक सुहात ॥ २७ ॥
हैं सुभग युगल कपोल । आदर्श मनहुँ अमोल ॥
आसन किधौं अभिराम । रसराजको सुखधाम ॥ २८ ॥
युग श्रवण हैं अभिराम । अति मृदुल अमल ललाम ॥
कुंडल सुझूमक झूल । भूषण विराज अतूल ॥ २९ ॥
लोचन युगल अभिराम । जनु कंज मीन ललाम ॥
खंजन मृगी सम जान । शरमैनके अनुमान ॥ ३० ॥
भृकुटी कुटिल सुखरूप । युग धनुष मनहु अनूप ॥
टी निहिबीच कुंकुम बिंदु । इकठौर शनि कुज इंदु ॥ ३१ ॥

नवगौर सरस सुरूप। सुंदर ललाट अनूप ॥
बेंदा विशाल विराज। जनु नवग्रहन समाज ॥ ३२ ॥
बेंदी लसै कमनीय। मणिजटित द्युति रमनीय ॥
मुक्ता अमोल सुहाय। सुंदर अधिक छबिछाय ॥ ३३ ॥
शिरचंद्रिका लहराति। झुकि झूमि छवि छहराति ॥
मणि जटित कांति विराज। कोटिन प्रभा कर लाज ३४ ॥
चिक्कन कुटिल मृदुकेश। वेणीगुही वर वेश ॥
छूटत सुगंध झकोर। ह्वै मत्त डोलत भौंर ॥ ३५ ॥
सारी सुनील सुहाय। जनु मेघमंडल छाय ॥
जरतार की नवकोर। सौदामिनी चहुँ ओर ॥ ३६ ॥
बरसै सुछवि मय नीर। सोपरत सीय शरीर ॥
दरशात आनँद रूप। शोभा अभंग अनूप ॥ ३७ ॥
नख शिख सँवै सुठि सीय। शृंगार पुनि रमणीय ॥
गजगामिनी मृदुगात। गिरिजाहि पूजन जात ॥ ३८ ॥
जैसी सिया अभिराम। तैसी सखी छवि धाम ॥
शिख नख स्वरूप सुढंग। शृंगार शोभित अंग ॥ ३९ ॥
तिनके अमित गुणरूप। तनु तेज अमल अनूप ॥
सिय सहचरी जु अनेक। हैं सरस एकहि एक ॥ ४० ॥

दोवई-छंद।

रूपरँगीली गुणगरवीली सुघर सलोनी बाला ॥
नवल नागरी अति उजागरी छाकी प्रेमपियाला ॥
नखशिख भूषण अमल अदूषण ज्यों शशि पूरन सोहैं ॥
वसन सुरंगा शोभित अंगा निरखि शची रतिमोहैं ॥४१॥
पंकजनैनी हैं पिकबैनी गजगामिनी ललामा ॥
वैसकिशोरी श्यामल गोरी मनहरनी सुखधामा ॥
उरज उतंगा नवल अनंगा परम प्रवीन पियारी ॥
रंगरँगीली नेह पगीली सुंदररूप उज्यारी ॥ ४२ ॥
गानकलामें छंद छलामें परम ललामें गर्जें ॥

बहु सुखदानी अधिक सयानी अंग अनूपम साजें ॥
रसिकविहारी मनि अति प्यारी करत पारको पारे ॥
तिनकी दासी सों चल आयी निहि भरोस कछु गावें ४३
काहूकी बेनी फूलन सों गुही विराजत नीकी ॥
काहूकी गूंथी मोतिनसों सरस मेढ़ली जीकी ॥
काहूके बन्धेन पीठ पै छूटे केश सुहाये ।
मानों नवल नागिनि कारी मदमाती लहराये ॥ ४४ ॥
अलक तरल सिंदूर सुहाये मोतिन मांग भरी है ।
श्याम वर्ण पै शोणितवर्णी सुमानों असी भरी है ॥
काहूकी पोशाक बनी है सुंदर रंग सुरंगी ॥
काहूकी कामनी बनी है काट अंग नरंगी ॥ ४५ ॥

दै प्रदक्षिणा पदपंकजगहि बहुविधि विनती कीनी।
मन भायो माँगो वर सुंदर परम प्रेम रस भीनी ॥
ताही समय अली इक लोनी गईविलोकनबागा।
डोलत फिरत लखत द्रुम वेली हिय उमँगेअनुरागा॥५०॥
ताहि छिन गुरु आयसु लैकै राजकुँवर दुहुँ आये।
निरखत बाग उतारत फूल न दोना करन सुहाये ॥
औचक दृष्टि परे सो ताके लखत विहाल भईहै।
भूपण वसन अपान चातुरी भोरी सबै गई है ॥५१॥
इकटकरही निहारि चकितह्वै नैन निमेप नलावै।
रघुनंदन छवि छकी छवीली मनमें मोद नमावै॥
लोक लाज कुलकानि त्यागि कै दौरि मिलनको चाहै।
ह्वै सकोच मनमारि रहै जिय अंतर मनसि जहा है॥५२॥
हिय विचारि कुलकानि जानितिय धर्मधीर कछु धारी।
चलीद्वैक डग परै न पग मग भई नेह मतवारी॥
तहँ ते चलै फेरि फिरि लोटै इहि विधि करि बरि आई।
झूमत झुकत चकित सी चितवत अली अलिन बिचआई ५३॥

बरवा छंद।

तिहि बिलोकि सिय सखियां बूझति बैन॥ कहा भयो तुहि हेली तू मतिऐन ॥५४॥ सोहै रति नहिं काहुहि उत्तर देत॥ लै उसास युग अँखियां भरि भरि लेत ॥५५॥ पुनि कर गहि सिय बूझति बैन रसाल॥ निजगति कहति न काहे नवला बाल॥५६॥ सुमिरि श्याम उर अंतर हिय धरिधीर। सियसों वोली सुंदरि बैन गँभीर॥५७॥ अवधनृपति दशरथ के सुत अभिराम॥ कौशिक सँग सो आये सुखमाधाम ॥५८॥ राम लपण दुहुँ भैया श्यामल गौर ॥ सुंदर ताके सोहैं जो शिरमौर ॥५९॥ धनुपयज्ञ सुनि आये हैं अतिवीर ॥ इनहि ताडकामारी एकहि तीर ॥६०॥ हति सुवाहु मारीचहिं विनफलवान॥ सिंधुपार तिहि पठयो राखे प्रान ॥६१॥ गये जनकपुर देखन

रौ ॥ सरसमाधुरी पियौ भली विधि पलक न टारौ ॥ अलीआज सुखसाज सबै निज निज हिय खोली ॥ निरखिलेहु भरिनैन बैन यौं सिय जू बोली ॥ १०२ ॥

दोहा—औचकराज किशोरकी, परी दृष्टि इत आय ॥
जनकनंदिनी रूपलखि, प्यारे रहे लुभाय ॥ १०३ ॥
सिय मुख पंकज रसरसिक, रघुनंदन मनभौंर ॥
रम्यो सुछबि मकरंदमें, कछू सुहात न और ॥ १०४ ॥
राजकुँवर वर बंधुसे, बोले वचनरसाल ॥
धनुप यज्ञ इन हेतु ये, जनकलली नवबाल ॥ १०५ ॥
सिय सुंदरता नेहमय, कहत लपण रघुचंद ॥
भये लतनकी ओटमें, ज्यों घनबिच युगचंद ॥ १०६ ॥
अकुलानी सिय सखिन युत, लखे न श्यामसुजान ॥
बढी अगिन तनु विरहकी, भूलो सबहि अपान ॥ १०७ ॥
भई सबै अतिबावरी, बोलति अटपटबैन ॥
राजकुँवर बिछुरे अबै, रंचहु परै नचैन ॥ १०८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

क्यौं न जर जायरी पतंग आय दीपकमें क्यौं न मणिहीन जो भुंजग प्राणत्यागैरी ॥ रजनीमलीन बिन चंद क्यौं नहोय भट्ट स्वातिबिन चातक अधार क्यों न वागैरी ॥ रसिकविहारी बिन सुघर सनेही मिले कोटिहू उपायते न हीय अनुरागैरी ॥ बिछुरे सुनीर क्यों न मीन मरिजाय हेली जानै सो वियोग पीर जाके जिय लगैरी ॥ १०९ ॥ विरही वियोगिनीन देखिकै अधीन दीन अधिक सतावैं भट्ट मिलिकै अनेकसे ॥ कसकत छाती सुनिकारीकोकिलाकी कूक गरजतकारे घनमान तन नेकसे ॥ रसिकविहारी कारी जुलैंफचुभीहैं हिय विरह मनोज अंग दाहे अविवेकसे॥कारे कजरारे नैन कीनी कतलाम धनी हेली हम जानी कारे कारे सब एकसे॥११०॥वृक्षद्रुम वेली सब विकल सहेलीघनी रसिक रसाल रघुलालको बतावोजू॥कलित कदंब कैसो वहत विलंब ऐसो नवल अशोक तुम शोक ता नशावोजू ॥ तरुन

तमाल इत लाल अविलोके कहूँ रसिकविहारी मोहिं वेगि दरशावोजू॥ एहो मृग छोना जाय करहु सहाय येती पीरें यह मेरी दौरि श्यामको सुनावोजू॥ १११॥ कोऊ नवपल्लव गहति कर जानि कोऊ जानि पद पंकजको कंज शीश नावहीं॥ कलित कपोल जानि चूमत गुलाब फूल कोऊ गहिकै तमाल बिरह सुनावहीं॥ रसिकविहारी कोउ हेरतीं चरण चिह्न पावैं कहुँ ताकी रेणु दृगन लगावहीं॥ नेह रसमाती सिया आली बिलखातीं सबै पातीदै पतौवनकी पक्षिन पठावहीं॥ ११२॥ नृपति कुमार सुनि लीजिये पुकार येजू हमतौ तिहारे श्याम रूप रस प्यासीहैं॥ प्यावो छवि नीर तनु तपनि सिरावो लाल विरह विहाल हाल करि मति नासीहै॥ येहो रघुराय अबै जानोना वियोग पीर रसिकविहारी तुमैं लागत जुहाँसीहै॥ नैननकी सैन दरशाय दुरे कुंजनमें हाय वह भई सो हमारे गर फाँसी है॥ ११३॥ कोऊ कहैं आली इमि होतीहो अधीर काहे येई धनुतोरि तिहुँ लोक यश छायहैं जोरी गौर श्यामकी संयोग रचि राखो विधि कंठ इनहींके जयमाला सरसायहैं॥ रसिकविहारी मन भाई सब ह्वैहैं भट्ट राम घनश्याम सिया दामिनी सुहाय हैं॥ उमँगि चलैगो उर आनँद घनेरो सखी नागरी सहेली सबै मंगल जुगायहैं॥ ११४॥ कोऊ सखी बोलीं राजकुँवर सलोने मृदु शंभु चाप निपट कठोर क्यों चढ़ावेंगे॥ कोऊ कहैं वैस अति थोरी पै अपार बल तोरि धनु पंकजकी नाल ज्यों बहावेंगे॥ रसिकविहारी सुनि सकल सुखारी भईं हम सब धन्य ऐसो नैन फल पावैंगे॥ परशि सलोनो गात सुख जलजात देखि कोमल रसीलेबैन बिहँसि सुनावैंगे॥ ११५ मन अकुलानी सिया सुमिरि पिताको प्रण अति सुकुमार घनश्याम राम जाने हैं॥ निपट कठोर शंभु चाप लखि भारी घनो केते भूप थाके बीर परम सयाने हैं॥ अधिक अधीर भई हीयना धरैं धीर दरशन हेत युगनैन अकुलाने हैं॥ रसिकविहारी दृग चंचल अचंचलभे मानों जालबीच नवमीन उरझाने हैं॥ ११६॥ येरे विधि परम सयानो तू बनायो जग मेरे दिन हेत ऐसो भयो मतिहीनो क्यों॥ जो पै श्यामसुंदर सो मिलवै

बिछोह भयो तोपै सुखमाँगो मोहिं मरनन दीनो क्यों ॥ रसिक
रघुनंदन अनूपरूप तिनके हियेते मोह सब हरि लीनों
जबै मिथिलामें धनुयज्ञ सुनि आये तबै शंभुको
सुकोमल न कीनों क्यों ॥ ११७ ॥ येहो शंभु परम
हौं निहोरौं तुमें माँगौं मनभायो वरदान यह पा
दीजे ह्वै प्रसन्न अति दाता फल चारके हौ
गौरि संयुत तिहारो गुण गाऊंमें ॥ कैतौ तात
प्रण कैतौ मृदु होवैं चाप तबै साँवरेको जयमाल
राऊंमैं ॥ रसिकविहारी व्याहि आनँद उमंग रंग
घनश्याम संग अवध सिधाऊंमैं ॥ ११८ ॥ कीजिये उपाय
न कोटिन कछूना चलै सोई अब ह्वै है जो विधाता लिखि
भाल ॥ शंभुचाप तात प्रणरेखा या ललाटकीसो टोरेनाटरै
तीनों ये अचल चाल ॥ रसिकविहारी सुखदानी मनमानी यही
ये न काहूंसो कछूक निजहीको हाल ॥ जोपै रघुराय सों हमा
साँचो लगो तोपै हम जानी हमैं साँचहू मिलैंगे लाल ॥ १

हरिगीतिका छन्द ।

इहि भाँति सिय जू सखिन युत रस नेहके छाकीं घनी
प्रगटे लतनकी ओटते ताहीं समैं रघुकुल मनी
आनंद हिय उमँगो रहीं जकि चित्रसी सब जहँ तहीं
मानो शरद निशि चन्द्रको यकटक चकोरी लखिरहीं १२०
कोऊ कहैं सखि दौरि मिलिये त्यागिये जग लाजको
इनते विहीनो जो भयो सुरराज तौ किहि काजको
कोऊ कहैं हम धन्य सजनी लखे श्याम सुजानको
ते मूढ़ कैसे श्याम राम विहाय ध्यावैं आनको ॥१२१
जरि जाय सो जप योग ज्ञान सनेहसो जरि जायरी
जरि जाय जननी जनक सुत हित जिनहिं येन सुहायरी
जरि जाय सो गुरु बंधु तन मन प्राण धन जरि जायरी
जो भजत रघुकुल चन्दको नहिं करत अधिक सहायरी १२

यह प्रीत साने बैन आली जनकनंदिनि गुतकहैं ॥
सब श्याम छवि छाकी सखी कोऊ न गृह जैबोचहैं ॥
मन मानिकै भय मातकी तब सीय हिय धीरज धरी ॥
उर राखिकै रघुराय गमनी गेहको आनँद भरी ॥ १२३ ॥
लखि जात जनककुमारिको नृप नंद अति व्याकुल भये ॥
हा भामिनी गजगामिनी मृदु बैन यों बोलत नये ॥
हा लाडिली नवला किशोरी प्राणप्यारी नागरी ॥
हा जानकी सुखदायिनी गुण रूप शील उजागरी ॥१२४॥
क्यों नैन बान चलाय प्यारी करिचली घायल हियो ॥
मुसक्यान मंद कृपानसी लागी सुतन व्याकुलकियो ॥
हे सुंदरी नवला सलोनी फेरि रूप दिखाइयो ॥ १२५ ॥
दृगनीर तुव छवि नीर बिन तलफत तिनै रसप्याइयो ॥
तुव रूप उर अंतर लिखो बिलगाय क्यों पल एकहू ॥
मन तो तिहारे संग गमनो धरत धीर न नेकहू ॥
इहि भांति कहि मृदुबैन राजिवनैन गुरु ढिगको चले ॥
इत लाल उतप्यारी चितव फिरि२ चितव आनँद भले १२६
इत आय दोऊ भाय गुरु पद पूजि अति आनँदलहे ॥
नृपबागके संवाद सरल सुभाय मुनिते सब कहे ॥
ह्वै अधिक हृदय प्रसन्न कौशिक सुभग शुभ आशिष दये ॥
चिरजियहु मन अभिलाष पूरे राम सुनि प्रमुदित भये १२७
उत गई सखिगण संग सिय जू गौरिसदन बहोरिकै ॥
पदकंजगहि मृदुबैनते विनती करी करजोरिकै ॥
जैजैति जैशिव प्राणप्यारी जैति अभिमत दायनी ॥
जै दीनगन भय भंजनी जैभक्त जनमन भायनी ॥ १२८ ॥
जै शंभु तन अरधंग वामिनि जैति सुरगन मंडनी ॥
उतपत्ति थितिलयकारिणी जै जैति खल दल खंडनी ॥
जगजननि जै गिरिजा भवानी जैति इच्छाचारिणी ।
जै जैति जै गजवदन अंबा जैति मंगलकारिणी ॥ १२९ ॥

विश्वास करि अति प्रीतिसे पदकमल जो तुव ध्यावहीं।
तिनको अगम सव सुगम होत अभीष्ट फल सो पावहीं ॥
किहि भाँति मैं विनती करौं तुम सकल अंतर्यामिनी।
मन भावतो वर दीजिये अव मोहिं शंकर भामिनी ॥१२०॥
वहु दिवस वीते तुमहि सेवत सफल सेवा कीजिये।
जा भाँति रघुवर वर मिलैं करि कृपा आशिष दीजिये ॥
धनु होय कोमल कै तजैं प्रण तात रामहि देखिके।
जिहि विधि मिलै मुहिं साँवरो सो जतन वन हि विशेषिके॥१२१॥
सुनि सीयकी वर विनय गिरिजा परमआनँद पायकै।
दीनी सुखद आशीश सीतहि सकल सखिन सुनायकै ॥
मन भावतो वर पाय हौ संशय तजौ सव जानकी ॥
दिन कछू वीते होहु दुलही रामरूप निधानकी १२२॥
सुनि गौरि वचन प्रमोद वाढो सीय हिय न समायसो॥
आनंद जो सखियानके किहि भाँतिते कहि जायसो॥
गिरिजाहि शीश नवाय आलिन संग सिय मंदिरगई ॥
रघुचंद दशरथ नंदमें उर प्रीति वाढी अतिनई ॥ १२३॥
दोहा—है सिय जिय रघुवीर विच, सिय विच रघुवर जीय ॥
प्रीति सनातन परस्पर, दुहूँ वसैं दुहुँ हीय ॥ १२४॥
वर्णत शोभा छिनहि छिन, उत सिय इत रघुलाल ॥
दोऊ दुहूँ निहारिकै, फँसे प्रेमके जाल ॥ १२५॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० वाटिका प्रसंग वर्णनो
नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दोहा—रामसिया सियरामको, सुमिरत निज निज ठाम ॥
मनसंकल्प विकल्प मधि, वीती सकल त्रिजाम ॥ १ ॥
उठे प्रात लखि वंधु दुहुँ, नित्य कृत्य सव कीन ॥
गुरुपद पूजे मुदित ह्वै, मुनि अशीश वर दीन ॥ २ ॥

ताही छिन भेजै जनक, शतानंद मतिधाम ॥
सादर चले लिवाय मुनि, सहित लषण अरु राम ॥ ३ ॥
सुंदर विशद विशाल वर, वनी धनुष मखशाल ॥
मध्य चाप चहुँ ओर बहु, बैठे बली नृपाल ॥ ४ ॥
शतानंद कौशिक सहित, दोऊ राजकुमार ॥
गये तहां लखि सब उठे, कियो जनक सतकार ॥ ५ ॥
परम उच्च आसन सुभग, तहँ करगहि नृप आय ॥
राम लषण संयुत मुनिहिं, बैठारे हुलसाय ॥ ६ ॥
राज कुँवर कौशिक सहित, आये धनु मखशाल ॥
सुनि धाये सब दरशहित, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥ ७ ॥
रुचिर यज्ञशाला निकट, उचित बने बहु धाम ॥
यथायोग मर्याद जहँ, बैठि लखैं सब बाम ॥ ८ ॥
ताछिन रघुवर रूप सब, निरखो निज निज भाव ॥
परम विचित्र चरित्र सो, नेक न परो लखाव ॥ ९ ॥
तब वंदीजन आयकै, कहो जनक प्रण टेरि ॥
सो सुनिकै भूपति बली, उठे धनुष दिशि हेरि ॥ १० ॥
जाय जाय सब लाय बल, थाके चाप उठाय ॥
रंच डगो नहिं करहुते, बैठे भूप लजाय ॥ ११ ॥
तब कौशिक लखि रामदिशि, बोले हिय हुलसाय ॥
तात विलोकौ धनुष तौ, लीजे जनक रजाय ॥ १२ ॥
सुनि रघुवर कर जोरिकै, कहीजु आयसु होय ॥
तौ देखौं धनु जाय मैं, नृपरुचि लीजे जोय ॥ १३ ॥
चौ० तब मुनीश औसर अनुमानी ॥ जनकहि कही मनोहर बानी ॥
राजराम धनु देखन चाहैं ॥ बड़ीबारते हृदय उमाहैं ॥ १४ ॥
सुनि कर जोरि कही अवनीशा ॥ परम उचित यह बात मुनीशा ॥
तब आज्ञा दीनी मुनिनाथा ॥ उठे राम गुरुपद धरि माथा १५ ॥
नख शिख सुभग श्याम मृदुगाता ॥ वय किशोर लोचन सुखदाता ॥
रघुवर रूप निरखि नरनारी ॥ भये नेहवश गिरा उचारी ॥ १६ ॥

सवैया—कवित्त।

कोउ कहैं हित ह्वै इहि औसर भूपहि कोउ नहीं समुझावै॥
काह करैं नरनाह वृथा जिहिते सबके उर दाह बढावै॥
हैं कर कोमल राघवके यह शंकर चाप कठोर लखावै॥
क्यों रसिकेश गहैं मिथिलेशके हीय दयाहु को लेश न आवै॥१७
कोउ कहैं इत होत अनीत लखौ न अबै चलिये निज गेहू॥
कोउ कहैं नृप बावरेहै तब तो सब भाषत नाम विदेहू॥
कोउ कहैं सब कोउ कठोर सुराज समाज दया नहिं केहू॥
कोउ कहैं रसिकेश अबौं नृप लालहि बाल चलौ गहिलेहू॥१८

दोहा—कोउ कहैं आली सुनौ, मोहिय इमि दरशात॥
तृण समान धनु तोरिहैं, दृढ मानौ मम बात॥ १९॥
इहि विधि पुर नर नारि सब, कहत परस्पर बैन॥
हेरि हेरि रघुचन्द मुख, रंचहु धीर धरै न॥ २०॥
विकल सुनैना अति भई, कहैं सखिनसों बात॥
कैसे धनुष उठाय हैं, राम श्याम मृदु गात॥ २१॥
करति सोच सिय मनहिमन, शंकर गौरि मनाय॥
कहति सखिन धीरे सकुचि, अलि अब ईश सहाय॥२२॥
सुमिरि राम बल जनक नृप, छिनक हिये उमगात॥
पुनि पिनाक गुरुता समुझि, मनहीमन अकुलात॥ २३॥
सो गति सब हियकी लखी, रघुवर उर उमगाय॥
आये वेगि पिनाक ढिग, हेरे सहज सुभाय॥ २४॥

घनाक्षरी—कवित्त।

आयो चाप भंग समै सबहि जनायो ढंग मानी नृप हिय तब
थरकि थरकि उठे॥ रसिकबिहारी नहवारी पुर नारिनके कंचुकी सुबंद
आप तरकि तरकि उठे॥ उर उमगे हैं भूप कौशिक लषण आदि राम
[illegible] दोउ थरकि थरकि उठे॥ जनककिशोरी जूके सखिन समेत
[illegible] नफल चारु फरकि फरकि उठे॥ २५॥

दंडक छन्द।

राम धनु निरखि वर नृपन बल धरपि वहु परखि सब हीय गति हरपि रुख पायकै ॥ धर्मधुर धीर रघुवीर रणधीर तिहि सहज करधारि गुरु शिवहि शिर नायकै ॥ सपदि संधानि ध्रुव भंग अनुमानि कसि- कान लगतानि निरखो न कोऊ वियो ॥ वेगि वरिबंड जस मंड भुज- दंड ते चंडको दंड द्वैखंड खंडित कियो ॥ २६ ॥ घोर धनु भंगको शोरचहुँ ओरभो सुनत तिहुँ लोक चर अचर औचक चके ॥ विष्णु विधि शंभु सुरपाल दिगपाल अहिपाल महिपाल तिहिकाल झझके- जके ॥ होत धर धर धरा कुधर थर हलत सिंधु खलभलत उछलत रवि शशि थके ॥ चिक्करत मत्तगज सिंह मृग आदि वहु फिक्करत विकल मणि विपिन कंदरतके ॥ २७ ॥

दोहा–धनुप भंग इहि विधि भयो, औचक काहु न देख ॥
गिरो खंड ह्वै भूमि तव, चकित रहे सब पेख ॥ २८ ॥
जै रघुवर जै राम जै, जैजै अवध किशोर ॥
जै रघुवीर सुधीर जै, चहूँ मचो यह शोर ॥ २९ ॥
निरखि शंभु धनु भंग सब, जनक नगर नर नारि ॥
करहिं निछावर आरती, वहु मणिगण धनवारि ॥ ३० ॥
जनक सुनैना सीय हिय, जो कछु भयो अनंद ॥
भापिसकै नहिं शेप सो, मैं वरणौं कहमंद ॥ ३१ ॥

सोरठ–कौशिक लपण अपार, मुदित भये धनु भंग लखि ॥
मानी नृपति निहार, सकुचाने श्रीहत सकल ॥ ३२ ॥
समय निरखि सानंद, शतानंद आज्ञादई ॥
जयमाला निरद्वंद, सियमेलै रघुचन्द उर ॥ ३३ ॥
तब नृप दई रजाय, सुनि सिय मन आनंद भो ॥
सखिन संग हुलसाय, चली विशद जैमाल लै ॥ ३४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

आई रघुचन्द ढिग जनक किशोरी गोरी देखो खंड खंड तहँ शंभु धनु बंकको॥रसिकविहारी ऐसो आनंद सियाके चित्त जैसे वरवित्त पाय होवै सुख रंकको॥ दोऊ कर उमँगि उठाये जयमाल लीने कवि हुलसाये हेरि उपमा उतंकको॥क्षीरसिंधु गहिकै सनाल युग कंजनते मुक्तमाल देत मानो पूरन मयंकको॥ ३५॥ सोहैं सिय सहित उमंग सखिसाजे अंग भूपण सुरंग रंग वसन विशाल सों ॥ करि कर ऊँचे दोउ ठाढ़ी हैं विदेहसुता कैसे कंठ डारैं माल छोटी रघुलालसों॥ रसिकविहारी तिहि औसर निहारी छवि उपमा विचारी सो उचारी है उतालसों॥ कनक लताकी नववल्ली द्वै अनूप कढि ऊरध उठी हैं मनो मिलन तमाल सों॥ ३६॥

सोरठा—एक सखी मुसकाय, तब बोली रघुचन्दसों॥
सादर शीश नवाय, जयमाला उर धारिये॥ ३७॥
सुनि रघुवर सकुचाय, शीश नवायो सियहि लखि॥
जनकसुता हुलसाय, पहिराई जयमालउर॥ ३८॥

घनाक्षरी कवित्त।

अतिहि उताल है निहाल रघुलाल कंठ मेली जयमाल भयो आनँद अपारो है॥ रसिकविहारी श्याम गोरी नवजोरी हेरी सब नरनारि निज प्राण धनवारो है॥ माल पहिराई दुहुँछाई सो अपार शोभा ताछिन अनूप रूप रुचिर निहारो है॥ धरि तिय भेप मंजु मुदित वसंत मानो आज ऋतुराज पै प्रसून जाल डारो है॥ ३९॥

सोरठा—सखिन सिखाई सीय, गहे राम पद कंज तब॥
आई प्रमुदित हीय, मातु निकट बैठी सकुचि॥ ४०॥
उत रघुवर हुलसाय, कौशिक पद शिरनायकै॥
बैठे आशिख पाय, सहित लपण शोभित भये॥४१॥
पुरवासी नर नार, निरखि शंभु धनुभंगको॥
निज निज मति अनुसार, कहत परसपर मुदितमन॥४२॥

दोहा—कोउ कहैं सब भाँति विधि, आज सुधारी बात॥
दशरथ राजकुमारको, सुयशरहो कुशलात॥ ४३॥

घनाक्षरी कवित्त।

ताडका जु मारी करी यज्ञरखवारी फेरि तारी मुनिनारी येतो वल जस खूट तो ॥ पुनि सुरनारी नरनारी औ सुरारिनारी हँसती जुन्यारी वीर नाम वह छूटतो॥ रसिकविहारी ईश सवहि सुधारी यह कीरति अपारी धौ न जानौं कौन लूटतो॥ जनकदुलारी होतीं निपट दुखारी भारी अवधविहारी ते न जो पै धनु टूटतो ॥ ४४ ॥

दोहा-कोऊ कहति दिढायजिय, सबहि अधिक समुझाय ॥
चाप आपही भंग भो, बात सत्य यह आय ॥४५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुनिकै उदंड वल प्रथमैकोदंड दुरि जाय कै लजाय सो मँजूषा माँहि सोगयो ॥ रसिकविहारी तऊ अवधविहारी ताहि हठकै उठायो मान ताको सवखोगयो ॥ शंभु धनु हीय हो गरूर गरुताको भूर चूर धूर ह्वै सो सूरताको नूर धोगयो ॥ सोई हूक लूक की भभूक फूक फाटो हीय याही ते पिनाक आप टूक टूक होगयो॥४६ ॥

दोहा-कोऊ कहति विचारिजिय, भयो जु भंगपिनाक ॥
सो कारण हम लखिलयो, सुनौ कहैं दै हाँक ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

राम करकोमल कठोर शंभुचाप हेरी मिथिलानिवासिनके सोच हिय भरिगो ॥ निपट हिरासलै उसाँस सव भापी यह रसिकविहारी कौन भूप मान धरिगो ॥ जीरन भयो पै तऊ आज लौं कराल भारी येते द्यौस माहीं धनु गरिगो न सरिगो॥ एकै वार ऐसी परी आय सवहीकी धाय लाय लगी हायकी पिनाक याते जरिगो ॥ ४८ ॥

दोहा-कोउ कहैं हम एकहू, नहिं मानें ये बात ॥
निज भुजवलते रामधनु, भंजो प्रगट जनात ॥ ४९ ॥
सो सुनि बोली कोउ तिय, आली मेरी जान ॥
जिहि प्रभाव टूटो धनुष, सो मैं करौं वखान ॥ ५० ॥

घनाक्षरी कवित्त।

परि परि पाय जाय गिरिजा निहोरी नित्य शंकर मनाये पूजे गणपति भावसे ॥ दीने दान विविध विधान जपकीने बहु नेम व्रत लीने

सिय सहित उछावसे ॥ रसिकविहारी मिथिलेशकी दुलारी दृढ प्रीति उरधारी अवधेश सुत चावसे ॥ जनक किशोरीके प्रतापते पिनाक टूटो टूटो है न जानो राम वलके प्रभावसे ॥ ५१ ॥

दोहा—इहि विधि उत पुर नारि नर, कहैं परस्पर बैन ॥
मनभाई सबकी भई, उर आयो अतिचैन ॥ ५२ ॥
इत सिय मात प्रमोद युत, कही नीरभरि नैन ॥
भंजो राजकुमार धनु, क्यों भाषों यह बैन ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित।

कहति सखीसों सियमाय हुलसाय हीय हेली हों भई हों अति चकित निहारिकै ॥ रसिकविहारी भूरि भारी हो पिनाक जाहि निरखि अपार वीर वैठे वलहारिकै ॥ भंजो ताहि बाल रघुलालहों न मानों यह बात इक आई उर भाषोंसो विचारिकै ॥ मेरीजान काम राम रूप धरि आयो आज शंभु धनु तोरो वैर पाछिलो सम्हारिकै ॥ ५४ ॥

दोहा—यों कहि रानी बहुरि लखि, सीतहि दई रजाय ॥
सखिनसंगलैसाजसजि, गिरिजहि पूजो जाय ॥ ५५ ॥
मात वचन सुनि मैथिली, सकल साज ले साथ ॥
जाय अलिन युत पूजिकै, गिरिजहि नायो माथ ॥ ५६ ॥
ताछिन इक आली कही, सुन हेली मम बैन ॥
गौरि सरिस कितहूँ कहूँ, कोऊ सुर तिय हैन ॥ ५७ ॥
जाके पदपूजत सदा, पूजत सब अभिलाख ॥
सकल सुरासुर नारि नर, पूजत हिय दृढ राख ॥ ५८ ॥
सुनि बोलीं सबही सखी, आली कही प्रणाम ॥
पै फल मिथिला वासको, है यह मेरी जान ॥ ५९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

शंभुगिरि वासी विंध्यवासी या गिरीशवासी रहतीं उमा क्यों तहाँ जानकी सिधावतीं ॥ काशीकी सुवासी तथा कांचीपुर वासी तऊ तितहूँ न जाय सीता सुमन चढ़ावतीं ॥ रसिकविहारी पूजी जनकदु-[illegible]री यातें नारी त्रिपुरारीकी त्रिलोकमें पुजावतीं ॥ मिथिला निवा-[illegible] न होतीं फेरि कैसे यह ऐसी गरुताई गौरि पावतीं ॥ ६० ॥

दोहा–इहि विधि सबही परस्पर, कहत सुनत हुलसाय ॥
सिया सहित आई भवन, वेगहिं गौरि पुजाय ॥ ६१ ॥
छायो अति आनंद चहुँ, करैं नारि कलगान ॥
वजत वाजने विविध विधि, होत निछावर दान ॥ ६२ ॥
राम लषण मुनि जनक सिय, हिय वहु बढ़ी उमंग ॥
पुर नर नारि अनंद युत, कहत भयो धनुभंग ॥ ६३ ॥
इति श्री० रा० र० वि० वि० धनुषभंग वर्णनो
नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा–धनुषभंग लखि जनक नृप, अति अनंद उमगाय ॥
करत दान बकसीस वहु, भूषण वसन लुटाय ॥ १ ॥
ताही छिन चहुँ ओरते, भयो कुलाहल सोर ॥
औचक आये परशुधर, कंध कुठार कठोर ॥ २ ॥
जटाजूट शिर भस्म तनु, भाल त्रिपुंड्र विशाल ॥
करधनु शरवर तेज वहु, चपल चाल दृग लाल ॥ ३ ॥
परशुरामको सकल नृप, उठि उठि कियो प्रणाम ॥
शतानंद कौशिक तिनै, उचित मिले लखि वाम ॥ ४ ॥
मुनिहि मिलत लखि बंधु दुहुँ, सादर नायो शीश ॥
निरखि परशुधर रूप सव, विकल भये अवनीश ॥ ५ ॥
ताछिन औचक धनुष दिशि, हेरि कुठार उठाय ॥
अतिसकोप बोले तमकि, मिथिलापतिहि बुलाय ॥ ६ ॥
बोल मूढ़ नृप वेगि यह, किन भंजो भव चाप ॥
देव असुर नर कौन जो, भयो कालवश आप ॥ ७ ॥
सुनि कराल भृगुपति वचन, नृप चुप रहे सशंक ॥
तव रघुवीर सुवेगहीं, बोले निपट निशंक ॥ ८ ॥
परशु नाम ते डरपि कै, कहै न कोऊ नाम ॥
पै धनुभंजन हेतु सव, लेत रावरो नाम ॥ ९ ॥
सुनि भृगुनाथ रिसाय अति, परशु उठायो हाथ ॥
कही अवहिं सव खलनके, गात करौं विन माथ ॥ १० ॥

महि मंडल सब छिनकमें, अबहीं होत निक्षत्र ॥
माला क्षत्रिन शिरनकी, कोटिन बनें इकत्र ॥ ११ ॥
परशुरामके बचन सुनि, लषण कहो अनखाय ॥
अवनी करि निक्षत्र अब, कोउ न हमें लखाय ॥ १२ ॥
लषण ओर तब परशुधर, लखे बिलोकनि बंक ॥
राम बंधु पुनि रोष युत, बोले बचन निशंक ॥ १३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

अनुचित भाषी तुम जैसी यह राखी सब राखी मनहीमें हम निज रिस मारिकै । एको ना दिखाय ऐसो बीर सामुहे जो आय फेरि घर जाय रघुबंशिन प्रचारि कै ॥ बृद्ध जानि छोरौं कर जोरौं औ निहोरौं बेगि भवन सिधारो रोष सकल निवारिकै ॥ रसिकबिहारी छत्र धारी युद्ध कारी कोउ सकैना निहारी या कुठारीको निहारिकै ॥ १४ ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि लषण लाल बाणी निशंक। द्विज नैन लाल करि भौंहबंक ॥
बोले रिसाय रे मंदबाल । क्यों होत कालवश अतिउताल ॥१५॥
तू अबहिंच जानि न मोहि । चुप जाय बैठ का कहहुँ तोहि ॥
सुनि फेरि कही लछमन हँसाय । भाषो चरित्र निज मुखहि गाय१६
देखो बिचारि यह जक्त रीति । जाने बिना न हो प्रीति भीति ॥
याते जु हाल पूछें प्रशस्त । सो सत्य सत्य भाषो समस्त ॥ १७ ॥
तुव रूप देखि मम हीय माहिं । एको प्रतीति कछु होत नाहिं ॥
सुर हौ तथापि हौ नाग कोउ । नरहो सुभापहू जोइ होउ ॥ १८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

विप्र कहिये क्यों कर लीने हो हथ्यार याते क्षत्री कहिये क्यों वीरताई ना जनात है। संत कहिये क्यों क्रोध मंत हो अनंत अरु भूप कहिये क्यों रूप तौर ना लखात है ॥ रसिकबिहारीहै तिहारी ... न्यारी कछू सब दरशात शुद्ध एकौ ना मिलात है ॥ आपनों ... नाम ठाम तब जानै हम भाषौ को गुरू है कौन तात भ्रात है ॥ १९ ॥

पद्धरी छंद।

सुनि कही कुपित रे बाल बाम। मो नाम ख्यात जग परशुराम ॥
बहु बार भूमि कीनी निक्षत्र। बैठे महीप बहु बूझ अत्र ॥ २० ॥
दोहा—सुनि लछमन हँसिकै कही, धन्य भाग्य मम आज ॥
दीन जानि कीनी दया, दरश दियो द्विजराज ॥ २१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

पाऊं अनुशासन तौ आसन बिछाऊं वेगि बासन भराऊं वेगि धीर उर राखिये ॥ द्विज गुणमान ज्ञान त्यौं विचार मान कीजे छोहकोहतें इतो न मनमाहँ माखिये ॥ देखि धनु बान क्षत्री जान पुनि वीर मान कीनो हम रोषसों कृपालै दोष नाखिये ॥ रसिकबिहारी सदा पूज्य हौ हमारे याते मीठो दधि मोदक मँगाऊं बैठि चाखिये ॥ २२ ॥

पद्धरीछंद।

तब कही कोपि भृगुबर जु छिप्र ॥ जनि जान मोहिं केवल सुविप्र ॥
मोसम न और जग कोउ वीर॥ बहु शूर मोहिं लखत तजत धीर ॥२३॥
सौमित्र कही तब विहँसि धीर ॥ नव सुनी आज हम विप्र वीर ॥
पैजिय प्रतीति नाहिं रंच होय ॥ द्विजराज सत्य गुण सुनहु सोय॥२४॥

घनाक्षरी कवित्त।

वेद पढ़ि जानैं जप यज्ञ बढ़ि जानैं पाप पुण्य मढ़ि जानैं बहु बातैं गढि जानैंहैं ॥ शापवेमें जानैं वर थापवे में जानैं दोष दापवेमें जाने तप तापवेमें जानैं हैं ॥ खाय जानैं खूब औ अजूबजा चिलाय जानैं रसिकबिहारी बालहू पढ़ाय जानैं हैं ॥ येती पुनि औरहू अनेक रीति जानैं एक युद्धबर वीरताई विप्र नाहिं जानैं हैं ॥ २५ ॥

पद्धरी छंद।

भृगुनाथ फेरि बोले सक्रोध। अज्ञान तोहि रंचहु न बोध ॥
वरवीर मौलिमणि शूलपानि। तो शंभुदास लै मोहि जानि २६
दोहा—लषण कह्यो गुरु शिष्यको, बल अरु सुयश अपार ॥
को अस जो जानै नहीं, त्रिदिन मरुत संसार ॥ २७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मदन निहारो सो प्रसून वान वारो मारो दुर्वल विचारो यह शंभुवल भूरता ॥ अवला अपारी वृद्धनारी महतारी ताहि तमकि सँहारी या तिहारी तेज पूरता ॥ रसिकविहारी दुहुँकाज दुराचारी तिनैं भारी करि भापैं या कवीनकी है कूरता ॥ हम तौ धनैयांहीं विलोकि अनुमानी जानी सकल पिछानी स्वामी सेवककी शूरता २८

दोहा—यौं कहि वोले लपण पुनि, मोहिं रुची इक वात ॥
स्वामी सेवक दुहुँनके, गुण समान दरशात ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

उन द्विज मारो तुम क्षत्रिन संहारो उन लाज सव छोरी मरजाद तुम तोरीहै ॥ मुंड उनधारे तुम अक्षि गलधारे उन खप्पर लयो है हाथ लीनी तुम झोरीहै ॥ उनैं विप वारे तमैं क्रोध तनुजारैं उनैं भाई मति भोरी तुम वाद बुद्धि वोरी है ॥ रसिकविहारी त्रिपुरारी औ तिहारी भली एकसी अनूप स्वामी सेवककी जोरीहै ॥३० ॥

पद्धरी छंद।

सुनि बैन लपणके परशुराम। वोले रिसाय रे वालवाम ॥
अब वेगि भाग ह्याँते दुराय। तन छनक माँह जम लोक जाय॥३१॥
सुनि स्वामि निंद जे चुप रहायँ। ते अधम मूढ़ वेगे नशाय ॥
हो रहौं दोप लखि रोप मार। भो आज काह कुंठित कुठार ॥ ३२ ॥

दोहा—सुनि बोले हँसि कै लपण, करौ न सोच अपार ॥
लाय देहुँ इक उपल तिहि, लेहु सुधारि कुठार ॥३३ ॥
कुंठित भयो कुठार जिहि, सो कारण यह आय ॥
लखि लीजे निज हीयते, मैं सब कहौं बुझाय ॥ ३४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कैतो कर कंपत गिरो है कहुँ पाहन पै परशु तिहारो तबही ते छीन धार भो ॥ कैतो कहुँ कानन कठोर तरु कीने छिंद जाते वाढ़ मंद है हथ्यार विन कार भो ॥ कैतो लोहकाचिको वनायोहै अजान कोऊ कैतो यह आजलौं न काहू पै प्रहार भो ॥ रसिकविहारी सत्य

येही दरशात याते कंध पै धरेही धरे कुंठित कुठार भो ॥ ३५ ॥
चौ०-सुनि भृगुनाथ लपण की वानी ❀ जनकहि कही महारिस सानी॥
रे नृप गहो मौन नहिं वोले ❀ लखौं काल ह्वै शिरपर डोलै॥३६॥
वेगि वताव चाप किन तोरो ❀ लखौं ताहि कैसो रिपु मोरो ॥
महावीर जेते जगलोगा ❀ कोउ न धनुप भंजिवे योगा॥३७॥
भारी भूरि कठिन कोदंडा ❀ परम उदंड प्रचंड अखंडा ॥
मम गुरु कर पिनाक जिन भंगा ❀ करौं खंड तिहिको द्रुत अंगा३८॥
सुनि भृगुपतिके वचन कठोरा ❀ कहो वहुरि लछमन वरजोरा॥
वारवार वूझौ भृगुनाथा ❀ धनुपभंग भो परशत हाथा ॥ ३९ ॥
सहज राम चापहि कर परसो ❀ तुरत टूटि अवनी पर दरसो ॥
धनु गरुता कछुनाहिं दिखानी ❀ भई वात सो सकल पिछानी४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

तेज ते न भारी गुणरूप ते न भारी शंभु संयुत तिहारे दीह दोपनते भारी भो। सुनो भृगुनाथ रघुनाथ हाथ लागतहीं चापके सुपापनको भार जरि छारी भो ॥ रसिकविहारी राव दुरित दुरानो तव धनुप पुरानो वृद्ध विशद विचारी भो ॥ फेरि अनुमानो तुव आगम पिनाक याते पातकडरन तन त्यागिकै सुखारी भो ॥ ४१ ॥

दोहा—यों कहि वोले लपण पुनि, नेक न आवै लाज ॥
धनुही को वहु वार तुम, कहौ धनुप विनकाज ॥ ४२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छोटे छोटे छोहरा छवीले रघुवंशिनके करत कलोलैं यूथ निज निज जोरि जोरि ॥ वेहो भृगुनाथ चलो अवध हमारे साथ देखो तहँ कैसे चहुँ खेलत हैं कोरि कोरि ॥ रसिकविहारी ऐसी अमित अमानें सदा आनें गहि तानें एक एकनते छोरि २ ॥ कोऊ झकझोरें कोऊ पकरि मरोरें योंहीं खोरि खोरि नितहि वहावें वाल तोरि तोरि ॥ ४३ ॥

दोहा—रही तिनहुँ ते अति हरू, निपट निजोर निकाम ॥
यह धनुहीं कैसी हुती, मोहिं वतावो राम ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

तूलकी रही कै काहू फूलकी रही कै मृदु मूलकी रही कै धूलसान कै सजाईती ॥ सांटीकी रही कै कहौं साँची स्वच्छ माटी लाय काँची काहू कुशल कुलाल ते कराईती ॥ रसिकविहारी भृगुनाथ भापिये तौ नेक शंकर समीप या कहाँ ते किमि आईती ॥ हौंतौ यह जानौ अनुमान ते जु कोऊ वाल ख्यालहेतु धनुही मृणालकी वनाईती ॥ ४५ ॥

चौ०—यों कहि लपण वहुरि मुसकाई ❀ बोले रोप तजौ भृगुराई ॥
भूले इक धनुहीं जो टूटी ❀ और अमित जगमें कह खूटी ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

ऐसीही कमान वालकेलिकी रुचै तौ वहु होवैंगी विदेह गेह अवहिं कढ़ाऊँमैं ॥ रसिकविहारी जो तिहारी प्रीति याही माहिं तोपै दुहुँ खंड खैंचि वेगही वढ़ाऊँमैं ॥ नीकी जिय भावै भृगुनाथ तौ निदेश दीजे हेमकी रचाय मणि माणिक मढाऊँमैं ॥ जोपै तुमैं चाहिये कहौ तौ द्विजराज अवै याहू ते अनोखी चोखी अमित गढाऊँमैं ४७॥

दोहा—लपण वचन सुनि परशुधर, परशु उठायो घोर ॥
कहो हतहुँ इहिं वालकहि, मोहिं न दीजो खोर ॥ ४८ ॥
कटुवादी निंदक कुटिल, याहि वधे नहिं दोप ॥
करों क्षमा हठिकै तऊ, मोहिं वढ़ावै रोप ॥ ४९ ॥
सुनि भृगुपतिके वचन तव, रघुवर मृदु मुसकाय ॥
जोरि दुहूँ कर सामुहे, विनय करी शिरनाय ॥ ५० ॥
महावीर वर धीर प्रभु, क्षमिये शिशु अपराध ॥
कृपा करत हैं वाल पै, सवही साध असाध ॥ ५१ ॥
लपण छुवो नहिं चापको, सत्य कहौं भृगुनाथ ॥
हौं अपराधी रावरो, यह तुव कर मम माथ ॥ ५२ ॥
सुनि रघुवर वाणी सरल, विशद विनय गंभीर ॥
शमित भयो उर कोप कछु, भृगुपति भाषी धीर ॥ ५३ ॥

चौ०—पुनि भृगुवर विचार उर कीना ❀ निजकर धनु रघुनाथहि दीना॥
नृप सुत छुअत सगुन भो चापा ❀ लखो राम तब राम प्रतापा ५४॥
तब भृगुनाथ प्रेम उर भारी ❀ बारबार रघुवरहि निहारी॥
नख शिख रूप अनूप अपारा ❀ चकित चित्त हिय करत विचारा ५५॥

घनाक्षरी—कवित्त।

कैधौं जटा जूट कैधौं कंचन मुकुट सोहै चंदनकी खौरि कैधैं चंद अभिरामहै॥ कैधौं मुण्डमाल कैधौं नाग मुकताकी माल कैधौं अंगराग कै विभूति छवि धामहै॥ कैधौं है त्रिशूल कैधौं शर सुख मूलकर कैधौं पटपीत कै वघंवर ललामहै॥ रसिकविहारी छवि न्यारी या अनूप भारी राम रूप शंभु कैधौं शंभु रूप रामहै ५६॥

चौ०—यौं विचारि पुनि दृढ़ अनुमाने ❀ सकल ईश धनुधर पहिचाने॥
तब जानो रघुवीर प्रभावा ❀ परमानन्द ज्ञान उर आवा॥ ५७॥
परशुराम हिय अति सकुचाई ❀ दुहुँ बंधुन वर विनय सुनाई॥
निज अनुचित सब क्षमा कराई ❀ प्रमुदित गये वेगि भृगु[illegible]॥५८॥

दोहा—अतिसशंक जिय विकलहै, परे रहे दुखकूप॥
लखि पयान भृगुनाथको, सुखीभये सब भूप॥ ५९॥
पुनि मानी महिपाल सब, करि करि विविध विचार॥
गमन कियो निज निज भवन, अमित मानि मनहार॥६०॥

चौ० जनकनगर चहुँ आनँद भारी ❀ कहत परस्पर पुर नर नारी॥
अब दुख शोक सकलविनशाये ❀ खल मलीन सब भवन सिधाये ६१
जनकराज उठि अधिक अनंदे ❀ सादर मुनि कौशिक पद वंदे॥
पुनि कर जोरि कही मृदुवानी ❀ अब सनाथ सीता मैं जानी ६२॥
मुनिवर करिय रजायसु सोई ❀ उचित होय इहि औसर जोई॥
सुनि कौशिक बोले हुलसाई ❀ लोकरीति अब चहिय सुहाई ६३
सजि बरात दशरथ नृप आवें ❀ राम व्याह लखि हिय हुलसावें॥
यह दृढ़ करि मुनि लछमन रामा ❀ परमानंद गये निज ठामा॥६४॥

इति श्री० रामरसायनवि० वि० परशुरामसंवाद
वर्णनोनाम सप्तमोविभागः॥ ७॥

दोहा–आये जे महिपाल ते, किते गये निज गेह ॥
किते सुजन मिथिला रहे, राखे नृपति विदेह ॥ १ ॥
पुनि मिथिलाधिप पत्र चहुँ, भेजे उचित लिखाय ॥
सकल ठौर मग साजते, निज दिशि दिये सजाय ॥ २ ॥

चौ०–पुनि प्रवीन वर दूत बुलाये ❀ दै पत्री तिन अवध पठाये ॥
शुचि सेवकन कही महिपाला ❀ व्याह साज सब सजौ उताला२
समै जानि नर तनु धरि देवा ❀ करत काज सियकी लखि सेवा॥
मंडप सजो अनूप विशाला ❀ रचित खचित कंचन मणिजाला४
असन वसन भूपन बहु नाना ❀ विविध वास वाहन वर जाना ॥
जनक भवन अरु नगर मँझारा ❀ सुर निर्मित सब साज अपारा॥५
उत वर दूत अवध पुर जाई ❀ युत मर्याद नृपहि शिर नाई ॥
करि बहु विनय पत्रिका दीनी ❀ है प्रमुदित सुमंत करलीनी ॥६॥
जनक पत्रिका बाँचि सुनाई ❀ पुनि मुनि पत्र पढो हरपाई ॥
नृप सुनि समाचार हुलसाने ❀ सकल लोग आनंद अघाने॥७॥
बूझी कथा दूत वर बरनी ❀ राम लपण नृप कौशिक करनी॥
कह्यो बहोरि सु व्याह विचारा ❀ साज समाज सहित विस्तारा८॥
सुनि सब चरित भूप हुलसाये ❀ भूपन वसन अनूप मँगाये ॥
प्रमुदित देनलगे बकशीशा ❀ ले सुदूत बोले धरि शीशा ॥९॥
कौशलपाल कृपा करि दीनी ❀ हम सानंद शीश धरि लीनी ॥
धर्मपाल महराजहि जानी ❀ विनती करें जोरि दुहुँपानी १०॥
जिमि ममईश विदेह नृपाला ❀ तिमि स्वामी अवधेश कृपाला॥
पै हम हैं मिथिलापुरवासी ❀ जनकसुताके रहत उपासी११॥
सो जानकी रामसों व्याही ❀ वह नातो जिहि भाँति निबाही ॥
याते धर्मनीति जिमि होई ❀ भूपति करिय रजायसु सोई १२॥
दूतवचन सुनि सकल सराहे ❀ कहे वचन नरपति जिय चाहे ॥
नृप सब लखि सो शीश चढाई ❀ पुनि बकशीशघनी निदि ठाई १३
बहुरि जोरि कर विनती कीनी ❀ राजराज आज्ञा मुदि दीनी ॥
[illegible] तुराल कौशलपुर जाई ❀ आवो वेगहि नृपहि लिवाई १३॥

याते राज रजायसु दीजे ❀ वेगि जनकपुर पावन कीजे ॥
सुनि सुमंत दिशि भूप निहारी ❀ आज्ञा दई यथोचित सारी १५॥
सुनि सुमंत दूतन सँग लाये ❀ सहित सुपास निवास दिवाये ॥
पुनि बहु सेवक सुमति बुलाई ❀ साज सजन हित दई रजाई १६॥
पुनि बहु निवत पत्र लिखवाये ❀ दे सुदूत चहुँ ओर पठाये ॥
इहि विधि गुरु मंत्री मतिमाना ❀ किये काज सब सहित प्रमाना १७
जबते राम ब्याह सुधि पाई ❀ सकल मातु तबते हुलसाई ॥
गानतान बकशीश सुदाना ❀ छिन छिन करें अनेक विधाना १८
भरत शत्रुहन अति हुलसाये ❀ सकल सखा सेवक हरपाये ॥
निज निज साज सजें सब भारी ❀ करें जनकपुर चलन तयारी १९॥
पुरवासी अनंदमें फूले ❀ देह गेह सुधि बुधि सब भूले ॥
करें सकल मंगल मय काजा ❀ साजें बर बरात कर साजा २० ॥
साजे सकल सदन बहु भाँती ❀ जटित हेम मुक्तामणि पाँती ॥
कंचन कलश सुबंदनवारे ❀ ध्वज वितान नव रंग अपारे २१॥

सोरठा—बीथी भवन बजार, राज महल बहु साज सजि ॥
छाई छटा अपार, राम ब्याह मंगल अवध ॥ २२ ॥
मातु सकल हुलसाय, लोक वेद कुल रीति युत ॥
अति आनंद अघाय, नेग योग कीने विविध ॥ २३ ॥
पुरवनिता बर बृंद, मंगल साज सिँगार सजि ॥
गावत भरी उमंग, आवत राज अगारमें ॥ २४ ॥
इहि विधि सहित उमंग, भये सकल मंगल सुखद ॥
सजी बरात सुढंग, जुरो लोग चहुँ ओरते ॥ २५ ॥
समय विलोकि वसिष्ठ, बोले दशरथ राजसों ॥
है यह योग वलिष्ठ, वेगि बरात पयानको ॥ २६ ॥
सुनि गुरु वचन नरेश, दोऊ राजकुमार युत ॥
पूजे गौरि गणेश, कियो पयान मुहूर्त शुभ ॥ २७ ॥

दोहा—गज तुरंग रथ पालकी, सकल अनूप अपार ॥
पदचर संग समाज बहु, चले महीप उदार ॥ २८ ॥

गुरु नृप स्यंदन पै रुचिर, कुँवर तुरंगन पाहिं ॥
यथा उचित वाहन अपर, सजे जनकपुर जाहिं ॥ २९ ॥
बजत बाजने विविध विधि, गान तानको शोर ॥
जै जैजै अवधेश नृप, शब्द होत चहुँओर ॥ ३० ॥
जनक नगर ते अवध लग, जनक सजे सब साज ॥
मग सुपास गृहतें अधिक, लखि मन मुदित समाज ॥ ३१ ॥
अति उताल यों जनकपुर, आये अवधनरेश ॥
इक योजन अगवान तिन, लाये साजि मिथिलेश ॥ ३२ ॥
दियो विशद जनवास नृप, करि बहु सकल सुपास ॥
दोऊ दिशि अति प्रीति भरि, छिन छिन बढत हुलास ॥ ३३ ॥
भयो शोर चहुँ जनकपुर, धाये सब नर नारि ॥
मुदित भये अवधेशको, साज समाज निहारि ॥ ३४ ॥
भरत शत्रुहन रूप लखि, चकित चितव सब कोउ ॥
कहत परस्पर कुँवर ये, राम लषण सम दोउ ॥ ३५ ॥
ताही छिन नृप सुतन युत, कौशिक हिय हुलसाय ॥
आय मिले अवधेशसों, परमानंद बढ़ाय ॥ ३६ ॥
राम लषण सौंपे नृपहि, प्रमुदित सकल निहारि ॥
देत अशीश उमंग सब, चिरुजीवो सुतचारि ॥ ३७ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, चारहु सुतन समेत ॥
जनकनगरमें अवधपति, राजे सहित जनेत ॥ ३८ ॥
पुनि कौशिक मिथिलेशसों, कहि ठाने चहुँ ब्याह ॥
हरषाने दुहुँ ओर सब, बाढो अमित उछाह ॥ ३९ ॥
लोक वेद कुल रीति बहु, यथा उचित सतकार ॥
दान मान दुहुँ ओरते, नित प्रति होत अपार ॥ ४० ॥
तितहि भरत मातुल मुदित, नाम जुधाजित सोय ॥
आये सादर अवध ह्वै, लखि प्रसन्न सब कोय ॥ ४१ ॥
लखि मिथिलावासी मुदित, कौशल नाथ समाज ॥
सुखी अवधवासी निरखि, जनकराज वर साज ॥ ४२ ॥

इहि विधि बीते कछु दिवस, भई सकल जगरीत ॥
आयो समय विवाहको, शुभ दिन परम पुनीत ॥ ४३ ॥
अगहनकी सित पंचमी, वृषभलग्न भृगुवार ॥
सुखद समय गोधूलिका, रामविवाह विचार ॥ ४४ ॥

प्रमाण उत्सवसिंधो–श्लोक।

विधिः–पंचम्यां मार्गशीर्षे तु शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥
संध्याकाले च रामस्य विवाहो भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

दोहा–सजिबरात जनवासतें, चले जनकके धाम ॥
चहूँ बंधु दूलह बने, शोभित रूपललाम ॥ ४५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बागो पीत फेटा पीत पटका पिछौरा पीत सोहै खौर पीत मन मोहै मौर पीत है ॥ अंगराग पीत वर भूपण अमाल पीत तून धनु वान औ कृपान म्यान पीत है ॥ सजित तुरंग पीत सँग निज संगी पीत विपुल बराती पीत साज सब पीत है ॥ रसिकविहारी चारु दूलह विलोकि चारौ श्याम श्वेत हरित सुरंग भयो पीत है ॥ ४६ ॥

दोहा–ताछिन छटा अनूप लखि, जनक नगर नर नारि ॥
कहैं परस्पर वचन वर, परम प्रेम उर धारि ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कैधों मणि मौर कैधों रुचिर रसाल मौर कैधों फूल जाल कैधों मेदरो दृगज है ॥ कैधों मुख मंजु कैधों विकसो विशाल कंज कुंतल कि धौं है किधौं मधुप समाज है ॥ कैधौं है तुरंग कैधौं मारुत चलै है मंद कैधौं कल गान कैधौं कोकिल अवाज है ॥ कैधौं रघुराज साज दूलह सुहावे आज रसिकविहारी किधौं आये ऋतुराज है ॥४८॥ निरखि बरात हुलसात बतरात बाम देखो रघुवंशी सबै सुखमानिधान हैं ॥ सोहन अदा तें नेक जोहन हीं मोहन हैं रसिकविहारी बीर धारे धनुवान हैं ॥ सकल सजीले औ छबीले रमगीले अंग नम्म रसीले त्यों रँगीले रूपमान हैं ॥ याते यों जनात बात कौशल पुरीमें बीर नारी और नर रूप छबिनकी ग्वान हैं ॥ ४९ ॥ चारौ बंधु सु-

खमानिधान सुखसिंधु हेली रसिकविहारी नेक नैन भर हेरिले ॥ हियरो डराय हाय डीठना लगाय कहूं याते तू लजायना छबीली टुक घेरिले॥ हाहा खाय विनय सुनाय तुव पाय परौं धाय चहूं वदन दुराय पट गेरिले ॥ वनरा विशाल वर वानिकवने हैं वीर वेगि ढिग जाय लाय राई नोन फेरिले ॥ ५० ॥

दोहा—यौं प्रमुदित सब रूप लखि, कहैं परस्पर वैन ॥
सजि बरात चहुँ बंधु सुठि, जात जनकके ऐन ॥ ५१ ॥
नृत्य गान बहु वाद्यको, छयो शोर चहुँ ओर ॥
सुर नर नभ महि कहत सब, जैजै अवधकिशोर ॥ ५२ ॥

चौ०—इहि विधि चारो कुँवर सुहाये ❀ सहित समाज राज हुलसाये ॥
आये जनकद्वार भये ठाढे ❀ सबही मन प्रमोद बहु बाढे ॥ ५३॥
सियामात सब सखिगणसंगा ❀ परिछन कीनो सहित उमंगा ॥
लखि शोभा हरषीं महरानी ❀ सकल नारि आनंद अघानी॥५४॥
मोद भरीं मंजुल मृगनैनी ❀ करें गान कल कोकिल बैनी ॥
राज कुँवर मंडपतर आये ❀ लखि दुहुँ राज हिये हुलसाये५५ ॥
भई अमित लौकिक कुलरीती ❀ पूजन दान नेग युत प्रीती ॥
प्रोहित समय विलोकि बुलाई ❀ सीतहि साजि सखी लै आई ॥५६॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

कंचन समान गात सहज सुहात फेरि दीपति दिखात दूनी मंजन निरूप ॥ रसिकविहारी सजे सकल सिंगार चारु शोभा है अपार [illegible] निरूप ॥ मंजुमणि मांगि लसै जनक किशोरी शीश [illegible] सुहाई आई उपमा निरूप ॥ मानों रसराज रघुराज [illegible] विजय पताके लसु मदन भूप ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥५८॥

चौ०—जनकलली रघुलाल निहारी ❀ भये अनंद सकल नर नारी ॥
तब सब उचित विधान अपारा ❀ किये दुहूँ नृप रानि उदारा ॥ ५९ ॥
ते पुनि पद सरोज नृपधोये ❀ जे नित निजमानस मधि गोये ॥
पुनि विदेह गुरु आयसुपाई ❀ कन्यादान कियो हुलसाई॥६० ॥
दोहा—जनकराज सिय कर हरषि, राम पाणिमँहँ दीन ॥
छई छटा तब राजसुत, प्राणिग्रहन जब कीन ॥ ६१ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

जनक किशोरी अरु अवध किशोर दोऊ होत पाणिग्रहण अनंद रसभीने हैं ॥ राम कर मध्य मंजु शोभित भयो है कर शोभा सो अपारमें सुजान चित्त दीने हैं॥ अति छविवारी सिय आँगुरी अनूप हेरि बात निरधारी मति धारी जे प्रवीन हैं॥रसिकविहारी विश्व विजय विचारी आज यातें पंचवान पंचवान संग लीने हैं ॥ ६२ ॥

चौ०—सीता पानि गहो रघुनाथा ❀ पुनिकरि सुविधि होम मुनिनाथा॥
सिया राम पट गाँठ सुजोरी ❀ होन लगी भाँवर सुठि जोरी ॥६३॥

घनाक्षरी कवित्त ।

साजे व्याह साज ज्यों अनूप अवधेश लाल कीनेहैं सिंगार त्यों विदेहनृपकी लली ॥ दोऊ होत भाँवरी अपार ता समैकी छवि रसिकविहारी सो अभूत उरमें रली ॥ ग्रंथित सुरंग चूनरीसोपटपीत संग निरखि सुढंग यों उमंग उमगी भली ॥ वृंद वृंद जुरिकै अनंद भरि इंद्र वधू कर गहि मानों दामिनीको घर लै चली ॥ ६४ ॥

देखि वनरी की छवि रति सकुचाति हीय हेरि वनराको त्यों मनोज होत झावरो ॥ सिय रघुचंदकी छटा निहारि व्याह समै रसिक विहारी सब लोग भयो बावरो ॥ चूनरी ग्रथित पटपीत मणि मौर माथे लखि जन भाषें मिथिलेश पुण्य रावरो ॥ नवलकिशोरी गोरी दुलहिनि जसी बनी तसो नव दूलह किशोर वर साँवरो ॥६५ ॥

जनक किशोरी गोरी राम अभिराम श्याम जोरी या करोरी रति काम सुषमा भली ॥ रसिकविहारी व्याह औसर अनूप रूप शोभित अपार शोभा हेरि हरषीं अली ॥ सिय छवि छाके पीय पीय छवि

खमानिधान सुखसिंधु हेली रसिकविहारी नेक नैन भर हेरिले ॥ हियरो डराय हाय डीठना लगाय कहूं याते तू लजायना छबीली टुक घेरिले॥ हाहा खाय विनय सुनाय तुव पाय परौं धाय चहूं वदन दुराय पट गेरिले ॥ वनरा विशाल वर वानिकवने हैं वीर वेगि ढिग जाय लाय राई नोन फेरिले ॥ ५० ॥

दोहा—यौं प्रमुदित सब रूप लखि, कहैं परस्पर बैन ॥
सजि बरात चहुँ बंधु सुठि, जात जनकके ऐन ॥ ५१ ॥
नृत्य गान बहु वाद्यको, छयो शोर चहुँ ओर ॥
सुर नर नभ महि कहत सब, जैजै अवधकिशोर ॥ ५२ ॥

चौ०—इहि विधि चारो कुँवर सुहाये ❀ सहित समाज राज हुलसाये ॥
आये जनकद्वार भये ठाढे ❀ सबही मन प्रमोद बहु बाढे ॥ ५३॥
सियामात सब सखिगणसंगा ❀ परिछन कीनो सहित उमंगा ॥
लखि शोभा हरषीं महरानी ❀ सकल नारि आनंद अघानी॥५४॥
मोद भरीं मंजुल मृगनैनी ❀ करैं गान कल कोकिल बैनी ॥
राज कुँवर मंडपतर आये ❀ लखि दुहुँ राज हिये हुलसाये५५ ॥
भई अमित लौकिक कुल रीती ❀ पूजन दान नेग युत प्रीती ॥
प्रोहित समय विलोकि बुलाई ❀ सीतहि साजि सखी लै आई ॥५६॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

कंचन समान गात सहज सुहात फेरि दीपति दिखात दूनी मंजन निपर पै ॥ रसिकविहारी सजे सकल सिंगार चारु शोभा है अपार हेमबिंदुक विखर पै ॥ मंजुमणि मौरी लसै जनक किशोरी शीश लगत सुहाई आई उपमा तिपरपै ॥ मानौ रसराज रघुराज मन जीति बांधो विजय पताक लै सुमेरुके शिखर पै ॥ ५७ ॥
घांघरो बनरो लाल बंद कंचुकी हू लाल चूनरी पिछौरी लाल मांगी मंजुलाल हैं ॥ भूषण अनूप लाल शोभित शृंगार लाल रसिकविहारी नरनारी बहु लाल हैं ॥ मंडफ विचित्र लाल महल विशाल लाल चांदनी चँदोवा लाल साज सब लाल हैं ॥ उलही उमंग हिय । लाल पीत पीत लाल हैं ॥५८॥

चौ०—जनकलली रघुलाल निहारी ❀ भये अनंद सकल नर नारी ॥
तब सब उचित विधान अपारा ❀ किये दुहूँ नृप रानि उदारा ॥ ५९ ॥
ते पुनि पद सरोज नृपधोये ❀ जे नित निजमानस मधि गोये ॥
पुनि विदेह गुरु आयसुपाई ❀ कन्यादान कियो हुलसाई॥६० ॥

दोहा—जनकराज सिय कर हरषि, राम पाणिमँहँ दीन ॥
छई छटा तव राजसुत, पाणिग्रहन जब कीन ॥ ६१ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

जनक किशोरी अरु अवध किशोर दोऊ होत पाणिग्रहण अनंद रसभीने हैं ॥ राम कर मध्य मंजु शोभित भयो है कर शोभा सो अपारमें सुजान चित्त दीने हैं॥ अति छविवारी सिय आँगुरी अनूप हेरि बात निरधारी मति धारी जे प्रवीन हैं॥रसिकविहारी विश्व विजय विचारी आज यातें पंचबान पंचवान संग लीने हैं ॥ ६२ ॥

चौ०—सीता पानि गहो रघुनाथा ❀ पुनिकरि सुविधि होम मुनिनाथा॥
सिया राम पट गाँठ सुजोरी ❀ होन लगी भाँवर सुठिजोरी॥६३॥

घनाक्षरी कवित्त।

साजे व्याह साज ज्यों अनूप अवधेश लाल कीनेहैं सिंगार त्यों विदेहनृपकी लली ॥ दोऊ होत भाँवरी अपार ता समैकी छवि रसिकविहारी सो अभूत उरमें रली ॥ ग्रंथित सुरंग चूनरीसोपटपीत संग निरखि सुढंग यों उमंग उमगी भली ॥ वृंद वृंद जुरिके अनंद भरि इंद्र वधू कर गहि मानों दामिनीको घर लै चली ॥ ६४ ॥
देखि बनरी की छवि रति सकुचाति हीय हेरि बनराको त्यों मनोज होत झावरो ॥ सिय रघुचंदकी छटा निहारि व्याह समै रसिक विहारी सब लोग भयो बावरो ॥ चूनरी ग्रथित पटपीत मणि मौर माथ लखि जन भाषें मिथिलेश पुण्य रावरो ॥ नवलकिशोरी गोरी दुलहिनि जैसी बनी तैसो नव दूलह किशोर वर साँवरो ॥६५॥
जनक किशोरी गोरी राम अभिराम श्याम जोरी या कसेरी रति काम सुषमा भली ॥ रसिकविहारी व्याह औसर अनूप रूप शोभित अपार शोभा हेरि हरषी अली ॥ सिय छवि छाके पीय पीय छवि

छाकी सीय जीकी गति दोऊ निजहीकी हियमें रली ॥ कंज दृग देखे उत श्याम भृंग लोभे इत हेरि मुखचंद फूली वालनलिनी कली ॥ ६६ ॥

चौ०-बजहिं वाजने विविध विधाना ❀ करहिं नारि मंगल कलगाना॥
भाँवर फेरि नेग बहु कीने ❀ धन मणि गण अगनित नृप दीने॥६७॥
ताछिन जनकनगरकी शोभा ❀ वरणिसकै अस कवि जग को भा॥
वरसै चहुँ अनंदकी धारा ❀ सुखी सकल नर नारि अपारा६८॥

घनाक्षरी कवित्त।

जलद घिरे हैं जन उमडो विदेह मेह वरसै अनंद नीर धारन अनंतसें ॥ दुंदुभी अवाजें घन गाजें जोरशोर छाजें दुति दरशावैं तिय दामिनी दुरंतसें ॥ भूरि पूरि दान मान सरिता अपार वाढि पवन झकोर प्रीति पूरव दिगंतसें ॥ रसिकविहारी सिय व्याहके उछाह माँह भूलि कै भई है मनो पावस हिमंतसें ॥ ६९ ॥ वैठीं जे जठेरी निमिवंशकी घनेरी तिन नेगरीति उचित निवेरी सव भूरीहै॥ फेरि फेरि दम्पती विराजे मंजु शोभा वह रसिकविहारी प्राणजीवनकी मूरी है॥राम अभिराम श्याम करते सिंदूर जब दिनो सिय माँग सो अभूत छविरूरी है ॥ महत मतंग मत्त मुदित निशंक मानो शुंडमें गुलाल लै कलिंदी धार पूरी है ॥७० ॥

चौ०-पुनि मुनि सकल नेग निरवारे ❀ दंपति एक ठौर वैठारे ॥
वहुरि वशिष्ठ रजायसु पाई ❀ सिय भगिनी तिहुँ जनक बुलाई७१॥

दोहा-सुता औरसी जनककी, एक उर्मिला नाम ॥
कुशध्वजकी मांडवी, श्रुतिकीरति अभिराम ॥ ७२ ॥

चौ०-सुंदरि सुता मांडवी नामा ❀ सो भरतहि व्याही सुखधामा॥
पुनि कन्या उर्मिला अनूपा ❀ व्याहि दई लछमनहि सुभूपा ७३॥
जो श्रुतिकीर्तिनाम वर कन्या ❀ सो व्याही रिपुहनकहँ धन्या ॥
व्याहे राम सरिस तिहुँ भाई ❀ मुदित जनक दशरथ दुहुँराई॥७४॥

सो०—इहि विधि भयोविवाह, राम सहित तिहुँ बंधुको ॥
वाढो परम उछाह, महासुखी चर अचर सब ॥ ७५ ॥
तब नृप जनक उदार, हृदय हुलास सकोच युत ॥
दायज दियो अपार, सकल अलौकिक वस्तुते ॥ ७६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

बच्छ युत धेनु कामधेनु सम पंचलच्छ दंती श्याम श्वेत दश लच्छ मद भीने हैं ॥हरित सुरंग रंग रंगके तुरंग कोटि स्यंदन सपाद कोटि हेमके नवीने हैं ॥ शिबिका अमोल रत्नजड़ित सुसप्त कोटि दासी दास अमित अनूप जे प्रवीने हैं ॥ बासन बसन भरि भूपण अपार साज रसिकविहारी ये विदेह नृप दीने हैं ॥७७ ॥

सो०—जिते जनक नृप दीन, तिते सकल पुनि और बहु ॥
दासी दास विहीन, किये दान अवधेश बहु ॥ ७८ ॥
जितीकरी बकसीस, अवध नृपति हुलसायके ॥
ताहूते गुण बीस, साज सकल पूरित भयो ॥ ७९ ॥
याही विधि दुहुँ राज, पागे परम प्रमोदमें ॥
अमितवार बहु साज, देत सकल पूरित तऊ ॥ ८० ॥
दुहूँ भूप कर दान, देखि सकल सुर नर चकित ॥
भेद न कोऊ जान, सिय प्रभाव प्रगटो कहा ॥ ८१ ॥
छायो अमित अनंद, सीताराम विवाह को ॥
मुदित नारि नर वृंद, जैजैजै सब करत हैं ॥ ८२ ॥
पुनि सुवासिनी नारि, दूलह दुलहिनि चारहू ॥
सुंदर समय निहारि, कर गहि कुहवर लेगई ॥ ८३ ॥
लै रनिवासमझार, कियो नेग लहकौरिको ॥
गावैंगीत सुढार, रीति सिखावैं दंपतिहि ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कलित कटोरा स्वच्छ हीरक अमोल गोल तामें खीर ओदन सु-
धारो सुखदेनहै॥ होत लहकौरि नेग आनँद अपार छायो लगन सुहायो

अति सकल निकेतहै ॥ राम सिय शोभा अविलोकितिहि औसरकी भापिवेको हरपि हिलोर हिय लेतहै ॥ रसिकविहारी जनु चंदते पियूप लैलै रतिसुख मैनरति मैन सुख देतहैं ॥ ८५ ॥

सो०—इमि वहु सहित उमंग, व्याहरीति सबही भई ॥
जनक सदन रसरंग, छायो नेह अपार लखि ॥ ८६ ॥
पुनि चारहु वर बंधु, पितु ढिग आये सकुच युत ॥
दशरथ नृप सुखसिंधु, निरखि हीय प्रमुदित भये ॥ ८७ ॥
बहुरि भई जिवनार, पटरस व्यंजन चतुर विधि ॥
वरणि लहै को पार, सो सब अमित अनूप सुख ॥ ८८ ॥
गारी विविध प्रकार, गावैं तिय आनँद भरी ॥
हास विलास अपार, भये भई जिवनारवर ॥ ८९ ॥
करि भोजन सानंद, एक सरिस सब छोट वड़ ॥
संयुत सुत सुखकंद, आये नृप जनवासमें ॥ ९० ॥
नृत्य गान चहुँ ओर, होत कुतूहल विविध वहु ॥
मचो नगरमें शोर, घर घर होत अनंद अति ॥ ९१ ॥
इहि विधि राम विवाह, भयो भये प्रमुदित सबै ॥
प्रतिदिन होत उछाह, दोऊ दिशि आनंदमय ॥ ९२ ॥
भोजन दान विनोद, गीतवाद्य कौतुक विविध ॥
हास विलास प्रमोद, होत रहत नित रैनि दिन ॥ ९३ ॥

दोहा—कौसल पुरवासी सबै, भूलिगये निजधाम ॥
मिथिला अवध लखात यक, मुदित रहैं वसुयाम ॥ ९४ ॥
होत जनकदिशिते सदा, नित नूतन सतकार ॥
रामविवाह अपार सुख, वरणिलहै को पार ॥ ९५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० विवाह वर्णनो नाम
अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

सोरठा—प्रातसमै सियमात, बोलि पठावत वंधु चहुँ ॥
सखन सहित नित जात, करत कलेऊ मुदित मन ॥ १ ॥

लक्ष्मीनिधि अभिराम, जनक राजके सुत विदित ॥
तिनकी तिय मति धाम, सिद्धा नाम ललाम अति ॥ २ ॥
दोहा—सो चारहु नृपनंद को, सिद्धा सहित सनेह ॥
संग सखिन युत लेगई, कर गहिके निजगेह ॥ ३ ॥
वर आसन सनमान करि, वैठोरे नृपलाल ॥
हास विलास विनोद बहु, करन लगीं सब वाल ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

वोली एक वाम श्यामनाम राव रोहै राम याको अर्थ सकल समर्थ इमिलायो है ॥ सबमें रमै जो वही रसिकविहारी राम सो सुनि हमारे हिय अति भ्रम छायो है ॥ सकुच न राखौ नेक सत्य वात भाषौ वेगि आपने सबै हैं इते कोऊ ना परायो है ॥ सबमें रमौ त्यों रमौ भगिनी सुमातनमें नाम गुण है कै वंशहीमें होत आयो है ॥ ५ ॥ वोलि रघुलाल निमि कुलकी निहारौ चाल जानैं हम हाल सब जैसे मिथिलाके हैं ॥ रसिकविहारी रीति भारी है तिहारी यह एक नामहीते काम राखत सदाके हैं ॥ अंबके जनक वेई जनक कुटुंबहूके जनकपुरीके वेई जनक सभाके हैं ॥ जातके जनक वेई भ्रातके जनक वेई तातके जनक वेई जनकसुताके हैं ॥ ६ ॥ कहत वधूटी एक हम यों सुनी है लाल मुनि प्रगटाये चार सुत अवधेशके ॥ दूजी हँसि बोली भानुवंशी वल हीन होत आली इनके तौ यही ढंग है हमेशके ॥ वोले सुनि श्याम तुम याही भ्रमते सुधाम देखो वल नृपति बुलाय देश देश के ॥ रसिकविहारी नारि मिथिलाप्रवीन सारि जैसी सुनी तैसी भौन देखी मिथिलेशके ॥ ७ ॥ वोले हँसि भरत सुनौ जू सिद्धिप्यारी नेक वात हम बूझें सो वतावो वहरावोना ॥ नारीको विवाह नारी संग या तिहारी रीति कौन सुख भारी वेगि भाषो सो सकावोना ॥ लक्ष्मीनिधि सिद्धि तिय नाम हैं प्रसिद्ध यह सिद्धिकाज सिद्धि विधि हमते दुरावोना ॥ रसिकविहारी गुण मंत संत पुत्र वधू इत है इकंत तंत कहत लजावोना ॥ ८ ॥ सिद्धि पुनि वोली वैन

सुनिये कमल नैन सखि रघुवंशी गुण सकल प्रवीन तें ॥ सबसे अनोखी चोखी चातुरी चलावें यह भगिनी सुता दें काम लेत हैं ऋपीन तें ॥ रसिकविहारी कही लखन न कोऊ काज साधक उदंड निमि वंशके वलीन तें ॥ वलते वनैना कल छलते वनैना तब हलते सलोनी सुता काढत जमीन तें ॥ ९ ॥ कोऊ सखी बोली अली सुंदर सबै हैं तऊ कौशला दुलारे क्यों सुरूप सरसाये हैं ॥ कही तब कौऊ कीन जानै महरानी भौन कीनो रतिनाथ गोन सोई छवि छाये हैं ॥ रसिकविहारी बाल कोऊ हुलसाय भाषी मधुर सुबैन कैसे बोलत सुहाये हैं ॥ कोऊ हँसि बोली याते बोल अति मीठे भये इनकी सुमाय इनें खीर खाय जाये हैं ॥ १० ॥

सवैया—कवित्त।

बोले तबै रिपुसूदन यों जिय भाये तुमैं यह क्यों पहिचानें ॥
संग चलो सबही जुरिकै हम सत्य सनेह तबै तुव जानें ॥
जो न चलौ तौ कछू बरहीं सतकार करो अतिही मन मानें ॥
हैं अनव्याह किशोर घने रसिकेश सखा वे कहो इत आनें॥ ११॥
वेगहि सिद्धि कही हँसिके निमिवंशीकहा गुण रावरे गावें ॥
सो रसिकेशकरो जिहिते मिथिला पुर वासी सबै समुझावें ॥
चारन नंद अनंद समेत दई हमतौ तिहिते हुलसावें ॥
होंय तिहारी जिती भगिनी तिन देहु विवाहि इहाँ सुख छावें१२॥
राम कही सिधिसों मुसक्यायकै नारि घनी रघुवंशिहिचाहैं ॥
हौं निमिवंशी महा तपसी तिय एकहीको वरियांई निवाहैं ॥
याते न राखौ विचार कछू रसिकेश बुलावहु वेगि कहाँहैं ॥
होयँ जिती मिथिलेश सुता हम चारहु बंधु तिती सबव्याहैं१३॥
सिद्धि कही तब श्याम सुनो बहु तीव्र भये जिय चैन लहैना॥
याते जुहो रसिकेश भली इक तौ पुनि दूजिहि पाणि गहैना॥
नारि घनी जिहिके तिहिके मन और कछू वर चाह चहैना ॥
ताहू पै सोरस भंग महा सब माहिं समान सनेह रहैना॥१४॥
सो सुनिकै रघुराय कही है सही यह पै सब एकसेनाहैं ॥

कोउ लखैं सुख स्वारथको अरु कोउ वनो शुचि प्रेमहिंथाहैं॥
सुंदरि सिद्धि सुबैन सुनौ कछु नीकोवुरो जिय रंच न चाहैं ॥
ऐसो सुभाव परो है सदा हमतौ हिय सत्य सनेह निबाहैं १५॥
राजकुमारके बैन सनेह भरे सुनिकै सबही उमगानी ॥
प्रेम प्रवाह वढ़ो हियमें तब सिद्धि कही गहिकै मृदुपानी ॥
लाल निहोरति हौं तुमको मम चूक क्षमो अति नारि अयानी॥
मोहिंनभूलियो श्याम सुजान कवौंरसिकेशसदा निजजानी १६
तिय एक हिये उमगाय सुधायकै आय दुहूं पदकंजगहे ॥
सकुचाय कछू अकुलाय सकाय सुनेह बढाय सुबैन कहे ॥
हम रावरे संग चलैं अवतौ जु वियोग कलेश न जै है सहे॥
रसिकेशजुपै तजिजैहो लला छिनमें सुनिहौ नहिं प्राण रहे१७॥
करजोर निहोर कही इक लाल विहाल करी सिगरी तियको ॥
मृदुबैन सुनाय छटा दरशाय सनेह लगाय हरो हियको ॥
रसिकेश कियो जिमि छोह वनो तिमि मोह सदा रखियो जियको॥
न सुहाय विहाय तुमैं रघुराय धरावहि धीरकहौ वियको॥१८॥
दोहा–सुनि सिद्धा बोली विलखि, जिय सनेह सरसाय ॥
हेली इनके हीयमें, निठुराई दरशाय॥ १९॥

कुण्डलियाछंद ।

जाके नामहिं लेतहीं, मोह सकल मिटि जात ॥
सुत वित गृह तिय मीतसे, फेरि न प्रीति रहात ॥
फेरि न प्रीति रहात दुखसुख सम दुहुँ सोवें ॥
लोक और परलोक, चाह आशा सब खोवें ॥
रसिकविहारी राम जपत, ममता नहिं ताके ॥
नेह ताहि क्यों होय, नाममें यह गुण जाके॥२०॥
लांगे जाके हीयमें, प्रिय वियोगको तीर॥
आप सरिस सोई तबै, लखै पराई पीर॥
लखै पराई पीर हिये दाया कछु लावै ॥
ये ये पीर सुवीर जिये, शंका कद आवै॥

रसिकविहारी सहज चाप भंजो अनुरागैं ॥
इनै विरहको भार कहो, भारी किमि लागै ॥ २१ ॥
दोहा—यों कहि सिधि पुनि श्याम दिशि, हेरि नीर भरि नैन॥
लै उसाँस बहु नेह युत, बोली मंजुल बैन ॥ २२ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

सरससनेहसने मधुर सुधासे बैन मंद मुसक्याय फेरि कवधौं सुनावोगे ॥ रसिकविहारी बलिहारी या तिहारी छवि मंजुमनहारी फेरि कब दरशावोगे ॥ रूपकी उपासी हमैं दासी जानि खासी लाल यौंही फेरि कवधौं अनंद उर छावोगे ॥ येहो श्याम सुंदर सुजान प्राणप्यारे छैल साँचि कहो फेरि मिथिलामें कब आवोगे ॥ २३ ॥

दोहा—ताछिन बोली एक तिय, सुनौ छबीले लाल ॥
यह अधार है प्राणकी, प्रिया जानकी बाल ॥ २४ ॥

सवैया कवित्त ।

है सबको अति नेह सिया महँ सो रसिकेश विलंब न लैयो ॥
बारहिं वार बुलावहिंगे इहिते मिथिलेश ललीही पठैयो ॥
फेरि हिये हुलसाय लला मिथिला पुरवासिनको सुख दैयो
राजकिशोर सदा तुमहीं इत सीतहि आप लिवावन ऐयो२५॥
सत्य सनेह सने सुनि बैन कहै अनुराग भरी वर नारी ॥
देखि दशा तिनकी रघुनंद पगे दुहुँनैन भरे सुख वारी ॥
धीरज दै तिन श्याम कही रसिकेशरहो सब भाँति सुखारी ॥
ज्यौं तुम मोहिं धरो उरमें तिमि हौं सबही अपने हिय धारी२६॥
आवहिंगे हम वार घनी मिथिला रसिकेश लहैं सुख भारी ॥
ऐसो सनेह को ठौर न और कहूँ जगमाहँ रुचै जहँगारी ॥
सत्य विचार करौ अपने अपने उर जानतिहौ गति सारी ॥
होय कोऊ नरनारी सदा तिहि लागत है ससुरार पियारी ॥२७ ॥
दोहा—इहि विधि सुख सरसाय बहु, कहैं परस्पर बैन ॥
डीठ बचाय सखीन दिशि, सिद्धि करी दृगसैन॥ २८॥

पाय सिद्धि रुख तीयगन, गहे बंधु चहुँधाय ॥
बहु विनोद भरि मोद सब, करन लगीं हुलसाय ॥ २९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

कोऊ नारि सहित उमंग रंग डारें अंग कोऊ भाल बेंदी दै तियाके साज साजे हैं ॥ कोऊ गुलचायके कपोल मुख चूमै धाय कोऊ आय औचक गुलाल मलि भाजे हैं ॥ कोऊ गाय गारी करतारीदै विलोकें रूप कोऊ दूरहीतें फूल घालें फेरि लाजें हैं। रसिकविहारी कोउ दुलही बखानि भेट करहिं अनंद रघुनंद सुखकाजै हैं ॥ ३० ॥ सिद्धि हुलसाय आय बीरी मुखदीनी फेरि अतर लगायो अंग वसन सुरंगमें। गजरा प्रसूननके चारू पहिराये लखि लाल हरषाये बोल आनँद उमंग में ॥ तुम अलबेली चारहूके जयमाल मेली काह यह कीनो छकिनेह रसरंगमें। रसिकविहारी सुकुमारी अब साँची कहो चारो वीचरैहो कै रहोगी एकसंगमें ॥ ३१ ॥ सुनि सकुचाय सिद्धि बोली हँसिये हो लाल चारो नृप लाल बहु ख्यालनमें तीखेहो। नीके श्याम गोरे हौन कोरे रस बोरे छैल कोऊ नाहिं थोरे भेष भोरे शुद्ध दीखे हो ॥ रसिकविहारी औध नारी हैं प्रवीन सारी तिन ढिगजाय जाय सब रस चीखे हो। नैननके सेननके बैननके चैननके पूरे रघुचंद छलछंद बंद सीखे हो ३२॥ श्याम हँसि बोले हम सीखे वह सीखे जो न सीखे तिन सीखबेकी चाह उरलाये हैं॥ रसिकविहारी गुणकीरति तिहारी सुनि सीखिबेको चारो बंधु आज इत आये हैं ॥ जो पै कृपा करिकै सिखावो अधिकावो मोद जग यश छावो बहु दूरि ते सिधाये हैं। कहो हियराखें कहो भाषें अभिलाषेंसब पूजें रावरेसे गुण मंत संत पायेहैं ३३॥

दोहा–इहि विधि हास विलासमें, मध्य दिवसभो आय ॥
समय निरखि पितु निकटको, हरषि उठे रघुराय ॥ ३४ ॥
पुनि सिद्धा रुखपायकै, सब धाई सखि वृंद ॥
द्वार आय वर सखनकों, गहि लीने सानंद ॥ ३५ ॥
भरि भरि रंग गुलाल सों, करि करि नारि सिंगार ॥
अतर पानदै मान युत, पहिराये उर हार ॥ ३६ ॥

अमित अली चहुँ बंधुकों, सखन सहित लै संग ॥
यथा रूप जनवासमें, लाई सहित उमंग ॥ ३७ ॥
अपर सखन को टरि कै, सौंप राजकुमार ॥
कही लेहु वर वीर ये, सकुचे सकल निहार ॥ ३८ ॥
इत सबही मंजन कियो, सजे अनूपम अंग ॥
सिद्धि निकट सब उत गई, आली भरी उमंग ॥ ३९ ॥
सब रघुवर गुण रूप मद, छकीं तीय हुलसाय ॥
कहति परस्पर रुचिसरिस,उर अभिलाप दृढाय ॥ ४० ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवध महलकी धूरि ॥
तौ परसौं नित श्यामके, चरण सजीवन मूरि ॥ ४१ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर तरु पात ॥
तो परसौं तन लालको, कुंजन आवत जात ॥ ४२ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर मधि मोर ॥
उड़ि महलन पै बैठितो, निरखौं नवल किशोर ॥ ४३
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधबाग बिच फूल ॥
तौ सुमाल मिलि लाल हिय, लगौं मिटै सब शूल ॥ ४४
कोउ कहैं अलि होउँ जो, अवध मध्य मृग रूप ॥
तौ खेलौं सँग लाडिले, शोभा लखौं अनूप ॥ ४५ ॥
कोउ कहैं अलि होउँ जो, श्रीसरयूमाधि मीन ॥
तौ मज्जत परसों लखौं, रघुवर अंग नवीन ॥ ४६ ॥
सिद्धि कही तब सखि सुनौ, मैं यह चहौं सदाहि ॥
बसै श्याम मो हीय नित, छिनहु नहीं बिलगाहि ॥ ४७ ॥
इक सखि बोली प्रेम भरि, बडभागिनि है सीय ॥
जाहि अनूपम वर मिलो, रघुवर सों कमनीय ॥ ४८ ॥
येही विधि सब सिद्धि युत, छकीं नेहरसरंग ॥
निशिदिन रघुवर रूप गुण, ध्यावैं सहित उमंग ॥ ४९ ॥
जनक भवन यौं रैनि दिन, नित प्रति होत उछाह ॥
सब हरपे जबते भयो, सिया रामको व्याह ॥ ५० ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० हासविलासवर्णनो-
नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

तोटक छंद।

इहि भाँति वने दिन बीत गये ॥ सवही जन प्रीति अधीन भये ॥
नहिं काहु कछू सुधि धामहुकी ॥ तनकी धनकी सुत वामहुकी ॥१॥
बहुवार कही अवधेश जऊ ॥ न विदेह बिदा तिन कीन तऊ ॥
तव कौशिक भूपहि आय कही ॥ अव राज बिदा दृढ लेन चही ॥२॥
सुनिके मिथिलेश कह्यो वर है ॥ मिथिला अवधेशहिको घर है ॥
पुनि जो कछु राज रजाय करी ॥ सवही विधिसो हम शीशधरी॥३॥
कहि यों पुनि साज सजाय सबै॥ पठये चहुँ बंधु बुलाय तबै ॥
यह वात सुनी पुर लोग जहीं ॥ अकुलाय उठे अतिहीं सुतहीं॥४॥
नर नारि सबै यह जीय चहैं ॥ रघुचंद इहाँ अब नित्य रहैं ॥
पुरवाम परस्पर बोलति हैं ॥ अभिलाप हिये वह खोलतिहैं॥५॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोऊ कहैं हेली निज दोऊमें श्रवण कुंड वचन सुधाते हौं भरौंगी- जोरि वृंद वृंद॥कोऊकहैं हों तौ सखी गुण गण साँवरेको उरबिच धारौं कंठ माल मधि गूंद गूंद ॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी छवि नीलमणि धरि हौं हिये सो दृग तारनमें फूंद फूंद॥कोऊ कहैं वेतौ अली अवध सिधारैं याते हम गहिराखैं मन मंदिरमें मूंद मूंद ॥ ६ ॥

तो० छंद।

इहि भांति सबै तिय वैन कहैं ॥ रघुनंदनको न वियोग चहैं ॥
जुरिके वनिता रनिवास चली ॥ लखिये छवि औरहु आज अली॥७॥
इहि भाँति चहूं बहु शोरबिछ्यो ॥ अब आज विदाकर साज भयो ॥
सब नैनन नीर विमोचत हैं ॥ किहि भांति रहैं इमि सोचत हैं॥८॥
कह बालक वृद्ध कहा तरुणा ॥ मिथिला सब छाय गई करुणा ॥
पशु पक्षिहुते अतिहीं बिलपैं ॥ मनही मन सोच भरे कलपैं ॥ ९ ॥
सिय मातु इतै सिय गोद लई ॥ करि हाय विलोकि उसास लई ॥
बहु नैनन ते जलधार चली ॥ तिहि औसर धीर अपार चली॥१०॥
तब रानिहि धीर धराय अली ॥ बहु बात कही समुझाय भली ॥
सिय मात महा मनमोह मली ॥ उरलाय लई करि छोह लली ११ ॥

अमित अली चहुँ बंधुकों, सखन सहित लै संग ॥
यथा रूप जनवासमें, लाई सहित उमंग ॥ ३७ ॥
अपर सखन को टेरि कै, सौंपे राजकुमार ॥
कही लेहु वर वीर ये, सकुचे सकल निहार ॥ ३८ ॥
इत सबही मंजन कियो, सजे अनूपम अंग ॥
सिद्धि निकट सब उत गई, आली भरी उमंग ॥ ३९ ॥
सब रघुवर गुण रूप मद, छकीं तीय हुलसाय ॥
कहति परस्पर रुचिसरिस,उर अभिलाष दृढाय ॥ ४० ।
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवध महलकी धूरि ॥
तौ परसौं नित श्यामके, चरण सजीवन मूरि ॥ ४१ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर तरु पात ॥
तो परसौं तन लालको, कुंजन आवत जात ॥ ४२ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर मधि मोर ॥
उड़ि महलन पै बैठितो, निरखौं नवल किशोर ॥ ४३
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधबाग बिच फूल ॥
तौ सुमाल मिलि लाल हिय, लगौं मिटै सब शूल ॥ ४४
कोउ कहैं अलि होउँ जो, अवध मध्य मृग रूप ॥
तौ खेलौं सँग लाडिले, शोभा लखौं अनूप ॥ ४५ ॥
कोउ कहैं अलि होउँ जो, श्रीसरयूमधि मीन ॥
तौ मज्जत परसौं लखौं, रघुवर अंग नवीन ॥ ४६ ॥
सिद्धि कही तब सखि सुनौ, मैं यह चहौं सदाहि ॥
वसै श्याम मो हीय नित, छिनहु नहीं बिलगाहि ॥ ४७ ॥
इक सखि बोली प्रेम भरि, बडभागिनि है सीय ॥
जाहि अनूपम वर मिलो, रघुवर सों कमनीय ॥ ४८ ॥
येही विधि सब सिद्धि युत, छकीं नेहरसरंग ॥
निशिदिन रघुवर रूप गुण, ध्यावैं सहित उमंग ॥ ४९ ॥
जनक भवन यौं रैनि दिन, नित प्रति होत उछाह ॥
सब हरषे जबते भयो, सिया रामको व्याह ॥ ५० ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० हासविलासवर्णनो-
नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

तोटक छंद।

इहि भाँति वने दिन वीत गये ॥ सबही जन प्रीति अधीन भये ॥
नहिं काहु कछू सुधि धामहुकी ॥ तनकी धनकी सुत वामहुकी ॥१॥
बहुवार कही अवधेश जऊ ॥ न विदेह विदा तिन कीन तऊ ॥
तव कौशिक भूपहि आय कही ॥ अव राज विदा दृढ लेन चही ॥२॥
सुनिकै मिथिलेश कहो वर है ॥ मिथिला अवधेशहिको घर है ॥
पुनि जो कछु राज रजाय करी ॥ सबही विधिसो हम शीशधरी॥३॥
कहि यौं पुनि साज सजाय सबै॥ पठये चहुँ बंधु बुलाय तबै ॥
यह वात सुनी पुर लोग जहीं ॥ अकुलाय उठे अतिहीं सुतहीं॥४॥
नर नारि सबै यह जीय चहैं ॥ रघुचंद इहाँ अब नित्य रहैं ॥
पुरवाम परस्पर बोलति हैं ॥ अभिलाष हिये वह खोलतिहैं॥५॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोऊ कहैं हेली निज दोऊमें श्रवण कुंड वचन सुधाते हों भरींगी-जोरि वृंद वृंद॥कोऊकहैं हों तौ सखी गुण गण साँवरेको उरविच धारौं कंठ माल मधि गूंद गूंद ॥ कोऊ कहै रसिकविहारी छवि नीलमणि धरि हों हिये सो दृग तारनमें फूंद फूंद॥कोऊ कहै वेतौ अली अवध सिधानें याते हम गहिराखैं मन मंदिरमें मूँद मूंद ॥ ६ ॥

तो० छंद।

इहि भांति सबै तिय वैन कहैं ॥ रघुनंदनको न वियोग चहैं ॥
जुरिकै वनिता रनिवास चली ॥ लखिये छवि औरहु आज अली॥७॥
इहि भाँति चहूं बहु शोरविछ्यो ॥ अब आज विदाकर साज भयो ॥
सब नैनन नीर विमोचत हैं ॥ किहि भांति रहैं इमि सोचत हैं ॥८॥
कह बालक वृद्ध कहा तरुणा ॥ मिथिला सब छाय गई करुणा ॥
पशु पक्षिहुते अतिहीं विलपैं ॥ मनही मन सोच भरे कलपैं ॥ ९ ॥
सिय मातु इतै सिय गोद लई ॥ करि हाय विलोकि उसास लई ॥
बहु नैनन ते जलधार चली ॥ तिहि औसर धीर अपारचली॥१०॥
तब रानिहि धीर धराय अली ॥ बहु बात कही समुझाय भली ॥
सिय मात महा मनमोह मली ॥ अकुलाय रुई करि

नि हीय लखी जगरीति यही ॥ इमि सोचि कछू जिय धीर रही ॥
ननी मुख चूमि कपोल गहे ॥ तिय धर्म सिखाय सुबैन कहे ॥ १२ ॥
हि औसर आय विदेह तहाँ ॥ लखि सीतहि कीन विलाप महाँ ॥
छनही छिन अंक लगावत हैं ॥ बहु नैनन नीर बहावत हैं ॥ १३ ॥
पनीति सुरीति सिखावतहैं ॥ उमगावत हैं अकुलावत हैं ॥
विदेह विदेह विदेह चहे ॥ तब कौन विदेह विदेह कहै ॥ १४ ॥
हि औसर तीन हुँ बालतहाँ ॥ द्रुत आय मिलीं करि शोर महाँ ॥
नेवास जुरी तिय वृंद घनी ॥ हग नीर ढरैं सब शोक सनी ॥ १५ ॥
हुँ राजसुता सब नारिनके ॥ उर लागि रहैं सुकुमारिनके ॥
छन धाय मिलैं गहि मातन को ॥ विलपाय मिलैं छिन भ्रातनको १६ ॥
हुँ बंधु नरेश समाज सबै ॥ लखि सो गति होय अधीर तबै ॥
नि लाय हिये समुझाय घनी ॥ अपने अपने उर धीर ठनी ॥ १७ ॥

पद्धरी छंद।

हि समय चहूँ नृप सुत ललाम । आये अनंद युत जनक धाम ॥
मथिलेशरानि सन्मान कीन । भोजन कराय बहु साज दीन ॥ १८ ॥
हु भाँति कीन विनती अपार । सौंपी सुतान करि अमित प्यार ॥
मिलि चहूंबंधु सबसों सप्रीति । परितोष यथोचित रीति नीति ॥ १९ ॥
आये उताल जनवास माह । भेजो दहेज पुनि जनकनाह ॥
हु साज वित्तदासी सुदास । दीने अपार नृप युत हुलास ॥ २० ॥
रनारि नगरवासी अनेक । जिन उचित सरस इकतें इकेक ॥
तिन अमित वस्तु सिय रामहेत । दीनी सप्रेम लीनी सहेत ॥ २१ ॥
आये समाज युत अवधनाथ ॥ मिथिलेश मिले गुण वरणिगाथ ॥
हु दान मान दुहुँ दिशि अपार । कीने नरेश दोऊ उदार ॥ २२ ॥
ासी सुदा सधन अमित साज । दीने बहोरि मिथिलाधिराज ॥
ुभ समय जानि पुत्रिन बुलाय ॥ दीनी चढाय रथ अंक लाय २३ ॥
ाहि भाँति विदा कीनी नरेश । वर वसन विभूषन शुचि सुदेश ॥
ृप सकल जान कहँ उचित दीन ॥ पुन प्रीति सबहि परितोषकीन २४ ॥
ानि अवधनाथ गमने सुधाम । युत पुत्रवधू चहुँ सुत ललाम ॥
हुँ नाग फिरि मिथिलानेश । बहु कहत अवध पति गुण सुदेश २५ ॥

करि राम सीय सुधि बार बार ॥ सब होय नेह उमगै अपार ॥
पुनि जनक राज सुत दान मान॥ तोपे समस्त याचक महान॥२६॥
पुनि बिदा किये सब लोग भूप ॥ वर उचित रीति संयुत अनूप ॥
चहुँ सुयश शोर भो देश देश । जैजैति जैति मिथिला नरेश॥ २७ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीजनकनंदिनी-
बिदावर्णनो नाम दशमोविभागः ॥१०॥

चौ०अवधनाथ उत अवध पधारे ❀ कहत जनक गुण मुदित अपारे॥
पहुँचे आय अयोध्या माहीं ❀ रचना भई अमित चहुँ घाहीं ॥ १ ॥
मंगल साज साजि वर बामा ❀ करत गान आईं नृप धामा ॥
बजत बाजने परम सुहाये ❀ सुत सुतवधुन सहित नृप आये ॥२॥
मोद भरी सब मात सिधारीं ❀ परिछन करि चहुँ बधू उतारीं ॥
डारि पावड़े मंदिर लाईं ❀ जुरीं नारि बहु हिय उमगाईं ॥ ३ ॥
देहिं अमोलनेग वर नारी ❀ मुख देखैं पट घूँघट टारी ॥
चारहु बधू निरखि सब रानी ❀ हिय अपार आनँद हुलसानी॥४॥
नेग देन हित हिय सकुचाहीं ❀ तिहूंलोक संपति कछु नाहीं ॥
हिय लजाय औसर अनुसारा ❀ भूषण दिये अमोल अपारा ॥५॥

दोहा—पुनि रानी चहुँ सुत वधुन, प्रीति अनंद समेत ।
सुंदर मुख दिखरावनी, दीने सुभगनिकेत ॥ ६ ॥
पुत्रवधू जहँ चारहू, प्रमुदित सहित उमंग ।
विलसे रहसि निकेत सो, निज निज प्रीतमसंग ॥ ७ ॥
कनक भवन वर कैकयी, सियहि दियो हुलसाय ।
दियो सुमित्रा मांडविहिं, मुकुर भवन उमगाय ॥ ८ ॥
हरपि उर्मिलहि कौशला, फटिक भवन सुचिदीन ।
चंद्र भवन श्रुतिकीर्तिको, दियो मुदित सुख भीन ॥ ९ ॥

चौ०-पुनि करि निवछावर बहु वारा ❀ दई सासु बकसीस अपारा ॥
लोक वेद कुलरीति अनेका ❀ कीनी सरस एकते एका ॥ १० ॥
निशि जागरन करैं सब नारी ❀ होत गान कौतूहल भारी ॥
पूजन दान मान जिवनारा ❀ करैं अनेक रुचिर व्यवहारा॥११॥

इहि विधि सब अनंद महँ फूले ❀ रैनि दिवस कब होय सुभूले ॥
राज भवन अरु नगर मँझारा ❀ चहुँ बहु होत मंगलाचारा१२॥
शुभ ग्रह योग वार दिन जानी ❀ तब कंकन छोरन विधिठानी ॥
सकल हास सन बंधिनि नारी ❀ कहैं वचन परिहास सुखारी ॥१३॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

बोली एक नारी सुनौ अवधविहारी यह शंभु धनु है न जाहि वेगै गहि तोरौगे ॥ रसिकविहारी हौं तिहारी चतुराई तब जानौंगी सुकंकनकी गांठ जब छोरौगे ॥ ताछिन छबीली एक दूजी हँसि बोली श्याम आज धीरताई वीरताई सब भोरौगे ॥ तुम पै न तौ लों कबौं छूटि है छवीलेछैल जौलोंनाहिं जनकसुताकों कर जोरौगे ॥ १४ ॥ फेरि इक बोली हम जानी मिथिलामें जाय नीकी नौलनारिनके चित्त चोरि लायेहौ ॥ याते बारम्बार कर कंपत तिहारो लाल करत ढिठाई पैहियमें भय छाये हौ ॥ कछु जनि मानौं नेक भीति जो भई सो भई हेरौ टुकप्यारे क्यों लजाय शिर नाये हौ॥मति मुखमोरौ वेगि कंकनको छोरौ संक छोरौ सब कौशलपुरीमें अब आये हौ ॥ १५ ॥ पुनि इक वाम यों कहीहो अभिराम श्याम कौशिक कृपाते यश भारी बहु लूटो है ॥ नृपति कुमार हौ सदा ते सुकुमार फेरि खायो तिय जूठो तब और बल खूटो है ॥ हम अवला पै रावरे ते सबलाहैं तऊ जानो पुरुपारथ तिहारो सब झूठो है ॥ रसिकविहारी शंभुचाप किमि टूटो कहौ तुम पै अवैलों नेक कंकन न छूटो है ॥ १६ ॥

दोहा–इहि विधि हास विलास बहु, करैं मुदित मन वाम ॥
सुनि सकुचाय सुवेगहीं, कंकन छोरो राम ॥ १७ ॥
याहीं प्रति दिन होत बहु, आनँद अमित उछाह ॥
भोजन दान विनोद नित, निशिदिन रहत उमाह ॥ १८ ॥
पुनि दशरथ महिपाल मणि, यथा उचित सानंद ॥
सकल अयाची करिदये, जिते सुयाचक वृंद ॥ १९ ॥
अरु जे जन चहुँ देशके, आये राम विवाह ॥
बहु दिनते प्रिय पाहुने, हठि राखे नरनाह ॥ २० ॥

पुनि सब रुचि लखि अवधपति, संयुत प्रीति सुनीति ॥
किये बिदा सन्मान करि, बहु विधान नृपरीति ॥ २१ ॥
कौशिक मुनिहि निहोरि पुनि, राखे राम नृपाल ॥
प्रीति प्रतीति अपार वश, रहे अवध कछु काल ॥ २२ ॥
पुनि मुनि मुनिन समाज युत, नृप रामहि समुझाय ॥
भये बिदा सानंद अति, यथा उचित सतभाय ॥ २३ ॥
नृपरानी सुत सुत वधू, सकल परे मुनि पाँय ॥
दई अशीश प्रमोद भरि, ऋषिन सहित ऋषि राय ॥ २४ ॥
पुनि वशिष्ठ आदिक सकल, मुनिहि मिले युत प्रेम ॥
अपर समाज प्रणाम करि, आशिष लहो सुक्षेम ॥ २५ ॥
पुनि वशिष्ठ सुत सचिव नृप, कछुक दूर मुनि संग ॥
गये फिरि पहुँचाय गृह, आये सहित उमंग ॥ २६ ॥
रहत सदा सानंद सब, पुर परिजन समुदाय ॥
सुत सुत वधू निहारि नित, नृप रानी हुलसाय ॥ २७ ॥
जे तिय मिथिला वासिनी, नृप सुतानके संग ॥
आई ते सखि गणरहें, प्रमुदित भरी उमंग ॥ २८ ॥
जनक लली प्रगटी जबै, जनक नगरमें आय ॥
जनम लियो मिथिला तबै, सकल सखी समुदाय ॥ २९ ॥
यथा योग निमिकुल सदन, लखि निजरुचि अनुसार ॥
सुरी किन्नरी आदि बहु, भई नरी सुविचार ॥ ३० ॥
ते सिय संग विनोदिनी, वय गुण रूप समान ॥
बाल सखी हैं आठ वर, प्यारी परम प्रधान ॥ ३१ ॥

दोधईछंद ।

चंद्रकला १ उर्वशी २ सहोद्रा ३ कमला ४ विमला ५ मानौ ॥
चंद्रमुखी ६ मेनका ७ सु रंभा ८ आठ मुख्य ये जानौ ॥
प्यारी सखी विदेहसुताकी बाल संगिनी सोहैं ॥
इनहिं आदि सहचरी घनी जिहि देखि शची रति मोहैं ॥ ३२ ॥
दोहा–सत सत यूथेश्वरी, इक इक सखि स्वाधीन ॥
हैं सदव यूथेश्वरी, प्रति अनुचरी प्रवीन ॥ ३३ ॥

सानुचरी यूथेश्वरी, संयुत सखी सुढंग ॥
दीनी जनक दहेजते, आईं सियके संग ॥ ३४ ॥
पुनि इत कौशल्या सियहि, दई सखी दश और ॥
ते मिलि अष्टादश भईं, सब सखीन शिर मौर ॥ ३५ ॥

दोवई छंद।

प्रथम-चारुसीला १ पुनि-राधा २ अरु-सुभगा ३ लप-क्षेमा ४ ॥
मृगलोचना ५ मालिनी ६ हरिणी ७ कहि-सुलोचना ८ प्रेमा ९ ॥
सुधामुखी १० ये विशद सखी दश दई कौशला रानी ॥
सरिस रूप वय गुण सप्रीति सब जनकसुता सुखदानी॥ ३६ ॥
दोहा—दशहू प्रति यूथेश्वरी, आठ आठ हैं और ॥
तिन सबही प्रति किंकरी, द्वै द्वै सहस सुतौर ॥ ३७ ॥
सो॰—सखीं अष्टदश सोय, सहस यूथ यूथेश्वरी ॥
सबै मुदित मन होय, बढ़ी परस्पर प्रीति बहु ॥ ३८ ॥
मिथिला वासिनि जोय, अरु कौशल पुर वासिनी ॥
एक प्राण तनु दोय, यों सम सबहि सनेह भो ॥ ३९ ॥
दोहा—सखी अष्टदश सीयकी, प्यारी परम सुजान ॥
पुनि षोडश ये और हू, सिय पियकी सुखदान ॥ ४० ॥
ये षोडश वे अष्टदश, सकल सखी सुखदाम ॥
दंपति सेवकिनी सदा, अंतरंगिनी जान ॥ ४१ ॥
कनक भवन वर विशद है, जासम सदन न आन ॥
सीता राम विहार थल, परमानन्द प्रधान ॥ ४२ ॥
महल रहस्य रहस्य सखि, अंतरंगिनी जोय ॥
समय रहस्य रहस्यमें, रहैं तहाँ अलि सोय ॥ ४३ ॥
यदपि सकल दंपति सखी, तदपि विनोद प्रकार ॥
पिय षोडश सिय अष्टदश, करि राखी निरधार ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

हेमा १ पद्मगंधा २ वरारोहा ३ चंद्रभागा ४ चारु-चंद्रवती ५
हंसिनी ६ मनोरमा ७ इत्यादि ॥ चंद्रावली ८ अलसा ९ सु-पद्मा
१० [illegible] ११ [illegible] १२ सुभद्रा १३ गुणवती १४
[illegible] ॥ [illegible] १५ मोदनी १६ [illegible]

षोडश अनूप अंतरंगिनी विचारिये॥दंपति रहस्य अधिकारी सुखकारी सदा कौशल किशोरकी सखी ये निरधारिये ॥ ४५ ॥

दोहा–पुनि षोडश षोडश लखौ, यूथेश्वरी प्रवीन ॥
एक एक सखिके निकट, रहैं सदा स्वाधीन ॥ ४६ ॥
सोहैं प्रति यूथेश्वरी, वर अनुचरी अनूप ॥
पंच पंच शत रहत हैं, परम प्रवीन सुरूप ॥ ४७ ॥
यूथेश्वरी सुकिंकरी, सहित सखी सुखदानि ॥
सेवैं दंपति रुचि निरखि, समै समै अनुमानि ॥ ४८ ॥
अपर तिहूँ भगिनीनकी, सखी अनेक प्रवीन ॥
आईं मिथिलाते बहुरि, इतहुँ रानि अलिदीन ॥ ४९ ॥

चौ०–भामा१रुक्मवती२शुभकारी ❀सुमती३बहुरिचन्द्रिका४नारी॥
ये चारों सुंदर गुणखानी ❀सखी मांडवीकी प्रियजानी ॥ ५० ॥
चंपावती १ नंदिनी २ वामा ❀ मुदिता ३ कुण्डली ४ सुगुण धामा॥
चारौं चारु अंग शुचिनारी ❀ सखी उर्मिलाकी अतिप्यारी ॥५१॥
सुभग संयमी१उत्तम श्यामा ❀ २बहुरि मादिनी३छविमय कामा॥४॥
चारहु प्रीय विशद गुणरूपा ❀ श्रुतिकीरतिकी सखी अनूपा ५२ ॥
द्वै द्वै शत किंकरी सुनारी ❀ प्रति सखीनकी सेवाकारी ॥
या विधि द्वादश सखी सदाई❀सिय तिहुँ भगिनी पास रहाई ॥५३॥

दोहा–ये सब जनक दहेजमें, दीनी पुत्रिन संग ॥
आईं अवध समाज युत, प्रमुदित भरी उमंग ॥ ५४ ॥
निज निज पुत्र वधून पुनि, दुहूँ सासु हुलसाय ॥
चार चार औरहु सखी, तिनहुँ दई सुखदाय ॥ ५५॥
सूर सुंदरी १ सारिका, २ नेह मंजरी ३ जानि ॥
बाला ४ ये चारहु सखी, दई मांडविहिमानि ॥ ५६ ॥
सखी गोकुला १ जोबना, २ दीपावली ३ अनूप ॥
वृन्दा ४ दीनी उर्मिलहि, ये चारहु सुरूप ॥ ५७ ॥
साखा १ ज्वाला २ गर्विता ३ विशद कदंबा ४ देखि ॥
ये चारों श्रुतिकीर्तिको, दई सखी शुभ लेखि ॥ ५८ ॥

ये द्वादश सखियान प्रति, रुचिर अनुचरी और ॥
पंच पंच शत सकल हैं, विशद रूप गुण तौर ॥ ५९ ॥
अवधवासिनी और सब, मिथिला वासिनि तीय ॥
रहैं परस्पर प्रेमयुत, परम प्रमोदित हीय ॥ ६० ॥
चारहुनृपति सुतानकी, मुख्यसखी ये जान ॥
दासी दासी दासिका, ते न्यारी बहुमान ॥ ६१ ॥
आईं मिथिलाते तिया, ते सब सहितकुटुंब ॥
सो न्यारे पुनि इतर हैं, दासी दास कदंब ॥ ६२ ॥
निज निज स्वामिनिको सबै, सेवैं सहित सुरीति ॥
रहैं सकल सानंद नित, भीति प्रीति युत नीति ॥ ६३ ॥
चहूँवधू निज निज भवन, संयुत सखी समाज ॥
विलसैं परमानंदहिय, सुर दुर्लभ सुखसाज ॥ ६४ ॥
तिहुँ भगिनी निज सखिनयुत,सादर प्रीति बढाय ॥
रीतिनीति मय सीय की, सेवा करैं सदाय ॥ ६५ ॥
राखैं सिय भगिनीन पै, सादर सत्य सनेह ॥
रहै परस्पर प्रेम जनु, एक प्राण द्वैदेह ॥ ६६ ॥
वेद४बाण५अरु–चंद१रस६, भूमि१नैन अनुमान ॥
जनकसुताकी सहचरी, येती मुख्य प्रमान ॥ ६७ ॥
वेद४वान५दृग२नाग८भुज२,गणपतिरदन १विचार ॥
अंतरंग रघुचंदकी,मुख्य सखी निरधार ॥ ६८ ॥
वसु८आकाश०अहि८नैन२कहि, भापी परम प्रमान ॥
तिहूँ सीय भगिनीन प्रति,मुख्य अली ये जान ॥ ६९ ॥
नभ०सर५वसु८दृग२पंच५गुण३,ये सब सखी प्रधान ॥
अपर सुदासी वेद४रस६,मुनि७ग्रह९शशि१दृग२वान५।७०
पुनि जे सखि दासीनके, सकल कुटुंबी और ॥
तेऊ सेवक सिवकिनी, वर्णनको नहिं तौर ॥ ७१ ॥

श्रीजानकीजीकी सखीनका निर्णय चक्र ।

जुदीजुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरीनकी अनुचरी	सर्वाप्रति यूथेश्वरीनकी अनुचरी सब	सब सखी
१	चंद्रकला	७	१०००	७०००	१
२	उर्वशी	७	१०००	७०००	२
३	महेंद्रा	७	१०००	७०००	३
४	कमला	७	१०००	७०००	४
५	विमला	७	१०००	७०००	५
६	चंद्रमुखी	७	१०००	७०००	६
७	मेनका	७	१०००	७०००	७
८	रंभा	७	१०००	७०००	८

ये सब मिथिलासे आई सो सखी हैं ५६०६४ ।

१	चारुशीला	८	२०००	१६०००	९
२	राधा	८	२०००	१६०००	१०
३	सुभगा	८	२०००	१६०००	११
४	क्षेमा	८	२०००	१६०००	१२
५	मृगलोचना	८	२०००	१६०००	१३
६	मालिनी	८	२०००	१६०००	१४
७	हरिणी	८	२०००	१६०००	१५
८	सुलोचना	८	२०००	१६०००	१६
९	प्रेमा	८	२०००	१६०००	१७
१०	गुणसुन्दरी	८	२०००	१६०००	१८

ये सब अवधकी सखी हैं, जो सामुने दोनोंहैं १६००९० ॥

श्रीजानकीजीकी सब सखी मिथिला अवधकी २१६१५४ ॥ मिलायके इतनी हैं ॥

श्रीरघुनंदनजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

सखीनकी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरीनकी अनुचरी	सखीप्रति यूथेश्वरीनकी सब अनुचरी
१	हेमा	१६	५००	८०००
२	पद्मगंधा	१६	५००	८०००
३	वरारोहा	१६	५००	८०००
४	चंद्रभागा	१६	५००	८०००
५	चंद्रवती	१६	५००	८०००
६	हंसिनी	१६	५००	८०००
७	मनोरमा	१६	५००	८०००
८	चंद्रावली	१६	५००	८०००
९	अलसा	१६	५००	८०००
१०	पद्मा	१६	५००	८०००
११	मोहनी	१६	५००	८०००
१२	माधवी	१६	५००	८०००
१३	सुभद्रा	१६	५००	८०००
१४	[illegible]	१६	५००	८०००
१५	[illegible]	१६	५००	८०००
१६	[illegible]	१६	५००	८०००

श्रीरघुनाथजीकी सब सखी इतनीहैं १२८२५४ ॥

श्रीमांडवीज़ीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	भामा	२००	१
२	रुक्मवती	२००	२
३	सुमती	२००	३
४	चंद्रिका	२००	४
०	ये सब सखी ८०४ मिथिला की हैं		०
१	सुरसुंदरी	५००	५
२	सारिका	५००	६
३	नेहमंजरी	५००	७
४	माला	५००	८

ये सब अवधकी सखी है जो सासुने दीनी है २००४

श्रीमांडवीजीकी सब सखी दोनो जगहकी इतनी है २८०८

श्रीउर्मिलाजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	चंपावती	२००	१
२	नंदीनी	२००	२
३	मुदिता	२००	३
४	कुंडली	२००	४
०	ये सब सखी मिथिलाकी हैं ८०४		०
१	गोकुला	५००	५
२	जोवना	५००	६
३	दीपावली	५००	७
४	वृंदा	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीउर्मिलाजीकी सब सखी दोनो जगहकी इतनी हैं २८०८

श्रीश्रुतकीर्तिजीकी सखीनका निर्णय चक्र ।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	संयमी	२००	१
२	श्यामा	२००	२
३	मादिनी	२००	३
४	कामा	२००	४
०	ये सब सखी मिथिलाकी हैं		०
१	मापा	५००	५
२	ज्वाला	५००	६
३	गर्विता	५००	७
४	फदंया	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सम्पूर्ण [illegible] हैं २००४

[illegible] सब सखी [illegible] हैं २८००

दोहा—इहि विधि चारहु नृप सुता, निज निज महलन माहिं ॥ सखिन सहित सादर सदा, परमानन्द रहाहिं ॥ ॥ ७२ ॥ राज कुँवर वर चारहूँ, समय समय युत रीत ॥ सकल काज नित करत हैं, सहित प्रीत नृप नीत ॥७३॥ बहु दिन बीते अवधमें, रहत अनंद समेत ॥ बहुरि भरत मातुल करी, नृपहि विनय लखि हेत ॥ ७४ ॥ तात बुलायो भरत को, जो दीजिये रजाय ॥ तौ हम संग सिधावहीं, सहित शत्रुहनभाय ॥ ७५ ॥ सुनत युधाजितके वचन, दशरथ नृप हुलसाय ॥ भरत शत्रुहन बंधु दुहुँ, पठये साज सजाय ॥ ७६ ॥ दुहूँ बंधु मातुल सहित, पहुँचे केकय पास ॥ मिले रहे सादर तहाँ, सहित सुपास हुलास ॥ ७७ ॥ राम लषण इत अवधमें, रहत सदा हरपाय ॥ भरत शत्रुहनकी सुरति, नितहि करत दुहुँभाय ॥७८॥ रंगभवन रघुचंद ढिग, जुरत सखा हित बंधु ॥ करत विनोद विलास नित, उमगि उमगि हिय सिंधु ॥ ७९ ॥ राज काज मरयादमय, पितु अनुशासन पाय ॥ राम लषण दुहुँ करत हैं, यथा योग हुलसाय ॥ ८० ॥ राम रूप गुण धर्म बल, दान मान घर ज्ञान ॥ प्रीति रीति नृप [illegible] किये श्री ध्यान ८१

राम रीति अवलोकिकै, मुदित सबै नर नारि ॥
सकल कहैं अवधेशके, चिरजीवो सुत चारि ॥ ८२ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, नर नारिनके वृंद ॥
राम सुयश सब गावहीं, नित प्रति परमानंद ॥ ८३ ॥
राम दरश हित नित्य प्रति, आवत सुर नर नाग ॥
निरखि रूप गुण अतुल अति, कहैं धन्य नृपभाग ॥ ८४ ॥
मातु पिता तिय बंधु हित, पुर परिजन समुदाय ॥
रहैं सदा सानंद सब, छिन छिन सुख अधिकाय ॥ ८५ ॥

इति श्रीरामरसायन वि० वि० विवाहांत वर्णनो
नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥
इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायन ग्रन्थे
विवाहचरित्र वर्णनो नाम तृतीयोविधानः ॥ ३ ॥

दोहा—कौशल पति दशरथ तनय, राम सकल गुणधाम ॥
जाको यश तिहुँलोकमें, छायरहो अभिराम ॥ १ ॥ ॥
करत राज मर्यादयुत, रघुवर परम समर्थ ॥
समै समै साधत सबै, धर्म काम अरु अर्थ ॥ २ ॥
नीति रीति लखि रामकी, भूपति कियो विचार ॥
अब रघुवीरहि कीजिये, राजतिलक सुखसार ॥ ३ ॥
तब महीप गुरु सचिव हित, पुर परिजन बहु लोग ॥
जोरि सभा निज रुचि कही, कही सबै अति योग ॥ ४ ॥
मुदित नृपति आज्ञा दई, वेगि सजो सब साज ॥
अविलोकों निजनैन भरि, राम होय युवराज ॥ ५ ॥

चौ०भूप वचन सुनि सब हुलसाये ❀ वेगि सचिव शुभ साज सजाये॥
रचना भई विचित्र अपारा ❀ कौशलपुर नृप सदन मझारा॥६॥
सुनि रघुवर कर तिलक प्रसंगा ❀ सकल मातु हिय बढी उमंगा ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा ❀ करहिं दान गुद विविध विचित्रा ७
अपर मातु बहु वित्त लुटावैं ❀ राम तिलक लखिबे हुलसावैं ॥

पुर नर नारि अमित हिय हरषे ❀ देव वृंद मनहीं मन करषे ॥ ८ ॥
रघुवीरहि नृप निकट बुलाई ❀ कहि रुचि राजनीति समुझाई ॥
पुनि गुरु कनकभवन मधि आये ❀ सिय रामहि संयम करवाये ९ ॥
मुदित सकल साजें सब साजा ❀ प्रात होय रघुवर युवराजा ॥
सीता लषण हीय सुख भारी ❀ परमानंद सबै नरनारी ॥ १० ॥
कोउ न कछू देव गति जानी ❀ सब निज निज स्वारथ मति ठानी॥
है यक भरत मातकी दासी ❀ नाम मंथरा तिहि मति नासी ११॥
सो कैकेयीकी बुधि भोरी ❀ कपट कथा कहि करी ठगोरी ॥
दासी वचन मानि कै रानी ❀ कियो मान बहु कुमति सुठानी १२
लखि तिय मान भूप अकुलाये ❀ भावी वश विचार नहिं लाये ॥
राम शपथ करि कही नृपाला ❀ कहौ प्रिया सो करौं उताला १३॥
राम शपथ संयुत नृप वानी ❀ सुनि कैकयी अधिक हरषानी ॥
जानी अब न तजै प्रण राजा ❀ भयो समस्त सिद्ध निज काजा १४
बोली मो अभिलाष जु कीजे ❀ द्वै वर देन कहे सो दीजे ॥
सुनि नृप कही वेगि किन भाषौ ❀ इती बात हित इमि मन माषौ १५
तब तिय कही एक यह दीजे ❀ भरतहि राजतिलक वर कीजे ॥
द्वितिय राम मुनि वेष बनाई ❀ चौदह वर्ष वसैं वन जाई॥ १६ ॥
रानी वचन सुनत महिपाला ❀ गिरे भूमिहै निपट विहाला ॥
लखि नृपदशा नारि झहरानी ❀ कही बहोरि विविध कटुवानी १७
सुनि महीप धीरज उर लाई ❀ तियहि अनेक भाँति समुझाई ॥
नहिं मानी तब नृप दृढ़ जानी ❀ अब मम मृत्यु आयनगिचानी १८
पुनि मूर्छित है दशरथ भूपा ❀ धरणी परे सु विह्वल रूपा ॥
प्राण कंठगत कौशलराई ❀ बिलपतही सब रैनि बिताई १९॥
इत सब पुर परिजन नरनारी ❀ रामतिलक हित करहिं तयारी ॥
सो न भेद कछु काहु जनायो ❀ कहैं सकल अब औसर आयो २०
ताछिन कीनो सचिव विचारा ❀ जगे न भूप भई बहु वारा ॥
तबै सुमंत द्वारपर जाई ❀ दासी टेरि विनय करवाई ॥ २१ ॥
सुनि कैकयी सुमंत बुलाई ❀ बोली इत आनहु रघुराई ॥

चकित सचिव नृपदशा निहारी ❋ भो अनर्थ कछु हीय विचारी२२
पाय राय रुख वेगि सिधाये ❋ रथ चढ़ाय रामहि ले आये ॥
लखि पितुगति रघुवर अकुलाने ॥ धाय भूप चरणन लपटाने २३॥
नृपहि सकल तन मन सुधि भूली ❋ पुत्र वियोग शूल हिय हूली॥
सो विलोकि मातहि अकुलाई ❋ पितु दुखहित बूझो रघुराई २४॥
निठुर हृदय कैकयी कराला ❋ कही कथा सब अमित उताला ॥
पुनि बोली नृप दई रजाई ❋ भयवश कहि न सकत रघुराई२५ ॥

सो०—मात वचन सुनि राम, हिय हरपे परपे सकल ॥
कहे वैन सुखधाम, पितु आज्ञा मैं शिरधरी ॥ २६ ॥
यों कहि गहि पितु पाय, कह्यो तात दुख त्यागिये ॥
भरतहि वेगि बुलाय, राजतिलक तिन कीजिये ॥ २७ ॥
तात इती लघुबात, हेत शोक इहि विधि कियो ॥
हौं अवहीं वन जात, आशिप दीजे मुदित मन ॥ २८ ॥
परी वचन धुनि कान, पहिचानी वाणी कछू ॥
नृपति चेत उर आन, निरखे नैन उघारि तव ॥ २९ ॥
उठि महीप युत प्यार, अंक लगाये रामको ॥
चली दृगन जलधार, मुखते कढ़े न वैन कछु ॥ ३०॥

दोहा—राम निरखि पितु मोहवश, बहु विधि धीरज दीन ॥
मातहि मिलि आऊं अवै, यो कहि गमन सुकीन ॥ ३१ ॥
राम गमन लखि अवधपति, विलपत भये अचेत ॥
परे मौन महि छिनहि छिन, दीह उसास न लेत ॥ ३२ ॥
देखिं सुमंत नृपाल गति, भरे नैन दुहुँ नीर ॥
कैकेयी प्रति जोरि कर, वोले वैन सुधीर ॥ ३३ ॥
महरानी हठ त्यागि अव, यतन कीजिये सोय ।
राम भरत नृप रावरो, जिहि विधि सब भल होय ॥ ३४ ॥
सुनि वोली दृढ कैकयी, हौं जु कही दुहुँ वात ॥
भली बुरी कछु होय पै, सोई मोहि सुहात ॥ ३५ ॥

पुनि कौशला वधू गति जानी ❀ बोली सुतहि मनोहर बानी॥५
तात तिहारे संग जानकी ❀ दृढधारी निज हीय जानकी
जो अब उचित होय रघुलाला ❀सो सिप देहुँ सियहि इहिकाला६

सोरठा–सुनि बोले रघुचंद, कानन अमित कलेशहैं ॥
याते इत सानंद, तुव पद सेवें जनकजा ॥ ६१ ॥

चौ०–सुनि सुत वचन वधुहि उर लाई ❀भवन रहन हित बहु समुझा
तब सिय हीय अधिक अकुलाई ❀बोली विकल सकोच विहाई ६२

दोहा–धर्मचारिनी तियनकी, गति है पति सुत ज्ञात ॥
तीन विहीन चतुर्थ नहिं, अवलंबन यह ख्यात ॥६३ ॥
याते हौं प्रण सत्य करि, कहौं शपथ मय बैन ॥
नाथ मोहिं तजि जाहिं जो, तौ मम प्राण रहैं न ॥ ६४॥
सत्य प्रेम गुणि सीयको, सकुचि कही रघुनाथ ॥
जननी कहौ विदेहजा, चलैं विपिन मम साथ ॥ ६५ ॥
सुनि पति आयसु जानकी, परमानंद अघाय ॥
गहे चरण पति मातके, सो लीनी उर लाय ॥ ६६ ॥

चौ०–ताही छिनसुनि लछमनधाये ❀अतिहिय शोकराम ढिगआये॥
नाथ माथ बूझो बन कारन ❀ रघुवर कीनो सकल उचारन॥६७॥
सुनतहि भयो क्रोध अति भारी ❀ बोले लपण वीर धनुधारी ॥
नाथ सत्य जानी यह बाता ❀करी अनीति दोउ पितु माता ६८

घनाक्षरी कवित्त ।

आजलों न ऐसी कोऊ कीनी जो नृपाल करें रीति रघुवंशिन की सकल मिटावें हैं ॥ बुद्धि सब नाशी अति जरठ भये हैं अब काम वश ह्वैके तियसीख उरलावें हैं ॥ रसिकविहारी किमि सत्य व्रतधारी भूप राजदैन भाषो और बनहिं पठावें हैं ॥ याते रघुराज राजगादी गहि बैठौ फेरि देखें तात मात भ्रात कैसे तौ उठावेंहैं ॥६९॥

सो०–सुनि सुबंधुके बैन, कही धीर रघुवीर तब ॥
लपण धर्म यह है न, पितु आज्ञा किमि त्यागिये ॥७० ॥

घनाक्षरी कवित्त।

गुरु पितु मात वृद्ध स्वामी नृप आयसु जो होय सो अनंद मानि माथे धरि लीजिये ॥ कामक्रोध लोभ मोह काहू वशभापें वैन तोऊ तिन दोषनमें चित्त नाहिं दीजिये ॥ रसिकविहारी सुनो सीख या हमारी बंधु निज दुख भारी देखि नेकहू न खीजिये ॥ परम सुधर्म सत कर्म व्रत सत्य येही आपतें बडेनकी न आज्ञा भंग कीजिये ॥ ७१ ॥

दोहा—राम वचन सुनिकै लषण, कही क्रोधवश बात ॥
ज्ञान रावरो या समै, मोहिं न रंच सुहात ॥ ७२ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

बैठो राजगादी नाथ लीजे धनुवान हाथ दास हौं तिहारे साथ देखिये लरतको ॥ तात बाँधि डारों मात गहिकै निकारों सेन सकल सँहारों लखों सामुहे भरतको ॥ रसिकविहारी धनुधारी या विचारी काह ऐसो वीर भारी वनचारी यों करतको ॥ आवें यमराज देवराज तो न पावें राज हेरें फेरि होवें को सहायक भरतको ॥ ७३ ॥ धरम यही है सत करम यही है ज्ञानपरम यही है मुख शत्रुनको मोडिये ॥ तात मात भ्रात जात पात हित मीत कोऊ करहि अनीत लाज ताकी सब तोडिये ॥ रसिकविहारी छल बलको न दोष कछू साधिये सुकाज औ कलेश अंग ओडिये । वनिता वसुंधरा बडाइ वित्त वीरताई वीर रघुवीर येते कबहू न छोडिये ॥ ७४ ॥ लबो राज लाजको दिबो न्याय काजको सुदबो दान येही सदा आपनो करम है ॥ वैरिनको घालिबो औ पालिबो सुदीननको युद्धमें निरुद्ध सत्य संतत परम है ॥ रसिकविहारी राजगादी हटि बैठें वीर यामें रघुवीर कहा काहूकी शरम है॥ त्यागि धनुबाण औ कृपाण तपस्वी ह्वै जाय डोलें वन ऐसो नाहिं क्षत्रीको धरम है ॥ ७५ ॥ धनते सुधर्म होवे धनते सुकर्म होवे धनते सुयश लोक धन ही को काज है ॥ तात मात भ्रात हित पुत्र औ कलत्र लखो रसिकविहारी सबै धनको

समाज है ॥ होवैं रूपमान गुणमान कुलमान तोऊ धन बिन ताकी राखत न लाज है ॥ कैसहू निकाम धनमान सो प्रधान है धन है समस्त मूल धन मूल राज है ॥ ७६ ॥

दोहा—सो लघु राज न कोउ तजै, यह तौ कौशल राज ॥
हौं नहिं त्यागन देउँगो, तुमैं राज रघुराज ॥ ७७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मारि मारि बाणन कृपाणन ते झारि झारि मान बलवाननके प्राणन नशावैंगे ॥ भूरि भानुवंशी चंद्रवंशी वर वीरनके झुंड झुंड भारी रुंड मुंड महि छावैंगे ॥ क्षत्री छत्रधारी क्षोणिपालनके शोणितसे कुंडभरि सकल दिशान क्षिति छावैंगे ॥ रसिकविहारी रघुराज सब साधौं काज जियत हमारे राज भरत न पावैंगे ॥ ७८ बाणन विदारि सैन सकल संहारौं अबै गहिकै कृपाण तात मात दुहुँ मारौं मैं॥भरत समेत शत्रुशाल दलिडारौं वेगि केकय नरेशको सुदेशतें निकारौं मैं॥ सुर नर नाग करैं कोऊ शत्रु पक्ष तिनैं करिकै विपक्ष तिहुँ लोकते उजारौं मैं॥ रसिकविहारी होय आयसु तिहारी नेक फेरि वर वीरनकी वीरता निहारौं मैं ॥ ७९ ॥

दोहा—पुनि बोले रघुवर लपण, उर आनौ अब तोप ॥
रोप विवश अनुचित किये, होत अयश अरु दोप ॥
कही लपण सुनि नाथ हौं, सत्य कहौं यह बात ॥८०॥
राज लीजिये कैसहू, कछू न दोप लगात ॥ ८१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छलमें न दोप कलबलमें न दोप मंत्रतंत्रमें न दोप विप यंत्रमेंनदोपहै॥ तातके न मारे दोप मातके न मारे दोप भ्रातके न मारे दोप दोपमें न दोपहै॥ मित्र पुत्र कुटुम कलत्रके न मारे दोप धर्मकर्म सकल निवारे हू न दोप है ॥ रसिकविहारी काज साधै रघुराज राज राज लेवे हेत काहूमैं न दोप है ॥ ८२ ॥ एक नृप घालें तौ अनेक नृप पालें एक भ्रातहि नशावें वहु भ्रातन वसावैंगे ॥ एक मात मारें तो अनेक मात ज्यावें एक अयश उठावें तो अनेक यश पावैंगे ॥

रसिकविहारी नेक न्यायते विचारो नाथ रीति रावरेको हम काह समुझावैंगे ॥ धरम जिते हैं तिते पातक न यामें जो न दोऊ तो समान पाप पुण्य होय जावैंगे ॥ ८३ ॥

दोहा—यों कहि बोले लपण पुनि, राम चरण शिरनाय ॥
नाथ दोप जनि कीजिये, दीजेमोहिं रजाय ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

धर्म नहिं जानौं औ अधर्म नहिं जानौं रंच सत्य नहिं जानौं औ असत्य नहिं जानौं हौं ॥ तातको न जानौं मात भ्रातको न जानौं गुरु ज्ञातिको न जानौं जात पाँतको न जानौं हौं॥ देवको न जानौं औ अदेवको न जानौं लेव देवको न जानौं सेव भेवको न जानौं हौं ॥ रसिकविहारी करौं शपथ तिहारी नाथ हौं तो एक रावरी रजाय दृढ़ जानौं हौं ॥ ८५ ॥

दोहा—योंहीं अमित प्रकार बहु, कही लपण रिसठान ॥
वाल्मीकि आदिक विविध, ग्रंथन माहिं प्रमान ॥ ८६ ॥

प्रमाण ॥ वाल्मीकीये अयोध्याकांडे ॥ सर्ग ॥ २१ ॥

श्लोक।

यावदेव न जानाति कश्चिदर्थमिमं नरः ॥ तावदेव मया सार्द्धमात्मस्थं कुरु शासनम् ॥ १ ॥ मया पार्श्वे सधनुषा तव गुप्तस्य राघव॥ कः समर्थोऽधिकं कर्त्तुं कृतांतस्येव तिष्ठतः ॥ २ ॥ निर्मनुष्यामिमां सर्वामयोध्यां मनुजर्षभ ॥ करिष्यामि शरैस्तीक्ष्णैर्यदि स्थास्यति विप्रिये ॥३॥ भरतस्याथ पक्ष्योवायो वास्य हितमिच्छति ॥ सर्वास्तांश्च वधिष्यामि मृदुर्हि परिभूयते ॥ ४ ॥ प्रोत्साहितोयं कैकेय्या संतुष्टो यदि नः पिता ॥ अमित्रभूतो निःसंगं वध्यतां वध्यतामपि ॥ ५ ॥ गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः ॥ उत्पथं प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम् ॥ ६ ॥ हनिष्ये पितरं वृद्धं कैकेय्यासक्तमानसम् ॥ कृपणं च स्थितं बाल्ये वृद्धभावेन गर्हितम् ॥ ७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सर्ग ॥ २३ ॥

धर्म दोपप्रसंगेन लोकस्यानतिशंकया ॥ कथं ह्येतदसंभ्रांतस्त्वद्विधोवक्तु मर्हति ॥ ८ ॥ यथा ह्येवमशौंडीरं शौंडीरं क्षत्रियर्षभ ॥

किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशंससि ॥ ९ ॥ पापयोस्ते
नाम तयोः शंका न विद्यते ॥ संति धर्मोपधासक्ता धर्मात्मन् कि
बुध्यसे ॥ १० ॥ कथं त्वं कर्मणाशक्तः कैकेयीवशवर्तिन
करिष्यति पितुर्वाक्यमधर्मिष्ठं विगर्हितम् ॥ ११ ॥ द्रक्ष्यंति त्व
वस्य पौरुषं पुरुषस्य च ॥ दैवमानुषयोरद्यव्यक्ताव्यक्तिर्भविष्यति
॥१२॥ अद्य मे पौरुष हतं दैवं द्रक्ष्यंति वै जनाः ॥ यैर्दैवादाहतं
हृष्टं राज्याभिषेचनम्॥ १३ ॥ लोकपालाः समस्तास्ते नाद्य रा
भिषेचनम् ॥ न च कृष्णास्त्रयो लोकाविहन्युः किं पुनः पिता ॥ १
मद्बलेन विरुद्धाय न स्याद्दैवबलं तथा ॥ प्रभविष्यति दुःखाय यथ
पौरुषं मम॥१५॥न शोभार्थाविमौ बाहू न धनुर्भूषणाय मे॥ न
बंधनार्थाय न शराः स्तंभहेतवः ॥ १६ ॥ अमित्रमथनाथ
सर्वमेतच्चतुष्टयम् ॥ न चाहं कामयेत्यर्थं यः स्याच्छत्रुर्मतो मम
॥१७॥ बहुभिश्चैकमत्यस्य नैकेन च बहून् जनान् ॥ विनियोक्ष्
म्यहं बाणान्नृवाजिगजमर्मसु ॥ १८ ॥ अद्य मेऽस्त्रप्रभाव
प्रभावः प्रभविष्यति ॥ राज्ञश्चाप्रभुतां कर्तुं प्रभुत्वं च तव प्रभो॥१
अद्य चंदनसारस्य केयूरामोक्षणस्य च ॥ वसूनां च विमोक्षस्य सु
पालनस्य च ॥ २० ॥ अनुरूपाविमौ बाहू राम कर्म करिष्यतः
आभिषेचनविघ्नस्य कर्तृणां ते निवारणे ॥ २१ ॥ इत्यादि

दोहा—लषण वचन सुनिकै कही, धर्मधुरंधर राम ॥
पातक लागै बंधु जिहि, करिय नहीं सो काम ॥ ८७ ॥
निज कीनी कछु होत नहिं, दैव करी सब होय ॥
याते सोई सत्य है, प्रबल दैव रुचि जोय ॥ ८८ ॥
सुनत राम बाणी भये, लषण नैन दुहुँ लाल ॥
भौंह बंक फरके अधर, बोले बैन उताल ॥ ८९ ॥
पातक दैव दुहूँनकी, बड़ी नाथको भीति ॥
बारबार मोहै कहत, यह न बीरकी रीति ॥ ९० ॥

बहुरि दैव को है कहाँ, कीजे वेगि बखान ॥ ९१ ॥
कै इत दुहुँन बुलाइये, कै बताइये धाम ॥
हौं तिनते धनुबाणले, करौं जाय संग्राम ॥ ९२ ॥
वली दैव है अवल पै, करै रुचै तिहि सोय ॥
सवल सामुहे दैवको, जात सकल वल खोय ॥ ९३ ॥
रामदासकी दासता, दैव दैवता जोय ॥
अधिक न्यून सम होय सो, आज लखै सब कोय ॥९४ ॥
हौं निज वलते नाथको, करौं राज अभिषेक ॥
फेरि लखौं वलवान है, आवैं दैव अनेक ॥ ९५ ॥
धनु शर शोभा वाहुवल सफल करौं मैं आज ॥
दैव भरत नृपके अछत, नाथ होय युवराज ॥ ९६ ॥
तात भ्रात कह दैव कह, कहा धर्म कह पाप ॥
तृण समान जानो इन्हैं, इक रावरे प्रताप ॥ ९७ ॥
यों कहि धनु शर साजिकै, माथ रामपद टेक ॥
कही हाथ गहि चलिय हौ, करौं राज अभिषेक ॥ ९८ ॥
राम मात सिय हिय रुचे, लषण वचन तिहि काल ॥
धर्मधुरंधर राम तव, वोले अतिहि उताल ॥ ९९ ॥
लषण कही तुम प्रथम हम, जानैं नाथ रजाय ॥
तौ मम आयसु है यही, रोष तजौ सब भाय ॥ १०० ॥
लछमन राम रजाय सुनि, मौन रहे शिरनाय ॥
स्रवित वारि दुहुँ ननते, पुनि वोले अकुलाय ॥ १०१ ॥
लाभ हानि सुख दुख समय, कीजे हृदय विचार ॥
बहुरि रजायसु दीजिये, लखि सब सारासार ॥ १०२ ॥

चौ०—बंधु विनय सुनि पुनि रघुनाथा ❀ वरणे विविध धर्म यश गाथा ॥
कही लषण करगहि वरवानी ॥ ❀ तजो रोष मम आयसु मानी १०२
सुनि वोले लछमन करजोरी ❀ भलहि नाथ पुनि विनती मोरी ॥
होहुँ वन चलि हौं तुव साथा ❀ न तरु प्राण तजिहौं रघुनाथा १०२
तब रघुवर वहु विधि समुझाये ❀ लषण हृदय कछु वचन न आये ॥

किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशंससि ॥ ९ ॥ पापयोस्ते कथं नाम तयोः शंका न विद्यते ॥ संति धर्मोपधासक्ता धर्मात्मन् किं न बुध्यसे ॥ १० ॥ कथं त्वं कर्मणा शक्तः कैकेयीवशवर्तिनः ॥ करिष्यति पितुर्वाक्यमधर्मिष्ठं विगर्हितम् ॥ ११ ॥ द्रक्ष्यंति त्वद्य चास्य पौरुषं पुरुषस्य च ॥ दैवमानुषयोरद्य व्यक्ता व्यक्तिर्भविष्यति ॥ ॥१२॥ अद्य मे पौरुषहतं दैवं द्रक्ष्यंति वै जनाः ॥ यैर्दैवादाहतं तेऽद्य हतं राज्याभिषेचनम् ॥ १३ ॥ लोकपालाः समस्तास्ते नाद्य रामाभिषेचनम् ॥ न च कृत्स्नास्त्रयो लोका विहन्युः किं पुनः पिता ॥ १४॥ मङ्गलेन विरुद्धाय न स्यादेवबलं तथा ॥ प्रभविष्यति दुःखाय यथोग्रं पौरुषं मम॥१५॥न शोभार्थाविमौ बाहू न धनुर्भूषणाय मे॥न शिलबंधनार्थाय न शराः स्तंभहेतवः ॥ १६ ॥ अमित्रमथनार्थाय सर्वमेतच्चतुष्टयम् ॥ न चाहं कामयेत्यर्थं यः स्याच्छत्रुर्मतो मम ॥ ॥१७॥ बहुभिश्चैकमत्यस्य नैकेन च बहून् जनान् ॥ विनियोक्ष्याम्यहं बाणान्नृवाजिगजमस्तु ॥ १८ ॥ अद्य मेऽस्त्रप्रभावस्य प्रभावः प्रभविष्यति ॥ राज्ञश्चाप्रभुतां कर्तुं प्रभुत्वं च तव प्रभो॥१९॥ अद्य चंदनसारस्य केयूरामोक्षणस्य च ॥ वसूनां च विमोक्षस्य सुहृदां पालनस्य च ॥ २० ॥ अनुरूपाविमौ बाहू राम कर्म करिष्यतः ॥ अभिषेचनविघ्नस्य कर्तॄणां ते निवारणे ॥ २१ ॥ इत्यादि ॥

दोहा–लषण वचन सुनिके कह्यो, धर्मधुरंधर राम ॥
पातक लागै देहु जिहि, करिय नहीं सो काम ॥ ८७ ॥
निज कीनी कछु होत नाहिं, दैव करी सब होय ॥
याते सोई सत्यहै, प्रबल दैव लखि जोय ॥ ८८ ॥
सुनत राम बानी नये, लषन नैन हुँई लाल ॥
भौंह टेढ़ फरके अधर, बोले बैन उताल ॥ ८९ ॥
पातक दैव दुहूँनको, कही नाथको भीति ॥
कायर सोई कहत, यह न वीरकी रीति ॥ ९० ॥

बहुरि दैव को है कहाँ, कीजे वेगि वखान ॥ ९१ ॥
कै इत दुहुँन बुलाइये, कै बताइये धाम ॥
हौं तिनते धनुबाणलै, करौं जाय संग्राम ॥ ९२ ॥
बली दैव है अवल पै, करै रुचै तिहि सोय ॥
सबल सामुहे दैवको, जात सकल बल खोय ॥ ९३ ॥
रामदासकी दासता, दैव दैवता जोय ॥
अधिक न्यून सम होय सो, आज लखै सब कोय ॥९४ ॥
हौं निज बलते नाथको, करौं राज अभिषेक ॥
फेरि लखौं बलवान है, आवैं दैव अनेक ॥ ९५ ॥
धनु शर शोभा बाहुबल सफल करौं मैं आज ॥
दैव भरत नृपके अछत, नाथ होय युवराज ॥ ९६ ॥
तात भ्रात कह दैव कह, कहा धर्म कह पाप ॥
तृण सनान जानो इनैं, इक रावरे प्रताप ॥ ९७ ॥
यों कहि धनु शर साजिकै, माथ रामपद टेक ॥
कही हाथ गहि चलिय हो, करौं राज अभिषेक ॥ ९८ ॥
राम मात सिय हिय रुचे, लषण वचन तिहि काल ॥
धर्मधुरंधर राम तब, बोले अतिहि उताल ॥ ९९ ॥
लषण कही तुम प्रथम हम, जानैं नाथ रजाय ॥
तौ मम आयसु है यही, रोष तजौ सब भाय ॥ १०० ॥
लछमन राम रजाय सुनि, मौन रहे शिरनाय ॥
स्रवित वारि दुहुँ नैनते, पुनि बोले अकुलाय ॥ १०१ ॥
लाभ हानि सुख दुख समय, कीजे हृदय विचार ॥
बहुरि रजायसु दीजिये, लखि सब सारासार ॥ १०२ ॥
चौ०—बंधु विनय सुनि पुनि रघुनाथा ❀ बरणे विविध धर्म यश गाथा॥
कही लषण करगहि बरबानी ॥ ❀ तजौ रोष मम आयसु मानी १०३
सुनि बोले लछमन करजोरी ❀ भलहि नाथ पुनि विनती मोरी ॥
दोहूं बन चलि हौं तुव साथा ❀ न तरु प्राण तजिहौं
तब रघुबर बहु विधि समुझाये ❀

रामबंधु जियकी गति जानी ❀ कही चलौ धनुशर गहि पानी१०५
सुनि सौमित्र अधिक हुलसाये ❀ मोदभरे जननी ढिग आये॥
माँगी बिदा चरण शिरनाई ❀ हरषि सुमित्रा दई रजाई॥१०६॥
अंक लगाय कही बलि ताता ❀ राम सीय तुव दुहुँ पितु माता॥
जाहु संग सेवौ सतभाये ❀ सुनि शिर नाय लषण उठि धाये१०७
देवरचित धनुशर असि धारे ❀ तूण त्रान वर विशद अपारे॥
विपिन गमन हित हिय हुलसायो ❀ आय रामपद शीश नवायो१०८
ताछिन भयो कुलाहल भारी ❀ नृपतिय आय जुरी तहँ सारी॥
तव रघुवीर मात पग लागी ❀ विपिन गमन हित आयसु माँगी१०९
धर्म धुरीण सुतहि जिय जानी ❀ बोली विकल कौशला रानी॥
जाहु तात मुहिं भूलि नजैयो ❀ वेगि आय फिर वदन दिखैयो११०॥
यौं कहि मात गोद सुत लीने ❀ पढि रक्षा अभिमंत्रित कीने॥
करि अघ्रानशीश अकुलाई ❀ आयसु दई सुअंक लगाई॥ १११॥
येही विधि सिय लषणहिं रानी ❀ करि अभिमंत्रित रक्षा ठानी॥
उर लगाय बहु कियो विलापा ❀ दई रजाय सहित संतापा११२॥

दोहा—सिय सासुनके पग परी, दीनी सबहि अशीश॥
सुखसुत वित अहिवातयुत, जीवो विपुल वरीश॥ ११३॥

चौ०सकल सियहि निज अंक लगाई ❀ विलपीं नैन नीर अन्हवाई॥
सीतहि मिलीं सखी पुरनारी ❀ रोवें सब तिय निपट दुखारी११४

दोहा—इहि विधि सिय रघुवर लषण, सहित सकल रनिवास॥
करुणा प्रेम वियोग वश, निज निज होय हिरास॥ ११५॥
मातु सुमित्रा कौशला, विकल भई जिहि भांति॥
ताछिन जो गति दुहुँनकी, सो कछु कही न जाति॥ ११६॥
तब रघुवीर सुधीर धरि, लछमन सीय समेत॥
सकल मातु पग नाय शिर, आये द्वार निकेत॥ ११७॥
चहुँ दिशि कौशल नगरमें, मचो रुदनको शोर॥
दुखी भये सिय सहित सुनि, दोऊ राज किशोर॥ ११८॥
सखा वृन्द ताही समे, विपिन गमनको हाल॥
सुनि विलपत धाये सबै, आये अतिहि उताल॥ ११९॥

तिनहिं निरखि दुहुँ बंधुवर, भरि आये जलनैन ॥
सो सबही लपटाय उर, कहे नेहमय बैन ॥ १२० ॥
भोजन बसन विनोद मुद, संग भये सब काज ॥
जात अकेले विपिनको, यह न उचित रघुराज ॥ १२१ ॥
चलैं संग सब रावरे, अवधरहैं किहि काम ॥
तुम विन प्राण न मानि हैं, याते तजौ न श्याम ॥ १२२ ॥
सुनि सखानके बैन बर, करि सनेह रघुबीर ॥
नीति रीति बहु भाँति कहि, तिनहि देत बहु धीर ॥ १२३ ॥
ते सब विरह विहाल ह्वै, कहन लगे रघुराय ॥
भये निठुर इमि मीत किमि, गमनतहाय विहाय ॥ १२४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

का करैं समाधि साधि का करैं विराग याग का करैं अनेक योग भोगहू करैं सुकाह ॥ का करैं समस्त वेद शास्त्र औ पुराण देख कोटि जन्मलों पढ़े मिले तऊ कछू न थाह ॥ राज्य लै कहा करैं सुरेश औ नरेश ह्वै न चाहिये कछू सुदुःख होत लोक लाज माह ॥ सात द्वीप खंड नौ तिलोक संपदा अपार लै कहा सुकीजिये मिलौ जु आप सीयनाह ॥ १२५ ॥ हम सब तुव मुख लखि मुदित रहत निशि दिन छिन तजि नहिं पलक परत ॥ विन दरशन तन मन थिर न रहत छवि निरखत हठि दृग अरनि अरत ॥ कबहुँक जब ललन तनक बिलगात तब यक घरि बहु युग सरिस भरत ॥ नित हिलत मिलत धरि दुहुँ गल भुज तिहि सनमुख सब जग सुख निदरत ॥ १२६ ॥ लागी उर विषम वियोगकी जु आगी अति जागी ताहि नीर ते सँयोगके सिराइयो ॥ हीय ना धरैगो धीर बाढी है अपार पीर लाल रघुबीर नेक दाया चित लाइयो ॥ रसिक विहारी दीन छीन रावरे विहीन सुरति करी जो श्याम विसरि न जाइयो ॥ ये हो रघुनंदन सुजान प्राणप्यारे मीत वेगही हमारी जियजरनि बुझाइयो ॥ १२७ ॥ साँह करि भाषैं कोउ प्राण नहिं रहैं जोपै लाडिले सलोने यार तुम विलगायहौ ॥ कोउ ना लखाय या

कलेशको हरैया लाल सकल सखान एक जीवन उपायहौ ॥
तनमन प्राणनकी ताप तब दूर ह्वैहै जब निज आनन
मयंक दरशाय हौ ॥ ये हो रघुनंदन पियारे मति सांची
कहौ कब या हमारी जियजरनि बुझायहौ ॥ १२८ ॥

दोहा—सखा वृन्द इहि विधि विकल, विलपत विरह विहाल ॥
कर जोरत पग परत कहि, तजौ नहीं रघुलाल ॥ १२९॥
वालसखनकी प्रीतवश, विवश भये रघुवीर ॥
धाय धाय सब अंक गहि, मिलत चलत दृग नीर॥१३०॥
लखि सखानकी विकलता, रघुवर भये अधीर ॥
पुनि कुसमय अनुमानिकै, उर धारी कछु धीर ॥ १३१ ॥
उर लगाय समुझाय बहु, सबही धीर धराय ॥
पुनि पितु ढिग सिय लपण युत, वेगि चले रघुराय॥१३२॥
पिता निकट सिय लपण युत, जात पयादे राम ॥
सो विलोकि विलखात सब, कहैं आज विधि बाम१३३॥
पुरवासी नर नारि सब, वृद्ध युवा अरु बाल ॥
रुदन करत धाये विकल, आये अतिहि विहाल १३४॥
भई भीर भारी तबै, राजसदन चहुँ ओर ॥
हाय राम सिय लपण यह, रुदन शोर अति घोर ॥ १३५ ॥
ताछिन सीता लपण युत, राम गये पितु पास ॥
करि प्रणाम पितु चरण गहि, बोले सहित हुलास ॥१३६॥
तात मोहिं अब गमनकी, दीजे वेगि रजाय ॥
वन मनु वर्ष वितायकै, लखौं चरण पुनि आय ॥ १३७ ॥
सुनत रामके वचन नृप, उठे अतिहि अकुलाय ॥
पुत्र वधू युत पुत्र दुहुँ, लिये गोद बैठाय ॥ १३८ ॥
लपण सीय पुर रहन हित, कहे भूप बहु बैन ॥
कत लगि जानौं राम बिन, ये दुहुँ भौन रहैन ॥ १३९ ॥
सो सुनि दशरथ नेह वश, विकल गिरे मुरझाय ॥
हाय राम सिय लपणन कहि, करैं विपुल बिलपाय ॥१४०॥

सो गति निरखि कृपालु की, भये सुमंत विहाल॥
कैकेयी प्रति वचन पुनि, कहै क्रुधित दृग लाल॥१४१॥

बरवा छंद।

केकयसुता विचारो अबहूँ बात। न तरु छनकमह सबको सबै नशात॥ १४२॥ कछू न उत्तर दीनो सो सुनि रानि। सचिव कही तब भूपहि हित मय बानि॥ १४३॥ महाराज यह रानी अति मतिहीन। तिहि भूले वर दीने नाथ प्रवीन॥ १४४॥ याते पुनि प्रभु कीजे हृदय बिचार। दूजे वर इहि दीजे राज उदार॥ ॥ १४५॥ साम दाम अरु भेद सुदंड उपाय। उचित नृपहि ये चारो नीति कहाय॥ १४६॥

पद्धरी छंद।

यों कहि सुमंत दुहुँ हाथ जोरि। बोले सहेत वाणी बहोरि॥
तिहुँ लोक नीति ज्ञाता प्रधान। कोऊ न और है प्रभु समान १४७॥
तजिके कलेश उर धारि धीर। कीजे सुयत्न जिहि मिटहि पीर॥
कीनी न रानि यह नवल बात। लक्षण परंपरा नाहिं मिटात॥१४८॥
लक्षण जुहोत हैं तात गात। सो प्रगट पुत्र तनु में जनात॥
त्यों मात चिह्न पुत्रिहु मझार। होवैं सुठौर बहु किय विचार१४९
उत रानिमात ज्यों कीन बात। त्योंही प्रत्यक्ष इत सब जनात॥
वह कहों सकल सुनिये सुदेश। जो भयो हाल केकय नरेश१५०
केकय महीप अति मति प्रवीन। मुनि तिन एक वरदान दीन॥
जेते सुजीव जग लघु विशाल। भाषा सबकी समझें नृपाल १५१
इक समय भूप रानी समेत। निशिमध्य मुदित शोभित निकेत॥
तहँ द्वपिपीलिका निरखि रात॥ कीनी प्रसन्न है कछुक बात १५२॥
सो समुझि भूप है अति अनंद॥ विहँसे कछुक बहु मंद मंद॥
लखि नृपहि हँसत बोली सुरानि॥ क्यों हँसे वेगि दीजे बखानि१५३
सुनि कह्यो भूप यह अकथ भेद॥ जो कहौं होय तनु हानि खेद॥
बोली सुरानि तब कुपित होय॥ हौं अबहिं देति निज प्राण खोय१५४
हारे महीप बहु विधि बुझाय॥ मानै न नारि काहू उपाय॥
पुनि कही भूप यामें न तंत॥ भापन सुहोय मम प्राण अंत॥ १५५॥

सुनि बैन रानि बोली रिसाय ॥ तुव प्राण जायँ अथवा रहाय ॥
इहि समै मोहिं कछु नहिं सुहात ॥ दीजे बताय बेगै सुबात॥१५६॥
तब विवश भूप ह्वै अति अधीर ॥ बोले घरीकद्वै धरहु धीर ॥
अबहीं सुद्वार लगजाय आय ॥ पुनि भेद देहुँ वह सब बताय१५७॥
यौं कहि नरेश द्रुत द्वार आय ॥ गवने तुरंग बेगहि सजाय ॥
मुनि पास जाय व्याकुल नृपाल ॥ पद वंदि कहो निज सकल हाल१५८
मुनि सुनि समस्त बोले सुबैन ॥ विन दिये दंड तिय जिय तजैन ॥
याते महीप गृह बेगि जाय ॥ ताडो डराय आपहि चुपाय ॥१५९॥
सुनि वचन मानिकै मनुजनाथ ॥ आये सुभौन लैकसहि हाथ ॥
बोले तियाहि सुनि लेहु भेद ॥ आई उताल तजि सकल खेद१६०॥
पुनि कसा हेरि कर भीति मानि ॥ बहु विनै कीन तिय जोरि पानि ॥
तब भूप मष्ट करि प्रातकाल ॥ दीनी पठाय पितु गृह उताल॥१६१॥
पुनि तिहि न भूप स्वीकार कीन ॥ केकयनरेश तिय त्यागि दीन ॥
यौं कहि सुमंत रानिहि बहोरि॥ बोले सुसीख यह सुनहु मोरि१६२॥
हठ सकल छोड़ि वर और लेहु ॥ सब हीय अमित आनंद देहु ॥
नातर कछूक जो करहु आन ॥ तौ सुगति होय जननी समान१६३॥

दोहा—सुनि सुमंत के वचन बहु, मनही मन रिस छाय ॥
उत्तर दियो न रंच कछु, हेरी नैन चढाय ॥ १६४ ॥
पुनि सुमंत महिपाल सों, बोले बैन गँभीर ॥
नाथ तिया जानें नहीं, नेक पराई पीर ॥ १६५ ॥
जिहि विधि केकय भूपसों, हठकीनी वह नारि ॥
भरत मात सोई करी, लीजे हीय विचारि ॥ १६६ ॥
सुनि वर वचन सुमंतके, नृपहिय रुचे सुदेश ॥
हाय राम कहि चुपरहे, धर्मपाल अवधेश ॥ १६७ ॥
तब रघुवर कर जोरि पुनि, बोले हिय हुलसाय ॥
हौं उताल वन जाउँ अब, दीजे तात रजाय ॥ १६८ ॥
राम वचन सुनि अवध पति, मौन रहे अकुलाय ॥
सिया सहित दुहुँ बंधुको, लीने हृदय लगाय ॥ १६९ ॥

निरखि भूप गति कैकयी, उठी कुपित झहराय ॥
वेगि लाय मुनि साज सब, धरो राम ढिग आय ॥ १७० ॥
चौ०–तब रघुवीर साज मुनि सारे ❀ तूण कृपाण वाण धनुधारे ॥
गहि पितु मातु चरण रघुनाथा ❀ चले मुदित सिय लछमन साथा ॥
द्वार पधारि सुयज्ञ बुलाये ❀ दिये दान बहु द्विजन सुहाये ॥
पुनि बोले करगहि रघुवीरा ❀ गुरु वशिष्ठ सुत तुम मतिधीरा ॥
ये मम सखा प्राण ते प्यारे ❀ हौं इन किये अधीन तिहारे ॥
सुनि सुयज्ञ बोले दृढ़ जानौं ❀ मैं नित लषण सरिस सब मानौं
सुनि सुयज्ञ वाणी रघुराई ❀ लिये प्रेम भरि अंक लगाई ॥
ताछिन भयो शोर चहुँ भारी ❀ राम चले सब कहैं पुकारी १७४
राम गमन लखि नृप अकुलाई ❀ सचिवहि कहे वचन बिलपाई॥
स्यंदन साजि तिहूँ बैठारौ ❀ राम संग तुम वेगि सिधारौ १७५
सुनि नृप वचन सुमंत सिधाये ❀ रथ सजि वेगि राम ढिग लाये ॥
तब तिहुँ गुरु द्विजपद शिर नाई ❀ स्यंदन चढ़े रजायसु पाई १७६
चले राम सँग पुर नर नारी ❀ आरत रुदन शोर चहुँ भारी ॥
ताछिन अवध नगर कर शोका ❀ सो जनजानि जिन अवलोका १७७

घनाक्षरी कवित्त ।

पाय पितु आयसु बनाय वेष तापसको बंधु सिय संग राम वनहि सिधारे हैं ॥ ताछिन भो विरह विलापको कलाप महा जेते जड चेतन ते जातना निहारे हैं ॥ भये हैं बिहाल सिय रामके वियोग स व सरसिज वृन्द सूखे मानो हिममारे हैं ॥ रसिकबिहारी नृप कौशला सुमित्रा आदि बोलत विकल हाय प्यारे हाय प्यारे हैं ॥ १७८ ॥

दोहा–मात सुमित्रा कौशला, सहित सकल रनिवास ॥
विरह विकल विलपत विपुल, समुझि राम वनवास॥ १७९॥
गद गद गर जलनैन भरि, कहति सुमित्रा बैन ॥
अति कठोर मेरो हियो, ऐसहु दुःख फटै न ॥ १८० ॥

चित्र लिखे कपि देखिकै, जो सिय भौंन डराति ॥
पुत्र वधू प्यारी सु क्यों, वन वसिहैं दिन राति ॥ १८१ ॥
पलँग गोद तजि पालना, डगहू अनत न जात ॥
ते मेरे वारे सुक्यों, सहिहैं आतप वात ॥ १८२ ॥
कहति सुमित्रा नैन भरि, विकल वचन ह्वै दीन ॥
हाय कुटिल मति कैकयी, अवध अनाथ जुकीन ॥१८३॥
रे विधि लेत न प्राण क्यों, कहा कहौं अब तोहिं ॥
राम लषण वन जात सखि, जियत रही धृग मोहिं॥१८४॥
खग मृग गो गज वाजि सब, विलपत राम विहीन ॥
जे जड चेतन ते भये, विरह विवश वहुछीन ॥१८५॥
कनक पिंजरनमें कहैं, शुक सारिका विहाल ॥
करै राम सिय लषण बिन, को हमरो प्रतिपाल ॥ १८६ ॥
सो०—इहि विधि इत सब मात, दासी दास अनेक युत ॥
राम विरह विलपात, अरु नृप दुख को कहि सकै ॥१८७
उत रघुवर रथ साथ, चले जात नर नारि वहु ॥
भो अव अवध अनाथ, कहत रुदत इमि विकल सब१८८
तब पुरवासिन राम, समुझाये वहु धीर दै ॥
काहु सुहाय न धाम, रहें संग सब दृढ़ ठनी ॥ १८९ ॥
तमसातट विश्राम, प्रथम दिवस रघुवर कियो ॥
निरखि रैनि युग याम, गे रथ खोज दुराय तव ॥१९०॥
प्रात उठे नर नारि, रथ न लखो विलपैं विकल ॥
आरत वचन पुकारि, आये सकल सशोक पुर ॥१९१॥
गंगातीर सुठाम, शृंगवेर पुर विमल थल ॥
सचिव लषण सिय राम, द्वितिय वास कीनो तहाँ॥१९२॥
कुल निषाद गुहनाम, राम सखा आयो निरखि ॥
अंकलाय घनश्याम, मिले ताहि सादर मुदित ॥ १९३ ॥
लषण सचिव सहुलास, उठि निषादपतिसों मिले ॥
सो सब कियो सुपास, सकल रहे सो रैनि तहँ ॥१९४ ॥
प्रात कही रघुराय, तात जाहु रथलै अवध ॥
सुनि सुमंत विलपाय, बोले वचन विनीत अति ॥१९५॥

चौ०-मुहिं इमि नृप सिख दीनघनेरी ❀ वन दिखाय तिहुँ लावहु फेरी॥
सो पितु वचन मानि रघुनाथा अवध चलौ सिय लछमन साथा १९६
सचिव वचन सुनिकै रघुराई ❀ धर्मरीति वहु नीति बुझाई॥
तव सुमंत ह्वै निपट निरासा ❀ बोले बहुरि दीह लै श्वासा १९७॥
भूपति यहू कही वहुवारी ❀ जो न राम आवैं प्रणधारी॥
तौ इत आनौ जनकदुलारी ❀ न तरु तजौं तनु निपट दुखारी१९८॥
सुनि सुमंत मुख तात रजाई ❀ राम जानकिहि बहु समुझाई॥
तव सिय कह मम दृढ़ प्रण येही ❀ चलौं साथ कै तजौं सुदेही १९९
ताछिन लषण पितहि कटुवानी ❀ कही अमित रिसपुनि उर आनी॥
वंधुहि वरजि सचिव सन वाता ❀ कही राम कहियो जिन ताता २००
फिरहिं न कोउ सचिव दृढ़ जानी ❀ भयो विहाल कढ़े नहिं वानी॥
मिलि तिहुँ कहि मृदु वचन घनेरे ❀ धीरज दै सुमंत पुर फेरे२०१॥
तव निषाद रघुवर रुखपाई ❀ तिहुँ पद धोय नाव बैठाई॥
अति अनंद युत पार उतारी ❀ पुनि गमनो निजभवन सुखारी२०२

दोहा-इत रघुवर सिय लषण तिहुँ, सुरसरि मुदित अन्हाय॥
नित्यकृत्य कीने सकल, समय सरिस विधि भाय॥२०३॥
तव गंगहि कर जोरिकै, करी विनै वहु सीय॥
कही कुशल युत दीजियो, वेगि दरश रमणीय॥२०४॥
गंग देवि हौं पूजिहौं, सविध विपिन ते आय॥
मद आमिष पय अन्न फल, संयुत सुमन चढ़ाय॥२०५॥
यौंहीं सिय सुरसरि विनय, कीनी सहित उमंग॥
गमन कियो शिरनाय तिहुँ, राम लषण सिय संग२०६॥

प्र० वाल्मीकीय अयोध्याकांडे सर्ग॥ ५५॥ श्लोक।

सुराघट सहस्रेण मांसभूतोदनेन च॥
यक्ष्ये त्वां प्रीयतां देवि पुरीं पुनरुपागताम्॥२२॥

दोहा-इहि प्रकार सिय लषण युत, रघुनंदन सुखभौन॥
तापसवेष वनायकै, कानन कीनो गौन॥२०७॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीरामवनगमन
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः॥ १॥

दोहा—रघुनंदन सिय बंधु युत, कीने तापसवेश ॥
चले मुदित गहि विपिन मग, रंच न हृदे कलेश ॥ १ ॥
मगवासी रामहिं मिलें, ते लखि होहिं अधीर ॥
कहैं कहाँके कौन ये, श्याम गौर दुहुँ वीर ॥ २ ॥
सुनें जबै वन गमन तब, अधिक हिये बिल खाय ॥
कहैं चलैं हम रावरे, संग जु होय रजाय ॥ ३ ॥
कोऊ रघुवर संगही, होत प्रेम वश धाय ॥
फेरे फिरैं न कहत हैं, हम मग देहिं वताय ॥ ४ ॥
कोल भील सिय राम हित, लावत भेट अपार ॥
कंद मूल फल फूल अरु, खग मृग मीन सिकार ॥ ५ ॥
तिन सराहि सनमानहीं, कहि रघुवरवर बैन ॥
सो सुनि सब सुख पावहीं, छवि निरखैं भरिनैन ॥ ६ ॥
कछुक दूर सँग जात हैं, कानन पंथ वताय ॥
फिरत नहीं रघुवंश मणि, तिन फेरत बरियाय ॥ ७ ॥
याही विधि रघुवंश मणि, सीता लषण समेत ॥
प्रमुदित कानन जातहैं, मगवासिन सुख देत ॥ ८ ॥
राजकुँवर फिर फिर चितव, प्रिया वदनकी ओर ॥
ह्वै अधीन मृदुवचन कहि, विनवैं सबहि निहोर ॥ ९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ये हो भूमि तजिकै कठोरता मृदुल होउ ये हो भानु सीत सबै तपन विहाय हो॥ डोलौ हो त्रिविध पौन लघुता गहो हो मग कानन गिरीशजाहु वाटते पराय हो ॥ मो सँग सिधारी वन जनकदुलारी प्यारी रसिकविहारी हो सुखारी सो उपाय हो ॥ होवै ना दुखारी सुकुमारी ये विदेह वारी इन हितकारी तुम सकल सहायहो ॥ १०॥

दोहा—रघुनंदन सिय लषणको, मुख निरखत फिर फेर ॥
सीय लषण इत श्यामके, रहैं वदन दिशि हेर ॥ ११ ॥
सेवत हैं सिय रामको, लषण सनेह समेत ॥
दंपति प्राणनते अधिक, करत लषणपर हेत ॥ १२ ॥

इहि विधि सिय रघुवर लपण, कियो विपिन विश्राम ॥
प्रात होत पुनि उठि चले, दिवस चढो द्वैयाम ॥ १३ ॥

दोवई छन्द ।

सिय तन चिते श्यामसुंदर वर श्रमित जानि सुकुमारी ॥
रघुनंदन मृदु वचन लपण सों कहे समय अनुसारी ॥
तात लखो तरुछांह मनोहर तहँ विश्राम करीजे ॥
थकित भई अति जनककिशोरी अब न पंथ चित दीजे ॥ १४ ॥
लपणलाल इत उत निहारिके इक वट विटप सुहायो ॥
सीतल सघन छाँह सुंदर शुचि ठाम अधिक मनभायो ॥
तातर जाय मृदुल पत्रनकी रचि साथरी विछाई ॥
कियो तहां विश्राम मुदित मन सिया सहित रघुराई ॥१५॥
कंद मूल फल आनि लपण पुनि शीतल जल भरि लाये ॥
बंधु सिया संयुत रघुनंदन अतिरुचि भोग लगाये ॥
तामगह्वै निकसीं पुर वनिता श्याम गौर लखि जोरी ॥
प्रमुदितभई चकितसी चितवें कहो कहांके कोरी ॥ १६ ॥
ते सब जाय सहेलिनमें निज यह चरचा जु चलाई ॥
पथिक दोय आये अति सुंदर मैं अबहीं लखि आई ॥
बैठे सखी सुभगवट छहियां जबते मैं अविलोके ॥
तब ते जिय अकुलात अलीरी नैन रुकत नहिं रोके ॥ १७ ॥
कोधौं सखी कहां ते आये तापस वेष बनाये ॥
जाकी छवि अवलोकि सहेली कोटि अनंग लजाये ॥
कानन सुनी न नैनन देखी रूप छटा अलि ऐसी ॥
पुनि सजनी तिन संग मनोहर नवल नारि यक तैसी ॥ १८ ॥
तिनके वचन सुनत वनितनके उर अनंद अधिकायो ॥
दरशलालसा लगी घनेरी तन मन सब हुलसायो ॥
गुरुजन डीठ बचाय संगकी जुरि मिलके सब बामा ॥
देखन चलीं श्यामसुंदरकी छटा अनूप ललामा ॥ १९ ॥
आई जहाँ रहे मनमोहन निरखि प्रीति अति बाढी ॥

चकित चित्त ह्वै रहीं नबेली मनो चित्र लिखि काढी ॥
इकटक रहीं निहारि ठगीसी भई निमिष नहिं देहीं ॥
लै उसाँस उर ससकि छबीली नैनन जल भरिलेहीं ॥ २० ॥
कोऊ रहीं चिबुक गहि अँगुरिन भई थकीसी कोऊ ॥
कोऊ कर कपोल धरि ठाढीं रहीं जकीसी कोऊ ॥
कोउ दबाय दंतन ते रसना लखैं कनौखिन दैकै ॥
कोऊ शीश हाथ दे नवला सोचैं कुँवर चितैकै ॥ २१ ॥
काहूके जिय राजकुँवरकी चितवन पैठ गईहैं ॥
भूली सकल चातुरी सुधि बुधि विह्वल दशा भईहैं ॥
काहूके उर लगी लालके नैन वाणकी गाँसी ॥
काहूके गर परी कठिन यह श्याम प्रीतिकी फाँसी ॥ २२ ॥
काहूके वेणी बँद छूटे भूली सो न सुधारै ॥
काहूके सारी शिर सरकी सोऊ कछु न सम्हारै ॥
काहूकी आँखिनते अतिहीं आंसुन धार बही है ॥
काहूकी गति भई बावरी धीर न रंच रही है ॥ २३ ॥
कोऊ लाज त्यागि रघुवरको रूप निहारि रहीहै ॥
कोऊ कछु सकुचाय प्रगट पै हिय विच जात दही है ॥
कोऊ सुरति सम्हारि हेरि छवि पुनि अधीर ह्वै जाहीं ॥
कहि न सकें कछु डर सकोच ते मनहीं मन विलखाहीं ॥ २४ ॥
कोऊ कहैं सखी ये को हैं आये इतै कहाँ ते ॥
जैहैं किते किधौं अवरैहैं ऐहैं फेरि यहाँते ॥
कोऊ कहैं चलौ ढिग चलिये भेद सबै मिलि जैहैं ॥
कोऊ कहैं अलीरी हम तौ नैननको फल लैहैं ॥ २५ ॥
ताछिन राजकुँवर सिय ढिग ते सहजहिं उठे प्रवीने ॥
निकटहि कछुक दूरि चलि विरहन लगे विपिन चित दीने ॥
रह्यो कछुक दिवस चहुँवाई लागि सर्म सुहायो ॥
लषणलाल वर लै धनु शर कर वन अंदर जिय लायो ॥ २६ ॥

लखि अकेलि सकुचति ठुठकति तिय जुरि सब सिय ढिग जाई ॥
परि परि पाँय आय मिलि बैठीं बोलि न सकैं सकाई ॥
दुहुँ करजोरि धीर धरि इक तिय कहत भई मृदुबानी ॥
हे स्वामिनि कछु पूछन चाहैं हम हैं नारि अयानी ॥ २७ ॥
बनवासिनी गमारि नारि हम नीति अनीति न जानैं ॥
चूक क्षमा कीजो अजानकी कोऊ बिलग न मानैं ॥
मधुर वचन बोलीं सिय तिनसों तुम मम प्राणपियारी ॥
बूझौ कहा कहति हौ नागरि का अभिलाप तिहारी ॥ २८ ॥
बोलीं ग्रामवधू प्रमुदित ह्वै द्वै तापस ये को हैं ॥
जिनकी छटा निहारि अनूपम कोटिकाम रतिमोहैं ॥
जैहैं कहाँ कहाँते आये येहैं कौन तिहारे ॥
कहा नाम कहँ ग्राम धाम कहँ हैं किहिके दुहुँ बारे ॥ २९ ॥
कहा तिहारो नाम छबीली कौन हेत बन आई ॥
हमहि अयानी जानि सयानी कहिये सकल बुझाई ॥
ग्रामवधुनके वचन सुनतहीं जनकसुता मुसकानी ॥
करि सकोच शिरनाय तियनते बोलीं मधुर सुबानी ॥ ३० ॥
नाम अयोध्यानगर तहाँके दशरथ नृपति सुने हैं ॥
श्याम गौर द्वै राजकुँवर वर सखि तिनके सुत येहैं ॥
इनकी मातु कौशल्या रानी सो हैं सासु हमारी ॥
अरु ये बंधु जु देवर गोरे लछमन नाम पियारी ॥ ३१ ॥
सीता नाम हमारो सजनी पिता जनक नृप ख्याता ॥
जिनकी पटरानी जु सुनैना सोइहैं मम माता ॥
सकल कथा वरणी वैदेही ग्रामवधुन समुझाई ॥
त्यागि सकल कुल राज काज बहु जिहि कारण बन आई ॥ ३२ ॥
सुनि चरचा सब ग्राम वधुनके लोचन जल भरि आये ॥
गद्गद कंठ परस्पर लखिकै कहैं वचन बिलखाये ॥
कही न जाय कछू सुन सजनी विधि गति वाम बनेगी ॥
अनुचित उचित रंच नहिं जानि करन जु मैन ठनेगी ॥ ३३ ॥

पुनि सजनी उन मात पिताको निपट कठोर हियो है ॥
जिन दोऊ सुकुमार सुवनको हठि बनवास दियो है ॥
राजकुमारि मनोहर ऐसी पुत्र वधू वर पाई ॥
कानन ताहि पठावत जियमें रंच दया नहिं आई ॥ ३४ ॥
एकै कहैं सखी नृप भोरे तिय चरित्र नहिं जाने ॥
बचन बद्ध ह्वै गये प्रथम कह होत बहुरि पछिताने ॥
एकै कहैं कुटिल कैकेयी अति मतिमंद अभागी ॥
राम लषण सिय बनहि पठाये चेरि सिखापन लागी ॥ ३५ ॥
एकै कहैं सुनौं री आली भाग आपने जागे ॥
ठई बुद्धि नृप रानिहि ऐसी हम सबके हित लागे ॥
किते राम सिय किते अयोध्या कित हम बिपिन निवासी ॥
विधि संयोग पुण्य पूरवले भई चरणकी दासी ॥ ३६ ॥
एकै कहैं अवधवासी सखि एकौ जियत न ह्वै हैं।
एकै कहैं अली जड चेतन सब इन बिन जिय ख्वैहैं ॥
एकै कहैं भटू जो इनको विधि काननै पठाये ।
तौ सजनी वे सदन मनोहर जगमें वृथा बनाये ॥ ३७ ॥
एकै कहैं सखी री जो ये कंद मूल फल खाहीं ॥
तौ पटरस व्यंजन बहु आली जगमें रचे वृथाहीं ॥
एकै कहैं सहेली ये मगचलैं पयादे जोपै।
शिबिकादिक गज वाजि यान बहु वादि बनाये तोपै ॥ ३८ ॥
एकै कहैं सखी जो इनको विधि वन अटन दियोरी ।
मृदुल प्रसून बिछाय सकल मग कोमल कसन कियोरी ॥
एकै कहैं उसासन लै कै जो आपनो बसाहीं ।
दुहुँ वर बंधु सिया संयुत तो राखिय आँखन माहीं ॥ ३९ ॥
एकै कहैं सुनो सिय स्वामिनि वचन कहत हम डरहीं ॥
निरखिरावरी कृपाघनेरी तवहिं ढिठाई करहीं ॥
राजसुता यह ग्रामवधुनकी बिनती सुनि चित दीजे ।
जानि गँवारि न बिलग मानिये चूक क्षमा सब कीजे ॥ ४० ॥

कानन कठिन कलेश छबीली तुमतौ अति सुकुमारी ॥
सकल महादुख कैसे सहिहौ ह्वैहौ निपट दुखारी ॥
कोल भील गज सिंह रीछ कपि विकट सदा वनचारी ॥
डरिहौ तिनहिं निहारि सुंदरी ते लागत भयकारी ॥ ४१ ॥
ताते इतहिं रहौ वैदेही सबही विधि सुख पैहौ ।
करिहं सकल रावरी सेवा जो कछु आयसु दैहौ ॥
हम निज करते नव पत्रन की रचिहं कुटी सुहाई ।
सखी सदा तुम संयुत बसिहैं राम लषण दुहुँभाई ॥ ४२ ॥
अवधि विताय अवध पुनि चालियो हम सब संग सिधैं हैं ।
जौलौं इत रहिहो तौलौं नित लखि निज नैन सिरैं हैं ॥
जबते सुनो श्रवण ते स्वामिनि हम वन गमन तिहारो ।
तबहीते उर कल न परत है कसकत हृदय हमारो ॥ ४३ ॥
ग्रामवधुनके वचन सुनत सिय कही मनोहर बानी ॥
जानति हौ तिय धर्म सखीरी तुम सब परम सयानी ॥
राजकुँवर वर श्याम सलोने धर्म धुरंधर आली ॥
चौदह वर्ष प्रमाण राजतजि पितु आयसु जिन पाली ॥ ४४ ॥
तिनकी रुचि जो होय सखीरी सोई मोहिं सुहाही ॥
पतिसेवा मन वचन कर्म तिय धर्म परम यह आही ॥
सब दुखदानि सुखद उनके सँग रंच भीति कछु नाहीं ॥
निरखि श्याम मुखचंद्र सहेली हम दिन रैन अघाहीं ॥ ४५ ॥
इत वनरात रहीं तिय सियसों उत मन रघुवर पाहीं ।
दरशत कबहुँ दुरत कबहूँ चलि वन तरु लतिकन माहीं ॥
विचरत फिरत विपिनमें लालन निरखि नवेली बामा ॥
सकुचति सी चितवें तिहि ओरे जित डोलत घनश्यामा ॥४६॥
मिसते उठि सिय ढिगते सब तिय राजकुँवर ढिग आई ।
निरखि लालकी छटा अनूपम नैनन जल भरिलाई ॥
लतन ओट ठाढे रघुनंदन लखि बोली इक बामा ।
हम रावरे दरशहित आई हे सुंदर घनश्यामा ॥ ४७ ॥

तुम हौ राजकुमार छबीले हमहैं नारि गमारी ।
कहा करैं लखि रूप तिहारो लागी प्रीति हमारी ॥
निरखि रावरी छटा लाडिले हम कुलकानि बिसारी ॥
रुकत नहीं तन प्राण राखिये अब कहँ लौं मन मारी ॥ ४८ ॥
हम सब तिय तुव पास छबीले विनय करन कछु आई ॥
सो सुनि मानिलेउ हे प्यारे करियो जनि वरियाई ॥
सुनो लाल बन गमन तिहारो तबते अति बिलपाती ।
तुमहिं विलोकि विपिन दुख सुमिरत फटत हमारी छाती ॥ ४९ ॥
येती विनय सुनौ हो प्यारे सब हैं दीन निहोरैं ॥
प्राण अधार मानलीजो यह शीशनाय कर जोरैं ॥
सिया बंधु संयुत मनमोहन इतही अवधि बितावो ।
सबऋतु इहाँ सुखारी रहौ कितहूँ अनत न जावो ॥ ५० ॥
कै पुनि संग लेहु हम सबहीं चलि हैं साथ तिहारे ।
तुमहिं विहाय सुहाय और नहिं घर पुर सकल बिसारे ॥
करिहैं सदा रावरी सेवा बिनादामकी दासी ।
और कछू न चहैं हे प्यारे हम सब रूप उपासी ॥ ५१ ॥
और न कोऊ सुहात साँवरे तुम कछु टोना कीनो ।
नेक छटा दरशाय छबीली तन मन सब हरिलीनो ॥
कै अब इतही रहौ लाड़िले कै सबही सँग लेहू ।
अबला अबल जानि हे प्रीतम जनि बिछुरन दुख देहू ॥ ५२ ॥
साँची प्रीत हमारी प्यारे हम छलछंद न जानैं ।
तुमें दियो तन प्राण आपनो करो सु जो मन मानैं ॥
हैं सब ग्राम निवासिनि भोरी लखि तुव रूप लुभानी ।
तिन पर कृपा करो हे रघुवर दीन हीन मनि जानी ॥ ५३ ॥
तिनकी प्रीतिरीति साँची लखि रघुनंदन हरषाने ।
बोले वचन धीर दे सब सों नीति नेहरस साने ॥
यों अधीर जनि होउ छबीली तुमहौ परम सयानी ।
लोक लाज कुल धर्म बिनाशो कैसी भई अयानी ॥ ५४ ॥

पितु आयसु तजि राज साज हम ह्वै तापस इत आये।
चौदह वर्ष न जाहिं ग्राम बन रहैं परण गृह छाये॥
एक जटिल दूजे परदेशी तुम हौ नारि ललामा।
हमरो तुमरो संग सयानी बनै नहीं अभिरामा॥ ५५॥
सबही बसौ सदा मेरे हिय सुधि राखियो हमारी।
फिरि हैं अवधि विताय फेरि हम मिलिहैं वेगि पियारी॥
तुमरो धर्म यही है सुंदरि पति सुतमें चित दीजो॥
हृदय हमारो ध्यान राखियो नीतिकाज सब कीजो॥ ५६॥
राजकुँवरके वचन सुनत सब बाम विकल बिललानी।
ह्वै अधीर मोहनसों बोलीं विरह प्रीति नय बानी॥
तुम हौ नृपति किशोर लाडिले नीति धर्म सब जानौ।
लोक लाज मर्याद वेदकी सकल रीति पहिचानो॥ ५७॥
हम हैं नारि गँवारि साँवरे धर्म कर्म नहिं जानैं।
मन लग जाय छैल जाही सों ताहीके हित सानैं॥
राखें साँचीं प्रीत लाड़िले येही धर्म हमारे।
प्यार एक रस सदा निवाहैं सुन ले वचन पियारे॥ ५८॥
सुनो बैन हे यार बटोही अबला अबल सदाहीं।
ताहू पै पुनि ग्राम निवासिनि कछू चातुरी नाहीं।
छलबल एकौ रंच न जानैं केवल प्रीत पियासी।
सांचोनेह लगै जाही सों ताहीकी हम दासी॥ ५९॥
जबते रूप तिहारो हेरो तबते सकल लुभानी।
पति सुत धाम त्यागिकै प्यारे हम तुव हाथ बिकानी॥
जिय भावै सो करो लाडिले मारो चहो जिवावो।
पै यह विनय मान मनमोहन अब न रंच बिलगावो॥ ६०॥
परम प्रेममय वचन तियनके सुनि बोले रघुराई॥
तुम जु कही बाणी रससानी सब मेरे मन भाई॥
मानो सीख हमारी एती सकल बाम गृह जाहू॥
कबहुँ न कोऊ मोहिं बिसरियो मैं भूलौं नहिं काहू॥ ६१॥

लगे श्यामके बैन बाणसे बोलीं सब बिलखाई ॥
हाय हमारी पीर साँवरे रंचहु तोहिं न आई ॥
प्याय सुधा फिर विषदे मारै ऐसे गुण नहिं जानें ॥
कारे कपटी होत सांचहू अब नीके पहिचानें ॥ ६२ ॥
कोऊ बोलि उठीं सुन सजनी और उपाय नकीजे ।
सब बिरहिनी बाम जुरि मिलिके प्राण इनहिं ढिग दीजे
कोऊ कहैं अरी आली यह जतन करौ सब कोऊ ।
अंगविभूति रमाय त्यागि घर सकल फकीरिन होऊ ॥
कोऊ कहैं हाय हे छैला मैं तुमरी बलि जाऊँ ।
अब जनि मोहिं सताव पियारे पद गहि हाहा खाऊं ॥
कोऊ कहैं साँवरे तुम तौ राजकुमार कहावौ ॥
ऐसी निठुराई नहिं चहिये हिये दया कछु लावो ॥ ६४ ।
कोऊ कहैं हाय हे प्रीतम डार प्रीतकी फाँसी ।
करी मोहिं अधमरी छोडि जनि जाओ मीत बिशासी ॥
कोऊ कहैं श्याम यह तुमरी नेक चितौन तिरीछी
रोम रोम बिधि गई हमारे छुवत चढ़ी जनु बीछी ॥ ६
कोऊ कहैं सखी रघुवंशी इनहिं दया नहिं आवै ॥
करत अहेर हेर मृगछौनन रंचहु कसक न लावै ।
कोऊ कहैं सखी ये तापस प्रीत रीत कह जानैं ॥
कोऊ कहैं भट्ट निरमोही मोह न रंचहु मानैं ॥ ६६ ॥
कोऊ कहैं सखी कहुँ इनको बिरह पीर नहिं व्यापी ।
कोऊ कहैं भट्ट सब कारे लखियत पर संतापी ॥
कोऊ कहैं अलीरी इनको निपट कठोर हियो है ।
कोऊ कहैं ऐसही गुणतें पितु वनवास दियो है ॥ ६७ ॥
कोऊ कहैं श्याम निरमोही अब तू जनि दुख देरे ।
कै इतहीं रह प्राणपियारे कै सबहीं सँग लेरे ॥
कोऊ कहैं अरे निरदैया इतनी कृपा किये जा ।

कोऊ कहैं लाल तुम लाखनके जिय लीने है हो ॥
कोऊ कहैं प्राण अवहीं कह कोटिनहूंके लै हो ।
कोऊ कहैं अली इनकें हिय रूप गुमान घनेरो ॥
कोऊ कहैं लरकपन आली छुटो नहीं वहु तेरो ॥ ६९ ॥
कोउ कहैं भटू मनमोहन पाई नारि सयानी ।
याते हीय न रंचहु भावै हम सब निपट अयानी ॥
कोऊ कहैं चरण गहि रहिये कैसे फेर तजैंगे ।
कोऊ कहैं निरदई छली ये नेक न लाज लजैंगे ॥ ७० ॥
कोउ कहैं वरजोरी राखैं हमतौ जान न दै हैं ॥
कोउ कहैं जित चहैं जाँय तित अव तौ संग सिधै हैं ॥
कोउ कहैं सवही चलि हूजे योगिनि इनके पाछे ॥
लाज कहा तस नाच नाचिये वीर काछ जस काछे ॥ ७१ ॥
कोऊ कहैं सखीरी इन विन धृगजीवन सवहीको ॥
सुत पति हित धन धाम भोग सुख एकौ लगत न नीको ॥
कोऊ कहैं भली अति कीनी श्याम जु इत ह्वै आये ॥
कोऊ कहैं हमहिं मारनके कारन वनहिं सिधाये ॥ ७२ ॥
कोऊ कहैं लाल कहु साँची कितनी नवला मारी ॥
कीनी कहां घायलें केती किती तजीं अधमारी ॥
कोऊ कहैं सखीरी इनके जहां जहां पग परिहैं ॥
तहां तहां सवही वनितनकी ऐसीही गति करिहैं ॥ ७३ ॥
कोऊ कहैं जहां ये सजनी हैहैं रहत सदाई ।
ता पुर में क्यों वसत होइँगे हेली लोग लुगाई ॥
कोऊ कहैं सुनो री सजनी राजकुमार नहीं हैं ।
ये रति काम देह द्वै धरिकै आये वने सही हैं ॥ ७४ ॥
कोऊ कहैं कहा अव कीजै अमित जतन करि हारी ।
रंचहु कसक न आवत इनको अधिक कठोर हियारी ॥
कोउ कहैं हम ओर हाय वलि नेक निहार छवीले ।
जीव दया कछु लाव लाडिले हो न निठुर गर्वीले ॥ ७५ ॥

कोऊ कहैं सुनो हो प्यारे जो हमको कलपैहो ॥
सब बिरहिनि की हाय परैगी तो कबहुँ न कल पैहो ॥
कोऊ कहैं पाय छबि नीकी प्यारे गरब न कीजे ।
धन जोबन नहिं रहत सदाही यश जगमें करि लीजे ॥ ७६ ॥
कोऊ कहैं अरे साँवलिया क्यों इतरात घनेरो ।
कछू बोल तौ रहो मौन क्यों हर कलेश यह मेरो ॥
कोऊ कहैं सखी या ढिगते चलिय गेह मन मारी ।
देखि देखि याकी छबि औरौ पीर उठत उर भारी ॥ ७७ ॥
कोऊ कहैं भटू विधि इहिकी जो ऐसी छबि कीनी ।
तौ सजनी याके उर काहे नेक दया नहिं दीनी ॥
कोऊ कहैं सखी काहू को काहे दोष लगैये ।
जो कछु होनी होय होय सो कर्म लिखे फल पैये ॥ ७८ ॥
कोऊ धाय जाय रघुवरके चरण परीं अकुलाई ।
कोऊ हाय हाय करि रोवन लगीं सामुहे आई ॥
विरह नेह वश विकल सबै तिय तन मन कौन सम्हारा ।
विह्वल बचन कहैं नैननते चली जात जलधारा ॥ ७९ ॥
तिनकी प्रीति निरखि नृप लालन नैन नीर भरि आयो ।
गदगद कंठ हृदय उमँगानो सकल अंग पुलकायो ॥
उर धरि धीर कही सबहीसों रघुनंदन मृदुबानी ।
हे सुंदरी प्रीति सब तुमरी मेरे हीय समानी ॥ ८० ॥
तुम सब हौ मम प्राणपियारी मैं हौं तुव आधीनो ।
मोसों नेह सदा तुमहिं भावै रहै न प्रीति विहीनो ॥
जाके जिय जैसी अभिलाषा तैसी ताहि पुजैहौं ।
हे भामिनी निश्चय अति मानौ मनमानो सुख दैहौं ॥ ८१ ॥
ऐसे कहि मधुर वचन रघुराई सब उर धीर धराई ।
सन्ध्या समै जानि शिष दै के निज निज गेह पठाई ॥
अपने अपने भौन गई तिय जिय रघुनंदन माहीं ।
[illegible] मनहीं मन बिलगाहीं ॥ ८२ ॥

उत रघुनंदनमें मन अटको इतै लाज गुरु जनकी।
दशा दुराय रहीं सबही तिय राखि मनहि में मनकी ॥
होय प्रात कब चलिय लाल ढिग नींद न रंचहु आवै।
छिन छिन लखैं चंद निशि तारे युग समान पलजावै ॥ ८३ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० ग्राम वधू समागम
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

इतै रैनि बसिकै रघुनंदन प्रातहि विपिन सिधारे।
ग्राम वधुनकी प्रीति सराहत चले जात मग प्यारे ॥
दोऊ सिय रघुचंद परस्पर तिनही की सुधि करहीं।
साँचो नेह बखानि तियनको अतिआनँद उर भरहीं ॥ १ ॥
निशा विगत लखि उठीं सबै तिय करि गृहकाज उताली।
गुरु लोगनकी डीठ दुरै कै चलीं तहाँ मिलि आली ॥
आईं जहाँ रहे नृपलालन तहाँ न श्याम निहारे ॥
हिय धकधकी उठी सबहीके लखें चहूँ कित प्यारे ॥ २ ॥
जाय निहारत भई सुवट तर सूनि साथरी पाई।
हेरतही सब वाम हाय करि गिरिं धरणि मुरझाई ॥
घोर शोर करि रोवन लागीं कहँ गये कित प्यारे।
आँसुनधार बही नैननते तन मन प्राण विसारे ॥ ३ ॥
कोऊ भूमि परी रज लोटैं कोउ फिरैं बिललाती।
कोऊ शीश धुनैं व्याकुल ह्वै कोऊ पीटति छाती ॥
कोऊ हाय श्याम ! कहि टेरैं कोऊ मौन रही हैं।
कोऊ लेति उसाँस आह भरि कोऊ विरह दही हैं ॥ ४ ॥
काहूकी सारी तनु ते गिरि लतिकनमें उरझानी।
काहूकी कंचुकी फटी सब सुधि बुधि सकल नशानी ॥
काहूके अंगन ते केते भूषण टूट परेहैं।
काहूके आनन पै दुहूँदिशि कुंतल छूट परेहैं ॥ ५ ॥
काहूके तनुमें तरु बेलिनते जु खरोट परेहैं।

काहूके पायनमें कंटक लागे अमित खरेहैं ॥
काहूके अतिविरह ज्वालतें मुखसे फेन वहेहैं।
काहूके सब अंगन माहीं स्वेद जु छाय रहेहैं ॥ ६ ॥
राज कुँवरके बिछुरत सबहीं भई बावरी बाला।
जो जिय आवै कहैं करैं सो बढी विरहकी ज्वाला ॥
कोऊ कर कर शोर रोयके हँसत निशंक वहोरी।
कोऊ हाय मार रहि जावैं पुनि बैठे मुख मोरी ॥ ७ ॥
कोऊ मनहीं ते बतरावैं अरु अनखाय रिसावैं।
कोऊ विरह कवित्त छंद कहि फिरि चुप ह्वै शिरनावैं ॥
कोऊ भानु भूमि नभ पक्षिन तरु गिरि निकट बुलावैं।
कोऊ कहैं लाल वे ठाढे चलौ चलौ री धावैं ॥ ८ ॥
कोऊ दौरि चढैं तरु गिरि पै इत उत चहुँ दिशि हेरैं।
आव आव हो श्याम बटोही फिरौ फिरौ कहि टेरैं ॥
कोऊ धाय गहैं तरुपल्लव कहैं दौरियो आली।
हम कर गहि राखे मनमोहन दुरे हुते इत ख्याली ॥ ९ ॥
कोऊ निज परछाँहीं लखिकै ताहि गहनको धावैं।
कहैं वेगि आवोरी पकरो लाल भगे ये जावैं ॥
कोऊ लखि प्रतिबिंब वारि विच बोलैं अति बिलखाई।
धाव धावरी आव वेगही ये ठाढे रघुराई ॥ १० ॥
कोऊ झुकि झुकि भूमि पंथमें चरण चिह्न चहुँ हेरैं।
कोऊ खग मृग तरु लतिकन को जाय जाय मिलि घेरैं ॥
कोऊ कहैं सखी हम सबको आवत देखि दुराने।
कोऊ कहैं अलीरी कालिहि वे निशि मांझ पराने ॥ ११ ॥
कोऊ कहैं सुनोरी सजनी हैं दुहुँ बंधु अहेरी।
खेलनगये भट्ट काननमें आवत ह्वैहैं येरी ॥
कोऊ कहैं अली टुक टेरी हैं किहि ओर चलीजे।
कोऊ कहैं सखी चुप साधौ इतही आवन दीजे ॥ १२ ॥
कोऊ विरह अधीर विकल ह्वै टेरन लगीं सुवामा।

हाय प्राणप्यारे अब आवो कितै गये घनश्यामा ॥
कोऊ कहैं लेत कह प्रीतम हमरी प्रेम परीक्षा।
हैं सब विकल वियोग तिहारे आय करौ कछु शिक्षा ॥ १३ ॥
हे लाडिले सुजान छबीले अब टुक मुख दरशाजा ।
विरह ज्वाल ते जरत सबै तन नेह सुधा बरसाजा ॥
तो बिन हे दिलदार पियारे निकसैं प्राण हमारे।
हिये दया कछु लाय जिवाले हे प्रीतम इत आरे ॥ १४ ॥
कहाँ दुरेहो जाय विपिनमें बोलो मीत बटोही।
कल्प समान पलक बीतत हैं श्याम मोहिं बिनतोही ॥
पहिले मारि नैन बाणन ते सब घायल करि डारी।
प्रीत लगाय हाय अब प्यारे काहे सुरति बिसारी ॥ १५ ॥
राजकुमार सुजान जानि कै हम तुमसे हित कीनो।
ऐसे निपट अजानकढे जू मोहिं अधिक दुख दीनो।
या विधि विकल बाम सब विरहिनि विरह भरी बिललाहीं।
धाय धाय इत उत जिततिनसों बूझत हैं सब पाहीं ॥ १६ ॥
तरु गिरि महि सरिता खग मृगको जड चेतन नाहिं सूझें।
निज प्रीतमकी खबर दीन ह्वै धाय सबहिंसों बूझैं ॥
कहैं अधीन वचन करजोरें अब जनि कोउ दुरावो ॥
प्यारे प्राणअधार सांवरे हैं कित मोहिं बतावो ॥ १७ ॥

कलित छंद।

हे अशोक तुम शोक हरो सबहीके । क्यों न मिलावो मोहन जीवन जीके ॥ हे कदंब बलि अब बिलंब जनि लावो ॥ राजकुँवर रघुबरको हमहिं बतावो ॥ १८ ॥ हे रसाल कहुलाल कहूं इत हे रे। पहुँचावो जू वेगि हमैं उन नेरे ॥ हे पीपर तुमही पर दया जुलावो ॥ सुंदरश्याम सजनको रूप दिखावो ॥ १९ ॥ हे पाकर अब इती कृपा कर देही। कहाँ बतादे मोकहँ श्याम सनेही ॥ हे तमाल रघुलाल कहूं तुम पाये । कहो कित मुहि तजिकै रहे दुराये ॥ २० ॥ हे वट तुम तजि कपट वचन टुक बोलो। भये

चल यों काहे रंच न डोलौ ॥ तुमहूसे कहि गये कछू मम प्यारे।
रैनि दिन तो ढिग मीत हमारे ॥ २१ ॥ हे अनार कचनार
र निरमोही। कहां बतादे छैल निहारौं तोही ॥ हे पलाश तुम
ाश पुजावो मोरी। कहां दिखावो लाल कहों कर जोरी ॥ २२ ॥
चंदन रघुनंदन रूप दिखावो। विरह ताप मो उरकी सकल
रावो ॥ हे कदली कस वदली बुद्धि तुमारी॥ कहां बतावो श्याम
ति बलिहारी ॥२३॥ हे अवनी दुख दवनी हौ सवही की। कहाँ
ाल कित हरौ व्यथा मोजीकी ॥ हे मग तुम पग चिह्न बतावो
ाही। गये कहां है सुंदर छैल बटोही ॥ २४ ॥ हे समीर बलि वीर
र हरमेरी। किते गये रघुवीर धीर सुहिं देरी ॥ धाय लाल ढिग
ाय मोहिं सुधि लादे। उन हूं को या विरहिनि दशा सुनादे॥२५॥
सरिता तपहरिता तुमहु कहावो।जरत हृदय यह मेरो क्यों नसिरावो॥
सरोज प्रीतमको खोज बतावो।कहा दुरे मनमोहन वेगि दिखावो२६
हो मीन जलहीन दशा तुव जैसी ॥ श्याम सुघर विन तलफतहैं
म तैसी ॥ हाय न कोउ सहाय आय हो जावै ॥ विरह अगिन
ा हियकी विषम बुझावै ॥ २७ ॥ अहो भौंर बहु ठौर सदा तुम
ालौ । लखे होय कहुँलाल वेगि तौ बोलो॥ वेऊ कपटी छैल तुम-
से कारे। प्रीतलाय हरि लैगे प्राण हमारे ॥ २८ ॥ हे खंजन मन
जन नैन तिहारे । हम जानी कहुँ निरखे हैं तुम प्यारे ॥ हे मैना
वैना क्यों न सुनावो । गये पथिक किहि ओर जु मोहिं बतावो ॥
२९ ॥ हे शुक तुम टुक बोलौ मधुरी वानी । कहूं निहारे रघुवर
प गुमानी ॥ अरे काग बलिभाग तोहिं बलि देहौं । मोकहँ सगुन
ताव श्याम कब पैहौं ॥३०॥ हे हरिनी मन हरिनी आंख तिहारी ।
प लालनकी तुम कहुँ छटा निहारी॥ हेदिशि किहि दिशि गये साँवरे
ारे । कहाँ लाल विन तलफत प्राण हमारे ॥ ३१ ॥ हे गिरिहो
ाति ऊंचे फिरि चहुँ हेरो । लखो लाल कित जात वेगि किन टेरो॥
हो मोर अति ऊंचे शोर मचावो। विरहकलपना मेरी सकल
नावो ॥ ३२ ॥ अरे पपीहा तू प्रीतम ढिग जारे । दीन वचन कहि

पीउ पीउ रट लागे ॥ हूक उठै सुनि कूक कोकिला तेरी । नेक मौन गहु हाय न मुहि दुख देरी ॥ ३३ ॥ अरे चंद मतिमंद अंग क्यों जारे । पंचबाण उर बाण हाय क्यों मारे ॥ अरी रैनि दुखदैनि सिरात न काहे । अरे विरह मो सकल अंग कसदाहे ॥ ३४ ॥ अलबल बोलैं विकल विरहिनी बामा । तिनहि कछू न सुहाय विना घन-श्यामा ॥ सुधि बुधि भूलगई हैं सब तन मनकी । घर पुरकी नहिं सुरति भई बन बनकी ॥ ३५ ॥ कोऊ कहूँ विहाल बैठ पछताती । कोऊ करि करि हाय धुनैं शिर छाती ॥ भई बावरी कोऊ इत उत दौरैं । कोऊ विह्वल गिरि परी क्षिति छौरैं ॥ ३६ ॥ कोऊ तिया तियाको भुज गहि लेही । कहँ चले कित तजिकै श्याम सनेही ॥ बोलैं कोऊ गहि तमाल अकुलाई । आउ आउरी हम पाये रघुराई ॥ ॥३७॥ काहूके शिरकेश खुले न सम्हारैं । काहू तनतें बसन गिरे नहिं धारैं ॥ काहूके पट फटे कंटकन माहीं । काहू परे छरौंट कछू सुधि नाहीं ॥ ३८ ॥ हाय हाय कहि कोउ उसासन लेहीं । कोऊ काहुहि कछू न उत्तर देहीं ॥ भई बावरी रघुवर विरह वधूटी । लोक लाज कुलरीति नीति सब छूटी ॥ ३९ ॥ कोउ कहैं सखि हाय कहौ कित जैये । कोउ कहैं यह काको विरह सुनैये ॥ कोऊ कहैं सखी उन विन धृग जीनो । कोऊ कहैं विधाता यह दुख दीनो ॥ ४० ॥ कोऊ कहैं सखी सो निठुर महाहै । कोऊ कहैं अली उहि दोष कहाहै ॥ कोऊ कहैं मुहि हाय संग नहिं राखी । कोऊ कहैं कछु चलतहुँ मीत न भाखी ॥ ४१ ॥ कोऊ कहैं ह्वै योगिनि भस्म रमैये । सब मिलि श्यामहि हेरन जित तित जैये ॥ कोऊ कहैं सखीरी हम तन देहैं । मनमोहनके ढिगहीं प्राण पठैहैं ॥ ४२ ॥ कोऊ कहैं अली हम अब लखि पावैं । तौ छिनहू भरि नैननते न दुरावैं ॥ कोउ कहैं सखि होनीहुती भईसो ॥कोऊ कहैं करी जासि दई दई सो ॥ ४३ ॥ कोऊ कहैं अलि कारो कठिन महाहै । कोऊ कहैं तापसकी प्रीत कहाहै ॥ कोऊ कहैं कपटी जस मुहिं दुख दीनो । सोऊ तस फल पैहै अपनोकीनो ॥ ४४॥ कोऊ कहैं सखी सांवलिया मेरो ॥

ताके संग महा छलिया है गोरो॥कोउ कहैं अली सो नारि सयानी। हम सबको लखि लै निज पियहि परानी ॥ ४५ ॥ कहैं वचन सब जाके जिय जो आवैं । रघुनंदनके विरह विकल विललावैं। ताही मग ह्वै एक पथिक तहँ आयो । तिहि विलोकि सब वनितन अति सुखपायो ॥ ४६ ॥ घेरि लयो तिहि धाय जाय सब नारी। चकित भयो सो तिनकी दशा निहारी ॥ कहे पथिक तुम को हौ कौन कहांकी । कछू न बोलैं वाम श्याम मद छाकी ॥ ४७ ॥ वैठि गयो इक तरु तर आय वटोही । घेरि रहीं चहुँ फेर वाम सब वोही। बूझतिहैं मिलि खवर मीतकी तासों। कहन चहैं कछु कछू कढै रसनासों ॥ ४८ ॥ कहौ पथिक तुम साँचे बैन सुखारे ॥ कहूं निहारे हमरे प्राण पियारे। श्याम गौर द्वै बंधु सुभग धनुधारी। है तिनके सँग एक मनोहरनारी॥४९॥कीने तापस भेप तिहूं वनचारी ॥ कहौ बटोही तुम कहुँ छटा निहारी। लछमन नाम सु गौर राम हैं श्यामा। सीता नाम ललाम वाम गुणधामा ॥ ५० ॥ अविलोके तुम होय कहूं तौ बोलौ। रंच न राखौ हृदय गांठ बलि खोलौ ॥ पथिक तिहारे पायँ परैं करजोरी ॥ कहौ श्याम सुधि निरखि दीनता मोरी ॥ ५१ ॥ भईं बावरी सिगरी विरहिनि बाला। कहैं पथिक कित मिले तुमैं रघुलाला॥कहो कछू हम सबसों श्याम सँदेशो । पाई खबर न मोजिय अधिक अँदेशो ॥ ५२ ॥ कहौ कहा कहि भेजो वह निरमोही । कैपाती लिखि दई बतावो मोही ॥ कै हम सबको भेद लेन तुम आये । राजकुँवर छल करिकै सिखै पठाये ॥ ५३ ॥ वारवार तुव पाय पथिक हम परहीं ॥ हाथ जोरि शिरनाय विनय वहु करहीं ॥ वा निरमोहीकी कछु खबर सुनावो ॥ तिहि विन तलफत प्राण सुहाय बचावो ॥ ५४ ॥ येकै तिया बटोहीसों कर जोरैं। एकै तिहि निज शीशनवाय निहोरैं ॥ एकै कर झझकोरि कहैं कछुतेही। बूझैं इक गुलचाय कहौ कित नेही॥५५॥

एकै बूझें बात बलैया लैकै । एकै विनैवें ताहि चिबुक कर दैकै ॥ एकै कहैं अली यह बौरो नर है। याको निज तन मनकी कछु न खबर है ॥ ५६ ॥ एकै कहैं भटू इन श्याम निहारे। डोलत वन वन तन मन सुधि सकलविसारे ॥ जौ इन छवि न लखी होती लालनकी । सुर ति न जाती तौ याके तनमनकी ॥५७॥ एक कहैं अली यह उनढिग जैहैं । विरह दशा या सबकी सकल सुनै हैं॥ एक कहैं कछू तौ बोल कसाई। तोहि हमें कछु रंचहु दया न आई ॥ ५८ ॥ एकै कहैं पथिक प्रीतम ढिग जैयो । हम दिशिते पग पारि पारि विनय सुनैयो ॥ कहियो तुम बिन तलफत हैं सब वामा । तिनहि जाय सुखदेहु वेगि घनश्यामा ॥ ५९ ॥ एक बेर फिरि आय वदन दर शावें । कहियो फिरि जित भावै जिय तित जावें ॥ कहियो जब ते नैन बान तुम मारे। तबते निशिदिन तलफत प्राण विचारे ॥ ६० ॥ कहियो लालन जो न वेगि तुम जैहौ। तो मारि हैं सब विरहिनि जियतन पैहौ ॥ कहियो आय सु प्राणदान दे जावें। नाहीं तौ निज करते जिय ले जावें ॥ ६१ ॥ कहत वचन विरहिनी नेहमदछाकी। सही जात नहिं पीर वियोग व्यथाकी ॥ अहो पथिक उन पास जाय फिरि आवो। कहा कहो मनमोहन मोहि सुनावो ॥ ६२ ॥ कोऊ लैकर कंकन पथिकहि देहीं। कोऊ निज मुद्रिका देति हैं तेहीं ॥ कोऊ तिय भुजबंद देयँ अतिनीको। देनलगीं हैं चंद्रहार वरहीको ॥ ६३ ॥ कोऊ बेसर कोऊ कुंडल देहीं। शीशफूल मंजरि देय उठिकेहीं ॥ करनफूल नथ झूमक कोउ उतारें। चंपकली वर माल कोउकर धारें॥६४॥पथिकनहीं कछु लेय देयँ वर जोरी। पांय परें तिय विनय करें कर जोरी ॥ कहैं पथिक तुम वेगि श्याम सुधि लावो। एक वेर रघुवर सो हमहि मिलावो ६५॥ तिनकी प्रीति निहारि पथिक हरपानो। वंदि चरण निज जन्म सफल करिमानो॥ धन्य वाम ये जिनै प्रीति अनिसाँची। लाज त्यागि रघुराज रंगमें राची॥ ६६ ॥ तिनहिं धीरदै पथिक कही

मृदुवानी। धीर धरौ निज हियमें परम सयानी ॥ यौं जनिहोहु अधीर विरहिनी वामा। तुमहिं मिलैंगे वेगि राम अभिरामा॥ ६७॥ धर्म धुरंधर राम विषयरसरूखे। रहत भक्त आधीन प्रीतिके भूखे॥ तुम उनते नहिं दूर नवे तुमसे हैं। दुहूँ निकट हौ दोऊ दुहूँ हिये हैं॥ ६८ ॥ रैनि दिवस ज्यों तुम सब उनहिं रटौहौ। तिय सिगरी त्यों तिनकेहिये बसौहौ ॥ वेसबहीके जीकी जाननवारे। दूर करैंगे सकल कलेश तिहारे ॥ ६९ ॥ पथिक धीरदै सबही विधि समुझाई। विरह अगिनि कछु कहि रस बैन सिराई ॥ कहैं वियोगिनि बाल बटोही प्यारे। और श्यामकी चरचा फेरि चलारे ॥ ७० ॥ फेरि विरहिनी विकल भई अकुलानी। हाय लाल कहि टेरन लगीं सुवानी ॥ विरह विवश तिन सुधि बुधि पुनि बिसराई। उठो बटोही ताछिन औसर पाई ॥ ७१ ॥ तिन चरणनकी रज निज नैन लगाई। चलत भयो कछु मिसतै डीठ बचाई ॥ चलो जात मग पथिक नैन भरिलावै। करि करि तिनकी सुरति हिये हुलसावै॥ ७२ ॥ इतै विरहिनी वाम अधिक अकुलानी। हाय बटोही गयो कहैं बिलखानी ॥ धाय धाय चहुँ ओर जाय तिहि हेरैं। कोऊ कहुँ न दिखाय वेसहीं टेरैं ॥ ७३ ॥ कहैं पथिक कित गयो नेक इत आरे। मेरो कछु सँदेशो तौ लेजारे ॥ इहि विधि करति विलाप विकल सब नारी। बढ़ी पीर उत लागी विरह कटारी ॥ ७४ ॥ ताही छिन चहुँ ओर घेर घन आये। बरसन लागो नीर अधिक क्षिति छाये॥ झोका देत समीर दामिनी कौंधे। जाकी चमक निहारि नैन चकचौंधे ॥ ७५ ॥ नटत मोर बन पक्षिन शोर मचायो। सुनि विरहिनि हिय दूनो विरह बढ़ायो ॥ नीर बुंद जो परैं नियनके तनमें। रंचक हू न लखाय सुछनकैं छिनमें ॥ ॥ ७६ ॥ देखतहीं घनश्याम विरहिनी बाला। रोय उठीं अति भई विरह बेहाला ॥ काहु कह्यो भट्ट जैसे घनकारे। तैसही मनमोहन अपने प्यारे ॥ ७७ ॥ कोउ विरहिनि कहै मेघ इत आरे। तो लगि सनिक होन सुनैन हमारे ॥ मेघहि घनश्याम

तुमीं घनश्यामा । दोउनको है एक रूप गुण नामा ॥ ७८ ॥ कोउ कहैं घन इतै नहीं तुम छावो । जितै होय मनमोहन तितै सिधावो ॥ उनही के ढिग जाय घेरि झारि लैयो । यह दुख हमरो श्यामहि सकल सुनैयो ॥ ७९ ॥ नेह विरह वश ग्राम वधू कर-जोरैं । शीश नाय ह्वै दीन जु सबहि निहोरैं ॥ कानन योग नहैं सुकुमार पियारे । ते वन वन यों डोलैं पाँय उघारे ॥ ८० ॥ तुम सबही मिलि प्रीतमको सुख दीजो ॥ जड चेतन निज जन्म सफल कर लीजो ॥ अहो मेघ तहँ कीजो छाँह सदाहीं । सुंदर श्याम सलोने जहँ जहँ जाहीं ॥ ८१ ॥ अहो पवन नित त्रिविध लाल हित ढरियो । होन न पावै सकल स्वेद श्रम हरियो ॥ अहो चंद रघुचंद अनंद करीजो । अहो रैन प्रीतमहिं चैन बहु दीजो ॥ ८२ ॥ अहो भूमि तुम तहाँ मृदुल अति होऊ । जहां जाहिं सिय सहित बंधु वर दोऊ ॥ अहो पंथ लघु सुगम स्वच्छ शुचि रहियो। राजकुँवरको मोद सहित निरखहियो ॥ ८३ ॥ रघुवरके हित हेतु अहो तरु वेली । फूलो फलो सबै ऋतु समय सकेली ॥ अहो भानु तुम उनके कुलपति हौजू । राजकुँवर सुख हेतहि सीत गहौजू ८४॥ सब पसारि निज अंचल विधिहि मनावैं ॥ जहां रहैं रसिकेश तहाँ सुखपावैं ॥ देव पुजैयो वेगहि आश हमारी । बहुरि विलोकैं नयनन भरि धनुधारी ॥ ८५ ॥

इति श्री० रा०र० व० वि०ग्रामवधूविलाप वर्णनो नाम तृतीयो विभागः॥ ३॥

दोधई छंद ।

सब रघुवर छवि छकीं छबीली तन मनकी सुधि भूली ।
राजकुँवर घनश्याम सुवर विन विरह शूल हिय हूली ॥
सकल दिवस निशि वन विलपतहीं रहीं नवेली वाला ।
घर पुरजन अकुलात सोच वश खोजत फिरत विहाला ॥१॥
दूजे दिवस विपिनमें पाईं तिनकी दशा निहारी ॥
भये विकल गुरजन पुर परिजन बड़ो सोच उरभारी ॥

मृदुवानी । धीर धरौ निज हियमें परम सयानी ॥ यों जनिहो
अधीर विरहिनी वामा । तुमहिं मिलैंगे वेगि राम अभिरामा ॥ ६७
धर्म धुरंधर राम विपयरसरूखे । रहत भक्त आधीन प्रीतिके भूखे
तुम उनते नहिं दूर नवे तुमसे हैं । दुहूँ निकट हौ दोऊ दुहूँ हि
हैं ॥ ६८ ॥ रैनि दिवस ज्यों तुम सब उनहिं रटौहौ । तिय सिग
त्यों तिनकेहिये बसौहौ ॥ वेसबहीके जीकी जाननवारे । दूर करें
सकल कलेश तिहारे ॥ ६९ ॥ पथिक धीरदै सबही विधि समुझा
विरह अगिनि कछु कहि रस बैन सिराई ॥ कहैं वियोगिनि वा
बटोही प्यारे । और श्यामकी चरचा फेरि चलारे ॥ ७० ॥ फे
विरहिनी विकल भई अकुलानी । हाय लाल कहि टेरन ल
सुवानी ॥ विरह विवश तिन सुधि बुधि पुनि बिसराई । उठो बटो
ताछिन औसर पाई ॥ ७१ ॥ तिन चरणनकी रज निज नैन लगाई
चलत भयो कछु मिसते डीठ बचाई ॥ चलो जात मग पथिक नै
भरिलावै । करि करि तिनकी सुरति हिये हुलसावै ॥ ७२ ॥ इ
विरहिनी वाम अधिक अकुलानी । हाय बटोही गयो क
बिलखानी ॥ धाय धाय चहुँ ओर जाय तिहि हेरैं । कोऊ कहुँ
दिखाय वैसहीं टेरैं ॥ ७३ ॥ कहैं पथिक कित गयो नेक
आरे । मेरो कछु संदेशो तौ लेजारे ॥ इहि विधि करति बिल
विकल सब नारी । वढ़ी पीर उत लागी विरह कटारी ॥ ७४
ताही छिन चहुँ ओर घेर वन आये । बरसन लागो नीर अ
क्षिति छाये ॥ झोका देत समीर दामिनी कौंधे । जाकी चम
निहारि नैन चकचौंधै ॥ ७५ ॥ नटत मोर वन पक्षिन
मचायो । सुनि विरहिनि हिय दूनो विरह वढ़ायो ॥ नीर बुंद
परैं तियनके तनमें । रंचक हू न लखाय सुछनकैं छिनमें
॥ ७६ ॥ देखतहीं घनश्याम विरहिनी वाला । रोग
अति भई विरह वेहाला ॥ काहु
तैसही मनमोहन अपने प्यारे ॥
इत आरे । तो लखि सीतल

रहिये करि करि हाय ॥ ११ ॥ वह मधुरी रस बोलनि कसकत होय ॥ वा तिरछी रस हेरनि पैठी जीय ॥ १२ ॥ कबहूँ फिरि अब ऐहैं इहि मग लाल ॥ हमहिं बहुरि दरशैहैं बदन विसाल ॥१३॥ सो दिन धौं कब होइहि अति अभिराम ॥ जादिन प्रीतम हेरैं फिरि सब थाम ॥ १४ ॥ दई देवता कित धौं गये पराय ॥ सबै मनाये कोउ न होत सहाय ॥ १५ ॥ श्याम मिलनकी धरि धरि जियमें आस॥ करत सदा हम सजनी जप उपवास ॥ १६ ॥ हम उन लागि परनवां अरपन कीन ॥ सो अस निठुर पियरवा सुधिहु न लीन१७॥ लिखि न पठाई पतियो एकौ मीत ॥ का राखिहि निरदैया साँची प्रीत ॥ १८ ॥ सजनी नेह निबाहब सहज न होय ॥ प्रीत रहै बरु जियरा जावै खोय ॥ १९ ॥ सखी इकंगी नेहवा दुख बहु आय ॥ दिवला माहिँ पतँगवाकर जिय जाय ॥ २० ॥ करि करि श्याम सुरतिया हम दिन रैन ॥ रोय रोय मन मारैं छिनहुँ न चैन ॥ २१ ॥ कोऊ खबरि सुनाइहि आसि फिरि हाय ॥ आये मीत पियरवा देखहु जाय॥२२॥सजनी कस सुधि होइहि उनहि हमारि॥राजकुँवर वे हमहैं नारि गँवारि ॥ २३ ॥ कोऊ कहैं सखीरी मुहि दिन रैन ॥ झझक उठै हिय धरकत परै न चैन ॥ २४ ॥ रहे जहाँ मोहन तहँ जाय न जाय ॥ सजनी सो बट छहियाँ धरि धरि खाय ॥ २५ ॥ लगत मशान भवनवाँ परिजन भूत ॥ रिपु समान दरशावैं पितु पति पूत ॥ ॥२६ ॥ जबसे श्याम सजनवाँ बिछुरे हाय ॥ तबसे आपनि देहिया मुहि न सुहाय ॥ २७ ॥ बिछुरत प्रीतम छतिया फाटि न मोरि ॥ अब छिन छिनहिं करेजवा उठत मरोरि ॥ २८ ॥ बूड़ि मरै बरु हेली समुद मँझार ॥ बिरह कलेश न डारै कहुँ करतार ॥ २९ ॥ लाय भसम बरु देहिया बसै पहार ॥ प्रीतम के बिछुरनिया होय न पार ॥ ॥ ३० ॥ दुख चाहै सो विधिना दे भरपूर ॥ पै अँखियन ते मितवहि करै न दूर ॥ ३१ ॥ प्रीतम साथ सहेली बनहुँ सुहाय ॥ उन बिन सून सदनवां विपिन लखाय ॥ ३२ ॥ बोली एक सुनारी सपना मोर ॥ लखे आज जनु आये राजकिशोर ॥ ३३ ॥

बोली इक कुवना पर बैठो काग ॥ कहु साँची यह देहौं तुहि बलि-भाग ॥ ३४ ॥ काग कनकके पिंजरा राखौं तोहिं ॥ जुपै सगुन यह साँचो तेरो होहि ॥ ३५ ॥ जस हमारहैं जियरा उन महँ लाग ॥ तस मित ऊकर ह्वैहै कहुरे काग ॥ ३६ ॥ कोऊ कहैं सखि बूझिय गणक बुलाय ॥ किते दिवस महँ ऐहैं अब रघुराय ॥ ३७ ॥ वामनैन द्वै दिनसे फरकत मोर ॥ आय काग शुभ बोलिया बोलत भोर ॥ ३८ ॥ सखिरी नीक सगुनवाँ अब नित होहि ॥ जानि परै अस प्रीतम मिलिहैं मोहि ॥ ३९ ॥ इहि विधि निशि दिन सब तिय सुमिराहिं श्याम ॥ अवधि आश मग निरखैं सिगरी वाम ॥ ४० ॥

म० ॥ तुलसीकृत रामायणे अयोध्याकांडे ।

चौ०—सीता लषण सहित रघुराई ❀ ग्रामनिकट जब निसरहिंजाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृह काज बिसारी ॥
नारि सनेह बिकल सब होहीं ❀ चकई सांझ समै जनु छोहीं ॥ १ ॥

इत्यादि ।

इति श्री० रा० र० वि० वि० ग्रामवधूस्नेहकथन-
वर्णनो नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

दोहा—उत इहि विधि मगवासिनी, हिय सुमिरैं नित श्याम ॥
छिन छिन तिनकी प्रीति इत, सदा सराहत राम ॥ १ ॥
सिया लषण रघुवर मुदित, पहुँचे जाय प्रयाग ॥
मज्जन करि बहु मुनिनतें, मिले सहित अनुराग ॥ २ ॥
भरद्वाज ऋषि दरशलहि, भये परम आनंद ॥
तहँ तें चलि न्हाये तिहूँ, कालिंदी सुखकंद ॥ ३ ॥
दोउ बंधु पुनीत मृग, लाये खेलि अहेर ॥
नित्य कृत्य पुनि अशन करि, चले मुदित निहुँफेर ॥ ४ ॥

म० वाल्मीकीय अयोध्याकांडे सर्गे ॥ ५५ ॥ श्लोक ।

क्रोशमात्रं ततो गत्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥
बहून्मेध्यान्मृगान्हत्वा चेरतुर्यमुनावने ॥ १ ॥

दोहा—वाल्मीकि आश्रम निरखि, लहा परम आनंद ॥
आय भोग नायो मुनिहिं, सिया लषण रघुनंद ॥ ५ ॥

वाल्मीकि लखि मुदित ह्वै, तिहुँ शुभ आशिष दीन ॥
यथा उचित सत्कार बहु, प्रीत सहित मुनि कीन ॥ ६ ॥
पुनि कर जोरि निहारिकै, मुनिसन बूझी राम ॥
नाथ रजायसु दीजिये, वास करौं किहि ठाम ॥ ७ ॥
वाल्मीकि मुनि मुदित ह्वै, बोले मंजुल बैन ॥
राम तिहारे वासु हित, अमित अनूपम ऐन ॥ ८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मनमें मुनीनके कवीनके सुबैननमें नेहिनके नैननमें प्रानमें पुरारीके। अवधनिवासिनके मिथिलाविलासिनके परम उपासिनके सत्यव्रत धारीके॥ज्ञानी गुणवंतनके सज्जन अनंतनके साँचे शुचि संतनके परउपकारीके । राम अभिराम सीता लषण समेत सदा हृदय निवास करौ रसिकविहारीके ॥ ९ ॥ सकल सुपास पास वास मुनि मंडलीको लायक विलास थलदायक हुलासको । कंद मूल सरस अतूल फल फूल मृग सरिता विशाल गिरि विपिन विकासको ॥ रसिकविहारी सो निहारी छवि भारी ताहि भावैंना अनूप रूप अमर निवासको । चित्रकूट विशद विचित्र है पवित्र तहां ठाम अभिराम राम रावरे निवासको ॥ १० ॥

चौ०सुनि वरबैन मुनिहि शिरनाई ❀ चले बंधु सिय युत रघुराई ॥
आये चित्रकूट छवि हेरी ❀मुदित फिरे गिरिवर चहुँ फेरी ११
पुनिह्नि परणकुटी वर भारी ❀ लषण लाल निज हाथ सवारी ॥
सो लखि राम कही हुलसाई ❀ शाल प्रतिष्ठा उचित सदाई १२
सो सुनि लषण कृष्ण मृगलाई ❀ विधि युत पल साकल्य बनाई ॥
तब रघुवर जपि मंत्र प्रमाना ❀ कीनो हवन समेत विधाना १२

प्र० । वा० । अ० का० स० ५६ ॥ श्लो० ।

ऐणेयमांसमाहृत्य शालां यक्ष्यामहे वयम् । कर्तव्यं वास्तुशमनं सौमित्रे चिरजीविभिः ॥ २ ॥ भ्रातुर्वचनमाज्ञाय लक्ष्मणः परवीरहा । चकार च यथोक्तं हि तं रामः पुनरब्रवीत् ॥ ३॥ अयं सर्वसमस्तांगः श्रितः कृष्णमृगो मया। देवता देवसंकाश यजस्व कुशलो ह्यसि ॥ ॥ ४ ॥ बभूव च मनोह्लादो रामस्यामिततेजसः । वैश्वदेवबलिं कृत्वा रौद्रं वैष्णवमेव च ॥ ५ ॥ इत्यादि ।

चौ० इमि विधियुत करि शालप्रतिष्ठा ❀ दशरथसुत रघुवर धरमिष्ठा ॥
येक कुटी मधि सिय रघुवीरा ❀ इकमहँ रहे लषण रणधीरा १४॥
राम आगमन सुनि सब धाये ❀ मुनि मुनितिय लखि हिय हुलसाये
इहिविधि चित्रकूट मधिरामा ❀ कियो वास लखि थल अभिरामा १५
सेवा करैं लषण चित लाई ❀ सुखी परस्पर प्रीति सदाई॥
वसे राम लछमन वन जबते ❀ निर्भय भये देव मुनि तबते १६॥

दोहा–चित्रकूटवासी सकल, जेते जड चैतन्य।
तिन सराहि सुर कहत हैं, धन्य धन्य ये धन्य ॥ १७ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० चित्रकूटनिवास
वर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दो०–चित्रकूट उत राम सिय, लखि सब भये निहाल।
इत कौशलपुर शोक वश, विलपत सकल विहाल॥ १॥
अवधनिवासी नारि नर, निशिदिन करत विलाप।
राम लषण सियके विरह, सबके उर संताप ॥ २ ॥
कहत परस्पर वैन सब, विरह विवश बहु दीन।
हाय लषण सिय राम हम, काहे संग न लीन ॥ ३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सोचत हिये में सवै रसिकविहारी यहै काननमें येते दिन कैसे वे बिताय हैं। संग सुकुमारी तिय देखि मृगराजको अतिही सशंक है कै जिय बिलखाय हैं॥ कंटक समेत बाट चलि हैं उघारे पाँय ताहू पै विरस कंद मूल फल खायहैं। जो सुमन सेज पै रहत दिन रैनिहुते तेई सिय राम अब साथरी बिछायहैं ॥ ४ ॥

दोहा–इहि विधि कोशल नगरमें, छायो चहुँ संताप ॥
जड चैतन सब करत अति, राम विहीन विलाप ॥ ५ ॥
अवधनगर चहुँ ओर महि, लगत भयावन घोर ॥
जित तित विलपत नारि नर, हाय राम करि शोर ॥ ६ ॥
लाज शोक वश सचिव पुर, आये रैनि निहारि ॥
धाये चहुँ दिशि ते विकल, रथ विलोकि नर नारि ॥ ७ ॥

लखि स्यंदन सूनो सबै, गिरें धरणि करि हाय ॥
सचिव वेगि नृप सदनमें, जाय गहे प्रभु पाँय ॥ ८ ॥
दशरथ निरखि सुमंतको अतिही उठे उताल ॥
बूझे गदगद कंठ कित, सिया लषण रघुलाल ॥ ९ ॥
सुनि सुमंत वहु विकल ह्वै, कहे वैन विलपाय ॥
लषण सीय संयुत वनहिं, गये राय रघुराय ॥ १० ॥
निज विनती उत्तर तिहूँ, गुह मिलि उतरन गंग ॥
सकल यथारथ समय सम, वरणो सचिव प्रसंग ॥ ११ ॥
राम लषण सिय वन गमन, जव दृढ सुनो नरेश ॥
गिरे भूमि मूर्छित विकल, वाढो विपुल कलेश ॥ १२ ॥

चौ०-हाय राम सिय लषण पुकारी ❋ रुदन करत नृप आरत भारी ॥
सुनि कौशलां आदि वहु रानी ❋ धाय आय पति पद लपटानी १३
ताछिन प्रेम विवश महि पाला ❋ कहे कौशलहि वचन विहाला ॥
दीनी तापस अंध जु शापा ❋ सोफल मोहिं सत्य अव व्यापा १४॥
हौं अहेरहित रैनि मझारी ❋ सरयू तीर हुतो पदचारी ॥
ताछिन इक तापस सुत आयो ❋ कुंभ नीर पूरण चित लायो १५॥
जल पूरत घट शव्द सुनो मैं ❋ करि केहरि ध्रुव हीय गुनो मैं ॥
शव्द वेध करि शर तिहि मारा ❋ गिरो धरणि सो विकल पुकारा १६॥
मातुप गिरा सुनत हौं धायो ❋ जाय निकट गहि वेगि उठायो॥
लखि तापस सुत वचन उचारा ❋ विन अपराध मोहिं किमि मारा १७
मो पितु मातु दुहूं दृगहीना ❋ वसत सदा कानन तप लीना॥
तिन हित नीर भरन मैं आयो ❋ वृथा नृपति मो प्राण नशायो १८॥
तव हौं कहे वचन अति दीना ❋ विन जाने यह पालक कीना ॥
यौं कहि तिहि तनुते शर काढो ❋ तजो प्राण सो दुख लहि गाढ़ो १९
हौं तिहि निरखि महादुख छायो ❋ ले पूरित घट वेगि सिधायो ॥
जाय नीर धरि सव गति वरनी ❋ सुनतहिं गिरे रुदित दुहुँ धरनी २०

दोवई छंद ।

पुनि दुहुँ विलपत कही मोहिं दूत लैचल सुतके पासा ।
हौं तिन कंध राखि तहँ लायो अतिहीं दुखित हिराशा ॥

दुहुँ पितुमातु पुत्र कर परसो वरदे शुभ गति कीनी।
पुनि रचि चिता बैठि तिहि ऊपर घोर शाप मुहि दीनी॥२१॥
कही दुहू ज्यों हम तनु त्यागें पुत्र दुखित इहि काला।
त्यौंहीं सुत वियोग वश तेरो मरन होय महिपाला॥
दै इमि शाप दुहूँ तनु जारो देवलोक सो पायो।
भई सिद्धि सो शाप राम बिन मृत्युसमैं अब आयो॥२२॥

प्र०॥ वा०॥ अ० का०॥ स०॥ ६४॥ श्लोक।

पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम साम्प्रतम्॥
एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि॥ १ ॥ इत्यादि॥

चौ०-यौं कहि भूपति अति अकुलाई ❀ बोले दीन नेह उरछाई॥
राम मात मम उर कर धारो ❀ लखि न परत मुहि वदन निहारो२३॥
अंतसमै अब मो मुख देखो ❀ हाय न मैं टुक तुव मुख पेखो॥
रघुवर दरश हेतु सब रानी ❀ तनु रखियो मम आयसुमानी२४॥
यौं कहि नृपति विकल ह्वै भारी ❀ हाय राम सिय लषण पुकारी॥
रुदन करत आरत रवघोरा ❀ आये धाय सकल सुनि शोरा२५॥
गुरु द्विज सचिव विविध पुरवासी ❀ सेवक सखा दासअरु दासी॥
सब निजमति अनुसार बुझाई ❀ कहि सुगाथ बहु धीर धराई॥२६॥
अवध नाथ कछु उतर न देहीं ❀ हाय राम कहि हिलकिन लेहीं॥
लखि नरेशगति विलपति रानी ❀ यौंहीं निशि द्वैयाम विहानी॥२७॥
ताछिन दशरथ नृप अकुलाई ❀ उठे विकल चितवत चहुँधाई॥
नैननते रंचहु कछु सूझै ❀ विहवल विलपि विलपिबहु बूझै॥२८॥
कहाँ राम लछमन वैदेही ❀ हाय कहाँ सुत परम सनेही॥
यौं कहि धरणी गिरे विहाला ❀ प्राण कंठगत भये नृपाला॥ २९॥

दोहा—हाय प्राणप्यारे सुवन, हा मम प्राण अधार॥
पुत्र वधू हा लाडिली, हाय लषण सुकुमार॥ ३०॥
कहाँ लषण सीता कहाँ, कहाँ राम रघुचंद॥
यौं कहि दशरथ तन तजो, लहो परम आनंद॥ ३१॥

चौ०—भूपति मरन देखि सब रानी ❀ घोर शोर करि अति बिलपानी॥
गारी सकल कैकयिहि देही ❀ कहैं लियो जिय पापिनी येही ३२
सकल नारि नर करत पुकारा ❀ रुदन छयो चहुँ नगर मँझारा॥
यौं बिलपत सब रैनि सिरानी ❀ समुझायो बहु गुरु वरज्ञानी॥३३॥
नृप तनु हेत जतन करि भारी ❀ सो धरि राखो तेल मँझारी॥
पुनि वसिष्ठ वर दूत बुलाये ❀ जाहु भरत ढिग वेगि सिखाये ३४॥
जनि भरतहि कछु हालसुनैयो ❀ मम आज्ञा कहि वेगहि लैयो॥
यौं सिख दै द्रुत दूत पठाये ❀ अति उताल सो चरवर धाये ३५
उतै रैनिमाधि होत सवारो ❀ स्वप्न अशुभ अति भरत निहारो॥
उठि नृप सुवन सोच बहु कीनो ❀ भूरि दान विधि संयुत दीनो॥३६॥
ताछिन दूत भरत ढिग आये ❀ दे पत्री गुरु वचन सुनाये॥
सुनि दुहुँ बंधु अधिक अकुलाई ❀ चले वेगि मिलि विदा कराई ३७॥
आये अवध लगो भयकारी ❀ निरखि बंधु दुहुँ भये दुखारी॥
वेगि जाय जननी पग लागे ❀ बूझे राम पितहि अनुरागे॥ ३८॥
कैकेयी सुत अंक लगाई ❀ निज करणी सब मुदित सुनाई॥
सुनत भरत रिपुहन दुहुँ भाई ❀ गिरे भूमि मूर्छित बिलपाई॥ ३९॥

दोहा—हा कुमात हा मात वर, हाय भ्रात हा तात॥
बहु बिलाप करि बंधु दुहुँ, सोक विकल बिललात॥ ४०॥

चौ०—यौं बिलपत दुहुँ राजकुमारा ❀ कहि कुमात कटु वचन अपारा॥
ताही छिन सो परी दिखाई ❀ किये शृंगार चित्त हरषाई॥ ४१॥

घनाक्षरी—कवित्त।

दासी कैकयी की मति नासी मंथरा जो ताहि शत्रुहन देखी भई रंचहू नदूवरी। धाय वर जोरी केश धारि झकझोरी गहि रसना मरोरी कहि दीनी सीख खूबरी॥ फोरे त्यों कपोल दंतझारे दलिडारे अंग भाँप रोप धारे मातु मंत्री तु अनूबरी। कूबर सुट्यो शीश फूटो पै न प्राण छूटो ऐसी मारिलातन लथोरी डारी कूबरी॥ ४२॥

दोहा—करत हाय बिल्लाय सो, प्राण कंठगन आय॥
तिय अवध्य लखि भरत तिहि, दीनी वेगि छुड़ाय॥ ४३॥

तहँ ते विलपत बंधु दुहुँ, राम मात ढिग जाय ॥
धाय गहे पद कौशला, निरखि लिये उर लाय ॥ ४४ ॥
जननी सुत दुहुँ परस्पर, प्रेम शोक वश होय ॥
करत विलाप विहाल बहु, धीरज धरे न कोय ॥ ४५ ॥
सकल मातु तब सुतनको, समुझाये हिय लाय ॥
कछुक धीर धरि के भरत, कही सत्य सकुचाय ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

गाय द्विजमारे तिय बालक सँहारे गुरु स्वामी अपचारे झूठ वचन उचारेते। माता सुता भगिनी कुदृष्टिते निहारे मित्र दोह उर धारे शरणागत निकारेते ॥ सत्य प्रण टारे निज धरम निवारे निंदा पिशुन प्रचारे परनारी धन हरेते। होवैं पाप भारे मोहिं लागैं मातु सारे राम बनहि सिधारे जोपै संमत हमारे ते ॥ ४७ ॥

चौ०-सुनत शपथ जननी हिय लाये ❀ कहि मृदु वचन भरत समुझाये
पुनि करि सौंह कौशलाबोली. ❀ मुहि प्रतीति तुव मति नहिं डोली४८
भरत आगमन सुनि सब धाये ❀ गुरु मंत्री पुर परिजन आये ॥
दुहुँ बंधुन बहु विधि समुझाये ❀ भूप क्रिया हित साज सजाये४९
पुर पूरब सरयू तट जाईं ❀ मृत्युक्रिया सब करी तहाँई ॥
सब कृत हित प्राचीन सुठामा ❀ जहँ शिवधाम बिल्व हरि नामा ५०
उचित कर्म पुनि सहित विधाना ❀ कीने भरत अमित विधि नाना॥
भये पुनीत वेद कुल माने ❀ तब ज्ञातीन सकल सनमाने ५१॥

दोहा-लोक वेद कुल रीतिमय, जिमि गुरु आयसुदीन ॥
भरत उदार सप्रीति तिमि, तात कर्म सब कीन ॥ ५२ ॥

इतिश्री० रा० र० व० वि० राजादशरथदेहत्याग-
वर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा-नृपति कर्म ते सुचित लखि, सब मिलि कियो विचार ॥
राजतिलक अब भरतको, कीजे समय निहार ॥ १ ॥

चौ०गुणि गुरु सचिव सुजन बहु आये ❀ सभामाहिँ दुहुँ बंधु बुलाये॥
सब कथा सकल अभिलाषी ❀ राजतिलक हित भरतहि भाषी २

सुनि वर वचन भरत शिर नाई ❀ गुरुहि जोरि कर विनय सुनाई॥
मो रुचि यह प्रभु सहित समाजा ❀ चलौं राम दरशनके काजा ॥३॥
पद परि निज अपराध क्षमाई ❀ सिया सहित आनौं दुहुँ भाई ॥
पुनि रघुवरहि तिलक प्रभु कीजे ❀ वेगि नाथ यह आयसुदीजे॥४॥
पुनि इक औरहु मो रुचि नाथा ❀ तिलक साज लीजे सब साथा॥
ह्वै अभिषेक उतहिं पुनि आवैं ❀ सहित राज श्री बहु छवि छावैं५॥
भरत वचन सुनि सब हुलसाने ❀ धन्य धन्य करि अमितबखाने॥
प्रमुदित ह्वै गुरु आयसुदीनी ❀तिलकसौजसारी संग लीनी॥६॥

दोहा–देश कोश गृह धर्मको, उचित प्रबंध सुठान॥
बहुरि चित्रकूट हि भरत, कीनो वेगि पयान ॥ ७ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, गुरु मंत्री सब मात ॥
भरत संग गवने सकल, चित्रकूट कहँ जात ॥ ८ ॥

चौ०-नृपसुत सदल गंग तट आये ❀ सुनि गुहसैन साजि उठिधाये ॥
जानो भरत राजमदछाये ❀समर करन हित वेगि सिधाये९॥
आय निषाद भरत गति देखी ❀ हृदय भयो आनंद विशेखी ॥
करि सतकार उतारे पारा ❀ चलो संगले सुभट अपारा१०॥
पहुँचे भरत प्रयाग नहाये ❀ पुनि मुनि भरद्वाज ढिग आये॥
उचित प्रणाम ऋषिहि सब कीने ❀ मिले परस्पर आदर दीने ॥११
पुनि मुनि करी सकल पहुनाई ❀ सो अनूप अति वरणि न जाई॥
एक भरत बिन सब नरनारी ❀ऋषिसतकार लहो सुख भारी१२
प्रात होत मुनिपद शिरनाई ❀ चले भरत रिपुहन दुहुँ भाई ॥
अवध विहाय उठे जब हीते ❀ नृप सुत राम रटत तबहीते १३
मारग बिन पदत्रान सिधावें ❀ सो लखि गुरु जननी समुझावैं॥
तिन रजाय वश बैठे स्यंदन ❀ चालि कछु पुनि उतरें नृपनंदन१४
कबहूँ राम विरह संतापा ❀ बैठि पंथ बहु करत विलापा ॥
कबहुँ भूमि परि करहिं प्रणामा ❀ टेरत कबहुँ हाय सियरामा १५
कंद मूल फल करहिं अहारा ❀ भवन त्यागि दीनो सुखसारा ॥
मलिन वसन तनु छीन दुखारी ❀ सो लखि बिकल सकल नरनारी१६

भरत प्रीति निरखी सुरराई ❀ बोले गुरुहि हृदय अकुलाई ॥
जो रघुवर फिरि अवध सिधारे ❀ वनेकाज पुनि बिगरैं सारे॥१७॥
सुनि गुरु कही सोच जनि करहू ❀ राम प्रतीत प्रीति उर धरहू ॥
जो रघुवर भरोस दृढ राखैं ❀ तिनकी सब पूजैं अभिलाषैं१८॥
सुनि गुरु बचन अमर हरषाने ❀ देवराज आनंद अघाने ॥
इत आतुर अति भरत सिधाये ❀ वेगहि चित्रकूट नियराये १९॥
ताही निशि सिय स्वप्ननिहारो ❀ आयो अवधनगर जनु सारो॥
दुहुँ नृपतनय सकल महरानी ❀ देखी मलिन शोक दुखसानी२०
उठि अकुलाय कहो सब रामैं ❀ सुनि दुहुँ बंधु भये करुणामैं ॥
पुनि रघुवर उताल नितकर्मा ❀ किय सिय बंधु सहित निजधर्मा२१
ताछिन गगन धूरि बहु छाई ❀ लखि बंधुहिं बोले रघुराई ॥
तरु चढि लछमन वेगि निहारो ❀ कहा हेतु सो समुझि उचारो२२
देखी लषण शाल चढि जानी ❀ पहिचानी सब अवध निसानी॥
धाये भरत लग्न अनुमाने ❀ आय लषण द्रुत गहिधनुवाने २३
रामहि कही रोष हिय लाई ❀ आवत भरत साथ कटकाई ॥
सुनि रघुनाथ बंधु समुझाये ❀ भरत शील गुण सकल सुनाये२४
तौ लग बहु वनचर नर आये ❀ रामहि भरत चरित्र सुनाये ॥
बंधु आगमन सुनी रघुबीरा ❀ हर्ष शोकवश धरैं न धीरा॥२५॥
उत लखि चित्रकूट अभिरामा ❀ भरत भूमि परि कियो प्रणामा॥
परण कुटी दूरहि ते देखी ❀ छाई हृदय गलानि विशेखी२६
समय निहारि धीर उरधारी ❀ चले वेगि दुहुँ बंधु दुखारी ॥
आये परण कुटी ढिग धाये ❀ निरखि रामपद परि विलपाये२७
उठि रघुवीर बंधु दुहुँ भेटे ❀ कहि वर वचन सोच बहु मेटे ॥
पुनिनृपसुताकियासियहि प्रणामा ❀ मिले लषण धनु शरकर वामा२८
तौ लग सकल लोग तहँ आये ❀ निरखि राम लोचन जलछाये॥
दुहू बंधु गुरु सिय पद परसे ❀ सचिवसखा सेवक हित सरसे२९

दोहा—यथा उचित सन्मानि सब, राम लषण अरु सीय ॥
सकल महारानीनके, चरण गहे लगि हीय ॥ ३० ॥

मातु सुमित्रा कौशला, विलपति करि करि प्यार ॥
राम लपण सियको हृदय, लाय लाय बहु वार ॥ ३१ ॥
यौं सिय रघुवर लषण मिलि, हरपो सकल समाज ॥
पिता कुशल बूझी गुरुहि, द्रुत सप्रेम रघुराज ॥ ३२ ॥
सुनि वसिष्ट जल नैन भरि, बोले हिय विलपाय ॥
तुव वियोग तजि अवध नृप, वसे देवपुर जाय ॥ ३३ ॥
राम लपण सिय गुरु वचन, सुनत गिरे मुरझाय ॥
हाय तात हा नाथ कहि, रुदन करत अकुलाय ॥ ३४ ॥
सचिव सखा गुरु मात तिहुँ, समुझाये कहि वैन ॥
आये तट मंदाकिनी, न्हाय भरे जल नैन ॥ ३५ ॥

चौ०-अपर क्रिया विधिवत सब कीनी ❀ मौनरहे रघुवर दिन तीनी ॥
चौथे दिवस जुरे सब आई ❀ बोले गुरुहि राम सकुचाई ॥ ३६ ॥
कृपासिंधु वन सकल दुखारी ❀ जिते अवधवासी नर नारी ॥
याते भरत सहित लै साथा ❀ कौशलपुर पधारिये नाथा ॥ ३७ ॥
सुनि गुरु कही श्रमित सब लोगा ❀ पुनि व्याकुल तुव दुसह वियोगा
याते कछु दिन रहि रघुराई ❀ फिरि सुहोय जो देव रजाई ॥ ३८ ॥
इहि विधि चित्रकूट सब रहहीं ❀ रामहि लखि आनँद अति लहहीं ॥
सर सरिता गिरि वन चहुँ फेरें ❀ राम चरण अंकित थल हेरें ३९
चित्रकूट मिथिलाधिप आये ❀ मिले परस्पर बहु सुख छाये ॥
सिय लखि हरप शोक अधिकाई ❀ पित जननी गहि हृदय लगाई ४०
मिथिला अवध प्रजा नर नारी ❀ जुरे भई चहुँ भीर सुभारी ॥
चित्रकूट महँ बहु दिन बीते ❀ रहत सकल सानंद सप्रीते ॥ ४१ ॥
सचिव सखा गुरु सकल समाजा ❀ पुरपरिजन मिथिला महराजा ॥
युत मर्याद दुहूँ रनिवासा ❀ बैठी सभा विशद चहुँ पासा ॥ ४२ ॥
तब वसिष्ट बोले मृदुवानी ❀ नीति सुधर्म मर्म अनुमानी ॥
सुर नर तुव आज्ञा अभिलापी ❀ राम चहिय सबकी रुचि राखी ४३ ॥
तुम पितु वचन मानि वन आये ❀ अब नृप भरत लिवावन आये ॥
याते करहु सुराज विचारी ❀ जिहि सुर नर सब होहिं सुखारी ४४

सुनि वर वचन राम कर जोरे ❀ गुरु पद पंकज वंदि निहोरे॥
रहै मोर जिमि धर्म दयाला ❀ सोई सवहि उचित इहिकाल४५

दोहा—सुनि रघुवर वाणी कही, भरत जोरि दुहुँ हाथ॥
है अधर्म मम माथ सव, अवध सिधारिय नाथ॥ ४६॥
पुनि कर जोरि निहोरि कै, कहौं विनै यह मोरि॥
प्रभु दिशि ते वन जाउँ मैं, चलिये अवध वहोरि॥ ४७॥
येही विनती विविधविधि, करी भरत दुहुँ भाय॥
सचिव सखा नृप मातु सव, अमित कही समुझाय॥ ४८॥
राम सकोची धर्म घर, सोच विवश तिहिकाल॥
दियो न उत्तर काहु कछु, तव गुरु कही कृपाल॥ ४९॥
सुनहु राम नृप भरत सव, रहे जाहि विधि धर्म॥
निज हठ स्वारथ लाज ताजि, याछिन उचित सुकर्म॥५०॥
सुनि कौशिककै वचन वर, वोले रघुकुल चंद॥
कहौं शपथ करिकै वचन, सुनै सकल सानंद॥ ५१॥
धर्म नीति ज्ञाता इतै, मिथिला अवध समाज॥
चित्रकूट शुचि पुण्यथल, जुरी सभासद आज॥ ५२॥
गुरु द्विज मंत्री मातु नृप, भरत एक मत होय॥
जो कछु भाषैं सकल मिलि, सत्य करौं मैं सोय॥ ५३॥
राम शपथ सुनि देव सव, अकुलाने वहु हीय॥
सवहि मनाये मनहिमन, प्रेरि शारदा जीय॥ ५४॥
रहे मौन ह्वै सकल तव, करि हिय धर्म विचार।
वोले भरत प्रवीन पुनि, वचन समै अनुसार॥ ५५॥
अवधराज मुहि पित दियो, मैं निज दिशिते देत॥
यामें कछू अधर्म नाहिं, सोऊ नाथ न लेत॥ ५६॥
अव हौं किमि धीरज धरौं, तुव वियोग रघुराय॥
होवै जिमि अवलंव मुहिँ, सो प्रभु देहु रजाय॥ ५७॥
तव प्रमुदित ह्वै राम निज, चरणपादुका दीन॥
करि प्रणाम सो प्रीति युत, भरत शीश धरि लीन॥ ५८॥

सबहि उचित मिलि प्रेम युत, सिया लषण रघुवीर ॥
विदा किये समुझाय पुनि, हिय धराय बहु धीर ॥५९ ॥
भरत कही जो अवधिते, येकहु दिन अधिकान ॥
प्रण करि भाषौं शपथ युत, तौ न राखि हौं प्रान ॥ ६० ॥
मधु सित दशमी पुण्य गुरु, दिन अभिजित मध्यान ॥
सिया लषण युत अवधते, कीनो नाथ पयान ॥ ६१ ॥

प्र० वा० अ० कां० स० ३ श्लोक ।

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः ॥
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम् ॥ १ ॥

तत्रैव पुनः स० ॥ ४ ॥

श्वएव पुष्यो भविता सोभिषेच्यस्तु मे सुतः ॥
रामो राजीवपत्राक्षो युवराज इति प्रभुः ॥ २ ॥

पुनः सुन्दररामायणे अयोध्याकांडे ।

मधुशुक्लदशम्यां च मध्याह्ने गुरुवासरे ॥
मेषांशौ द्वौ गते भानौ रामो गच्छति काननम् ॥३ ॥ इत्यादि.

दोहा–तादिन बीते अंश जे, मेष भानुके जान ॥
हौं गनिलैहौं वर्ष मनु, ध्रुव संक्रांति प्रमान ॥ ६२ ॥
राम कहा तब जिहि दिवस, चौदह वर्ष करार ॥
पूँज तिहिदिन देखियो, ध्रुव मुहि अवध मझार ॥ ६३ ॥
भ्रात वचन दृढ सुनि भरत, चले अवध शिरनाय ॥
दुहुँ समाज संयुत सकल, पुर परिजन समुदाय ॥ ६४ ॥
चित्रकूट महिमा अमित, भरत सराहत जात ॥
रघुवर पद अंकित सुथल, ध्यावत हिय हुलसात ॥ ॥ ६५॥
हर्ष शोक वश नारि नर, छिन सुख छिन दुख पाय ॥
जनक भरत संयुत सकल, पहुँचे अवधहि आय ॥ ६६ ॥
कछुक दूरि पुर बाहिरे, नंदिग्राम अभिराम ॥
वर विचार करि भरत तहँ, रहे निरखि शुचिठाम ॥ ६७ ॥
रामपादुका शुभ समय, सिंहासन पधराय ॥
भरत कियो मुनि भेष निज, सब सुख साज बिहाय ॥ ६८ ॥

द्वादश दिन तितही रहो, मिथिला अवध समाज ॥
पुनि बहु गुरुहि अभार दे, गये जनक महराज ॥ ६९ ॥
जौ लग रहे विदेह नृप, रानी सहित प्रवीन ॥
तौ लग कमलानीर तजि, अशन पान नहिं कीन ॥ ७० ॥
पुर परिजन इत अवधमें, लियो सत्यव्रत ठान ॥
राम दरश विन भोग सुख, सकल तजे दुखमान ॥ ७१ ॥
भरत महल रनिवास सव, भेजो रिपुहन संग ॥
गुरु सचिवहि सौंपे उचित, काज वखानि प्रसंग ॥ ७२ ॥
यथायोग इहिविधि भरत, कीनी सकल सम्हार ॥
राम पाँवरी निकट सव, राजसाज अधिकार ॥ ७३ ॥
पूजत भरत सुपादुका, करत निवेदित काम ॥
फल अहार मुनि वेपनित, निशिदिन सुमिरत राम ॥ ७४ ॥
देश कोश सेवक प्रजा, न्याय धर्म सव काज ॥
सुनत गुनत निरखत सदा, भरत सुपालत राज ॥ ७५ ॥
महि मंडल चहुँ ओर सव, प्रमुदित प्रजा सुकाल ॥
नीत धर्म लखि कहत जन, जै जै अवध भुवाल ॥ ७६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दूजो गुरु ज्ञाताना वसिष्ठ वामदेव ऐसो सचिव सुमंत सम स्वामि सुखदाताना ॥ दशरथ राज सो न ताता दृढ प्रीति वारो रामसो सुपुत्र है जहान धर्म त्राताना ॥ कौशला सुमित्रासी न माता है विवेकी पुनि सीतासी सुतीय कहूँ पति अनुराताना ॥ रसिकविहारी नेहकारी नीतिधारी सत्य काहू ठौर भरत समान और भ्राताना ॥ ७७ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० राम भरत संवाद-
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा—राम राम नित रटत उत, भरत वरणि गुणग्राम ॥
भरत भरत सुमिरत भरत, छिन छिन दृग इत राम ॥ १ ॥

चौ०-चित्रकूट सिय लषण समेता ॐ बसैं राम मुद परण निकेता ॥
गिरि कानन सर सरित निहारी ॐ विहरत सिय युत अवध विहारी२
कबहुँ सुमन लाय रघुराई ॐ भूषण बसन विचित्र बनाई ॥
निज करते प्यारिहि पहिरावैं ॐ छबिनिहारि आनंद बढावैं ॥ ३ ॥
कबहूं फटिक शिला पर राजैं ॐ अंगराग करि सियतन साजैं ॥
विविधरंग मृदुरज शुचि आनी ॐ सारैं तिलक प्रिया रुचि जानी॥४॥
कबहूँ सिय पंकज मृदु लाई ॐ सेज रचैं वर विशद सुहाई ॥
तापर प्राण पतिहि बैठारैं ॐ निज अंचलते पवन सुढारैं ॥ ५ ॥
कबहुँ कीट कुंडल धनुबाना ॐ विरचैं सिय प्रसूनमय नाना ॥
निज करते प्रीतमहि सुधारैं ॐ करि करि प्यार लेहिं बलिहारी ॥६॥
कबहुँ लषण कलिका मृदु लावैं ॐ नूपुर अनुपम रुचिर बनावैं ॥
सो स्वामिनि चरणन पहिरावैं ॐ निरखि राम आनंद अघावैं ॥ ७ ॥
कबहुँ सुमनदल लछमन लाला ॐ रचैं पादुका विमल विशाला ॥
रघुवर पदसनेह युत धारैं ॐ कबहुँ प्रसून विजन सजि ढारैं ॥ ८॥
लषणहि दंपति युत अहलादा ॐ देहिं सुभूषण बसन प्रसादा ॥
इहि विधि तिहुँ अपार सुख लहहीं ॐ प्रीति परस्पर प्रमुदित रहहीं॥९॥
कबहुँ राम ढिग मुनिगण आवैं ॐ कबहुँ मुनिनके निकट सिधावैं ॥
कबहूं ऋषितियऋषि सियपाहीं ॐ पति रुचि लखिनिजसंग लैजाहीं१०
कबहुँक वनवासी नर नारी ॐ लै फल मधु मग सौंज सुधारी ॥
आवैं राम सीय पन परहीं ॐ दे सुभेट विनती वर करहीं ॥ ११ ॥
इहि विधि लषण सीय रघुचंदा ॐ चित्रकूट बसि करत अनंदा ॥
जिमि२अवधिवेपचलिजाहीं ॐ तिमि २ देवअधिक अकुलाहीं॥१२॥
एक समय सुरपति सुत आयो ॐ नाम जयंत कागतनु लायो ॥
सिय उर हति निज तुंड पराने ॐ रघुवर कपट भेष पहिचाने॥१३॥
सिय हिय रुधिर देखि रघुबीरा ॐ तापर तजो कुपित तृणतीरा ॥
भागि तिहुँपुर सुगयो सब पासा ॐ कहुँ न बचो तब होय निरासा१४॥
राम चरण परि शरण पुकारे ॐ तब दयालु निहि प्राण निवारे॥
इकटग विन करि बायस त्यागो ॐ भागो पितु गृह विकल अभागो१५

एक समै विधि इंद्र विचारी ❀ रावण वध सुधि राम बिसारी ॥
याते चलि कछु युक्ति रचाई ❀ बेगहि चाहिय सुरति कराई१६
यों बिचारि दुहुँ शिव ढिग जाई ❀ निज उरकी अभिलाप सुनाई ॥
सुनि बोले शंकर वर ज्ञानी ❀ वृथा दोउ भ्रम वश यह ठानी॥१७॥
राम वेगि दशमुख वध करिहैं ❀ भूमि भार सुर दुख सब हरिहैं ॥
कछु न शंक मानौ मन माहीं ❀ छल करि जाउ न रघुवर पाहीं१८
सो सुरपति विधि मन नहिं भाई ❀ चले दुहूँ मुनि वेप बनाई ॥
वेगहि चित्रकूट ढिग आये ❀ तहँके चरित विलोकि सकाये१९
देखे अमित भालु कपि ठाढे ❀ गहे युद्ध हित गिरि तरु गाढे ॥
पुनि हेरे तहँ विपुल दशानन ❀ परे भूमि वेधे तनु पानन ॥ २० ॥
सो विलोकि दुहुँ लंक सिधारे ❀ देखो दशमुख बैठ अखारे ॥
तहँ ते चकित चित्त पुनि आये ❀ चित्रकूट सो चरित लखाये२१॥
तब सशंक ह्वै गये सुधामा ❀ बहु विधि इंद्र लखे तिहि ठामा ॥
दोऊ भवन जान नहिं पाये ❀ पुनि ह्वै विकल शंभु ढिग आये२२
कही सकल गति अति अकुलाई ❀ सुनि पुरारितिन धीर धराई॥
पुनि तिहुँ राघव निकट सिधारे ❀ सो चरित्र नहिं कछू निहारे२३
आये देव देखि रघुनाथा ❀ उठे मिले प्रमुदित गहि हाथा ॥
बैठारे करि वहु सतकारा ❀ तब कीनी सुर विनय अपारा ॥२४॥
सुनि बोले रघुवर हरपाई ❀ जाहु भवन निर्भय हुलसाई ॥
वेगि करों अब निश्चर नासा ❀ राखो सत्य मोर विश्वासा ॥ २५ ॥
राम वचन सुनि सुर हरपाये ❀ मिले उचित तिहुँ सदन सिधाये ॥
विधि वासव लखि चरित अपारा ❀ पायो भेद न अमित विचारा२६
इहि विधि द्वादश वर्प विताये ❀ चित्रकूट नित नव सुख छाये ॥
पुनि रघुवर नर इच्छाचारी ❀ तहँ ते गमन हेतु चितधारी२७ ॥

प्र० ॥ अभिवंडरामायणे ॥ श्लोक ।

रामः पंचदशे वर्षे पड्वर्पामपि मैथिलीम् ॥ उपयेमे त्वयोध्यायां द्वादशाब्दानुवासलः ॥ १ ॥ सप्तविंशतिमे वर्षे वनवासमकल्पयन् ॥ अष्टादश तु वर्षाणि सीतायान्तु तदा भवन् ॥ २ ॥ निरात्रमुदका

हारश्चतुर्थेह्नि फलाशनः ॥ पंचमे चित्रकूटे तु रामो वासमकारयत् ॥ ३ ॥ अथ त्रयोदशे वर्षे पंचवट्यां महामना । रामो विरूपयामास घोरां शूर्पणखां वने ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-राम चलत सुनि मुनि गण आये ❀ मिले यथोचित प्रेम बढाये ॥
ऋषिपत्नी सियनिकट सिधारीं ❀ सादर शीश नाय बैठारीं ॥२८॥
मुनि तिय कही सियहि हुलसाई ❀ धन्य जानकी पिय सुखदाई ॥
धन्य पतिव्रत धर्म सदाहीं ❀ जिहि विधि हरि हर सकल डराहीं २९॥
अनसुइयापतिव्रतबलपाई ❀ कह त्रिदेव गति प्रगट दिखाई ॥
सिय बूझी सो बात लजाई ❀ ऋषि तिय कही कछू मुसक्याई ३०

दोवई छंद ।

एक समै मिलि उमा रमा अरु धात्री तीनहुँ नारी।
लखि रहस्य सुर गंगतीर थल भूषण वसन उतारी ॥
मज्जन करत हुतीं तहँ प्रमुदित ताछिन नारद आये।
तिनहिं विलोकि लजाय अधिक तिहुँ तिय निज अंग छिपाये ३१ ॥
सो विलोकि मुनि रिस करि बोले क्यों तुम मोहि न जानी ॥
भई चहतिहो जनु अनसुइया सम पतिव्रता जानी ॥
यों कहि गमन कियो ऋषि तहँ ते पुनि यों तिहुँ ठहराई।
पतिव्रत भंग अत्रि तियको जिमि होय सु रचिय उपाई ॥ ३२ ॥
करि विचार निज निज गृह गवनीं तिहूँ मान बहु ठानो।
विधि हरिहरहि रोप तियको लखि सकल अनंद भुलानो ॥
अमित बार बूझी तब बोलीं और कछू नहिं भाषें।
अनसुइयाको पतिव्रत खंडे तौ हम निज तनु राखें ॥३३ ॥
तिहूँ नारि निज निज पति सों इमि वचन कहे बिलखाई।
रमा उमा ब्रह्मानी बहु विधि हरि हर विधि समुझाई ॥
नहिं मानी तब देव सोच वश इक इक पास सिधारे।
काहू गति कोउ नहिं जानै चले जनन निरधारे ॥ ३४ ॥
भई भेट तिहुँ बीच पंथमें तिहुँ सशोक तिहुँ देखे।
नाथन कछू कहि सके न काहू बदन परस्पर पेखे ॥

पुनि धरि धीर तिहूँ तिहुँ बूझी तिहूँ तिहूँ प्रति वरनी ॥
तिहूँ हीय भो दुखी और सुनि तिहूँ ठौर इक करनी ॥ ३५ ॥
तिहूँ देव ह्वै विवश मंत्र करि यही बात ठहराई ।
पतिव्रत भंग कीजिये तियको कछु छलछंद बनाई ॥
यों विचारि निज निज गृह वेगें जाय सुधीर धराई ।
चले उताल वहुरि तिहि मारग मिले बीच पुनि आई ॥ ३६ ॥
तहां विष्णु विधि शंभु मनुजह्वै अतिथि भेष तिहुँ धारे ॥
सिकताकन लैलये कमंडलु गये अत्रिके द्वारे ॥
ताछिन मुनि नाहिं रहे भवनमें अनसुइया लखि आई ॥
करि प्रणाम लैजाय सबन फल धरे सामुहें लाई ॥३७॥
सो लखि सकल अतिथि यों बोले और न अशन कराहीं ॥
ये हम सिक्ताकन लै आये पक्क होय तौ खांहीं ॥
पैजिहि विधि भाषैं ताही विधि करौ सुभोजन करिहैं ॥
नतरु क्षुधित तिहुँ अत्रि भवनतें निज निज मारग धरि हैं ॥ ३८ ॥
अत्रितिया सुनि वचन मुनिनके भई सोचवश भारी ॥
पक्क होय किहि विधि सिक्ताकन इन नाहिं बात बिचारी ॥
अतिथि क्षुधित जो जाँय द्वारते तो गृहधर्म नशावै ।
इहि विधि कराहिं अनेक जल्पना हिय न कछू ठहरावै ॥ ३९ ॥
पुनि पतिव्रता नारि विचारी जुपै धर्म हौं साँची ।
तौपै पक्क होइगी सिकता रंचरहैं नाहिं काची ।
ह्वै प्रमुदित बोली अनसुइया अतिथि कहा कन दीजे ।
जिहि विधि कहौ पक्क करि आनो रुचिमय भोजन कीजे ॥ ४० ॥
सुनि तिहुँ कही अनल जलबिन कन करमें पक्क बनावो ।
बहुरि नग्न ह्वै निलज हाथ निज भोजन हमें करावो ॥
तब बोली सो अतिथि न भाषौ महा असंभववानी ।
तब सुकर्म मम धर्म रहै जिमि देहु रजायसुज्ञानी ॥ ४१ ॥
पुनि सो तजि तिन और न भाषी तब निज हीय विचारी ।
अतिथि नहीं ये छली कोर हैं यों गुनिकै मुनि नारी ।

पति पद सुमिरि ध्यान शुचि कीनो सकल चरित दरशाये।
जानी विधि हरि शंभु पतिव्रत भंगकरन मम आये॥ ४२॥
तब सुधर्मचारी वर नारी सकल शीश कर फेरे।
भये अयान बालवपु तीनौं लै सुपालने गेरे॥
पुनि ह्वै नम्र लिये कन अंजुलि अनसुइया यों बोली॥
पक्क होय तो यह सिक्ता जों हों पतिधर्म नडोली॥ ४३॥
कहतहिं भये पक्क सिक्ताकन मृदु शुचि शुभ्र सुहाये।
सो निज करते तिहूँ शिशुन मुख दै भोजन करवाये॥
पुनि पट धारि झुलावन लागी ताछिन मुनि गृह आये।
लखि बूझी बालक ये किहिके तिय सब चरित सुनाये॥ ४४॥
मगन भये ऋपि देवचरित लखि मनहीं मन मुसक्याने॥
योहीं शंभु विरंचि विष्णुको वासर सात सिराने।
उमा विधात्री रमा उतै तिहुँ सोच विवश अकुलानी।
पुनि नारद कैलास पधारे त्रिकालज्ञ वर ज्ञानी॥ ४५॥
बोले हँसि मुनीश गिरिजासें लखौ देवतिहुँ जाई॥
पतिव्रता अनसुइया निजगृह राखे बाल बनाई॥
सुनि ह्वै विकल शिवा उठिधाई धात्रिहि सुगति सुनाई॥
दोऊ तिय अकुलाय कही सब सिंधुसुता ढिग आई॥ ४६॥
सोच सकोच विवस तिहुँ वनिता ह्वै जिय निपट हिरासा॥
भूर गरूर दूरधरि गमनी अत्रितियाके पासा॥
आय लजाय धाय ऋपितियके पाँय परीं अकुलाई॥
अनसुइया करि प्यार वधू सम गहि निज हृदय लगाई॥ ४७॥
पुनि तिहुँ बालन शीश धरोकर लहे शुद्ध निजरूपा॥
बिदाकिये सबही तिय संयुत कहि वर वचन अनूपा॥
निज निज धाम गये हरि हर विधि कहैं परस्पर माहीं॥
कोउ अनसुइयासम तिहुँ पुर वर पतिव्रता नाहीं॥ ४८॥

दोहा—इहिविधि अनसुइया कथा, ऋपितिय सियहि सुनाय।
मिली परस्पर प्रेमभरि, गई गेह सुखपाय॥ ४९॥

सुनि अनसुइया दरश की, सियहि भई अति चाह ॥
प्रातपयान विचारि उर, छिन छिन होत उछाह ॥ ९० ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० चित्रकूट चरित्र
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा–प्रात होत सिय लषण युत, चित्रकूटते राम ॥
आये परमानंद चलि, अत्रिमुनीके धाम ॥ १ ॥
धाय गहे तिहुँ मुनि चरण, ऋषि उठि अंक लगाय ॥
यथा उचित सतकार युत, विनयकरी सतभाय ॥ २ ॥
बहुरि राम सिय लषण तिहुँ, धारि ऋषितिय पद माथ ॥
कही मात तुव दरश लहि, अब हम भये सनाथ ॥ ३ ॥
अनसुइया उठि तिहुन को, उर लगाययुत प्रेम ॥
आशिषदीनी विशद शुभ, संततरहै सुक्षेम ॥ ४ ॥
चौ०–पुनि बहु प्रीति सहित ऋषि नारी ❀ लैजानकिहि गोद बैठारी ॥
पट भूषण अमोल शुचि दीने ❀ निजकर सिय तनु भूषित कीने५॥
बहुरि प्यार करि नीति सिखाई ❀ पतिव्रत रीति सकल समुझाई ॥
सोसिख सीय हृदै धरिलीनी ❀ ऋषितिय मुदित सु आशिषदीनी६॥
पुनि तिहुँ अशन अनूप कराई ❀ बिदाकरी निज हृदय लगाई ॥
मुनि मुनि तियहि मुदित शिरनाई ❀ चले सीय संयुत रघुराई ॥ ७ ॥
अपर मुनिनके आश्रम आये ❀ सबलहि राम दरश सुखपाये ॥
ऋषिगण अमित भांति सनमाने ❀ विनती करि निज निज थल आने८
तहँ वसि बहुरि गमन तिहुँ कीनो ❀ मिलो विराध पंथ मदभीनो ॥
सो खल धाय सियहि लै अंका ❀ चलो शोर करि घोर निशंका९॥
तिहि लखि राम लषण अकुलाने ❀ धाय जाय धनु शर संधाने ॥
बाणन मारि विकल करि डारो ❀ तब विराध किय कोप अपारो१०
लैकर शूल राम पर धावा ❀ दुहूँ बंधु तिहि मारिगिरावा ॥
सोतनु त्यागि शुद्ध वपु पाई ❀ गयो देवपुर विनय सुनाई ११॥
तब दुहुँ बंधु भूमिखनिभारी ❀ गर्ति राखि तिहि देह सुधारी ॥
ह्वै सजग लषण सिय साथा ❀ चले विपिन निरखत रघुनाथा१२

मुनि शरभंग ज्ञान गुण छाये ❀ रघुवर तिहि आश्रम नगिचाये॥
दूरहिते नभपंथ मझारे ❀ स्यंदन हरित तुरंग निहारे १३॥
गुणी राम मुनि दरशनकाजा ❀ मुदित आज आये सुरराजा॥
इमि विचारि कछु विलमत रामा ❀ गये गये जब इन्द्र सुधामा१४॥
राम लषण अरु मुनि शरभंगा ❀ मिले परस्पर सहित उमंगा॥
ऋषि तिहुँ उचित सवहि सनमाने ❀ करि वहु विनय अनंद अघाने१५

दोहा–मुनि बोले सियनाथ मैं, जातहुतो सुरधाम॥
तुव आगम सुनि पुनि रह्यो, अब पूजे सब काम॥१६॥
यों कहि ऋषिवर विरचि सर, तात्रिच वैठि विशोक॥
योगानल तनु दाहकरि, गये विष्णुके लोक॥१७॥

चौ०लखि मुनि अपर विनय वहुकीनी। राम भक्ति निज सव कहँ दीनी
तहँते चले हरषि रघुनाथा ❀ऋषिगण लगे मुदित मन साथा१८
कछुक दूरि चलि रघुवर हेरी ❀ लागी चहूँ अस्थिकी ढेरी॥
करुणाकर बूझी तिन पाहीं ❀ किनके सकल अस्थि ये आहीं१९
सुनि मुनि सवहिं नैन भरि नीरा ❀ वोले विह्वल वचन अधीरा॥
ये सव अस्थि ऋषिनके नाथा ❀ दले निशाचर जानि अनाथा२०
सुनि रघुवर नैनन जल छायो ❀ करि प्रण सत्य मुनीन सुनायो॥
अभय होहु धरि मम विश्वासा ❀ करिहौं सकल खलन कर नासा२१
राम सत्य प्रण सुनि मुनि हरषे ❀ ताछिन सुमन देवगण वरषे॥
ऋषिगण निज निज आश्रम आये ❀ विपिन राम सिय लषण सिधाये
राम आगमन सुनत सुतीक्षण ❀ चले धाय आनंद मगनमन॥
तनु पुलकत हुलकत हिय भूरी ❀ गावत हँसत नचत सुखपूरी२२
इहि विधि आय गहे पद धाई ❀ राम लिये तिन अंक लगाई॥
पुनि वहु विनय सुतीक्षण ठानी ❀ तिहुँ पूजे निज आश्रम आनी२४
राम अनन्य उपासक चीना ❀ भक्तितत्त्व निज मुनि कहँ दीना॥
परमानंद सुतीक्षण पाई ❀ वहुरि विनय कर जोरि सुनाई२५
मम गुरु वर कुंभज मुनि नाथा ❀ हौं तिन दरश करौं चलि साथा॥
सुनि लै राम सुतीक्षण संगा ❀ चले चहूँ मन मुदित अभंगा२६

वेगि अगस्त्य आश्रमहिं आये ❀ चारहु मुनि पद शीश नवाये॥
ऋषि विलोकि रघुवर उर लाये ❀ आसन दे सप्रेम बैठाये॥ २७॥
तिहुँ आदर करि सहित विधाना ❀ पुनिबहु गुणगण किये बखाना॥
रामदरशहित बहु मुनि आये ❀ लखि निज सकल सुकृत फल पाये२८

दोहा—पुनि अगस्त्य मुनिसे कही, राम दुहू कर जोरि॥
नाथहि विदित समस्त सो, जो कछु रुचि हैं मोरि॥ २९॥
नाथ रजायसुहोय जहँ, वास करौं तिहि ठाम॥
जाते सुर मुनि सुखलहैं, सिद्धि होय सब काम॥ ३०॥
सुनि कुंभज मुनि विहँसि कै, बोले सहित विचार॥
ऋषि शापित दंडकविपिन, ताकर करौ उधार॥ ३१॥
विमल सरित गोदावरी, पंचवटी शुभठाम॥
लषण सीय संयुत तहां, वास कीजिये राम॥ ३२॥
यों कहि मुनि रघुवीर को, दियो विशद सारंग॥
खड्ग अनूपम द्वै रुचिर, पत्री सहित निखंग॥ ३३॥
लहि रघुवर प्रमुदित भये, पुनि मुनि पद शिरनाय॥
चले बंधु सिय सहित वन, मगमें मिले जटाय॥ ३४॥
तिनहि पिता सम पूजि तिहुँ, गोदावरि तट जाय॥
पंचवटी बिच परण गृह, विरचिरहे रघुराय॥ ३५॥

इति श्री०रा० र० व० वि० मुनिसमागमवर्णनो नाम नवमोविभागः॥९॥

दोहा—सुभग सरित गोदावरी, विमल नीर गंभीर॥
परम सुहावन सुखद नित, अतिपावन दुहुँ तीर॥ १॥
मंजु कंज विकसित विविध, गिरि कानन अभिराम॥
प्रफुलित द्रुमवल्लीं अमित, सुथल सदा सुखधाम॥ २॥
तनु परसत हरसत हियो, सरसत त्रिविध समीर॥
सुख बरसत दरशत छटा, जहँ निवसत रघुवीर॥ ३॥
मृग विहंग बहु रंगके, कानन करत कलोल॥
कोकिल कीर मयूर चहुँ, बोलत मधुरे बोल॥ ४॥
कहुँ कदली कहुँ सुमन कहुँ, वृंदा कहुँ तरु वेलि॥

लाय रची वर वाटिका, सिय निज कर युत कोलि ॥ ५ ॥
पंचवटी थल विमल वर, विहरत सीता राम ॥
परम प्रीति संयुत लपण, सेवत हैं वसुयाम ॥ ६ ॥
देव सदाशिव हेत नित, राम करत अभिषेक ॥
सविधि हवन प्रतिदिन सदा, साधत सहित विवेक ॥ ७ ॥

प्र०–वाल्मीकीये आरण्यकांडे ॥ सर्ग ॥ १६ ॥ श्लोक ॥

कृताभिषेकः सर राजरामः सीताद्वितीयः सह लक्ष्मणेन ॥
कृत्वाभिषेकस्त्वगराजपुत्र्या रुद्रः सनंदिर्भगवानिवेशः॥इत्यादि.

दोहा–लखि पुनीत मृग बंधु दुहुँ, प्रमुदित करत अहेर ॥
दै आमिष बलि पितर सुर, लेत प्रसाद सुफेर ॥ ८ ॥
कंद मूल फल सरस मधु, मधु मैरेयक शुद्ध ॥
अशन पान सिय लपण युत, रघुवर करत प्रबुद्ध ॥ ९ ॥
पंचवटी कृत वास इमि, सिय सबंधु रघुनंद ॥
वन विहरत निर्भय सकल, संतत परमानंद ॥ १० ॥

दांवईछंद।

एक समय रावणकी भगिनी शूर्पणखा तहँ आई ॥
देखि राम घनश्याम रूपकी शोभा सो ललचाई ॥
रघुवर सों बूझी तुम को हो इहां कहां ते आये ॥
सुनि सियनाथ सरल चित अपने सबही चरित सुनाये ॥११ ॥
तब बोली यह तिया तिहारी क्या गो निपट कुरूपा ॥
मो सँग करो विहार विपिन नित हो तुम योग सुरूपा ॥
राम कही सुंदर वर गोरो है मम बंधु कुँवारो ॥
सो विन तीय दुखारी तिहि मिलि रहो सुजाय निहारो ॥ १२ ॥
तब आई लछमन छवि देखी ह्वै प्रमुदित यों भाखी ।
रमो छल भलि हम तुम जोरी प्रथमहि विधि रचिराखी ॥
लपण कही सुनि सुनो कामिनी तुम उनहीं ढिग जावो ।
दास पास दासी इत वनिहो रानी तहाँ कहावो ॥ १३ ॥
तहँते सो रघुवर ढिग गमनी तिन तित फेर पठाई ।
यदुरि लपण भेजी मोरिलकरि धरि कराल वपु आई ॥

बोली अधम तिहारी तियको अबहिं लेति हौं खाई ।
तिहि विलोकि डरि जीय सीय अति लगी पीयहिय धाई ॥१४॥
तब रघुवीर क्रोध भरि अनुजहि नैन सैन कछु कीनी ।
लखि कृपाण लै लषण तासु दुहुँ श्रुति अरु नासा छीनी ॥
कटत नासिका श्रवण निश्चरी भभरि भगी बिललाती ।
गिरी आय खर निकट विकल बहु रोय धुनै शिरछाती ॥ १५ ॥

हीरक छंद ।

ताकी गति हेरि सकल निश्चर अकुलायकै ॥ बूझो सब कारण सो भाषौ विलपायकै ॥ बोलो खर यातुधान वेगे तहँ जावहू । दोउ नर नारी मम सन्निध गहि लावहू ॥ १६ ॥ धाये दश चारि सुभट शूर्पणखा संगमें । आये रघुवीर निकटछाके रणरंगमें॥देखे तिन अच्छन लै तच्छन धनुबानको । ठाढे श्रुतलच्छन सजिरच्छन तनुत्रानको॥१७॥ दूरहिते निश्चरी दिखाये दुहुँवीरको । धाये करि कोप सकल त्यागि तन पीरको॥ धारे बहु शस्त्र ते प्रहारे इकबारहीं ।राघव तिन मारे महिडारे ततकारहीं ॥ १८ ॥ शूर्पणखा हेरि मरन निश्चर बलवानको । लागी भय भूरि भभरि भागी जनथानको॥ बोली खर पास जाय भेजे भट ते मरे । लोटे सब पंचवटी हेरो चलि भूपरे॥१९॥शूर्पणखा बैन सुनत क्रोधित खरयौं कही॥साजो सब साज समर देखौं चलिहौं सही॥ दूषण त्रिशिरादि सहस चौदह वर वीर ते । लीने कर शस्त्र अमित भारी रणधीरते ॥ २० ॥ शूर्पणखा अग्रहै अमंगल मुख सर्वते । पाछे खर दूषणादि धाये भट गर्वते ॥ पूरीनभधूरि भूरि हेरी रघुवीर सो । बोले तब लषण लखौ आई खल भीरसो॥२१॥सीतहि लै साथ बंधु धनु शरकर सज्जहू । बैठौ दुरि कंदराहि याछिन थल तज्जहू॥बोले सुनि लषण नाथ ऐसी जानि भाखिये॥ह्वै है बहु युद्ध अबहि मोकहँ ढिग राखिये॥२२॥ बोले पुनि राम लषण शंका जनि मानहू ॥ मारौं द्वै दंड माहिं खलदल दृढ़ जानहू ॥ आज्ञावश अनुज लेके सिय संगमें । बैठे दुरि कंदराहि छायो बल अंगमें ॥२३॥ ताहीं छिन यातुधान आये अति जोरते । धाये दशहू दिशान छाये रवघोरते । रा

म रूप देखतही सेन चकित होगई। निश्चर मन मोहि युद्ध बुद्धि सकल खोगई ॥ २४ ॥ भेजे खर दूत दोय आये ढिग रामके। बोले खल बैन सो सिखाये शठ वामके ॥ तापस तिय सौंपि खरहि वनते द्रुत भागहू। वीरनके हाथन ते काहे तनु त्यागहू ॥ २५ ॥ भापी सुनि बैन तबहिं रघुवर मुसक्यायकै। सेवें खर शूर्पणखहि नीकी विधि भायकै ॥ वृद्ध औ कुरूप फेरि हीनी श्रुति नासिका। भूलिहू न कोऊ तिहि राखै गृहदासिका ॥ २६ ॥ राघवके बैन सकल दूतन जबहीं कहे। सो सुनि खर दूपणादि क्रोधानलते दहे ॥ बोलो खर वीर न अब दाया कछु धारहू। वेगहि भट जाय पकरि तापसहति डारहू ॥ २७ ॥ धाये सुनि सुभट शक्ति पट्टिश कर चंड लै। भिंडिपाल तोमर असि मुद्गर वर खंड लै ॥ शूल औ त्रिशूल परिघ धारे दृढ भल्ल हैं। दंडही उदंड मंड मंडित बहु मल्ल हैं ॥ २८ ॥

अर्द्धावली छंद।

यों सकल निश्चरन संग खर धायकै। शस्त्रवर्षा करी रामपर आयकै ॥ देखि रघुवीर बहु वीर वर वंडको। कीन टंकोर रव घोर धनु चंडको ॥ २९ ॥ कान लग तान बहु वान वर्षन लगे ॥ विपुल बलवानके प्राण कर्षन लगे ॥ कटत भुज शीश भट अटत अकुलायकै। पटत नहिं नटत पद हटत भय पायकै ॥ ३० ॥ झुंड गजतुंड सह शुंड धरणी परे। रुंड खलमुंड बहु कुंड शोणित भरे ॥ सुदल बल विचल अविलोकि द्रुत धायकै। शक्ति शर समर खर प्रखर किय आयकै ॥ ३१ ॥ राम लखि सुभट वर चाप मंडित लियो। वान संधान खर त्रान खंडित कियो ॥ परत खर त्रान महि त्रिशिर शर जालते। शाल रघुलाल तिहि काल नख भालते ॥ ३२ ॥ निरखि रघुवीर वरवीर दर धीरते। कीन सुविदीर बहु विशिर तनु तीरते ॥ देखि दूपण त्रिशिर शक्ति कर चंडलै। युद्ध किय क्रुद्ध भट उद्ध पुनि खंडलै ॥ ३३ ॥

बोली अधम तिहारी तियको अबहिं लेति हौं खाई ।
तिहि विलोकि डरि जीय सीय अति लगी पीयहिय धाई ॥१४॥
तब रघुवीर क्रोध भरि अनुजहि नैन सैन कछु कीनी ।
लखि कृपाण लै लपण तासु दुहुँ श्रुति अरु नासा छीनी ॥
कटत नासिका श्रवण निश्चरी भभरि भगी बिललाती ।
गिरी आय खर निकट विकल बहु रोय धुनै शिरछाती ॥ १५ ॥

हीरक छंद ।

ताकी गति हेरि सकल निश्चर अकुलायकै ॥ बूझो सब कारण सो भाषौ विलपायकै ॥ बोलो खर यातुधान वेगे तहँ जावहू । दोउ नर नारी मम सन्निध गहि लावहू ॥ १६॥ धाये दश चारि सुभट शूर्पणखा संगमें । आये रघुवीर निकटछाके रणरंगमें॥देखे तिन अच्छन लै तच्छन धनुवानको । ठाढे श्रुतलच्छन सजिरच्छन तनुत्रानको॥१७॥ दूरहिते निश्चरी दिखाये दुहुँवीरको । धाये करि कोप सकल त्यागि तन पीरको॥ धारे बहु शस्त्र ते प्रहारे इकबारहीं ।राघव तिन मारे महिडारे ततकारहीं ॥ १८ ॥ शूर्पणखा हेरि मरन निश्चर बलवानको । लागी भय भूरि भभरि भागी जनथानको॥ बोली खर पास जाय भेजे भट ते मरे । लोटे सब पंचवटी हेरौ चलि भूपरे॥१९॥शूर्पणखा बैन सुनत क्रोधित खरयौं कही।साजौ सब साज समर देखौं चलिहौं सही॥ दूपण त्रिशिरादि सहस चौदह वर वीर ते । लीने कर शस्त्र अमित भारी रणधीरते ॥ २० ॥ शूर्पणखा अग्रहै अमंगल मुख सर्वते । पाछे खर दूपणादि धाये भट गर्वते ॥ पूरीनभधूरि भूरि हेरी रघुवीर सो । बोले तब लपण लखौ आई खल भीरसो॥२१॥सीतहि लै साथ बंधु धनु शरकर सज्जहू । बैठो दुरि कंदराहि याछिन थल तज्जहू॥बोले सुनि लपण नाथ ऐसी जानि भाखिये ॥ह्वै है बहु युद्ध अबहिं मोकहँ ढिग राखिये॥२२॥ बोले पुनि राम लपण शंका जनि मानहू ॥ मारौं द्वै दंड माहिं खलदल दृढ़ जानहू ॥ आज्ञावश अनुज लैके सिय संगमें । बैठे दुरि कंदराहि छायो बल अंगमें ॥२३॥ ताही छिन यातुधान आये अति जोरते । धाये दशहू दिशान छाये रवघोरते । रा

म रूप देखतहीं सन चकित होगई । निश्चर मन मोहि युद्ध बुद्धि सकल खोगई ॥ २४ ॥ भेजे खर दूत दोय आये ढिग रामके । बोले खल बैन सो सिखाये शठ वामके ॥ तापस तिय सौंपि खरहि वनते द्रुत भागहू । वीरनके हाथन ते काहे तनु त्यागहू ॥ २५ ॥ भाषी सुनि बैन तबहिं रघुवर मुसक्यायकै । सेवें खर शूर्पणखहि नीकी विधि भायकै ॥ वृद्ध औ कुरूप फेरि हीनी श्रुति नासिका । भूलिहू न कोऊ तिहि राखै गृहदासिका ॥ २६ ॥ राघवके बैन सकल दूतन जबहीं कहे । सो सुनि खर दूषणादि क्रोधानलते दहे ॥ बोलो खर वीर न अब दाया कछु धारहू । वेगहि भट जाय पकरि तापसहाते डारहू ॥ २७ ॥ धाये सुनि सुभट शक्ति पट्टिश कर चंड ले । भिंडिपाल तोमर असि मुद्गर वर खंड ले ॥ शूल औ त्रिशूल परिघ धारे दृढ भल्ल हैं । दंडही उदंड मंड मंडित बहु मल्लहैं ॥ २८ ॥

अर्द्धावली छंद।

यों सकल निश्चरन संग खर धायके । शस्त्रवर्षा करी रामपर आयकै ॥ देखि रघुवीर बहु वीर वर वंडको । कीन टंकोर रघुवीर धनु चंडको ॥ २९ ॥ कान लग तान बहु बान वर्षन लगे ॥ विपुल बलवानके प्राण कर्षन लगे ॥ कटत भुज शीश भट अटत अकुलायके । पटत नहिं नटत पद हटत भय पायकै ॥ ३० ॥ झुंड गजतुंड सह शुंड धरणी परे । रुंड खलमुंड बहु कुंड शोणित भरे ॥ सुदल बल विचल अविलोकि द्रुत धायके । शक्ति शर समर खर प्रखर किय आयकै ॥ ३१ ॥ राम लखि सुभट वर चाप मंडित लियो । बान संधान खर बान खंडित कियो ॥ परत खर बान मदि त्रिशिर शर जालते । शाल रघुलाल निदि काल नग भालते ॥ ३२ ॥ निरखि रघुवीर बरवीर उर धीरते । कीन सुनिदीर बहु त्रिशिर तनु तीरते ॥ हेरि दूषण त्रिशिर शक्ति कर चंडले । युद्ध किय क्रुद्ध भट उद्ध पुनि लंडले ॥ ३३ ॥

पद्धरी छंद ।

इमि यातुधान अति कोप कीन । पुनि घेरि शोर करि घेरि लीन ॥
गहि उपल वृक्ष डारत प्रचार । वर्षंत अपार मल अस्थिछार२४॥
वरिवंड चंड निश्चर अनेक । निरद्वंद वीर रघुनंद एक ॥
खल दल अखंड करि खंड खंड । डारत सुभूमि हति चंड चंड॥२५॥
खर दूपणादि निश्चर समस्त । वाणन विदारि कीने परस्त ॥
भोकटक खिन्न बहु छिन्न छिन्न । कर चरण शीश तनु भिन्न भिन्न२६॥
बहु भिरत आय बहु गिरत झूमि । बहु घूमि प्राण तजि परत भूमि ॥
बहु क्रुद्ध युद्ध किय धाय धाय । बहु खल परांय करि हाय हाय२७॥
रघुवीर चंड कोदंड धारि । वाणन विदारि खल झारि मारि॥
खर दूपणादि त्रिशिरादि सर्व । भो यातुधान दल निहत गर्व॥२८॥
निश्चर सहस्र पट दंड मध्य । रघुवीर एक कीने सुवध्य ॥
खर यातुधान संहार हेर । कोप्यौ अपार किय समर फेर२९॥
निश्चर सहस्र वसु एक वार । वर अस्त्र शस्त्र कीने प्रहार ॥
तिन सकल खंडि रघुवीर वीर । हिय भरो क्रोध बहु समर धीर४०॥
कोदंड चंड शर मंड मंड । वर वंड वीर किय खंड खंड ॥
स्यंदन गयंद वेसर तुरंग । वाहन सुढंग सब कीन भंग ४१॥
पुनि विशिखवाण गहि गहि अपार । काटे समस्त निश्चर हथ्यार ॥
कर चरण शीश कटि कटि अनेक । द्रुत परत एक पर एक एक ॥४२॥
पिक्करत वीर धावत रिसाय । चिक्करत हाय करि करि पराय ॥
रघुनाथ हाथ लाघव अभूत । तनु तेज धीर भुजबल अकूत॥४३॥
कर लहत गहत अरु बहत बान । धनु सजत तजत कोऊ न जान ॥
दिशि विदिशि दीन शरजाल छाय । नभ भूमि काहु कछु नहिं लखाय४४
भरि नैन श्रौन मुख विशिख तीर । निश्चर अधीर कीने सुबीर ॥
करि हाय हाय भट यातुधान । छोड़त सुप्राण लागि वज्रवान॥४५॥
बल झुंड रुंड अरु मुंड भूरि । छाये कराल चहुँ धरणि पूरि ॥

बहु श्वान गृध्र वायस शृगाल। तिन लखत भखत अति जिय निहाल४६
कर चरण शीश लैलै परांय। झड़राय धाय गहि जाँय खाँय ॥
पलभखी जीव आमिप अहार। लहि करैं पान शोणित अपार॥४७॥
बहु समर वीर करि यातुधान। लगि रामबाण सब तजत प्रान ॥
चौदह सहस्र निश्चर समस्त। शरग्रस्त त्रस्त भे ध्वस्त अस्त॥४८॥
इहि भाँति प्रबल खलदल उदंड। खर दूपणादि त्रिशिरा प्रचंड ॥
वर वीर सकल दशशत पडष्ट। ते यातुधान भे समर नष्ट ॥ ४९ ॥
निश्चर विनाश लखि देववृंद। बोले सु जैति जैरामचंद ॥
चहुँ सुमन वृष्टि कीनी अपार। नभ छई विपुल दुंदुभि धुकार॥५०॥
लखि विजय मुदित ह्वै लपण लाल। सिय सहित धाय आये उताल ॥
करि नेह राम उरलाय लीन। कहि विशद बैन आनंद दीन॥५१॥
सिय देखि राम तनु त्रान खंड। अकुलाय नीर लोचन उमंग ॥
विलपाय धाय रघुराय अंक। लीने लगाय जियं अतिसशंक५२॥
तिन लखि अधीर रघुवर प्रवीन। तनु त्रान वेगि अति दूर कीन ॥
सिय लपण राम नख शिख निहार। पायो सुहीय आनँद अपार॥५३॥

दोहा–इमि रघुवीर सुधीर वर, वीर समेत हुलास ॥
जनस्थानवासी सकल, निश्चर किये विनास ॥ ५४ ॥
खर दूपण त्रिशिरादिये, चौदह सहस सुधीर ॥
दशमुख आज्ञाते रहे, जनस्थान वरवीर ॥ ५५ ॥
मुनि दुखकारी सकल शठ, रहे भये सो नाश ॥
ऋपिगण अति आनँद लहो, सब छूटी खल त्रास ॥ ५६ ॥
सुर मुनि सब रघुवीरकी, अस्तुति करत अपार ॥
दंडकवन पावन भयो, होत सु जैजैकार ॥ ५७ ॥
सिया लपण संयुत सदा, रहत सजग रघुवीर ॥
छिनहुँ न छोड़त बंधु दुहुँ, धनु शर असि तूणीर ॥ ५८॥
पंचवटी इहि विधि रहैं, सिया लपण रघुचंद ॥

धीर वीर विहरत विपिन, प्रतिदिन परमानंद ॥ ५९ ॥
कियो राम सिय मंत्र कछु, लषण सुजानों नाहिं ॥
यथारूप गुणनेह युत, संतत तिहूँ रहाहिं ॥ ६० ॥
पंचवटी गोदावरी, सुभग तपोवन ठाम ॥
परम मनोहर सिद्धि थल, जहँ विहरत सिय राम ॥ ६१ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० पंचवटीवास वर्णनो
नाम दशमोऽविभागः ॥ १० ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रन्थे वनचरित्रवर्णनो
नाम चतुर्थोविधानः ॥ ४ ॥

लीला छंद।

इहि विधि सब यातुधान ॥ नाशे हति राम बान ॥
कानन चहुँ झुंड झुंड ॥ छाये बहु रुंड मुंड ॥ १ ॥
शूर्पणखा देखि हाल ॥ अतिही जिय ह्वै विहाल ॥
भागी तहँते सशंक ॥ धाई बहु वेग लंक ॥ २ ॥
आई दशशीशपास ॥ विलपी बहु ह्वै निरास ॥
ताको सब हेरिहाल ॥ बूझी अतिही उताल ॥ ३ ॥
क्रोधित करि अरुण नैन ॥ बोली बहु निदरि बैन ॥
बूझे कह निलज बात ॥ मोगति तुहिं नाहिं लखात ॥ ४ ॥
डूबो मति अंधकूप ॥ तोसम कहुँ होत भूप ॥
देखै कछु देश कोश ॥ तोको नहिं रंच होस ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

भाँव-भाँति बंक मद छाँवै हैं उतंक तिय अंकलै निशंक पर्यंक माहिं सोवैं हैं ॥ अथवत भान कब होत है विहान सो न जानै सुरापान माहिं रैनिदिन खोवैं हैं ॥ रसिकविहारी राज काज औ समाज साज कैसो का अकाज काज रंचहू न जोवैं हैं ॥ तो सों जो नरेश सो कलेश बहु पावै देश जावै पछितावै औ विनाश वेगि होवै है ६

दोहा—शूर्पणखा इमि रावणहि, कहि अनेक कटुबात ॥
बहुरि कथा सब बरणिकै, बार बार बिलपात ॥ ७ ॥

सो०-सुनि खरवध दशमाथ, विकल भयो बहु सोचवश।
पुनि रिस करि निज हाथ, मलत उसासन लेत बहु ८॥
निरखि शोक वश भ्रात, पुनि बोली कुलनाशिनी॥
सुन दशमुख मम बात, जिहि कीने तुव होय भल॥९॥
राम तिया छविसिंधु, कैसहु सो हरिलावहू।
तौ तिहि दुख दुहुँ बंधु, करि विलाप निज तनु तजैं॥१०॥
शूर्पणखाके बैन, मन भाये दशमुख सुनें।
हिय आयो कछु चैन, चलो वेगि रथसाजि सो॥११॥
आयो जहँ मारीच, कियो अमित सतकारसो॥
बहुरि दशानन नीच, ताहि सुनाई सकल गति॥१२॥

चौ०-पुनि बोलो तुम मृग बनि जावो ❀ छल करि दुहुँ बंधुन भरमावो॥
तब इकंत लखि मैं तहँ आऊँ ❀ लै सीतहि निज लंक सिधाऊँ १३॥
तब मारीच ताहि समुझायो ❀ राम तेज बल अमित सुनायो॥
सुनि बोलो दशवदन रिसाई ❀ मुहिं लखि परै मृत्यु तुव आई १४॥
तब मारीच चलो गुणि साथा ❀ मरन भलो रघुवरके हाथा॥
निशिचरपति तहँ आय लुकायो ❀ सो अनूप मृग तनु धरि आयो १५॥
पंचवटी बिच इत उत जाई ❀ बार बार दुरि दई दिखाई॥
औचक लखो सीय तिहि रूपा ❀ अकथ अभूत कुरंग अनूपा १६॥

घनाक्षरी-कवित्त।

नील मणि नैन औ प्रवालके विशाल शृंग जटित अनेक रत्न कंचनको अंग है। दशन सुहीरनके रजतमई हैं खुर रसिकबिहारी रूप सुभग सुढंग है॥ ताहि अविलोकतहीं सीय रघुनंदनको टेरे हुलसाय छाई अमित उमंग है। धावो वेगि धावो लाल आवो इत आवो श्याम देखो याहि देखो कैसो रुचिर कुरंग है॥१७॥

दोहा-लै धनु शर सिय वचन सुनि, दुहूँ बंधु उठि धाय।
जनकसुता ढिग आयकै, चहुँ चितये अकुलाय॥१८॥
वेगि सिया पिय हाथ गहि दरशायो मृग सोय।
लखि अनूप दुहुँ राजसुत, चकितरहे छवि जोय॥१९॥

जनकसुता पुनि श्याम सों, बोली सहित उमंग।
करि अहेर वा जियत गहि, लीजे लाल कुरंग ॥ २० ॥
सुनत प्रियाके प्रिय वचन, धनुशर सजि रघुराय।
चले वेगि मृग हेतु सो, बहु लपणहिं समुझाय ॥ २१ ॥
रामहि निरखि कुरंगसो, कहुँ दुरि कहुँ दरशाय।
यौं छल करि बन अगम विच, लैगो दूरि भुराय ॥२२॥

चौ०—जब मृग छल रघुवीर विचारा ❋ तबतकि ताहि चंड शर मारा॥
गिरो कहत हा लछमन सीता ❋ सुनत भई रघुवर हिय भीता २३
सो तजि कपट मरो कहि रामा ❋ दिव्य देह धरि गो सुरधामा॥
पुनि रघुनाथ रुचिर त्वच लीना ❋ वेगि फिरे सिय ढिग चित दीना २४
जब मारीच शोर करि भारी ❋ हाय लपण सिय गिरा उचारी॥
सो सुनि जनकसुता अकुलानी ❋ कही वीर धावो धनुपानी २५॥
भो कलेश तुव भ्रातहि भारी ❋ तब इमि आरत गिरा उचारी॥
लपण कही तजि तुमहि न जाहीं ❋ तिनहिं देइ दुख को जग माहीं २६
वचन सुनत सिय रिस करि भारी ❋ कही लपण दुरनीति विचारी॥
जानत हौ जिय भ्रातहि मारी ❋ हम लीजे मिथिलेशकुमारी २७
कै तुम भरत मंत्र दुहुँ कीनो ❋ स्वारथहेत संग बन दीनो॥
सो रुचि नहिँ पूजिहै तिहारी ❋ मोहिं न गुनौ और सम नारी २८

दोहा—जाछिन प्यारेको सुनौं, हौं दृढ़ अशुभ प्रसंग।
ताही छिन विन अनल यह, भस्म करौं निज अंग ॥ २९ ॥
यौं कहि पुनि बोली सिया, लपण जात कै नाहिं।
जो न जाहु तौ अबहिं मैं, प्राण तजौं छिन माहिं ॥ ३० ॥

चौ०—अनुचित सुनत रोप उर धारे ❋ लछमनहू कटु वचन उचारे॥
वेगि कृपाण धनुप तूणीरा ❋ सजिके चलत भये वर वीरा ३१॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये आरण्यकांडे ॥ सर्ग ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥

आर्तस्वरं तु तं भर्तुर्विज्ञाय सदृशं वने ॥ उवाच लक्ष्मणं सीता गच्छ जानीहि राघवम् ॥ १ ॥ रक्षसां वशमापन्नं सिंहानामिव गोवृषम् ॥ न जगाम तथोक्तस्तु भ्रातुराज्ञाय शासनम् ॥ २ ॥ तमुवाच ततस्तत्र

क्षुभिता जनकात्मजा ॥ सौमित्रे मित्ररूपेण भ्रातुस्त्वमसि शत्रुवत् ॥ ३ ॥ सुदुष्टस्त्वं वने राममेकमेकोऽनुगच्छसि॥ मम हेतोः प्रतिच्छन्नः प्रयुक्तो भरतेन वा ॥ ४ ॥ अब्रवील्लक्ष्मणः सीतां प्रांजलिः स जितेन्द्रियः ॥ उत्तरं नोत्सहे वक्तुं दैवतं भवती मम ॥ ५ ॥ स्त्रीत्वाद्दुष्टस्वभावेन गुरुवाक्ये व्यवस्थितम् । गच्छामि यत्र काकुत्स्थः स्वस्ति तेऽस्तु वरानने ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

चौ०—गमनत पर्णशाल चहुँ फेरा ❀ करि महि धनुपरेख कर घेरा ॥
कही इती विनती चित दीजो ❀ रेख उलंघि काज जनिकीजो ३२
योंकहि लषण वेगि पगधारे ❀ रोप सोचवश विकल अपारे ॥
सूनो थल दशमुख जब पायो ❀ तब सो तापस वेप बनायो ३३॥
रथदुराय शाला ढिग आई ❀ अतिथि भिक्षु सम गिरा सुनाई॥
लखि सिय देन लगी फल जाई ❀ तब बोले इमि निश्चरराई ॥ ३४॥
हों न लेहुँ बंधनमय भिक्षा ❀ है इहि भांति मोहिं गुरु शिक्षा॥
याते रेख बाहिरे आई ❀ जो कछु देहु लेउँ हुलसाई २५॥
भावीवश सिय कछु न विचारी ❀ धनुरेखा उलंघि पग धारी ॥
देन लगी भिक्षा तिहिजाई ❀ तब दशमुख स्वदेह प्रगटाई २६॥
अंतर भक्ति सहित शिरनाई ❀ प्रगट निश्चरी मति दरशाई ॥
गहिलीनी सीतहि बरियाई ❀ वेगि ले चलौ रथ बैठाई ॥ ३७ ॥
रावण गहत विदेहकुमारी ❀ ताहि अमित कटुवाणि उचारी ॥
घोर शोर करि रोवन लागीं ❀ ताछिन दुसह शोक दुख पागीं२८॥
आरत दीन पुकारत सीता ❀ वचन उचारत विकल सभीता ॥
हाय नाथ हा अवध विहारी❀ हाय वीर यों विलपत भारी ॥ ३९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जनकसुताको हरिलीनी दशशीश जब रथ पै चढाय लैचलो है निज भौनको । विकल अधीर बिलखाति कुररीकी भाँति दीन ह्वै पुकारति है भूमि नभ पौनको ॥ रसिकविहारी हाय प्रीतम धनुषधारी आपनी दशाया मैं सुनाऊँ सब कौनको । अबतो परी है बालमृगी या वधिक हाथ वेगही छुड़ावो धावो दुष्ट दल दौनको ॥२० ॥ हाय

रघुचंद हाय दशरथनंद प्यारे हाय रघुवीर धीर पीरके हरैया हाय । हाय प्राणवल्लभ दयालु रघुलाल हाय संकट हरैया उर आनँद भरैया हाय ॥ हाय सुखकारी हाय रसिकविहारी धाय कीजिये सहाय आय धनुप धरैया आय । हाय प्राणप्रीतम सुजान बलवान ऐसी सुरति विसारी क्यों हमारी रघुरैया हाय ॥ ४१ ॥ हाय मतिमान धीर लषण सुजान तव कीनो अपमान सो निदान भई घात है । हाय बलवान धाय वेगही छुड़ावो आन निकसत प्राण छिन कलप विहात है ॥ रसिकविहारी धनुधारी हौ तिहारी वीर मेरो दुखहारी और कोऊ ना दिखात है । हाय रघुनाथ मोहिँ निरखि अनाथ दशमाथ गहि हाथ निज साथ लीने जात है ॥ ४२ ॥ मेरी महि माय हाय सोऊ ना छुटावै मोहिं ठाढ़े कुज भ्रात भूरि तेऊ नगिचायना ॥ तातके समान भानु देखै ना बचावै आन भगिनी लता ये लखैं तेऊ गहैं धाय ना । संगिनी कुरंगिनी सुहेरैं पै नटेरैं काहू ऐसे समयहित और कितहूँ जनायना ॥ रसिकविहारी दुःखहारी धनुधारीविन विपत परे पै कोऊ करत सहायना ॥ ४३ ॥

दोहा०—इहि बिधि अमित विलाप युत, जनकसुता कर जोरि ॥
जड़ चेतन वन बसहिं तिन, विनवैं अधिक निहोरि ॥४४॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कदली कदंब अंब शिंशुपा अशोक वट निपट अधीन दीन देखि दया कीजियो ॥ सरित समीर दिशि कानन सुपंथ गिरि प्यारे ते बताय वेगि ये तो यश लीजियो ॥ रसिकविहारी कीर सारिका चकोर मोर भृंग पिक कोकिल नमौनही रहीजियो ॥ केहरी कुरंग व्याल आनै रघुलाल तिनै मेरो हाल सकल बताल कहि दीजियो ॥ ४५ ॥

चौ०-करति विलाप, अमित इमि सीता ❀ लिये जात दशवदन सभीता ॥
सुनि सिय रुदन जटायू धावा ❀ गहि रथ नभते भूमि गिरावा ४६॥
रावणकर धनु शर रथ भंजा ❀ कियो युद्ध खल बल मद गंजा ।
चोंचन नखन सुअंग विदारी ❀ छीनलई हठि जनकदुलारी ४७
तब रावण कर गहि असि धायो ❀ गृद्ध पंख दुहुँ काटि गिरायो ॥

झटित जाय दूजो रथलायो ❀ सिय जटायुसो भेद न पायो ४८॥
पुनि सीतहिलै निश्चर राई ❀ नभमारग ह्वै चलो पराई॥
बहु विधि करति विलाप जानकी ❀ तजी आश तिहि समै प्राणकी ४९

दोहा-नभमारगह्वै सीय को, लिये जात दशशीश॥
ताछिन देखे जनकजा, गिरिपर बैठे कीश॥ ५०॥
कछु निज भूषण अंगते, सिय दीने तहँ डारि॥
आय परे बिच कपि सकल, चकृतरहे निहारि॥ ५१॥
कोउ न जानो भेद कछु, किहिके भूषण आँय॥
सहजहिं वनचर तिनहिं लै, धरे कंदरामाँय॥ ५२॥
दशकंठहु जानो न सो, जो कछु कीनो सीय॥
वेगि लैगयो लंकमधि, शोक हर्ष वश हीय॥ ५३॥

चौ०-सियहि लंकपति लंकहि लाई ❀ माधि अशोकवाटिका दुराई॥
विकट निश्चरी विविध बुलाई ❀ ते सब शस्त्र लिये कर आई ५४
साम दाम भयभेद सिखाई ❀ तिनहिं दशानन दई रजाई॥
सजगरहौ निशि दिवस सदाई ❀ करहु सिया रखवारी जाई॥ ५५
लंकनाथ आज्ञा शिर धारी ❀ सीता निकट सुवेगि सिधारी॥
तिनहिं निरखि मैथिली सकानी ❀ मौन रहीं मुख कढी न बानी ५६
इहिविधि सिय निश्चरिन मँझारी ❀ निशि दिन विलपत रहैं दुखारी
ते सब बहु प्रकार समुझावैं ❀ साम दाम भय प्रीति जनावैं ५७
सिय रावण गृह दृढ व्रतकीना ❀ निद्रा अशन पान तजिदीना॥
सो गति लखि सब देव दुखारी ❀ करि सुमंत्र दृढ़ युक्ति विचारी ५८
पंचम निशि सुरपति दुरि आये ❀ निद्रा घोर संग निज लाये॥
पायस शुचि अनूप करधारे ❀ भक्ति सहित सिय निकट पधारे ५९
सब निश्चरी नींद वश सोई ❀ सो न भेद जानो कछु कोई॥
सियहि बुझाय सुअशन कराई ❀ दै बहु धीर गये सुरराई॥ ६०॥

दोहा-शुद्ध सिद्धि चरु देवकृत, गुणद पियूष समान॥
कबहुँ न क्षुधा पिपासतो, पुनि न तेज बलहान॥ ६१॥
यदपि देवपति अमित विधि, सियहि गये समुझाय॥
तदपि निपट व्याकुल रहैं, हाय हाय विलपाय॥ ६२॥

चौ०—जबसिय खबर विभीषणपाई ❋ तब ह्वै दुखित हिये अकुलाई॥
कला नाम निज सुता बुलाई ❋ भक्तियुक्ति शुभरीति सिखाई६३
कहीसहज नित सिय ढिगजावो ❋ सखिनसहित तिन धीर धरावो॥
पैन भेद कोऊ यह जानै ❋ रावण न तरु क्रोध उर आनै६४॥
सो सुनि कलासंग सखि चारी ❋ लखि औसर सियपास सिधारी
जाय पाँय परि विनती कीनी ❋ पितु प्रणाम कहि धीरज दीनी ६५
इहि विधि कला नित्य सियपाहीं ❋ सखिन सहित लखि औसरजाहीं
पुनि जो सिय ढिग निश्चरि रहहीं ❋ तिनमहँ द्वैतिय शुभ मति अहहीं
त्रिजटा अरु शरमाशुभ संगिनि ❋ ये दुहुँ गुप्त रहैं सिय अंगिनि ॥
सतनारि ये जनकदुलारी ❋ बाढी प्रीति परसपरभारी ॥६७॥
इहि विधि सिया लंकमाँधिरहहीं ❋ निशि दिन पिय वियोग दुखद
राम नाम मुख दृग पति ध्याना ❋ करि राखैं सीता निज प्रान॥६

दोहा—इहि विधि दशमुख सीय लै, राखी लंक दुराय ॥
नगरद्वार चहुँ विपिन मग, परम प्रबंध दिढाय ॥ ६९ ॥
माघमास तिथि अष्टमी, शुक्क दिवस मध्यान ॥
दशकंधर सीता हरी, ग्रन्थन माहिं प्रमान ॥ ७० ॥

प्र० अग्निवेश्यरामायणे ।

ततो माघे सिताष्टम्यां मुहूर्ते वृंदसंज्ञके ॥
रावत्राभ्यां विना सीता जहार दशकंधरः ॥ ७ ॥

पुनः हनुमन्नाटके ।

अर्द्धरात्रे दिनस्यार्द्धे अर्द्धचंद्रेर्द्धभास्करे ॥
रावणेन हता सीता शुक्लपक्षे सिताष्टमी ॥ ८ ॥ इत्यादि

इति श्री० रा० र० वि० वि० सीताहरण
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

दोहा—इहि विधि भये जु मासदश, दुखित रहैं सियलंक ॥
निश्चरपति अरु निश्चरी, दरशावत बहु शंक ॥ १ ॥
सिया कलादिक सखिप्रानिन, प्रति दिन करहिं विलाप ॥
प्रिय वियोग दुखते सदा, बढत विरहतनु ताप ॥ २ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

विरह विहाल शीशनाय सियसोचत हैं मोचत दृगनवारि ऊंची श्वास भरिकै ॥ रसिक विहारीको मिलावै धनुधारी अब भूमिहू न मेरे हेत फाटत दरीरकै ॥ श्याम रघुराई कहा चूक बनि आई मोतें ताही सों दुराई चुप ह्वै रहे विसरिकै। हाय प्राणप्यारेको दरश मोहिं दुर्लभ भो विमुख मरौंगी यावियोग ज्वाल जरिकै ॥ ३ ॥ निपट निलज्ज सदा सहत वियोग परि रटत हमेस हाय रहत सतापीतू ॥ येरे मति-हीन दीन दुखित घनेरो वृथा विलपत रैनिदिन भयो है विलापीतू ॥ रसिकविहारी प्राणप्यारे ढिग जारे अब विरह सुनारे कस होत मृखा-लापीतू ॥ ऐसहू कलेश धृग जीवन है तेरो हाय निकसत नाहीं क्यौं कठोर प्राण पापीतू ॥ ४ ॥ जाके हिय लागी लखै सोई या वियोग पीर निपट कराल है कृपाण कठिनाईते ॥ दोऊ तन दाहै हेली दुसह व्यथा है अति रंचहू न चाहै सुख सुजन मिताईते ॥ प्रानको पयान दुख एकको नशात सबै समुझ सयानी भट्ट निज निपुनाईते ॥ रसिकविहारी सुखकारी यों विचारी वेगि मरन भलो है यह विरह कसाईते ॥ ५ ॥ सुनत सदाही मैं दयालु देव मानों किमि प्रगट जनात निठुराईको निकेत है। रसिकविहारी दीन रक्षक बतावै ताहि मिथ्या सो अजान सुधि काहूकी न लेत है ॥ अमित उदार यों ही करत बखान वाको मेरी जान कृपन महान इहि हेतहै । हौं तो वह जाँचो कछु दाम कोन काम जामें मोऊ नेक मीच मोहिं माँगेहून देतहै ॥ ६ ॥ मोसी मंदभागिनी न कोऊ है जहान हेली ते हैं बड़ भागिनी जु श्याम सुख पागेंगीं । आनँद अभंग नवने-हकी उमँग माहीं छाकि रस रंग संग सब निशि जागेंगीं ॥ जन्म धिग मेरो हाय प्रीतम वियोग भयो धन्य सौतिया जो अति हीय अनुरागेंगीं ॥ रसिकविहारी रघुचंद हैं निशंक अब अमित मयंकमुखी आय अंकलगेंगी ॥ ७ ॥

सवैया कवित्त।

जानतिहौं रसिकेश सुभावरहैं दृढ्प्रीतिकी रीतिमें माचे । नेहि-नके वश वेगहि होत अभंग सदा रसरंगमें राचे॥प्रेम लगाय लुभाय

न लेय कोऊ हौं तजौं इहि सोचकी आँचे। और नहीं इमि है कितहूँ जिमि हैं सखि श्याम सनेहके साँचे॥ ८॥

घनाक्षरी कवित्त।

इत उत जाय बार बार फिरि आय आय रसिक विहारी ढिग मेरेही अरत है। गोदावरि तीर धाय जोलों नीर लाऊँ वीर तौलों हेर हेर प्यारी प्यारी ही ररतहै॥ शैनहू में नैन खोलि खोलि अविलोकत ते मोहिं विन देखे छिन धीर न धरत है॥ भूले है न सोई सुख हूले है हिये में हाय मेरे प्राण प्यारे वह प्यार जो करत है॥ ९॥ चौदह सहस्र यातुधान वलवान भूरि जिनते संहारेते अमोघवान खोगये। दीन दुख टारतते दुष्टनको मारतते एकैवार अमित समस्त गुण गोगये॥ निरखि पराई पीर नीर दृग ढारतते धारतते विविध सुकर्म धर्म धोगये। रसिक विहारी लाल परमदयालु सोई मेरे हेत निपट कठोर अव होगये॥ १०॥

सवैया कवित्त।

है जु पतिव्रत धर्म महा तिहि में दृढ कै अपने उर ठानों। प्रीतम के पदपंकजते वढि और कछू तिहुँ लोक नमानों॥ सो फल हीन कियो सिगरो अव काह कहौं पिय नेक न जानों। मोहिय दाहत शोक यही इन सत्य सनेह नहीं पहिचानों॥ ११॥

दोहा-जनकनन्दिनी विकल नित, इहि विधि अति विलपाय॥
पति वियोग वश दुखित जिय, नेक न धीर धराय॥ १२॥
तिया कला त्रिजटादिते, समुझावैं सतभाय॥
स्वामिनि धीरज धारिये, मुचिलेहैं रघुराय॥ १३॥
सुनि तिनके वर वचन बहु, सिय धारें छिन धीर॥
पुनि बोलि अकुलाय उर, उठे विरहकी पीर॥ १४॥

सवैया कवित्त।

न सुनै अरु कानों कहौं पुनि मांनिये कोउ न मानत है।
स्वामी नहीं या वियोग व्यथा सु कहा दुखको पहिचानत है॥
कहूं [illegible] जो [illegible] [illegible] गनि सो उर आनत है॥

नर नारि सयोगी वियोगी कहा मिलिकै बिछुरो सोई जानतहै॥१५॥
कोउ कहै दुख त्यागो सबै हिय धीर धरो मिलि है रस भीनों॥
पै मन मेरो न मानत है बिछुरे तन छोडिवोई प्रण लीनों॥
मोहि जुपै समुझावति हौ रसिकेश तुपै अतिही भल कीनों॥
हौं करतारसें पूछौं इतो विरहीके ललाट कहूं सुख दीनों ॥ १६ ॥
चित चाहिय जाको सँयोग सदा वह ताहिको वेगि वियोग करावे॥
देखि दशा विरहीनकी वाके हिये कछु रंच दया नहिं आवे॥
योंरसिकेश संदेसो अबें करतारको कोऊ न जाय सुनावे॥
छीन सुधा सबके करते फिर नाहक क्यों जु हलाहलप्यावे॥ १७॥

सो०–पुनि सिय बोली वीर, तन मन ते न बसाय कछु॥
बिन सुन्दर रघुवीर, नेक धीर कोउ न धरै॥ १८॥

सवैया कवित्त।

प्राण समीरते वोलत है पिय तू परसै किधौं हौं परसौं॥ रसना पपिहाते कहै रट पीउ की तू सरसै किधौं हौं सरसौं॥ तनकी अरु जीवकी होड लगी अति तू तरसै किधौं हौं तरसौं॥ रसिकेश बदी दृग मेघनसों घनो तू बरसै किधौं हौं बरसौं॥ १९॥

दोहा–यौं कहि सिय बोलीं बहुरि, अली धरौं किमि धीर॥
राजकुँवर बिन रैनि दिन, देत सकल ऋतु पीर॥ २०॥

घनाक्षरी–कवित्त।

शिशिर समीर तीर चालिवो न चूको नेक शीत भीत देवेमाँह कसर लगाईना॥ रैनहूँ अचैन अधिकैवेमें न राखो चैन पाला त्यौं कसाला मध्य कीनी लघुताईना॥ रसिक विहारी फेर नीरहू न धारी धीर निरखि दुखारी मोहिं काहू दया आईना॥ येते बलवान मिलि प्राण हठि लेते हाय जो पै एक होतो विरहानल सहाईना॥ २१॥ फूलनकी शूलनते शूल शूल शालो हीय कोकिलाकी कूकन ल लूकसी लगाईरी॥ त्रिविध समीर तीर ताकि तनुवेधो वीर विरह कृपान तान विशिष चलाईरी॥ रसिकविहारी धीर धारी वरियारी वीर हाय याविचारी तव कीनी मोसहाईरी॥ निठुर कसाई सो बसंत दुखदाई घात पाई प्राण लेवे माँह कसर न लाईरी॥२२॥ आतप अपार फेर विरह

कृशानु झार लगि तन होतो छार कैसहू न जीतीमैं ॥ लूह की लपेट ताती श्वासकी सपेट जैसी भई जिय जानौं का बखानौं गति बीतीमैं॥ रसिकविहारी धनुधारीकीकृपाते बचि जैहै प्राण ऐसी सत्य हीय धरि लीतीमैं ॥ ग्रीपम वियोग दोऊ दाहतें मरीती हाय जोपै श्याम नाम सुधा छिनहुँ न पीतीमैं ॥ २३ ॥ मेघन घिराय झरि लाय दामिनी दिपाय घोर घहराय तमछाय डर पायोरी ॥ पौन जोर तोर तरु चातक सुमोर शोर करकै करोर कला दुख दरशायोरी॥ अबला अधीन दुखी विरहिनि दीन देखि रसिकविहारी दया रंचहू न लायोरी॥ पावस प्रपंची निशि दिवस सताई मोहिं फेरि वह पापीके सुहाथ कह आयोरी ॥ २४ ॥

दोहा—हौं पाहन निज हीय करि, इती सही सब शंक ॥
निपट दुसह दुख देतहै, अब यह शरद मयंक ॥ २५ ॥
यौंकहि सिय शशि ओर लखि, बोलीं वचन रिसाय ॥
सुखी न रैहौ चंद तुम, मो अबलाहि सताय ॥ २६ ॥

सवैया कवित ।

टुक जीय विचारौ अहो द्विजराज अजौं दुख दीनको देखि लचौ॥
रसिकेश सु शीतलता तजिकै मुहिं हेत वृथा जनि तापतचौ॥
यह बात भली जु न मानहु तौ पछितैहौ घने बहु नाच नचौ॥
प्रथमै हिय कारो भयो पै अबै मुखकारो भये बिन नाहिं बचौ २७॥

दोहा—येही विधि सिय तियन प्रति, करति विलाप अपार ॥
दुखित हीय दुहुँ दृगनते, चली जात जलधार ॥ २८ ॥
गदगद कंठ सनेह मय, बहुरि कहे सिय बैन ॥
सखी सुमिरि पिय हीय गति, हौं सोचौं दिन रैन ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दुसह कलेश नित विरह व्यथाको सहौं पै न प्राणप्यारे ढिग प्राणहि पठाऊं मैं ॥ रसिकविहारी यो कठोर हिय मेरो तऊ करि करि हाय रैनि दिवस बिताऊं मैं ॥ प्रीतमको हीय अंग कोमल महाहै सखी कैसे दुख झेलैं याते ऐसी जिय चाऊं मैं ॥ जौंलौंहै वियोग तौलौं श्यामको सनेह मोमैं अधिक न होय यही ईशते मनाऊं मैं ॥ ३० ॥

दोहा—दशरथ राज किशोर नित, सब विधि मुदित रहायँ ॥
तौ तिनके सुखते सखी, हौं अति सुखी सदायँ ॥ ३१ ॥
याते हौं शिरनायकै, विनय करौं कर जोरि ॥
गिरिजापति पूजें सदा, यह अभिलाषा मोरि ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

दोऊ बंधु रूप गुणसिंधु दीनबंधु हेली परम सुधर्म सतकर्ममें सने रहें खल दल घालनको भक्त प्रतिपालनको सत्य प्रणयेई सदा हीयमें ठने रहें ॥ अंचल पसार बारबार वर माँगौ येही तन मन प्राणप्यारे मुदित घने रहें ॥ वसुधाबड़ाई वित्त वीरता समेत जैसी रसिकबिहारी सुखी संतत बने रहें ॥ ३३ ॥

दोहा—यौं कहि सिय पुनि नेह भरि, बिलखि कहे मृदुबैन ॥
हाय श्यामसुंदर वदन, कब देखौं भरिनैन ॥ ३४ ॥
सुनि कलादि नारी सबै, सियहि दई बहु धीर ॥
राज सुता अब वेगही, मिलन चहत रघुवीर ॥ ३५ ॥
सुनि बरबानि कलहि सिया, हिये लई लपटाय ॥
पुनि सबही आदर दियो, बहु विधि प्रीत बढ़ाय ॥ ३६ ॥
येही विधि नित जानकी, करि करि विविध विचार ॥
कहत रुचत सो विरह वश, नेक न रहत सम्हार ॥ ३७ ॥
सिय विलाप इमि अमितहै, कहँ लग करौ बखान।
वाल्मीकिं नाटक विविध, ग्रन्थ न माहिं प्रमान ॥ ३८ ॥

वाल्मीकीये सुंदर कांडे। सर्ग २८ ॥ श्लोक।

हा राम हा लक्ष्मण हा सुमित्रे हा राममातः सह मे जनन्यः ॥
एषा विपद्याम्यहमल्पभागा महार्णवे नौरिव मूढवाता ॥ १ ॥
हा राम सत्यव्रत दीर्घबाहो हा पूर्णचन्द्रप्रतिमानवक्त्र ॥
हा जीवलोकस्य हितः प्रियश्च वध्यां न मां वेत्सि हि राक्षसानाम् ॥२॥
अनन्यदेवत्वमियं क्षमा च भूमौ च शय्या नियमश्च धर्मे ॥
पतिव्रतात्वं विफलं ममेदं कृतं कृतघ्नेष्विव मानुषाणाम् ॥ ३ ॥

मोघं हि धर्मश्चरितो ममायं तथैकपत्नीत्वमिदं निरर्थकम् ॥
या त्वां न पश्यामि कृशा विवर्णा हीनात्वया संगमने निराशा ॥ ४ ॥
पितुर्निदेशं नियमेन कृत्वा वनान्निवृत्तश्चरितव्रतश्च ॥
स्त्रीभिस्तु मन्ये विपुलेक्षणाभिः संरंस्यसे वीतभयः कृतार्थः ॥ ५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनीविलाप
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा–सीता प्रेम वियोगको, कीनो कछू बखान ॥
नेह विरह रघुचंदको, वरणौं सहित प्रमान ॥ १ ॥
इत मारीचहि मारिकै, वेगि फिरे रघुलाल ॥
धनु शर साजे लपण उत, आये अतिहि उताल ॥ २ ॥
निरखि बंधुको चकित ह्वै, बोले अति अकुलाय ॥
कहौ कुशल हैं जानकी, किमि आये इत धाय ॥ ३ ॥
हाय लपण यह काकियों, सियहि अकेलि विहाय ।
इत आये बिनकाजहीं, असि धनुबाण सजाय ॥ ४ ॥
जानत हौ निशिचरनते, भई शत्रुता भूरि ॥
लखि सूनी हरि लेहिंगे, मेरी जीवनमूरि ॥ ५ ॥
पुनि कर गहि वर बंधुते, बूझी ह्वै अतिदीन ॥
सत्य कहौ प्यारी कुशल, क्यों तुव वदन मलीन ॥ ६ ॥
मम आज्ञा करि भंग तुम, इत आये किहि हेत ॥
राम वचन सुनि लपण ते, बनै न उत्तर देत ॥ ७ ॥
पुनि धरि धीरज जोरिकर, बोले दुखित निहोरि ॥
नाथ कही सो सत्य पै, मोरि कछू नहिं खोरि ॥ ८ ॥
कहि अनेक अनुचित वचन, हिए रोप वहु लाय ॥
वरियाई मुहिं जानकी, इत भेजो रघुराय ॥ ९ ॥
यों कहि पुनि वृत्तांत सब, रामहि लपण सुनाय ॥
बोले दुहुँ करजोरिकै, कहा दोप मम आय ॥ १० ॥
सुनि बोले रघुवंश मणि, तुम लछमन मतिमान ॥

तिय वाणी मानी हिये, ऐसे भये अयान ॥ ११ ॥
मूढ मत्त शिशु तिय दुखी, पांचहु एक समान ॥
इनके वचन सरोप सुनि, रोप न करैं सुजान ॥ १२ ॥
सो०—यों कहि पुनि रघुराय, लै उसास ह्वै सोचवश ॥
बोले अति अकुलाय, हाय लषण यह काकियो ॥ १३ ॥
मुहि इमि परत जनाय, पंचवटी सीता नहीं ॥
लीनीनिश्चर खाय, कै हरिकै हरि लै गयो ॥ १४ ॥
यों करि अमित विलाप, सोचत जल मोचत दृगन ॥
हृदय बढत संताप, छिन छिन चले उताल अति ॥ १५ ॥
बंधुसहित रघुवीर, आये आश्रम दूरिते ॥
सूनी निरखि कुटीर, भये अधीर सुवीर दुहुँ ॥ १६ ॥
तहँते आतुर धाय, आय परणशाला लखी ॥
विकल भये रघुराय, इत उत अविलोकत चहूँ ॥ १७ ॥
बोले निपट अधीर, हाय लषण प्यारी कहाँ ॥
कहूँ धनुप कहुँ तीर, गिरो गात कंपित भयो ॥ १८ ॥
पुनि अतिही अकुलाय, गिरे भूमि बिलपन लगे ॥
हाय प्रिया रटलाय, टेरत अरु हेरत चहूँ ॥ १९ ॥
बहुरि उठे रघुराय, धाय धाय हेरत विकल ॥
टेरत हैं चहुँ जाय, आवो प्यारी कित गई ॥ २० ॥
लषण अमित दुखछाय, धाय धाय हेरैं चहूँ ॥
कितहुँ न परै लखाय, तब पुनि खोजैं टेरि कै ॥ २१ ॥
येही विधि दुहुँ भाय, सर सरिता गिरि विपिन चहुँ ॥
धाय धाय अकुलाय, हेरी सियहि न कहुँ लखी ॥ २२ ॥
तब अति भये अधीर, रघुवर तन मन सुधि गई ॥
बढी विरह दुख पीर, धाय धाय बूझत सबहि ॥ २३ ॥
ताछिन कछु न जनाय, को हम किहिते का कहत ॥
जड़ चेतन इक भाय, सबहीते बूझन विकल ॥ २४ ॥
दोहा—पंकज सम कर पद मृदुल, पंकजसे दृग लाल ॥
हेपंकज ! कहु तुम लखी, पंकज बदनी बाल ॥ २५ ॥

मतंग मृगराज मृग मोदिशि निहारौ तो वियोगी दीन वागोंहों ॥ गोदावरि पंचवटी विटप विहंग वेलि मेरो दुख हरहु तिहारे पाँय लागोंहों ॥ क्षत्री जाति यदपि न याचिवो उचित मोको रसिक विहारी या विरह भीति भागोंहों । हो तो रघुराज पै विहाय सब लाज आज देहु मोहिं कोऊ मैं प्रियाको दान माँगौं हौं ॥ ३५ ॥

चौ०—यौं बहु सबहि निहोरत धाई ❀ कतहुँ न कछू प्रिया सुधिपाई॥
बैठे इक तरुतर अकुलाई ❀ तब बोले लछमनहिं रिसाई३६

घनाक्षरी कवित्त।

विकल वियोगी दीन अबल विलोकि मोतें जेते जड़ चेतन ते सबै मुख फेरो है ॥ रोय ह्वै अधीन कर जोर मैं सुनाई विनय दया करियेको नेक मोतन न हेरोहै॥ छिनमें विदारौं इन पापी अभिमानिनको जानत नरोप रघुवंशको करेरो है ॥ रसिकविहारी प्राणप्यारी ना बतावै कोउ आन तो लषन धनुबान कित मेरो है ॥ ३७ ॥ लोक तिहुँ जारौं सातो सागर सुखाय डारौं गिरिन ढहाय डारौं भूमि उलटाऊमैं ॥ रंचमें विदारि डारों दशो दिग पालनको खगन समेत शशि सूरहि गिराऊमैं ॥ नभते पताल लैकै कितहूँ कहूँ जो नेक रसिकविहारी प्राणप्यारी सुधि पाऊँ मैं ॥ जानकी न लाऊं तौ पै क्षत्रीना कहाऊँ राम नाम पलटाऊँ धनुबाणना उठाऊँ मैं ॥ ३८॥

सो०—रघुवर रोष निहारि, लषण कह्यौ कर जोरि के ॥
मिलि हैं जनक कुमारि, नाथ धीर उर धारिये ॥ ३९ ॥
मिलिहैं यह सुनि श्याम, विकल उठे अकुलायकै ॥
कहँ भामिनी ललाम, इत उत फिरि खोजन लगे ॥ ४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

हेरत चहूँघा हाय सीते कहि टेरतहैं रसिक विहारी प्यारी मिलि क्यों दुरानी है ॥ विरह व्यथाते है बिहाल रघुराय जैसे काहू भाँति तैसी गति जाय ना बखानींह ॥ उड़ि मग धूरि भूरि पूरि रही श्याम गात अधिक सुहात सो सुरंत दरशानी है ॥ हेरि निज नाथ तिय विरह दुखारी मनों भूमि अकुलाय धाय उर लपटानींह ॥ ४१ ॥

दोहा—राजकुँवर इमि दुखित अति, खोजत सिय चहूँ ओर ॥
कहुँ बूझत हेरत कहूं, कहुँ टेरत करि शोर ॥ ४२ ॥

धांय परणशाला लखत, धाय लखत वन जाय॥
प्रिया विरह व्याकुल निपट, विलपत करि करि हाय॥४३॥
कहुँ न मिली प्यारी तबै, परणशाल ढिग धाय॥
आय गिरे मूर्छित विकल, कहत बचन विलपाय॥ ४४॥

घनाक्षरी कवित्त।

चलत अपार जल धार दुहुँ नैननते नेक हू सम्हार सार हैन तन प्रानकी॥ झांवरो भयो है मुख बावरो भयो है चित्त धावरो भयो है जीय सुधि न अपानकी॥ रसिकविहारी धनुधारी सिय प्यारी बिन जैसे हैं दुखारी गति तैसी ना बखान की॥ लाय लाय सुरति प्रियाके गुण गाय गाय बोले विलपाय हाय हाय हाय जानकी॥ ४५॥ हाय मृगनैनी हाय प्यारी सुखदैनी हाय प्रिया वर वैनी विनतोहिं कित जाऊंमैं॥ हाय हाय जानकी सुहाय प्राण प्राणकी उहाय गति प्राण की या किहिको सुनाऊंमैं॥ रसिकविहारी हाय सुरति बिसारी प्यारी छिन छिन भारी कैसे दिवस बिताऊं मैं॥ हाय प्राणवल्लभा किशोरी क्यौं दुराय रही नेक मिल आय धाय अंकसो लगाऊं मैं॥ ४६॥ लाय जा सु अंक नेक बचन सुनाय जारी नाय जा हिये में रस मरत बचायजा॥ चाय जा दयातें प्रीति रीति में हिताय जारी ताय जा वियोग प्रिया प्रेमको निभायजा॥ भायजा घनेरी मनमोद उमगाय जारी गाय जा सुगीत की तनीतहि विछायजा॥ छायजा छबीली सुख रसिकविहारी प्यारी हाय फेर आय एक बार तौ मिलायजा॥ ४७॥ जीय अकुलावे तब कौन जो धरावे धीर हाय टक लाय चाय काको रूप हेरौं मैं॥ कोहि उमगाय धाय उर लगिजाय आय हिय हुलसाय काके गल भुज गेरौं मैं॥ नेह सरसाय को मनाय गहिलेवे अंक कोहि इमि जातें इतराय मुख फेरौं मैं॥ प्यार करि मोकों अब प्यारेको पुकार हाय रसिकविहारी काहि प्यारी कहि टेरौंमैं॥ ४८॥

दोहा—विरह बीर वाढ़ी अधिक, तन मनकी सुधि हैन॥
भयो चित्त भ्रम मत्त सम, बोलत अलबल बैन॥ ४९॥

सवैया कवित्त।

दूरहिते मुहिँ देखतहीं तहँ जाय दुरी छलतें रस भीनी ॥
आज प्रमोद मई रसिकेश विनोद की रीति नई चित दीनी ॥
बैठि रहीं पटघूँघट घाल सुमेरी विहाल दशा यह कीनी ॥
क्यों तरु ओट गही नवला अब आवो भला हौं कला लखिलीनी ॥
फेरि भुजा गहि आपने आपहि बोलत नेह भरे रघुराई ॥
हाय छबीली रहीं अबलों कित क्यौं यह आज लई निठुराई ॥
यौं कहि चौंकि चहूं चितवैं कहँ प्यारी गई विलपैं अकुलाई ॥
टेरैं बहोरि प्रिया इत आवोजू आवो तुमैं रसिकेश दुहाई ॥ ५१ ॥
पुनि बेलिन धाय गहैं भरि अंक निशंक हिये हुलसावत हैं ॥
यह वाटिका प्यारी रची करते कहि यौं अति नेह बढ़ावत हैं ॥
इत प्राणप्रिया नित डोलत ती रजलै रसिकेश लगावत हैं ॥
हरपावत हैं उमँगावत हैं अकुलावत हैं विलपावत हैं ॥ ५२ ॥

दोहा—यौं विलपत दिन बीति गो, अथवन लागो भान ॥
साँझ समै लखि राजसुत, प्राण अधिक अकुलान ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

विरह विहाल रघुराई को लखाई परी औचक ललाई मंजु अथवत भानकी। रसिकविहारी उमगाय उठिधाये वेगि बंधुहि बुलाय बोले भूली सुधि प्रानकी ॥ आवो वेगि धावो समुझावो औ मनावो गहि लावो तुम जावो आन मानैं हैं न आनकी ॥ आयकै परानी जात बहुरि हिरानी जात देखो देखो लषण दुरानी जात जानकी ॥ ५४ ॥

दोहा—निरखि दशा रघुलालकी, विकल सुमित्रा लाल ॥
गदगद हिय दृग जल बहत, बोले वचन विशाल ॥ ५५ ॥
देखि रावरी विकलता, मोजिय अति अकुलात ॥
जनक सुता मिलि हैं बहुरि, धीर धरौ उर तात ॥ ५६ ॥
सुनि सुबंधुके वचन वर, राम कही विलपाय।
पंचवटी प्यारी विना, मोपै लखी न जाय ॥ ५७ ॥
यों कहि लै धनुबान असि, कटि कसि वेगिं निषंग।
चले राम व्याकुल अतिहि, गमने लछमन संग ॥ ५८ ॥

सवैया कवित्त।

विरही समुझायहु धीर हिए नधरै न धरै न धरै न धरै ॥
जगलो गहि सो रसिकेश कछू न डरै न डरै न डरै न डरै ॥
निज प्रीतमके विन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भरै ॥
विधि काहुहि प्रीय विछोह कवौं न करै न करै न करै न करै ॥८१ ॥
फलहै तिहि के शत कर्मनको जिहिके जिय माहिं सदा कल है ॥
कल है नहिं जाहि कलेशनते न लगै कहुँ ताहि कछू भल है ॥
भल है रसिकेश सदा अति सो हठिकै दृढ़ प्रेमहि जो न लहै ॥
नल है निज मीत वियोग कवौं जगजीवनको सुयही फल है ॥८२ ॥

दोहा–इहि विधि वर्णत लषणतें, प्रीत विरह दुख भीति ॥
जनकसुतहि खोजत चहूँ, गई रैनिसववीति ॥ ८३ ॥
कहूँ न पाई प्रियहि पुनि, भये विकल रघुराय ॥
बंधु कंध धरिकै भुजा, बोले अति विलपाय ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंक द्युति चंपा अरु संपा चपलाई लई कंज कोमलाई मंजु गजगति लीनी है । लोचन कुरंग दंतदाडिम अधरबिंब पल्लव सुपानिहरं ग्री वा कंबु छीनी है॥श्रीफल उरोज केशपन्नग कुमार लीने रसिकविहारी यह प्यारी गति कीनी है । लंकहरिकानन कलंक औ मयंक मुख रंक सब लंक एक शंक मोहिं दीनी है ॥ ८५ ॥

दोहा–यों कहि करगहि लषणको, मग डगमग पग चाल ॥
कहत सियाको रूप गुण, बूझत चले विहाल ॥ ८६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

सुजन विहीन सुख हीन तनछीन दीन विकल अधीन सोकलीन दुख वोरीसी ॥ रसिकविहारी वरवेनी है विथोरी शीश विषम वियोगमें लथोरी बसथोरीसी ॥ विरह विलोरी नेह सिंधुमें हिलोरी वाल निपट न जोरी औ लजोरी अति भोरीसी । बूझो करजोरी प्रिया मोरि गई चोरी कोट देखी कहूँ नवलकिशोरी एक गोरीसी ॥८७ ॥ दूजी नाहि नारि जग जाकी अनुहारि और तेज गुण भारि त्यों अनूप छवि न्यारि है॥ पीत रंगसारी हेम भूषण विचित्र धारी चंपाद्युति

रसिकबिहारी चर अचर विलोकौ पै न प्रीत करि कोऊ सुखपायो काहूँ आज लौं ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त।

होत नहीं चित रंचहु चैन करै कतलाम वियोग छुरी है ॥
छूटत है कुलकानि औ लाज फिरै मन ज्यौं चहुँ तेजतुरी है ॥
जाहर होत जहानमें सो नरहैं कहुँ एकहु भांति दुरी है ॥
हायहहा अब कीजे कहा रसिकेश या इश्क बलाय बुरी है ॥ ७४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छूटि जात खान पान भूषन वसन भौन छूटि जात वित्त देश प्रेमकी पगनमें ॥ तात मात दारा पति पुत्र सखा बंधु छूटे तन मन प्रान छूटै नैनकी खगनमें ॥ रसिकबिहारी नेम धर्म परलोक लोक छूटि जात मोद बहु चित्तकी ठगनमें। येते सब छूटि जात रंचहु न लागै बार विरह न छूटै नेक नेहकी लगनमें ॥ ७५ ॥

दोहा—नेह सिंधु यह अगमहै, कोऊ लहै न अंत।
सत्य नेह तजि जगतमें, और नहीं कछु तंत ॥ ७६ ॥
हौं तौ सांचे नेहके, रहत सदा आधीन ॥
नेह अपूरव वस्तु तिहि, अबलौं लषण न चीन ॥ ७७ ॥
हाय लषण यह प्रीतकी, रीत प्रिया मम जान ॥
सो न निकट हौं नेहको, कासों करौं बखान ॥ ७८
लखो लषण प्यारी विना, हौं किमि भयो मलीन ॥
ऐसिहि ह्वैहै सीयकी, गतिमों संग विहीन ॥ ७९ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

देह विन प्रान जैसे दिन विन भान जैसे चूना विन पान जैसे कूप विन वारी है॥रैनि विन चंद जैसे तालविन कंज जैसे कुल विन पुत्र जैसे फूल विन क्यारीहै ॥ भूपविन भूमि जैसे पत्र विन वृक्ष जैसे दीप विन भौन जैसे वीर विन रारी है ॥ रसिकबिहारी जैसे प्यार विन यार सूनो प्यारी विन लाल तैसे लाल विन प्यारीहै॥ ८० ॥

सवैया कवित्त।

विरही समुझायहु धीर हिए नधरै न धरै न धरै न धरै ॥
जगलो गहि सो रसिकेश कछू न डरै न डरै न डरै न डरै ॥
निज प्रीतमके विन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भरै ॥
विधि काहुहि प्रीय विछोह कवौं न करै न करै न करै न करै ॥८१ ॥
फलहै तिहि के शत कर्मनको जिहिके जिय माहिं सदा कल है ॥
कल है नहिं जाहि कलेशनते न लगै कहुँ ताहि कछू भल है ॥
भल है रसिकेश सदा अति सो हठिके दृढ़ प्रेमहि जो न लहै ॥
नल है निज मीत वियोग कवौं जगजीवनको सुयही फल है ॥८२ ॥

दोहा–इहि विधि वर्णत लषणतें, प्रीत विरह दुख भीति ॥
जनकसुतहि खोजत चहूँ, गई रैनिसबबीति ॥ ८३ ॥
कहूँ न पाई प्रियहि पुनि, भये विकल रघुराय ॥
बंधु कंध धरिके भुजा, बोले अति बिलपाय ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंक द्युति चंपा अरु संपा चपलाई लई कंज कोमलाई मंजु गजगति लीनी है । लोचन कुरंग दंतदाडिम अधरबिंब पल्लव सुपानिहरें ग्रीवा कंबु छीनी है॥श्रीफल उरोज केशपन्नग कुमार लीने रसिकविहारी यह प्यारी गति कीनी है । लंकहरिकानन कलंक औ मयंक मुख रंक सब लैंक एक शंक मोहिं दीनी है ॥ ८५ ॥

दोहा–यों कहि करगहि लषणको, मग डगमग पग चाल ॥
कहत सियाको रूप गुण, बूझत चले विहाल ॥ ८६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

सुजन विहीन सुख हीन तनछीन दीन विकल अधीन सोकलीन दुख बोरीसी ॥ रसिकविहारी वरवेनी है विथोरी शीश विषम वियोगमें लथोरी वसथोरीसी ॥ विरह बिलोरी नेह सिंधुमें हिलोरी बाल निपट न जोरी औ लजोरी अति भोरीसी । बूझो करजोरी प्रिया मोरि गई चोरी कोउ देखी कहूँ नवलकिशोरी एक गोरीसी ॥८७ ॥
दूजी नाहिं नारी जग जाकी अनुहारी और तेज गुण भारी त्यों अनूप छवि न्यारी है॥ पीत रंगसारी हेम भूषण विचित्र धारी

हारी मंजुकेसरकी क्यारी है ॥ रसिकविहारी सुखकारी सो अपारीनव अति सुकुमारी चारु आनन उज्यारी है ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि ऐसी रूपवारी सो हमारी प्राणप्यारीहै ॥ ८८ ॥ अमल कपोलवारी मंजु मुख गोलवारी कोमल सुबोलवारी लोलदृगवारी है । पानिप अमोलवारी सुमति अडोलवारी कानन कलोलवारी हीय सुखकारीहै॥सुचित अलोलवारी सरस सुडोलवारी रसिकविहारी त्यों अतोल चाह धारी है ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावे वेगि ऐसी रूपवारी प्राणप्यारी सो हमारीहै ॥ ८९ ॥ दीपति अभंगवारी हृदय उमंगवारी छोटे अंग वारी रंग वारी ढंग वारीहै । झीने जीलवारी अति खीनेडीलवारी चारु वेनी लटवारी सुखदेनी सीलवारी है ॥ रसिकविहारी सटकारे कारे केशवारी वेस भेस वारी मिथिलेश देशवारी है । कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि प्यारी सो हमारी है जु ऐसी रूपवारीहै ॥ ९० ॥ भ्रुकुटी कमानवारी तीखे नैन बानवारी हँसनि कृपानवारीभारी सानवारीहै॥ वदन विशालवारी अधर प्रवाल वारी पानी पदलाल वारी मरालचालवारीहै॥ रसिकविहारी नेहवारी दिव्य देहवारी संतत अछेहवारी सत्य नेहवारी है ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि प्यारी सो हमारी है जु ऐसी रूपवारी है ॥ ९१ ॥

तोटक छंद ।

इमि दीन सुवैन जु बोलत हैं ॥ वनिता विरही वन डोलत हैं ॥
जबहीं नव फूलनको निरखैं ॥ तबहीं करि हाय हिए करखैं ॥९२ ॥
अविलोकि रसाल न मौरन को ॥ पुनि हेरि लता तरु ओरन को ॥
रघुलाल विहाल जु होय रहे ॥ अकुलाय मनोजहि वैन कहे ॥९३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

येरे मैन नृपति अनीति तू न ऐसी कर तोहिं निरमोही नेक दाया ना शरम है ॥ तोने बाणमोपे कहा मेलो हों वियोगी दीन जागे मम अंग विरहागिनी परम है ॥ रसिकविहारी टुक मो दिशि निहारि धीर धरि दे धनुष यह निंदित करम है ॥ वैसही मरोहों प्राणप्यारीके बिछोह हों तौ मृतकहि मारबो न वीरको धरमहै ॥ ९४ ॥

दोहा—यों कहि के कछु दूरि चालि, पुनि बोले रघुनाथ ॥
अरे मदन शर पाँचहू, छोड़ि हिये यकसाथ ॥ ९५ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

येरे पंचबाण पांचौ बाण भले मारे मोहिं वीर तुव रोप यह अति उपकारी भो ॥ सब दुख छूटो विरहानलकी ज्वालन ते तो शर समेत मम अंग जर छारी भो ॥ अब विन तीरके न ह्वैहै बरियाई तो पै मैन तू निरायुध निपट दुखकारी भो ॥ कोऊ भीति मानिहै कहूँ ना रंच तेरी सदा रसिकविहारी लोक सकल सुखारी भो ॥ ९६ ॥

सो०—या विधि विरह बिहाल, बिलपत हेरत फिरत हैं ॥
तिय बिछुरनकी ज्वाल, बढी न नेक सिरात है ॥ ९७ ॥
हेरत हेरत श्याम, बैठ गये मग बीचही ॥
निज मनहीं मन राम, सोचतहैं चित चकितह्वै ॥ ९८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

आजलों सुनीना कहूँ ऐसी रघुवंश माहिं रसिकविहारी भई जैसी यह बातहै ॥ ऐसो को तु है रघुवंशिनकी वाम ओर गति भविनव्यते न काहूको बसातहै ॥ इतै महि सासुके सँकोच सकुचात अति कुलपति भानु उतै तिनहिं लजातहैं ॥ नीचो अरु ऊंचो मुख करत न राम याते सोहैं दृग दीने बैठ मन अकुलातहैं ॥ ९९ ॥

सो०—येरु राजकुमार, लषण कहो अकुलायकै ॥
आतप तपनि अपार, इतते उठि तरुतर चलिय ॥ १०० ॥

भुजंगप्रयात छन्द।

सुनी बंधुकी वाणि राजीवनैना । तबै दीन ह्वै लाल बोले सुबैना ॥
जबै ते सिया प्राणप्यारी बिछोही । तबै ते सबै देतहैं ताप मोही ॥ १०१
शशी शीतहू सो घनो अंग जारै । प्रियापान सोऊ हिये बज्र मारै ॥
घरीहू रहै छानना धीर धारै । कटैहू न मोको भई रैनिभारी ॥ १०२ ॥
लगैं नैनमें शूलसे फूल लागें । करैं शोर पक्षी चहूँ दाग दागें ॥
परैं चन्दहू रंचना चित्त पागे । छबीली बिना शान्तहू भार लागे ॥ १०३
फटौं जाउँ पानी फटौं पा बनानैं । महा सोचको सिंधु केले नमानैं ॥
न फोड सकै मोहि ऐसो लखावै । धरावै हिये धीर प्यारी मिलावै ॥ १०४

चौ०-सुनि अधीर राघवकी बानी ❀ समुझाये लछमन गहि पानी ॥
तब कछु धीर धारि रघुराई ❀ बोले बहु गलानि उर छाई १०५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कनक कुरंग कहुँ आज लों न देखो सुनो ताके हेत बिनहिं बिचार उठि धायो मैं। नारिमत आयो खल छलको न ज्ञान लायो निपट दुरायो चेत सकल भुलायो मैं ॥ मोसम न कोऊ बुद्धिहीन है त्रिलोक माहिं रसिकबिहारी यह दृढ ठहरायो मैं ॥ ऐसी मति मेरी तो नशावतो समस्तकाज याते भई नीकी राजत्यागि बन आयो मैं ॥ १०६ ॥

दोहा—यों रघुवर वरबंधुसे, कहत अनेकन बात ॥
सोच विवश बिलपत विकल, सिय खोजत चहुँ जात १०७
मैं इत रघुवर विरहको, कीनो कछू बखान ॥
रामायण नाटक अधिक, देखो सकल सुजान ॥ १०८ ॥

प्र०। वाल्मीकीये ॥ आरण्यकांडे ॥ सर्ग ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ॥ श्लोक ॥

राक्षसं मृगरूपेण चरंतं कामरूपिणम् ॥ निहत्य रामो मारीचं तूर्णं पथि न्यवर्तत ॥ १ ॥ त्वरमाणो जगामाथ सीतादर्शनलालसः ॥ शून्यमावसथं दृष्ट्वा बभूवोद्विग्नमानसः ॥ २ ॥ यत्नान्मृगयमाणस्तु नाससाद वने प्रियाम् ॥ शोकरक्तेक्षणः श्रीमानुन्मत्तइव लक्ष्यते ॥ ३ ॥ वृक्षाद् वृक्षं प्रधावन्स गिरींश्चापि नदीं नदम् ॥ बभ्राम विलपन्रामः शोकपंकार्णवप्लुतः ॥ ४ ॥ ककुभः करभोरूं तां व्यक्तं जानाति मैथिलीम् ॥ लतापल्लवपुष्पाढ्यो भाति ह्येष वनस्पतिः ॥ ५ ॥ यदि ताल त्वया दृष्टा पक्वतालोपमस्तनी ॥ कथयस्व वरारोहां कारुण्यं यदि ते मयि ॥ ६ ॥ किं धावसि प्रिये नूनं दृष्टासि कमलेक्षणे ॥ वृक्षेणाच्छाद्य चात्मानं किं मां न प्रतिभाषसे ॥ ७ ॥ पीतकौशेयकेनासि सूचिता वरवर्णिनि ॥ धावंत्यपि मया दृष्टा तिष्ठ यद्यस्ति सौहृदम् ॥ ८ ॥ इत्येवं विलपन्रामः परिधावन्वनाद्वनम् ॥ क्वचिदुद्भ्रमते वेगात्क्वचिद्विभ्रमते बलात् ॥ ९ ॥ अदृष्ट्वा तत्र वैदेहीं संनिरीक्ष्य च सर्वशः ॥ रुदन्न् रामः प्राक्रुश्य प्रगृह्य रुचिरौ भुजौ ॥ १० ॥ सीतया रहितोऽहं

वै न हि जीवामि लक्ष्मण ॥ वृतं शोकेन महता सीताहरणजेन माम् ॥ ११ ॥ तन्मामुत्सृज्य हि वने गच्छायोध्यापुरीं शुभाम् ॥नत्वहं तां विना सीतां जीवेयं हि कथंच न ॥ १२ ॥ नमद्विधो दुष्कृतकर्मकारी मन्ये द्वितीयोस्ति वसुंधरायाम् ॥ शोकानुशोको हि परंपराया मामेव भिन्दन् हृदयं मनश्च ॥ १३ ॥ पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसकृत्कृतानि ॥ तत्रायमद्यापतितो विपाको दुःखेन दुःखं य दहं वसामि ॥ १४ ॥

पुनः ॥ हनुमन्नाटके ॥ श्लोक ।

आलिंगिताऽग्रसरसीरुहकोरकाक्षी पीताधरेति मधुरे विधुमंडलस्य ॥ रंगावतारमकरंदविमर्दितानि पुष्पाण्यमूनि दयिते क्वगतेत्यरोदित ॥ ॥ १५ ॥ हा जानकि प्रचलितोत्पलपत्रनेत्रे हा मे मनः कमलकाननराजहंसि ॥ एष प्रिये तव वियोगजवह्निदग्धो दीनं प्रयामि भवतीं प्रविलोकयामि ॥ १६ ॥ इत्यादि ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० रघुनंदनविलाप

वर्णनो नाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

दोहा—कहत परस्पर वचन बहु, सोच विवश अकुलात ॥
सिय खोजत दुहुँ बंधु चहुँ, विपिन चले मग जात ॥ १ ॥
कछुकदूर चलिके लखे, कानन पंथ मझार ॥
रुधिर बिंदु जहँ तहँ परे, अरु विनाशित द्रुमडार ॥ २ ॥
तिहि आगे भूतल परो, रथ खंडित धनुबान ॥
अरु निश्चर पद चिह्न महि, देखत हिय अकुलान ॥ ३ ॥
तिहि विलोकि विलपायकै, कहो लषण सों राम ॥
इह निश्चर सिय हेतु जनु, कियो इहां संग्राम ॥ ४ ॥
यों सोचत कछु और चलि, लख्यो गृद्ध मग बीच ॥
तिहि विलोकि रघुवर कही, सिय लीनी यहि नीच ॥ ५ ॥
ए निश्चर पद सिय भखी, गृद्ध रूप धरिलीन ॥
क्रोध सोच वश बंधु सों, धनुष बान कर लीन ॥ ६ ॥

चौ०-निकट जाय अविलोको ताही ❀ तब जानो जटायु यह आही ॥
धाय राम तिहि अंक लगायो ❀ भये विकल कछु वचन न आयो ७॥
पुनि बूझी रघुवर तिहि बाता ❀ सो कछु कही विकल विलपाता ॥
सकल कथा वर्णन नहिं पायो ❀ तो लग प्राण कंठमधि आयो ८ ॥
तिहि रघुवीर अंक गहि राखो ❀ सो खग राम राम इमि भाषो ॥
हेरिवदन दिशि दृग भरि आँसू ❀ गृद्धराज त्याजो तनु आसू ९ ॥
गीधमरन लखि सानुज रामा ❀ कियो विलाप अतिहि तिहि ठामा॥
पुनि निजकरते समय समाना ❀ रामकृत्य किय सहित विधाना १०
तहँते चले बहुरि दुहुँ भाई ❀ दृग भरि करत जटायु बड़ाई ॥
खोजत फिरत सियहि चहुँ ओरा ❀ इकनिश्चरी मिली वन घोरा ११॥
उदर दीह कुच जंघन छाये ❀ दंत कराल केशविखराये ॥
कलुप अंग लीने मृगव्याला ❀ भक्षण करत निशंक निहाला १२
सो निशाचरी लपणहि देखी ❀ भई हृदय आनंद विशेपी ॥
धाय आय कर गहि लपटानी ❀ बोली मदन विवश ह्वै वानी १३॥
है अजामुखी नाम अनूपा ❀ मोसम तिय न कहूँ सुठिरूपा ॥
चलौ इतै घन विपिन अपारा ❀ तहँ हम तुम मिलि करहिं विहारा १४
सुनत वचन लछमन तिहि डाटी ❀ दुहुँ कुच श्रवण नासिका काटी ॥
सो कुरूप ह्वै अतिहि डरानी ❀ घोर शोर करि विकल परानी १५
चले बंधु दुहुँ पुनि निरभीता ❀ विपिन चहूँ दिशि खोजत सीता॥
लखो फेरि इक निश्चर भारी ❀ निपट कराल रूप भयकारी १६॥
शीश विहीन ग्रीव तनु कारो ❀ आनन उदर थूल वपु भारो ॥
विशिख दंत शोणित लपटाना ❀ दुहुँ भुज इक योजन परमाना १७
सो कवंध निज भुजा पसारी ❀ गहि लीने दोऊ धनुधारी ॥
भये विवश परि निश्चर हाथा ❀ दुख बहु लहो लपण रघुनाथा १८
पुनि औसर लखि राजकुमारा ❀ वेगि कृपानतान खर धारा ॥
दक्षिण भुजा राम तिहि काटी ❀ वाम बाहु लछमन द्रुत छाटी १९॥
भयो विकल जब तब अकुलाई ❀ बूझी सुनि जाने रघुराई ॥
पुनि नृपसुत पूछो तिहि हाला ❀ कहो कवंध समस्त उताला २०॥

निश्चर हो मैं सुभग अनूपा ❀ मुनिन सताऊं धारि कुरूपा ॥
तव अस्थूलशिरा ऋषि कोही ❀ दीनी घोर शाप यह मोही॥२१॥
खल तुव यह वपु रहै सदाई ❀ सुनि हों गिरो चरण पर धाई ॥
तव मुनि कही राम वन ऐहैं ❀ दुहुँ भुज काटि दाह तुहि दैहैं२२॥
शुद्ध रूप ताही छिन ह्वैहै ❀ रघुवर कृपा परम सुख पैहै ॥
सुनि मुनि वचन हीय हरपाना ❀ पुनि मैं विपिन महा तप ठाना२३
सो लखि विधि प्रसन्न अति भयऊ ❀ दीर्घ आयु हो यह वर दयऊ ॥
तव निशंक हों सुरपति धामा ❀ कीनो जाय भूरि संग्रामा २४ ॥
कियो इंद्र तव वज्र प्रहारा ❀ गयो शीश मो उदर मझारा ॥
सो गति लखिहौं भये दुखारी ❀ बहु सुरेश प्रति विनय उचारी २५॥

दोहा—नाथ मोहिं अव आजते, जिहि विधि मिलै अहार ॥
कृपा लाय हिय देवपति, कीजे सो उपचार ॥ २६ ॥
तव सुरेश करिके दया, दियो मोहिं वरदान ॥
लंबित हो तुव भुज दुहूँ, योजन येक प्रमाण ॥ २७ ॥
पुनि तुव दुहुँ भुज काटि हैं, राम लषण वन माहिं ॥
दिव्य देह धारि अमरपुर, प्रमुदित सुखी रहाहिं ॥ २८ ॥
भयो सिद्धिवर इंद्रको, तवते विपिन रहाउँ ॥
करि केहरि मृग मनुप हों, नित प्रति धरि धरि खाउँ ॥२९॥
सुनि कवंधवच बंधु दुहुँ, सिय सुधि पूछी ताहि ॥
सो भाषी मुहिं शाप वश, अवहिं ज्ञान कछु नाहिं ॥ ३० ॥
सर रचि मो तनु दाहिये, तव सुदिव्य तनु पाय ॥
यथा शक्ति वर्णन करौं, सीता मिलन उपाय ॥ ३१ ॥
सुनत बंधु दुहुँ सर रचो, तामधि तिहि वैठार ॥
दाह किया प्रगटो सु तव, सुभग शुद्ध वपु धार ॥ ३२ ॥
कही सु तव हे राजसुत, कपि सुकंठ ढिग जाय ॥
करौ मिताई सो तुमैं, देह सीय मिलाय ॥ ३३ ॥
पुनि मतंग वन वसति इक, नारी शवरी नाम ॥
शुद्ध भक्त तुव वृद्ध तिहि, दरश दीजियो राम ॥ ३४ ॥

नाम ठाम गिरि विपिन मग, रामहि सकल बताय ॥
गयो कबंध सु देवपुर, दुहुँ बंधुन शिरनाय ॥ ३५ ॥

हरिगीतिका छंद।

इमि सुगतिकरि सुकबंधकी दुहुँ बंधु पुनि तहँते चले ॥
बूझत विलोकत सियहि खोजत कर सजे धनु शर भले ॥
इत राम शबरी मिलन आतुर जात हिय उमगात है ॥
अनुरागिनी रघुचंद दरशनहेत उत हरषात है ॥ ३६ ॥
जब ते सुनी सबरी कि रघुवर चित्रकूटहि छाय हैं ॥
तहँ वास करि सानंद पुनि युत बंधु इहि दिशि आय हैं ॥
तबते सदा उठि प्रातही बहु दूर लौं मग झारही ॥
पुनि धाय छिन छिन जाय उर उमगाय पंथ निहारही ३७॥
कबहूं सुनिर्तत मगन मन सिय राम गुणगण गायकै ॥
कबहूं दुहूं दृग मूँदि बैठत श्याम ध्यान लगाय कै ॥
कबहूं अनेक विचार करि करि हीय होत हिरास है ॥
कबहूं मुदित मन हँसत शबरी लगी दरशन आश है ॥ ३८॥
कबहूँ विचारत राम मेरे भवन किहि विधि आय हैं ॥
जो आय हैं तो भीलनी गुणि मुहिं न पद परसाय हैं ॥
कबहूं कहत मनमाहिं यों रघुवीर परम दयाल हैं ॥
लखि दीन दैहैं दरश मो कहँ सत्य जन प्रणपाल हैं॥३९॥
कबहूं विपिनविच जाय बीनत बेर हिय हुलसायकै ॥
तिन चीखि मीठे जानि रघुवर हेत धरत सुखायकै ॥
कबहूं निहोरी मुनीन भाषत नाथ नहिं विसराइयो ॥
तुवधाम आवैं राम तो मुहि दूरतें दरशाइयो ॥ ४० ॥
इहि भांति शबरी रहति निशिदिन रामपद अनुरागिनी ॥
तिहि धन्य भक्ति अनन्य पूरन शुद्धतिय बडभागिनी ॥
जिय जानि प्रीति प्रतीति सांची रामहिय हुलसायकै ॥
सौमित्र संयुत दरशदीनो ताहि बेगहि आयकै ॥ ४१ ॥
…। निरखि रामहि धाय उर उमगायकै चरणनपरी ॥

आनंद जल भरिनैन गदगद वैन वर विनती करी ॥
सिय नाथ शवरी हाथ गहि वेगै उठाई धीरते ॥
सोगहे लछमन पाँय धोये नेह युत दृग नीरते ॥ ४२ ॥
पुनि लाय शुचितृणसाथरी सुविछाय वहु सनमानिकै ॥
हुलसाय वेगहि धाय जाय सुवेर दीने आनिकै ॥
रघुराय नेह वढाय लै सुख पाय सो फल खात हैं ॥
तिहि वार वार सराहि वहु विधि मुदित हिय वतरात हैं ॥ ४३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

विविध विधानके अनेक पकवान जेते होतहैं जहान मेरी जानसव सीठेहैं ॥ रसिकविहारी फल सरस रसाल आदि तेऊ यह स्वाद पाय सकल उवीठे हैं ॥ कंद मूल अधिक अतुल रुचिकारी सोऊ एकहू न इनकीं समान मोहिं दीठेहैं॥रंचहून सीठे ना उवीठेयोंनदीठे कहूं लपण कहौतो सत्य कैसेवेर मीठे हैं॥४४॥ब्रह्मके उपासी तपराशी वनवासी वर विपुल मुनीशनके आश्रम सिधायो मैं ॥ कीनि सनमान तिन सहित विधान तऊ काहू ठौर कवहुँ न पेट भरि खायो मैं ॥ अमृत समान शवरीके इन वेरनमें रसिकविहारी मन भायो स्वाद पायो मैं ॥ अवध विहाय वन आयो जव ते हों वंधु तवते विचारि सत्य आजही अवायो मैं ॥ ४५ ॥

दोहा—शवरी सुनि रघुवर वचन, हिय फूली न समाय ॥
धाय धायकै छिनहि छिन, देत मधुर फल लाय ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

वेर वेर वेरलै सराहै वेर वेर वहु रसिकविहारी देत वंधु कहैं फेर फेर ॥ चाखि चाखि भाषें यह वाहु ते महान मीठो लेहु तो लपण यों वखानतहैं हेरहेर ॥ वेर वेर देवै वेर शवरीसु वेर वेर तोऊ रघुवीर वेर वेर तिहि टेर टेर ॥ वेरजानि लावो वेर वेर जनि लावो वेर वेर जनि लावो वेर लावो कहैं वेर वेर ॥ ४७ ॥

सो०—इहि विधि रघुकुल चंद, अशन कियो फल वंधु युत ॥
शवरी प्रीति सानंद, वोले सत्य सनेह भरि ॥ ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सदन सिधाऊँ पाऊँ व्यंजन अनेक तऊ याके सम एकहू पदारथ न तूलैगो॥ करि करि प्यार मातु अशन करैहैं जब मेरे हीय तबहिं सनेह यह झूलैगो॥ आजको अपार सुख कहँलो बखानौ सब छिन छिन नित प्रति चित्त अति फूलैगो॥ शबरी तिहारे इन बेरनको स्व द मोहिं रसिकबिहारी कहूं कबहूं न भूलैगो॥ ४९॥

दोहा—यौंहीं परम प्रमोद भरि, बचन कहे बहु राम॥
सुनि शबरी मन मुदित ह्वै, विनय करी अभिराम॥ ५०॥

चौ०—ताही छिन सब मुनि सुधिपाई ❀ लषण सहित आये रघुराई॥
शबरीके आश्रम पग धारे ❀ यह सुनि लजित भये ऋषि सारे॥
भक्तिअधीन राम कहँ जानी ❀ आये तहँ मुनिवर विज्ञानी॥
मिले यथोचित लछमन रामा ❀ बैठे सब शबरीके धामा॥५२॥
राम लषण अरु मुनि समुदाई ❀ करत परस्पर विनय बडाई॥
पुनि ऋषिवर बोले धनुधारी ❀ हम इत जल बिन रहत दुखारी
है सर सुभग भरो गंभीरा ❀ पै नहिं ग्रहण योग तिहि नीरा॥
रुधिर बरन बन कीट अपारा ❀ बहु कुगंध नहिं जाय निहारा५४
सो रघुवर तुव पद परसावै ❀ तौ वह नीर शुद्ध ह्वै जावै॥
सुनि बूझी सियनाथ प्रवीना ❀ किहि कारण जल भयो मलीना॥
तब मुनि कही हेतु यह आई ❀ शबरी न्हातरही निशिजाई॥
औचक एक समै लखि लीनी ❀ ताही दिवस बरजि यहि दीनी५६
पै सुनीर इन बहु दिन परसो ❀ याते मलिन भयो सर सरसो॥
अब तुव चरण लागि शुचि होवै ❀ हम सबको अपार दुख खोवै५७
सुनि रघुनाथ कही मृदुबानी ❀ हौसमस्त मुनिवर विज्ञानी॥
परम शुद्ध शबरी कहँ जानौ ❀ याते कछु दुरभाव न मानौ ५८॥
शबरी अबहिं संग तुव जावै ❀ सर नीरहि निज पद परसावै॥
ोय तड़ाग शुद्ध इहिकाला ❀ सकल अमल जल लेहु उताला५९
कहि पुनि बोले रघुबीरा ❀ सुनहु सकल मुनिगण मतिधीरा॥
। रंचहु छल छिद्र न राखौं ❀ जो इहि रुच सत्य सो भाखौं६०

दोहा—योग याग जप त्याग तप, नेम धर्म व्रत दान ॥
इन सबहीते अधिक मुहि, सत्यसनेह सुहान ॥ ६१ ॥
ऊँच नीच कोऊ करै, सत्य प्रीति मो माहिं ॥
होय अधमते अधमपै, तिहि वश रहौं सदाहिं ॥ ६२ ॥
सुख दुख संपति विपतिमें; जिहि दृढ़ ममविश्वास ॥
हौं ताकी दुहुँ लोक मधि, पूजौं सिगरी आस ॥ ६३ ॥
जो मेरो जनहोइकै, करै और की आस ॥
ताको नामहु सुनतही, मोजिय होत उदास ॥ ६४ ॥
सोरठा—इमि अनेक वरबैन, रघुवरके सुनि मुनि सकल ॥
भरे प्रेम जल नैन, भयो महा आनंद उर ॥ ६५ ॥
ऋषि समस्त मतिमान, विविध भाँति अस्तुतिकरी ॥
जै जै कृपानिधान, अधम उधारन धर्म धर ॥ ६६ ॥
चौ०—पुनि मुनि राम रजायसुपाई ❀ शबरिहि सरतट गये लिवाई ॥
तहँ बोले समस्त ऋषि ज्ञानी ❀ परसावो पद सुनि सकुचानी ६७
पुनि शबरी रामहि शिर नायो ❀ सर जल माँहिं स्वपद परसायो॥
भयो शुद्ध पगलगत सुनीरा ❀ निरखत रहे चकित मुनिधीरा ६८
सब ऋषि धन्यवाद तिहि दीना ❀ आये रघुवर निकट प्रवीना ॥
तिनहि यथोचित मिलि दुहुँ भाई ❀ बिदाकिये आनंद बढ़ाई ॥६९॥
पुनि शबरिहि बूझी रघुराई ❀ तुम कछु जनकसुता सुधि पाई॥
सुनि बोली सुकंठ ढिगजावो ❀ तिहिसहायते सीतहि पावो७०॥
तब रघुनाथ कहीतिहि पाहीं ❀ तब गुरु थल हम देखन चाहीं ॥
सुनि शबरी दुहुँ नृप सुत संगा ❀ चलि दरशायो सहित उमंगा७१
विपिन विचित्र लता द्रुम नाना ❀ परमरम्य नहि जाय बखाना ॥
विमल प्रकाश रैनि दिन रहई ❀ त्रिविध समीर सुखद नित बहई७२
सत्यासिंधु जलमय सरसोंहीं ❀ जिहि लखि मान सरोवर मोहीं॥
दल फल फूल सकल सब काला ❀ रहैं एक ढिग केहरि व्याला७३॥
लखि मतंगवन केर प्रभावा ❀ राम लषण हिय बहु सुख पावा॥
पुनि शबरिहि बोले रघुराई ❀ जाहु धाम अब हिय हुलसाई७४

तब शबरी रघुवर पगलागी ❀ करि बहु विनय भक्ति दृढ माँगी॥
शुद्ध प्रीति लखि कृपानिधाना ❀ दियो यथारुचि तिहि वरदाना ७५
पुनि शबरी सर विरचि उताला ❀ दही देह योगानलज्वाला ॥
दिव्यरूप लहि बैठि विमाना ❀ मुदित कियो सुरधाम पयाना ७६

दोहा—उत शबरी धरि दिव्य तन, मुदित गई सुरधाम ।
इत सुग्रीवहि मिलनहित, चले बंधु युत राम ॥ ७७ ॥
सीतहि खोजत बंधु दुहुँ, चहुँ गिरि विपिन मझार ॥
आये पंपासर निकट, हेरी छटा अपार ॥ ७८ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० वनअटन वर्णनो नाम चतुर्थोविभागः ॥४॥

दोहा—पंपासर शोभित विशद, विमल नीर गंभीर ।
सुभग विपिन दरशत चहूँ, सरसत त्रिविध समीर ॥ १ ॥
द्रुम वल्ली दल फूल फल, विविध अनूपम रंग ।
छाय रहो ऋतुराज चहुँ, कूजत विपुल विहंग ॥ २ ॥
लखि वसंतऋतु राम अति, विलपत प्रिया विहीन ।
ह्वै अधीर गहि बंधु कर, कहत वचन अति दीन ॥ ३ ॥
जनकसुतहि खोजत लषण, वीति गये द्वैमास ।
कछु न मिली सुधि अजहुँलों, अब जिय होत निराश ॥ ४ ॥
हाय प्राणप्यारी विना, अब किमि धारौं धीर ।
मिलि ऋतुपति रतिपति हिये, मारत तकि तकि तीर ॥ ५ ॥
अविलोको किहि भाँति चहुँ, छाय रहो ऋतुराज ।
फिरैं मत्त मधुपान करि, प्रमुदित मधुप समाज ॥ ६ ॥

घनाक्षरी कवित ।

झूमेहैं चहुंघा गजराजसे रसाल भूमि घूमैंहैं समीर तेज तरल तुरंगज्यौं।
किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनके प्यादे भांति भांति लसे
महित उमंग त्यों ॥ छाई नव वल्ली छटा छहर रही है बनी तेई रथ
गाजें मोर भ्रमत अभंग क्यों ॥ रसिकबिहारी साज साज ऋतुराज
आयो छायो बन बाग मेना लीने चतुरंग यों ॥ ७ ॥ कहूं भौंर गुंजे
मंद सरस सुहाये सुर कोकिला अलाप कहूं मधुर उचारे हैं ॥ कहूं
कहूं पल्लव मृदुल छवि छाये कहूं महक प्रसूननकी कहूं सुख सारे हैं॥

कहूं चटकाहट गुलाबनकी लोनी प्रात कहूं शर मैन नर नारिनको मारैं हैं। रसिकविहारी साज नागरी सिंगारैं कहूँ अजब अनोखी ये बसंतकी बहारैं हैं ॥ ८ ॥ बेलिन बसंत ज्यों नवेलिन बसंत वन वागन बसंत रंग रागन बसंत है ॥ कुंजन बसंत दिज पुंजन बसंत अलि गुंजन बसंत चहुँ ओरन बसंत हे ॥ छैलन बसंत अरु फैलन बसंत संग खेलन बसंत बहु गैलन बसंत है ॥ रसिकविहारी नैन सैननमें बैननमें जितै अविलोको तितै बरसै बसंत है ॥ ९ ॥ निर्तत मयूर महा मुदित मयूरी मिलि मत्त अलि डोलैं लिये अलिनीलसंत सो। रसिकविहारी कीर सारिका सुकोकिलादि करत कलोल कोलि कूजत हसंतसो ॥ निज निज नारी संग अपर विहारी चहूँ खेद जड चेतनंको सकल न संत सो। संत सम सुखद वसंत सबहीको यह प्यारी विन मोको भयो दुखद असंतसो ॥ १० ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक।

अयं वसंतः सौमित्रे नानाविहगनादितः ॥ सीतया विप्रहीनस्य शोकसंदीपनो मम ॥ १ ॥ संतापयति सौमित्रे क्रूरश्चैत्रवनानिलः ॥ अमी मयूराः शोभंते प्रनृत्यंतस्ततस्ततः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा-इहिविधि बहु वर्णन करत, लखि वसंत चहुँ ओर ॥
प्राणप्रिया विन विकल अति, बिलपत राजकिशोर ॥ ११ ॥
इत उत हेरत लषण युत, ऋष्यमूक गिरि पास ॥
आये फिरत मतंग वन, सिय विन निपट हिरास ॥ १२ ॥
तहँ गिरिपर कपि पंचये, हनूमान सुग्रीव ॥
तार नील नल रहत नित, परम भीम बलसीव ॥ १३ ॥

चौ०-जब सुग्रीव लखे दुहुँ वीरा ❀ तब हनुमंतहि कही अधीरा ॥
भेद लेहु वेगे तुम जाई ❀ का किहि हेत फिरें इहि ठाई ॥ १४ ॥
तब हनुमान विप्र तनु धारी ❀ आय जैति वर गिरा उचारी ॥
पुनि कर जोरि विनय युत रीती ❀ बूझी कपि सब कथा सप्रीती ॥ १५ ॥
सुनि लछमन गुण ज्ञान निधाना ❀ निज चारित्र सब कियो बखाना ॥
तब हनुमंत स्वामि पहिचाने ❀ पुलकि सप्रेम चरण लपटाने ॥ १६ ॥
पुनि लछमन बूझो कपि हाला ❀ कहो पवनसुत सकल उताला ॥
राम बंधु सुनि अति हरषाने ❀ बोले वहुरि सत्य हित माने ॥ १७ ॥

घनाक्षरी कवित।

जाकी इंद्र वरुण कुबेर कृपा चाहैं सदा जाके नारदादि ऋषि सेवत चरणहैं ॥ परम प्रचंड खल खंडिवे उदंड जाके दोऊ भुजदंड दिन दुखके हरणहैं॥चक्रवर्त्ति नरेश अवधेशके किशोर वीर संतत त्रिलोकहूके पालन करणहैं ॥ धीर धनुधारी तिय विरह दुखारी राम रसिकविहारी सो सुकंठके शरणहैं ॥ १८ ॥

प्र० ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ४ ॥ श्लोक ॥

यस्य प्रसादे सततं प्रसीदेयुरिमाः प्रजाः ॥ स रामो वानरेंद्रस्य प्रसादमभिकांक्षते ॥ ३ ॥ सर्वलोकस्य धर्मात्मा शरण्यः शरणंपुरा ॥ गुरुर्मे राघवः सोयं सुग्रीवं शरणं गतः॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०—सुनि अंजनिसुत विनती कीनी ❀ कहिसुकंठ गति धीरज दीनी॥
पुनि कपि रूप धारि हनुमाना ❀ लै निज कंध दोउ बलवाना ॥ १९॥
ऋष्यमूक गिरि पर द्रुत आये ❀ प्रमुदित हाल समस्त जनाये ॥
सुनि सुग्रीव धाय ढिग जाई ❀ परे चरण आनंद अघाई॥ २०॥
तब रघुवर उठि अंक लगाये ❀ नीति प्रीति मय वचन सुनाये ॥
सुनि सुग्रीव परम सुखमाना ❀ निज निज गति दुहुँ कीन बखाना२१

दोहा—पुनि रघुवर सुग्रीव दुहुँ, शिपि साखी विच दीन ॥
प्रीति निरंतर परस्पर, शुद्ध सत्य दृढ कीन ॥ २२ ॥
राम कही हति बालि हौं, तुमैं करौं कपिराय ॥
मुदित कही सुग्रीव मैं, दैहौं सियहि मिलाय ॥ २३ ॥
पुनि बैठे इक ठौर मिलि, गहे परस्पर हाथ ॥
वर्णत निज निज शोक गति, दुहुँ सुकंठ रघुनाथ ॥ २४ ॥

चौ०—ताछिन सुग्रीवहि सुधि आई ❀ बोले अति आतुर उमगाई ॥
शीत काल आतप सुखपाई ❀ हौं कपि युत बैठो रघुराई ॥ २५॥
ताही छिन नभते इहि ठाई ❀ भूषण गिरे अचानक आई ॥
को जानै किहिके सो आहीं ❀ लै धरि दये कंदरा माहीं ॥ २६ ॥
वर भूषण अमोल सुठि रूपा ❀ कंचन मय मणि जटित अनूपा ॥
पै अब हौं सुसत्य अनुमानी ❀ हैं ध्रुव जनकसुताके जानी॥२७॥

सुनि सुग्रीव वचन रघुराई ❀ बोले सपदि प्रेम उमगाई ॥
हाय सखा कित वेगहि लावो ❀ सो प्रिय भूषण मोहिं दिखावो॥२८॥
सुनि सुकंठ अति आतुर जाई ❀ रामहिं दिये सुभूषण लाई ॥
उठि रघुवीर हुलसि हिय लीने ❀ हैं निज प्राणप्रियाके चीने ॥ २९॥

घनाक्षरी-कवित्त।

भूषण सु लेतही पिछाने निज लाँडिलीके हिय हुलसायो अति रसिकविहारीको॥कारि कारि प्यार फेरि फेरि तिहि हेरैं श्याम कलित केयूर मंजु रूप उजियारीको ॥ चूमि चूमि कुंडल निहारैं नेह ऊमि ऊमि वार वार धारैं कर जानि सुकुमारीको ॥ भरि भरि नैन वैन वोलैं उर लाय लाय हाय यह नूपुर हमारी प्राणप्यारीको ॥ ३० ॥

दोहा—यों सिय भूषण हेरि के, प्रेम विवश रघुवीर ॥
करत विलाप विहाल अति, तन मन भयो अधीर ॥ ३१ ॥
पुनि बोले वर बंधुसे, राघव अति बिलपाय ॥
भूषण प्राण अधारके, लखौ लषण ये आय ॥ ३२ ॥
रामानुज कर ले निरखि, भरे नीर दुहुँ नैन ॥
गदगद कंठ सनेह मय, कहे सत्य वर वैन ॥ ३३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अमल अमोल गोल कुंडल प्रकाशमान ऐसो दरशात कोऊ राजभामिनीको है ॥ तैसही अमंद भुजवंद चंद ते दुचंद दीपति सु दिव्य दुतिहारी दामिनीको है ॥ परम पुनीत पद भूषण अनूप चारु पूजनीय संतत त्रिलोक नामिनीको है ॥ रसिकविहारी और नाहिं पहिचानें एक जानें यह नूपुर हमारी स्वामिनीको है ॥ ३४ ॥

चौ०—सुनि सुबंधुवाणी रघुराई ❀ ले उसाँस बोले बिलपाई ॥
हैं तिहुँ भूषण प्राणप्रियाके ❀ पाये आज अधार जियाके ॥ ३५ ॥
यों कहि पुनि सुकंठ प्रति भाखे ❀ सो भूषण लगाय उर राखे ॥
कहो सखाको हरी जानकी ❀ कितलैगयो अधार प्राणकी ॥३६॥
सुनि सुग्रीव कही मृदुवानी ❀ को कहँको कितगो
प दिय धीर धरो रघुराई ❀ हो लैहों सिय

यों कहि पुनि बहु धीर धराई ❀ राम सुकंठ लये हि
बोले वचन नेह दुख साने ❀ बिरही हम तुम दोउ मिल
बहुरि कही रघुवर सो भाषो ❀ किहि कारण वाली ड्रा
सुनि सुकंठ बोले कर जोरी ❀ राजकुँवर कछु मोरि न खो

सो०–मायावी जिहि नाम, असुर जु आयो इक र
वालि कियो संग्राम, भ्रात संग हौंहू रहो ॥ ४०
पुनि सो असुर पराय, जाय धसो महि विवर म
वालि क्रोधवश धाय, तिहि पाछे प्रविशो तहाँ
मोहिं राखि बिल द्वार, भ्रात कहो यक पक्षलों
नहिं आऊं तिहिमार, तौ लखियो हौं हत भयो ॥
मैं तिहि आयसुधार, तितहि रहो यक मास ल
शोणित तबै अपार, बहो नदी सम विवरतें ॥ ४३
भ्रात वचन हौं पाय, जानो वाली हत भयो ॥
शिला विवर मुख लाय, आयो भय दुख शोक व
तब पुर लखि पतिहीन, सब मंत्री हित बंधु मि
राज तिलक मुहिं कीन, करन लगो नृपकाज सब
कछु दिन गये कपीश, ताहि मारि आयो सदन ॥
करी मोहिं लखि रीस, कहि कटु वच ताडन किय
हरिलीनी ममनारि, एक बसन दै मोहिंसो ॥
गृहते दियो निकारि, प्राणघात लाई तऊ ॥ ४७ ।
तिहि भयते चहुँ ओर, बिकल फिरो बहु वर्षलों ।
इहां शाप अति घोर, याते रहौं निशंक इत ॥ ४८
सुनि सुकंठके बैन, दुखित भये जल नैन भरि ॥
बोले करुणाऐन, वेगि वालि हौं मारिहौं ॥ ४९ ॥

चौ०–राम वचन सुनिकै सुग्रीवा ❀ कही नाथ वाली बल
अकथनीय ताको पुरुषारथ ❀ सुनो सकल मैं कहौं यथारथ

दिनकर उदै होन नाहिं पावैं ❀ चहूं सिंधु संध्या करि आवैं ॥५१॥
कबहूँ कीश कोलि जिय लावै ❀ तव गहि गिरि नभ ओर चलावै ॥
पुनि कंदुक सम सो कर झेले ❀ इहि विधि अमित बार वन खेलै ५२

दोहा–अपर वालि वल सुनिय प्रभु, दैत्य दुंदुभी नाम ॥
जिहि सहस्रगजमत्त वल, गिरि समान वपु राम ॥ ५३ ॥
असुर मत्त सो युद्ध हित, गयो सिंधुके पास ॥
ताहि विलोकि नदीशके, उर छाई बहु त्रास ॥ ५४ ॥
तव पयोधि सविनय कही, हम तुव लायक नाहिं ॥
वली हिमंचल करहिंगे, युद्ध जाहु तिन पाहिं ॥ ५५ ॥
सुनि दुंदुभि हिमगिरि निकट, आयो अतिहि उताल ॥
गौरि पिता तिहि देखिकै, भये निपट वेहाल ॥ ५६ ॥
तव कर जोरि अधीन ह्वै, बोले वचन गिरीश ॥
तुमते भिरै सु एकहै, वाली वली कपीश ॥ ५७ ॥
सुनत दुंदुभी महिप वपु, गिरि समान विकराल ॥
किष्किधामधि घोररव, कीनो आय उताल ॥ ५८ ॥
सो सुनि वाली क्रोध युत, धाय कीन बहु युद्ध ॥
अमित काल लग परस्पर, रहे दुहूँ रण रुद्ध ॥ ५९ ॥
पुनि कपीश तिहि वध कियो, गहि महि पटक पछार ॥
दुंदुभिमुख दृग श्रवणते, चली रुधिरकी धार ॥ ६० ॥
पुनि वाली कर तोलि तिहि, वपु फेंको रिस ठान ॥
सो मतंग आश्रम परो, योजन एक प्रमान ॥ ६१ ॥
रुधिर विंदु बहु मुनि निकट, परे भयो अति शोर ॥
धाये चौंकि मतंगवन, लखो महिप मृत घोर ॥ ६२ ॥
गिरि समान तनु गिरतहीं, भो बहु विपिन विनाश ।
कियो क्रोध सो देखिकै, मुनि मतंग तपराश ॥ ६३ ॥
त्रिकालज्ञ ऋषि ध्यान धरि, लखो वालिकृत हाल ॥
तव कपीशहित क्रोधवश, दीनो शाप कराल ॥ ६४ ॥
मम आश्रम वाली कबहुँ, अवि योजन माहिं ॥

सहस खंड तिहि शीशके, तौतत्क्षण ह्वै जाहिं ॥ ६५ ॥
ताते वालि न आवही, इत इक योजन माहिं ॥
याते हौं इहि ठौर अति, निर्भय रहो सदाहिं ॥ ६६ ॥
चौ०–यौं सुकंठ वाली बलगाथा ❀ कहत सुनत लछमन रघुनाथा॥
सहजहि डोलत विपिन मझारा ❀ पंचकोश दुहुँ राजकुमारा ॥ ६७॥
सो दुंदुभी अस्थि अति भारी ❀ गिरिसम निरखि लषण धनुधारी॥
बामचरण ते सहज उठायो ❀ द्वैशत धनुष प्रमाण बहायो॥६८॥
पुनि सुग्रीव कही रघुवीरा ❀ कपिपति महाबली रणधीरा ॥
याते मुहिं अपनी कदराई ❀ तिहि वध सहज न परत जनाई६९॥
दोहा–धनुष प्रमाण कहावही, अर्ध अधिक त्रैहस्त ॥
सो द्वै शत धनु अस्थि यह, फेंको लषण समस्त ॥ ७० ॥
पैविलोकि ये राजसुत, वाली बल है भूरि ॥
द्वैशत धनुते होत है, यक योजन बहु दूरि ॥ ७१ ॥
चौ०–सुनि सुग्रीव वचन रघुराई ❀ कहि बहु वीर रीति समुझाई॥
बहुरि सुहिय विचार ठहराई ❀ तिन प्रतीत हित सहज सिधाई७२
सो दुंदुभि वपु अतुलित भारी ❀ रघुवर पद अंगुष्ट निज धारी॥
सहज पँवारि दियो बलवाना ❀ परो सु दश योजन परमाना७३॥
दोहा–सो लखि कही सुकंठ पुनि, बल न कछू विलगान ॥
तब वाली दुहुँ मध्यको, अधिक सु न्यून समान ॥ ७४ ॥
सहित रुधिर त्वच मांस गरु, वाली फेको ताहि ॥
शुष्कभयो बहु दिवस हरु, अब मेलो प्रभु याहि ॥ ७५ ॥
चौ०–सुनि रघुनाथ कही मुसक्याई ❀ तुव उर जिमि प्रतीति ठहराई ॥
बरणो वेगि सु हम दरशावैं ❀ जिहि लखि सब निश्चय उर लावैं७६॥
तब सुग्रीव कही रघुलाला ❀ शाल सात ये विटप विशाला ॥
गहि वाली झकझोरत जबहीं ❀ पत्र हीन होवें तरु तबहीं ॥७७॥
सो प्रभु यक शरते तरु एका ❀ पत्र हीन कीजे धरि टेका ॥
तब तब बल वाली समजानों ❀ तिहि वधकी प्रतीत उर आनों ७८
सुनि सुग्रीव वचन बलवाना ❀ सातहु तरु वेधे इक वाना ॥
पत्री पत्र हीन करि पत्री ❀ प्रविशो तृण प्रवेशि धरत्री॥७९॥

सो प्रभाव लखिकै सुग्रीवा ॐ जानी दृढ रघुवर बलसींवा ॥
गहि पद कीनी विनय सप्रीती ॐ नाथ मोहिं अब भै परतीती ८०॥

दोहा–इहि विधि करि बहु चरित पुनि, आप कियो विश्राम ॥
सह सुकंठ रघुवर लषण, अपर कीश बलधाम ॥ ८१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीरामसुग्रीवमिलन
वर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दोहा–पंपासरते सरस शुचि, लाये लषण प्रवीन ॥
कंद मूल फल फूल मधु, स्वादित खग मृग मीन ॥ १ ॥
करि कबंधवाणी सुरति, अशन कियो हरपाय ॥
खग मीनन को स्वाद बहु, वर्णत हैं रघुराय ॥ २ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये । आरण्यकांडे ॥ सर्ग ७२ ॥ श्लोक ।

घृतपिंडोपमान् स्थूलान्तान्द्विजान् भक्षयिष्यथ ॥ रोहितांश्चक्रतुंडांश्च नलमीनांश्च राघव ॥ १ ॥ पंपायामिषुभिर्मत्स्यांस्तत्र राम वरान्हतान् ॥ निस्त्वक्पक्षानयस्ततप्तानकृशाऽनेककंटकान् ॥ २ ॥ तव भक्त्यासमायुक्तो लक्ष्मणः संप्रदास्यति ॥ भृशं तान्खादतो मत्स्यान्पंपायाः पुष्पसंचये ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोधई छन्द ।

यों प्रमुदित कछु दिवस रहे पुनि कही सचहि श्रीरामा ॥
करिहौ वेगि वालिवध गमनो सजिकिष्किंधा ग्रामा ॥
दै आज्ञा गहि बाण शरासन चलेसबंधु उताला ॥
संग सुकंठ आदि कपि पाँचहुँ हर्षित बलीविशाला ॥
जाय नगरसन्निध सब वनमधि गहि तरु ओट विराजे ॥ १ ॥
पाय रजाय सुकंठ आय तुर पुरिद्वार बहु गाजे ॥
सुनि वाली क्रोधित ह्वै धायो भिरे सबल सुग्रीवा ॥
दोउ भ्रात द्वंद्वयुद्ध अति दुहुँ अमित बलसींवा ॥ २ ॥
इत उत लखत सुकंठ सुयुद्धन तब करि क्रोध हरीशा ॥
हने अमित तरुमुष्टि वज्रसम वेधुरि धरि भुज शीशा ॥
है विहाल सुग्रीव पराने ऋष्यमूक वनलीना ॥

वालि न गयो शापभय तहँते भवन गवन द्रुत कीना ॥ ५ ॥
जाय सुकंठ विकल रघुवर सो कही नाथभल कीना ॥
दै विश्वास पठाय भिरायो फेर फेर मुख लीना ॥
सुनि श्रीराम अंक भरि भाषी हौ दोऊ इकसारा ॥
हौं ताही भ्रम भीति विवश ह्वै बाण न कियो प्रहारा ॥ ६ ॥
यौं कहि राम सुकंठ कंठमधि गज पुष्पी पहिराई ॥
भाषी जाहु चिह्न अब लखिकै ध्रुव मारौं कपिराई ॥
प्रभुरजाय वश चले सुगल पुनि फिरि फिरि हेरत पाछे ॥
दृढ़ करि हीय आय पुर द्वारे गर्जत भये सु आछे ॥ ७ ॥
सुनि वाली पुनि उठो क्रोध वश तब तारा सब भाषी ॥
राम सुकंठ मित्रता प्रथमहि जो सुतमुख सुनिराषी ॥
सो तिय शीश हरीश नमानी भिरो आय बलवानां ॥
दोऊ भ्रात विरुद्ध क्रुद्ध भरि उद्ध युद्ध बहु ठाना ॥ ८ ॥
भये थकित सुग्रीव विकल पुनि हेरत बारहिंबारा ॥
तब रघुवर तरु ओट दूरते बाण वालि उर मारा ॥
गिरो कपीश भूमि विह्वल ह्वै साजि शर राघव धाये ॥
दुहूँ बंधु चहुँ कपि संयुत द्रुत तासु निकट चलि आये ॥ ९ ॥
तिनहि निहारि वालि इमि भाषी यह न वीरको धर्मा ॥
क्षत्री ह्वै भूपति दुरि मारो कीनो राम अकर्मा ॥
तब रघुवीर कही सुन हरिपति अनुज वधू तू लीनी ॥
याते तोहिं दंड वध दीनो नाहिं अनीति कछु कीनी ॥ १० ॥
इहि विधि दुहुँ कटु मृदुल बैन बहु कहे वालि अरु रामा ॥
तजो प्राण कपि भयो शोर चहुँ सब धाये तजि धामा ॥
तारा अरु अंगद बहु विलपत आरतगिरा पुकारी ॥
कीश ऋच्छ किष्किंधावासी रुदन करत नर नारी ॥ ११ ॥
तब रघुवीर धीर दै सबही सुग्रीवहि समुझाई ॥
मृतक क्रिया वर सविधि यथोचित सकल सपादि करवाई ॥
पुनि आज्ञा दे अनुजहि प्रमुदित द्रुत भेजो रघुनाथा ॥
जाय लपण पुर साजि सुकंठहि कियो तिलक कपिनाथा ॥ १२ ॥

इहि विधि वालिहिमारि राम अरु करि सुग्रीवहि राजा ॥
हनुमंतहि मंत्री दृढ़ थापो अंगदको युवराजा ॥
तारा भ्रात नारि निज नारी रुमासहित कपिनाथा ॥
रहत सदा सानंद राज लहि विलसत भये सनाथा ॥ १३ ॥
बरषा काल निरखि श्रीरघुवर सानुज गिरि पर छाये ॥
परमरम्य कंदरा शिलावर द्रुम फल फूल सुहाये ॥
पावसऋतु लखि राम विरह वश प्यारी विन अकुलाहीं ॥
नैन नीर भरि दीन वैन बहु बोलत अति बिलपाहीं ॥ १४ ॥
दोहा—बरषा हिय करषा करत, रंच दया हिय नाहिं ॥
विरहीको जिय लेन को, मदन पठायो माहिं ॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कीधौं विरहीके प्राण दाहे धूम धुंधर ये कीधौं है सपक्ष गिरि उडत उतंग हैं ॥ कीधौं ऋतु पावसके विविध वितान तने कीधौं नभ मंडलमें तरल तुरंग हैं ॥ रसिकविहारी कीधौं बालक निशाके श्याम कीधौं बरषाके दूत डोलत सुढंग हैं ॥ कीधौं युगमासके विलासके अवास सोहैं छूटे किधौं मदन महीपके मतंग हैं ॥ १६ ॥

आवत चहूंघा वन घेरि नभ मंडलमें करत अँध्यारी भारी गरजत जोरसे ॥ दुरि दुरि दौरि विज्जु छटा छहरात ज्योंही त्योंही तरु तोरैं पौन प्रबल झकोरसे ॥ रसिकविहारी मोर मुदित पुकारतहैं जित तित झिल्ली झनकारत हैं जोरसे ॥ वरसत नीर धारा धरणी धरै न धीर होत हैं अधीर सब मदन मरोरसे ॥ १७ ॥

घुमडि घनेरे घहरात वन घेर घेर झूम झूम घूम घूम मंडित घमंड है ॥ रैनि अँधियारी कारी कारी भयकारी भारी जोरते झकोरैं पौन प्रबल प्रचंड है॥दादुर दिमाक दरशावें दिशि चारों भले झिल्ली झनकारैं सुरदीरघ अखंड है॥रसिकविहारी दुति दामिनी दमकै देखि अबला सशंक यह पावस उदंड है ॥ १८ ॥

धावैं हैं वलाक झुंड झुंड नभमंडलमें नीके कोकिलानके नग्स सुर माचैं हैं ॥ गुंजत मधुप पुंज पुंजनमें कुंजनमें बोलत पपीहा पीउ पीउ रंग राचैं हैं॥ रसिकविहारी उर आनँद अपार होन पावसके

साज सबै सांचे सुख सांचे हैं ॥ लरज उठें हैं सुनि मेघकी गरज
देखौ बागनमें मुदित मयूरगण नाचें हैं ॥ १९ ॥

सवैया कवित ।

झूमिरहीं द्रुमडौरें चहूँ दिशि भूमि हरीं लखि होत हरो हिय ॥
लोनी लता लपटीं तरु अंगन मानो नवेली रहीं मिलिकें पिय ॥
इन्द्र वधू छवि छावें चहूँ रसिकेशविलोकतही हुलसे हिय।
श्याम मनाये न मानतीं जो सोई आपुहिते तजिमान मिलें तिय २०॥
बरसै वहु नीर फुहारनतें अविलोकि घनो विरहासरसै ॥
सरसै दुख देखत कुंजनको रसिकेश मनोज जहां दरसै ॥
दरसै चहुँ प्राविट रूप अनूप वियोगिनी हाय हिये तरसै ॥
तरसै घनश्याम विना घनश्याम लखे छिन बीतत है बरसै ॥ २१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

घन गरजैंह किधौं दुंदुभीरसेशकी है छाये मेघ कीधौं तने पावस वितान हैं ॥ संपाकी दमक कीधौं चमक कृपाणनकी कीधौं नीर बुंदैं कीधौं मदनके वान हैं ॥ पवन प्रचंड कीधौं दूती या विरहकी है रसिकविहारी ऋतु कीधौं भूपसानहै ॥ उडत बलाक कीधौं आनँद वियोगिनके जरत जवासे किधौं विरहीके प्रान हैं ॥ २२ ॥ हीय मुददानी रतिरानीके प्रगट भयो पावस सपूत पूत सब सुखदाई है ॥ सुनि हरपायकै सिधाई चारु इन्द्रवधू मघवा अनंद ह्वै अमीकी झरि लाई है ॥ निर्तत कलानि कल कोकिल करैंहैं गान दल फल फूल सौंज दिशन सजाईहै ॥ रसिकविहारी घन गरज मची है आज मदन नरेश द्वार बाजत बंधाई है ॥ २३ ॥

दोहा—यौं वहु विधि वर्णत विलखि, लखि पावस भरि नैन ॥
विरह विवश अति दीन पुनि, रघुवर बोले बैन ॥ २४ ॥

सवैया कवित ।

अति शीतल मंद सुगंध समीर सदा तिहि को तनु जापरसौ ॥
कल कोकिल चातक मोर मलिंद उतै रव मंजु महा सरसौ।
वर इंद्र वधू वक दामिनि हो नवभामिनिके ढिग जा दरसौ ॥
रसिकेश जहाँ मम प्राणप्रिया घन वेरि घनें तहँ जा वरसौ ॥ २५ ॥

दोहा—इमि कहि पुनि वर बंधुसे, बोले निरखि अधीर ॥
सुनो सुनो हेरो लषण, प्यारी गति मति धीर ॥ २६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

धाय धाय बैठत कदंब जंबु अंबनके चाय टकलाय लाय मेरी ओर हेरैहैं ॥ आय आय बोले बार बार छाय छाय शोर भाय भाय डोलै डार डार चहुँ फेरै है ॥ जाय जाय दुरत घरीक प्रीति पाय पाय रसिकविहारी रहै इत उत नेरैहै ॥ जीव तरसावै पीउ पीउ रटलावै हाय होयकै पपीहा प्राण प्यारी मोहिं टेरै है ॥ २७ ॥

दोहा—इमि पावस लखि राजसुत, विलपत होत अधीर ॥
अमित भांति समुझायकै, लषण धरावै धीर ॥ २८ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ किष्किंधाकांडे ॥ सर्ग ॥ २८ ॥ श्लोक।

अयं स कालः संप्राप्तः समयोऽद्यजलागमः ॥ संपश्यत्वं नभो मेघैः संवृतं गिरिसन्निभैः ॥ १ ॥ क्वचिद्बाष्पाभिसंरुद्धान्वर्षागमसमुत्सुकान् ॥ कुटजान्पश्य सौमित्रे पुष्पितान्गिरिसानुषु ॥ मम शोकाभिभूतस्य कामसंदीपनान्स्थितान् ॥ ५ ॥ इत्यादि ॥

इति श्री०रा०र०वि०वि०वालिवधवर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०—इहि विधि राजकिशोर, पावस विलपि वितीत किय ॥
शरद निरखि चहुँ ओर, काजसमै गुणि मुदित भे ॥ १ ॥
उत प्रथमै हनुमान, सुरति दिवाय सुकंठको ॥
भेजे बहु बलवान, सुभट बुलावन हेतु चहुँ ॥ २ ॥

चौ०—इत रघुवीर लषण प्रति भाषी ❀ लखो सुकंठ सुरति नहिं राखी ॥
राज तीय लहि के सुखसारो ❀ भये मत्त ममकाज विसारो ॥ २ ॥
इहि विधि राम क्रोध करि भारी ❀ कही लषण जावो धनुधारी ॥
कहो वेगि वनचरहि बुझाई ❀ अब विलंब तुव नाहिं भलाई ॥ ४ ॥
सुनि लछमन धनु शर कर धारी ❀ आये क्रोधित नगर मझारी ॥
राजद्वार मधि खवर जनाई ❀ अंतर गये रजाय मँगाई ॥ ५ ॥
गृह पैठत किय धनुप टँकोरा ❀ पूरित भयो शोर चहुँ ओरा ॥
लषण क्रोध लखि अंगद धाई ❀ कपिनाथहि गति सकल सुनाई ६ ॥
लषण कोप सुनिकै हरिपाला ❀ भेजी तारहि निरखि उताला ॥

सो सुंदरी आय शिरनाई ❀ करि बहु विनय सुधीर धराई ॥७॥
तारा अरु अंगद हनुमाना ❀ करि बहु विनय सहित सनमाना॥
सादर लै सँग महल पधारे ❀ जाय लषण कपिपतिहि निहारे ८॥
सदन विचित्र अनूपम साजे ❀ कंचनमय आसन वर भ्राजे॥
रुमा रूप मय गल भुज धारी ❀ अपर अनेक लसैं नवनारी ॥९॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये। किष्किन्धाकांडे सर्ग ॥ ३२ ॥ श्लोक।

दिव्याभरणमालाभिः प्रमदाभिः समंततः ॥ संरब्धतररक्ताक्षो-बभूवांतकसन्निभः ॥ १ ॥ रुमां तु वीरः परिरभ्य गाढं वरासनस्थो वरहेमवर्णः ॥ ददर्श सौमित्रिमदीनसत्त्वं विशालनेत्रः स विशालनेत्रम् ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-लषण हि देखि उठे कपिपाला ❀ राम बंधु कह वचन कराला॥
तव तारा पुनि बहु समुझाये ❀ कही सुभट हरिनाथ बुलाये ॥१०॥
सो सुनि लषण धीर उर धारी ❀ तब सुकंठ वर गिरा उचारी॥
तन धन प्राण राज परिवारा ❀ हौं अर्पण किय प्रभु हित सारा ११॥
यौं कहि पुनि उताल शिष दीनी ❀ पवनपुत्र प्रति आयसु कीनी॥
महि मंडल जेते कपि ऋच्छा ❀ आवैं वेगि सकल ममशिच्छा १२॥
सुनि कपि पुनि भेजे भट धाये ❀ नभ मग वेगि विपुल चहुँ जाये॥
मिलि सुकंठ लछमन दुहुँ अंका ❀ बैठे मुदित एक परयंका ॥ १३॥
पुनि सुग्रीव तियन शिष दीना ❀ निज निज ठाम गमन सब कीना॥
वेगहि शिविका सुभग मँगाई ❀ बैठे लषण सहित कपिराई ॥ १४॥
छत्र चमर व्यजनादिक साजा ❀ लिये यथोचित कीश समाजा॥
सुभट शस्त्रधारी बहु संगा ❀ आये प्रभु ढिग सहित उमंगा॥ १५॥
दूरहि उतरि यानते कीशा ❀ लज्जित प्रभुपद नायो शीशा॥
राम सखहि उठि अंक लगावा ❀ सादर गहि समीप बैठावा॥ १६॥
तब सुकंठ बहु विनती कीनी ❀ रामनीति मय वर शिष दीनी॥
ताही छिन कपि ऋच्छ अपारा ❀ आये विविध वीर बरियारा १७

दोहा–महि मंडल जेते सकल, हैं कपि ऋच्छ विशाल॥
ते हरीश आज्ञा सुनत, आये मुदित उताल ॥ १८॥

कीशपतिहि रामहि सबै, सादर नायो शीश ॥
भये मुदित प्रभु हेरिकै, अगणित ऋच्छ शुकीश ॥ १९ ॥
तब सुग्रीव बुलाय ढिग, मुख्य मुख्य कपि ऋच्छ ॥
करी सबहि भय प्रीत युत,सिया शोध हित शिच्छ ॥२० ॥
कही वेगि तिहुँ लोकमें, हेरो सीतहि जाय ॥
दिवस पंचदश मध्यद्रुत, आवो शोध लगाय ॥ २१ ॥
विनत नाम कपियूथपति, तिनहिं सुकंठ बुलाय ॥
कही सुभट तुम सीयको, शोधहु पूरब जाय ॥ २२ ॥
हनुमत ऋच्छप बालिसुत, नीलादिकन नृपाल ॥
भाषी दक्षिण दिशि सबै, सीतहि लखौ उताल ॥ २३ ॥
पश्चिम दिशा सुषेणको, सादर कह कपिराय ॥
पुनि शतबलीसुकीशको, उत्तर दई रजाय ॥ २४ ॥
इमि चहुँ दिशि अरु विदिशि पुनि, सातहु स्वर्ग पताल ॥
वहु भूगोल खगोल युत, सब भाषे हरि पाल ॥ २५ ॥
सो०—सुनि बूझी रघुवीर, सखा सकल ये किमि लखे ॥
कही सुकंठ सुधीर, भ्रात भीति भागे तबै ॥ २६ ॥
तब रघुवर मुसक्याय, बोले गई सुभीति अब ॥
सुनि सुकंठ शिरनाय, कही सु मम पौरुष कहा ॥ २७ ॥
प्रभु तव कृपा प्रभाय, कन अनु होय सुमेरु सम ॥
नेकरोष ह्वै जाय, सुरगिरिहो लघुरजहुते ॥२८ ॥
दोहा—यों कहि पुनि हनुमानको, भाषी निकट बुलाय ॥
राम काज सिधि होय जिमि, सो कीजो मनलाय ॥ २९ ॥
चौ०—तब लखि राम हिये हुलसाई ॥ पवनपुत्र कह ढिग बैठाई ॥
दई मुद्रिका अति अभिरामा ॥ जामधि वर अंकित निजनामा ॥३०॥
दे मुद्रिका कही पुनि रामा ॥ हो कपि वीर बुद्धि गुण धामा ॥
नीति प्रीति जस बल गुणलीजो ॥ होवै सिद्धि काज यह कीजो ॥३१॥
सुनि हनुमंत आदि सब वीरा ॥ नाय शीश कहि जै रघुवीरा ॥
गमन कियो तिमि ले भट साथा ॥ जिमि रजाय दीनो कपिनाथा ३२

चलत समय भाषी कपिराई ❀ जो ऐहैं सिय शोध लगाई ॥
सो अति ही आनंद अंघे है ❀ नाम धाम धन ग्राम सुपैहै॥२३॥
सुनि गमने सब हिय हुलसाई ❀ खोजत फिरत सियहि चहुँ धाई॥
तिहूँ लोक कपि ऋच्छ सिधावें ❀ कितहूँ कहूँ सो ध नहिं पावें ॥२४॥
इमि पश्चिम उत्तर अरु प्राची ❀ खोजी सब दिशि रंच न बाची॥
नभ पाताल हेरि चहुँ आये ❀ विवश वचन कपिपतिहि सुनाये२५
दक्षिण हनुमंतादिक बीरा ❀ खोजत सीतहि भये अधीरा ॥
निर्जल निर्जन वन गिरि भूरी ❀ हेरे नगर देश बहु दूरी ॥ २६ ॥
इमि खोजत इक दिवस सुबीरा ❀ भये तृपातुर निपट अधीरा ॥
तिहि थल मध्य नीर कहुँ नाहीं ❀ धाय धाय हेरें चहुँवाहीं ॥ २७॥
तहाँ भूमि इक विवर लखाना ❀ ताढिग आये सब बलवाना ॥
आरद पक्ष हेरि खगनाना ❀ है इत जल यह दृढ़ अनुमाना२८
तब सबही यह कीन विचारा ❀ अविलोकिय चलि विवर मझारा
निरखो बिल द्वारा चहुँ ओरा ❀ अगम पंथ छायो तम घोरा२९॥
भयवश जाय सकत नहिं कोई ❀ तब हनुमंत अग्र हठि होई ॥
एक एक कर गहि सब गौने ❀ पैठे विवर सभै धरि मौने ॥४०॥
गये सुयोजन एक प्रमाणा ❀ तब तहँ अति प्रकाश दरशाना॥
भवन बाग सर परम अनूपा ❀ लसै एक तिय वृद्ध स्वरूपा४१॥
तिहि विलोकि सब कीन प्रणामा ❀ पुनि बूझी किहिको यह धामा ॥
कही सु मयदानव कर ठामा ❀ है कपि स्वयंप्रभा मम नामा४२॥
सुनि रजाय लै फल दल खाये ❀ करि जलपान अनंद अघाये ॥
तासु निकट पुनि सब मिलि आये ❀ सो बूझी को तुम कहँ आय४३॥
तब कपि कही सकल तिहि बाता ❀ सुनि बोली सो तिय हे ताता ॥
पैहौ सीतहि संशय नाहीं ❀ वीर धीर धारौ मन माहीं ॥४४॥
पुनि कपि कही ताहि कर जोरी ❀ करु सहाय माता अब मोरी ॥
महाअंध मग सूझत नाहीं ❀ किमि हम विवर द्वार फिरि जाहीं४५॥
तब तिहि कही कृपालु सुहोई ❀ ह्यांते निसारिसकै नहिं कोई ॥
पै तुम रामदास हो याते ❀ मूँदहु नैन जाहु इहि ठाँते ॥४६॥

सुनि सब निज निज कर दृग ढांके ❀ मूँदे पलक रंच नहिं झांके ॥
स्वयंप्रभा तपबल तिन काढे ❀ लखें वीर सागरतट ठाढे ॥४७॥

दोहा–सबही चित चकृत लखें, कहत बचे अब प्राण ॥
गये हुते किहि हेतु तहँ, भयो आनको आन ॥ ४८ ॥
सिंधुतीर गिरि पै सकल, बैठे सोच कराहिं ॥
किमि जैये कपिराज ढिग, काज भयो कछु नाहिं ॥ ४९ ॥
भाषी अवधि हरीश सो, बीति गये दिन और ॥
गये हते नृप याहिते, मरण भलो इहि ठौर ॥ ५० ॥
राम काज हित तनु लगै, दोऊ लोक बनाय ॥
लखौ जटायू गीध किमि, सुखी भयो गति पाय ॥ ५१ ॥

चौ०–इमि लिय जब जटायु कर नामा। तासु भ्रात सो सुनि तिहि ठामा
प्रगटो मंद मंद वपु भारी ❀ पंख विहीन भूरि भयकारी ५२॥
ताहि देखि सब भीत जु मानी ❀ सो भाषी सुधीर मृदुबानी ॥
कहौ अभय प्रथमहिं कह बरनी ❀ है कित किमि जटायुकी करनी ५३
तब अंगद सब कथा कहाई ❀ सुनि सुगीध भाषी बिलपाई ॥
मोहिं लै चलहू सागर तीरा ❀ देहुँ जटायु बंधु कहँ नीरा ॥५४॥
तब सब ताहि सिंधु तट आनो ❀ सो बंधुहि जल दै दुखमानो ॥
बोलत भयो कपिन समुझाई ❀ रहो जटायु मोर लघुभाई ५५॥
एक समय हम दुहुँ अभिमानी ❀ उड़ि रवि निकट चले हठ ठानी ॥
जबहीं गये प्रकाश मँझारी ❀ तब नहिं सही गई तप भारी ५६॥
दोऊ प्राण कंठ मधि आयो ❀ पंख झांपि हौं बंधु बचायो ॥
ताछिन भानु तेज मम पक्षा ❀ जरे गिरो मैं ह्वै निरपक्षा ॥ ५७ ॥
परे आय इत निपट बिहाला ❀ इहाँ निशाकर मुनी दयाला ॥
करत रहे तप सो मुहि हेरी ❀ कियो सचेत शीश कर फेरी ५८॥
पुनि मुनि कही अयोध्याधामा ❀ दशरथ सुत ह्वै है श्रीरामा ॥
तासु तीय निशिचर हरि लैहै ❀ तिहि शोधन कपि नाथ लगैहै ५९
चहुँ ओर बहु सुभट सिधावैं ❀ खोजत कोश भालु इत आवैं ॥
सिया शोध तुम तिनहि बतैहो ❀ ताही समय पंख पुनि पैहो। ६०॥

दोहा—यौं कहि भापी गीध पुनि, संपाती मम नाम ॥
सब वृद्धनको भूप हौं, पै अब भयो निकाम ॥ ६१ ॥
जरठ पक्ष बिन हीनवल, बनै इतो अब काम ॥
पुनि गिरि पै मुहि लै चलौ, कहौं सिया जिहि ठाम ॥ ६२॥
सुनि प्रसन्न ह्वै सपदि सब, संपातिहि कर धारि ॥
लाय उच्च गिरि शिखर पै, सादर दिय बैठारि ॥ ६३ ॥
संपाती तब देखि कै, दक्षिण शीश उठाय ॥
कही इहाँ ते मोहिँ सब, सम्मुख परत लखाय ॥ ६४ ॥
निरखत कोश सहसलों, गीध दृष्टि इमि होय ॥
दूर विलोकन हेत कहुँ, समता करै न कोय ॥ ६५ ॥
सो लखि सत्य बखान हूँ, करौ प्रतीति निशंक ॥
शत योजन इहि ठामते, सिंधुपार पुरलंक ॥ ६६ ॥
तहाँ निशाचर अमितहैं, भूपति रावण नाम ॥
सो सीतहि हरि लै गयो, बैठी दुखी सुठाम ॥ ६७ ॥
यौं वर्णत संपातिके, प्रगट भये वर पक्ष ॥
सब आयो विश्वास दृढ़, निरख प्रभाव प्रतक्ष ॥ ६८ ॥

चौ०संपाती लहि पंख अनूपा ❀ प्रमुदित भयो विशद वर रूपा ॥
सबहि धीर दै सियहि बताई ❀गमनो खग नभ पंथ उड़ाई ६९॥
सुनि कपि भालु परम सुख पागे ❀ किलकि कूदि बहु नाचन लागे॥
ऊर्द्ध रोम ह्वै पुच्छ उठाई ❀ सिंहनाद कीने हरपाई ॥ ७० ॥
सो निशि सुख महँ जात न जानी ❀प्रात सिंधु लखि मति अकुलानी॥
बैठि करत सब विविध विचारा ❀किमिको लंघै जलधि अपारा ७१

दोवई छंद ।

ताछिन गज गवाक्ष दोऊ अरु शरभ ऋपभ वरवीरा ॥
कीशगंधमादन मयंद मिलि द्विविद सुपेण सुधीरा ॥
जाम्बवंत ये क्रमते दश दश योजन कहे बढ़ाई ॥
निज निज गमन शक्ति इमि सबही सत्य बखानि सुनाई ॥ ७२॥

तव अंगद भाषी हम इतते कूदि उतै ध्रुवजावैं ॥
फिर उतते इत आगमके हित निश्चय नाहिं कहावैं ॥
सुनि ऋच्छेश कही तुम नृपसुत दुहुँ दिशि गमन समर्था ॥
पैहौ अधिप वनै किमि पठवत प्रभुविन होत अनर्था ॥ ७३ ॥
यों कहि ऋच्छराज हनुमानहिं लखि बोले हे वीरा ॥
पवनपुत्र वैठे सुमौन क्यों धरी कहा इमि धीरा ॥
गुणि समर्थ प्रभु दई मुद्रिका निजवल रूप विचारौ ॥
गोपद सरिस सिंधु यह तुमको ह्वै द्रुत सजग सिधारौ ॥ ७४ ॥
जाम्ववंतके वचन सुनतहीं कपितन वल उमँगायो ॥
ऊरधरोम प्रफुल्ल पुच्छ वपु तेज तरणि सम छायो ॥
यों हनुमंत वीर उद्धत ह्वै कियो मेघ सम नादा ॥
पुनि अंगद अरु ऋच्छराज प्रति बोले युत अहलादा ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मेरो ना प्रभाव सीतारामकी कृपा ते यह रसिकविहारी सत्य प्रण ठहराऊँ मैं ॥ उछलि उतंक तिहुँ लोकहि उलंक आऊँ सिंधुवापुरेकी काह गिनती गनाऊँ मैं ॥ जोपै रघुराज कपिराज युवराज और ऋच्छराज काहू की रजाय नेक पाऊँ मैं ॥ एकही फलंकामें निशंका उत जाऊँ फेरि हंका दै सुलंकाको उखार इत लाऊँ मैं ॥ ७६ ॥

दोहा–सुनि सुवैन हनुमानके, ऋच्छराज युवराज ॥
बोले कपिहि सराहिकै, सादर सहित समाज ॥ ७७ ॥
हौ समर्थ पुनि या समै, उचित इतोही काम ॥
जनक सुतहि अविलोकिकै, द्रुत आवो इहि ठाम ॥ ७८ ॥
पुनि सव चलि निजनाथको, प्रमुदित सकल सुनाय ॥
करि है सोई काज जो, दैहैं ईश रजाय ॥ ७९ ॥
सुनि शिष शीशनवायकै, सवही धीर धराय ॥
द्रुत महेंद्र गिरि शिखर पै, उछलि गये हुलसाय ॥ ८० ॥
जाम्ववंत अंगद अपर, कीश भालु भट वृन्द ॥
रसिकविहारी काज सव, सिद्धि जानि आनंद ॥ ८१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनी शोध वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा–अंजनि सुत हनुमंत कपि, रामचरण हिय ध्याय ॥
तिहि सुवेल गिरि शिखर पे, बेठे गात बढाय ॥ १ ॥
टेकि कुधरपर दोउ कर, पीठ पुच्छ करि गुच्छ ॥
श्रवण चपरि रोमांच युत, बढो तेज तनुलुच्छ ॥ २ ॥
दक्षिण दिशि लखिके कियो, प्रलय मेघ सम गाज ।
भाषी सबहि सुनाय हौं, जाहुँ रामके काज ॥ ३ ॥
रामबाण सम वेगते, जाय निहारौं लंक ॥
जौ न मिली तहँ तौ लखौं, सुरपुर धाय निशंक ॥ ४
तितै न पाई सियहि तौ, गहिलैहौं लंकेश ॥
अथवा लंक उपाटिके, धरौं आय इहि देश ॥ ५ ॥
यौं कहि उछले वीर वर, तहँ ते सबल उताल ॥
चपि भूधर धरणी धसो, महा वेग भो हाल ॥ ६ ॥
पितु सम वेग प्रचंड अति, बहु तरु भये उपाट ॥
हनुमत सिंधु उलंघि वे, उछालि चले नभ वाट ॥ ७ ॥
आयत योजन तीस अरु, दशयोजन विस्तार ॥
तनु छाया हनुमान की, ताछिन परम सुढार ॥ ८ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुंदरकांड सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक ॥

दशयोजनविस्तीर्णा त्रिंशद्योजनमायता ॥
छाया वानरसिंहस्य जवेचारुतराभवत् ॥ १ ॥

दोहा–गर्जत उर आनंद भरि, जात व्योम पथवीर ॥
ताछिनको बल तेज वपु, वरणिसकै को धीर ॥ ९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

देव दहलाने औ अदेव हहलाने सिंधु जीव खहलाने जल नदीशको ॥ भानुतेजमंद पथ वंद व्योमगामिनको आसन डगो शंभु सुरईशको ॥ रसिकविहारी राम दूत हनुमंत वीर गौन मर्दन प्रताप भुजबीसको ॥ जैजैकार करत अपार तिहुँ झार विक्रम पराक्रम निहार वर कीशको ॥ १० ॥ हेम ... है सपक्ष नभ कीनो गौन कैधौं रथत्यागि प्रात

सिधायो है ॥ रतिकविहारी परमेश्वर प्रत्यक्षकेधौं व्योममें विराट रूप प्रकटि दिखायो है ॥ केधौं खगराज हरिकाज हेत चालो आज केधौं रामचंद्र बाण विशिख चलायो है ॥ केधौं हनुमान वीर परमउदंड चंड सागर उलंघि वेप मंडलते धायोहै ॥ ११ ॥

चौ०–यों हनुमंत अकाशमझारा ❀ जात निरखि किय सिंधु विचारा॥
हौं कपिहित कछु करौं सहाई ❀ सो श्रम खोय बहुरि हुत जाई १२॥
तब गुणि कह मैनाकहि सागर ❀ हो गिरि तुम सपक्ष गुण आगर ॥
वपु बढ़ाय इतते नभजावो ❀ निज दिशि करि आदर विलमावो १३॥
सुनि भूधर मैनाक उताला ❀ हेम शिखर युत बाढि विशाला ॥
मिष्ट वारि तरु सफल समेता ❀ गगन उच्चगो हनुमतहेता ॥ १४ ॥
नभ मारग रुद्धित कपि देखा ❀ कछू विघ्न प्रगटो इह लेखा ॥
तिहि उरते खंडित किय वीरा ❀ चलत भये सुमिरत रघुवीरा १५ ॥
तब शैल मानुप तनुधारी ❀ प्रगटि शिखर, वर गिरा उचारी ॥
धन्य पवनसुत विनय सुनीजे ❀ बहुरि तात हो रुचि सो कीजे १६॥
वृद्ध राम कुल जात न दीशा ❀ तव सहाय भेजो मुहिं कीशा ॥
पुनि मो सँग बहु पवन मिताई ❀ रहो अभय जिहि कृपा सदाई १७॥
सो तुम कपि मो पुत्र समाना ❀ ताही प्रीति करौं सनमाना ॥
है मैनाक सुनाम हमारा ❀ बसें सदा अब सिंधु मझारा ॥१८॥
प्रथम सकल गिरि न्हे पक्ष धर ❀ निज इच्छित उडि परें भूमि पर ॥
तिनते नगर ग्राम बहु नासें ❀ कुधर सदा सबही इमि त्रासें १९ ॥
सोलखि ह्व कोपित सुरनाथा ❀ उग्र वज्र गहिकें निज हाथा ॥
पक्ष गिरिनके काटि नशाये ❀ मोदिशि देवराज जब धाये॥२० ॥
तब तव पिता पवन हितकीना ❀ मुहिं उड़ाय निज वेगहि दीना ॥
मैं इत जलनिधि परो दुराई ❀ तबते जलमधि रहौं सदाई ॥ २१॥
सतयुग मध्य भई यह बाता ❀ सो तुव पितुहित मानहुँ ताता ॥
याते मग श्रम विलमि निवारौ ❀ पुनि प्रभुकारज हेत सिधारौ२२॥
करौ अशन स्वादित फल वीरा ❀ पीजे विमल मिष्टवर नीरा ॥
सो सुनि सादर कह हनुमाना ❀ तब मनकार सकल मैं माना२३॥

दोहा–अंजनि सुत हनुमंत कपि, रामचरण हिय ध्याय ॥
तिहि सुवेल गिरि शिखर पै, बेठे गात वढाय ॥ १ ॥
टेकि कुधरपर दोउ कर, पीठ पुच्छ करि गुच्छ ॥
श्रवण चपरि रोमांच युत, बढो तेज तनुसुच्छ ॥ २ ॥
दक्षिण दिशि लखिके कियो, प्रलय मेघ सम गाज ॥
भाषी सबहि सुनाय हौं, जाहुँ रामके काज ॥ ३ ॥
रामबाण सम वेगते, जाय निहारौं लंक ॥
जौ न मिली तहँ तौ लखौं, सुरपुर धाय निशंक ॥ ४ ॥
तितै न पाई सियहि तौ, गहिलैहौं लंकेश ॥
अथवा लंक उपाटिकै, धरौं आय इहि देश ॥ ५ ॥
यौं कहि उछले वीर वर, तहँ तै सबल उताल ॥
चपि भूधर धरणी धसो, महा वेग भो हाल ॥ ६ ॥
पितु सम वेग प्रचंड अति, बहु तरु भये उपाट ॥
हनुमत सिंधु उलंघि वे, उछलि चले नभ वाट ॥ ७ ॥
आयत योजन तीस अरु, दशयोजन विस्तार ॥
तनु छाया हनुमान की, ताछिन परम सुढार ॥ ८ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुंदरकांड सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक ॥

दशयोजनविस्तीर्णा त्रिंशद्योजनमायता ॥
छाया वानरसिंहस्य जवेचारुतराभवत् ॥ १ ॥

दोहा–गर्जत उर आनंद भरि, जात व्योम पथवीर ॥
ताछिनको बल तेज वपु, वरणिसकै को धीर ॥ ९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

देव दहलाने औ अदेव हहलाने सिंधु जीव खहलाने जल उछल नदीशको ॥ भानुतेजमंद पथ वंद व्योमगामिनको आसन सुछंद डगो शंभु सुरईशको ॥ रसिकविहारी राम दूत हनुमंत वीर कीनो गौन मर्दन प्रताप भुजवीसको ॥ जैजैकार करत अपार तिहुँ लोक झार विक्रम पराक्रम निहार वर कीशको ॥ १० ॥ हेम गिरि कैधौं ह्वै सपक्ष नभ कीनो गौन कैधौं रथत्यागि प्रात सूरज

सिधायो है ॥ रसिकविहारी परमेश्वर प्रत्यक्षकैधौं व्योममें विराट
रूप प्रकटि दिखायो है ॥ कैधौं खगराज हरिकाज हेत चालो
आज कैधौं रामचंद्र बाण विशिख चलायो है ॥ कैधौं हनुमान
वीरपरमउदंड चंड सागर उलंघि वेप मंडलते धायोहै ॥ ११ ॥
चौ०-यों हनुमंत अकाशमझारा ❀ जात निरखि किय सिंधु विचारा॥
हौं कपिहित कछु करौं सहाई ❀ सो श्रम खोय बहुरि द्रुत जाई१२॥
तब गुणि कह मैनाकहि सागर ❀ हो गिरि तुम सपक्ष गुण आगर ॥
वपु बढ़ाय इतते नभजावो ❀ निज दिशि करि आदर विलमावो१३॥
सुनि भूधर मैनाक उताला ❀ हेम शिखर युत बाढि विशाला ॥
मिष्ट वारि तरु सुफल समेता ❀ गगन उच्चगो हनुमतहेता ॥ १४ ॥
नभ मारग रुद्धित कपि देखा ❀ कछू विघ्न प्रगटो दृढ़ लेखा ॥
तिहि उरते खंडित किय वीरा ❀ चलत भये सुमिरत रघुवीरा१५ ॥
तब शैल मानुप तनुधारी ❀ प्रगटि शिखर, वर गिरा उचारी ॥
धन्य पवनसुत विनय सुनीजे ❀ बहुरि तात हो रुचि सो कीजे १६॥
वृद्ध राम कुल जात न दीशा ❀ तव सहाय भेजो मुहिं कीशा ॥
पुनि मो सँग बहु पवन मिताई ❀ रहां अभय जिहि कृपा सदाई१७॥
सो तुम कपि मो पुत्र समाना ❀ ताही प्रीति करौं मनमाना ॥
है मैनाक सुनाम हमारा ❀ बसें सदा अब सिंधु मझारा ॥१८॥
प्रथम सकल गिरि रहे पक्ष धर ❀ निज इच्छित उडि परें भूमि पर ॥
तिनते नगर ग्राम बहु नासें ❀ कुधर सदा सबही इमि त्रासें १९ ॥
सोलखि ह्व क्रोधित सुरनाथा ❀ उग्र वज्र गहिकैं निज हाथा ॥
पक्ष गिरिनके काटि नशाये ❀ मोदिशि देवराज जब धाये॥२० ॥
तब तव पिता पवन हितकीना ❀ मुहिं उडाय निज वेगहि दीना ॥
मैं इत जलनिधि परो दुराई ❀ तबते जलमाधि रहौं सदाई ॥ २१॥
सतयुग मध्य भई यह वाता ❀ सो तव पितुहित मानहुँ ताता ॥
याते मग श्रम विलमि निवारो ❀ [illegible]
करौ अशन स्वादित फ[illegible]
सो सुनि सादर

विलमौं बीच न यह प्रण धारा ❀ वेगि जात हौं सागर पारा ॥
यौंकहि गिरिहि परसि कर वीरा ❀ चलत भयोकरि नाद गँभीरा २४॥
हनुमत कर आदर गिरिठाना ❀ सोलखि इंद्र परम सुखमाना ॥
मैनाकहि प्रमुदित सुरपाला ❀ दीन अभै वरदान कृपाला २५ ॥
पुनि कौतुकी सकल सुरत्राता ❀ कही नाग मातहि यह वाता ॥
लखो चहैं हम कपि बल सबही ❀ करै सुकह तुव सनमुख अवही २६
सो सुरसा करि कृपा सिधावो ❀ हनुमंतहि बहु भीति दिखावो ॥
कै भय मानि पारनहिं जावै ❀ कै सुठानि बल बुद्धि सिधावै २७
तव सो आय भई मग ठाढी ❀ बिरचि कराल रूप बहु वाढी ॥
कही कपिहि करि घोर पुकारा ❀ आव कीशमम मुखहि मझारा २८
यों कहिकै कराल मुख फारा ❀ तव बोले तिहि पवनकुमारा ॥
सिय लखि प्रभु सुनाय संदेशा ❀ करौं आय पुनि मुखहि प्रवेशा २९
सुरसा नहिं मानी तब वीरा ❀ कह विस्तृत मम सकल शरीरा ॥
किमि तुव मुख प्रवेश बपु होई ❀ तव सो विहँसि कीशदिशि जोई ३०

दोहा—दशयोजन विस्तार मुख, कियो सुलखि हनुमान ॥
भये वीस योजन तुरत, निरखि तीस सो ठान ॥ ३१ ॥
तव कपि योजन तीस भो, तिय मुख किय चालीस ॥
इमि दश दश दुहुँ बढ़त गे, नाग मात अरुकीस ॥ ३२ ॥
जब कपि सुरसा मुख लखौ, शतयोजन परमान ॥
तव अंगुष्ट समान वपु, किय प्रवीन हनुमान ॥ ३३ ॥
प्रविसि तासु मुख निकसि पुनि, कही व्योममधि जाय ॥
गो आनन तू नहिं भखो, मम कछु दोप न आय ॥ ३४ ॥
लखि सुरसा कपि बुद्धि बल, करि बहु भाँति वखान ॥
गई देवपुर उत इतै, हरपलहो बलवान ॥ ३५ ॥
सकल देव सो चरित लखि, चकित रहे सकुचाय ॥
कहत तिहूँ पुर वीर सम, और समर्थ न आय ॥ ३६ ॥
पूरवसन विस्तार वपु, करि गमने हनुमान ॥
जात गगन तें छाँह तनु, पर सिंधु जल आन ॥ ३७ ॥

सो०—सो छाया जल वीच, अवलोकी खल निश्चरी ॥
नाम सिंहिका नीच, गहि लीनी वरदान गुण ॥ ३८ ॥
गहतछाहँ हनुमंत, तनु कंपो गति रुद्धह्वै ॥
अकुलाने बलवंत, दशहू दिशि हेरे चकित ॥ ३९ ॥
चौ०—तब देखी कपि सिंधु मझारा ❋ ठाढी एक नारि विकरारा ॥
तीक्षण दशन विकट मुखफारे ❋ छाया गहि ऐंचै बलधारे ॥ ४० ॥
हनूमान तब गात बढ़ाई ❋ किय बहु गिरि सम तनु गरुआई ॥
आय परे तिहि मुखहि मझारा ❋ तासु अंग नख दशन विदारा ॥ ४१ ॥
मृतक भई सिंहिका कराला ❋ पुनि कपि उछलि गये नभ हाला ॥
सो विलोकि खेचर सबहरषे ❋ जै जै भाषि सुमन सुर वरषे ॥ ४२ ॥
तब हनुमत करि पूरवरूपा ❋ उछले द्रुत बल धारि अनूपा ॥
ताछिन वेग अपार बढ़ाई ❋ चले सिंहिकाहति हुलसाई ॥ ४३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

परम प्रकाशमान प्रभुता प्रधान स्वच्छ खल दल शाल जनपाल सुखदान है ॥ रसिकविहारी उर अधिक अनंदकारी विपति विदारी दिव्य दीपति महान है ॥ शुद्ध पक्षधारी भीतिहारी नभचारी वर सुवन विहारी वेग भारी बलवान है ॥ काज आज कैधौं खगराज द्विज राज धायो कैधौं रामवाण कैधौं वीर हनुमान है ॥ ४४ ॥

चौ०—इमि उताल केशरी किशोरा ❋ पहुँचे जाय वीर वरजोरा ॥
निरखि सुभूधर सागर तीरा ❋ परे पार ह्वै तहँ कपिधीरा ॥ ४५ ॥
चंपो कुधर सुधरणि समाना ❋ पुनि लघु वपु कीनो हनुमाना ॥
तहँते लखो लंकपुर कीसा ❋ चहूँ ओर कंचनमयदीसा ॥ ४६ ॥
दोहा—परिखासिंधु गँभीर चहुँ, योजन एक प्रमान ॥
उच्च हेम प्राकारपुर, चारिद्वार दृढठान ॥ ४७ ॥
निरखि लंक कपि हीयमें, सोचत करत विचार ॥
कहा करें कपिऋच्छ इत, दुहुँ अरु राजकुमार ॥ ४८ ॥
जय पावै इत युद्धमें, काहू की न समर्थ ॥
सामादिक चहुँ जतन बल, सकल होय ह्यां व्यर्थ ॥ ४९ ॥

यों गुणि परम प्रबंध चहुँ, निरखि चकित हनुमान ॥
रैनि समै पुर पैठिवो, उचित कियो अनुमान ॥ ५० ॥
निफल न हो मम आगमन, सोई वात महान ॥
उक्ति युक्ति सोचत गुनत, योंहीं अथयो भान ॥ ५१ ॥
निशि लखि कपि कति रूपही, करि मंजार प्रमान ॥
राम सुमिरि लंका निकट, दुरि आयो बलवान ॥ ५२ ॥

प्र०–वाल्मीकीये सुंदरकांडे ॥ सर्ग ॥ २ ॥ श्लोक ॥

सूर्ये चास्तं गते रात्रौ देहं संक्षिप्य मारुतिः ॥
वृषदंशकमात्रोथ बभूवाद्भुतदर्शनः ॥ २ ॥

दोहा–तहँ लंका निज रूपते, रक्षहि पुरी सदाय ॥
नाम लंकिनी जाहि दुरि, कोऊ जान न पाय ॥ ५३ ॥
सोरठा–कपिहि देखि सो धाय, कही सकोप करालवपु ॥
अरे कीश कहँ जाय, दुरिमोतें ह्वै चोर सम ॥ ५४ ॥
ताहि निरखि हनुमंत, बूझी दुष्टा कौन तू ॥
सो भाषी बलवंत, हौं लंका रक्षौं सदा ॥ ५५ ॥
तब बोले कपिताहि, हौं पुर अवलोकन चहौं ॥
कही सुद्दुत फिरि जाहि, न तर हरौं तुव प्राण अब ॥ ५६ ॥
सुनि कपि ह्वै विकराल, तिय लखि तलताड़ो सहज ॥
गिरी भूमि बेहाल, महानाद करि निश्चरी ॥ ५७ ॥
पुनि लंका लहि चेत, उठि बोली कर जोरिकै ॥
कपि आये जिहि हेत, करौकाज सो सिद्धि तुव ॥ ५८ ॥
मोहिँ कही विधिबात, तोहिँ करै कपि त्रास जब ॥
तब निश्चर कुल घात, लखिये भई सुसत्य अब ॥ ५९ ॥
सुनि कपि लघु वपुधार, पुर प्राकार उलंघिकै ॥
पैठ लंक मझार, प्रथमवामपद अग्रकरि ॥ ६० ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुंदरकांडे । सर्ग ४ ॥ श्लोक ।

प्रविश्य नगरीं लंकां कपिराजो हितंकरः ॥
चक्रेथ पादं सव्यं च शत्रूणां स तु मूर्धनि ॥ २ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ।

प्रयाणकाले स्वगृहप्रवेशे विवाहकालेऽपि च दक्षिणांघ्रिम् ॥
कृत्वाग्रतः शत्रुपुरप्रवेशे वामं निदध्याचरणं नृपालये ॥४ ॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद ।

देखो लंकनगर वर शोभित कंचनमय सब धामा ॥
विविधवेष निश्चर निशाचरी सकल साज अभिरामा ॥
बाल युवा अरु जरठ पुरुष तिय विपुल सुरूप कुरूपा ॥
धर्म अधर्म सुकर्म कुकर्महि निरत अनेक अनूपा ॥ ६१ ॥
शस्त्र शैल तरुधरे खरे भट ठौर ठौर रखवारे ॥
कहुँ सहस्रदश कहूँ लक्ष कहुँ कोटिन कहूँ अपारे ॥
हाट बाट गृह नगर मध्य चहुँ अध ऊरध सबठावा ॥
बाहर अरु अंतर लंकापति परम प्रबंध दृढावा ॥ ६२ ॥
बाग वाटिका कुंज पुंज वरवीथी पंथ बजारा ॥
वापी कूप तड़ाग सरित गृह वन गृह गुहा अपारा ॥
जाय जाय सब ठौर वीर कपि दुरिहेरे चहुँ धाई ॥
रामभामिनी जनकनंदिनी कतहुँ न परी लखाई ॥ ६३ ॥
दशमुख भवन माहिं तब पैठ तहँ सब ठौर निहारा ॥
अशन पान स्नान हवनथल अविलोको कपिसारा ॥
शन भवन मधिगयो वीरवर निरखि चकितभो कीशा ॥
जा सम सुभग साज शोभा सुख अपर त्रिलोक न दीसा ॥६४॥
सुर किन्नर गंधर्व यक्ष नर नाग नारि अभिरामा ॥
सजे सुभग शृंगार मनोहर वरनिश्चरी ललामा ॥
सकल वारुणी पान मदन मदमत्त अंगसुधि नाहीं ॥
जहँ तहँ निद्रावश अचेत ह्वै सोयरहीं चहुँ वाहीं ॥ ६५ ॥
काहू शिर पर पद काहूको काहूपग किहुँ माथा ॥
काहु उदर उर भुजा शीश कटि काहू किहु मुख हाथा ॥
कोऊ शस्त्र वस्त्र भूषण युत इमि अचेत सब सोई ॥
सुभग सुंदरी स्वरमधिराची प्राण लुकाय बिगोई ॥ ६६ ॥
कोऊ वसन विहीन वामवर कोऊ सुभग शृँगारी ॥
कोऊ विलुलित साज सकल तनु कोऊ अर्ध सँवारी ॥

कोऊ सुरतिहीन रति संयुत कोउ विलग कोउ संगा ॥
कोऊ अशन पान भाजन लै शैन किये इहिढंगा ॥ ६७ ॥
तिनके मध्य रूपवर रावण सोवत मुदित निशंका ॥
मंदोदरी गौर सुठि नारी आलिंगित निज अंका ॥
लखि मयसुता रूप शोभा दृढ हीय कीश अनुमाना ॥
येही जनकनंदिनी इमि छबि तिन बिन तिया न आना ॥ ६८ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ सुं० कां० ॥ स० ॥ १० ॥ श्लो० ॥

गौरीं कनकवर्णाभामिष्टामन्तःपुरेश्वरीम् ॥
कपिर्मंदोदरीं तत्र शयानां चारुरूपिणीम् ॥ ५ ॥
स तां दृष्ट्वा महाबाहुर्भूषितां मारुतात्मजः ॥
तर्कयामास सीतेति रूपयौवनसंपदा ॥
हर्षेण महता युक्तो ननंद हरियूथपः ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद।

हेरि हिये हनुमंत हर्ष भरि रोम प्रफुल्लित कीना ॥
लै ऊरध लंगूर चुंबिकै कीश केलिचित दीना ॥
आयो बहुरि विचार वीर उर मो कस बुद्धि नशानी ॥
शैन किये दशमाथ जो तिया तिहि सीता मैं जानी ॥ ६९ ॥
रामभामिनी दृढ पतिव्रता सत्यधर्म धुरधारी ॥
परपति संग ताहि अनुमानी कियो जु पातक भारी ॥
पुनि कपि सोच पाप यह दूजो एक और हौं कीना ॥
पर नारी नरशैन संग ही नग्न अंग लखि लीना ॥ ७० ॥
यों गुणिकै पुनि हृदै धीरदै दृढ विचार यह थापा ॥
मोमन निर्विकार तो निरखे भयो नहीं कछु पापा ॥
इहि विधि सोचि वीर तहँ ते चलि फिरि चहुँ हेरन लागे ॥
जब कहुँ लखी नहीं सीता तब महा शोकमें पागे ॥ ७१ ॥
कर विचार कपि सिया न जीवै कै रावण तिन मारी ॥
कै लावतहि व्योम मंडल तें गिरी पयोधि मझारी ॥
हाय कहाँ अब मिलैं जानकी विन पाये नहिं जाऊं ॥
है यह भली प्राण निज त्यागौं काहु न मुख दरशाऊं ॥ ७२ ॥

हरिगीतिका छंद।

इमि गुणत कपि बहु सोच वश पुनि किय विचार सुहीयमैं ॥
उत जो लखाय अशोक वन हेरो न वह रमणीय मैं ॥
देखौं तहांचलि सीय जो दरशाय तौ भलिबातहै ॥
दृढ़ मिलहि स्वामिनि तितहिं या छिन जीय मम उमगात है७३॥
यों ठान दृढ हनुमानकीन पयान अतिहि उताल जो ॥
दरशान इक स्थान शोभामान परम विशालसो ॥
जिहि धाम द्वार ललाम अंकित राम नाम सुवर्णते ॥
वृंदा सुमन वर वृंद वृंद विराज तरु बहु वर्णते ॥ ७४ ॥
लखि हीय गुण हनुमंत कोऊ संतको यह धामहै ॥
अति आचरज इत लंकमें हरि भक्त को अभिराम है ॥
तौ लग सु निद्रागत विभीषण नाम लीनो रामको ॥
सुनि कीशद्विजतनु धारि कीनो गान प्रभु गुण ग्रामको ॥ ७५॥
सो सुनि विभीषण द्वार आये दोउ दुहुँदिशि हेरिकै ॥
बूझी दुहूँ दुहुँ कही निज गति मिले गल भुज गेरि के ॥
नृपबंधु तब हनुमंत सों भाषी सबै समुझाय के ॥
वर वाटिकामधि मैथिली कह लखहु जाय दुरायकै ॥ ७६ ॥

चौ०-सुनि सिय कथा हीय हरषाना ❋ चले वेगि तिन मिलि हनुमाना।
वर अशोकवाटिका निहारी ❋ परमरम्य शोभा मनहारी ॥ ७७ ॥
कंचन महि मणि जटित अनूपा ❋ वापी कूप तडाग सुरूपा ॥
वेलि विटप लघु दीरघनाना ❋ फल प्रसून वर विविध विधाना७८
खग मृग विपुल जीव बहु जाती ❋ हेमरजत तरु अगणित भाती ॥
चहुँ मुक्ता प्रवाल मय सिक्ता ❋ महि दरशाय न तिहि अतिरिक्ता७९
धवल धाम वर उच्च अनेका ❋ सुंदर सुखद एकते एका ॥
रक्षत विविध भूरि भट भारे ❋ निज निज काज शस्त्र सब धारे ८०
इमि अशोकवाटिका सुहाहीं ❋ जिहि पटतर अमरावति नाहीं ॥
तहँ कंचन मय सुभग निराला ❋ एक शिंशपा वृक्ष विशाला ॥ ८१॥
तिहि तरुतर वेदिका मनोहर ❋ हाटक रचित खचित मणिगणवर॥

तहँ सशोक श्रीजनकदुलारी ❀ बैठी राम ध्यान उर धारी ॥ ८२॥
चहूं ओर निश्चरी कराला ❀ रक्षहिं लीने शस्त्र विशाला॥
सियहि दूरते लखि हनुमाना ❀मम स्वामिनि ये दृढ़ अनुमाना८३॥
करि प्रणाम दूरहिते सादर ❀ हर्ष शोक दोऊ सुहीय भर॥
सिया रामकी दशा विचारी ❀ हनूमान कह मनहि मझारी ॥८३॥

सवैया कवित्त।

उत का कहिहौं सियकी गति हौं वरणौं इत काह कथा पियकी॥
नहिं भाषे बनै निरखेही बनै अति दुःख सनेह दशा वियकी॥
इहिते रसिकेस भली है यही गहि मौन धरौं हिय में हियकी॥
ममस्वामिनि स्वामि परस्पर दोऊ सुजानत हैं दुहुँके जियकी॥८५॥

चौ०—पुनि कपि गुणी भयो दुख दूरी❀सियाराम मिलि हैं सुख पूरी॥
प्रभु सँदेश सुनिकैं हरषाहीं ❀ पै मुहिं प्रगट मिलब भल नाहीं८६
यौं गुणि कोश रैनिलखि थोरी❀ द्रुमचढ़ि दुरो निरखि चहुँ ओरी॥
ताछिन तहँ दशवदन सिधारा❀ संग नारि बहु किये शृँगारा ॥८७॥
आय सियहि सो बहु समुझाई❀ कटु वचकह सीता विलपाई॥
तब दशमुखलै कठिन कृपाना❀ जनक सुता दिशि हेरि रिसाना८८
तब गहि मंदोदरी सुनीता ❀ समुझायो कहि वचन विनीता॥
पुनि रावण निश्चरिन सिखाई❀ करो नारि मम सियहि बुझाई८९॥

दोहा—यों कहि भाषी सीय दिशि, और तजो द्वै मास॥
इहि ऊपर तुव मरन कै, हठिराखौं रनिवास॥ ९०॥

म० ॥ वा० ॥ सु० ॥ कां० ॥ स० ॥ २२ ॥ श्लो० ॥

द्वौ मासौ रक्षितव्यौ मे योऽवधिस्ते मया कृतः ॥ ततः शयनमारोह मम त्वं वरवर्णिनि ॥ ७ ॥ द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्त्तारं मामनिच्छतीम् ॥ मम त्वां प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यंति खंडशः॥८॥ इत्यादि॥

चौ०-ताछिन धान्य मालिनी नामा❀वर निशाचरी परम ललामा॥
दै गल भुज दशमुखहि सप्रेमा❀ शैन सदन लै गई सुक्षेमा ॥९१॥
इत निश्चरी कुरूप कराला ❀ लेकर मुशल शूल असि भाला॥
बहु विधि सीतहि त्रास दिखावैं❀साम दाम भय भेद दिढावैं॥९२॥

दोवई छंद ।

इकनैनी कोऊ इक कर्णी कोऊ बहु दृगवारी ॥
कोऊ गजकर्णी खरकर्णी कोउ नाग दँतारी ॥
कोऊ व्याल मुखी लंबोदरि लंबकुची कुचहीना ॥
कोऊ हस्त चरण इक एकै कोऊ अगणित कीना ॥ ९३ ॥
कोऊ शीश विहीन बहुत शिर कोऊ अगणित नासा ॥
कोऊ अर्ध कोऊ अनासिका कोऊ बहु मुख भासा ॥
कोऊ शूकर श्वान सिंह मुख कोऊ गिरि वपुधारा ॥
कोऊ अति लघु इमि निशाचरी विविध कराल अपारा ॥ ९४ ॥
कोऊ बाँधि मुष्टिका धावैं सियहि प्रहारण काजा ॥
कोऊ दशन काढ़ि मुख फारैं भक्षणहित करि गाजा ॥
कोऊ लै कृपाण कर दौरैं कोऊ शूल भमावैं ॥
यौंही विकट निश्चरी सीतहि बहु विधि त्रास दिखावैं ॥ ९५ ॥
कहैं सकल हे जनकनंदिनी जो निज जीवन चावो ॥
तौ सिख मानि वेगही हठतजि दशमुख महल सिधावो ॥
सुनि सिय वोलीं भले सवहि मिलि मुहिं भक्षण करि लेहू ॥
निज पतिविन नहिं लखौं आन दिशि मोर सत्य प्रण येहू ९६॥
यौंकहि सिया हाय श्वासा भरि करति अपार विलापा ॥
सो गति लखि हनुमंत हीय बहु बढो क्रोध संतापा ॥
कुसमय जानि मौन दुरि हेरें कपि निश्चरी कठोरा ॥
जनकनंदिनिहि भीति दिखावैं वोलि: वचन अतिघोरा ॥ ९७ ॥
दोहा—ताछिन त्रिजटा निश्चरी, वोली सवहि रिसाय ॥
सियहि न खावो आप तनु, आपहि लेवो खाय ॥ ९८॥
स्वप्न लखो हौं अवशिहो, तिहि फल यह विश्वास ॥
राम विजय पावैं सपदि, अरु निश्चर कुलनास ॥ ९९ ॥
सुनि सशंक सब निश्चरी, त्रिजटहि कह अकुलाय ॥
कहा लखो भाषो सबै, सो वोलीं समझाय ॥ १०० ॥

हरि० गी० छंद ।

गजदंत शिबिका सहस हरि युत अंतरिच्छ सुहावहीं ।
तिहि मध्य रामसबंधु राजे शुभ्र साज सु आवहीं ॥
पुनि लखी श्वेत शृंगार धारे सिंधुहि आवृत किये ।
सीता विराजी धवलगिरिपे पीयपद निज दृग दिये ॥ १०१ ॥
हेरो सुदंती चारदंत शृँगार युत भूधर चढो ।
तिहि पै लसे सिय बंधु संयुत राम अति आनँद मढो ॥
पुनि लखी सीता चंद्र भानुहि छिनहिं छिन कर परसही ।
रथ श्वेत वृषभ सुयुक्तता मधि तिहूँ बहु छवि सरसही ॥ १०२ ॥
दोहा—पुनि हेरे सीता सहित, राम लषण दुहुँ भ्रात ॥
शोभित पुष्पविमान मधि, उत्तर दिशि नभ जात ॥ १०३॥

चौबई छंद ।

पुनि देखो दशमाथहि मुंडित लाल वसन तन धारे ॥
कंठमाल करवीर पानमद अरुण साजहैं सारे ॥
सो पुष्पकविमानते गिरिकै परो महीतल आई ॥
श्याम शृँगार श्यामतिय मुंडित तिहि खैंचे गहि धाई ॥ १०४ ॥
खर युत रथ बैठो पुनि हेरो हँसै नचै अरु गावै ॥
करै तैल को पान सुव्याकुल दक्षिण दिशा सिधावै ॥
बहुरि लखो गर्दभ मय रावण बिन शिर गिरो जु भूमै ॥
फिर उठि मत्त नग्न है विलपत दुर्वच बोलत घूमै ॥ १०५ ॥
पंक घोर मलकुंड प्रविशिके दशमुख दक्षिण जाही ॥
रतवासिनी श्याम तिया गल बाँधि सुखैंचै ताही ॥
यौंहीं कुंभकरणको देखो अरु रावण सुत सिगरे ॥
मुंडित तैल लिप्त अविलोके त्यौं निश्चर सब बिगरे ॥ १०६ ॥
शूकर श्वान ऊंट खर जल कपि चढे नग्न हैं कोऊ ॥
कोऊ महिष मनुप निश्चर पै गमने दक्षिण सोऊ ॥
एक विभीषण लखो शुद्ध वर श्वेत छत्र शुभकारी ॥
अविलोके अति अशुभ रीतिसें अपर सकल नर नारी ॥ १०७॥

खंडित सदन सकल अविलोके भस्म निहारी लंका॥
सब निश्चरी रुदन करभारी विह्वल भई सशंका॥
पुरचर अचर सिंधु माधि डूबे अरु जे वीर वडेरे॥
ते समस्त गोमय ह्रद प्रविशे इमि कुस्वप्न मैं हेरे॥ १०८॥
दोहा—सुनि त्रिजटा मुख स्वप्न गति, भई सकल अति दीन॥
परीं निश्चरी सीय पग, विनय जोरि कर कीन॥ १०९॥
इमि यामिनि द्वै दंड ही, रहीं निरखि सब जाम॥
कछू सचेत अचेत ह्वै, सोई इत उत ठाम॥ ११०॥
ताछिन राघवभामिनी, कीनो महा विलाप॥
सो विलोकि हनुमंत हिय, भयो अधिक संताप॥ १११॥
ताही समय सुऔचकें, शकुन भये सिय अंग॥
वामबाहु उर नैन भ्रुव, फरकन लगे सुढंग॥ ११२॥
तब कपि सुखाणी विषे, प्रभु गुण कीन बखान॥
सुनि चितई सिय चकित चहुँ, सोच हर्ष अधिकान ११३॥
है माया कछु आसुरी, यों करि सीय विचार॥
ह्वै सशंक शिरनायकें, रही मौन दुखधार॥ ११४॥
हनूमान तब आयकें, निकट नवायो शीश॥
कही दुहूँ कर जोरिकें, राम दूत हौं कीश॥ ११५॥
तऊ न सिय सन्मुख लखी, बोली महि दिशि जोय॥
नाथ दूतहै सत्य कपि, मुहिं प्रतीत किमि होय॥ ११६॥
तब कपि रघुवर अंगके, नखशिख चिह्न समस्त॥
कहे यथारथ सीय प्रति, बंधु समेत प्रशस्त॥ ११७॥
अपर कथा वरणी बहुरि, औसर जानि उताल॥
मुखते काढि सुमुद्रिका, दीनी अंजनिलाल॥ ११८॥
लई सिया आतुर हुलसि, पिय मुँदरी पहिचानि॥
ताछिन उमड्यो नह सुख, सो किमि जाय बखानि॥११९॥

घनाक्षरी कवित्त।

दृगन छुवावैं नाहि शीश पै चढावैं नाहि हृदय लगावैं वारंवार दुलरावैं॥ फेरि फेरि हेरैं हेरि हेरि कै कपोल मेलैं मेलि कंठ हेरैं फेरि

पुनि हनुमान कही कर जोरी ❀ खाउँ सरसफल है रुचि मोरी १३६
सुनि बोली सिय हे हनुमंता ❀ इत रक्षैं वर सुभट अनंता ॥
यह अशोकवाटिका विशाला ❀ गुणै प्राणप्रिय निश्चर पाला १३७
याते जाय दुराय उताला ❀ खाय सरसफल गमनौ हाला ॥
पुनि हौ तेज बुद्धि बल धामा ❀ औसर लखि कीजो सब कामा १३८
यौं कहि दीनो बहुरि अशीशा ❀ शीशनाय गमनो मुदकीशा ॥
सियदिशि बार बार सो हेरैं ❀ सीता कपिहि लखैं फिर फेरैं १३९
इमि जानकिहि निरखि हनुमाना ❀ चले हृदय आनँद अधिकाना ॥
अंग प्रफुल्ल रोम बलवंता ❀ उमगो गुण बल तेज अनंता १४०

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनीदर्शन-
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

दोहा—श्रीहनुमत वरवीर कपि, सिय ढिगते चलि आय ॥
किया विचार सुहीय अब, गमनौं बल दरशाय ॥ १ ॥
यौं दृढ ठानि सुवीर वपु, कीनो मेरु समान ॥
प्रगटो वेग प्रचंड अति, पवनतनय बलवान ॥ २ ॥
पुनि अशोकवन मध्य चहुँ, धाय धाय फलखात ॥
भंजत द्रुमवल्ली सदन, करत महा उतपात ॥ ३ ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, खग मृग भगे विहाल ॥
उठीं भभरि सब निश्चरी, बूझी सीय उताल ॥ ४ ॥
कोहै कपि तुमते कहा, कही निकट यह आय ॥
सुनि दीनो उत्तर सिया, हौंहू भेद न पाय ॥ ५ ॥

चौ०-सबहि निश्चरी जाय उताला ❀ रावण प्रति वरणो कपिहाला ॥
तब दशवदन क्रोध किय भारी ❀ सुनि अशोकवाटिका उजारी ६॥
प्रात सभै सेवा हित ठाढे ❀ असीसहस किंकर बलगाढे ॥
सबहि दई आज्ञा दशभाला ❀ मारौ कीशहि जाय उताला॥७॥
ते सबही सकोप द्रुत धाये ❀ विपुलशस्त्र कपि पर बरसाये ॥
तब हनुमत लै परिघ विशाला ❀ करि पुनि रूप भीम विकराल ८

धाय धाय किंकर सब मारे ❀ परे मृतक ते धरणि मझारे ॥
पुनि कपि गर्जि कियो रव भारी ❀ बैठ जाय गृह शिखर मझारी ९॥
जैति राम लछमन बरवीरा ❀ जै कपीश सुग्रीव सुधीरा ॥
राम दास हौं हनुमतकीशा ❀ मर्दो बहु सहस्र दशशीशा॥१०॥
यों पुकारि पुनि धाम सुभंजा ❀ सकल साज खंडित करिगंजा॥
सो विलोकि शतरक्षक धाये ❀ लै लै शस्त्र क्रोध भरि आये११॥
खंभ उपाटि वीर गहि धावा ❀ ताहि भमाय अपार तपावा ॥
सबकी सहि बहु शस्त्र प्रहारे ❀ हनुमत ते समस्त हनि डारे१२॥

पद्धरी छंद।

हनुमान वीर रक्षकन मारि। पुनि अति प्रचंड हिय रोष धारि ॥
द्रुम लता धाम सर ह्रद सुकूप। मर्दै अनेक ध्रुव लखि अनूप१३
दशमाथ जंबु मालीहिटेरि। दीनी रजाय तिहि ओर हेरि ॥
सो भट प्रहस्त सुत धनुप धारा।धायो उताल गर्जत अपार॥१४॥
लखि ताहि वीर किय अट्टहास। लंगूर लंब चुंबो हुलास ॥
सो आय विशिखबाण न प्रहार। मुख शीश बाहु कपि तनु विदार१५
तब कोपि वीर हनुमत उताल।गरु शिला धारि तिहि शीश घाल॥
भट यातुधान बाणन विदारि।करि खंड ताहि दिय भूमिडारि१६॥
तव भीम शाल तरु गहि उपाट।कपि हनो सोउ सो शरन काट ॥
पुनि पंच बाहु उर मध्य एकादश वक्ष घाल अरु तनु अनेक१७
इमि बाण जंबुमाली उताल। हनुमंत अंग मधि दीन शाल ॥
तव कीश धाय सो परिघधारि। डारो जु भूमि निश्चरहि मारि१८॥
पुनि गर्जि वीर चढि उच्च धाम। बैठो निशंक कह जैति राम ॥
वध जंबुमालि सुनि लंकराय। द्रुत सचिव सुतन दीनी रजाय१९
ते सप्त वीर लै सुभट संग। धाये उताल सजि शस्त्र अंग ॥
चहुँ ओर घेरि कै सकल कोपि।बाण न प्रहारि दिय कपिहिनोपि२०
हनुमान वीर तव क्रोध लाय। निज गात चंड गिरि सम बढ़ाय॥
जैजैति राम कहि सोरछाय। कूदे उताल दल मध्य आय ॥२१॥

दोवई छंद।

काहू शीश मुष्ट हनि फोरा काहू दंतन काटा ॥
काहू जानु चापि हत काहू चरण भुजा उत पाटा ॥
काहू पुच्छ लपेटि पछारा काहू नखन विदारा ॥
काहू घालि चपेट प्राण लिय भयो सु हाहाकारा ॥२२॥
यौं हनुमंत सातहू मंत्री सुतन मारि महिडारे ॥
सो विलोकिकै भभरि पराने अपर निशाचर सारे ॥
वीर धीर सानंद धाय पुनि गर्जत निपट निशंका ॥
करि विध्वंस बहोरि धाम बन बैठो शिखर उतंका ॥ २३ ॥
सुनि मंत्री सुत निधन दशानन चकित दुखित यौं बरनी ॥
है कोऊ बलवंत सुरासुर यह न कीशकी करनी ॥
इमि कहि लंकनाथ क्रोधित ह्वै आज्ञा दई उताला ॥
सेना अग्र गमन अधिकारी जाय गहौ कपि हाला ॥ २४ ॥
'विरूपाक्ष यूपाक्ष प्रघस अरु भास करण वर वीरा ॥
रश्मिमालि ये पंच निशाचर दल नायक रणधीरा ॥
संग सैन चतुरंग अंग सजि घोर शोर कर धाये।
कपि उदंड भुजदंड चंड दुहुँ ठोकि हिए हुलसाये ॥ २५ ॥
यातुधान हनुमान अंगपर अगणित शस्त्र प्रहारे ॥
रश्मिमालि ताकि पंचबाण वर विशिख वीर तनु मारे ॥
तब केसरी किशोर गात निज करि भूधर सम भारा ॥
गिरे उछलि तिहि शीश निश्चरहि रथ हरि युत दलि डारा ॥२६॥
विरूपाक्ष यूपाक्ष वीर दुहुँ तासु निधन लखि धाये ॥
कीश बाहु उर कोपि निशाचर मुद्गर अमित चलाये ॥
तब हनुमंत शाल द्रुम लैकै दोऊ भट हति डारे ॥
भासकर्ण अरु प्रघस हेरि सो क्रोधित आय प्रचारे ॥ २७ ॥
पट्टिश प्रघस वाल हनुमंतहि भासकरण हन शूला ।
अपर अनेक शस्त्रधर निश्चर निकर कीशवपु हूला ॥
तबहि प्रभंजनपुत्र प्रबल भट गहि गिरि शृंग विशाला ॥
घालो यातुधान सो दोऊ मृतक भये ततकाला ॥ २८ ॥

पुनि रथ रथनि तुरंग तुरंगनि दंती दंतिन मारे ॥
वीरन वीर विपुल गिरि वृक्षन दंतन नखन विदारे ॥
यों संहारि सैन पुनि हनुमत जे कपीश कहि धाई ॥
बैठे धाय उताल शिखरपर रोमावली फुलाई ॥ २९ ॥
दोहा–पंचसैन नायक मरन, सुनि दशवदन रिसाय ॥
निज सुत अच्छकुमारका, दीनी वेगि रजाय ॥ ३० ॥
सो०–रावण सुत बलवंत, अच्छसाज वर स्वच्छ सजि ॥
लै भट भीर तुरंत, धायो रत आरूढ़ है ॥ ३१ ॥

हरिगीतिका छंद ।

लखि अच्छ वपु छवितेज हनुमत वीर चित चकृत भये ॥
सो सपदि चापहि तान बान संधान त्रैकपि शिरहए ॥
जौलग प्लवंगम उठन चाहो तौं लगे शर जालते ॥
दिय झंपि अंग उताल दीनों शाल नख लग भालते॥३२ ॥
कपि तकत इत उत जकत पुनि अवकाश रंच न पावहीं ॥
इमि अच्छवीर निहार बान अपार विशिख चलावहीं ॥
हनुमान किय अनुमान निश्चर बाल पै बल भूरहै ॥
कह कीजिये इहि काल मोतनु शालनख शिख पूर है ॥३३॥
योंकरि विचार सुवीर उछले व्योमदिशि मोऊ तहाँ ॥
चलि वाण वेधे लच्छ करि करिअच्छ कपि व्याकुल महाँ ॥
हनुमंत तब अतिरोष करि निज गात विपुल बढायकै ॥
तल मारि स्यंदन वाजि युत तिहि दीन भूमि गिरायकै ॥ ३४ ॥
पुनि उछलि निश्चर अंतरिच्छहि भिरे दुहुँ दोउन हने ॥
तितहू प्रहारे शस्त्र अंग तिनवीर भे व्याकुल घने ॥
तब कोप भरि हनुमंत अच्छहि वेगि पद गहि धायकै ॥
आकाशनें घरि धरणि मारि सबल भूरि भमायकै ॥ ३५ ॥
दश कंठसुत शिर कंठ भुज कटि जंघ पद [illegible] ॥
दुहुँ अच्छ वच्छ [illegible]

लखि तासु वध निश्चर पराने कीश आय उतालही ॥
तिहि उच्च शिखर विराजकी नगराज दै भुज तालही ॥ ३६॥
दोहा–सुनौ दशानन अच्छ वध, भयो शोक दुख भूरि ॥
तब भाषी घननादसों, महाक्रोध उर पूरि ॥ ३७ ॥
जाहु पुत्र वर वीर तुम, गहि लावौ इतकीश ॥
को आयो कपि ह्वै लखौ, कै यम कै सुरईश ॥ ३८॥
सुनत इंद्रजित साज सजि, आयो अतिहि उताल ॥
लखि हनुमत घननादको, किय घननाद कराल ॥ ३९ ॥
करो युद्ध बहु वीर दुहुँ, काहुहि कोउ न जीत ॥
उत नृपसुत इत पवनसुत, दोऊ सबल अभीत ॥ ४० ॥
इंद्रजीत हिय हारिकै, किय ब्रह्मास्त्र प्रहार ॥
निज इच्छातें कपि गिरो, तासु प्रभाव विचार ॥ ४१ ॥
भूमि परतही वीरको, यातुधान बहु धाय ॥
सन द्रुम वल्कल रज्जुते, बंधन कीन दिढाय ॥ ४२ ॥
रज्जु निबंधन होतहीं, अस्त्र बंधभो मोच ॥
सोगुणिकै घननादके, हृदै भयो अतिसोच ॥ ४३ ॥
अस्त्र बंध जो होय तिहि, बंधन अपर न योग ॥
दूजो बंधन होतही, रहै न मंत्रनियोग ॥ ४४ ॥
इंद्रजीत इमि मनहि मन, सोचत करत विचार ॥
ताडत खैंचत कपिहि भट, लाये सभामझार ॥ ४५ ॥

प्र० वा० ॥ सुं० कां० ॥ स० ४८ ॥ श्लोक ॥

ततः स्वायंभुवैर्मंत्रैर्ब्रह्मास्त्रं चाभिमंत्रितम् ॥
हनूमांश्चिंतयामास वरदानं पितामहात् ॥ १ ॥
न मेस्य बंधस्य च शक्तिरस्ति विमोक्षणे लोकगुरोः प्रभावात्
इत्येवमेवं विहितोस्त्रबंधो मयात्मयोनेरनुवर्तितव्यः ॥ २ ॥
स वीर्यमस्त्रस्य कपिर्विचार्य पितामहानुग्रहमात्मनश्च ॥
विमोक्षशक्तिं परिचिंतयित्वा पितामहाज्ञामनुवर्ततेस्म ॥ ३ ॥

अस्त्रेणापि हि बद्धस्य भयं मम न जायते ॥
पितामहमहेंद्राभ्यां रक्षितस्यानिलेन च ॥ ४ ॥
ग्रहणे चापि रक्षोभिर्महन्मे गुणदर्शनम् ॥
राक्षसेन्द्रेण संवादस्तस्माद्गृह्णंतु मां परे ॥ ५ ॥
स निश्चितार्थः परवीरहंता समीक्ष्यकारी विनिवृत्तचेष्टः ॥
परैः प्रसह्याभिगतैर्निगृह्य ननाद तैस्तैः परिभर्त्स्यमानः ॥६॥
ततस्ते राक्षसा दृष्ट्वा विनिश्चेष्टमरिंदमम् ॥
बबंधुः शणवल्कैश्च द्रुमचीरैश्च संहतैः ॥ ७ ॥
स बद्धस्तेन वल्केन विमुक्तोस्त्रेण वीर्यवान् ॥
अस्त्रबंधः स चान्यं हि न बंधमनुवर्तते ॥ ८ ॥
अथेंद्रजित्तं द्रुमचीरबद्धं विचार्य वीरः कपिसत्तमं तम् ॥
विमुक्तमस्त्रेण जगाम चिंतामन्येन बद्धोप्यनुवर्ततेस्त्रम् ॥ ९ ॥
अहो महाकर्म कृतं निरर्थं न राक्षसैर्मंत्रगतिर्विमृष्टा ॥
पुनश्च नास्त्रे विहितेस्त्रमन्यत्प्रवर्तते संशयिताःस्म सर्वे ॥१०॥
अस्त्रेण हनुमान्मुक्तो नात्मानमवबुध्यते ॥
कृष्यमाणस्तु रक्षोभिस्तैश्च बंधैर्निपीडितः ॥ ११ ॥
हन्यमानस्ततः क्रूरै राक्षसैः कालमुष्टिभिः ॥
समीपं राक्षसेंद्रस्य प्राकृष्यत स वानरः ॥ १२ ॥
अथेंद्रजित्तं प्रसमीक्ष्य मुक्तमस्त्रेण बद्धं द्रुमचीरसूत्रैः ॥
व्यदर्शयत्तत्र महाबलं तं हरिं प्रवीरं सगणाय राज्ञे १३॥इत्यादि

दोहा—रावणसभा विलोकिकै, चकित चित्त हनुमंत ॥
करजोरे ठाढे उचित, सुर अरु असुर अनंत ॥ ३६ ॥

प्र० ॥ हनुमन्नाटके ॥ श्लोक ।

ब्रह्मन्नध्ययनस्य नैष समयस्तूष्णीं बहिः स्थीयतां स्वल्पं जल्प बृहस्पते जडमते नैषा सभा वज्रिणः ॥ वीणां संहर नारद स्तुतिकथालापैरलं तुम्बुरो सीतारल्लकभल्लभग्नहृदयः स्वस्थो न लंकेश्वरः॥ ॥ १४॥ इंद्रं माल्यकरं सहस्रकिरणं द्वारप्रतीहारकं चंद्रं छत्रधरं समीरवरुणौ संमार्जयंतौ गृहान् ॥ पाचक्ये परिनिष्ठितं हुतवहं किं नाम नेदृक्सखे रक्षोभक्ष्यमनुष्यमात्रवपुषं रे राघवं स्तौषि किम्॥ १५॥ इत्यादि

दोहा–दशमुख साज समाज वर, तेज प्रताप सरूप ॥
निरखि सराहत मनहिं कपि, गुणत समस्त अनूप ॥ ४७ ॥
लंकनाथ हनुमानको, वल वपु तेज निहारि ॥
सोचत विधि हरि शंभुको, आयो कपितनु धारि ॥ ४८ ॥
यों गुणि रावण छिनहि छिन, हेरत करि हगवंक ॥
त्यों उतंक तिहि लखत कपि, लोचन लाल निशंक ॥ ४९ ॥
तव प्रहस्त प्रति दशवदन, कही सुवूझो याहि ॥
वन भंजन किहि काज किय, क्यों आयो को आहि ॥ ५० ॥
चौ०-सुनि प्रहस्त बूझी सब कीशै ❀ कह हनुमंत सुमिरि निजईशै ॥
कपि हौं पवनपुत्र हनुमाना ❀ रामदास लघु करत वखाना ५१ ॥
राज दरश हित विपिन उजारा ❀ निज तनु रक्षाहित दलमारा ॥
जनकसुताहि लखन हित आयो ❀ पुनि कपीश शिख देन पठायो ५२
यों प्रहस्त प्रति कहि कपि वंका ❀ पुनि बोले रावणहि निशंका ॥
निश्चरनाथ परमहित मानी ❀ अंगीकार करिये ममवानी ५३ ॥

सवैया कवित्त ।

लुकि कीजत है कहुँ नेकी बदी वह देखत है सबही गति साफै ॥
यह भूलि न जानियो जीमें कवौं जुकरें हम काम सु कोउ न भाफै ॥
रसिकेश इहाँ कछु जैसी करी तिहिमें तिलहू न घटै न इजाफै ॥
उत वैसिहि हेत तिहारे तयार है ह्वां हरिके घर होत निसाफै ॥ ५४ ॥

दोहा–हौं निश्चरपति वेद विद, सकल ज्ञान गुणधाम ॥
तव हौं अति हितमानिकै, कहौं भजो श्रीराम ॥ ५५ ॥

चौ०–शिविका मध्य सियहि बैठारी ❀ दासी भाव सकल तुवनारी
पुत्र बंधु युत निश्चरनाथा ❀ राम शरण गमनो मम साथा ५६ ॥
याहीमें सब भाँति भलाई ❀ न तरु वृथा तुव सकल नशाई ॥
सुनि हनुमंत वचन दशशीशा ❀ कही सम्हरि बोलत नहिं कीशा ५७
राम लषण द्वै मनुज दुखारे ❀ त्यों दुर्वल कपि भालु बिचारे ॥
जिनहिं सदा मम निश्चर खाहीं ❀ तिनके शरण वीर है जाहीं ५८ ॥

तब हनुमंत कही करि क्रोधा ❀ तू वेदज्ञ रंच नहिं बोधा ॥
हौं जानौं आयो तुव काला ❀ सुनि रिसाय बोलो दशभाल८९
दोहा—हे कटुवादी कीश अति, वेगि करौ वध याहि ॥
सुनि आज्ञा निश्चर उठे, लै लै शस्त्र उछाहि ॥ ९० ॥
तवहि विभीषण जोरि कर, भ्रातहि कही बुझाय ॥
नाथ नीति जानि सकल, दूत अवध्य सदाय ॥ ९१ ॥
वध कारागृह द्वै न अरु, इते दूत हित दंड ॥
अंग विरूप सुताडना, मुंडनादि सब चंड ॥ ९२ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ सुं० का० स० ५२ ॥ श्लोक ।

वैरूप्य मंगेषु कशाभिघातो मौंड्यं तथा लक्षण सन्निपातः ॥
एताह्नि दूते प्रवदंति दंडान्वधस्तु दूतस्य न नः श्रुतोस्ति ॥ १६ ॥

चौ०सुनि रावण तव नीति प्रमाना ❀ कही बोलि निश्चर बलवाना ॥
कीशहि पुच्छ परम प्रिय होई ❀ याते भस्म करौ द्रुत सोई ९३॥
सुनत अनेक निशाचर धाये ❀ जीरन वसन तैल बहु लाये ॥
कपि विचार युत पुच्छ वढाई ❀ यातुधान सो लखि रिसलाई ९४
पुच्छ लपेटे वसन वनेरे ❀ सिंचि तैल बहु घट चहुँ फेरे ॥
तामधि पावक दई लगाई ❀ चले कपिहि लै ढोल बजाई ९५॥
नगर माहिं फेरो चहुँ ओरा ❀ कौतुक लखैं सकल करि शोरा॥
ताछिन इक तिय सिय ढिग धाई ❀ हनुमत दशा समस्त सुनाई ९६॥
सो सुनि सीता भई दुखारी ❀ अति उताल उठि लै करवारी ॥
अनल दिपाय प्रदक्षिण दीना ❀ कहि वर वैन सत्य प्रण कीना९७
दोहा—मेरे मन वच कर्मते, सत्य पतिव्रत जोय ॥
तौ हनुमंतहि वेगही, अनल तोय सम होय ॥ ९८ ॥
यौंकहि मुख कपि ओर करि, सींचो अनल सुवारि ॥
शीत पुच्छ तच्छनलगो, वीर सुलयो विचारि ॥ ९९ ॥
चौ०—तब हनुमंत हीय ठहराई ❀ इमि औसर कव फेरि मिलाई ॥
सो गुणि लघुतनु करि बलवंता ❀ बंधन ते कढि निमुकि तुरंता ७०
प्रबल मेघ सम गर्जि कराला ❀ भये पर्वताकार विशाला ॥

बंध मोच लखि निश्चर भागे ॐ हनूमान अति आनँद पागे ७१॥
उछलि उताल उच्च गृह जाई ॐ प्रबल अनल चहुँ ओर लगाई॥
तहँ ते धाय अपर थल जारा ॐ कूदि सुधाम और पुनि बारा ७२॥
एक विभीषण सदन बचाई ॐ लंका अपर समस्त जराई॥
ताछिन प्रबल पवन किय जोरा ॐ माचो नगर शोर अति घोरा७३
धाय धाय चहुँ पवनकुमारा ॐ पैठि पंथ गढ सदन बजारा॥
लाई अनल उठी बहु ज्वाला ॐ छायो हाहाकार कराला॥७४॥

दोहा—अमित निशाचर निश्चरी, जान साज आगार ॥
अग्नि उतंक सुलंक चहुँ, लगी होत जरिछार ॥ ७५ ॥
रावण अति व्याकुल भयो, जन धावत चहुँ ओर॥
जरत मरत भागत परत, करत सुआरत शोर॥ ७६ ॥
एक विभीषण भौन अरु, सिया रहैं जिहि ठौर॥
बचे दुहूँथल राम बल, लंक जरी सब ओर ॥ ७७॥
इमि हनुमंत सुवीर वर, लंक नगर सब जार॥
अनल सिराई पुच्छकी, कूदि पयोधिमझार॥ ७८॥
मंजन किय तनु स्वेदजो, परो सिंधु महँ भूरि॥
सो सफरी भषिके जनो, मकरध्वज बल पूरि॥ ७९॥
करत सुमंजन कीश उर, बाढो सोच अपार॥
भो अनर्थ जारो सकल, राखो कछु न विचार॥ ८०॥
नगर वाटिका बाग बन, गढ़ गृह पुर प्राकार॥
सब जारो हौं क्रोध वश, कियो सकल क्षैकार॥ ८१॥
सुरति न राखी सीयकी, हाय कहामैं कीन॥
भयो अयश पातक मरन, अरु त्रिलोकपतिहीन॥ ८२॥

रोवई छंद ।

सीय मरन सुनि राम न जीवैं तिन बिन लषण न रैहैं॥
सोलखिकै सुकंठ तनु त्यागै तब सब कपि जियदै हैं॥
सुनि उत भरत सबंधु मातगण युत समाज मृत होवैं॥
कीशवंश रघुवंश दुहूँ ये मो करणी वश खोवैं॥ ८३॥

दोहा–धिग मम जीवन जन्म बुधि, धिग धिग बल धिग क्रोध॥
धिग विद्या गुण रूप धिग, जो नहिं राखो बोध ॥ ८४ ॥
मोहि उचित सब भाँति अब, प्राण त्याग इहि काल ॥
यों सोचत विलपत अतिहि, व्याकुल अंजनिलाल ॥८५॥
तौ लग सुने सुबैन कपि, इत उत होत पुकार ॥
जरी वाटिका सिय बची, यह आचरज अपार ॥ ८६ ॥
उत सीता सब विधि कुशल, इत विभीषण भौन ॥
बचे सु द्वै थल अरु सकल, जरे सु कारण कौन ॥ ८७ ॥
सो०–सुनी गिरा हनुमंत, यों तब कछु उर धीर धरि ॥
आये धाय तुरंत, निरखि सियहि प्रफुलित भये ॥ ८८ ॥
स्वामिनि पद धरि शीश, करी विनय बहु धीरदै ॥
तब सिय सहित अशीश, कहे बचन अति प्रीति युत८९॥
सुनि हनुमत शिरनाय, पाय रजाय अनंद युत ॥
रामचरण हिय ध्याय, चलि आये पुनि सिंधुतट ॥ ९० ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० लंकादहन
वर्णनो नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

दोहा–सागर तट हनुमंत कपि, गिरि अरूढ़ ह्वै वीर ॥
पार गमन हित हर्ष युत, कीनो भीम शरीर ॥ १ ॥
अंग फुल्ल रोमांच भो, पुच्छ गुच्छ शिरधार ॥
कुधर चापि उछले सबल, गमने व्योम मझार ॥ २ ॥
सिंहनाद करि वीर कपि, नभ मंडल ह्वै जात ॥
सिद्धि भयो प्रभुकाज गुनि, छिन छिन हिय हरषात ॥ ३ ॥
सुर किन्नर गंधर्व मुनि, खड़े व्योम चहुँ ओर ॥
ताछिन कपिहि सुनाय कै, विनय करत कर जोर ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ऐसो ओज सुयश विराजै महि मंडलमें परम प्रचण्ड तनु तेज भूरि भानको ॥ जाकी केलकीरति बखानें राम आप मुख शेष हू न गाय सकैं ताके गुण गानको ॥ रमिकबिहारी सुखदायक सदाही

दूजो जनपाल दानी करुणा निधानको॥ दीननको त्राता मोद मंगल विधाता बहु ऋद्धि सिद्धि दाता वंदों नाम हनुमानको॥५॥संकट हरन दुष्ट दानव दरन छल छिद्रके छरन शोक सिंधुके तरन हैं॥अंबुज वरन बहु वित्तके भरन वेगि औढर ढरन दीन पालन करन हैं॥ अशरन शरन सुभक्त उद्धरन जोम जंगके लरन पूरी पैजके परन हैं॥ रसिकविहारी हेतु सुफल फरन सदा ऐसे कपि केशरीकिशोर के चरनहैं॥ ६ ॥ दाताहैं अतुल जन त्राता वरवंड बहु दुष्टनके घाता हैं प्रचंड सो घनेरे हैं॥ रसिकविहारीके कलेशके निपाता सदा भक्त भय हाता चहुँ येही निरवेरे हैं ॥ केशरी किशोर रणरोर वर जोर वीर पकर पछारैं विघ्न जेते सब नेरे हैं ॥ वैरीबल भंजा उद्धखल दल गंजा धीर दीन मन रंजा ऐसे पंजा युग तेरे हैं ॥ ७ ॥ गिरि सों गंभीर प्राण हरत सुवीरनके वैरिन विदीरनको वज्र सों करेरोहै ॥ पब्बै सो परै है खल झुंडनके मुंडनपै परम प्रचंडित उदंड सो घनेरे है ॥ उद्धत अपार जाके बलको न वारापार रसिकविहारी दीन रक्षक निवेरोहै ॥ केशरीकुमार निज वीरता विचार वीर दुष्ट हर जुष्ट रुष्ट पुष्ट मुष्ट तेरोहै ॥ ८ ॥ भंजत अरिष्ट कोटि अति उतकृष्ट रहै दुष्टन तलिष्टन पै क्रुद्धित करेरी है ॥ दीनके अभिष्टनको पूरत वरिष्ट वेगि अमित गरिष्ट इष्टवान हित हेरी है ॥ दृष्टको अदृष्ट औ अदृष्टहूकों दृष्ट करै उतपति पालक सँहार सृष्टिके रीहै ॥ अधिक कुदृष्ट सदा रहत मलिष्टनपै रसिकविहारी पै सुदृष्ट दृष्ट तेरी है ॥ ९ ॥ तूतो वीर सुखद सदाही दीन दासनको रसिकविहारी हेत संपतिकी सेकरै॥मुष्टनसे मारिकै विदारत अतुष्टनको जोमजुष्ट रुष्ट पुष्ट दुष्टनकी क्षेकरै॥चर्व चर्व डारत अखर्व गर्व गर्विनको विघ्नके कृतघ्नको मारि विघ्नतें करै ॥ येरे हनुमान बलमान गुणके निधान वेगि हो सहाय मेरी तूही नित्य जैकरै॥१०॥ वंध जीभनिंदक प्रमादी औ चवाइनकी बंधढीठ मूठ भूत प्रेत रोग वंध वंध ॥ वंध दोप परकृत यंत्र मंत्र तंत्र वंध भानु भौम मंद आदि कुग्रह सुवंध वंध ॥ वंध बुद्धि दुष्टनकी वाक्य वंध गति वंध दल खल झुंडनके

कर पद बंध बंध ॥ बंध विप डाढ नख शृंग शस्त्र अस्त्र सबै वेगि बजरंग कुरु चराचर बंध बंध ॥ ११ ॥ बन्ध बंध अनल अकाश जल थल बंध योगिनी मशान यक्ष गन्धरब बन्ध बंध ॥ बंध बंध शाकिनी औ डाकिनी पिशाचिनीको बंध वीरदानव सु ब्रह्मदेव बंध बंध ॥ बंध बंध काल औ कराल वैरी बंध बंध दीह दुख दारिद्र जु दुर्दिनको बंध बंध ॥ बंध बंध सकल समर्थ खल झुंडनकी वेगि हनुमंत कुरु दुष्ट बल बंध बंध ॥ १२

मणिप्रवालरीति।

देहि वरदानं वीर सम्प्रति यथेच्छितं हि कुरु चानुकंपां तव चरणौ भजाम्यहम् ॥ दुर्जनान् भंजय विभंजय सुदुर्दिनानि शृणु चांजनेय दीनवचसा वदाम्यहम्॥झटिति गृहाण हे निलात्मज तवाशनाय कलुष दरिद्रारातियूथं प्रददाम्यहम्॥ पूरय सुवित्तं रसिकेशस्यानुमोदं दातुं पवनात्मजो मां पातु शिरसा नमाम्यहम् ॥ १३ ॥ माकुरु विलंबं वीर संकटादुद्धारयाशु दासोहं तवास्मीत्यभियाचमानो दीनोहम् ॥ दिक्षु वितनोतु कीर्तिं विपुलां तनोतु लक्ष्मीं देहि रसिकेशस्याभिलाषं त्वदधीनोहम् ॥ निर्भयो हि भूमौ विचरामि भवदाश्रयेण सकलसुकर्ममनोवचनान्मलिनोहम् ॥ करुणाकटाक्षेणावलोकयाशु मां भो कपे नान्यम् ॥ भावयामि पवनात्मजा विहीनोहम् ॥ १४ ॥

दोहा—इमि अपार अस्तुति विविध, होत व्योम चहुँ ओर।
सिय सुधिले आनंद युत, जात वीर वर जोर ॥ १५ ॥
प्रबल पवन सम वेग बहु, मेघ सरिस कर नाद।
सिद्धि काज भो राजको, यों टेरत अह्लाद ॥ १६ ॥

चौ०—जाम्बवंत अंगद बहुवीरा ॥ जे भव सागर उत्तर तीरा ॥
ते लखि वेग गर्जना भारी ॥ उठि उठि दक्षिण दिशा निहारी१७॥
कीनो सकल सत्य अनुमाना ॥ नहिं धन पौन सुत हनुमाना ॥
काज सिद्धि करिके कपि आयो ॥ यह आनंद शोर सरसायो ॥१८॥
इमि भाषत तौ लग हनुमंता ॥ आये व्योम निकट १९

रहिते कह कीश पुकारी ❀ हौं देखी श्रीजनकदुलारी ॥१९॥
यौं भाषत नभ ते गुणमाना ❀ गिरि पर कूदि परे हनुमाना ॥
हेरि अंगदादिक सब धाये ❀ यथायोग मिलि हिय हुलसाये२०॥
हनूमान तब लघु वपु कीना ❀ कहि समस्त सबही सुख दीना ॥
वीर पराक्रम सुनि हरषाहीं ❀ पुनि पुनि मिलन पवन सुतकाहीं२१
सिद्धि काज गुणि कपिगण नाना ❀ किलकैं नचैं करैं बहु गाना ॥
धाय धाय सुंदर फल लावैं ❀ हनुमंतहि करि प्रेम खवावैं ॥२२॥
छिन छिन सब हनुमतहि सराहैं ❀ हेरि हेरि मुख हीय उमाहैं ॥
जाम्बवंत प्रमुदित यौं भाषे ❀ सकल प्राण तुमहीं कपि राखे२३॥

दोहा–कीश भालु गावत नचत, कहत सुनत वर बैन ॥
यौं हीं अति आनंदमें, तहँ बीती सब रैन ॥ २४ ॥
प्रात होत सब भालु कपि, जुरि बैठे इक ठाम ॥
करन लगे वर मंत्र तब, कह अंगद बलधाम ॥ ॥ २५ ॥
जिते भालु कपि हैं इतै, ते सबही बलवंत ॥
पै रावण वध हेत बहु, कै हम कै हनुमंत ॥ २६ ॥
सो हम लंकहि जाय द्रुत, सदल रावणहि मारि ।
जनकसुतहि लै आवहीं, इते पृष्ठ निज धारि ॥ २७॥
पुनि चलि सब सानंद अति, रामहिं सौंपैं सीय ।
कपिपति रघुपति काज लखि, सिद्धि मुदित हो हीय ॥२८॥

चौ०–ऋच्छराज सुनि अंगद बानी ❀ कही सुरीत नीत हित सानी॥
कीशपाल रघुलाल सुदोऊ ❀ दीनी यह रजाय नहिं कोऊ ॥ २९ ॥
सिय दरशन आज्ञा जो दीनी ❀ सो प्रतिपाल पवनसुत कीनी ॥
याते मम संमत यह आई ❀ चलि दीजे सब प्रभुहि सुनाई॥३०॥
पुनि जिमि ईशरजायसु होई ❀ शिर धरि मुदित करें सब कोई ॥
जाम्बवंत मत सकल सराहा ❀ उठे बीर भरि हृदय उछाहा ॥ ३१॥
द्रुत महेन्द्र गिरिते सब बीरा ❀ उछले व्योम पंथ रणधीरा ॥
किष्किधा ढिग बेगहि आये ❀ सकल भालु कपि आनँद छाये३२॥

जो मधुवन कपिपति प्रियकारी ॐ जिहि दधिमुख वानर बलभारी ॥
कीशपाल मातुल सो धीरा ॐ रक्षै सदा सहित भट भीरा ॥ ३३ ॥

दोहा—आये मधुवन मध्य सब, लखे सरसफल भूर ।
विविध पत्र मधु वेलि तरु, विमल नीर सुखपूर ॥ ३४ ॥
हनुमानादिक वीर सब, लै युवराज रजाय ।
पैठे मधुवन मध्य द्रुत, कहि जैजै कपिराय ॥ ३५ ॥

दोवई छंद।

धाय धाय चहुँ ओर सुवानर जाति महा उतपाती ।
अशन करैं अरु तोरि बहावैं शाख फूल फल पाती ॥
भंजें तरु गंजें बर बेलिन मधु पीवें किलकारैं ।
भरैं द्रोण कर धरैं मत्तह्वै ढोरि महीतल डारैं ॥ ३६ ॥
कोऊ चढ़ि द्रुम धरि झकझोरैं कोउ शाखगहि झूमैं ।
कोऊ इक तरुते दूजेपर उछलि बैठि तिहि दूमैं ॥
कोऊ पुच्छ उठाय सुनाचै कोऊ मुखहि बजावैं ।
कोऊ छंद प्रबंध उचारैं कोऊ हँसै जुगावैं ॥ ३७॥
कोऊ मल्लयुद्ध हठि ठानैं बैठें कोउ चुपाई ।
कोऊ रुदनकरैं शिरकर धर सोवैं कोऊ जाई ॥
गर्जै कोउ शोरतें कोऊ पौढैं मृतक समाना ॥
इहिविधि कपि उनमत्त मोद युत विरचैं कौतुक नाना ॥ ३८ ॥
वोर शोर मधुवन मधि छायो सो सुनि दधिमुख धाये ॥
लखि विध्वंस दंडगहि क्रोधित कीशनमारि भगाये ॥
पुनि अंगद रुखपाय प्लवंगम हनुमदादि बलवाना ॥
सन्मुख ह्वै सुकंठ मातुलके भये युद्ध अगवाना ॥ ३९ ॥
रहे जिते वनपाल कीश तिन हनुमदादि वरवीरा ॥
दंतन नखन तलन पद मुष्टन हनि हनि किये अधीरा ॥
कहे विविध दुर्वचन सकल पुनि देव मार्ग दरशाये ॥
अति अपमान जान सो दधिमुख रक्षक सकल बुलाये ॥ ४० ॥

सुनि सुग्रीव सहानुज रामा ❀ मुदित भये गुणि पूरण कामा ॥
गदगद कंठ अंग पुलकाने ❀ प्रिया प्रीति रघुवर उमगाने ५८
रही न धीर वीर दिशि हेरी ❀ निज समीप अतिआतुर टेरी ॥
सादर अंकलाय बैठारे ❀ राजकुँवर मृदु वचन उचारे५९

दोहा—कहाँ प्राण प्यारी सिया, भाषौ पवनकुमार ॥
हौं धाऊं अति वेगि तहँ, जहँ जीवन आधार ॥ ६० ॥

घनाक्षरी कवित ।

मेरी प्राणप्यारी तुम निज दृग देखी सत्य भाषौ वेगि नकहू न शंक हिय राखो वीर ॥ कितहूँ कहाँहैं किहि देश किहि भेष माँहि ग्राम नाम ठाम धाम वरणि धरावो धीर॥रसिकविहारी कहीजनकदुलारी काह जीवै किमि बाला कैसे सहत वियोग पीर ॥ मेरो दिन रात विरहानल जरावै गात सपदि सिरावो वरसायकै सुबैन नीर ॥६१ ॥

दोहा—तब हनुमान सुवीर वर, बोले दुहुँ कर जोर ॥
सिंधु पार लंका नगर, अनुपम दक्षिणओर ॥ ६२ ॥
तहाँ अमित निश्चर प्रबल, भूपति रावण नाम ॥
लै राखी सो जानकिहि, वन अशोक वर धाम ॥ ६३ ॥
परम प्रबंध अपार चहुँ, दशमुख राखत आप ॥
बिकट निश्चरिनमध्य सिय, बैठी करहिं विलाप ॥ ६४ ॥
सत्य पतिव्रत धर्म युत, प्रभुपद सुमिरहिं सीय ॥
दरश आश करि छिनहि छिन, वरवस राखहिं जीय ॥६५ ॥
मोहिं रावरो दास दृढ, जानि महा सुखपाय ॥
मम स्वामिनि प्रभु हेत यह, विनय करी शिरनाय ॥ ६६ ॥
हौं दासी प्रभु चरणकी, दीन आपनी जानि ॥
मोहिं दरश दीजे सपदि, हो सुभक्त सुखदानि ॥ ६७ ॥
भयो होय भारी जुपै, मोते कछु अपराध ॥
तौ सबही कीजे क्षमा, प्रभु उर दया अगाध ॥ ६८ ॥
मेरे मन वच कर्म नित, प्रभु विन और न कोय ॥
पराधीन अबला दुखी, देखि कृपा द्रुत होय ॥ ६९ ॥

दरश आश द्वै मास लग, औरहु राखौं प्राण ॥
अवधि गये तनु त्यागिहौं, दुसह कलेश निदान ॥ ७० ॥
यौं कहिकै हनुमंत पुनि, बोले दृग जल ढार ॥
जनकसुता दुख कहत प्रभु, मो हिय होत दरार ॥७१॥
सो सुनि रघुवर श्वास लै, हिलकि उसासि अकुलाय ॥
कही हाय ममवल्लभा, अब किहि भाँति मिलाय ॥ ७२ ॥
यौं कहिकै कपि ओर लखि, दृग भरि ह्वै सुख दीन ॥
विरह प्रेम दुख सुख उमँगि, बोले निपट अधीन ॥ ७३ ॥
मम हित निज भूषण वसन, प्रिया न दीन्ो वीर ॥
विनपाये तिहि चिह्न कछु, मो उर धरै न धीर ॥ ७४ ॥
तब हनुमंत उताल अति, सिय भूषण सो दीन ॥
हेरतही उमँगाय कै, राजकुँवर करलीन ॥ ७५ ॥
निज प्यारीके शीशको, भूषण दृढ पहिचान ॥
लीनो हृदय लगाय तिहि, अति अनंद उमगान ॥ ७६ ॥
ह्वै प्रसन्न बहु कपिहि पुनि, लायो अंक मझार ॥
बहु बखान हनुमानको, कीनो राजकुमार ॥ ७७ ॥
चौ०-पुनि रघुवीर धीर उर धारी ❀ जीवत सिय दृढ हृदय विचारी॥
तब बूझी कीशहि रघुवीरा ❀ लंक कथा वरणो सब वीरा७८॥
सुनि हनुमंत प्रभुहि शिरनाई ❀ सकल कथा विस्तृत निज गाई॥
सुनि बोले कर जोरि सुकीशा ❀ यह तव कृपा सकल जगदीशा७९
सुनि हनुमंत कर्म रघुवीरा ❀ अपर भालु कपि सब बरवीरा॥
बुद्धि नीति बल भूरि सराहे ❀ सिद्धि काज गुणि हृदय उछाहे८०
इति श्री० रा०र० वि० वि०सीतासंदेशप्रात्तिवर्णनो नाम दशमोविभागः॥ १०॥

दोबइछंद।

सुनि हनुमत मुखलंक कथा सब रघुनंदन धनुधारी ॥
सिया ध्यान करिकै सुकंठ सों मंजुल गिरा उचारी ॥
हे कपिराज आज अगहनकी असित अष्टमीनीकी ॥
पुनि नक्षत्र उत्तरा फालगुनि आश पुजावै जीकी ॥ १ ॥

तदुपरि हस्त समस्त योगवर है प्रशस्त शुभदाई ॥
पुनि मुहूर्त अभिजित यहि औसर अरु बहु सगुन जना
ऐसे समय पयान अनी युत होय विजय चलिकीजे ॥
याते सखा वेगि कपि ऋच्छन गमन रजायसु दीजे ॥ २

प्र० ॥ वाल्मी० ॥ युद्धकांडे ॥ सर्ग ४ ॥ श्लोक।

आस्मिन्मुहुर्ते सुग्रीवः प्रयाणमभिरोचते ॥ युक्तो मुहूर्त प्राप्तो मध्यं दिवाकरः॥१॥उत्तराफाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन यो अभिप्रायाम सुग्रीवः सर्वानीकैः समावृतः ॥ २ ॥ उपरिष्टाद्वि स्फुरमाणमिमं मम ॥ विजयं स मनुप्राप्तं शंसतीव मनोरथम् इत्यादि ॥

दोवई छंद।

सुनि सुग्रीव बुलाय वेगि भट यथा योग समुझाई ॥
दई रजाय चले प्रमुदित सब कीश भालु समुदाई ॥
पवनसुवनके कंध राम लछमन अंगदके कांधे ॥
शोभित भये भ्रात दुहुँ गमने वराणि खंग कटिबांधे ॥ ३ ॥
पंथ सुधारत जात नील कपि भालु लक्षलै आगे ॥
कुमुद सदल शोधत मग चहुँ दिशि चलैं सजग सँग लागे
तिन पाछे गज गवय गवाक्षहु गवैं अनी समेता ॥
ऋषभ वाहिनी सहित दाहिनी ओर सिधार सचेता ॥ ४ ॥
गंध हस्ति दुर्धर्पतरस्वी गंधमादनहि आदी ॥
चलैं वामदिशि बहु वीरन युत गर्जे कीश प्रमादी ॥
वली सुषेण वेगदरशी अरु जाम्बवंत भट आछे ॥
विकट भालु कपि विपुल सहित वे गमन करत हैं पाछे ॥
लै शतवली कोटि दश वानर अनी चहूँ दिशि चाले ॥
कपि शतकोटि पनस केसरि लै ते तिनहूं प्रतिपाले ॥
हि विधि विकट कटकचहुँ गमन यथा उचित सह चेता।
सबंधु राम तहँ कपिपति कीश अपार समेता ॥ ६ ॥

कीशभालुदल अमित भूमि नभ मारग मुदित सिधावैं ॥
नगर ग्राम आराम कूपी बहु गमनत सकल बचावैं ॥
होत शकुन शुभ निरखि राम युत हर्ष सबै मनमाहीं ।
गर्जहिं कपि तरु गिरि गहि धावैं करि कलोल किलकाहीं ॥ ७॥
कंद मूल फल फूल पत्र मधु अशन करैं हरषाई ।
सब तरु बेलि सफल छाये चहुँ निज निज समय बिहाई ॥
इहि विधि अमित भालु कपि संयुत राम सप्तदिन माहीं ।
पहुँचे आय उताल सिंधु ढिग दल छायो चहुँ धाई ॥ ८ ॥
चढ़ि महेंद्र गिरिपर रघुनंदन लखि सबंधु वारीशा ॥
सादर दुहुँ कर जोर विनय युत ताहि नवायो शीशा ॥
पुनि तहँते वेगहि तट आये सब कह दई रजाई ॥
कियो वास कपि भालु त्रिमंडल उचित सु आयसुपाई ॥ ९ ॥
द्विविद मयंद नील नल आदिक लै कपि भालु अपारा ।
लखत फिरत महि व्योम सजग बहु चहुं सुभट रखवारा ॥
अपर अनेक प्रबंध यथोचित दृढ कीने सुग्रीवा ॥
नीति रीति भय प्रीति सहित सब रहे वीर बलसीवा ॥ १० ॥
योंथपि सैन त्रिदिन सागर तट रघुवर कियो निवासा ॥
बैठे लषण सुकंठ पवनसुत आदि रामके पासा ॥
ताछिन राजकुँवर दक्षिण दिशि निरखि नैन भरि नीरा ॥
लै उसाँस कहि हाय लाडिली बोले निपट अधीरा ॥ ११ ॥
दोहा—अहो बंधु याही दिशा, हैं सिय प्राण अधार ॥
मिलन होय किमि बीच यह, पयोनदीश अपार ॥ १२ ॥
हाय धरौं किमि धीर उर, काह करौं कित जाउँ ।
हौं फिरि सौं बिनलाडिली, यह निज दुख बतराउँ ॥ १३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

नैनजलजेगनि या हेरनि अधीन ताकी बोलनि सुदीन ताकी नेक नाहि भूले हैं ॥ प्यारे कहि टेरनि मनैदभुज भे- रनि सो सकल छबीलीकी भुनाई हियहूलें हैं ॥ गहि गहि

बार बार छिन छिन धाय धाय आय आय विरहा सुरतिशूल शूलै है॥ रसिकविहारी सुखकारी प्राणप्यारी सदा रैनि दिन मेरे दृग दोउनमें झूलै है॥ १४॥

दो०–पुनि मोहिय नित रैनि दिन, यह कलेश अधिकाय॥
प्यारी वैस विलासकी, किमि वियोग सहिजाय॥ १५॥

घनाक्षरी–कवित्त।

नवल छबीली बाल गुण सरसीली मंजु मोद उमगीली और गीली रूप वारी है॥ रसिकविहारी तरुणाई अंग अंग छाई वैस वर आई चारुशोभा मनहारी है॥ प्यारीको विधाता सुख औसर दियौहै दुख किहि विधि रैहैं प्राण अति सुकुमारी है॥ यदपि अनेक सोच सोचों पै सदाही एक सवतें कलेश यह मेरे उर भारीहै॥ १६॥

प्र०॥ वा०॥ यु० का० क०॥ स० पू श्लो०॥

न मे दुःखं प्रिया दूरे न मे दुःखं हृतेति चं॥
एतदेवानुशोचामि वयोस्या ह्यतिवर्तते॥ ४॥

दोहा–यौं कहि निरखि सुकंठ दिशि, बोले जलभरिनैन॥
प्यारीविन मोको सबै, भये रहत दुखदैन॥ १७॥

घनाक्षरी–कवित्त।

विरह भभूकैं तनुलूकैसी लगी हैं अति मनसिजहूकैं अंग अंगनछई रहैं॥नीर औ समीर छाहँ चन्द्रनिशि चांद्रिकादि शीतल सकल वस्तु तपानि तईरहैं॥रसिकविहारी कितजाऊँ हाय कासों कहौं दशौ दिशि देखौं तितै अनल मईरहैं॥पावस शरद हिम शिशिर वसंत मोहि प्यारी विन सब ऋतु ग्रीषम भई रहैं॥ १८॥ उरकी उमाह सबजानतहि मेरीप्रिया नीकी भाँति जानों हों जुप्यारीके जिये रही॥ रसिक विहारी उरधारी जो विचारिवाल्य सोऊ रुचिकारी वात चित्तमें दिये [illegible]॥ हाय का उपाय कीजे अब न बसाय कष्ट भयो यह काह अ[illegible] का कियेरही॥ करी [illegible] ऐसी कठिन कुचाल जात निज

निज चाह दोउ हियकी हिये रही ॥१९॥ लाज मरयाद पितु मातके सकोच वश जौलों रहों सदन न तौलोंचित्त दीनोंमैं॥ बहुरि सिधारो वन तबते दुखारी अति सहित सुबंधु वेप तापसको लीनोंमैं॥ रसिकविहारी सुख समय निरायो जब तब प्रथमैं ते भयो लाडिली विहीनोंमैं ॥ शूलैगी सदाही यह शूल उर मेरे हाय प्यारीको न प्यार कबौं जिय भरि किनोंमैं ॥ २० ॥

दो०—इमि बिलखतहीं औचके, लखौ द्वितीया चंद ॥
तिहि वन्दन करि उमँगि उर, पुनि बोले रघुनंद ॥ २१ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

निपट निशंक आज द्वितिया मयंक बंक उदित उतंक सुखहेत नर नारिके ॥ संध्यासमै शोभित सुछंद जगवंदनीय रहत अमंद यौंहीं भाल त्रिपुरारिके ॥ निरखति ह्वैहैं उतै जनककिशोरी इतै हौंहू अबै दरश करोंहीं नभ चारिके ॥ रसिकविहारी इहि औसर भयेहे आय दोऊ इकठोर द्दग मेरे अरु प्यारीके ॥ २२ ॥

दोहा—यों रघुवर अति सीयकी, विरह कलपना कीन ॥
सो लखि लषण सुकंठ दुहुँ, बहु बिधि धीरजदीन ॥ २३ ॥
परम विवेकी बुद्धि निधि, राघव हृदय विचारि ॥
युद्ध समै लखि शोक तजि, रहे धीर उर धारि ॥ २४ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० टंकनयाण-
वर्णनो नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥
इति श्रीरसिकविहारीकृते श्रीरामरसायन ग्रंथे वियोग
चरित्रवर्णनो नाम पंचमोविधानः ॥५॥

सो०—इत इहि विधि रघुवीर, सदल प्रबल वारीशतट ॥
कियो निवास सुधीर, सहसुकंठ हनुमन लषण ॥ १ ॥
उत दशमुख बलवंत, सहित सुभट निश्चर त्रिविध ॥
परे सुमंत्र अनंत, सुमिरि सुमिरि हनुमंत रद ॥ २ ॥

चौ०—सभा मध्य बैठो दशभाला ❀ युत सुत सेवक बंधु विशाला॥
ताछिन धाय चारि चर आई ❀ शीशनाय बोले अकुलाई ॥ ३ ॥
नाथ राम वारिधि तट आये ❀ संग भालु कपि दल युत छाये ॥
सुनि हँसि कही मूढ़ अभिमानी ❀ कहा करैं तापस धनुपानी ॥४ ॥
यौं कहि बहुरि निशाचर राजा ❀ बोलो करहु मंत्र दृढ़ आजा ॥
सुनि वच यातुधान बहु यूथा ❀ भाषि उठे भट मुख्य वरूथा॥५॥
महाराज तव अमित प्रतापा ❀ तिहूँ लोक भुजबल यश व्यापा ॥
देव नाग कोउ सकै न हेरी ❀ कहा भीति नर वानर केरी ॥ ६ ॥
सुनि प्रहस्त दुर्मुख बलवाना ❀ कुंभ निकुंभ आदि भट नाना ॥
लै कर शस्त्र अनेक कराला ❀ उठि बोले रावणहिं उताला॥७ ॥
अबहिं जाय हम आवहिं मारी ❀ सह नृप सुवन भालु कपि झारी॥
सुनि तिन दिशि लखि भौंह चढ़ाई ❀ कहे विभीषण वचन रिसाई८ ॥
बैठहु मूढ़ जाहु कित धाये ❀ विन निज ईश रजायसुपाये ॥
यौं कहि पुनि भ्रातहि कर जोरी ❀ बोले वचन विनीत निहोरी॥९ ॥

दोहा—नाथ सकल ये मंदमति, हैं अयान वश पान ॥
इनके वचन न मानिये, प्रभु बल बुद्धि निधान ॥ १० ॥
मो संमत उर आनिये, जिहि ते बहु हित होय ॥
रहै राज तनु कुटुम यश, नीक कहै सबकोय ॥ ११ ॥
सो गुनि गुण गनि दीजिये, सिय रामहि हरषाय ।
समर किये कह जानिये, धौंकिहिविजय मिलाय ॥ १२ ॥
बंधु वचन सुनि दशवदन, कछू न उत्तर दीन ।
सबहि शीष दै आप उठि, भवन गवन द्रुत कीन ॥ १३ ॥
तहाँ सदन एकांत मधि, बहुरि विभीषण जाय ॥
समझायो भ्रातहि विविध, प्रीत भीत दरशाय ॥ १४ ॥
कही जोरि कर तात इत, जबते आनी सीय ॥
नबते अशकुन होत बहु, सकल विचारिय जीय ॥ १५ ॥

हवन अग्नि नाहिं दिपति पुनि, उठत धूम बहु श्याम ॥
झरैं अनल कन अरु शिखा, आहुति मंत्र निकाम ॥ १६ ॥
हवन पठन पूजन थलहि, दरशत व्याल कराल ॥
अशन पान साकल्य चहुँ, हो पिपीलिका लाल ॥ १७ ॥
सुरभी पयमद गजनको, सूखि गयो सब ठौर ॥
पुनि वसुदीन पुकारहीं, अश्वादिक बहु तौर ॥ १८ ॥
खच्चर ऊंट तुरंग नित, ऊरध रोम रहात ॥
पुनि रोवत दिन रैनिये, अतिहि विकल दरशात ॥ १९ ॥
बोलत काक उलूक बहु, रैनि दिवस खघोर ॥
गृद्ध देत मंडल सदा, पुर ऊपर चहुँ ओर ॥ २० ॥
पुनि दुहुँ संध्या समय नित, बोलत अशुभ शृगाल ॥
नगर-द्वार सो क्रूर स्वर, करत आप मृग माल ॥ २१ ॥
ये लक्षण सूचक अशुभ, होत लंकके माहिं ॥
याते सीतहि दीजिये, राम सदल फिरि जाहिं ॥ २२ ॥
सुनि सुरारि क्रोधित कही, रामहिं देउँ न सीय ॥
कहा करैं नर कीश मिलि, कछु न भीति मम हीय ॥ २३ ॥
यों कह बहुरि विभीषणै, विदा कियो दशभाल ॥
प्रात होत आयो सभा, चढि रथ अतिहि उताल ॥ २४ ॥
बंधु सचिव सेवक सखा, सुत हित अपर अपार ॥
दशमुख आज्ञा पाय सब, आये सभा मझार ॥ २५ ॥
बैठे सब सादर उचित, तब रावण बरिबंड ॥
सभहि सुनाय प्रहस्त प्रति, भाष वचन उदंड ॥ २६ ॥
सीता दिये विहीन जिमि, वेगि विजय निज होय ॥
इमि मतिवंत विचारि दृढ़, मंत्र करो सब कोय ॥ २७ ॥
सुनि निश्चरपतिके वचन, कुंभकरण रिस लाय ॥
बोलत भयो उताल अति, दुहुँ दृग भौंह चढाय ॥ २८ ॥

तोमर छंद।

जब हरी सीय स्वतंत्र। किहिते कियो तब मंत्र॥
अब काल शीश चढाय॥ बूझो उपाय बुलाय ॥ २९॥
सुन भ्रात हो कछु कार। जो करत बिनहिं बिचार॥
सो अंत अति पछितात॥ दुहुँ लोक तासु नशात ॥ ३०॥
पै जो भई अब बात। सो भई क्यों अकुलात॥
हिय धीर धारहु नाथ। हौं मारिहौं रघुनाथ॥ ३१॥
तब महापार्श्व उदंड। बोलो वचन खल चंड॥
हे नाथ निश्चर राज। क्यों करिय दुख बिनकाज॥ ३२॥
प्रभु जाय कै निश्शंक। बरबस सियहि गहि अंक॥
सजि राखिये रनिवास। रहिये मुदित सविलास ॥ ३३॥
तब कही दशमुखताहि। मुहि घोर शाप जुआहि॥
परतिय रमौं बलठान। हो नाश द्रुत तनु प्राण॥ ३४॥
सुनि अपर निश्चर भूर। बोले यथारुचि क्रूर॥
ताछिन समै लखि ऐन। भाषे विभीषण बैन ॥ ३५॥
विनवौं दुहूँ कर जोरि। हित बात मानिय मोरि॥
प्रभु वेगि सीतहि देउ। निज हाथ मीच न लेउ॥ ३६॥
सो सुनि प्रहस्त उमाहि। भाषी विभीषण पाहि॥
नर भालु कपि कह बात। हम सुरन नाहि डरात ॥ ३७॥
तब रोष करि हिय माहि। भाषी विभीषण ताहि॥
क्यों करहु सब मिलि नास। नहिं शुभ चहौ रहि पास॥ ३८॥

घनाक्षरी कवित्त।

तब कछु वीरता न काहू ते बनैगी नेक जब कपि भालु वीर धाय आय जूटैंगे॥ ताछिन वचैना कोउ भागेहू त्रिलोक माँहि जाही छिन राम बाण पन्नगसे छूटैंगे॥ रावन विरोधी यातुधानके रहैं ना [illegible] सहित समाज राजसाज सब खूटैंगे॥ रसिकविहारी सिय [illegible] भली है बात नत बहु मुंड दधि कुंड सम फूटैंगे॥ ३९॥

तोमर छंद।

यौंकहि दशानन बंधु ॥ भाषी वहुरि मतिसिंधु ॥
मंत्री जु तवसम होय ॥ तौ रहै भूप न कोय ॥ ४० ॥
दोहा–अज्ञानी लोभी निठुर, निकट न राखै कोय ॥
जो नृप सेवक होय इमि, तौ जावै सब खोय ॥ ४१ ॥

सवैया कवित्त।

भिक्षुक मान चहै तौ वृथा औ वृथा गति उत्तम चाहै जुकामी ॥
जो यश लोभी चहै तौ वृथा सुख चाहै वृथाहि कुमारगगामी ॥
यों रसिकेश विचारौ हिये है वृथा जु पै मुक्ति चहै नरवामी ॥
त्यौं तिहिके सब काज वृथा जिहिके ढिग सेवक होय हरामी ॥४२ ॥
दोहा–सेवक होवै दुष्ट पुनि, भूप मिलै मतिहीन ॥
तहाँ लाभ सुखराजकी, आशा तजैं प्रवीन ॥ ४३ ॥
पै ऐसेही कुमति बहु, क्रूर मंडली माहिं ॥
बुद्धिमंत ज्ञानी गुणी, बडे सुबीर कहाहिं ॥ ४४ ॥
प्रथम बखानत फूलि जे, बड़ी बड़ी बहु बात ॥
ऐसे ते औसर परे, दरशत हैं कदरात ॥ ४५ ॥
इमि प्रहस्त प्रति वचन बहु, भाषे सबहि सुनाय ॥
बहुरि विभीषण वंक लखि, बोले रोष बढ़ाय ॥ ४६ ॥
राम दूत कपि एकही, आयोहो हनुमान ॥
वीर मारि पुर जारिकै, गयो सबै बलभान ॥ ४७ ॥
कछु न बनी तब काहुते, अब बोलत बहु फूल ॥
राम कोपकी अग्निमें, वृथा होत क्यों तूल ॥ ४८ ॥
एक बेर जो कलहू, जाते लहैं कलेश ॥
फेरि काज सो शंक युत, करै विचारि हमेश ॥ ४९ ॥

सवैया कवित्त।

फेरि नहीं वह काम करै जिहिते इक बेर कलेश लहै ॥
भीति दिये अनि पैठि गई पुनि भूलि न लागहि काहु कहै ॥

ह्योरसिकेश सुदेश बनो तऊ चौंके रहैं चित चेत गहे ॥
छाँछहु फूंकिकै पीवहिं ज्यों डरिकै बहु जे जन दूध दहे ॥५०॥
दोहा—पै सबही सिख सुमतिको, दीजे तौ भल होय ॥
क्रूर व्यर्थ मानी हठी, तापर वश नहिं कोय ॥ ५१ ॥
यौं कहि रावण बंधु पुनि, बोले सबहिं सुनाय ॥
हौं जानौं सब शीश पै, कालचक्र मडराय ॥ ५२ ॥
मम भाषित कटु बैनये, अंतर हैं अति मिष्ट ॥
सबहि व्याधि मद ग्रसित हैं, याते लगैं अनिष्ट ॥ ५३ ॥
पै भाषौं मैं हाँकदै, सभा बीच प्रणठान ॥
राम विजय निश्चर अजै, ह्वै है यह ध्रुव जान ॥ ५४ ॥
याते अजहूँ है भली, सकल मंत्र करि आज ॥
चलि रामहिं सिय दीजिये, रहै प्राण कुल राज ॥ ५५ ॥
इहि विधि बहु कटु बैन वर, अंतरप्रीति समेत ॥
कहे विभीषण सचिव प्रति, भ्रात बुझावन हेत ॥ ५६ ॥
चौ०सुनत विभीषण वचन कठोरा ❀ चितवत दशमुख दृग करि घोरा॥
तबहिं इन्द्रजित क्रोधित भाषी ❀ तात भ्रात लघु लघु मति राखी ५७
कही विभीषण तब करि क्रोधा ❀ मूढ अयान तोहि कह बोधा ॥
जो तुहि मंत्र मध्य इत लायो ❀ सो खल वध लायक ठहरायो ५८
दोहा—मत्त बाल तिय मंदमति, हठी पिशुन खलवाम ॥
येते सभा अयोग पुनि, मंत्र मध्य कह काम ॥ ५९ ॥
तू खल पितु युत कालवश, हित अनहित नहिं जान ॥
यातुधान ये मंदमति, करैं अन्यथा मान ॥ ६० ॥

चारीछंद ।

सुनिकै विभीषण बैन निश्चरपतिहि छायो कोप ॥
भाषी अरे मतिमंद तू कुलधर्म कीनो लोप ॥
पुनि शत्रु पक्ष बढाय निंदहि मोहिं तोहिं न शंक ॥
लखि बंधु क्षमहुँ अनीति नत वध योगहै खलरंक ॥ ६१ ॥

दश कंठ कहि कटु बैन बहु किय बंधुको अपमान ॥
तबहीं विभीषण उठे निश्चर चार सँग बलवान ॥
लीने गदा कर उछलि बोले कुपित नभ पथ जाय ॥
हित वचन मानत अहित घेरो काल निश्चर राय ॥ ६२ ॥
कछु दिवस बीते होय गति सो देखिहौ दशमाथ ॥
तजिकै सकल खल दलहिहों अब जात ढिग रघुनाथ ॥
यों कहि विभीषण चहूं निश्चर सहित कीन पयान ॥
सिय राम पद पंकजहि ध्याये हीय सुख उमगान ॥ ६३ ॥
दोहा–इत रावण दरवार ते, उठो गयो निज धाम ॥
उतै विभीषण राम ढिग, चले सुमिरि गुणग्राम ॥ ६४ ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत रामरसायन ग्रंथ युद्धविधाने
रावणसभामंत्रवर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

दोहा–राम चरण उर ध्यायकै, ठानि सुदृढ विश्वास ॥
चले विभीषण प्रभु शरण, छिन छिन होत हुलास ॥ १ ॥
मन प्रसन्न तनु पुलक अति, प्रीति न हृदय समात ॥
नैन नीर पग डगमगत, करत मनोरथ जात ॥ २ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सुंदर ललाम सुखधाम अभिराम अति सेय वसुयाम उर आनंद वगारि हों ॥ ऊरध कमल वज्र अंकुशादि चिह्न सब परसि प्रमोद पाय शोक श्रमटारिहों ॥ रसिकविहारी रजनैनन लगाय नित लोचन सिराय निज जनम सुधारि हों ॥ नाथहैं अनाथनके ऐसे रघुनाथ जू के दृग भरि आज पदपंकज निहारि हों ॥ ३ ॥ मेटत सकल दुखद्वंद भ्रमफंद बने रहत अमंद सुखकंद छवि पेखि हों ॥ जाहि लखि कोटि चंद होतहैं दुचंद मंद ताहि मैं त्रिलोकीं धन्य सुकृति विशेषि हों ॥ दरशत भूले छलछंदके प्रबंद सब रसिकविहारी युग पल सम लेखिहों ॥ दशरथ नंद है अनंदके अनंददानि आज रघुचंदजूको मुख चंद देखिहों ॥ ४ ॥ आय हैं लषण कपिराय हैं सुभाय भले पायकै रजाय धाय वेगही बुलाय हैं ॥ देखि रघुराय

मुसकायकै बढाय प्रीति सुख सरसाय मीठे बचन सुनाय हैं ॥ रसिकविहारी कृपा लाय हैं दिवाय अभै मोद उमगाय तनु तपन सिराय हैं॥ सुख दरशाय करकंज परसाय शीश कौशलकिशोर आज मोहिं अपनाय हैं ॥ ५॥ पाऊँगो हमेश अंग वसन उतारे सबै दीन जानि अधिक कृपालु मन भाऊँगो॥भाऊँगो अहेर संग धाऊँगो बताऊँ पंथ दुर्लभ पुनीत नित्य जूंठनको खाऊँगो ॥ खाऊँगो प्रसाद दास रामको कहाँऊँ भलो रसिकविहारी तजि अनत न जाऊँगो॥जाऊँगो अवध निज जनम गमाऊँ तहाँ गाऊँगो सु कीरति परमपद पाऊँगो॥६॥धरम न जानौं सतकरम न जानौं कछू मरम न जानौं क्यों सुढार मोपै ढरिहैं॥ रावणको भैया हौं कुपंथको चलैया पुनि लंकको बसैया चित्त औगुण उधरि हैं ॥ जाति हौं निशाचर अरातिनकी पाँतिको हौं रसिकविहारी कौन भाँति मोद भरि हैं ॥ लोक विधि वेद विधि एकहू न जानौं राम किहि विधि मोको विधि अंगीकार करिहैं ॥७॥ जनम गमायो राम नामको न गायो कछू कीनो ना उपाय भवसिंधुके तरनको ॥ शरन मैं जैहौं कौन वदन दिखैहौं हाय औगुण भरो हौं गुण एकौ ना शरनको ॥ रसिकविहारी है न आपनो भरोसो रंच को सहाय शोक नद पारके करनको ॥ परौ मझधारबीच हौं तौ निराधार अब एकही अधार रघुरायके चरनको ॥ ८ ॥ एकही भरोसो दृढ़ आवत खरोसो यह उपल निषाद गीध अधम विचारे हैं। शबरी औ शाखामृग रीछ कौन वेदपाठी जाते इन ओर कृपा कोरतें निहारे हैं ॥ दीन हैं पियारे दीनबंधुको सुभाव मृदु रसिकविहारी सोई रक्षक हमारे हैं ॥ काहूते न घाट पातकी हौं क्यों तजेंगे मोहिं वेगि अपनेहैं जो पै इतने उधारे हैं ॥ ९ ॥

सो०–इहि विधि करत विचार, तनु पुलकत हुलसत हियो।
बाढी प्रीति अपार, सियपति पदपंकज सुमिरि ॥ १० ॥
पहुँचे आतुर आय, दूतनमे मृदु यों कह्यो।
अज सुनावो जाय, कौशलराज किशोरको ॥ ११ ॥

तुरतहिं चरवर जाय, रामानुज कपिराज ढिग।
सादर शीशनवाय, बियन सुनाई तिनहिं सब ॥ १२ ॥
सुनत लषण कपिराज, चकित चित्त सोचत हिये ॥
कहा बिभीषण काज, आयो है छल बल कछू ॥ १३ ॥
समाधान करि हीय, जात भये रघुराज ढिग।
करि प्रणाम कमनीय, रुख बिलोकि बोले वचन ॥ १४ ॥
नाथ दशानन बंधु, नाम बिभीषण ताहिको।
आयो करुणासिंधु, शरणागत सो रावरे ॥ १५ ॥
बिहँसि कही रघुबीर, यह बिचार कीजे कहा।
तुमहो निपुण गँभीर, कहो उचित मत होय जो ॥ १६ ॥
बोले दुहुँ कर जोरि, प्रभु सन्मुख कहिबो न भल।
पुनि मम मति अतिथोरि, तदपि कहत बुधि बल यथा१७
एक निशाचर रूप, दूजे रिपुको बंधु है।
सुनिये कौशल भूप, माया मय सब काज है ॥ १८ ॥
तिहि राखिबो न योग, बहुरि रजायसु रावरी।
कहत सयाने लोग, रिपु प्रतीति नहिं कीजिये ॥१९॥
हँसि बोले श्रीराम, नीति उचित सो तुम कही।
दीनबंधु मम नाम, कहत बदित सो होय क्यों ॥ २० ॥

सवैया कवित्त।

एकहु बेर पुकारत आरत दीनगिरा जनकी सुनि पाऊं ॥
तौ तिहि ऊंच न नीच लखौं गहिकैं भुज कंठहि बेगि लगाऊं ॥
देउँ अभैपद लोक तिहूं बिच ताहि कबौं छिन हूं न भुलाऊं ॥
सो रसिकेश सुकंठ कहा शरणागतको किहि भाँति भगाऊं २१॥
गो द्विज घातक होय जुपै तजिकैं छल जो शरणागत आवै ॥
छोडि सबै जग प्रीति प्रतीति सु एकही मेरो भरोस दिढावै ॥
ज्यों धन रंकहि भावत है तिहितें अधिको मुहि सो हिय भावै ॥
जो गति याचतहैं मुनि बृंद प्रयास बिना रसिकेश सुपावै ॥२२॥
वेद पुराणनमें सबही शरणागतकी ग्वट रीति बखानैं ॥

नेम सदा अनुकूलहि को अरु वर्जन त्यों प्रतिकूल को ठानैं ॥
राखै प्रतीत जु रक्षणकी अरु भाषै सुगुप्तकथाहि विधानै ॥
त्यौं रसिकेश जु अर्पहि प्राण सुदीन बनोरसहै यह जानै ॥२३॥
जो इतनी शरणागतमें विधि एकहु होय सुहै मुहि प्यारो ॥
सो बिछुरै छिनहूं न कबौं तिहिते पलहू भरि मैं नहिं न्यारो॥
है यटरीति विभीषणमें अब सादर वेगि बुलाउ सबारो ॥
आवतही रसिकेश अभै करि लंकपती कहि ताहि पुकारो ॥२४ ॥
हे कपिराय सुनो मन लाय सुवाणि सदाकी कहों निज हीकी ॥
जीव चराचर होय कोऊ दृढ़ प्रीति घनी मुहि लागत नीकी ॥
रावरोहीं इक वेर कहै तिहिकी न मलीनता देखहुँ जीकी ॥
नीति अनीति न मानौं कछू रसिकेश करौंसम नाकपतीकी२५॥
जो विचरैं छलछंदनमें नर भूलिहु सो मम भक्ति न पावै ॥
जो कुटिलाई विभीषणमैं शरणागत क्यों तजिकै सब आवै ॥
यद्यपि हैं रिपु बंधु सही रसिकेश घनो मुहि सो हियभावै ॥
कौगुण औगुणको निरखै हित जानि हिये जिहि जो अपनावै ॥
त्याग करै शरणागतको तिहिकी सम पातक और नहीं है ॥
रौरवनर्क परै भरि जन्म चहूँ युग चारहु वेद कही है ॥
आपनी होय कछू हितहानि घनो प्रतिपालन ताको सही है ॥
आवै विभीषण वेगि मिलौं प्रण मेरो सुएकहि आँक यहीहै॥२७॥
दीन पुकारहिगो जबही सुनि कानन क्यों हिय धीर धरांगो ॥
देखि दुखी शरणागतको तब आतुर धायके बाँहगहौंगो ॥
मेटौं कलेश सबै तिहिको निरसंक ह्वै आपनी हानि सहौंगे ॥
मेरोहि एक भरोसो जिन्हैं तिनके वश मैं फिर काह कहौंगो॥२८॥
योगी जपी द्विज दानी तपी नर नागी चराचर होय जु कोऊ ॥
साँची सुप्रीति प्रतीति विना मुहिं रंचहु होय न भावत सोऊ ॥
पावन है जग दुःख घने भ्रम भूल परे सुख नेक न होऊ ॥
। रसिकेश अनन्य भजै मुहिं सो शरणागत है प्रिय दोऊ॥२९॥
[illegible] बेर कहीं सुकही कहिकै पुनि औरको और न भाषौं ॥
[illegible] कृपा जिहि पै निहिप अपराध निहार न रंचहु माखौं॥

जाहि लियो गहिकै अपनाय तिनै रसिकेश न भूलिहु नापौं ॥
लावो कपीश विभीषणको करि देहुँ अभै शरणागत राखौं ॥ ३० ॥
कोतिहिते अधिको प्रिय है तजिकै सब जो शरणागत आयो ॥
राजकुटुंब घने हित बंधु तिनै तृणकी सम देखि भुलायो ॥
मेरोहि एक लयो अवलंब कहौ किहि भाँति सो जात भुलायो ॥
लंकको राज सु आजहि द्यौं रसिकेशजहौं अवधेशको जायो ३१

दोहा—दीनबंधुके वचन सुनि, मंजुल मृदुल अनूप ॥
चले विभीषण पासको, रामानुज कपि भूप ॥ ३२ ॥
रामानुज कपिराज सों, बोले वचन उताल ॥
कहो कहा करिये अबै, भई रजायसु हाल ॥ ३३ ॥

नगस्वरूपिणी छंद ।

सुकंठ शुद्ध यों कही । सही जुनाथ है कही ॥
विचार काह कीजिये । बुलाय ताहि लीजिये ॥ ३४ ॥
कही सुराम बंधुयों । विभीषणै बुलाउँ क्यों ॥
अराति भ्रात आयहै । कछू भली न लायहै ॥ ३५ ॥
कठोर वोरहै महा । नजानिये हिये कहा ॥
करै अकाज काजसो । डरै न रंच लाजसो ॥ ३६ ॥
कछू न फंद लावतो । इतै न भूलि आवतो ॥
सुबंधु वीसबाहुको । हितू न जान काहुको ॥ ३७ ॥

तोटक छंद ।

हँसिकै कपिराय सुबात । प्रभुमें अपनो कछु जोरनहीं ॥
शरणागतको न तजैं कबहूं । अपराध अनेक करै जबहूं ॥ ३८ ॥
पुनि या सु उपाय भलो करिये । सुनिये गुनिताहि हिये धरिये ॥
अब एक विभीषण आवतहै । रघुराज तिनै अपनावतहै ॥ ३९ ॥
अब नेक विलंब नहीं करनैं । हम औ तुम दोऊ चलैं शरनैं ॥
गहिकै पदपंकज मोद भरे । कहिकै प्रभु पाहि प्रणाम करै ॥ ४० ॥
शरणागत राखहिगे जबहीं । करजोरि करैं विनती तबहीं ॥
यह मंत्र दिये दृढ ठान भले । बहुरे रघुनायक पास चले ॥ ४१ ॥

रघुराज प्रसन्न विराजतहैं । लखि कोटि दिवाकर लाजतहैं ॥
चहुँ पंथ विभीपणको परपैं । लखिप्रीति प्रतीति हिये हरपैं ४२

तोमर छंद ।

तहँ जाय लपण कपीश । कहि पाहि प्रभु जगदीश ॥
आये शरण हम नाथ । अपनाइये गहि हाथ ॥ ४३ ॥
सुनि वचन रघुकुलचंद । हँसि कही प्रभु सुखकंद ।
आवो शरण निरशंक ॥ लाये सुकर गहि अंक ॥ ४४ ॥
कपिराज लपण बहोरि । बोले दुहूं कर जोरि ॥
महराज सब गुणसिंधु । जनपाल आरत बंधु ॥ २५ ॥
आवत विभीपण एक । तिहि नाथ राखत टेक ॥
आये सु द्वै हम शर्ण ॥ अवलंबलै प्रभुचर्ण ॥ ४६ ॥
अब एकको कहकाज । सुनि हँसि कहो रघुराज ॥
वह शरण प्रथमहि आय । सोकहो क्यों तजि जाय ॥ ४७ ॥
तुम औ विभीषण दोउ । मेरे सरिस प्रिय होउ ॥
लावो बुलाय तुरंत । इमि कही श्रीसियकंत ॥ ४८ ॥
तव चले लपण कपीश । कहि जैति कौशलधीश ॥
आये विभीपण पास । मिलि भेटि हृदय हुलास ॥ ४९ ॥
गहि लपणके पदकंज । अति सुखद कोमलमंजु ॥
दुहुँ कर विभीपण जोरि । कीनो प्रणाम वहोरि ॥ ५० ॥
दीनो जु सुभगअशीश । हियहर्प लपण कपीश ॥
रिपुबंधुको अनुराग । लखि कहत दुहुँ वड़भाग ॥ ५१ ॥
सादर सुलै तिन संग । बहुप्रीति उमँगत अंग ॥
आतुर चले कुलदीप । कौशल किशोर समीप ॥ ५२ ॥
पहुँचे तहां सुखकंद ॥ राजत जहां रघुचंद ॥
आनँद विभीपण धारि ॥ कीनो प्रणाम पुकारि ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

राजनके राजा महाराजा कौशिला किशोर रावरो प्रताप है सदाही दिन पंद्रमा ॥ हौं तौ हौं अभागीभो शरण आय वड़भागी नजरनकी

जिये कृपालु मम रंद्रमा ॥ रसिकविहारी अवलंब पद पंकजको लोक परलोककी न चाह जिय अंद्रमा ॥ कीजिये सनाथ हौं अनाथ रघुनाथ मोहिं पाहि पाहि पाहि रघुवंश वंश चंद्रमा ॥ ५४ ॥ अधम अभागी अनुरागी हौं कुसंगतको जाति हौं निशाचर कुबंधु दशशीशको ॥ नाम है विभीषण विहाय सुत दारा गेह आयो हौं शरण अवलंब एक ईशको ॥ रसिकविहारी दीनबंधु अपनाय मोहिं कीजे खास दास अब लषण कपीशको ॥ नाथ गुण गैहौं निज लोचन सिरैहौं भेद देहौं सब मरम बतैहौं भुजगीशको ॥ ५५ श्रवण सुनी है गिरा दीन यों विभीषणकी भरे जल नैन अंग पुलक जनायो है ॥ धीरज रहीना अति आतुर उठे कृपालु कृपा करि शीश करकंज परसायो है ॥ रसिकविहारी मृदु वचन सुनाय भले जरत विभीषणको हृदय सिरायो है ॥ ताप अब कीने दूरि आनँद दियो है भूरि राम घनश्याम गहि अंकसे लगायो है ॥ ५६ ॥

दोहा–यों लगाय सादर हिये, बैठारे निज पास ॥
बूझो सब वृत्तांत सो, वरणो सहित हुलास ॥ ५७ ॥
सुनि ताही छिन सिंधु जल, अति उताल मँगवाय ॥
करि अभिषेक विभीषणै, थपो लंकको राय ॥ ५८ ॥
सो लखि भूमि अकाश चहुँ, छायो जैजेकार ॥
कहत सबै को राम सों, वीर दयालु उदार ॥ ५९ ॥

चौ०-ताछिन अति प्रमुदित कर जोरी ❀ बूझी कपिपति प्रभुहि निहोरी
लंकप किये विभीषण नाथा ❀ आव जुपै शरण दशमाथा ६०॥
तौ प्रभु काहि लंकमधि राखैं ❀ अरु लंकापति किहि को भाषं ॥
सुनि बोले रघुवीर कृपाला ❀ सत्य उदार धर्म प्रणपाला ६१॥
निश्चरपति विभीषण कीना ❀ सकल राज्य लंका करदीना ॥
अब जो शरण दशानन आवै ❀ दीजे अवध राज सो पावै ६२॥
तब हरीश बोले पुनि नाथा ❀ है नृप भरत कहा प्रभु हाथा ॥
सुनि रघुवीर कही सतबाता ❀ पै सुधर्म रत हैं मम भ्राता॥६३॥
भरत प्रतीत मोहिं दृढ़ जोई ❀ भाषों बंधु करै दृढ सोई ॥
सुनि प्रभु वचन सबहि सुख माना ❀ कह जैजैज कृपानिधाना॥६४॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० विभीषण शरणागत वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

चारीछंद ।

इमि करि विभीपणको तुरत अभिपेक श्रीरघुवीर ॥
पुनि कही उतरिय सिंधु किमि सो करहु मंत्र सुधीर ॥
तब ठनो सत्य विचार कीजे विनय सागर पाहिं ॥
सोई विचार बतावहीं जिमि सहज सब उतराहिं ॥ १ ॥
दृढ ठानि यह सरिनाथ तट रघुवीर दर्भ डसाय ॥
शिरनाय विनय सुनाय प्रण ठहराय बैठे आय ॥
सो लपण हिय न सुहाय पै कछु कहत भय वश नाहिं ॥
जिय चहत प्रभु रुचिपाय सोखों सिंधु छिन इक माहिं ॥ २ ॥

चौ०—इम सर्वज्ञ राम बलवाना ❁ सिंधु नीर बैठे प्रण ठाना ॥
ताछिन यातुधानपति दूता ❁ शारदूल लखि चमू अकूता ॥३॥
जाय विकल रावणहि सुनायो ❁ प्रभुकपिकटक सिंधु तट छायो॥
दशयोजन प्रमाण चहुँ फेरा ❁ परो राम दल करि बहु घेरा॥४॥
साम दान भेदादि उपाई ❁ करियवेगि वर दूत पठाई ॥
न तरु समरहोइहि दृढ भारी ❁ प्रथम जतन याते सुखकारी॥५॥
सुनि रावण शुक दूत बुलायो ❁ सिखै सुकंठ पास पठवायो ॥
कीशपाल मम बंधु समाना ❁ सो किमि वृथा समर प्रण ठाना६
हम हरि लई राजसुत दारा ❁ पै कछु नाहिँ तुमार विगारा ॥
याते जिय विचारि कपिनाथा ❁ जाहु भवन लै निज दल साथा७
सो नभ मग कपिपति ढिग गयऊ ❁ अंतरिक्ष रहि बोलत भयऊ ॥
हे कपीश हौं तुव ढिग आयो ❁ लंकनाथ मो कहँ पठवायो ॥८॥
तब सुग्रीव कही कह बाता ❁ काह कहो दशमुख दुखदाता ॥
सुनि शुक सकल सँदेश सुनायो ❁ जो रावण तिहि सिखै पठायो॥९॥
सुनि तिहि वचन अपर कपि धाये ❁ उछल पकरि नभते महि लाये॥
ताडन करन लगे रिस धारी ❁ हनि तल मुष्टि सुपंख उखारी१०
तब शुकदीनी राम दुहाई ❁ सुनि कृपालु तिहि दयो छुड़ाई॥
अभय वगि पुनि नभ पथ जाई ❁ बूझी कही प्रभुहि कह जाई११॥
सुकंठ तिहि उत्तर दीना ❁ कहो जाय खलबुद्धि मलीना ॥

राम विरोध कुशल तव नाहीं ❀ लंकनशाय फेर हम जाहीं॥१२॥
ताछिन वालितनय तिहि हेरी ❀ बोले वेगि गहो खल फेरी॥
यह सँदेश मिषते इत आयो ❀ भेद लेन दशकंठ पठायो॥१३॥
सुनतहि कीश कूदि गहि लाये ❀ पुनि तिहि ताडि पंखविनशाये॥
तब शुक आरत विकल पुकारो । सुनि मुख मूँदि बहुरितिहि मारो १४
पुनि जिमि तिमि चर वचन उचारा। प्रभुहि सुनाय सुकीन पुकारा॥
हे निश्चर अघ औगुणखानी ❀ सदा अनीति रीति बहु ठानी १५॥
जनम मरन मधि पाप जुमेरे ❀ भये होंय ते सकल घनेरे॥
कृत राम आप द्रुत पावो ❀ जुपै वेगि नाहिं मोहिं बचावो॥१६॥
नि प्रभु वेगि कपिनको वरजो ❀ दूत अवध्य होत जानि तरजो॥
य रजाय न ताड़न कीना ❀ पै तिहि लंक जान नहिं दीना॥१७॥

हरिगीतिका छंद ।

इहि भांति श्रीरघुवीर सागर तीर दृढ़ प्रणधारिकै॥
त्रैदिन विताये अशन पान विहीन धर्म विचारिकै॥
जड़ सिंधु कछु नाहिं दीन उत्तर राम तब क्रोधित भये॥
सोखौं समुद्रहि अबहिं यौंकहि वेगि कर धनु शर लये॥ १८॥
साजिवाण चापहि तान करि संधान जब घालन चयो॥
भय पाय माणिगण लाय जलनिधि आय तब चरणन नयो॥
कीनी विनय सुनि राम बोले कहो इषु कित डारहूँ॥
तब हेत धारो है अमोघ सुअब न याहि उतारहूँ॥ १९॥
सुनि सिंधु भाषी नाथ मोजल अमितहै मरु देशमें
तहँके निवासी पातकी मुहिं छुवत लहत कलेशमें॥
याते अतुल यह वाणते वह नीर शोखन कीजिये॥
प्रभुको रहै यश मोर दूरित नशाय सो चित दीजिये॥२०॥
तब तीर सो रघुवीर ताजि मरु नीर सागर शोषिकै॥
तिहि देश हित करुणानिधान जु दयो वर परितोषिकै॥
पशु अल्परोग विशाल होवै क्षीर रस बहु छावही॥
फल फल मूल अरू औषधि गंध अनि उपजावही॥ २१॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ का० ॥ स० २२ ॥ श्लोक० ॥

उग्रदर्शनकर्माणो बहवस्तस्य दस्यवः ॥ आभीर प्रमुखःपापाः पिबंति सलिलं मम ॥ १ ॥ तैर्न तत्स्पर्शनं पापं सहेयं पापकर्मभिः ॥ अमोघः क्रियतां राम अयं तत्र शरोत्तमः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

हरिगीतिका छंद

तब सिंधु प्रभुतापेषि बोलो नाथ करहुँ सहायहों ॥
नल कीश विरचहिं सेतु ईश प्रताप उपल तरायहों ॥
इमि भाषि सविनय जलधि गमनो राम अति आनँद लहो ॥
अब वेग वारिधि बाँधि चलहु बुलाय नल नीलहि कहो ॥ २२ ॥
सुनि ईश आयसु वेगहीं कपि भालु चहुँदिशि धायकै ॥
बहु उपल तरु गिरि जाय भारी देन लागे लायकै ॥
सो लेहिं नल कर वाम डारत नीर दक्षिणते सजैं ॥
सुत बुद्धि बल अरु चातुरी लखि विश्वकर्मा हिय लजैं ॥ २३ ॥
दिन प्रथम योजन चार दश पुनि द्वितिय वीस सुधारिकैं ॥
साजो त्रितिय इकवीस चौथे दोय विंश सँवारिकै ॥
पंचम रचो त्रयविंश सो दश वितत आयत सतवनो ॥
लखि सेतु अनुपम शोर भो तिहुँ लोक जैजैजै घनो ॥ २४ ॥

चौ०—सेतबंधु पूरणको शोरा ❀ जैजैकार मचो चहुँ ओरा ॥
सुनि कपि ऋच्छ जुतरु गिरिधारे ❀ जहाँ तहाँ अधबीचहि डारे २५
त्यों इक गिरि हनुमंतहु डारा ❀ मधु दानवके देश मँझारा ॥
तिहि तजि चलन लगे बलवाना ❀ तबसो शैल निपट दुखमाना २६
कपिहि कही भूधर कर जोरी ❀ सब गिरि तें करणी लघु मोरी
श्रीरघुवर पद रजनहिं परशौं ❀ ऐसे समै फेर छब दरशौं ॥ २७ ॥
यातें वीर कृपा उर लाई ❀ मोहिं देहु प्रभु निकट पठाई ॥
तब हनुमंत धीर तिहि दीनी ❀ वेगि आय गति विदित सुकीनी २८
सुनि [illegible] गिरि विनय सप्रेमा ❀ बोले होय तासु सब क्षेमा ॥
[illegible] उर धारे ❀ कुधर मनोरथ पूजहिं सारे ॥ २९ ॥

दोहा—द्वापर युग यदुवंश मधि, हो अष्टम अवतार ॥
तब अभिलाषा पूजिहै, तव सो गिरि करधार ॥ ३० ॥
सुनि प्रभु आज्ञा पवनसुत, वेगि शैल ढिग जाय ॥
कही लहो सुख सौ बहुरि, कपि आये हुलसाय ॥ ३१ ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, सागर बाँधो राम ॥
सुनि अविलोकन सुर असुर, धाये तजि तजि धाम ॥ ३२॥

हरिगीतिका छंद ।

सुनि उदधि बंधन कीशकृत दशशीश चित चकृत भयो ॥
तबहूँ न खल कछु भीति लायो रंचहू नहिं शिरनयो ॥
लखि सेतु रघुकुल केतु आनँद पाय वर वाणी कही ॥
इक रचहु सदन विशाल इत हौं सविधिशिव थापौं सही ॥ ३३॥
सुनि राम आयसु कपिन वेगि विशाल शिव आलय करो ॥
पूजन प्रतिष्ठा हित यथोचित साज सजि सबही धरो ॥
पुनि ज्ञान गुणनिधि मुनिन राघव बोलि यों सविनय कही ॥
को वेद वर ज्ञाता प्रतिष्ठा सविधि सो ठानै सही ॥ ३४ ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि कही ऋषिन हे जक्तईश ॥ हैं अखिल निगम ज्ञाता मुनीश ॥
पै तिहूँलोक रावण समान । वर बुद्धि वेदविद है न आन ॥ ३५ ॥
तव कही राम निर्भय उताल । दशवदन पास चर जाय हाल ॥
सो ह्वै निशंक इत मुदित आय । वरसविधि शंभु थापन कराय ३६॥
सुनि राम बैन कह कपिप्रधान । नहिं उचित तासु आगम सुजान ॥
माया निधान खल यातुधान । पुनि भूप बीर अरु रिपु महान३७॥
जो करहि आय मिलि नीच घात । तौ फेरि नाहिं कछु बनहि बात॥
पुनि एक और कीजे विचार । सो मूढ़ मत्त मानी अपार ॥ ३८ ॥
प्रभु दूत गये आवे न जोय । तौ वृथहि मान निज हानि होय ॥
याते प्रवीन ये ऋषय वृंद ॥ शिव थपहिं सविधि प्रभु युत अनंद ३९
सुनि विहँसि कहे रघुवीर बैन । सब कही नीति पै शंक हैन ॥
हो कोउ सत्य वेदज्ञ जौन । विश्वासघात सो करै कौन ॥ ४० ॥

सुनि प्रभु आयसु मुदित है, गवनो कटक अपार ॥
दिवस तीनमें सकल दल, भयो सिंधुके पार ॥ २ ॥
छाये चहुँ दिशि भालु कपि, गहि तरु कुधर सचेत ।
रहे व्यूह रचि राम मधि, बंधु सुकंठ समेत ॥ ३ ॥
कहि तब रघुपति कपिपतिहि, दीनो शुकहि छुटाय ॥
अति उताल सो रावणहि, वरणी सब गति जाय ॥ ४ ॥
पुनि शुकभाषी जोरिकर, समर किये भल नाहिं ॥
सियहि दीजिये बंधु दुहुँ, सकल धाम फिरि जाहिं ॥५॥
सुनि शुकवच दशमुख कुपित, कह तुहि कपि दुख दीन ॥
तिहि भय तव मति विकल अति, रिपु बल बहु गनि लीन ६॥
ताहि निदरि इमि दशवदन, पुनि शुक सारन ओर ॥
तिनहिं बोलि आज्ञा दई, जाहु वेगि तिहि ठौर ॥ ७ ॥
बल विचार आचरन बुधि, अपर प्रबंध अनंत ॥
सकल भेद रिपुसैन दुरि, आवो निरखि तुरंत ॥ ८ ॥

चौ० सुनि शिरनाय चले शुकसारन ❀ दोऊ किये कीशवपु धारन ॥
आय राम दल मधि मिलि डोलैं ❀ लखें सकल मिलि काहु न बोलैं ९
तिनहिँ विभीषण लखि पहिचाने ❀ गहि रघुवीर पास दुहुँ आने ॥
सो सशंक नमि वचन सुनाये ❀ लंकनाथ प्रेरित हम आये १० ॥
किमि दल बल किहि विधिको कीशा ❀ लखहु रजाय दई दशशीशा ॥
सुनि रघुवर लंकेशहि भाषी ❀ लाओ सब दिखाय सँग राखी ११॥
तब दुहुँ साथ विभीषण जाई ❀ लाये दल समस्त दरशाई ॥
पुनि तिनके कर लषण प्रवीना ❀ रावण हेत पत्र लिखि दीना १२॥
छोडिदये चर सभय सिधारे ❀ आय वेगि रावणहि जुहारे ।
कहि निज गति पत्री दुत दीनी ❀ राम हाथ लंकापति लीनी १३॥
सो पत्री मंत्री कर दीनी ❀ वेगि सुनावो आयसु कीनी ॥
सचिव प्रवीन रजायसुपाई ❀ बाँचन लागो प्रभुहि सुनाई १४॥

घनाक्षरी कवित्त।

स्वस्ति श्रीनतु दशवदन सुनारि योग पहुँचे लषण लंक जेथी कौशलेशकी ॥ इत है कुशल तन मंगल चहौं तौ आय

[illegible] देहु सुता मिथिलेशकी ॥ रसिकविहारी अपराध सब
[illegible] देखि दीनी सीख पत्री या सुदेशकी ॥ न तरु कदंब-
[illegible] कुटुंब राजनाश तुव होत बात जात है हमेशकी॥ १५ ॥

दोहा—सो सुनि रावण हँसि तुरत, लेखक निपुण बुलाय ॥
पत्र लिखावत लषण हित, उत्तर सुमति दिढाय ॥ १६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

स्वस्ति तूरज श्रीयुक्त तापस लषण योग लिपिकृत लंकनाथ जै
श्रीत्रिपुरारीकी ॥ मंगल सदाहै इत कुशल उतै है यही सदन सिधारो
निज आशा त्यागि नारीकी ॥ ताडका सुबाहु शंभुचाप औ जयंत
तरु वाली है न जानियो समान सिंधु वारीकी ॥ रसिकविहारी साम
दानको न काम कछू हिम्मत जुहो तो लखौ शूरता सुरारीकी ॥१७॥

दोहा—लिखि उत्तर चरकर दयो, दयो सुलषणहि जाय ॥
पुनि आयो दशवदन ढिग, गमनो शीश नवाय ॥१८॥
पुनि शुकसारन जोरिकर, कही नाथ कपिभूरि ॥
महावली छिन एकमें, लंक मिलावैं धूरि ॥ १९ ॥
याते प्रभु दीजे सियहि, राम सदल गृह जाहिँ ॥
यातुधान कुल रहनकी, और उपाय जु नाहिँ ॥ २० ॥
सुनि रिसाय दशमुख तिनै, कहे विविध कटुबैन ॥
पुनि दुहुँलै प्रासाद मधि, गयो उच्च अति ऐन ॥ २१ ॥
तहँ ते लखि कपि भालु दल, शुकसारनहि बहोरि ॥
कही बतावो वेगि अब, सत्य शंक सब छोरि ॥ २२ ॥
तब उठाय सारन भुजा, करि अंगुलि निरदेश ॥
सकल बताये रावणहिँ, कहि बुधि बल दल वेस ॥ २३ ॥
ताही विधि कपि भालुको, कुल थल बल गुण रूप ॥
कहो यथारथ शुक सकल, सुनो निशाचर भूप ॥ २४ ॥
पुनि शुक भाषी नाथहीं, कहँ लग करौं बखान ॥
अमित राम दल मुख्य पै, कछु संख्या इमि जान ॥ २५ ॥

शत सहस्रके शतकको, कोटि कहै सबकोय ॥
कोटि सहसके शतकको, शंकुनाम है सोय ॥ २६ ॥
सहस शंकुके शतकको, महा शंकु है जान ॥
महाशंकुके सहसको, शतक वृंद पहिचान ॥ २७ ॥
वृंद सहसके शतकको, महावृंद कहिजात ॥
महावृंदके सहसको, शतक पद्म ठहरात ॥ २८ ॥
पद्मसहसके शतकको, महापद्म कह ज्ञात ॥
महापद्मके सहसको, शतक खर्व है ख्यात ॥ २९ ॥
सहस खर्वके शतकको, कह समुद्र मतिधाम ॥
शतक समुद्र सहस्रजो, है महोघ तिहि नाम ॥ ३० ॥
इमि संख्या मय भालु कपि, रहैं यूथपन पाहिं ॥
ते यूथप दल मध्य वर, पद्मअष्टदशआहिं ॥ ३१ ॥
ते सब बली समर्थ इमि, एकहि जीतैं लंक ॥
इनते अपर अपार सो, समर उतंक निशंक ॥ ३२ ॥

चौ०सुनत क्रोधकरि दशमुख भाषी। दुहुँ खल नेक शंक नहिँ राखी॥
मो सन्मुख किय शत्रुबडाई ❀ हो दृग ओट बदन मसिलाई ३३॥
सुनत दुहूं गवने शिरनाई ❀ भाषी बहुरि निशाचर राई॥
वेगि महोदर भेजहु दूता ❀ रिपुदल बल करि आवहिं कूता ३४
अशन शैन किमि करै कराहीं ❀ राम निकटको सुभट महाहीं॥
हैं दलमाधि किहिके सुत नाती ❀ पुनि कह होत मंत्र दिनराती ३५॥
सुनत महोदर दूत बुलाये ❀ शार्दूल आदिक द्रुत आये॥
पठये तिन दशवदन रिसाई ❀ चले वेगि सो रूप दुराई॥ ३६॥
दलमाधि आय भेद सब लीना ❀ ताहिन तिनहिं विभीषन चीना॥
मारिताहि सो बहु बिलपाये ❀ सुनि रघुनायक बेगि छुडाये॥ ३७
ते चर दूत रावण ढिग आई ❀ वानि समस्त निज समय सुनाई॥
शार्दूल पुनि कह कर जोरी ❀ नाथ राम सेना नहिं थोरी ॥३८॥
गरुडव्यूह रचि भट समुदाई ❀ रहे सुबेलकुधर ढिग छाई॥
सो कहि शार्दूल मति माना ❀ पुनि कथिन समस्त सुनाना ३९॥

पुनिदशमुखहिदूत नमिभाषी ❀ सियदै लीजिय लंकहि राखे
रावण सुनत क्रोध बहुकीना ❀ शारदूल लखि मारगलीना॥४
तबदशमुख कछु करिदुचिताई ❀ कियो मंत्र मंत्रीन बुला
ठनिविचार पुनिभवन सिधायो ❀ विज्जु जीभ निश्चर तहँ आयो

दोहा—ताहि कही दशमुख झटित, सीतहि भीति दिखाव ॥
मायामय रघुनाथको, शिर धनु शर रचिलाव ॥ ४२ ॥
वेगि यथारथ विरचि सो, लायो लखि दशशीश ॥
भयो मुदित भूषण विशद, ताहि दियो बकसीस ॥ ४३
बहुरि दशानन जायकै, मृषा सियहि भय दीन ॥
कही प्रहस्त सुराम को, रैनसैन वध कीन ॥ ४४ ॥
यों दशमुख कहि वेगही, विद्युजीभ बुलवाय ॥
धनु शर शिर माया रचित, सिय ढिग दियो धराय ॥४५
सो लखि सीता विकल ह्वै, भूमि गिरी मुरझाय ॥
रुदन करन लागी महा, लै शिर करि करि हाय ॥ ४६
तब बोलो दशमाथ अब, वृथा करौ जनि सोच ॥
होहुनारि मम जानकी, मुदित रहौ दुख मोच ॥ ४७ ॥
यों सीतहि दिखराय भय, भवन गयो भुजबीस ॥
भयो गुप्त ताही समै, सो धनु शर अरु शीश ॥ ४८ ॥
चकित भई सिय सुगति लखि, हिय नहिं धीर धरात ॥
सरमा कही बुझाय बहु, यह खल माया वात ॥ ४९ ॥
यों कहि सरमा गुप्त ह्वै, लंकहि जाय उताल ॥
लखि आई पुनि सीय प्रति, मुदित कही सब हाल ॥ ५०
सुनि हिय हरषी मैथिली, सखिहि मिली भरि अंक ॥
सदल कुशल दुहुँ राजसुत, जानि भई निश्शंक ॥ ५१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० पु० रावणदूत
प्रेषणो नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

दोहा–सीतहि भय दिखराय जब, दशमुख आयो धाम ॥
सुनो शोर चहुँ ओर तब, कहत कीश जै राम ॥ १ ॥
गुणि रिपु दल बल प्रबलता, सबही बेगि बुलाय ॥
सभासदन जोरी सभा, कही कहौ ठहराय ॥ २ ॥

काव्यछंद।

माल्यवान वर बैन तबै रावणहिं सुनाये
अशकुन तबते होत नाथ जबते सिय लाये ॥
खर बोलत बहु क्रूर मेघ शोणित बरसावै।
वाहन दृग जल ढरत व्योम मंडल रज छावै ॥ ३ ॥
मांस अहारी जीव मृत्यु दुखकारि घनेरे।
जुरि घर पुर वन बाग घोर बोलैं चहुँ फेरे ॥
श्याम रूप तिय हँसहिं स्वप्न मधि करहिं अहारा।
पुनि दरशावैं भीति कहैं कटु वचन अपारा ॥ ४ ॥
परसत नहिं बलिभाग कागतिहि श्वान भखावैं।
मृग पक्षी नित रोय अशुभ रव घोर मचावैं ॥
भवनन माहिं कपोत लवा सारिखा जुथावैं ॥
पुनि ये बहु तृण लाय तहाँ निज सदन बनावैं ॥ ५ ॥
तेइ परस्पर ग्रथित होय महि गिरैं सुयुद्धत।
दिन उलूक निशि काग विषम बोलैं रव उद्धत ॥
रुदन करैं मंजार श्वान दिन रैनि सदाहीं ॥
स्वप्नमाहिं नर नारि हँसैं अरु नृत्य कराहीं ॥ ६ ॥
मैथुन कर खर धेनु नकुल सँग मूषक ठानै।
श्वान साथ मंजार श्वान शूकर रति आनै ॥
किन्नर निश्चर संग फेरि नर नरन विहारैं ॥
नर नारि न इमि जीव विषम संभोगहि कारैं ॥ ७ ॥
सदन सदन प्रति साँझ समै इक पुरुष कराला ॥
मुंडित श्याम कुरूप लखै सबही नित हाला ॥
इते अपर बहु अशुभ चिह्न लंकामधि भासैं ॥
याते सीतहि देहु नतरु निश्चर सब नासैं ॥ ८ ॥

सुनि रावण करि क्रोध निदरि तिहि कछु कटु भाषी ॥
तव मंत्री कहि जीति गयो निज गृह मन माषी ॥
सभहि विदादै वेगि मुख्य सचिवन लै राजा ॥
दीनी रहसि रजाय जाय चहुँ सुभट समाजा ॥ ९ ॥
दोहा—करि विचार तव लंकपति, सचिवहि कही बुझाय ॥
यथा योग इमि द्वार मधि, चमू युद्ध हित जाय ॥ १० ॥
महापार्श्व बहु सैन लै, सहित महोदरवीर ॥
गहैं सुदक्षिण द्वार दृढ़, युद्ध करैं रणधीर ॥ ११ ॥
पश्चिम द्वार अनीकलै, मेघनाद वलवान ॥
होय समर अवरुद्ध सो, साजि शस्त्र तनु त्रान ॥ १२ ॥
सेनापती प्रहस्तवर, पूरव द्वारहि जाय ॥
युत अभंग चतुरंग दल, करै युद्ध हरपाय ॥ १३ ॥
शुक सारन वलवंत वर, संयुत सुभट अपार ॥
ठानैं दृढ़ संग्राम द्रुत, जाय सु उत्तर द्वार ॥ १४ ॥
वही द्वार उत्तर गहैं, अपर सुभट समुदाय ॥
हौंतितहीं रघुवीर सों, संयुग करिहौं जाय ॥ १५ ॥
विरूपाक्ष बहु बीर युत, मध्यरहै मति श्रेय ॥
द्वार द्वार प्रति सुरति लै, सबहि सहाय सुदेय ॥ १६ ॥
इहि विधि लंकापति उतै, थपे वीर चहुँ द्वार ।
इतै विभीषण राम सों, बोले वचन विचार ॥ १७ ॥
नाथ आज मम सचिव बहु, लाये लंक हवाल ॥
चहूँ द्वार मधि सुभट दल, थपो विकट दशभाल ॥ १८ ॥
सुनि रघुवीर सुमंत्र करि, दई रजाय सुहाल ॥
यथा योग कपि ऋच्छ चहुँ, घेरौ लंक उताल ॥ १९ ॥
रहैं चमूपति नील नल, सदल सु पूरव द्वार ॥
दक्षिण द्वार अनीक युत, रुद्धैं वालिकुमार ॥ २० ॥
हनूमान कपि सैन लै, घेरैं पच्छिम द्वार ॥
ऋच्छराज बहु सुभट युत, रहैं मध्य रखवार ॥ २१ ॥

हम सबंधु सुग्रीव अरु, लंकापति बलधाम ॥
उत्तर द्वार अनीकलै, करि हैं दृढ़ संग्राम ॥ २२ ॥
इहि विधि दोऊ दल रुपे, यथा कथित चहुँ ओर ॥
जै रावण जैराम रव, छाय रहो बहु शोर ॥ २३ ॥
सुनि दशमुख निकश्शं अति, उच्च धाम चढि जाय ॥
लखो राम दल अमित पै, कछू न तिहिके भाय ॥ २४ ॥
तहँ बैठो दरबार करि, नृत्यगान बहु होय ॥
रावण युत मंदोदरी, मुदित पानवश जोय ॥ २५ ॥
इत सुवेल गिरि राम चढि, लखो लंक अभिराम ॥
चहूं दिवाकरसे दिपत, कंचन मय बहु धाम ॥ २६ ॥
पुनि विलोकि दक्षिण दिशा, घन दामिनि अभिराम ॥
चकित विभीषण प्रति कह, मधुर वचन श्रीराम ॥ २७ ॥
इत हेरो लंकेश किमि, दामिनि दमकत आज ॥
उठे अनूपम जलद अरु, गरजत मधुर गराज ॥ २८ ॥
सुनत विभीषण जोरि कर, बोले वचन विशाल ॥
मेघ न चपला नाथ यह, तिय युत है दशभाल ॥ २९ ॥
छत्र मेघ सम लखि परै, दामिनि तिय ताटंक ॥
गरज मृदंग अवाज सो, रावण सभा उतंक ॥ ३० ॥
सुनि रघुवीर सँधानि शर, छाँडो सहज सुभाय ॥
भूषण छत्र किरीट सो, इपुडारे महि जाय ॥ ३१ ॥
भूषणादिके भंगको, भेद न जानो कोइ ॥
सकल सभा रावण सतिय, चकित रहे चहुँ जोइ ॥ ३२ ॥
सोचत सब अशकुन भयो, ताहि निदरि दशमाथ ॥
गयो सन मंदिर विहँसि, लै मंदोदरिसाथ ३३ ॥
रहसिपाय मंदोदरी, समुझायो बहु भाँति ॥
कही सपदि सिय देहु पिय, नातर लंक नशाति ॥ ३४ ॥
सुनि दशमुख वर नारिको, निजबल तेजसुनाय ॥
कही प्रिया जनि भीति करु, नर वानर कह आय ॥ ३५ ॥
इमि बुझाय बहु मुदित मन, रहो सकल निशि धाम ॥
अशन पान सुख मन करि, लहो मनियविश्राम ३६ ॥
इति श्री० रा० र० वि० दु० दलधावनन्नो नाम षंचनोविनाम: ॥ ५ ॥

दोहा—पुनि प्रभात नितकृत्य करि, दशमुख बैठोजाय ॥
विशद उच्च प्रासाद वर, जुरे सभासद आय ॥ १ ॥
इत सुवेलगिरिते लखो, कपिपति निश्चरराय ॥
ह्वै सकोप तहँते उछलि, परे सभाबिच आय ॥ २ ॥
गिरि समान सुग्रीव वपु, औचक लखि सब कोय ॥
यातुधान रावण झझकि, उठे चकित चितहोय ॥ ३ ॥
पुनि विलोकि कपि जानिकै, बैठे सबै सशंक ॥
ह्वै सकोप दशवदन तब, बोले निपट निशंक ॥ ४ ॥

तोमर छंद ।

रेकीश तू कहु कौन । कीनो इहाँ किमि गौन ॥
ठाढो कहा चुप होय । कहु विनय वेगि जुहोय ॥ ५ ॥
सुनिकै सकोप सुकंठ । भाषी सपदि सुनशंठ ॥
तूअजहुँ मोहिं न जान । कस जानि होत अजान ॥ ६ ॥
लीनो सखा प्रभुमान । हौंदास निज दिशि जान ॥
सुग्रीव नाम कपीश । तुवकालमैं भुजवीस ॥ ७ ॥
श्रीराम त्रिभुवन ईश । तिन सामुहे दशशीश ॥
बैठो सिंहासन आनि । राखी न तू कछुकानि ॥ ८ ॥
यौं कहि सुकंठ उताल । करि कीशकेलिसुहाल ॥
दशवदन मुकुट उतारि । दीने महीतलडारि ॥ ९ ॥
पुनि उछलि वेगि कपीश । गहि दशहु दशमुख शीश ॥
करकेश धरि झकझोरि । द्रुतकूदि खडे बहोरि ॥ १० ॥
दश वदन लखि रिसलाय । कपिपतिहि पकरिभ्रमाय ॥
पटको महीतलमाहिं । तिनभयो कछु श्रम नाहिं ॥ ११ ॥
भूपरतही बलवान । कपि उछलि कंदुक मान ॥
भरि वेगि दशमुख अंग । महिडारि दीन निशंक ॥ १२ ॥
पुनि उठि भिरो दशशीश । भरि क्रोध निश्चर कीश ॥
भे मल्लयुद्ध निरुद्ध । दोऊ सरिसबल उद्ध ॥ १३ ॥
दुहुँ करत दाँव अनेक । जीतन चहत इक एक ॥
कोऊ न मानत हार । बहु लरत भिरत प्रचार ॥ १४ ॥

दुहुँ भिरहिं भुज भुज मेलि । दुहुँलेत दुहुँन सकेलि ॥
दुहुँ दपटि रपटत धाय । दुहुँ छपटि पुनि छुटकाय ॥ १५ ॥
दुहुँ देत झपक सुझांकि । खाली करत दुहुँताकि ॥
दुहुँ वगलह्वै कढ़िजात । दुहुँ भिरत पुनि विलगात ॥ १६ ॥
दुहुँ कढत दक्षिण वाउँ । पुनि करत निज निज दाउँ ॥
तल चरण मुष्टि प्रहार । दुहुँ करत दुहुँन प्रचार ॥ १७ ॥
दुहुँ जानु वीच दवाय । मर्दत सुजान रिसाय ॥
महि लगत काहु न पीठ । दुहुँ मल्ल शिक्षित ढीठ ॥ १८ ॥
दुहुँ गिरत उठत वहोरि । गहि भिरत अंगन मोरि ॥
दुहुँ चलत वक्र सुचाल । पुनि देत झपट उताल ॥ १९ ॥
दुहुँ भरत मंडल मंडि । इक एक पद्गति वंडि ॥
धरि चक्र सरिस भ्रमात । रंचहु न कोउ श्रमात ॥ २० ॥
गहि एक एकहि रेलि । शिर शिरहि भेरत पेलि ॥
कटि गहत धरत सुकंद । भुजकंठ करत निवंध ॥ २१ ॥
दुहुँचरण दुहुँ उरझाय । चाहत सुदेहुँ गिराय ॥
पुनि वचत काटत दाव । लखिघात देत भुलाव ॥ २२ ॥
इक एक डारत भूमि । चढि पीठ मर्दहिंहूमि ॥
पुनि उछलि वलकरि झूमि । दै चक्र ठेलत घूमि ॥ २३ ॥
नभ ओर उछलत कीश । गहि पद पटक दशशीश ॥
लंगूर माहि लपेटि । कपि तिहि पछार समेटि ॥ २४ ॥
जे मल्ल युद्ध वखान । वत्तीस दाँव प्रमान ॥
गत प्रत्यगत वह सर्व । दुहुँ वीर करत सगर्व ॥ २५ ॥
दुहुँ अंग स्वेद प्रवाह । तनु धूसरित रज माह ॥
दुहुँ गात रुधिर वहात । नहिं श्वास उदर समात ॥ २६ ॥
पै थकत जकत न कोय । सव चकित दुहुँ वल जोय ॥
कपिराज निश्चरराज । दुहुँ तेज गुण सम साज ॥ २७ ॥
दुहुँ भिरे जात अकाश । महि परत पुनि दुहुँ आस ॥
दुहुँ गिरत परिखहि माहि । तिनहूँ सकोप लगाहि ॥ २८ ॥
पुनि दोउ उछलत आय । गोपुर सुयुद्ध कराय ॥

इमि दंड द्वै दुहुँ वीर । किय मल्ल युद्ध सुधीर ॥ २९ ॥
कीने अनेकन दाव । जे चारि करन कहाव ॥
पै कोउ नाहिँ हरात । छिन छिन दुहूँ अधिकात ॥ ३० ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ कां० ॥ स० ४० ॥ श्लो० ।

मंडलानि विचित्राणि स्थानानि विविधानि च ॥ गोमूत्रिकाणि चित्राणि गतप्रत्यागतानि च ॥ १ ॥ तिरश्चीनगतान्येव तथा वक्रगतानि च ॥ परिमोक्षं प्रहाराणां वर्जनं परिधावनम् ॥२॥ अभिद्रवणमाप्लावमवस्थानं सविग्रहम्॥परावृत्तमपावृत्तमपद्रुतमवप्लुतम् ॥ ३ ॥ उपन्यस्तमपन्यस्तं युद्धमार्गविशारदौ ॥ तौ प्रचेरतुरन्योन्यं वानरेन्द्रश्च रावणः ॥ ४ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ॥ भरतोक्तानि ॥

एकपादप्रचारेण चारिसंज्ञं तु मंडलम् ॥ द्विपादक्रमणं यत्र करणाख्यं तु मंडलम्॥५॥ करणानां समायोगात्खंडमंडलमीरितम् ॥ खंडैस्त्रिभिश्चतुर्भिर्वा महामंडलमीरितम् ॥ ६ ॥ वैष्णवं समपादं च वैशाखं मंडलं तथा ॥ प्रत्यालीढ़मनालीढं स्थानान्येतानि पण नृणाम् ॥ ७ ॥ इत्यादि ॥

तोमर छंद ।

दश वदन तव हिय ठान । माया करन अनुमान ॥
जानी सुगनि सुग्रीव । गो उछलि नभ बलसीव ॥ ३१ ॥
रघुवीर ढिग द्रुत आय । भेटे अनंद अघाय ॥
वरणो समस्त सुहाल ॥ सुनि चकितभे कपि भाल ॥ ३२ ॥
दोहा—हिये लगाय सुकंठसो, कही नेहयुत राम ॥
यों अकेल कोऊ सखा, जात शत्रुके धाम ॥ ३३ ॥
सुनि सुकंठ बोले कृपा, तुव जिहि पै दृढ होय ॥
ताको तीनहुँ लोकमें, करि न सकै कछु कोय ॥३४ ॥
सुनि सबही जैजै कही, छायो परमानंद ॥
रत दशमुख सुग्रीव बल, वर्णत मुदित सुछंद ॥ ३५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० रावण सुग्रीव
मल्लयुद्धवर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०—लखि कपीश बल भूरि, सकल सराहत अमित विधि ॥
सब हिय आनँद पूरि, रामविजय सूचित भई ॥ १ ॥
चौ०—ताछिन कही लपणप्रति रामा ❀ होइहि बंधु विकट संग्रामा ॥
निग्रह लक्षण बहु दरशावैं ❀ इनके फल अति शीघ्र जनावैं॥२॥
घोर पवन चलि रज चहुँ छावैं ❀ सहजहिं नग तरु महि थहरावैं ॥
गिरि घहरात लखिय दिन तारा ❀ विन घन गर्जन होत अपारा ॥३॥
धूसर मेघ घोप कर भारी ❀ चंद्र चंद्रिका बहु तपकारी ॥
सांझ प्रभात अधिक अरुणाई ❀ नभ संध्या दारुण दरशाई ॥ ४ ॥
रवितें अनल झरै दुहुँ बेरा ❀ श्याम रक्त शशि मंडल घेरा ॥
उदै होत नित केतु अनेका ❀ क्रूर विशाल एक ते एका ॥ ५ ॥
चहूँ याम दिन दुर्दिन होई ❀ निशि मलीन शशि उडुगण सोई ॥
रवि परिवेप लखिय लघुलाला ❀ पुनि तिहि मंडल श्याम कराला॥६॥
तप्त नीर वरपा कछु होई ❀ शोणितबुंद सहित पुनि सोई ॥
भरे अयोग प्रसव बहु ठामा ❀ अपर अकर्म अमित बसु यामा॥७॥
वज्रपात वर्पा विन होई ❀ काक गृद्ध युद्धत महि दोई ॥
इते अपर बहु अशुभ जनावैं ❀ रुंड मुंड धरणी चहुँ छावैं ॥ ८ ॥
दोहा—यौंकहि उतरि सुवेल ते, दल युत रघुकुलदीप ॥
गिरि गहि उत्तर द्वारको, छाये लंक समीप ॥ ९ ॥
यूथप छत्तिस कोटि युत, पूरव कथित प्रमाण ॥
घेरी लंक सुभालु कपि, अपर अमित बलवान ॥ १० ॥
काहू तनु दशनाग वल, काहू शत गज मान ॥
काहू सहस मतंग सम, काहू लक्ष प्रमाण ॥ ११ ॥
हनुमत कपिपति वालिसुत, नीलादिक रिछराय ॥
अपर मुख्य बहु भालु कपि, तिनबल अतुल सदाय ॥१२॥
यथा बली कपि भालु तिमि, यातुधान बलवान ॥
अगणित भट दुहुँ कटक मधि, कोकरिसकै बखान ॥ १३॥
दुहूँ ओर भट दल रुपे, घोर शोर चहुँ होय ॥
निज निज प्रभु आज्ञा चहत, धीर वीर सब कोय ॥ १४ ॥

तव रघुवर दृढ मंत्र करि, अंगदको समुझाय ॥
पठयो रावण पास द्रुत, राजनीति ठहराय ॥ १५ ॥
अंगद प्रभुपद नाय शिर, आये लंक मझार ॥
प्रविशतही भेटो तिनै, इक दशवदन कुमार ॥ १६ ॥
दुहुँ बूझी दुहुँ वंक दुहुँ, बोले दुहू उतंक ॥
तिहि अंगद पद गहि पटकि, वध कीनो निश्शंक ॥ १७ ॥
बालितनय रावण निकट, पहुँचे जाय उताल ॥
निर्भय निपट विलोकि हँसि, बूझत भो दशभाल ॥ १८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोहै कपि दूत काको रामको सुराम कौन सोई तव भगिनीकी नासिका जु काटीहै ॥ आयो कहाँ तेरेपास काहे शिपदेन काह होस कर क्यों तू दुरबुद्धि उदघाटीहै ॥ कीनोका सियाको हरी होका नाश कोकरैं जुचौदहसहस्र चमू छिंद छिंद छाटीहै॥रसिकविहारी यों निशंक वैन अंगदके सुनि यातुधान मति सकल उचाटी है ॥१९॥ सभासद बोले सुनि बोलैना विचारि कपि आयो किहि काज ह्यां फिरैया मंदरनको॥तू है पशुकीश कहा जानै नृप नीति रीति तापै वनवासी औ निवासी कंदरनको ॥ रसिकविहारी यश जाहर त्रिलोक जाको जाकी भीति भागैं देव भौन अंदरनको ॥ निश्चराधिराज महाराजको समाज देख यह दरबार है न ऋच्छ बंदरनको ॥२०॥ सुनिकै उतंक वैन अंगद निशंक बोले सब मति बंक रंक मोहिं दरशावै है॥लोलुप लबार चोर निपट कठोर घोर कायर कलंकी सदा कुयशी कहावै है॥ बीस बीस पाये श्रौन नैन पै बधिर अंध ऐसो महापातकी जो प्रगट लखावै है ॥ रसिकविहारी ताहि भाषौ महाराज वृथा सकल निलज्ज काहू लाज नहिं आवै है॥२१॥ धिग वह वीरता बड़ाई चतुराई धिग धिग प्रभुताई जहँ लेश है न लाजको॥रसिकविहारी जो न भाषै सत्य ताको धिग होत है अनीति तहां धिग सब काजको॥धिग बल रूप कुल विभव सुविद्या धिग सुयश दराज धिग राज धिग साजको ॥ परतिय चोरी सदा करहि ठगोरी जोरी धिगहै समाज धिग ऐसे महाराजको ॥ २२ ॥

दोहा–सुनि अंगदके वचन तब, दशमुख बहु रिस आन ॥
कही प्लवंगम मूढ़ तू, मो प्रताप नहिं जान ॥ २३ ॥
मो सन्मुख रवि तेजहू, होत सदा अतिमंद ॥
चंद्रहास असि भीति वश, स्रवत सुधा नित चंद ॥ २४ ॥
लोकपाल दिगपाल अरु, देवपाल नरपाल ॥
नाम सुनत दशभालको, सबही होत बिहाल ॥ २५ ॥
यातुधान पतिके वचन, भरे भूरि अभिमान ॥
सुनि बोले तिहि निदरिकै, वालितनय बलवान ॥ २६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

जौलौं दशशीश भुजवीश ना नशाँय तौलौं चार दिन औरहू अनंद उर धरिले ॥ येरे मतिमंद निज वीरता बढ़ाय झूठी सकल वृथाहीं अभिमान हीय धरिले ॥ रसिकविहारी तोहिं जानत जहान जैसो होवै जो लवारी तिनैं फेरिहू उचारिले ॥ और तौ न कोऊ तोकों नेकहू सराहै याते आपनी बड़ाई तू घनेरी आप करिले ॥२७॥ बोले पुनि अंगद अरे मलीन मंदमति भयो मतवारो तोहि रंचहू न चेतहै॥ कायर कलंकी निशिचारी अनाचरी चोर देव दुखकारी दुष्ट पातक निकेत है ॥ सीख या हमारी तू सुरारी शुभकारी मान रसिकविहारी होय भारी तुव हेतहै ॥ त्यागि अभिमान सिय लैकै अगवान गहु रामपदत्रान क्यों वृथाही प्राण देत है ॥ २८ ॥

सो०–सुनि अंगदके बैन, कही दशानन क्रोध युत ॥
रे खल मौन रहै न, मोहिं सिखावत मंदमति ॥ २९ ॥
राज काज बहु युद्ध, किये करौं पुनि करहुँगो ॥
बुधि विद्या बल उद्ध, मोसमान को और कहु ॥ ३० ॥
तब युवराज प्रवीन, हँसि भाषी निश्शंक तिहि ॥
रे निश्चर मतिहीन, तोते हो शुभकाज कह ॥ ३१ ॥

सवैया कवित्त।

टीका कियो सब वेद पै तू हौं सुनी जु नवै बदबात अलीका ॥
लीका नहीं बुधिमंननमें तुव द्रोही भयो निहुँ लोकपनीका ॥

तोटकछंद।

सुनिकै दशकंधर क्रोध कियो। कपि बैन सिखी करि दग्ध हियो॥
द्रुत अंगद सों झहराय कही। शठ तू निज प्राण चहे कि नहीं॥४१॥
कहु कीश कहा तुव नामकहै। किहिको सुत तू किहि ठौर रहै॥
बतरात निशंक दतंक यहाँ॥ खल रंक भयो मतिबंक महाँ॥४२॥
तब बालितनयहँसि बैन कहे॥ तुव बीसहु लोचन जातरहे॥
गृहे रंचकहू नहिं सूझहिरे॥ तिहि ते सुन मोहिँ जु बूझहिरे॥४३॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंगद है नाम मेरो धाम किष्किंधामाहीँ नीकी भांति जानै
यातुधान तू कपीशको॥ बाली बलसीम भीम ताहीको सुवन जान
आयो हौं मथन तेरे बल भुजबीसको॥ तोहिं बिनशैया तुव सेनको
नशैया इहि लंक उजैरया उखैरया दशशीशको॥ देव दुखहारी
दुष्ट दलके सँहारी वीर रसिकविहारी हौं सुदास जगदीशको॥४४॥

सो०—सुनि भाषी दशशीश, रे कपि तुहि जानो अबै॥
तू अजान शिशु कीश, मुहि जानत हो तव पिता॥४५॥

घनाक्षरी-कवित्त।

देव औ अदेव शीश मेरीही रजाय एक देखि भुजबीश यमराजहू
जकत है। बापुरो सुकंठ कपि रीछलै लरन आयो देखो कालि बन्दर
सो कंदर तकत है॥ येरे कीश कोहै और मोबिन त्रिलोक ईश जाको
तेज निरखि सुरेशहू सकत है॥ रसिकविहारी कहा मानुष विचारे
दीन मानहो ल्वार धार बार क्यों बकत है॥४६॥

सो०—इमि कहि पुनि दशशीश, कह कपीश सुन तोहिँ धिग॥
अब न बोल कछुकीश, गति जानों तुव ईशयुत॥४७॥

घनाक्षरी कवित्त।

येरे कपि मूढ क्यों बखानत बडाई बहु जाहिर जहान माँहिं जे तो
हाल मारे है॥ रसिकविहारी तू वही है जो पिताको नेक बदलो न
लीनो औ सुकंठ साथ धारे है॥ है सुकंठ सो जो बालि डरते भगो
है बालि सोई जाहि राम एक बाणहीं ते मारे है॥ सोई राम जाको
देखि निपट निकाम बंधु बामके समेत बाप धामते निकारे है॥४८॥

तीकारहै मद पी नित लोलुप है यह धर्म न वीर गुनीका ॥
नीका करै कह काम निलज्ज तू भ्रात कहावत है नकटीका ॥ ३२ ॥

तोटक छंद ।

सुनिकै दशकंठ रिसाय कही । शठ हौं बहुती कटु बात सही ॥
खल तो शिर पै ध्रुव बीच नचै । भगुकीश न तौं अब प्राण बचै ३३ ॥
इत बैठ घनी बकवादकरी । रजनीचर कोउ न हीय धरी ॥
यह तो रसना जुउतंक चलै । गहिभंजहि आय निशंकमलै ॥ ३४ ॥
सुनिकै तब अंगद रोषदहे । भ्रुकुटी करि बंक निशंककहे ॥
चुपहो बहु बात बकै खलयों । तन हो प्रगटै सुनहीं बल क्यों ॥३५॥
जुभिरै मुहिते प्रण सत्य धरौं । द्रुतही दशकंठ विकंठ करौं ॥
तव पुत्र कलत्र जुभ्रातसबै । सहसैन लखात सँहात अबै ॥ ३६ ॥
इमि वालितनय कहि रावनसों । वरणी पुनि बात सिखावनसों ॥
सुन निश्चरनाथ कहौं हितसों । ध्रुवमान हिये गुनिकै चितसों ॥३७॥

घनाक्षरी कवित ।

बुद्धि ते विचार निरधार दोऊ सारासार स्वबल निहार कै सम्हार फेर रार करु ॥ येरे दशशीश बेगि जोरकर बीश लै सियाको संग शीशनाय ईशहीके पाय परु ॥ रसिकविहारी प्रभुदूत हौं सिखाऊं तोहिं एकौ तू न जानै राम बाणको प्रभाव गरु ॥ चौदह सहस्र भाल भेदे ताल छेदहाल सोई तीर सिंधु शोखि नीर बिन कीनो मरु ॥३८॥
द्रोही क्यों भयो है मतिमंद रामचंद जूको येरे भुजवीश शीश नाहक लयो है अघु ॥ अजहूँ भली है सियसौंप हठ छोड़ बेग राम राप ज्वालमें न सहित कुटुंब दघु॥ इन्द्र विधि वरुण कुबेर यम सूर चंद जाके डर डरत त्रिलोक तू कहाहै लघु ॥ रसिकविहारी वंश प्रभुता प्रसिद्ध जानै ह्वै गये प्रतापी कैसे चक्कवै नरेश रघु ॥ ३९ ॥ नूर ना रहेरे यो गरूर ना रहेरे लंक धूर ना रहेरे खल जोपै तुव ऐसी चालु॥ धीर ना रहेर एको वीर ना रहेरे तीर ह्वै है पलमाहिँ तोहि देखत सुयेही हालु ॥ येरे दशकन्ध बीस लोचन तऊ भो अंध हठते वृथाही जानि सकल कुटुंब चालु ॥ रसिकविहारी हितकारी धनुधारी आन आये संग सबल अभंग दल कीश भालु ॥ ४० ॥

तोटकछंद।

सुनिकै दशकंधर क्रोध कियो। कपि बैन सिखी करि दग्ध हियो॥
दूत अंगद सों झहराय कही। शठ तू निज प्राण चहै कि नहीं॥४१॥
कहु कीश कहा तुव नामकहै। किहिको सुत तू किहि ठौर रहै॥
बतरात निशंक ढतंक यहाँ॥ खल रंक भयो मतिबंक महाँ॥४२॥
तब बालितनयहँसि बैन कहे॥ तुव बीसहु लोचन जातरहे॥
तुहि रंचकहू नहिं सूझहिरे॥ जिहि ते सुन मोहिँ जु बूझहिरे॥४३॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंगद है नाम मेरो धाम किष्किंधामाहीँ नीकी भांति जानै यातुधान तू कपीशको॥ बाली बलसीम भीम ताहीको सुवन जान आयो हौं मथन तेरे बल भुजबीसको॥ तोहि बिनशैया तुव सैनको नशैया इहि लंक उजरैया उखैरया दशशीशको॥ देव दुखहारी दुष्ट दलके सँहारी वीर रसिकविहारी हौं सुदास जगदीशको॥४४॥

सो०–सुनि भाषी दशशीश, रे कपि तुहि जानो अबै॥
तू अजान शिशु कीश, मुहि जानत हो तव पिता॥४५॥

घनाक्षरी–कवित्त।

देव औ अदेव शीश मेरीही रजाय एक देखि भुजबीश यमराजहू जकत है। बापुरो सुकंठ कपि रीछले लरन आयो देखो कालि बन्दर सो कंदर तकत है॥ येरे कीश कोहि और मोबिन त्रिलोक ईश जाको तेज निरखि सुरेशहू सकत है॥ रसिकविहारी कहा मानुष बिचारे दीन मौनह्वै लवार बार बार क्यों बकत है॥४६॥

सो०–इमि कहि पुनि दशशीश, कह कपीश सुन तोहिँ धिग॥
अब न बोल कछुकीश, गति जानों तुव ईशगुन॥४७॥

घनाक्षरी कवित्त।

येरे कपि मूढ क्यों बखानत बड़ाई बहु जाहिर जहान माँहि जे तो हाल भागे है॥ रसिकविहारी तू वही है जो पिनाको नेक बदलो न लीनो औ सुकंठ साथ धारो है॥ है सुकंठ सो जो बालि डरन भगो है बालि सोई जाहि राम एक बाणहीं ते मारो है॥ सोई राम जाको देखि निपट निकाम बंधु बामके समेत बाप धामने निकारो है॥४८॥

दोहा—स्वामिनिंद सुनि क्रोध करि, बालितनय बलरास
चार मुकुट दशवदनके, गहि फेंके प्रभु पास ॥ ४
तब निश्चर लखि अंगदहि, ताडन धाये कोपि ॥
कपि निशंक रघुवर सुमिरि, ठाढ भये पदरोपि ॥
वीर निशाचर भूरि बहु, बलकरि बैठे हारि ॥
रामदूतको चरणते, कोऊ सकै न टारि ॥ ८१ ॥
तब सकोप कपि कूदि गहि, शिखर धाम प्रासाद
वेगि विभंजिबहाय चहुँ, कियो सिंहसम नाद ॥
पुनि अंगद जैराम कहि, तहँते उछलि अकाश ॥
रिपुबल मंथन करि तुरत, आये प्रभुके पास ॥
शीशनाय कहि सकल गति, पुनि बोले युवराज
दशमुख हठ त्यागै न प्रभु, तिहि शिरकाल विराज

इति श्री० रा० र० वि० यु० अंगदरावण
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

चौपैयाछंद।

अंगदकी बानी सुनि धनुपानी बोलि कपीशहि भाषी।
जो किय दशशीशा सो वह रीसा हौं बहु दिन हिय राखी
अब देहु रजाई बहु भट धाई करैं समर निश्शंका॥
कपि भालु उतंका हितिखलरंका वेगि नशावैं लंका ॥
तबहीं सुग्रीवा बहुबलसींवाँ आयसु करी उताला ॥
सुनतहिं भटभारी तरु गिरिधारी धाये कुपित कराला ॥
जैजै जगदीशा जैति कपीशा कहि कपि भालु अपारा।
चहुँ दिशिते जाई करि बरियाई कीनो पंथ सुढारा ॥ २
तरु गिरिते भूरी परिखा पूरी पुर प्राकार ढहायो ॥
सो सुनि दशभाला करि दृग लाला मारो कपि न कहाय
तब निश्चर यूथा विविध वरूथा चहुँ हथ्यार लै धाये॥
दुहुँ दिशि वर योधा भिरे सक्रोधा रण उमंग उर छाये

नख दशन विशाला इत विकराला गहि गिरि तरु गिरिखंडा ॥
निश्चर कपि ऋच्छन करि करि शिच्छन हनत भूमि हति पारैं ॥
तेखल दल झुंडन रुंड सु मुंडन मर्दि गर्द करि डारैं ॥ ४ ॥
काटैं कपि दाँतन हनि तल लातन मुंड मुष्टिकन फोरैं ॥
वहु उपल चलावैं प्राण नशावैं पकरि गात झकझोरैं ॥
रजनीचर लक्षन करैं सु भक्षन शस्त्रन मारि गिरावैं ॥
इहि भाँति परस्पर दुहुँ दल वल भर लरत न मनहिं फिरावैं॥५॥

चारी छन्द ।

इमि यातुधान सुभालु कपिको होत समर मझार ॥
ताही समै पुनि औरहू धाई निशाचर धार ॥
तिन भिरतहींभो आय औचक द्वंद्व युद्ध अपार ॥
दुहूँ ओर सम वल वीर एकहि एक लरत प्रचार ॥ ६ ॥
घननाद अंगद जंबुमाली पवनसुत वलसींव ॥
पुनि वज्रमुष्टि मयंद युद्धत प्रघस अरु सुग्रीव ॥
भट विज्जुमाली सँग सुखेन प्रजंघते संपाति ॥
प्रतपनहि नलसनि प्रभहि द्विविद निकुंभ नील भिरात ॥ ७ ॥
वरवीर लछमन संग युद्धत विरूपाक्ष प्रचंड ॥
रघुनाथ साथहि अग्निकेतु सु रश्मिकेतु उदंड ॥
अरु यज्ञकोप कराल पुनि मित्रघ्न ये भट चारि ॥
इक एक ह्वै वहु समर कीनो हते तिनहि खरारि ॥ ८ ॥
अरु तपन गजसों भिरि विभीषण शत्रुहन वलवान ॥
इमि अपर निश्चर भालु कपि मिलि द्वंद्व युद्धहि ठान ॥
घननाद कर गहि गदा अंगद अंगकीन प्रहार ॥
सो छीन लै कपि सारथी रथ वाजि दीन विदार ॥ ९ ॥
हनुमंत उरमधि जंबुमाली हनी शक्ति प्रचंड ॥
तब कोपि कपि तिहि तल प्रहारो कीन शिर शतखंड ॥
भट वज्रमुष्टिहि मुष्टिकाते हनो वेगि मयंद ॥
महि सारथी रथ वाजि संयुत गिरे खल मतिमंद ॥ १० ॥

वाणन विदारो गात कपिपति को प्रवस करि खीस ॥
पत्री उखारि विशाल सो तिहि हनो वेगि हरीश ॥
तजिबान विद्युनमालि वीर सुखेन विह्वल कीन ॥
गिरि शृंगलै कपि तिहि प्रहारो भो विकल रथहीन ॥ ११ ॥
संपाति अंग प्रजंघ हनि शर तीन कीन विहाल ॥
तरुलै प्लवंगम यातुधानहि दलो अतिहि कराल ॥
प्रतपन कियो बल धाय नलपहँ त्यों सुकपि वल ऐन ।
हनि मुष्टि लातन वेगि नखन विदारि डारे नेन ॥ १२ ॥
पत्रीनते तनुछिदि द्विविदहि विकल सनिप्रभकीन ।
तिहि कीश तरु हनि सारथी रथ वाजि युत हति दीन ॥
नीलहि विदारो शरनते जु निकुंभ तव कपिधाय ।
रथचक्र तिहिलै सारथी तिहि शीश दीन नशाय ॥ १३ ॥
करि कोप निश्चर जवहि धायो लषण पै बलुतान ।
तबहीं विरूपाक्षहि हतो तिन वेगि एकहिवान ॥
तल गजहि ताडो तपन कपि तिहि नखन डारो फारि ॥
लंकेश लेकर खड्ग रिपुहन अंग दीन विदारि ॥ १४ ॥
इमि द्वंद्वयुद्ध अपार एकहि एक करत प्रहार ।
कपि भालु निश्चर हनतते तिन दलत विविध प्रकार ॥
बहु समर होतहि दिवस बीतो जबहिं अथयोभान ।
तव पाय निशि खल धाय भालु कपीन लागे खान ॥ १५ ॥
तमछाय कछु न जनाय निज पर नेक परहि न दीस ।
कपि बूझहीं तू रैनिचर बूझें सु तूहै कीस ॥
कपि कपिन निश्चर निश्चरन अरु ऋच्छ ऋच्छन मार ।
हत यातुधानन भालु कपिते तिनहि करहिं प्रहार ॥ १६ ॥
इत भालु कपि उत रैनिचरके रुंड मुंड अपार ।
छाये महीतल वाजि गज रथ शस्त्र समर मझार ॥
कटकटहि मर्कट ऋच्छ गर्जहिं यातुधान कराल ।
दुहुँ ओर छायो शोर जै रघुलाल जै दशभाल ॥ १७ ॥

बहु शंख झांझ मृदंग दुंदुभि तूर ढोल जुझाव।
बाजत चहूँ बर बाजने सुनि बढ़त वीरन चाव॥
भटलरत आछे पगन पाछे धरत भरत उमंग।
महि गिरत पुनि उठि भिरत दुहुँ दल समर होत अभंग॥१८॥
चहुँ ओर शोणित धार धरणी धीर नाहिं धरात।
वरवीर निश्चर भालु कपि तजि प्राण आश लरात॥
भट इंद्रजीत उदंड लै सँग यातुधान अपार।
शर शक्ति शूल कृपाणते कर भालु कपि संहार॥१९॥
शुक और सारन वज्रदंष्ट्र जु यज्ञशत्रु सुधीर।
उद्धत महोदर महापार्श्व प्रचंड ये पटवीर॥
रघुवीर सन्मुख युद्धहीं भरि क्रुद्ध हिय भरि मान।
तिन सबहिं शरन विदारि नृप सुत कंठगत कियप्राण॥२०॥
पुनि अपर निश्चर वीर बहु मारे समर रघुवीर।
रणधीर लछमन यातुधानन हते सजि धनु तीर॥
तिहि समय खल दल प्रबल रण थल विचल खलभल हेरि।
कपि भालु भिरे प्रचारि प्रमुदित एक एकन टेरि॥२१॥
घननाद लखि निज सैन गति नभ मध्य जाय दुराय।
छाँडन लगो शर विशिखते ह्वै व्याल लपटहिं आय॥
रघुवीर लषण समेत नखशिख नाग फाँस मझार।
हुतबाँधिडारे भूमि तल पुनि तजे तीर अपार॥२२॥
नल नील द्विविद मयंदको शर तीन तीन चलाय॥
रिछराज अरु हनुमंत प्रति दश दश हने रिसलाय॥
पुनि शरभ और गवाक्ष आदि कपीन छंड़े बान॥
सुग्रीव अंगद अंग अगणित शरहने बलवान॥२३॥
अरु अपर बहु कपि भालु भट तिन यथा योग निहार॥
बरबान मारे इंद्रजीत सुगिरे भूमि मझार॥
इमि नाग फाँस प्रचंड नबदि निबंध करि दलपाय॥
निज सैन संयुत जाय कहि गनि गहे पितुके पाय॥२४॥

सुनि मुदित दशमुख विजय निज लखि सुतहि लियहिय लाय।
चहुँ शोर छायो लंकमें जैजैति निश्चरराय ॥
आनंद युत लंकेश वेगहिं प्रात सियढिग जाय ॥
भाषो सदल सह बंधु मारे इंद्रजित रघुराय ॥ २५ ॥

चौ० यों कहि पुनि निश्चरनि बुझाई ॐ पुष्पकयान मध्य बैठाई ॥
नभ मग ह्वै सीतहि लैजाई ॐ लावो द्रुत दिखाइ दुहुँ भाई ॥२६॥
योंकहि गया भवन दशभाला ॐ त्रिजटा लाय विमान उताला॥
तामधि सियहि वेगि बैठाई ॐ दरशाये रामहि नभजाई ॥२७॥
पतिगति देखि रुदन कर सीता ॐ त्रिजटहि बोली वचन विनीता॥
हाय सखी अब मैं का करहूँ ॐ मरों गिरों कै पावक जरहूं २८॥
अलि विधिना मोही पर रूठे ॐ भये शास्त्र द्विज वचनहु झूठे ॥
तिय वैधव्य चिह्न जे आहीं ॐ ते मम अंग एकहु नाहीं ॥२९॥
केश न भूरे कुटिल कठोरा ॐ मुख न रोमवाणी नहिं घोरा ॥
जुरी भौंह नहिं विरल न दंता ॐ अशुभ चिह्न ये तिय पतिहंता३०
जंघन रोम नैन लघु नाहीं ॐ कर पद गुल्फ न विषम लखाहीं
नखनदीह सितश्याम जनावैं ॐ कुचनहिं विरल न शुष्कदिखावैं३१
पदतलसंधि न परत दिखाई ॐ कर पद अंगुलि विषमन आई॥
सब सौभाग्यचिह्न मम गाता ॐ ते निष्फलकिमि किये विधाता३२
योंकहि जनकसुता बिलपानी ॐ तब त्रिजटा बोली मृदुबानी॥
राजकुमारि सोच जनि करहू ॐ भुवपति जियत धीर उर धरहू३३
मुख न मलीन तेज नहिं हीना ॐ पुनि कपि भालु न देखिय दीना॥
गाते धीर धरौ वैदेही ॐ जियत बंधुयुत तव पतिनेही ३४॥
पुष्पक भूमि उतारी ॐ लै सिय पूरब थल बैठारी॥
सीता अकुलाहीं ॐ छिनछिन तिनहिं कल्पसम जाहीं३५
—इत सिय सोचति विकल अति, करि दुहुँ नृप सुत शोच॥
उत दशकंठ समेत सब, मुदित निशाचर पोच ॥ ३६ ॥

छायो लंक अनंद अति, दुखित भालु कपि वृंद ॥
इंद्रजीत शरबंध परि, विकल भये रघुचंद ॥ ३७ ॥
अपर भालु कपि विवशबहु, ता छिन चहुँ दिशि धाय ॥
कियो विभीषण वेग ही, उचित प्रबंध दिढाय ॥ ३८ ॥
पुनि लंकेश कपीश ढिग, आय लखो बेहाल।
लै जल मंत्रित करि तुरत, सींचे नैन उताल ॥ ३९ ॥
परसत नीर सुकंठके, नैन खुले भो चेत।
लिय लंकेशहि लाय उर, कहे वचन वर हेत ॥ ४० ॥
पुनि रामहि सुग्रीव लखि, कियो विलाप अपार।
धीर दई लंकेश तिन, कहिकरि विविध विचार ॥ ४१ ॥
यों कहि पुनि लंकेश चहुँ, जाय सबहि दै धीर ॥
थापे सैन प्रबंध हित, कीश भालु बहुबीर ॥ ४२ ॥
तो लग दिनकर उदय भो, मिटो सकल तम घोर।
लखि निज दल गति भालु कपि, विलपि कियो बहु शोर४३॥
ताछिन कछु मुरछा मिटी, रघुवर खोले नैन।
करि विलाप लखि बंधु गति, कहे सुकंठहि बैन ॥ ४४ ॥
हाय सखा हौं बंधु बिन, नहिं राखौं निज प्राण।
भयो न है नहिं होइ गो, भ्राता लषण समान ॥ ४५ ॥
यों कहि भाषी राम मुहिं, सोच आपनो है न।
सोच विभीषणको जुहो, कहो राज्य वर दैन ॥ ४६ ॥
पै कह कीजे हे सखा, भावीते न बसाय।
जाहु सदन अब संगलै, कीश भालु समुदाय ॥ ४७ ॥
यों कहि विलपत विकल है, रघुवर दृग जल ढार।
ताछिन आये लंकपति, करि चहुँ सैन सम्हार ॥ ४८ ॥
निरखि रामको विकल अति, ऋच्छ कीश विलपात ॥
धरो धीर कपिपति कही, युद्धसमै अकुलात ॥ ४९ ॥
ताछिन बोले बालिसुत, मोहिं न कछू लखाय।
दृग न लगे शर तात कहँ, लषण सहित रघुराय ॥५०॥

सुनि सुकंठ कह वीर सुत, धरो धीर हिय माहिं ॥
लखि लंकापति राम दिशि, बोले कपिपति पाहिं ॥ ५१ ॥
हाय कहा अब कीजिये, दुहुँ नृप सुवन विहाल ॥
हम सब भये अनाथ अरु, प्रमुदित भो दशभाल ॥ ५२ ॥
अंक लगाय विभीषणे, तब बोले कपिराज ।
धीर धरो हिय लंकपति, हौं करि हौं सब काज ॥ ५३ ॥
हति दशकंठहि कुलसदल, तब अभिषेक कराय ।
सियहि अवधलै जाहुँगो, राम लषण दुहुँ भाय ॥ ५४ ॥
तौ लग कछु मुरछा जगी, लह्यो सुचेत सुखेन ॥
लखि कपीश तब ससुर प्रति, कहे वचन भरिनैन ॥ ५५ ॥
व्यथित भालु कपि ते सबै, अरु दुहुँ राजकुमार ॥
किष्किंधा लै जाहु तहँ, कीजो सकल सम्हार ॥ ५६ ॥
हौं इत रावण सदल हति, दै विभीषणे राज ॥
जनक सुतहि लै वेगहीं, ऐहौं सहित समाज ॥ ५७ ॥
सुनि सुखेन कह बात भल, पै औषधि इक जोय ॥
आवै तौ दुहुँ बंधु युत, विरुज सकल दल होय ॥ ५८ ॥
क्षीरसिंधु तट द्रोणगिरि, तामधि औषधि आय ॥
मथन भयो सागर तबै, प्रगटी अमित प्रभाय ॥ ५९ ॥
स्वर्ण करी संजीवनी, अरु विशल्य कर जान ॥
ते औषधि द्रुत लावहीं, पवनतनय बलवान ॥ ६० ॥
इमि सुखेन जामात प्रति, कही सुतौलग भूर ।
पवन वेग छायो चहूँ, उड़ी धूर नभ पूर ॥ ६१ ॥
ता छिन चितये चौंकि सब, आय गये खगराज ॥
परसत पौन सुपंखकी, दुरे व्याल सब भाज ॥ ६२ ॥
आय गरुड दुहुँ बंधु तन, परसो भये अनंद ।
लखि सब दल रुजहीन कह, जै जै जै रघुचंद ॥ ६३ ॥
मिलि सप्रेम दुहुँ बंधुको, कहि बहु बैन सुदेश ।
सबहि विरुज करि वेगही, जात भये विहँगेश ॥ ६४ ॥

रसिकबिहारी विरुज ह्वै, राम लषण सब वीर।
लै धनु शर तरु गिरि समर, उद्धत भये सुधीर॥ ६५॥
रसिकबिहारी मुदित ह्वै, वानर भालु अपार।
किलकैं कूदि कलोल करि, कह जैराम पुकार॥ ६६॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० नागफाँसबंधमोचन
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः॥ ८॥

भीम छंद।

दशवदन सुनि कपि भालु कृत बहु शोर। भेजे तमीचर भेद हित चहुँ ओर॥ तिन कही तिहि अकुलाय वेगहि आय। अहिफाँसते छूटे सदल दुहुँ भाय॥ १॥ चित चकित भो युत इंद्रजित दशभाल। वाढो सुनिश्चर निश्चरी उरशाल। सरमा उताल सिधाय वरणो हाल। सुनि मिली सीय सखीहि भई निहाल॥ २॥ लंकेश वीर सुधीर धरि करि हंक॥ धूम्राक्ष प्रति भाषे सुबैन निशंक॥ द्रुतजाहु लै वहु सुभट सुभट प्रवीन। नृप सुतन मारौ सहित भालु कपीन॥ ३॥ धूम्राक्ष लै भट विपुल साज सजाय। रथ बैठि गमने भये अशकुन आय॥ सो वीर कपि दल मध्य जाय तुरंत। मर्दन लगो वहु भालु कीश अनंत॥ ४॥ तिहि देखि लै गिरि शृंग पवनकुमार। वालो सुताजि रथ आय भूमि मँझार॥ गहिगदा निश्चर कपिहि कीन प्रहार। पुनि वीर वहु गिरि तरुन धरि धरि मार॥५॥ अरु अपर निश्चर कीश ऋच्छ अपार। भिरि लरत मारत मरत करत पुकार॥ हनुमंत तव करिक्रोध गहि गिरि खंड। वलयुत हनो तिहि शीश भो शत खंड॥ ६॥ पुनि वीर तिहि हति ताल तरु गहि धाय। मारे निशाचर गये लंक पराय॥ तिन कहो सुनि धूम्राक्ष वध दशमाथ। करि क्रोध लेत उसीस मींजत हाथ॥ ७॥ तव वज्रदंतहि वोलि कह दश शीश। भटसैनलै द्रुत जाय मारहु कीश॥ सो पाय आयसुवेगि कटक सजाय। रथ बैठि संयुग करन लागो आय॥ ८॥ कपि वृंद युद्धत धाय गहि गिरि वृच्छ। तिमि यातुधानन दलत करि वल ऋच्छ॥ गहि भिन्दिपाल कृपाण अमित हथ्यार॥ निश्चर

करैं भरि कोप कपिन सँहार ॥ ९ ॥ बाणन विदारत वज्रदंत कपीन । लखिधाय अंगद शाल तरु इकलीन ॥ सो वीर भूरभमाय मारो ताहि । भो विकल निश्चर भीजि शोणित माहि ॥ १० ॥ पुनि वज्रदंत सुवीर सुरति सम्हार । हनि शरन विह्वल कीन वालिकुमार॥ अंगदहनो तिहिधाय तरु गहि चंड ॥ लाघव सुकीनो इषुनते बहु खंड ॥ ११ ॥ पुनि वालिसुत लै कुधर भारी भूर ॥ मारो सुरथ युत सारथी भो चूर ॥ पुनि और गहि गिरि खंड कीन प्रहार ॥ लगि बही निश्चर शीश शोणित धार ॥ १२ ॥ तब लै गदा करचंड कपि उर मार ॥ पुनि भिरे दुहुँ दुहुँ मुष्टिकीन प्रहार ॥ तब कोपि लै करवाल वालिकुमार ॥ करि शीश खंडित दीन भूतलडार ॥ १३ ॥ लखि तासुवध भागे निशाचर झार ॥ किय, वज्रदंतहि घात वालिकुमार ॥ यौं विकल दशमुख पाहिं भाषी जाय ॥ सुनि क्रोध शोक कलेश करि अकुलाय ॥ १४ ॥ बोलो अकंपन पाहिं रावण बैन ॥ नृप सुतन मारहु वेगि संयुत सैन॥सोसाजि दल रथ बैठि आतुर जाय ॥ कपि भालु मर्दन लाग चहुँ दिशि धाय ॥ १५ ॥ शाखामृगहु बहु कुधर तरु पाषान ॥ गहि हनत लागत ताहि सुमन समान ॥ सो शक्ति शूल कृपाण बाणन मार ॥ करि कोप भालु कपीन करत सँहार १६ पुनि अपर निश्चर वीर युद्धत भूरि ॥ छाये धरामधि रुंड मुंड सपूरि॥ दल घात निरखि मयंद गहि तरुधाय ॥ हनि यातुधानन दीन भूमि गिराय ॥ १७ ॥ सोलखि अकंपन वेगि बाणन मारि ॥ कीने विहाल मयंद सह कपि धारि ॥ अविलोकि निज दल विचल हनुमत धाय॥ मारो खलहि इक करहि कुधर भमाय ॥ १८ ॥ सोगिरि अकंपन बाणने दिय काटि ॥ लखि कीश पुनि गहि वृक्ष धायो डाटि ॥ किय यातुधानहि विकल कटकसँहारि ॥ भागे निशाचर यूथ हाय पुकारि॥ ॥ १९॥ त्योंही अकंपन वालि धनु शर चार ॥ कीनो विदीरण अंग पवनकुमार ॥ तब कोप भरि हनुमंत गहि तरु धाय ॥ तिहि शीश हनि हनि दीन भूमि गिराय ॥ २० ॥ पुनि अपर मल्ल दल मर्द्द

कीश सँहार ॥ निश्चरपराने विकल लंक मझार ॥ भाषो अकंपन घात सुनि दशशीश ॥ कछु दीन मुख भो कीन फिरि बहु रीस॥२१॥ करि हीय विविध विचार दृढ़ ठहराय ॥ वर सेनपति प्रति कही निश्चरराय॥भट भूरि भारी यातुधान प्रवीन॥ ते कपिनमारे काहु विजय न कीन ॥ २२ ॥ हौ कुंभकरण वलिष्ठ तुम घननाद ॥ अथवा नि-कुंभसुवीर कर अहलाद ॥ याते अबै सजि साहनी लैजाय ॥ मारौ सदल दुहुँ भाय विजय बढ़ाय ॥ २३ ॥ सुनिकै प्रहस्त उताल निज गृह जाय ॥ करि हवन दीने दान विप्र बुलाय ॥ पुनि साजि तन रथ बैठि कीन पयान ॥ भे अमित अशकुन पै न निश्चर मान ॥२४॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥ स० ५७ ॥ श्लोक।

लंका राक्षसवीरैस्तैर्गजैरिव समाकुला ॥ हुताशनं तर्पयतां ब्राह्मणांश्चनमस्यताम् ॥ १ ॥ आज्यगंधप्रतिवहः सुरभिर्मारुतो ववौ ॥ स्रजश्च विविधाकारा जगृहुस्त्वभिमंत्रिताः ॥ २ ॥

भीमछंद।

वर मुख्य तीन प्रहस्त संग प्रधान ॥ उद्धत नरांतककुंभ हनु बलवान ॥ पुनि महानाद प्रचंड अपर अपार ॥ भट यातुधान उदंड समर मँझार ॥ २५ ॥ बहु भीर भारी विकट भट बलवान ॥ तिहि मध्य सेनापति प्रहस्त प्रधान ॥ किय घोर शोर सकोप निश्चर वीर ॥ मुद्गर मुशल असि चक्र गहि धनु तीर ॥ २६॥ लखि रैनिचर विकराल वनचर यूह॥धाये उपल तरु कुधर लै कर हूह ॥ दुहुँ ओरते भट भिरे भरि भरि रोष ॥ जै राम जै रावण छयो बहु घोष ॥२७॥ करि क्रोध निश्चर कपिन धरि धरि खात ॥ कपि यातुधानन करत मर्दि निपात ॥ इमि ऋच्छ कीश अपार निश्चर झुण्ड ॥ छाये चहूँ रण भूमि रुण्डहि मुंड ॥ २८॥ सह भट प्रहस्त प्रचंडकोप बढ़ाय ॥ हति शरन दीनो राम दल विचलाय ॥ निज सैन विह्वल देखि द्विविद उताल ॥ मारो नरांतक शीश कुधर कराल ॥ २९ ॥ भोविकल पै बल भरि उठो करि रीस ॥ त्यों बहुरि पत्री हनि हनो तिहि कीश ॥ ऋच्छेप गहि गिरि खंड भारी भूर॥उर महानादहिमा रिकीनो चूर ॥ ३० ॥ इकशाल वृक्ष विशालगहि कपि नार ॥ हन

करैं भरि कोप कपिन सँहार ॥ ९ ॥ वाणन विदारत वज्रदंत कपीन । लखिधाय अंगद शाल तरु इकलीन ॥ सो वीर भूरभमाय मारो ताहि । भो विकल निश्चर भीजि शोणित माहि ॥ १० ॥ पुनि वज्रदंत सुवीर सुरति सम्हार । हनि शरन विह्वल कीन वालिकुमार॥ अंगदहनो तिहिधाय तरु गहि चंड ॥ लाघव सुकीनो इषुनते बहु खंड ॥ ११ ॥ पुनि वालिसुत लै कुधर भारी भूर ॥ मारो सुरथ युत सारथी भो चूर॥ पुनि और गहि गिरि खंड कीन प्रहार ॥ लगि कर्‍ निश्चर शीश शोणित धार ॥ १२ ॥ तब लै गदा करचंड कपि मार ॥ पुनि भिरे दुहुँ दुहुँ मुष्टिकीन प्रहार ॥ तब कोपि लै कर वालिकुमार ॥ करि शीश खंडित दीन भूतलडार ॥ १३ ॥ तासुवध भागे निशाचर झार ॥ किय, वज्रदंतहि घात वालि यौं विकल दशमुख पाहिं भाषी जाय ॥ सुनि क्रोध शोक क अकुलाय ॥ १४ ॥ बोलो अकंपन पाहिं रावण वैन ॥ मारहु वेगि संयुत सैन॥सोसाजि दल रथ बैठि आतुर भालु मर्दन लाग चहुँ दिशि धाय ॥ १५ ॥ शाखामृग तरु पाषान ॥ गहि हनत लागत ताहि सुमन समा शूल कृपाण बाणन मार ॥ करि कोप भालु क पुनि अपर निश्चर वीर युद्धत भूरि ॥ छाये धराम दल घात निरखि मयंद गहि तरुधाय ॥ हनि गिराय ॥ १७ ॥ सोलखि अकंपन वेगि बाणन मयंद सह कपि धारि ॥ अविलोकि निज दल मारो खलहि इक करहि कुधर भमाय ॥ १८ णते दिय काटि ॥ लखि कीश पुनि गहि यातुधानहि विकल कटकसँहारि ॥ भागे ॥ १९॥ त्यौंही अकंपन घालि धनु श पवनकुमार ॥ तव क्रोध भरि हनुमंत हनि हति दीन भूमि गिराय ॥ २०

बिकट वीर अपार ॥ दृढ़ कवच धारे अंग विविध हथ्यार ॥ गज वाजि रथ पेदर चमू चतुरंग ॥ साजी सबै लंकाधिराज अभंग ॥ ३॥

त्रिभंगी छंद।

नखशिखतनु साजे निश्चर भ्राजे बाजन बाजे छवि छाजे ॥
दीने चहुँ डंका शोर उतंका करि करि हंका भट गाजे ॥
फहरात निशाना रंग सुनाना दल अगवाना बहु चालैं ॥
घहरैं घर नालैं अरु करनालैं पुनि हथनालैं जंजालैं ॥ ४ ॥
तोपै गरुमंती रिपुदल हन्ती चल बरदन्ती शत लागे ॥
जिन अतुलित गोला साज अतोला हो भुवडोला तिन दागे ॥
तैसे अति रूरे सब विधि पूरे भूरि जमूरे बहु भाँती ॥
इमि अपर अपारा प्रबल हथ्यारा समर जुझारा मिलि पाँती ॥५॥
पनि पट्टिश बाना अरु धनुबाना शक्ति कृपाना खरसाना ॥
दृढ़ मुद्गर शूला खड्ग त्रिशूला फरस अतूला गहि नाना ॥
लै परिघ प्रचंडा चक्र उदंडा गदा अखंडा बरभारे ॥
लंबित बहु भाला सुलघु विशाला शस्त्र कराला करधारे ॥ ६ ॥
इमि निश्चर यूथा विविध वरूथा निज निज गूथा लख भूपा ॥
कोऊ विकरारा कोउ कुठारा कोउ सुढारा वररूपा ॥
शूकर मुख कोऊ गजमुख कोऊ खरमुख कोऊ मुखश्वाना ॥
केहरिमुख कोऊ मृगमुख कोऊ बिन मुख कोऊ मुखनाना ॥७॥
यों अगणित भाँती देव अराती निज निज पाँती मिलि साजे ॥
बैठे सुठि वाहन ऐंठि सुवाहन भरे उछाहन बहु गाजे ॥
तबहीं दशभाला उठो उताला वर मखशाला गमन कियो ॥
लखिकै चहुँ वाहीँ कह मन माहीँ मोसम नाहीँ कोउ बियो ॥८॥
दोहा—जाय देवगृह सविधि शुचि, हवन कियो दशभाल ॥
द्विजन शीश नमि दान दे, कीने तुष्ट निहाल ॥ ९ ॥
यंत्र मंत्र करि विविध वर, अभिमंत्रित फल फूल ॥
अपर वस्तु बहु सिद्धि लिय, पत्र औषधी मूल ॥ १० ॥
पुनि तनु कवच हथ्यारसजि, निज इष्टहि शिरनाय ॥

सुनि एक मुष्टि तुरंत । कपि उर हनी बलवंत ॥
सो होत अतुल प्रहार । भो विकल पवनकुमार ॥ ४३ ॥
तिन विकल लखि दशभाल । तहँते सिधारि उताल ॥
ढिग आय चापहि तान । नीलहि हने बहु बान ॥ ४४ ॥
तब कीश गहि तुर धाय । चालो जुशैल उठाय ॥
तिहि सप्तशरन विदारि । दशमुख दियो महिडारि ॥ ४५ ॥
ताछिन हनूमत वीर । गत मूरछा उठि धीर ॥
देखो चमूपति साथ । वर युद्ध कर दशमाथ ॥ ४६ ॥
तब वीर वर हनुमान । दृढ कीन उर अनुमान ॥
मह और युद्ध कराय । अब हनो उचित न आय ॥ ४७ ॥
इहि भांति हीय विचारि । पुनि शैल तरु कर धारि ॥
जे अपर निश्चर भूर । तिन मर्दहीं कर चूर ॥ ४८ ॥
उत नील निश्चर राय । दुहुँ क्रुद्ध युद्ध कराय ।
द्रुम शैल जो कपि मार । सो छिदि भूतलडार ॥ ४९ ॥
तव कीश लघु वपु धार । चढि तासु ध्वजहि विदार ॥
तहँ ते उछलि पुनि आय । दिय दशहु क्रीट गिराय ॥ ५० ॥
पुनि धनुष गहि झकझोर । भजि कूदि शिरनन छोर ॥
इमि बार बार उताल । तिहि दरत भरत उछाल ॥ ५१ ॥
छिन दशहु शीशन आय । गहि सबल देत हलाय ॥
छिन एक ते इक पाहिं । सब शिरन मध्य फिराहिं ॥ ५२ ॥
छिन श्रवण दंतन काट । नासा नखन छिन छाट ॥
छिन वाजि सारथि शीश । गहि दलत लघु वपु कीश ॥ ५३ ॥
बहु घात कर दशमाथ । पै लगत कपि नहिं हाथ ॥
सो निरखि रघुकुल केत । हँस सकल सेन समेत ॥ ५४ ॥
दशमौलि तब रिस लाय । वर अग्नि अस्त्र चलाय ॥
नीलहि दयो महिडार । लखि पुत्र अनल न जार ॥ ५५ ॥
जब बाण लग दलपाल । भो प्राण निपट विहाल ॥
तब अपर वीरनवाल । हनि शक्ति शर दशभाल ॥ ५६ ॥

सो निरखि लछमन वीर । बोले वचन सजि तीर ॥
हे हे निशाचर ईश । मारत कहा लघु कीश ॥ ५७ ॥
मुहि देख हौं तुव काल । इत आव धाय उताल ॥
सुनि लंकपति रथ लाय । ढिग आय कह रिस छाय ॥ ५८ ॥
रिपु बंधु है मति वंक । किमि कथित बैन निशंक ॥
हौं अबहिं वानर मारि । द्रुत देत भूतलडारि ॥ ५९ ॥
तब कहे लषण सुबैन । जे वीर ते गरजैन ॥
बल अस्त्र शस्त्र जुहोय । दरशाव अब सब सोय ॥ ६० ॥
सुनि वचन निश्चरपाल । शर सप्त घाल उताल ॥
द्रुत राम बंधु सुवीर । खंडित किये सब तीर ॥ ६१ ॥
पुनि क्रोध करि बलवान । छाँडे विशिख बहु बान ।
तेऊ लषण सब खंड । फिरि तजे निज शरचंड ॥ ६२ ॥
ते बाण बाणन भिंद । रावण किये सब छिंद ।
पुनि विशिख शर दशभाल । बेधे सुलषणहि भाल ॥ ६३ ॥
ते लगत शर विकराल । कछु विकल भे नृपलाल ॥
पुनि घालि बाण प्रचंड । कीनो सु रिपुधनु खंड ॥ ६४ ॥
अरु तीन शर विकराल । मारे निशाचर भाल ॥
इहि घात वंश दश कंठ । गुंठित भयो कछु कंठ ॥ ६५ ॥
पुनि सजग ह्वै बहु तीर । छोडे निशाचर वीर ॥
वर लषणहू धनुतान । चाले अनेकन बान ॥ ६६ ॥
दुहुँ गात सायक छिंद । तनुत्रान भे दुहुँ भिंद ॥
दुहुँ अंग शोणित धार । नख शीश चलत अपार ॥ ६७ ॥
तब क्रोध करि दशभाल । विधिदत्त शक्ति कराल ॥
सो लषणके बलवान । मारी जु,उर मधि तान ॥ ६८ ॥
तिहि लगत भूमि मँझार । द्रुत गिरे राजकुमार ॥
तिन भाव निशचरनाह । भुज भरि उठावन चाह ॥ ६९ ॥
तिहि कोटिमेरु समान । भारी लगो तनु जान ॥

बहु बल कियो भुजवीश। नहिं चले रंच फनीश॥ ७०॥
सो शक्ति उरहि विभेदि। पुनि धसी भूतल छेदि॥
गरु भूरि भार अनंत। वल करि थको बलवंत॥ ७१॥
लखि धाय पवनकुमार। उर मुष्टि कीन प्रहार॥
तिहि लगत निश्चरपाल। भो विकल निपट विहाल॥ ७२॥
दुहुँ जानु टेकि सुकंपि। आतुर गिरो महि झंपि॥
मुख श्रवण नैन मझार। वहि चली शोणित धार॥ ७३॥
तब वायुसुत बलवंत। लषणहि उठाय तुरंत॥
रघुवीर ढिग तिन धार। लीनी सु शक्ति निकार॥ ७४॥
पुनि धाय पवनकुमार। आये जु समर मँझार।
लागेकरन बहु युद्ध। हनि निश्चरन करि क्रुद्ध॥ ७५॥
लखि बंधुको रघुवीर। लाये हिये धरि धीर॥
प्रभु अंग परसतवीर। भे तुरत विरुज शरीर॥ ७६॥
उत चेत आय सुरारि। रथ बैठि धनु शर धारि॥
बहु दलत ऋच्छ कपीन। हति सैन विह्वल कीन॥ ७७॥
लखि सैन विचल विहाल। उठि राम अतिहि उताल॥
धाये सुधनुशर धार। सँग कीश भालु अपार॥ ७८॥
आये सुसमर मझार। अवलोकि पवनकुमार॥
लीने सुकंध चढाय। दशवदन सन्मुख जाय॥ ७९॥
बोले सपदि रघुनाथ। हे लंकपति दशमाथ॥
कह करत कीश प्रहार। इत आव मोहि निहार॥ ८०॥
सुनि राम वचन सुरारि। धायो महासि धारि॥
धनु तान अगणित वान। छांडे प्रचंड सँधान॥ ८१॥
नाराच रघुवर अंग। बेधे कवच करि भंग॥
तब राम अतिहि उताल। शरहने विषम कराल॥ ८२॥
हति सारथी अरु पत्र। वर क्रीट सहध्वज छत्र॥
युत कवच भूषण वस्त्र। बहु साजमय सब वस्त्र॥ ८३॥
दशवदनको पद साज। खंडित कियो रघुराज॥

सुनि ... मूल । दीने शरनतें शूल ॥ ८४ ॥
... अखंड । भो विकल निश्चर चंड ॥
... शिथिल सब गात । नाहिं नैन पलहु चलात ८५ ॥
... निरखि निपट अधीर । बोले विहँसि रघुवीर ॥
हे ... निश्चरराज । तव वध करौं नाहिं आज ॥ ८६ ॥
रण मध्य हो असमर्थ । तिहि वधत नाहिं समर्थ ॥
इहि हेतु है निरसंक ॥ अब बेगि गमनहु लंक ॥ ८७ ॥
सुनि राम बैन उताल । कीनो गमन दशभाल ॥
युत सैन लंकहि जाय । बैठो सुधाम लजाय ॥ ८८ ॥
रावण महा बरिबंड । सो सुमिरि ते शर चंड ॥
बहु सोच हीय मझार । गुणि करत भूरि विचार ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

भारी भूधरेशतें दिनेशहूते तापकारी शेषतें विषारी वेग पौ... महानहैं ॥ रसिकविहारी तेजधारी जे हुताशनते प्राणतनहारी ... फाँसते निदानहैं । चंड जम दंड ते उदंड ब्रह्मदंडहूते वज्रते क... घोर जोर वे प्रमान हैं ॥ अमित हथ्यार नव खंडमें अखंड पै... ऐसे कहुँ जैसे बरिबंड राम बान हैं ॥ ९० ॥

दोहा-सुमिर सुमिर यों राम शर, चौंकि चितव चहुँ ओर ।
हिय पछिताय सुलंकपति, करत विचार बहोर ॥ ९१ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

विधि वर थाप जानों बहु निज शाप जानों रघुको प्रताप जान... मो न चित दीनो मैं । वेदके विधान जानों शास्त्र औ पुरान जानों ... ध्यान जानों मो विचार नहिं लीनों मैं ॥ रसिकविहारी भली ... मियराम जानों जानके ममस्त फेर भयो मतिहीनो मैं ॥ ... लायो शोच निपट अबोध ह्वै क्रोधने निरोध है विरोध ... नी मैं ॥ ९२ ॥

दोहा-यों विचारि पछिताय पुनि, दशमुख गुनी सुहीय ।
... हूनी ... मो भई, अब नहिं त्यागों सीय ॥ ९३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कैतौ ना लगावै नेह कोऊ नर नारी साथ जोपै प्रीति जोरै तौ
ो फेरि तोरैना। रसिकविहारी काहू वचन न हारै कवौं जोपै वैन
ौ बहोरि दृग चोरैना॥ कै तौ प्रन कैसहू न ठानै रंच वात-
जोपै धारिलैवै वानि पुनि हठ छोरैना। सोई है विशुद्ध औ
रण रुद्ध उद्ध रिपुतें विरुद्ध क्रुद्ध युद्ध मुख मोरैना॥ ९४॥

ोहा—यातुधानपति यों अमित, गुणत विचारत चाल।
जात भयो रनिवास मधि, यों बीती सवरात॥ ९५॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० रावणयुद्ध
वर्णनो नाम दशमोविभागः॥ १०॥

दोवई छंद।

रावण कीन विचार हीय दृढ़ कुंभकरण वलभारी।
भक्षण करै भालु कपि सिगरे सो सह लपण खरारी।
यों गुनि वहुरि सभा मधि आये आयसु दई उताला॥
काहू विधि मम वंधुहि निश्चर जाय जगावैं हाला॥१॥
सुनि राक्षस वहु साजि सिधारे आये वेगि तहांई।
कुंभकरण जहँ मास अनेकन सोवत रहत सदाई॥
सदन विशाल शैलकंदर मधि इक योजन चहुँ ओरा।
निपट अचेत शैन कीनें सो चलत श्वास अतिघोरा॥ २॥

प्र० वा०॥ ४० कां० स० ६०॥ श्लो०॥

नवसप्तदशाष्टौ च मासान्स्वपिति राक्षसः। मंत्रं कृत्वा प्रसुप्तो
मृतस्तु नवमेहानि॥२॥तां प्रविश्य महाद्वारां सर्वतो योजनायताम्।
भकर्णगुहां रम्यां पुष्पगंधप्रवाहिनीम्॥ २॥ इत्यादि॥

दोपई छंद।

प्रविशि न सकत श्वासलगि निश्चर तव कर गहि वरियारा॥
वहुवल करि मिलि धाय एक सँग वैठे सदन मँझारा॥
जाय प्रथम तिहि पास चहूँ दिशि अशन पान वहुधारा॥
आमिप अन्न राशि भूधर सम शोणित कलश हजारा॥ ३॥
अरु सहस्र घट सुरा अमित फल पुनि सजीव पशु भूरी॥

विविध सुगंध वसन भूपण वर अपर वस्तु प्रति रूरी ॥
यों सज पंचसहस्र निशाचर गरजे मेघ समाना ॥
पुनि सब शंख मृदंग आदि बहु वाद्य शोर किय नाना ॥ ४ ॥
नहिं जागो तब मुद्गर मूशल गदा उपल तरु धारे ॥
उर शिर बाहु चरण कटि जंघन वीरन अमित प्रहारे ॥
तऊ न ताहि बोध तब निश्चर दशसहस्र मिलि गाजे ॥
कियो घोर रव तूरदुंदुभी आदि वजें बहु बाजे ॥ ५ ॥
जगो न तव तिहि तनपर गज रथ ऊंट तुरंग चढाये ॥
ते बहु दलत मलत धावत वपु कछू न तिहि के भाये ॥
पुनि निश्चर सकोप श्रुति नासा केशलुंच मिलि कीने ॥
अरु शत कुंभ नीर ते दोऊ श्रवण तासु भरिदीने ॥ ६ ॥
कैसहु नहिं जागौ तव द्वैशत तोप जँजीरन बाँधो ॥
भरि छोडी बहु बार जगो वह जब सुयतन यह साधो ॥
जुंभित ह्वै तनु इत उत फेरो गिरे सकल चहुँ ओरा ॥
नैन उघारि लखो सबही दिशि कुंभकरण अति घोरा ॥ ७ ॥
सैनहि अशन पान सहजै सब करि बूझी तिन पाहीं ॥
कहो मोहिं किहि काज जगायो भ्रात कुशल कै नाहीं ॥
नृप मंत्री यूपाक्ष जोरि कर कहो सकल तव हाला ॥
सो सुनि कुंभकरण बहु रिस भरि बोलो वचन उताला ॥ ८ ॥
तजें भीति सब यातुधानपति हौं अबहीं द्रुत जाई ॥
सदल राम लछमणहि नाश करि भ्रातहि मिलौं सु आई ॥
तब कर जोरि महोदर भाषी नाथ प्रथम मिलि लीजे ॥
पुनि दृढ मंत्र ठानि दल संयुत संयुग विजय करीजे ॥ ९ ॥
तासु वचन सुनिकै उठि बैठो तब वह निश्चर धाई ॥
आय कही शिरनाय भूपसे नाथ जगो तव भाई ॥
गुणि नृप दई रजाय प्रथम तिहि मज्जन अशन करावो ॥
होय तृप्त पुनि वसन विभूषण साजि सभा मधि लावो ॥ १० ॥

सो सुनि सकल सौंज लै निश्चर कुंभकरण ढिग जाई ॥
मज्जन अशन पान करवायो प्रमुदित भयो अघाई ॥
सजितन उठो भ्रात दरशन हित ताछिन पुनि मन माना ॥
द्वै सहस्र घट सुरापान करि सहजहि कियो पयाना ॥ ११ ॥
पट्शत धनुष उच्चतनु जाको है शत धनु विस्तारा ॥
दृग मंडल दुहुँशकट चक्र सम अंगशैल इव भारा ॥
कूप सरिस नासापुट दोऊ मुख गिरि कंदर माना ॥
बहु विशाल विकराल काल सो कुंभकरण बलवाना ॥ १२ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कां० ॥ स० ६५ ॥ श्लो० ॥

धनुःशत परीणाहः सपट्शत समुच्छ्रितः ॥
रौद्रः शकटचक्राक्षो महापर्वत सन्निभः ॥

दोवई छंद।

बली भीम वपु परम प्रतापी कुंभकरण मतिवाना ॥
जा सम यातुधान लंकामधि प्रबल कोउ नहिं आना ॥
चलत भयो रावण ढिग तब वह दूरहि परो दिखाई।
तिहि विलोकि ह्वै विकल भगे चहुँ भालु कीश समुदाई ॥ १३ ॥
कोऊ चढे द्रुमन भजि कोऊ गिरि कंदरन छिपाने ॥
कोऊ रघुबर निकट पराने कोउ फिरैं बिललाने ॥
सोगति हेरि राम धनु शर सजि ठाढे भये उताला।
सबहि धीर दै लखि लंकेशहि कही कौन विकराला ॥ १४ ॥
तब करजोर विभीषण भाषी कुंभकर्ण यह नाथा ॥
आज दशानन ताहि जगायो युद्ध करन तब साथा ॥
सुनि रघुवीर नील प्रति बोले सब ही धीर धराई ॥
भालु कीशमय व्यूह रचौ बर मिलि बहु भट समुदाई ॥ १५ ॥
तब सेनापति जाय वेगही राम कथित सब कीने ॥
सजग भये हनुमंत आदि भट द्रुम गिरि आयुध लीने ॥
कुंभकर्ण रत आय भ्रात ढिग सादर शीश नवायो ॥
उठि दशवदन अंक भरि बंधुहि वर आसन बैठायो ॥ १६ ॥

कुंभकर्ण बूझी तब भ्रातहि क्यों मुहि वेगि जगायो ॥
सुनि भापी दशकंठ कुपित ह्वै अजहुँ न परत जनायो ॥
सदा वंधु नव सप्त सु दशवसु पट मासन लौं सोवै ॥
कवहुँ वर्ष वहु सैन करै यों तोहू नींद न खोवै ॥ १७ ॥
याहू छिन निद्रा दृग छाई परत न कछु दरशाई ॥
यातुधान नाशो वहु संयुग नर वानर दल आई ॥
कुंभकर्ण सुनि कही क्रोध भरि निज करणी फल पाये ॥
कहा जानि जगमातु सियाको जाय लंक हरि लाये ॥ १८ ॥
साम दान अरु दंड भेद ये चार चहिय नृप माहीं ॥
अर्थ धर्म पुनि काम मोक्ष क्रत समय समय भल आहीं ।
बल गुण रूप प्रताप भाग्य धन कुल निज पर लखि लीजे ॥
देश काल निरवैर शुभाशुभ प्रीति वैर तव कीजे ॥ १९ ॥
सुनि दशवदन क्रोध करि भापी गुरु सम मोहि सिखावै ॥
होनी हुती भई सो अब तौ चहिय सुजिहि जय आवै ।
कुंभकर्ण तब कही जोरि कर रोप करिय जनि ताता ॥
जाम्बवंत सुग्रीव सदलहति हौं मारौं दुहुँ भ्राता ॥ २० ॥
दृढ़ प्रतीत मुहिं निज बलकी पै चिह्न अशुभ दरशावैं ॥
याते जानि परै इमि मोकों निश्चर सकल नशावैं ॥
यौंकहि कही फेरि हे भूपति नर वानर कह भीता ॥
जाय एक हौं करों विजय निज तव वश ह्वै है सीता ॥ २१ ॥
कुंभकर्णके वचन सुनतही वेगि महोदर भापी ॥
भो नृप वंधु प्रौढ ह्वै अजहूं रंचहु बुद्धि न राखी ॥
जो रघुवीर सहस चौदह भट आय एक हति डारे ।
तिन सन्मुख रणहेत अकेले गमनत विनहि विचारे ॥ २२ ॥
घटकरनहिं यौं भापि महोदर कह पुनि रावण पाहीं ॥
द्रुमद्रिजीभ आदिक सुपंच भट नाथ वंधु मिलि जाहीं ॥
सदल सवंधु अवहिं रघुनाथै मारि लंक मधि आवैं ॥
तव अनाथ सीता दुख भीता प्रभु तव वश ह्वै जावैं ॥ २३ ॥

सुनि कह कुंभकर्ण मुहि रोची यह जु महोदर वरनी ॥
करौं विनाश आज तव रिपुको लखौं नाथ मम करनी ॥
तब रावण तिहि विशद विभूषण साजि रजायसु दीनी ॥
चलो मत्तगज सरिस शूललै संग सैन मदभीनी ॥ २४ ॥
पुर प्राकार उलंघि कढ़ा तिहि निरखि भालु कपि भागे ॥
तब नल नील तिनै धीरज दै धाये सँग ले आगे ॥
दूरहि ते लखि ताहि विभीषण गहे भ्रात पद जाई ॥
कही मोहिं दशमदन तजो हौं राम शरण मो आई ॥ २५ ॥
कुंभकर्ण वहु बंधु सराहो सो पुनि दल मधि आये ॥
चले निशंक निशाचर लखिकै कीश भालु चहुँधाये ॥
वहु गरु शैल शस्त्र द्रुम अगणित हने वीर वलवाना ॥
खंडित भये सकल ते तिहि तन लगे न सुमन समाना ॥ २६ ॥
कुंभकर्ण करि क्रोध शूल गहि धायो कपिदल माहीं ॥
अमित ऋच्छ वनचरन विदारे भागे नाहिं बचाहीं ॥
लाखन चूर भये दवि लातन लाखन धारि धारि खाये ॥
लाखन हने चपेटन मुष्टन लाखन काटि वहाये ॥ २७ ॥
लाखन कीश भालु गहि फेंके लाखन धक्कन मारे ॥
लाखन भीति विवशभजि डूबे आपहि सिंधु मझारे ॥
कुंभकर्ण गहि जे कपि ऋच्छन भच्छन करे अपारा ॥
तिन महँ वहु सजीव कढ़ि भागे श्रवण नासिका द्वारा ॥ २८ ॥
तिहि भय भगे ऋच्छ कपि पुनि तिन अंगद हांकि प्रचारे ॥
तब सब प्राण आश तजि धाये तरु गिरि विविध प्रहारे ॥
कुंभकर्ण लगदा विभंजे वहु वनचरन विदारे ॥
द्विविदकीशगहि शैल निश्वरन वाहन युत दलि डारे ॥ २९ ॥
यातुधान गण हने ऋच्छ कपि ते तिन अगणित नासे ॥
मारत मरत मुरत नहिं कोऊ दोऊ दिशि भट खासे ॥
हनूमान नभपथ ह्वै वहु गिरि कुंभकर्ण पर वरसे ॥
ते सब वीर शूलते काटे एकहु नाहिं तनु परसे ॥ ३० ॥

तव केसरी किशोर जोर करि घोर शैल तिहि मारो ॥
विकल भयो शोणितसे भीजो कुंभकर्ण तनु सारो ॥
पुनि गहि शूल तमीचर कपिके उर अंतर हनिहूलो ॥
कियो शोर हनुमंत व्यथित ह्वै परि एकलों रण भूलो ॥ ३१ ॥
गति लखि सैनपाल गहिभूधर तिहि प्रहार द्रुत कीनो ॥
कुंभकर्ण सो शैल मुष्टितें हति चूरण करि दीनो ॥
सो अविलोकि पंच मिलि तासों भिरे आय भरि क्रोधा ॥
नील गंधमादन गवाक्ष अरु शरभऋषभ वर योधा ॥ ३२ ॥
कुंभकर्ण तव नीलहि जंघन दावि व्यथित बहु कीनो ॥
बहुरि गवाक्षहि तल प्रहार तें प्राण कंठ करि दीनो ॥
शरभहि हनि मुष्टिका गिरायो ऋषभहि भुजा दबाये ॥
सकल वीर ते परे धरणिमें नख शिख रुधिर अन्हाये ॥ ३३ ॥
तिन प्रहारि यों पुनि कपि ऋच्छन राक्षस भंजन लागा ॥
बहु बिलपाय हाय करि व्याकुल बहुरि सकल दल भागा ॥
ताछिन वालिपुत्र तिहि ऊपर पर्वत धाय पवारा ॥
निश्चर शूल प्रहारो अंगद सो करि दाव निवारा ॥ ३४ ॥
पुनि युवराज तासु उर वेगै तलताड़न किय घोरा ॥
कुंभकर्ण कछु पीड़ित ह्वैकै सजग भयो वरजोरा ॥
बल करि मुष्टि हनी सो कपि हिय गिरो अचेत सुकीशा ॥
तब निश्चर तिन त्यागि शूल लै मारो जाय हरीशा ॥ ३५ ॥
ह्वै कछु विकल सुकंठ सम्हारि पुनि गिरि तिहि कीन प्रहारा ॥
निश्चर कियो नाद तनु कंपो फिरि भरि क्रोध अपारा ॥
भार सहस्र शूल कपिपति पै वध हित वेगि चलायो ॥
लखि हनुमान धाय कै बीचहि सो गहि तोरि बहायो ॥ ३६ ॥
कुंभकर्ण निज शूल व्यर्थ लखि पुनि गहि गिरि तकिवाला ॥
सो शिर परत विकल ह्वै घुर्मित गिरि भूमि हरिपाला ॥
निरखि अचेत धाय गहि निश्चर तिन लै कांख दबाई ॥
चलो लंक मर्दन कपि ऋच्छन अतिआनंद अवाई ॥ ३७ ॥

कुंभकर्ण करगत सुग्रीवहि लखि कपि करत विलापा ॥
हनूमान बलगुणि सुकंठको दै धीरज दलथापा ॥
उत नृप बंधु लिये हरि राजहि प्रविशो लंक मँझारी ॥
चंदन सुमन वारि तिहि ऊपर वरपैं मुद नर नारी ॥ ३८ ॥
सो शीतलता लहि सुकंठकी भई मूरछा दूरी ॥
निरखि लंक पथ आप विवश गुणि कियो दाँव बलपूरी ॥
पगन कुक्षि कर नखन श्रौन दंतन नासिका विदारी ॥
चौंकि रोप करि कुंभकर्ण तिन डारो अवनि पछारी ॥ ३९ ॥
भूतल परत गेंद सम हरिपति उछलि गगन पथजाई ॥
आये राम निकट तिन लखिकै सकल सैन हुलसाई ॥
नासा श्रवणहीन ह्वै अतिही कुंभकर्ण सकुचायो ॥
फिरो वहोरि क्रोध भरि धायो सवतनु शोणित छायो ॥ ४० ॥
आय गदागहि भालु कीश पुनि अमितहने अरु खाये ॥
भयो विकल दल लखि रामानुज तासु अंग शर छाये ॥
कुंभकर्ण बाणन ते व्याकुल पै न गिनै तनु पीरा ॥
रामहिं देखि क्रोध करि धायो लिये सु आयुध वीरा ॥ ४१ ॥
तव रघुवीर तीर निश्चर उर रौद्र अस्त्र मयमारे ॥
गिरो गदा भो विकल वानते वेधि गये तनुसारे ॥
यातुधान पुनि शैल शृंग लै हनो राम तिहि काटो ॥
कुंभकर्ण मुद्गर कर गहि कै वहुरि राववहि डाटो ॥ ४२ ॥
हौं न विराध कबंध त्रिशिर खर कपि मारीच न रामा ॥
सुर नर नाग विदित तिहुँ पुरविच कुंभकर्ण मम नामा ॥
करौं प्रहार काहमैं प्रथमैं तुम निज वल दरशावो ॥
पुनि यह मुद्गर हनौं शीश तव तनु ताजि यमपुरजावो ॥ ४३ ॥
सुनि रघुनाथ क्रोध करि तिहि तनु ते शर अगणित मारे ॥
जे विराध खर ताल बालिपै परम प्रचंड प्रहारे ॥
कुंभकर्ण तिन कछु मुद्गरते भंजे कछु वपुलागे ॥
सो नहिं गिनै वीर वर आयुध पुन धायो प्रभु आगे ॥ ४४ ॥

तब उताल वायव्य अस्त्रयुत राम बाणतिहि मारा ॥
दक्षिण बाहु सहित मुद्गर सो खंडि महीतल डारा ॥
वाम हाथसे तरु उपाटिकै कुंभकर्ण पुनि धायो ॥
ऐंद्र अस्त्र शरते द्रुमसह भुज सोऊ काटि गिरायो ॥ ४५ ॥
कटत बाहु बहु रिसकरि धायो भक्षण हित मुख फारे ॥
अर्धचंद्र शरते रघुवर तब पग खंडित करिडारे ॥
पुनि बाणन आनन भरि दीनो भयो विकल बरजोरा ॥
रहो रुंड युत मुंड क्रोध वश कियो शोर अतिघोरा ॥ ४६ ॥
तब रघुवीर उदंड चंड शर सजि कोदण्ड प्रहारा ॥
खंडित भयो शीश सो मरतहु मारौं राम पुकारा ॥
कुम्भकर्णको रुण्ड मुंड महि गिरो मेरु सम भारा ॥
पुर प्राकार द्वार कपि निश्चर चूरन भये अपारा ॥ ४७ ॥
तासु मरन लखि मुदित भये सुर आय सुमन बरसाये ॥
किलकें कूदि भालु कपि चहुँ दिशि जै जै शोर मचाये ॥
यातुधान बलवान अपर ते लैलै प्राण पराने ॥
रसिकविहारी रामचंद्रकी विजय देव सुखसाने ॥ ४८ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० कुम्भकर्ण युद्ध वध
वर्णनो नामएकादशोविभागः ॥ ११ ॥

दोहा—आतुर जाय सुलंक मधि, यातुधान बिलपाय ॥
रावण प्रति बरणो सबै, बंधु मरन अकुलाय ॥ १ ॥
कुंभकर्णको निधन सुनि, विकल भयो दशमाथ ॥
मदन करन गुणगणिकै, दलन भूमितल माथ ॥ २ ॥
अरु निशाचर निश्चरी, करमलि शीशधुनात ॥
कुंभकर्ण [illegible] सुमन पुनि, गये विकल बिलपात ॥ ३ ॥
दशमुख भाषी बंधु बिन, धिग जीवन सुखराज ॥
कुंभकर्ण बिन जाउँगो, हौं [illegible] मय काज ॥ ४ ॥
[illegible] पुत्र [illegible], [illegible] भीर भगाय ॥
[illegible], [illegible] बिलप हापाय ॥ ५ ॥

यौं भाषी त्रिशिरा सुभट, अरु देवांतक वीर ॥
प्रबल नरांतक रजनिचर, वर अतिकाय सुधीर ॥ ६ ॥
सो सुनि रावण धीर धरि, तिन बहु साज सजाय ॥
संग सैन चतुरंग करि, दीनी युद्ध रजाय ॥ ७ ॥
बहुरि महोदर वीर अरु, महापार्श्व सजि अंग ॥
निश्चरपति निज भ्रात ये, किय पुत्रनके संग ॥ ८ ॥
रण दुर्मद षट सुभट ये, निश्चर अपर अपार ॥
चले यथोचित साज साजि, वाहन कवच हथ्यार ॥ ९ ॥
जै रावण कहि वेगही, भिरे सुनिश्चर आय ॥
जै रघुवर कपि भालु करि, गहि गिरि पादप धाय ॥ १०
हनैं तमीचर ऋच्छ कपि, ते तिनकर संहार ॥
कटत अटत नहिं भट हटत, एकहि एक प्रचार ॥ ११ ॥
दांतन लातन मुष्टिकन, तलन नखन बहु वीर ॥
अस्त्रन शस्त्रन गिरि तरुन, हनत गनत नहिं पीर ॥ १२ ॥
तेज तुरंग फिराय चहुँ, पास शक्ति कर धार ॥
हने नरांतक सतशत, कपि छिन एक मझार ॥ १३ ॥
यौंहीं हते अपार भट, दिय कपि दल बिचलाय ॥
धाये अंगद वेगहीं, पाय सुकंठ रजाय ॥ १४ ॥
देखि नरांतक कीश उर, कीनो पाश प्रहार ॥
चूर चूर ह्वै शस्त्र सो, बिखरो भूमि मझार ॥ १५ ॥
वालिपुत्र तव क्रोध करि, तलहनि हत्यौ तुरंग ॥
यातुधान सो कीश शिर, मारो मुष्ट अभंग ॥ १६ ॥
पुनि सकोप अंगद सँभरि, मुष्ट हनो तिहि भाल ॥
विकल नरांतक महि परो, निकसो प्राण उताल ॥ १७ ॥

चौ० देखि नरांतक वध निशिचारी ॐ धाये कुपित शस्त्र करधारी ॥
आय वेगि देवांतक योधा ॐ परिघ हनो अंगदहि सक्रोधा १८
तब कपि गहि पादप तिहि मारा ॐ सो त्रिशिरा खंडित करि डारा ॥
पुनि बहु तरु गिरि कीश चलाये ॐ ते सब निश्चर भंजि गिराये १९॥

पुनि त्रिशिरा अंगद तनु सारा ❀ वेधो शरण अमित खर धा
वालितनय तरु कुधर प्रहारे ❀ तिनहि महोदर परिघ विदारे
तब कपि धाय उपल इकमारा ❀ करिभाग्यो करि वीर चिकार
निज गज व्यथित महोदर देखा ❀ तिहि ताडो भरि क्रोध विशेष
देवांतक पुनि आय उताला ❀ हनो कीश शिर परिघ कराल
तब अंगद तलकीन प्रहारा ❀ मत्त महोदर गज हति डारा
पुनि तिहि दन्त उखारि सुकीशा ❀ किय प्रहार देवांतक शीश
भयो विकल फिरि सम्हारि उताला ❀ अंगद शिरहि परिघ सो घाल
तिहि प्रहार वश कछु अकुलायो ❀ जानु टेकि कपि महि लगआय
पुनि उताल उठि तनु सुधि लायो ❀ तौ लग त्रिशिरा वाण चलायो
तीन तीर त्रिशिरा वरयोधा ❀ कपि ललाट मारे करि क्रोध
सो लखि नील पवनसुत धाये ❀ बहु गिरि पादप उपल चलाये
पुनि गिरि खंड नील गहि भारा ❀ वेगि त्रिशिर शिर पर सो मार
लखि वीचहि निश्वर वल पूरा ❀ वाणन काटि उपल कियचूरा
नील बहुरि इक शलै चलायो ❀ सो लागत त्रिशरा जमुहायो
देवांतक लै परिघ कराला ❀ धाय पवनसुतके शिरघाला
तब करि कोप वीर हनुमंता ❀ मुष्ट वज्र सम हनो तुरंता
देवांतक शिर चूरन भयऊ ❀ है खल मृतक भूमिगिरि गयऊ
लखि निश्चर देवांतक हाला ❀ कियो सकल बहु कोप कराल
अपर मत्तगज है असवारा ❀ धाय महोदर कपिहि प्रचारा
त्रिशिर महोदर दुहुँ इक साथा ❀ भिरे बहुरि कपि दलपति साथा॥
अमितबाण नीलहि तिन मारे ❀ सोऊ बहु तरु कुधर प्रहारे३०॥
तब करिकोप महोदर वीरा ❀ कपिहि कियो विह्वल हनितीरा॥
है मूर्छित पुनि कीश सम्हारा ❀ सह तरु शैल सुवेगि उखारा३१
तौलि ताकि सो गिरि वरियारा ❀ सपदि महोदर शीश प्रहारा॥
तिहि लागत गजसहित निशाचर ❀ गिरो मृतक है वेगि भूमिपर३२
तिहिवधलखित्रिशिरा भरि क्रोधा ❀ हने वाण हनुमानहि योधा॥
घालो शैल शिखर कपि तासू ❀ शरन चूर किय निश्चर आसू३३

पुनि हनुमत बहु द्रुम बरसाये ❀ सोहनि शरन त्रिशिर बिनशाये॥
वीर धाय तब तासु तुरंगा ❀ नखन विदारि कीन तनु भंगा३४
लखि निश्चर वर शक्ति प्रहारी ❀ सो गहि कीश भंजि महि डारी॥
तब त्रिशिरा लै खड्ग विशाला ❀ बल भरि हनूमान उर घाला३५
तासु हृदय पुनि कपि तल मारा ❀ सो फिरि कीशहि मुष्ट प्रहारा॥
गहि कृपाण हनुमान सु डाटे ❀ त्रिशिर शीश आतुर तिहुँ काटे३६

पद्धरीछंद।

लखि त्रिशिर घात निश्चर समस्त। भे अति बिहाल बहु शोकग्रस्त॥
कपि भालु पाय आनंद सर्व। चहुँ ओर वीर गर्जे सगर्व॥ ३७॥
तब यातुधान करि कोप चंड। धाये हथ्यार गहि गहि उदंड॥
शर शक्ति शूल भल्लन सुघाल। चहुँ भालु कीश बहु किय बिहाल ३८
भट महापार्श्व वर शस्त्रधार। वारनारोह बहु कपिनमार॥
लखि ऋषभकीश धाये उताल। कह आय हेरु खल तोरकाल ३९
तब गदा कीन निश्चर प्रहार। कपि हृदय स्रवित बहु रुधिर धार॥
पुनि ऋषभ क्रोधकर मुष्ट तान। मारी सुकुक्षि भो बिकल प्रान॥४०॥
मूर्छित सुरारि धरणीमझार। गिरि गदाधार पुनि उठि सम्हार॥
कियघात कीशके शीश चंड। तिहि हनो फेरि वानर उदंड॥४१॥
पुनि यातुधान बहुघात कीन। तब गदा ऋषभ तिहि छीन लीन॥
सो तासु शीशहनि वीर धाय। करिप्रान हीन दीनो गिराय ४२॥
भटमहापार्श्ववर समरधीर। तिहि निधन कीन द्रुत ऋषभवीर॥
लखि मरन तासु अतिकाय धाय। स्यंदन अरूढ किय समर आय४३
अतिकाय काय लखि कहत कीश। है कुंभकर्ण दूजो सुदीस॥
वाजी सहस्र जिहि रथ मझार। साजे अनेक उद्धत हथ्यार॥ ४४॥
दुहुँ ओर लंक द्वै खड्ग चंड। जिन मुष्टि पुष्टि अनुपम उदंड॥
विस्तार जासु है हस्तचार॥ दशहस्त लंब दृढ भूरि भार॥ ४५॥

म०॥ पा०॥ यु० का०॥ स० ७१॥ श्लोक।

द्वौ च खड्गौ च पार्श्वस्थौ प्रदीप्तौ पार्श्वशोभिनौ॥
चतुर्हस्तत्सरुयुतौ व्यक्तहस्तदशायतौ॥ १॥

पुनि राम अनुज क्रोधित उताल। वर अग्नि अस्त्र वालो कराल ॥
सो रौद्र अस्त्र छांडो प्रचंड। भिरि गिरे दोउ शर होय खंड ॥५९॥
खलकोपि अस्त्र ऐषीकमार। तिहि ऐंद्र अस्त्रते लषण डार ॥
पुनि याम्य अस्त्र निश्चर प्रहार। लक्ष्मण सुकीन वायव्यछार ६०॥
पुनि अमित अस्त्रमय वाण चंड। कीने प्रहार लच्छन उदंड ॥
अतिकाय अंग एकौ न भेद। सो करहि युद्ध निर्भय अखेद ॥६१॥
तव पवन देव लच्छनहि आय। भाषी विरंचि वर याहि आय ॥
याको अवध्य तनुत्रान अंग। विन ब्रह्मअस्त्र होवै न भंग ॥ ६२ ॥
दश सुनि वायुवैन लछमन उताल। शर ब्रह्म अस्त्र योजित विशाल ॥
बलवान भूरि वल धनुष तान। संधान ठान मारो सुबान ॥ ६३ ॥
सायक प्रहार होतहि उदंड। अतिकाय शीशभो तुरत खंड ॥
विन मुंड रुंडसो भूरि भार। महि गिरे चापि के दल अपार६४॥
तिहि निधन हेरि कपि ऋच्छ वीर। किय मुदित शोर जे लषण वीर ॥
सौमित्र आय आनँद पाय। शिर नायगहे रघुराय पाय ॥ ६५ ॥
उठि राम बंधु उरलाय लीन। बहुविधि बखान सनमान कीन ॥
सुग्रीव ऋच्छपति आदि वीर। आनंद अघाय धारी सुधीर ॥ ६६ ॥
अतिकाय अंत लखि यातुधान। दल सकल विकल ह्वैके परान ॥
उत करत रजनिचर रुदन घोर। इत होत जैति जै जैति शोर ॥६७॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० नरांतक अतिकाया-
दियुद्धवधवर्णनो नाम द्वादशोविभागः ॥ १२ ॥

सो०—निश्चर जाय विहाल, अतिरनाल दशभालसों ॥
विलपि कहो रण हाल, पुत्र बंधु दल सकल वध ॥ १ ॥
सुनि रावण पट वात, भयो विकल बहु मोहवश।
कर्मीजन पछितात, चकित चित्त तनु थकित भो ॥ २ ॥
दशमुख निपट अधीर, लै उसाँस बोलो विलखि ॥
हमि कोउ नाहि वीर, हने सदल रघुवीर जो ॥ ३ ॥

दोहा–पितहि महादुख देखिकै, इंद्रजीत कर जोर।
कही तात धीरज धरिय, लखिय पराक्रम मोर ॥ ४ ॥
जाम्बवंत हनुमंत अरु, सह तव अनुज सुकंठ ॥
अपर सदल दुहुँ बंधु को, वेगे करौं विकंठ ॥ ५ ॥
यौं बहु धीर धरायकै, मेघनाद वर जोर ॥
जाय सुभट थापे तुरत, किय प्रबंध चहुँ ओर ॥ ६ ॥
पुनि पुनीत ह्वै वेगही, धारि वसन शुचिलाल ॥
जाय यज्ञशाला सविधि, ठानो यज्ञ उताल ॥ ७ ॥
समिध विभीतक कुंडरचि, पावक प्रबल बढ़ाय।
यथा योग वर मंत्र पढ़ि, हवन कियो हुलसाय ॥ ८ ॥
श्याम अजा सहजीवलै, करि अभिमंत्रित ताहि ॥
सविधि समर्पण कीन हुनि, अग्नि कुंडके माहि ॥ ९ ॥
ताही छिन मख कुंडते, स्यंदन कढो विशाल ॥
तामधि कवच हथ्यार वर, धरे अनेक कराल ॥ १० ॥
सो लखि निश्चर मुदित ह्वै, करि प्रणाम सब लीन ॥
साजि अंग रथ बैठि कै, गमन युद्ध हित कीन ॥ ११ ॥
संग सैन चतुरंग वर, धीर सुवीर विशाल ॥
नाद करैं घननाद सम, सह घननाद कराल ॥ १२ ॥
अंतरिक्ष ह्वै इंद्रजित, आयो कपिदल माहिं ॥
अपर निशाचर भूमि मग, धाय भिरे चहुँ वाहिं ॥ १३ ॥
कीश भालु तरु उपल गिरि, गहि धाये बलवान ॥
घोर शोर चहुँओर है, रणछायो घमसान ॥ १४ ॥
रैनि अँध्यारी तम छयो, निज पर सूझत नाहिं ॥
कपि कपि निश्चर निश्चरन, ऋच्छनऋच्छ हनाहिं ॥ १५
ऋच्छ कपिन ऋच्छन कपी, निश्चर ऋच्छ कपीन ॥
ऋच्छ कपी हन निश्चरन, कोऊ काहुन चीन ॥ १६ ॥
मेघनाद वर अस्त्रमय, बाण प्रहार अपार ॥
कीश भालु संहार करि, डारे अवनि मँझार ॥ १७ ॥

श्रवण नैन मुख नासिका, हृदय चरण कर शीश ॥
बाण न बेधे इंद्रजित, भागे बचे न कीश ॥ १८ ॥
बालिसुतहि शर अष्टदश, नौ किय नलहि प्रहार ॥
सात मयंदहि पंच गज, ऋच्छपतिहि दशमार ॥ १९ ॥
नीलहि तीस गवाक्ष पट, गंधमादनहिं चार ॥
अपर अमित कपि रीछ तिन, बाणन दिये बिदार ॥ २० ॥
राम लषण सुग्रीव अरु, लंकापति हनुमान ॥
इनहिं जु मारे विशिख शर, तिनको कछु न प्रमान ॥ २१ ॥
भयो सकल कपिदल विकल, आरत करत पुकार ॥
प्राण कंठगत ह्वै परे, बहुरण भूमि मझार ॥ २२ ॥
रघुनंदन तब लषण प्रति, बोले निपट अधीर ॥
नागफांस बंधन कियो, जनु आयो सो बीर ॥ २३ ॥
इमि रघुवर लक्ष्मण अपर, कीश भालु समुदाय ॥
विकल व्यथित शर घातते, बोलत अतिअकुलाय ॥ २४ ॥
कीश ऋच्छ दल को कियो, मेघनाद संहार ।
रुंड मुंड छाये चहूँ, शोणित बहत अपार ॥ २५ ॥
सरसठकोटि सुवीर वर, वानर भालु उदंड ॥
पट घटिका मधि इंद्रजित, बाणन हते प्रचंड ॥ २६ ॥

म० वा० ॥ यु० कां० ॥ स० ७४ ॥

सप्तषष्टिर्हताः कोट्यो वानराणां तरस्विनाम् ॥
अह्नः पंचमशेषेण वल्लभेन स्वयं भुवः ॥ १ ॥

दोहा—अपर व्यथित कीने अमित, ते बहु मृतक समान ॥
परे भूमि तल विकल अति, भये कंठगत प्रान ॥ २७ ॥
यों विदारि बाणन सबहि, इंद्रजीत बलवान ॥
निरखि विजय निज मुदितह्वै, कीनो लंक पयान ॥ २८ ॥
बेगि आय पितुचरण गहि, कह्यो सकल रणहाल ॥
जयकारी पुत्रहि मुदित, उर लायो दशभाल ॥ २९
सकल निशाचर निश्चरी, प्रमुदित कहत निशंक ॥

इंद्रजीत कीनी विजय, अचल भई अब लंक ॥ ३० ॥
उत लंका मधि मोद अति, इत कपि सैन मझार ॥
घायल वीर विहाल बहु, आरत करत पुकार ॥ ३१ ॥
ताही छिन कछु सजग ह्वै, लंकापति वर जोर ॥
जाय सम्हारो सकल दल, धाय धाय चहुँओर ॥ ३२ ॥
तौं लग पवनकुमारहू, लहो चेत कछु वीर ।
बहुरि विभीपण आयकै, दई कपिहि बहु धीर ॥ ३३ ॥
तब हनुमत लंकेश प्रति, बोले अतिहि उताल ॥
चलो सबहि अवलोकिये, को किहि भांति विहाल ॥ ३४ ॥
यौं कहि दोऊ सजग ह्वै, लैकर लूक उजेर ॥
लंकापति हनुमत लखो, दल समस्त चहुँ फेर ॥ ३५ ॥
रुंड मुंड कोटिन परे, कोटिन कहरत वीर ।
कोटिन प्राण सुकंठगत, कोटिन मृतक शरीर ॥ ३६ ॥
यौंहीं हेरत जात दुहुँ, हनुमत निश्चरराय ॥
जे सजीव तिन देत हैं, धीर सुबैन सुनाय ॥ ३७ ॥
चालि हेरे दुहुँ ऋच्छ पति, धरणी परे अचेत ।
नख शिख वेधित शरनते, विकल उसाँस न लेत ॥ ३८ ॥
कही विभीपण जाय ढिग, तात जियत कै नाहिं ।
सुनि सुबैन रिछराजके, चेत भयो हिय माहिं ॥ ३९ ॥
जाम्बवंत तब मंद स्वर, बोले अतिअकुलाय ।
बाणी जानी लंकपति, पै दृगते न लखाय ॥ ४० ॥
कह्यो विभीपण वेगहीं, है सजीव हनुमान ॥
तुम निरखे निज नैनते, किमि है किन बलवान ॥ ४१ ॥
सुनि बोले लंकेश तुन, कहा बात यह तात ॥
नहिं प्रभुकी हनुमंतकी, तुम बूझी कुशलात ॥ ४२ ॥
जाम्बवान भाषो तबै, जौ न जियैं हनुमान ॥
तो जीवत जैते सबै, ते सब मृतक समान ॥ ४३ ॥

अरु जीवैं हनुमंत तो, बल प्रभाव बलवान ॥
मृतक भये कपि ऋच्छते, ज्यावें सबहि सुजान ॥ ४४ ॥
सुनि सुवैन गहि वेगही, जाम्बवंतके पाय ॥
कही पवनसुत कुशल हों, प्रभु तव कृपा प्रभाय ॥ ४५ ॥
कपिहि लाय हिय ऋच्छपति, बोले वचन उताल ॥
तिहूँलोक तुम सम बली, और न अंजनिलाल ॥ ४६ ॥
याते वीर सुवीरता, कीजै अतिहि उताल ॥
जाय औषधी लाय कै, विरुज करौ कपि भाल ॥ ४७ ॥
हिम गिरि अरु कैलासके, मध्य ऋषभ गिरि नाम ॥
तापरहै वर औषधी, सो लावो बलधाम ॥ ४८ ॥
सुनि सुवैन हनुमंत द्रुत, करि निज रूप विशाल ॥
उछलि चले नभ पंथ ह्वै, धाये अतिहि उताल ॥४९॥
उपल रजत अरु हेममय, लखे शैल अभिराम ॥
अवलोके हनुमंत पुनि, अपर अमित सुर ठाम ॥ ५० ॥
इहि विधि जाय उताल अति, पहुँचे पवनकुमार ॥
ऋषभ कूट हेरो चहूँ, शत योजन विस्तार ॥ ५१ ॥
कपिहि निरखि सो औषधी, गुप्त भई चहुँ ओर ॥
हनूमान तव क्रोध युत, गिरिहि कही करि शोर ॥ ५२ ॥
रे खल रघुवरकाजहित, ओषधि लई दुराय ॥
लखु भूधर मम बाहुबल, धरों तोहिं युत जाय ॥ ५३ ॥
यों कहि तिहि गहि धारि कर, उछलि व्योम पथ जाय ॥
आय धरो कपि सेन मधि, युत ओषधि गिरि लाय ॥५४॥
लावतहीं गिरि पवन लगि, भे सब विरुज शरीर ॥
अपर जिये कपि भालु ते, भये मृतक जे वीर ॥ ५५ ॥
होत मृतक निश्चर जिते, ते सब सागर माहिं ॥
दशमुख आज्ञाते परत, याते जिये सुनाहिं ॥ ५६ ॥

प्र० वा० यु० कां० ॥ म० ७३ ॥ श्लोक ।

यदाप्रभृति लंकायां युद्ध्यंते हारराक्षसाः ॥
तदाप्रभृति मानार्थमाज्ञया रावणस्य च ॥ १ ॥

ये हन्यंते रणे तत्र राक्षसाः कपिकुंजरैः ॥
हता हतास्तु क्षिप्यन्त सर्वएव तु सागरे ॥ २ ॥
दोहा—रैनि समै बहु भालु कपि, मृतक भये कपि जोय ॥
ह्वै सजीव ते दिवस मधि, उठे उठे जनु सोय ॥ ५७ ॥
भये विरुज दुहुँ बंधु युत, वानर भालु अपार ॥
अति आनँद उमँगाय सब, जैरघुवीर पुकार ॥ ५८ ॥
हनूमान पुनि शैल सो, रहो जहाँ तहँ धार ॥
नभमारग ह्वै वेगि पुनि, आये सैन मझार ॥ ५९ ॥
राम लषण सुग्रीव अरु, अपर अमित बलवान ॥
बार बार हनुमानको, बल यश करत बखान ॥ ६० ॥

इति श्रीरामरसा० र० वि० यु० इंद्रजितअंतरिक्षयुद्ध
वर्णनो नाम त्रयोदशोविभागः ॥ १३ ॥

पद्धरी छंद ।

यों विरुज भई कपि भालु सैन । तब कहे सपदि सुग्रीव बैन ॥
बीतो समस्त दिन भो न युद्ध । हनुमत करौ बल वेगि युद्ध॥१॥
तब हनूमान बहु भट बुलाय । कर लिये लूक पावक दिपाय ॥
धाये अपार सँग भालु कीश । कहि जैति राम जै जै हरीश ॥ २॥
दिन अस्त होत लखि समय सांझ । कूदे सवीर चहुँ लंक मांझ॥
दीनो लगाय पावक उताल । निश्चरन धाम वर लघु विशाल॥३॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कांडे । सर्ग ७४ ॥ श्लोक ।

अदहत्पावकस्तत्र जज्वाल च पुनः पुनः ॥
सारवंति महार्हाणि गंभीरगुणवंति च ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ।

तेहि समै कीन बहु पौन जोर । बाढ़ी उदंड ज्वाला सुघोर ॥
धाम वाजि गज रथ अपार । शिशु तरुण वृद्ध वरि होत छार॥४॥
हाय हाय सब करि पुकार । भे विकल कोउ काहु न सम्हार ॥
यातुधान करि कोप चंड । धाये हथ्यार लै लै उदंड ॥ ५ ॥
। भालु वीर गहि गहि सुलूक । भिरि जाय दीन निश्चरन फूक ॥
यातुधान पुनि पुनि प्रहार । भट ऋच्छ कीश फिर तिनहिं मार॥६॥

पावक प्रचंड चहुँ लाय दीन। पुनि भालु कीश विध्वंस कीन॥
मर्दत सु भौन अरु लरत जात। बहु धाय धाय दल दरत जात॥ ७॥
पैठे सु जाय दशकंठ धाम। कीनो विहाल कहि जैति राम॥
चहुँ जरत लंक अरु होत युद्ध। कर बहु विनाश कपि भालु उद्ध ८॥

घनाक्षरी-कवित्त।

थंभडारे देहरी उखारि औ कपाट फारि सदन उजारि जारि डारें रंचहू न भै॥ केसरी किशोर वीर बंकादे उतंका हंका लंकामें फलंका चालि कूदत चहूँ अभै॥ रसिकविहारी जे कपीश ईश गाजें कीश सुनि दशशीश कर वीस रीस ह्वै चभै॥ चंगुल चपेटि औ लंगूरमें लपेटि मर्दि मर्दत खखेटि रजनीचर भगे सभै॥ ९॥ ठेलैं ठेलि पेलैं पेलि रेलैं रेलि झेलैं फेरि झेलिकै ढकेलें यौंहीं भौन डारें मीथि मीथि भारी तेजधारी जे प्रबृद्ध युद्धकारी तेउ वीरन निहारी मानहारी भगैं वीथि वीथि॥ रसिकविहारी विजैकारी कपि रीछ झारी डारी औ विडारी शत्रु सेन मारी झीथि झीथि॥ गुंठित हथ्यार कीने लुंठित करेहैं कर कुंठित कियेहैं दशकंठ कंठ चीथि चीथि॥ १०॥

पद्धरीछंद।

उत करहिं यों सुविध्वंसलंक। इत राम साजि धनु शर उतंक॥
छोडे अपार सायक उदंड। तिन किये आय गृह खंड खंड॥ ११॥
इमि भालु कीश करि लंक नाश। लै रुकरुद्ध पुर आस पास॥
देखैं परात कोऊ जु ताहि। देंवं बहाय गहि अनल माहि॥ १२॥
दशमौलि देखि गति ह्वै विहाल। दीनी रजाय अतिही उताल॥
वर कुंभकर्ण सुत दोउ वीर। उद्धत निकुंभ अरु कुंभ धीर॥ १३॥
वर शोणिताक्ष यूपाक्ष चंड। कंपन प्रजंघ पट भट उदंड॥
पुनि अपर रनिचर शस्त्रधार। तिन संग कुपित धाये अपार॥ १४॥
भट भालु कीश अरु यातुधान। भिरि परे दोउ दल क्रुद्ध ठान॥
द्रुम शैल शक्ति शर खड्ग चंड। लगि गिरे वीर ह्वै खंड खंड॥ १५॥
गहि गदा धाय कंपन उताल। अंगदहि घाल भो कपि विहाल॥
पुनि सँभारि कीश किय गिरि प्रहार। सो गिरो मृतक ह्वै रण मझार॥ १६
लखि शोणिताक्ष धायो उताल। किय कपिहि मारि घायन विहाल॥

तब बालि पुत्र धनु तून छीन । करि खंड खंड महि डारि दीन॥१७॥
पुनि शोणिताक्ष असि चर्मधार । धायो सुछीन लिय कपिकुमार॥
सो हनी ताहि करबाल तासु । आये प्रजंघ यूपाक्ष आसु ॥ १८॥
त्रै यातुधान अंगद अकेल । लखि द्विविद मैंद धाये सकेल॥
इत भये प्लवंगम तीन चंड । तिहुँ उतहु वीर निश्चर उदंड ॥ १९॥
तिहुँ कीश कीन बहु तरु प्रहार । ते सब प्रजंघ असिते विदार॥
पुनि अपर शैल द्रुम घाल चंड । यूपाक्ष डार तिन शरनखंड ॥२०॥
निश्चर प्रजंघ गहि खड्गतान । अंगदहि घात किय क्रुद्ध ठान॥
तब कीश रोप भरि मुष्ट मारि । तिहि शीश भंजि महि दीन डारि२१॥
लखिकै प्रजंघ वध रोप आन । यूपाक्ष वीरवर लै कृपान॥
सो द्विविदहीय घाली उताल । तब गहो कीश निश्चरहि हाल ॥ २२॥
लखि शोणिताक्ष किय कपिहि घात।गहि गदा कीश तिहि शिर निपात॥
ताछिन मयंद द्रुत धाय आय । यूपाक्ष वीरको दिय गिराय॥२३॥
भुजन मर्दि लिय प्राण तासु । त्यों शोणिताक्षको द्विविद आसु॥
गहि दशन कोटि तनु नखन फारि।डारो सु भूमि लै प्राण मारि२४॥
इमि दुहूँ कीश दुहुँ भट सँहारि । धाये सुकुंभप्रति कुधर धारि॥
सो यातुधान हन अमित तीरं । कीने विहाल कपि द्विविद वीर२५॥
लखि व्यथित भ्रात धाये मयंद । गरु शिला घाल कुम्भहि सुछंद॥
निश्चर सुपंच शर खंड कीन । पुनि कपिहि सायकन भेदि दीन२६॥
पीडित विलोकि मातुलन वीर । द्रुत बालिपुत्र धाये सुधीर॥
तिन कुम्भ कीन बहुशर प्रहार। कपि अमित ताहि द्रुम शैल मार२७॥
पुनि कुम्भवीर शर सप्त मारि। करि विकल कपिहि दिय भूमि डारि॥
अंगद विहाल गति कीश धाय । भाषी उताल रघुवरहि जाय॥२८॥
सुनि जाम्बवंत आदिकन राम । दीनी रजाय करि द्रग ललाम॥
धाये सु ऋच्छपति अरु सुखेन। कपि वेगदर्शी तिहुँ सुबल ऐन२९॥
लखि चेतलहि चहुँ सुवीरं । तरु उपल धारि धाये सुधीर॥
लखहि कुंभ शर विपुल शाल । वेधे समस्त वपु किय विहाल३०॥

धाये सुकंठ सो गति निहार । बहु कुधर कीन कुम्भहि प्रहार ॥
ते सकल शैल भट यातुधान।बाणन विदारि किय रज प्रमान॥२१॥
पुनि शरन बेधि डारो सुअंग । तब किय कपीश तिहि चापभंग ॥
धनु भंजि कीशपति कर बखान । तुव तेज रूप बल पितु समान२२
सुनि कुम्भ कुपित भरि लीन बाथ । तब कीन भूरि बल कीशनाथ ॥
दुहुँ वीर धीर बर समर उद्ध । अवरुद्ध क्रुद्ध कर मल्लयुद्ध ॥ २३ ॥
कुम्भहि सुकंठ बहु कोपधार । फेंको उठाय सागर मँझार ॥
सो बहुरि आय तुर बाँधि पुष्ट । बालो कपीश उर बज्र मुष्ट ॥ २४ ॥
पीड़ित हरीश पुनि ह्वै प्रचंड । तिहि बज्र मुष्ट मारो उदंड ॥
सो लगत बच्छ तच्छनहिं फाट । गिरि गयो भूमि निश्चर उलाट२५॥
भो मृतक मुष्ट लगि कुम्भ वीर । लखि यातुधान तजि दीन धीर ॥
निरखो निकुंभ निज भ्रातहाल । धायो सकोप अतिही उताल॥२६॥
सन्मुख सु आय हनुमंत वीर । कीनो निरुद्ध तिहि समर धीर ॥
सो कपिहि परिघ मारो प्रचंड । लगि हृदय शस्त्र भो खंड खंड॥२७॥
तब कीश कोपि तिहि उर मझार । द्रुत पुष्ट मुष्ट कीनो प्रहार ॥
विह्वल निकुम्भ ह्वै लजगहाल । गहि लयो धाय कपिको उताल२८
पुनि पवनपुत्र हनि मुष्ट ताहि । भो विलग वीर इक छिनक माहि ॥
फिरि तासु परिघ लै कपि उदंड । तिहि दलो धाय करि कोपचंड॥२९॥
हनुमंत फेरि तिहि महि पछार । द्रुत लीन वीर गहि शिर उपार ॥
तब भो निकुम्भ तनु प्राणहीन । लखि भालु कीश जैशोर कीन॥४०॥

दोहा—सकल निशाचर जायकै, भाजि लंकपति पास ॥
कही नाथ पट भट सदल, रण मधि भये विनास ॥ ४१ ॥
कुम्भ निकुंभादिक मरन, सुनि दशमुख विलपाय ॥
पुनि भाषी मकराननों, हिय बहु रोष बढाय ॥ ४२ ॥
जाहु पुत्र द्रुत सैन लै, हतो सदल रघुबीर ॥
अस्त्र शस्त्र बर युद्धमें, हो तुम निपुण सुधीर ॥ ४३ ॥
तुव पितुको रघुवर हनो, दंडकवन रण माहिं ॥
सो उर बदलो लेहु अब, समय विलंब सुनाहिं ॥ ४४ ॥

चौ०—सुनि खर सुत मकराक्ष सुभट्टा ❀ लिये संग वीरनके ठट्टा ॥
शस्त्र कराल कवच तनुसज्जे ❀ यातुधान दुर्मद बहु गज्जे ॥ ४५ ॥
धीर वीर मकराक्ष प्रधाना ❀ स्यंदन बैठि सुकीन पयाना ॥
चलत भूरि अपशकुन जनाये ❀ तिनहिं निदरि निश्चर सब धाये ४६॥
भयो शोर चहुँ ओर अपारा ❀ सुनत राम धनु बान सँभारा ॥
कीश भालु तरु गिरि गहि दौरे ❀ निश्चर भिरे पानवशबौरे ॥ ४७ ॥
शक्ति परिघ असि शरन प्रहारी ❀ यातुधान कपि सैन विदारी ॥
तरु गिरि उपल कीश बहु वरषैं ❀ धीर वीर सो नेक न करषैं ॥४८ ॥
भट मकराक्ष बाहु बल पाई ❀ सबल प्रबल निश्चर समुदाई ॥
खरसुत अमित चंड शर मारे ❀ यातुधान बहु शस्त्र प्रहारे ॥ ४९ ॥
कराहिं भालुकपि रण वारियारा ❀ भये सकल तनु व्यथित अपारा ॥
सो लखि राम भूरि शर चंडा ❀ मारि कीन निश्चर दल खंडा ॥५०॥
खरसुत निज दल विचल निहारा ❀ धाय आय रघुवरहि प्रचारा ॥
कहा ठाढ हो मम पितुघाती ❀ आज निपाति सिराऊँ छाती ॥५१॥
अस्त्र शस्त्र तनु बल जिहि नाहीं ❀ अति अभ्यास होय तुम काहीं ॥
द्वंद्व युद्ध मो संग सु करहू ❀ बहुरि वेगि मम शर लगि मरहू५२॥
सुनि रघुवीर सु उत्तर दीना ❀ हौं तुहि मूढ़ भली विधि चीना ॥
जनि मिथ्या वकवाद बढ़ावै ❀ निज पुरुपारथ करि दरशावै॥५३॥
सुनि मकराक्ष सकोप उताला ❀ छाय दीन रामहि शरजाला ॥
प्रभु ते सकल खंडि महि डारे ❀ अरु प्रचंड निज शर बहु मारे५४॥
ते निश्चर भंजे सब तीरा ❀ इहि विधि हने दुहूँ दुहु वीरा ॥
नृपसुत शर निश्चर बहु छाटे ❀ तासु वाण प्रभु अगणित काटे५५ ॥
तब रघुवीर कोप उर धारा ❀ तासु चाप खंडित करि डारा ॥
बहुरि अष्ट शर ते रघुनंदन ❀ किय विनाश सारथि हरिस्यंदन ५६
विरथ होय मकराक्ष सुयोधा ❀ महि धायो गहि शूल सक्रोधा ॥
सबल भ्रमाय सुशस्त्र उताला ❀ नाकि तौलि रघुवर पर घाला५७
सो प्रचंड शूलहि रघुवीरा ❀ भंजो वेगि चार हनि तीरा ॥

लखि मकराक्ष शूल निज खंडा ॥ धायो मुष्टिक बाँधि उदंडा५८॥
तब रघुनाथ अनल शर मारा ॥ गिरो भूमि करि घोर चिकारा॥
भो मकराक्ष मृतक बर बीरा ॥ भागे निश्चर निरखि अधीरा५९॥
सो०—भो मकराक्ष निपात, निरखि भालु कपि मुदित ह्वै ॥
बहु कूदत किलकात, कहँ रामजै रामजै ॥ ६० ॥

इति श्री रा० र० वि० यु० लंकदहन मकराक्षादि युद्धवधवर्णनो नाम चतुर्दशोविभागः ॥ १४ ॥

चामरछंद।

उतालयातुधान हाल रावणे सबै कहो ॥ नृपाल ह्वै विहाल त्यों कराल कोप ते दहो ॥ तबै विचार ठानिकै सुइंद्रजीत सों कही ॥ सुवीर तो समान वीर आन लंकमें नहीं ॥ १ ॥ कहा विचारि पुत्र तू न आजलों विजै करी ॥ मनुष्य भालु कीश क्रूर आय लंक क्षै करी॥भई भई सु पै अबै विलंब है न कामको ॥ उताल हाल जायकै सँहार डार रामको ॥ २ ॥ तबै सुमेघनाद यों धराय धीर तातको ॥ कही न सोच कीजिये कछूक शत्रु बातको ॥ सबंधु राम भालु कीश आज हों नशाय हौं ॥ परायहू कहूं बचै न व्योमते खसायहौं ॥ ३॥ बखानि इंद्रजीत यों सुयज्ञ कीन जायकै ॥ भयो प्रसन्न सो समस्त सिद्ध साज पायकै ॥ उताल अंतरिक्ष ह्वै अलक्ष गो अकेलही ॥ कियो विचार आज हों विजै करों सकेलही ॥ ४ ॥ विशाल चाप तान कै सँधान बान बालही ॥ उताल कीश भालु शीश भाल गात शालही ॥ लखै न कोउ ताहि सो समस्तसैन हेरही ॥ प्रहारि तीर मारि वीर भूमि मध्य गेरही ॥ ५ ॥ उखार शैल वृक्ष धार कीश ऋच्छ धावहीं ॥ लखाय ना कहूं सु व्योम ओरको चलावहीं ॥ सुरारि पुत्र गुप्त ह्वै अपार बाण मारिकै । दई गिराय भालु कीश सैनको विदारिकै ॥ ६ ॥ परे विहाल ह्वै अधीर वीर तीर पीर ते ॥ करैं सुहाय हाय शोर न्हाय नैन नीर ते ॥ सम्हार सार काहुकी न काहु को कछू रही ॥ अपार धार रक्तकी समस्त अंगते बही ॥ ७ ॥ सबंधु राम अंग मध्य रोम रोम छेदिगे ॥ सुवीर इंद्रजीतके प्रहार तीर

भेदिगे ॥ भये विहाल दोउ राजपुत्र बाणपात ते ॥ चली अपार र
धार बेसुमार गात ते ॥ ८ ॥ तबै अनंत कोपिकै कही उताल भ्रा
सों ॥ कहा कलेश होय गो बहोरि प्राण घातसों ॥ सुहौं अबै प्रचं
ब्रह्म अस्त्र बाण मारहूं ॥ जिते त्रिलोक यातुधान ते सबै सँहारहूं॥९
सकोप देखि बंधुको कृपालु राम यों कही ॥ अराति घात हेत ता
बात योगहै यही ॥ परंतु ह्व नरेश पुत्र ना अनीति धारिये ॥ सुए
दुष्टलागि क्यों अनेक प्राण मारिये ॥ १० ॥

दोहा–भगो दुरो लीने शरन, नहिं आयो रण मध्य ॥
करजोरे उनमत्त हो, ये षट सदा अवध्य ॥ ११ ॥
याते उर धीरज धरो, हौं मारौं अब याहि ॥
मायामय बरिबंड खल, जोपै भागि न जाहि ॥ १२ ॥
यौं तिहि दृढ वध ठानिकै, नभ दिशि लखे निशंक ॥
रघुवर हियकी गति समुझि, गयो इंद्रजित लंक ॥ १३ ॥
पुनि घननाद विचार किय, माया रचौं अपार ॥
ठानि हिये बहुरो तुरत, लै सँग सुभट जुझार ॥ १४ ॥
आयो पश्चिम द्वारसो, मायामय सिय रूप ॥
रचि बैठारे संग निज, रथ बिच परम अनूप ॥ १५ ॥
यातुधान दल देखिकै, वानर भालु अपार ॥
क्रोधभये चहुँ ओरते, धाये तरु गिरिधार ॥ १६ ॥
आवतही कपि वृंदको, दशमुख सुत दरशाय ॥
माया सियको वध कियो, गहि कच खड्ग चलाय ॥ १७
सो लखि हनुमत आदि सब, हाय हाय किय शोर ॥
आरत विकल पुकारहीं, करो कर्म खल घोर ॥ १८ ॥
रुदन करत घननाद पर, धाये पवनकुमार ॥
कहत क्रोधमय दुर्वचन, मूढ तोहिं धिक्कार ॥ १९ ॥
है अवध्य अबला सदा, पुनि अति दुखी अधीर ॥
बहुरि निवश तिहि वध कियो, दुष्ट कहावत वीर ॥ २० ॥

यों भाषत धाये सदल, किय तरु कुधर प्रहार ॥
तिनहि छिंदि मारत कपिन, इंद्रजीत बरियार ॥ २१ ॥
समर करत हनुमान प्रति, कहे इंद्रजित बैन ॥
रे कपि मुहि तिय घातको, रंचहु पातक है न ॥ २२ ॥
नर नारी कोऊ कहूँ, पीडाकारक जोय ॥
ताहि वधेते केसहू, काहू पाप न होय ॥ २३ ॥
सुनि हनुमत कपि भालु युत, धाये करि बहु क्रुद्ध ॥
तरु गिरि पाहन भूरि हनि, करनलगे रणयुद्ध ॥ २४ ॥
क्रोधित काल करालसम, भये वीर विकराल ॥
पौनपुत्र गहि गरु शिला, घाली अतिहि उताल ॥ २५ ॥
ताछिन रथ लै सारथी, भागो निरखि शिलाहि ॥
गिरी आय सो ठौर तिहि, धसी धरणिके माहि ॥ २६ ॥
बहुरि हनूमत सदल अरु, युत अनीक घननाद ॥
करत युद्ध रव उद्ध भो, मनो प्रबल घननाद ॥ २७ ॥
हनूमान सोचत हिये, सियहि हती खलवाम ॥
प्रभु रजाय पाये विना, है अब युद्ध निकाम ॥ २८ ॥
यह विचार दृढ़ ठानिकै, युक्तिहि युक्ति सुधीर ॥
भिरत फिरत निकटत दुरत, गये समर तजि वीर ॥ २९ ॥
इंद्रजीत अवकाश लहि, गयो सदल द्रुत लंक ॥
हनुमत चल दर्पित सकल, निश्चर निपट सशंक ॥ ३० ॥
लंक सिद्धि देवी सु जिहि, है निकुंभिला नाम ॥
करन लगो मख इंद्रजित, करि प्रबंध तिहि ठाम ॥ ३१ ॥
पवनसुवन इत विकल अति, विलपत जाय उताल ॥
कहो सिया वध सुनतही, भूमि गिरे रघुलाल ॥ ३२ ॥
करत विलाप अधीर अति, तन मनकी न सँभार ॥
बहो फेन मुख स्वेद तनु, चली दृगन जल धार ॥ ३३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

हाय हाय करि रघुराय विलपाय धाये बोले हाय प्यारी कहाँ बेगही बतायदे ॥ जनकदुलारी किनमारी छिताडारी हाय आय

हनुमंत फेरि सकल सुनायदेहौंहूं प्राण त्यागों तहां चलिकै छबीली
जहां संगले उताल तिहिं ठौर पहुँचायदे । होनी ही भई सो आज
लाज को न काज हाय कैसहू प्रियाको मोहिं वदन दिखायदे॥३४॥

दोहा—इमि अधीर रघुवीर को, लषण गहे उठि धाय ॥
बैठारे कहि मृदु वचन, समै सरिस समुझाय ॥ ३५ ॥
धीर धरत नहिं रंचहू, बढी विरहकी पीर ॥
बहु विलपत अकुलायकै, कहत वचन रघुवीर ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

रसिकविहारी किमि लगनहुती सो क्रूर जा छिन छबीलीको उछाहि व्याहि लायोमैं ॥ कौन कुघरीही वह जाघरी प्रियाको संग लैकै त्यागि देशको विदेशहि सिधायोमैं ॥ कैसो दिन अशुभकराल सो कलेशकारी जादिन समस्त दल साजि इत आयोमैं ॥ जव ते विछोही तवही ते हाय लाडिलीको सकवेर फेर मुख देखन न पायोमैं ॥ ३७ ॥ प्यारी सुरधामको सिधारी सो सुखारी भई हौंतो तिहि विरह दुखारी करौं हाय हाय । सुरति बिसारी ना निहारी नेक मेरी ओर रसिकविहारी गई न्यारी चित चाय चाय । होवै हितकारी जो सहाय सो हमारी करै लागी अंग अंग रूप वारी विन लाय लाय॥ ऐसे समै कोऊ आय हनहि कृपान तान त्यागौं प्रान मुदित प्रियाके गुण गाय गाय ॥ ३८ ॥

दोहा—यौं बहु विलपतही विकल, पुनि बोले रघुराय ॥
हनुमत लषण सुकंठ नल, आदिक सबहि सुनाय ॥ ३९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सेवक सुबंधु सखा तन मन वित्त चित्त रसिकविहारी सदानंदमें रहीजियो ॥ हौं तौं अव करत पयान प्राणप्यारी ढिग सकल सुजान सीख येती सुनि लीजियो ॥ लायकै सुदारु भार भूरि विरचाय शर एकै ठौर धारकै दुहूंको दाह दीजियो ॥ मेरो दृढ नेह औ पतिव्रत प्रियाको सत्य ताको निरवाह सबै अंतलग कीजियो ॥ ४० ॥

दोहा—सुनि लछमन रघुचंदको, गहि निज अंक मझार ।
कही तात धीरज धरिय, कीजे समय विचार ॥ ४१ ॥

यों कहि पुनि रघुवीर सों, बोले कछु झहराय।
राज तजो प्रभु धर्म हित, ताको फल यह आय ॥ ४२ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

धरमधुरीण नाथ पायो सो कलेश ऐसो यातुधान रावण सुमोद
। तूठे हैं॥परम सुकर्मी प्रभु वन वन डोलें दुखी रावण अधर्मी ताहि
साज पूठे हैं ॥ रसिकविहारी हों विचारी निरधारी सत्य सकल
शुभ त्रिलोकही ते ऊठे हैं॥ धनको प्रभाव एक सत्य है सदाहीं
: धर्म कर्म ज्ञान पाप पुण्य सब झूठे हैं ॥ ४३ ॥

प्र० ॥ वा०॥ यु०॥ का०॥ स० ८३ ॥ श्लोक० ॥

रे युद्ध्यमानानामस्माकं प्रेक्षतां च सः ॥ जघान रुदतीं सीतामिंद्र-
रावणात्मजः ॥ १ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवः शोकमूर्च्छितः ॥
पात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ॥२॥ तं लक्ष्मणोऽथ बाहुभ्यां
प्वज्य सुदुःखितः ॥ उवाच राममस्वस्थं वाक्यं हेत्वर्थ संयुतम्॥३
। वर्त्मनि तिष्ठंतं त्वामार्य विजितेंद्रियम् ॥ अनर्थेभ्यो न शक्नोति
तुं धर्मो निरर्थकः॥४॥भूतानां स्थावराणां च जंगमानां च दर्शनम्॥
ास्ति न तथा धर्मस्तेन नास्तीति मे मतिः ॥ ५ ॥ यद्यधर्मो
द्भूतो रावणो नरकं व्रजेत्।भवांश्च धर्मसंयुक्तोनैव व्यसनमाप्नुयात्६
य च व्यसनाभावाद्व्यसनं चागतं त्वयि ॥ धर्मो भवत्यधर्मश्च
स्परविरोधिनौ ॥ ७ ॥ यस्माद्र्था विवर्धंते येष्वधर्मः प्रतिष्ठितः ॥
श्यन्ते धर्मशीलाश्च तस्मादेतौ निरर्थकौ ॥ ८ ॥ मम चेदं मतं
त धर्मोयमिति राघव॥ धर्ममूलं त्वया छिन्नं राज्य मुत्सृजता तदा॥
९ ॥ हर्षः कामश्च दर्पश्च धर्मः क्रोधः शमो दमः ॥ अर्थादेतानि
र्वाणि प्रवर्तंते नराधिप ॥ १० ॥ इत्यादि ॥

दोहा–यौंहीं लखन अनेक विधि, कहे वचन समुझाय ॥
सुनि गुनि समय स्वरूप कछु, धीर धरी रघुराय ॥ ४४ ॥

ौ०–ताही छिन सब सैन सँभारी ॐ आय विभीषण दशानिहारी॥
ालपत सकल भालु कपिवीरा ॐ लेत उसाँस विकल रघुवीरा ४५॥

हनुमंत फेरि सकल सुनायदे।हौंहूं प्राण त्यागों तहां चलिकै छबीली जहां संगलै उताल तिहिं ठौर पहुँचायदे । होनी ही भई सो आज लाज को न काज हाय कैसहू प्रियाको मोहिं वदन दिखायदे॥३४॥

दोहा—इमि अधीर रघुवीर को, लपण गहे उठि धाय ॥
बैठारे कहि मृदु वचन, समै सरिस समुझाय ॥ ३५ ॥
धीर धरत नहिं रंचहू, बढी विरहकी पीर ॥
बहु विलपत अकुलायकै, कहत वचन रघुवीर ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

रसिकविहारी किमि लगनहुती सो कूर जा छिन छबीलीको उछाहि व्याहि लायोमैं ॥ कौन कुघरीही वह जाघरी प्रियाको संग लैकै त्यागि देशको विदेशहि सिधायोमैं ॥ कैसो दिन अशुभकराल सो कलेशकारी जादिन समस्त दल साजि इत आयोमैं ॥ जबते विछोही तबही ते हाय लाडिलीको सकबेर फेर मुख देखनन पायोमैं ॥ ३७ ॥ प्यारी सुरधामको सिधारी सो सुखारी भई हौंतौं तिहि विरह दुखारी करौं हाय हाय । सुरति बिसारी ना निहारी नेक मेरी ओर रसिकविहारी गई न्यारी चित चाय चाय । होवै हितकारी जो सहाय सो हमारी करै लागी अंग अंग रूप वारी विन लाय लाय॥ ऐसे समै कोऊ आय हनहि कृपान तान त्यागौं प्रान मुदित प्रियाके गुण गाय गाय ॥ ३८ ॥

दोहा—यौं बहु विलपतही विकल, पुनि बोले रघुराय ॥
हनुमत लषण सुकंठ नल, आदिक सबहि सुनाय ॥ ३९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सेवक सुबंधु सखा तन मन वित्त चित्त रसिकविहारी सदानंदमें रहीजियो ॥ हौं तौं अब करत पयान प्राणप्यारी ढिग सकल सुजान सीख येती सुनि लीजियो ॥ लायकै सुदारु भार भूरि विरचाय श्र एकै ठौर धारकै दुहूँको दाह दीजियो ॥ मेरो दृढ नेह औ पतिव्रत प्रियाको सत्य ताको निरवाह सबै अंतलग कीजियो ॥ ४० ॥

दोहा—सुनि लछमन रघुचंदको, गहि निज अंक मझार ।
कही तात धीरज धरिय, कीजे समय विचार ॥ ४१ ॥

यों कहि पुनि रघुवीर सों, बोले कछु झहराय।
राज तजो प्रभु धर्म हित, ताको फल यह आय ॥ ४२॥

घनाक्षरी-कवित्त।

धरमधुरीण नाथ पायो सो कलेश ऐसो यातुधान रावण सुमोद मध्य तूठे हैं॥परम सुकर्मी प्रभु वन वन डोलें दुखी रावण अधर्मी ताहि राज साज पूठे हैं॥ रसिकविहारी हौं विचारी निरधारी सत्य सकल शुभाशुभ त्रिलोकही ते ऊठे हैं॥ धनको प्रभाव एक सत्य है सदाहीं और धर्म कर्म ज्ञान पाप पुण्य सब झूठे हैं॥ ४३॥

प्र० ॥ वा०॥ यु०॥ का०॥ स० ८३ ॥श्लोक० ॥

समरे युद्ध्यमानानामस्माकं प्रेक्षतां च सः॥जघान रुदतीं सीतामिंद्रजिद्रावणात्मजः ॥ १ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवः शोकमूर्च्छितः ॥ निपपात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ॥२॥ तं लक्ष्मणोऽथ बाहुभ्यां परिष्वज्य सुदुःखितः॥ उवाच राममस्वस्थं वाक्यं हेत्वर्थ संयुतम्३ शुभे वर्त्मनि तिष्ठंतं त्वामार्य विजितेंद्रियम्॥ अनर्थेभ्यो न शक्नोति त्रातुं धर्मो निरर्थकः॥४॥भूतानां स्थावराणां च जंगमानां च दर्शनम्॥ यथास्ति न तथा धर्मस्तेन नास्तीति मे मतिः॥ ५ ॥ यद्यधर्मो भवेद्भूतो रावणो नरकं व्रजेत्।भवांश्च धर्मसंयुक्तोनैव व्यसनमाप्नुयात्६ तस्य च व्यसनाभावाद्व्यसनं चागतं त्वयि॥ धर्मो भवत्यधर्मश्च परस्परविरोधिनौ ॥ ७॥ यस्मादर्थो विवर्धते येष्वधर्मः प्रतिष्ठितः॥ क्लिश्यन्ते धर्मशीलाश्च तस्मादेतौ निरर्थकौ॥ ८॥ मम चेदं मतं तात धर्मोयमिति राघव॥ धर्ममूलं त्वया छिन्नं राज्य मुत्सृजता तदा॥ ॥ ९॥ हर्षः कामश्च दर्पश्च धर्मः क्रोधः शमो दमः ॥ अर्थादेतानि सर्वाणि प्रवर्तंते नराधिप ॥ १० ॥ इत्यादि ॥

दोहा-यौंहीं लखन अनेक विधि, कहे वचन समुझाय॥
सुनि गुनि समय स्वरूप कछु, धीर धरी रघुराय॥ ४४॥

चौ०-ताही छिन सब सैन सँभारी ॐ आय विभीषण दशानिहारी॥
बिलपत सकल भालु कपिवीरा ॐ लेत उसाँस विकल रघुवीर

बूझी लखि लंकेश उताला ❀ बिलखि कह्यो लछमन सब हाल
सुनि भाषी तबसों झहराई ❀ नृप सुत बैठौ क्यों न चुपाई ४६
पुनि हनुमतहि लंकपति बोले ❀ है बुधिमंत बिचारि न बोले।
सो मायावी दुष्ट मलीना ❀ मायामय सीतावध कीना ४७॥
यों कहि बहुरि निशाचरराई ❀ रघुबीरहिं बहु धीर धराई॥
राम बिभीषण वचन प्रमाना ❀ मायामय सीता बध जाना ॥४८॥
पुनि बोले लंकेश उताला ❀ करै इंद्रजित यज्ञ कराला॥
याछिन लछमन सदल सिधारैं ❀ मख विध्वंस होय तिहि मारैं४९॥
सुनि रघुनाथ रजायसु दीनी ❀ सुभट सैन लछमन बहु लीनी॥
कवच अंग बहु शस्त्र सुधारे ❀ जैति जैति जैराम उचारे ॥ ५० ॥
हनुमानादि सुबीर प्रधाना ❀ जाम्बवन्त आदिक भट नाना॥
धनु शर गदा बिभीषण साजे ❀ यातुधान चहुँ विकट सुराजे५१॥
रामहिं लषण प्रदक्षिण दीना ❀ पद शिर धरि प्रणाम पुनि कीना॥
बहुरि कही प्रण ठानि अनंता ❀ ऐहौं हनि निश्चर बलवंता ॥५२॥
यौं कहि लछमन सदल सिधाये ❀ द्रुत निकुंभिला धामहि आये॥
तब बोले लंकेश उताला ❀ लखौ वीर यह वृक्ष विशाला ५३॥
इहि वट तर सु इंद्रजित आई ❀ होत अलक्ष व्यौममाधि जाई॥
याते करि प्रबंध तरु घेरे ❀ निश्चर खडे विकट चहुँ फेरे॥५४॥
सो प्रथमहि बल करि तरु लीजे ❀ बहुरि निशंक समर दृढ़ कीजे॥
सो सुनि लक्ष्मण दई रजाई ❀ धाये कीश भालु समुदाई ॥ ५५ ॥
तरु ढिग रहे निशाचर जेते ❀ कपिन हने बल करि सब तेते॥
मारत मरत लरत बरियाई ❀ गह्यो सु वट रिपुदलहि नशाई ५६
तिहि तरु तर ह्वै सजग सुधीरा ❀ खड़े लषण युत कोटिन बीरा॥
भिरे अपर निश्चर अरु कीशा ❀ होत समर दुहुँ दिशि करिखीसा५७
भयो चहूँ कोलाहल भारी ❀ उठो न मखते तबहुँ सुरारी॥
लखि कपि भालु धसे बरियाई ❀ यज्ञसाज सब दीन नशाई ॥५८॥

दंतन नखन इंद्रजित गाता ❀ फारि केश गहि मारहिं लाता ॥
भो विध्वंस यज्ञ करि क्रोधा ❀ उठो शूल लै निश्चर योधा ॥५९॥
सो बहु वीरन मारि गिराये ❀ अपर भाजि लछमन ढिग आये ॥
यज्ञ भंग सुनि सब हरषाने ❀ भयो अवै खल वध दृढ़ जाने ६०॥
मेघनाद करि क्रोध कराला ❀ धायो स्यंदन साजि उताला ॥
देखो पवनपुत्रकी ओरा ❀ हनत निश्चरन कपि बरजोरा ६१॥

तोमरछंद ।

लखि मेघनाद सुहाल । कपि निकट आय उताल ॥
किय अमित शस्त्र प्रहार । गहि कीशते दलि डार ॥ ६२ ॥
लखि पौनसुतहि लरात । धायो दशानन भ्रात ॥
ढिग जाय करि दृग बंक । कह इंद्रजितहि निशंक ॥ ६३ ॥
रे दुष्ट तू अति उद्ध । करु आज मोसम युद्ध ॥
सुनि मेघनाद रिसाय । बोलो सु भौंह चढ़ाय ॥ ६४ ॥
भो तात बंधु कनिष्ट । ह्वो मौन कुमति अनिष्ट ॥
महराज बंधु कहाय । भो भिक्षु सेवक जाय ॥ ६५ ॥
दोहा—जो निज सुजन विहाय कै, करैं पराई आश ॥
ताको इत उत दोउ दिशि, ह्वो सब काज विनाश ॥ ६६ ॥
इंद्रजीतके वचन सुनि, कहे विभीषण बैन ॥
तू खल पितु युत काल वश, अरु सब निश्चर सैन ॥६७॥
क्रूर कुशील कुकर्म रत, कटुवादी मतिहीन ॥
लुब्ध अधर्मी कुटुम जो, ताको तजे प्रवीन ॥ ६८ ॥
यों कहि कह लंकेश पुनि, रे खल कुमति कराल ॥
बटतर जान न पायहै, आज होत तव काल ॥ ६९ ॥
सजग दुहूँ इमि परस्पर, कहत हुते कटु बैन ॥
ताछिन हनुमत कंध चढ़ि, धाय लषण युत सैन ॥ ७० ॥
कही आय घननाद सों, रे कायर खल चोर ॥
दुरन न पैहै आज तू, देख पराक्रम मोर ॥ ७१ ॥
सुनि भाषी घननाद तब, भूलि गई वह पीर ॥

नागफाँस कपिसेन युत, महि डारे दुहुँ वीर ॥ ७२ ॥
कही लपण तव हे कुटिल, करी दुराय सु वात ॥
आज प्रगट दरशाव वल, जितो होय तुव गात ॥ ७३ ॥

तोमर छंद ।

सुनि इंद्रजित रिस धारि । निज अस्त्र शस्त्र सँभारि ॥
बोलो वहोरि सुछंद । हो सजग दशरथ नंद ॥ ७४ ॥
यौं भापि अतिहि उताल । सायक तजे विकराल ॥
सो लागि लक्ष्मण गात । वहु रुधिर धार वहात ॥ ७५ ॥
तव लपण वाणन मारि । तिहि कवच दीन विदारि ॥
सोऊ महारिस ठान । भंजन कियो तनु त्रान ॥ ७६ ॥
पुनि राम अनुज उदंड । द्रुत पंच शर वर चंड ॥
वाले सवल धनु तान । तिहि उर विधे विच आन ॥ ७७ ॥
घननाद युद्ध प्रवीन । लै विपम सायक तीन ॥
मारे सपादि करि लच्छ । वेधे सुलच्छनवच्छ ॥ ७८ ॥
यौं विविध उद्धत वान । दुहुँ हनत दुहुँ बलवान ॥
पुनि अपर शस्त्र अपार । दुहुँ करत दोऊ प्रहार ॥ ७९ ॥
इक एक करत अधीर । पुनि सँभरि युद्धत वीर ॥
दुहुँ शस्त्र भंजत दोउ । इमि भिरत फिरत न कोउ ॥ ८० ॥
दुहुँ शस्त्र ताकि ताकि वाल । दुहुँ अंग विधत कराल ॥
इमि लपण अरु घननाद । कर समर युत अह्लाद ॥ ८१ ॥
बहु यातुधान कराल । कपि ऋच्छ वीर विशाल ॥
वर शस्त्र तरु गिरि धार । कर धाय धाय प्रहार ॥ ८२ ॥
कपि भालु निश्चर झार । भो दोउ दलहि सँहार ॥
महि वही शोणित धार । भे रुंड मुंड पहार ॥ ८३ ॥
कपि भालु निश्चर सैन । इमि करत युद्ध हटैन ॥
त्यों लपण अरु घनगाद । किय समर हिय न विपाद ॥ ८४ ॥
तव राम बंधु उदंड । उर गुनो भट वरिबंड ॥
यौं करि विचार उताल । पुनि हने वाण कराल ॥ ८५ ॥

सो लगत भो मुख दीन । लखि लंकनाथ प्रवीन ॥
बोले लषण प्रति ठान । अब मारिहि खल दृढ़ जान ॥ ८६ ॥
तब इंद्रजीत रिसान । लछमनहिं सत सुबान ॥
मारे बहुरि दशतीर । हनुमतहि वेध सुवीर ॥ ८७ ॥
तब कोपि लक्ष्मण चंड । छोडे सुअस्त्र उदंड ॥
तिमि इंद्रजीत अपार । किये विविध अस्त्र प्रहार ॥ ८८ ॥
इमि अस्त्र शस्त्र अनेक । घाले जु एकहि एक ॥
भे दोउ विह्वल वीर । पै तजत नाहिं रणधीर ॥ ८९ ॥
लंकेश लषणहि हेरि । धाये धनुष सजि फेरि ॥
द्रुत इन्द्रजीतहि आय । शर हने कोप बढाय ॥ ९० ॥
पुनि अपर निश्चर भूर । दिय तिनहिं बाणन पूर ॥
सँग यातुधान जु चार । ते करहिं समर प्रचार ॥ ९१ ॥
लंकेश समर मझार । कह भालु कपिन प्रचार ॥
यहि खलहि मारहु वंक । फिरि और वीर न लंक ॥ ९२ ॥
सो सुनि भये भट क्रुद्ध । किय प्रबल औरहु युद्ध ॥
लषणहिं लिये निज पीठ । कर समर हनुमत ढीठ ॥ ९३ ॥
ले भालु दलहि रिछेश । करशत्रु यूथनिशेश ॥
भो घोर शोर अपार । दुहुँ ओर भट वरियार ॥ ९४ ॥
तब इन्द्रजीत सुबाय । रथते उतरि महि आय ॥
रिछपतिहि शक्ति प्रहार । लगि वही शोणित धार ॥ ९५ ॥
तब जाम्बवंतहु धाय । पद पकरि भूरि भ्रमाय ॥
फेंको रिसाय निशंक । गो इन्द्रजित गिरिलंक ॥ ९६ ॥
लज्जित सु ह्वै घननाद । पुनि आय करि घननाद ॥
रथ बैठि कीन सु युद्ध । रव घोर दुहुँ दल उद्ध ॥ ९७ ॥
सुनि शोर पुनि दुहुँ वीर । धाये भिरे रणधीर ॥
घननाद लछमन उद्ध । ठानो समर भरि क्रुद्ध ॥ ९८ ॥
तब लषण हनि शर चार । रथ बाजि तासु विदार ॥
पुनि सूतहू हति दीन । सारथ्य सो निज कीन ॥ ९९ ॥

तब धाय कपि बरियार । डारो तुरँग चहुँ मार ॥
सो धाय लै रथ आन । आयो जु कोउ न जान ॥ १०० ॥
तिहि लाघवी लखि सोय । भे चकित चित सब कोय ॥
पुनि इन्द्रजित धनुधार । किय कपिन बाण प्रहार ॥ १०१ ॥
भागे प्लवंगम धीर । कहि पाहि छक्ष्मण वीर ॥
तब रामबंधु प्रचंड । किय इन्द्रजित धनुखंड ॥ १०२ ॥
निश्चर शरासन आन । लै हने अगणित बान ॥
लखि राम अनुज सुवीर । भंजे सकल तिहि तीर ॥ १०३ ॥
घननाद तब सहरोप । द्रुत धाय करि बहु चोप ॥
पितु बन्धु हीय मझार । शर तीन कीन प्रहार ॥ १०४ ॥
तबहीं विभीषण धाय । गहि गदा चंड भ्रमाय ॥
सह सारथी रथ वाजि । विध्वंस कीन सु गाजि ॥ १०५ ॥
ह्वै इन्द्राजित रथ हीन । गरुचंड शक्ति शुलीन ॥
घाली तिनहिं बहु डाटि । द्रुत दीन लषण सु काटि ॥ १०६ ॥
पुनि मेघनाद रिसाय । दिय लषण कवच गिराय ॥
तब राम अनुज उदंड । तनु त्रान तिहि किय खंड ॥ १०७ ॥
पुनि दोउ वीर प्रवीन । बहु शस्त्र संयुग कीन ॥
फिरि अस्त्र करत प्रहार । दुहुँ दलत दुहुँ बरियार ॥ १०८ ॥
तब ऐंद्र अस्त्र उदंद । संयुत लषण शरचंड ॥
संधानि तानि सु चाप । भाषी बढाय प्रताप ॥ १०९ ॥
जो राम दशरथ नंद । सत धर्म सत्य सुछंद ॥
हैं तौ लगत यह बान । हो इन्द्रजित बिन प्रान ॥ ११० ॥
यौं सुमिरि दृढ़ प्रण ठान । सो अस्त्र संयुत बान ॥
किय इंद्रजितहि प्रहार । अति उठी पावकझार ॥ १११ ॥
सो जायके शरचंड । किय तासु शिर भुज खंड ॥
हाराम कहि घननाद । तनु तजो करि घननाद ॥ ११२ ॥
तिहि रुंड भो महि पात । निश्चर भगे बिललात ॥
है कीश भालु अनंद । कह जैति दशरथ नंद ॥ ११३ ॥

सब देववृंद उताल। नभ आय युत सुरपाल ॥
बरषे प्रसून अनंद। कहि जैति रघुकुल चंद ॥ ११४ ॥
बहु भांति विनय सुनाय। सुरगये निज निज ठाय ॥
प्रमुदित कही सुरराज। निर्भय भये हम आज ॥ ११५ ॥
दोहा–मेघनाद वध करि लषण, लह्यो अनंद अपार ॥
चले सदल रण भूमितें, कहि जैराम उदार ॥ ११६ ॥
हनूमान लंकेशके, कन्ध लषण धरि हाथ ॥
सिथिल गात शोणित सनो, चले सुमिरि रघुनाथ ॥११७॥
राम बन्धु विजयी मुदित, इंद्रजीत कहँ जीति ॥
सकल सेन युत आयकै, प्रभुपद गहे सप्रीति ॥ ११८ ॥
उठि रघुवर हिय लायकै, बैठारे निज गोद ॥
बहु सराहि सनमानिकै, कहे बैन भरि मोद ॥ ११९ ॥
महावीर हो इन्द्र जित, युद्ध प्रवीन निशंक ॥
ताको वध कीनो अनुज, जीति लई अब लंक ॥ १२० ॥
तीन रैनि दिनलों लषण, ठानो समर अभंग ॥
दुष्कर कृत कीनो अनुज, भयो सकल दुख भंग ॥१२१॥
यों रघुवर आनंद भरि, लिये बन्धुको अंक ॥
लषण वीरता सबहि प्रति, वर्णन करत निशंक ॥ १२२ ॥
ताही छिन श्रीराम ढिग, मेघनादको शीश ॥
लाये भट अवलोकिकै, मुदित ऋच्छ अरु कीश ॥ १२३ ॥
सो विशाल शिर तेजमय, निरखतहीं रघुनाथ ॥
कही धरो मर्याद युत, है सुवीरको माथ ॥ १२४ ॥
यों कहि पुनि लखि अनुजको, शोणित व्यथित शरीर ॥
श्रीरघुवर कोमल हृदय, भरि आये दृग नीर ॥ १२५ ॥
ताही छिन वर औषधी, वेगहि लाय सुखेन ॥
किये विरुज लषणहि सदल, तुरत लह्यो सब चैन ॥ १२६॥
अनुज सेन युत विरुज लखि, राघव भये अनंद
कीश भालु किय शोरबहुँ, जै जै जै रघुचंद ॥ १२७ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० मेघनादयुद्धवध
वर्णनो नाम पंचदशोविभागः ॥ १५ ॥

दोहा—सुनत दशानन पुत्र वध, धरणि गिरो मुरझाय ॥
हाय इंद्रजित वीर वर, कहि रोवत अकुलाय ॥ १ ॥
सकल निशाचर निश्चरी, करत विलाप अपार ॥
छयो शोर चहुँ लंकमें, आरत होत पुकार ॥ २ ॥
पुत्र मरन दुख दुसह लहि, छायो क्रोध अखंड ॥
लै कृपाण धायो सपदि, सिय वध हित खल चंड ॥ ३ ॥
बरजत धाये सचिव सँग, पहुँचो सियढिग जाय ॥
तिहि विलोकिकै मैथिली, भई सभय विलपाय ॥ ४ ॥
बहु मंत्री गण रावणहि, सविनय नीति बुझाय ॥
लाये सदन बहोरिकै, बैठारो समुझाय ॥ ५ ॥
इत दशमुख दुख रोष भरि, मंत्रिन मिलि विलपात ॥
उत सबतिय रोवैं विकल, बहु उर शीश धुनात ॥ ६ ॥
इत रण मध्य सु इंद्रजित, जबहि भयो महिपात ॥
तासु तीय तब महल उत, लखी अनोखी बात ॥ ७ ॥

दोवई छंद ।

नागसुता तिय इंद्रजीतकी है सुलोचना नामा ॥
परमरम्य सो दृढ़ पतिव्रता बैठी हुती सुधामा ॥
औचकही ता छिन शर छिंदित मेघनाद भुजभारी ॥
नभ मग आय परी तिहि सन्मुख विशद विभूषण धारी ॥ ८ ॥
उझकि उठी अकुलाय हेरितिय धाय वेगि ढिग आई ॥
निज पति भुज अनुमानि हाय करि गिरी धरणि मुरझाई ॥
घोर शोर करि रोवन लागी सखिन ताहि समुझाई ॥
तब स्वामी बल गुणि सुलोचना हिय कछु धीरज लाई ॥ ९ ॥
छिन भुज पेपि विकलहो छिन पति गुणहि सुमिरि रहि जावै ॥
[illegible]यो विचार नारि दृढ़ जाते सब संदेह मिटावै
[illegible]ुँ कर जोरि ध्यान धरि पतिपद वचन विनय युत बोली ॥
[illegible]ह बाहु तौ लिखौ भूमि जो हौं निज धर्म न डोली ॥ १० ॥
[illegible] भुज निज गति लिखी सकल महि लखि पियवध दृढ जानी ॥

करि विलाप बहु निरखि कु औसर पुनि धीरज उर आनी ॥
सत्य प्रेम पति धर्मधारिनी उठि धन वित्त लुटाई ॥
सहित बाहु तनु सजि शिविका चढि सखिन समेत सिधाई ११॥
दशमुख पास जाय बहु विलपत भाषे वचन कठोरा ॥
कहि बल पुत्रवधुहि समुझाई रावण सहित निहोरा॥
ताहि निदरि सो जाय सासु ढिग पगपरि कियो विलापा ॥
मंदोदरी गोदलै रोवै बढो हृदय संतापा ॥ १२ ॥
पुनि मयसुता बधू जियकी गति नेह धर्म लखि लीनी ॥
जाय लेहु रघुवरते पति शिर यों कहि शुभ सिख दीनी ॥
सासु रजाय पाय सो सखि गण संगहि वेगि सिधारी ॥
आय राम ढिग माथ नायकै मंजुल गिरा उचारी ॥ १३ ॥
प्रभु समर्थ उर अंतर्यामी मो रुचि पूरण कीजे ॥
हौं निज सत्य धर्म निरबाहौं याहित पति शिर दीजे ॥
नेह धर्म दृढ़ लखि रघुनायक तिहि सो शीश दिवायो ॥
उठि लै पियमस्तक सुलोचना हृदे सप्रेम लगायो ॥ १४ ॥
ताछिन हँसि कपीश यों बोले निश्चर माया भारी ॥
छिदित मृतकबाहु लिखि देवै यह मिथ्या गति सारी ॥
जोपै सत्य भुजा लिपि कीनी तोपै अब यह शीशा ॥
याछिन हँसै बात तब मानें नत प्रपंच सब दीशा ॥ १५ ॥
सुनि बोले रघुबर सुकंठ सों सखा न मिथ्या मानो ॥
लिखी भुजा सो सत्य बात अरु शिरहु हँसै दृढ जानो ॥
मो हिय ध्रुव प्रतीत याते यह है पतिव्रता नारी ॥
पतिव्रत धर्म प्रभाव अमित सो इती बात कह भारी ॥ १६ ॥
सुनि हियं अमरष सोच सकुच युत धरि सन्मुख पति माथा ॥
हँसो नाथ लज्जा मम राखो कही जोरि युग हाथा ॥
विनय करतही हँसो वेगि सो लखि सब अचरज आयो ॥
दशमुख पुत्र वधू हरषीलजि कपिपति शीश नवायो ॥ १७ ॥
पुनि सु राम लछमन लंकेशहि सविनय शीश नवाई ॥

लैशिर धरि शिविका अरूढ ह्वै वेगि लंक मधि आई ॥
सुथल उताल रचाय सविधि सर लै भुज शीश सुवामा ॥
ह्वै निशंक तनु दहो सपति सो गमन कियो सुरधामा ॥ १८॥
दोहा—मेघनाद बल वीरता, अरु सुलोचना धर्म।
देव अदेव सराहहीं, निरखि दुहूँ दृढ कर्म ॥ १९ ॥
लंकापति निश्चर सकल, विकल अधिक अकुलाय ॥
हाय हाय करि रोवहीं, इंद्रजीतगुण गाय ॥ २० ॥
कहत निशाचर निश्चरी, विलपि विलपि पछिताय।
हाय दशानन का कियो, डारी लंक नशाय ॥ २१ ॥
इहि विधि लंका मध्य सब, सोचैं निश्चर वृंद ॥
इत रघुबर दल माहिं चहुँ, छायो परमानंद ॥ २२ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० सुलोचना सत्य
वर्णनो नाम षोडशोविभागः ॥ १६ ॥

तोटक छंद।

दशकंठ सुमौन उसास भरै। घननाद बिना बहु सोच करै ॥
धरि धीर बहोरि विचार कियो। इत मोबिन है नहिं और बियो १॥
वर वीर जिते बहु लंक रहे। सब राम शरानल ज्वाल दहे ॥
अब है महिरावण आवहि सो। छलते बलते जय पावहि सो ॥२॥
इमि ठानि शिवालय माहिं गयो। जपि मंत्र महाबलिदान दियो ॥
तिहि सिद्धि प्रभाव उतालहिते। महिरावण आय पतालहिते ॥ ३॥
दशमाथहि वेगि मिलो सु तबै। तिहि ते वरणो तिन हाल सबै ॥
सुनिकै महिरावण रावणको। बहु धीर दई जै पावनको ॥ ४ ॥
पुनि यों अहिरावण बात कही। हरिलै हतिहों दुहुँ भ्रात सही ॥
जब राम सबंधु रहैं न यहां। तबही कपि भालु बचैं सु कहां ॥५॥
इक याम सु औरहु धीर धरो। पुनि धाय विजय निरसंक करो ॥
हरि दोउ पताल सिधावहुँगो। बलि देविहि जाय चढ़ावहुँगो ॥ ६॥
जब भूरि प्रकाश दशोंदिशिमें। दिनको सम देखि परे निशिमें ॥
तब जानि लियो ध्रुव काज भयो। अहिरावण लै दुहुँ बंधु गयो ७॥

इहि भांति बुझाय चलो खल सो। दशमाथ सहर्ष गयो थल सो॥
महिरावण आय उताल तहां। निरखी कपि सैन प्रबंध महा॥ ८॥
हनुमंत सुपुच्छ बढ़ाय घनी। चहुँ कोट कियो बिच मुख्य अनी॥
सुचमू मधि राम सुबंधु लसे। पुनि संनिध वीर सचेत गसे॥ ९॥
कपि ऋच्छ सुयूथप सैन लिये। सहचेत फिरैं चहुँ चक्र दिये॥
गति कीट पतंगहुकी न तहां। प्रभुके ढिग जाय सु और कहां १०॥
हनुमंत लँगूर सुकोट चहूं। नहिं काहु दिशा मधि पंथ कहूं॥
इक पौन तनै ढिग ते मग है। तितहूँ कपि रोपि रहो पग है॥ ११॥
महिरावण ठाम अगम्य लखो। तब रूप विभीषणको सुरखो॥
द्रुत पौन तनै ढिग जाय कही। कपि राघव जागत हैं कि नहीं १२॥
दुरि भेद लगावन लंक गयो। तिहिते मुहिं आज विलंब भयो॥
प्रभु पास जु वेगहि जावहुँ मैं। सब हाल इकंत सुनावहुँ मैं॥ १३॥
इमि भाषि चलो सु अनंद लहो। निज जानि कछू नहिं कीश कहो॥
हनुमंत भुलायगये छलमें। निरशंक सुजात भयो दलमें॥ १४॥

दोहा—जाय लखे सब दूरिते, राम लषण कपिराज॥
गज गवाक्ष लंकेश अरु, अपर समस्त समाज॥ १५॥
सहित प्रबंध सचेत बहु, शोभित सब सरदार॥
अपर पाहरू भालु कपि, निज निज ठौर हुस्यार॥ १६॥
सो लखि महिरावण तबै, काज समैं अनुमान॥
कीनो कामा देविको, मंत्र पठन युत ध्यान॥१७॥
सो निश्चरमाया विवश, सबही भये अचेत॥
छाई निद्रा घोर बहु, काहू कछू न चेत॥ १८॥
तब महिरावण राम ढिग, गयो निशंक उताल॥
जाय लखो दुहुँ बंधुको, तनुसुख तेज विशाल॥ १९॥
पुनि कीनो दोउनको, तंभन बगलामंत्र॥
प्रभु मर्यादा पाल सो, सब विधि भये निजंत्र॥ २०॥
माया करि इहि भाँतिसो, अहिरावण हरपाय॥
राम लषण हरिले गयो, नभ मग वेगि दुराय॥ २१॥

बहोरि बचे तहँ जे नर नारि । सुते बलवंत समस्त संहारि ॥ ४९ ॥
लिये दुहुँ बंधु सुकंध चढाय । चले हनुमंत अनंद बढाय ॥
प्रमोद भरे अवधेशकुमार । सराहत कीशहि बारहि बार ॥ ५० ॥
लखो पुनि द्वार प्रभंजन लाल । बँधो निज पुच्छहि सो कपिबाल ॥
दियो तब छोरि दया हिय लाय । कही इत राज करौ तुम जाय ५१ ॥
सुनी मकरध्वज तात रजाय । सहर्ष सुराज कियो तहँ जाय ॥
उतै दुहुँ बंधुहि कंध सुधार । गयो कपि वेगहि सैन मझार ॥ ५२ ॥
सुजै रघुवीर कही करि शोर । सुनो कपि भालु उठे चहुँ ओर ॥
लखे हनुमंतहि राम समेत । सचेत भये सब हे जु अचेत ॥ ५३ ॥
सहर्ष मिले हनुमानहि धाय । गहे दुहुँ बंधुनके सब पाय ॥
भयो अति आनँद सैन मझार । छयो चहुँ जय जय शोर अपार ५४ ॥
सुनो दशकंधर हाल समस्त । कियो बहु शोक भयो दुखग्रस्त ॥
कही पुनि तीय घनी विधि ताहि । सिया कहँ देहु सुमानत नाहि ५५ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० यु० महिरावण वध
वर्णनो नाम सप्तदशोविभागः ॥ १७ ॥

दोहा—महिरावण वध सुनि अतिहि, सोच विवश दशभाल ॥
खेद रोष युत प्रातही, आयो सभा उताल ॥ १ ॥
व्यग्रचित्त इत उत लखत, बैठो मौन उदास ॥
कर कपोल छिन शीश धरि, दृग भरि लेत उसास ॥ २ ॥
सो विलोकि बहु वीर वर, उठि बोले कर जोर ॥
होय रजाय सुजाय हम, समर करैं अति घोर ॥ ३ ॥
राम लषण प्रभु अनुज युत, सह सुकंठ हनुमान ॥
सबकर करि संहार पुनि, वेगि लखैं पदआन ॥ ४ ॥
सो सुनि हिय कछु धीर धरि, दशमुख आज्ञा दीन ॥
मुख्य वीर लै भूरि दल, साजि गमन द्रुत कीन ॥ ५ ॥
तिनहि निरखि कपि भालु भट, धाये तरु गिरि धार ॥
भयो समर अति घोर चहुँ, हाहा होत पुकार ॥ ६ ॥

प्राणआश तजि रैनिचर, परे अनी बिच धाय ॥
मारि विडारे भालु कपि, लिये घने गहि खाय ॥ ७ ॥
विकल भयो कपि ऋच्छ दल, भभरि भगे तजि धीर ॥
जाय पुकारे राम ढिग, पाहि पाहि रघुवीर ॥ ८ ॥
तब रघुवर धनु साजि द्रुत, धाय हने बहु बान ॥
राम नराचनते व्यथित, निश्चर दल बिचलान ॥ ९ ॥
पुनि धरि धीर सु रजनिचर, धाये एकहिं बार ॥
तिनहिं राम ते रामपर, किय बहु शस्त्र प्रहार ॥ १० ॥
राम गंधरव अस्त्र शर, छाँडो परम प्रचंड ॥
जाते कोटिन रजनिचर, होन लगे शतखंड ॥ ११ ॥
पुनि रघुवर कौतुक कियो, प्रगटे रूप अपार ॥
इक राक्षस प्रति राम इक, बाणन करत प्रहार ॥ १२ ॥

म० वा ॥ यु० का० ॥ स० ९४ ॥ श्लो० ॥

ते तु रामसहस्राणि रणे पश्यन्ति राक्षसाः ॥
पुनः पश्यन्ति काकुत्स्थमेकमेव महाहवे ॥ १ ॥

दोहा–यातुधान सो चरित लखि, चकित विकल अकुलाय ॥
बहुरि छिनक महि देखहीं, लरत एक रघुराय ॥ १३ ॥
यहि विधि श्रीरघुवीर वर, निश्चर सुभट जुझार ॥
युग घटिका पदहीन महि, किये सकल संहार ॥ १४ ॥
द्वै लख पदचर अयुत रथ, वसु दश सहस मतंग ॥
सहस चतुर्दश बाजि वर, इक इक यूथपसंग ॥ १५ ॥
इमि यूथप अति मुख्यवर, सहस कोटि बलधाम ॥
तिनहिं सदल पूरब कथित, वध कीने श्रीराम ॥ १६ ॥
निरखि विजय जय शोर भो, लखि प्रभुबाण प्रभाव ॥
चकित चित्त हनुमंत सों, बूझी निश्चरराव ॥ १७ ॥
कहो वीर रघुवीर शर, कढत तूनते एक ॥
कहा हेत सो जायकै, निश्चर हनत अनेक ॥ १८ ॥

निज सैन निहारी मुदित सुरारी कहत राम कह बाता ॥
दोऊ धनुधारी सह कपि झारी करिहौं आज निपाता ॥ ७ ॥
स्यंदन शत लक्षा गज दश लक्षा पदचर अगणित घोरा ॥
खर ऊंट तुरंगा सजे सुढंगा तीसहि तीस करोरा ॥
इमि सैन मझारा रथ असवारा दशमुख कीन पयाना ॥
ताछिन चहुँघाई परे लखाई अशकुन भये जु नाना ॥ ८ ॥
दोहा–इत रावण आगमन सुनि; कीश भालु वरि वंड ।
चले सजग ह्वै समरहित, लै तरु कुधर प्रचंड ॥९॥
उत रावण इत राम दल, प्रबल अभंग अपार ॥
चले दुहूँ दिशिते दुहूँ, सहि न सकै महिभार ॥ १० ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

स्यंदन सवार ह्वै अपार उत यातुधान कवच मढे हैं अंग नख शिख झंपि झंपि॥रसिकविहारी इत भालु कपि भारीभीर चलत चमूके धूरि पूरि भानु छंपि छंपि ॥ दोऊ दल भार भूमि डगमग होत चहूँ दिग्गज सु दब्बे पग्ग शुंडनते चंपि चंपि॥जोरते सहस्र शीश,जोरत फनीश तऊ बोझनते बार बार जात फन लंपि लंपि ॥ ११ ॥

चौपैया छंद ।

आवत दशशीशा लखि भट कीशा धाये करि अतिरीसा ।
सो कोपि विदारा कपि दल सारा गहि धनु शर भुजवीसा ॥
पुनि निश्चर नाना बहु बलवाना ऋच्छ प्लवंगम खाये ।
निज प्रभुबल पाई चहु दिशि धाई शत्रन मारि गिराये ॥ १२ ॥
सो लखि कपिराजा बल करि गाजा गहि तरु कुधर अपारा ॥
निश्चरन प्रहारैं हति महि डारैं मर्दत रिपुदल सारा ॥
करि क्रोध तमीचर कीशपनीपर वर्षहिं शस्त्र घनेरे ॥
ते सवधरि भंजे पुनि खल गंजे वालिबंधु चहुँ फेरे ॥ १३ ॥
सो०–निरखत निज दल शाल, विरूपाक्ष योधा प्रबल ॥
करि बहु कोप कराल, तजिरथ गज आरूढ भो ॥ १४ ॥

स्यंदनं ॥ मारहूँ समेत सेन आज राजनंदनं ॥ यों चलाय
वीस हथ्थ चाप वानलै ॥ घाल घाल तीर वीर वीरडार
देखि लंक ईश रीस कीश युद्ध तज्जिकै ॥ त्राहि त्राहि बोल्हीं
पास भज्जिकै॥जानिकै सुरारिचंड दोउ वंधु क्रुद्ध है ॥चाप वाण सा-
जिकै सुरारि भे निरुद्ध है॥२३॥विगते प्रचंड वाण दोउ वीर छंडहीं॥
यातुधान ईशके समस्त शस्त्र खंडहीं ॥ वीसवाहु वाहुलाववी चलै
न नेकहू ॥ कीन जे प्रहार ते बचे न तीर एकहू ॥ २४ ॥ फेरि
लंकपाल पै तजे प्रचंडवानजे ॥ सोउ खंडि खंडि कीन रेणुकी
समानते ॥ यातुधान वीरके सु अंगतीर छेदिगे॥दोउ भ्रात गातमें प्रचं-
डमंडभेदिगे ॥२५॥ कौशलाधिराज निश्चराधिराज क्रुद्धमें॥दोउभेनि
रुद्ध उद्ध वुद्ध अस्त्र युद्धमें ॥ लंकनाथ राम अस्त्र शस्त्र भंजि
डारहीं ॥ राजपुत्र तासु अस्त्र शस्त्रते सँहारहीं ॥ २६ ॥ सर्व अस्त्र
शस्त्रमें प्रवीन दोउ वीर हैं ॥ युद्धमें प्रबुद्धमें सु दोउ वीर धीर हैं॥काहु
के न अस्त्र काहु काहु पै प्रचंड भे॥ह्वै रहे समान जो अखंड खंड मंड
भे॥ह्वै रहे समान जो अखंड खंड मंडभे॥२७॥हेरिकै अनंत ह्वै सरोष
वाण छंडिकै ॥ सूत केतु चाप तासु डारि दीन खंडिकै॥तासमै विभी-
पणौ गदा प्रहार धायकै ॥ रथ्थ वाजि मारि दीन भूमिमें गिरायकै॥
॥२८॥ देखि सो सुरारि शक्ति बंधु पै प्रहारकीन॥ताहि भंजि वाणते
जु राम बंधु डारदी ॥ कोपि लंकनाथ यों अनंत सों तबै कही ॥ क्यों
बचै विभीपणै सु मृत्यु आपनी चही ॥ ३९ ॥ भापि यों सुरारि ब्रह्म-
दत्त शक्ति धारिकै ॥ कीन्ह सों प्रहार राम बंधु पै प्रचारिकै ॥ तासु-
भंग हेतु लै अनेक बाण तज्जही ॥ पै अभंग है उदंड शस्त्र नाहिं
भज्जही ॥ ४० ॥ शक्ति सो प्रचंड राम बंधु हीय छेदिगी ॥ पातमें
विहाल ह्वै सुभूमिं मध्य भेदिगी ॥ देखि भ्रात घात राम शोकसिंधु
[illegible] ॥ धीर धार औसरै विचार प्राण ऊबिकै ॥ ४१ ॥ वेगहीं
[illegible]र शक्ति भंजिकै वहाय दी ॥ भूरिभारचंड देवदत्तसों नशायदी॥
[illegible] सुराम शक्ति भंग की नतौ लगे ॥ शालि दीन लंकनाथ

बाण अंगसों लगे ॥ ४२ ॥ फेरि राम बंधुको सुखेन बोलि सौंपिकै॥ रावणै प्रहारकीन भूरि बाण कोपिकै ॥ लंकपाल वीर तीर शक्ति शूल घालही ॥ होत है बिहाल ह्वै सचेत शस्त्र शालही ॥ ४३ ॥ तासमै प्रचंड घोर शोर भो अपारही ॥ कीश भालु यातुधान मर्दिकै बेदारही ॥ औधनाथ लंकनाथ दोउ क्रुद्ध छै गये ॥ कै अराम कै अरावणै यही दृढै लये ॥ ४४ ॥ राम कोपि कोपिकै प्रचंडबान जे हने ॥ ते समस्त लंकनाथ गातमें बिधे घने॥ तासमै निशाचरेश हीयमें बिचारही ॥ हौं करौं जु युद्ध कोउ तीर ये निसारही ॥ ४५ ॥ ता समै जु रामचंद्र बंधुनेह लायकै ॥ कीन यों विचार भ्रात देखि आउँ धायकै ॥ फेर हौं सुरारिको सुरारि ठान मारहूं ॥ बेगि भंजि याहि भूमिभारको उतारहूं ॥ ४६ ॥ यों विचार ठानि रामबंधु पास धायगे ॥ देखिकै विहाल क्रुद्ध बुद्धिसों भुलायगे॥ तासमै सुलंकनाथ औसरै निहारिकै ॥ ह्वै अलक्ष गो उताल धामको सिधारिकै ॥ ४७॥

दोहा–जाय लंकपति लंकमधि, बैठो रहसि निकेत ॥
रामसायकन व्यथित सो, दीह उसाँस न लेत ॥४८॥
ताछिन तिहि मंदोदरी, समुझायो पुनि भूर ॥
कही कंत अजहूं भली, करो सकल हठ दूर ॥ ४९ ॥
सियहि साथ लै नाथ द्रुत, मिलहु जाय रघुनाथ ॥
जाते हों आनंद मय, प्रभुयुत रहों सनाथ ॥ ५० ॥
सुनि दशमुख मंदोदरिहि, गहि लाई निज अंक ॥
बहु विधि धीर धरायकै, कहे बैन निश्शंक ॥ ५१ ॥
हौं जानौं सब भामिनी, पै हैं अकथ सुभेद ॥
युद्धकियेही मोर भल, हूहै करो न खेद ॥ ५२ ॥
तब बोली तिय लखहु पिय, अब कह जयकी आश॥
कुंभकर्ण घननादसे, समरथ भये विनाश ॥ ५३ ॥
बंधु पुत्रको नाम सुनि, दशमुख भरि जलनैन ॥
पुनि बहु कोप बढायकै, भाषे उद्धत बैन ॥ ५४ ॥
हौं अबहीं द्रुत जायकै, करि मख गनिनिशार ॥

पुनि तुम जात काज सो जानौं ❀ सुनौ सत्य भवितव्य बखानौं
मरै लंकपति प्रभु जै पैहैं ❀ निश्चर नाथ विभीषण ह्वै हैं॥८३
सो सुनि कपि आनंद अघाना ❀ पुनि मुनि प्रति भाषी हनुमाना
तृषा विवश मो चित्त अधीरा ❀ आयसु होय पियौं शरनीरा॥८४
सो सुनि कही करौ जलपाना ❀ आवो वेगि कहौं कछु आना॥
गति भविष्य युत विशद चरित्रा ❀ कपि सुनि लैयो कथा विचित्रा८५
सुनि सानंद वेगि सर आई ❀ पैठि पियो जल सरस अघाई॥
ताछिन तहँ मकरी इक धाई ❀ गहि लीनो कपिपद बरियाई॥८६
कपि अकुलाय दाबि तिहिं दीनी ❀ भई मृतक सो परम मलीनी॥
पुनि वह दिव्य नारि वपुधारी ❀ गई गगनवर गिरा उचारी ॥८७॥
है कपि यह निश्चर मुनि नाहीं ❀ बैठो छलन हेतु तुम काहीं॥
सो सुनि हनूमान रिसलाई ❀ ह्वै करालवपु पुच्छ बढ़ाई ॥ ८८॥
ताहि लंगूर लपेटि उठाई ❀ करि बल पटको भूमि भमाई॥
कालनेमि भो मृतक तुरंता ❀ कियो गमन वेगै हनुमंता ॥ ८९॥
जाय देखि गिरिकीन विचारा ❀ हेरत औषधि लागै वारा॥
यौं गुनि कुधर वामकर धारा ❀ धाये नभपथ वेग अपारा ॥ ९०॥
मारग व्योम अवध ढिग आये ❀ प्रलै पौन सम वेग जु छाये॥
सो सुनि भरत उठे अकुलाई ❀ रैनि समय लखि नभ चहुँघाई९१
हेरो कछु न व्योम अँधियारा ❀ तब ताकि शब्दवेध शर मारा॥
बिन फल सायक लगत तुरंता ❀ गिरे भूमि नगयुत हनुमंता॥९२॥
गिरत कीश कह हा सिय रामा ❀ सुनि धाये भूपति बलधामा॥
कपिहि भरत बूझो लखि हाला ❀ सो सूक्षम सब कहो उताला ॥९३॥
सुनि कैकयीसुवन पछिताने ❀ सुमिरि लषण सिय प्रभु दुखसाने॥
कुसमय जानि धीर उरधारी ❀ गदगद कंठ सु गिरा उचारी॥९४॥

दोहा—व्यथित भये इहि हेतुते, गिरि युत अंजनिलाल ॥
उठि बैठो ममबाण पर, भेजौं अतिहि उताल ॥ ९५ ॥
सो सुनिकै कपि चकित ह्वै, मनमहँ कीन विचार ॥
लेइ परीक्षा किमि चलै, शर गिरि युत ममभार ॥ ९६ ॥

यों गुनि गिरि युत पवनसुत, बैठबाणपर आय ॥
तवहिं भरत शर धनुप धर, चाहो देहुँ चलाय ॥ ९७ ॥
लखि अपार बल भरतसों, कही वेगि हनुमान ॥
प्रभु न परिश्रम कीजिये, जैहौं बाण समान ॥ ९८ ॥
कपि हिय रुचि लखि भूप तव, दीनी वेगि रजाय ॥
लै गिरि कर कूदे गगन, भरत चरण शिरनाय ॥९९॥
उत रघुवर लखि लपणको, विलपत करत विचार ॥
रैनि चली आयो न कपि, कहा लगाई वार ॥ १०० ॥
नंदग्रामते तासमे, गिरियुत पवन कुमार ॥
नभमगः घटिका अर्ध मधि, आये सैन मझार ॥ १०१ ॥
लखि हनुमंतहि गिरि सहित, मुदित भये रघुचंद ॥
अपर भालु कपि सैन सव, लहो परम आनंद ॥ १०२ ॥
तव सुवैद्य लै औषधी, लपणहि सविधि सुँघाय ॥
करतहि सो अघ्रानके, उठे वीर हरपाय ॥ १०३ ॥
मिटे सकल व्रण तुरतहीं, दूर भई सव पीर ॥
विरुजहेरि वर वन्धु वहु, सुखपायो रघुवीर ॥ १०४ ॥
प्रेम सहित वर अनुजको, लीनो अंक लगाय ॥
पुनि वोले हनुमंत सों, ह्वै अधीन रघुराय ॥ १०५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

प्रथम सुकंठ ते मिलायो सिंधु नांघो सीय शोधी दल ल्यायो निज नैनन निहारो मैं ॥ रसिकविहारी महिरावण ते लायो इमि भूरि सबही ते यह अधिक विचारो मैं ॥ तुव उपकारहुँ अनेक प्राण पंच एक प्रति उपकार हेत सो तौ वारि डारो मैं ॥ येहो हनुमान वल वानहौं वखानौं सत्य आज ते रहौं गो सदा ऋणिया तिहारो मैं १०६

प्र० ॥ हनुमन्नाटक ॥ श्लोक ॥

एकैकस्योपकाराणां प्राणान्दास्यामि ते कपे ॥
शेषस्येहोपकाराणां भवाम ऋणिनो वयम् ॥ १ ॥
दोहा–सुनि प्रभु वैन समीरसुत, गहे राम पद धाय ॥
करी विनय वहु राजसुत, कपिहि लियो उर लाय १०७ ॥

पुनि रघुवीर सुखेन को, कीनो मान वखान ॥
वहुरि हिये रुचि जानिकै, दियो अभै वरदान ॥ १०
पुनि प्रभु रुख लखि पवनसुत, गिरि अरु सगृह सुषे
निज निज थल दुहुँ धरि तुरत, आय गये मधि सैन
अपर भालु कपि जे रहे, पीड़ित मृतक शरीर ॥
शैल पवनके परशते, विरुज उठे सब वीर ॥ ११० ॥
उठि बोले सब राम जै, जैति लपण वर जोर ॥
जै कपीश हनुमंत यों, करैं भालु कपि शोर ॥ १११
रसिकबिहारी मुदित अति, रहे सकल सुख पूर ॥
राम कृपा ते ह्वै गये, तन मनके दुख दूर ॥ ११२ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० रावणयुद्धकालनेमि वध वर्णनो नाम एकोनविंशोविभागः ॥ १९ ॥

दोहा—रैनिसमै उत दशवदन, कालनेमि पठवाय ॥
करनलगो मख सविधि वर, वेगि यज्ञ थल जाय ॥ १
यज्ञ करतही कपिनको, सुनो सु जै जै शोर ॥
जानि गयो लै औषधी, आयो कपि वरजोर ॥ २ ॥
ताही छिन चर आय कै, वर्णन कियो समस्त ॥
सुनि रजाय दीनी तबै, वर दल सजै प्रशस्त ॥ ३ ॥
मध्य दिवस अभिजित समै, संयुत सकल सुसाज ॥
मख पूरण करि वेगही, चालि हति हौं रघुराज ॥ ४ ॥
यों रजायदैके सविधि, करन लगो मख फेर ॥
मद आमिष अज कृष्ण युत, मंत्रन आहुति गेर ॥ ५ ॥
उत निश्चर साजन लगे, वाहन कवच हथ्यार ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, लंका नगर मझार ॥ ६ ॥
निज निज दल सजि यूथपति, जुरन लगे सब आन ॥
रंग रंग फहरात ध्वज, गर्जत घुमरि निशान ॥ ७ ॥
ताछिन भेद मँगाय कै, वेगि विभीषण जाय ॥
कही रामसों मख करै, याछिन निश्चरराय ॥ ८ ॥

सो प्रभु वेगि पठाइये, हनुमानादिक वीर ॥
करैं जाय विध्वंस मख, छूटै दशमुख धीर ॥ ९ ॥
मध्य दिवस मधि धायहै, समर हेत मम भ्रात ॥
याते मख विध्वंस भल, अबहीं समय प्रभात ॥ १० ॥
सुनि रघुवीर सुकंठ सों, कही वेगि भट जाय ॥
करैं लंकपति यज्ञ सो, डारैं सकल नशाय ॥ ११ ॥
सो०—ताही छिन कपिराज, ऋच्छराजके संग करि ॥
भट कपि भालु समाज, भेजे समर सुधीर बहु ॥ १२ ॥
चले सुभट कपि ऋच्छ, हनुमानादि प्रवीन अति ॥
सकल युद्ध गति शिच्छ, अस्त्र शस्त्र निर्भय निपुण ॥१३॥
समर बाजने घोर, बजत शोर चहुँ नगरमें ॥
भालु कीश बरजोर, ह्वै सकोप धाये सपदि ॥ १४ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

डंकाकी धुकार सुनि लंकामें सुहंका करि कूदे कपि भालु दै फलंका भिरे जूटि जूटि ॥ निरखि निशंका रजनीचर सशंका भये बंका बीर हाथते हथ्यार गिरे छूटि छूटि ॥ रसिकविहारी कहै राम जै उतंका सबै ढंका दै ढहाये भौन भंका परे टूटि टूटि ॥ शोणित की पंका पाय छंका काक कंका धाय धाय खाय रंका औ मलंका धरें लूटि लूटि ॥ १५ ॥

तोमरछंद।

इमि भालु कीश प्रचंड। करि प्रबल रिपु दल खंड ॥
गे यज्ञशालहि धाय। देखो मुनिश्वरराय ॥ १६ ॥
चहुँ बहु प्रबंध समेत। मख करत बैठ निकेत ॥
लखि भालु वानर धाय। भट भिरे निश्चर आय ॥ १७ ॥
शर शक्ति परिघ कृपान। द्रुम उपल मुग्र अरु जान ॥
दुहुँ ओर होत प्रहार। भट गिरत भूमि मझार ॥ १८ ॥

अमृतध्वनिछंद।

उद्धत मरकट विकट भट झपट तर पट उछह ॥
हिय हरपत धरपत खल न दरसत बरपत मह ॥

मल्लन गंजत भल्लन भंजन हल्लन करि करि ॥
लथ्थन रद्दत मथ्थन मद्दत हथ्थन धरि धरि ॥
कट्टत दंतन फट्टत अंतन दट्टत रुद्दत ॥
भज्जत रिपु वल छज्जत कपि दल गज्जत उद्धत ॥ १९ ॥

तोमरछंद।

मि सकल दल विनशाय। कपि भालु पुनि रिस लाय ॥
खशाल दीनढहाय। नहिं उठो निश्वरराय ॥ २० ॥
ढ़ि मंत्र आहुति देत। सो अनत चित्त न देत ॥
ब पौननंदन कूदि। गहि लियो तिहि मुख मूंदि ॥ २१ ॥
लि चरणते सब साज। कीनो सुघोर गराज ॥
नि अपर ऋच्छ सुकीश। धाये चहूं करि खीस ॥ २२ ॥
देय अनल कुंडहि फोरि। साकल्य सकल विथोरि ॥
ल मूत्र करि करि भूर। सो यज्ञ थल चहुँ पूर ॥ २३ ॥
नि वीर वर हनुमान। तिहि हनो इकतल तान ॥
त धाय कुपित रिछेश। गहि लीन दशमुख केश ॥ २४ ॥
वण तबै अकुलान। गहि लीन दुहुँ बलवान ॥
द पकरि पटकन चाह। तब तिन मरोरं सुबाँह ॥ २५ ॥
ज मुरत तिन दिय छोरि। ते दंत नखत न छोरि ॥
हँते उछलि प्रभुपास। आये सदल सहुलास ॥ २६ ॥
शकंठ किय अनुमान। अब नाहिं बचै मम प्रान ॥
नि धीर धरि बलवंत। लै विशिख शस्त्र अनंत ॥२७॥
नु वसन भूषण धार। स्यंदन भयो असवार ॥
चतुरंग सैन अपार। लै चलो उत्तर द्वार ॥ २८ ॥
तेहि समय मधि चहुँ ओर। बहु होत अशकुन घोर ॥
कालवश दशभाल। तिन निदरि जात उताल ॥ २९ ॥
दोहा–गिरो गिद्ध ध्वज यान पर, अरु इकश्वेतकबंध ॥
रुधिर सिक्त महि पतन भो, लखो निकट दशकंध ॥ ३० ॥
शोणित बरपो व्योम ते, भयो भूर भू कंप ॥

घोर पवन रजते तबै, गई दशो दिश झंप ॥ ३१ ॥
विज्जुपात भो मेघ विन, प्रगटी पावक ज्वाल ॥
मृग लोवा अरु श्वान खर, रोदन करत शृगाल ॥ ३२ ॥
पंथ चलत महि अरुझिकै, गिरैं यान भट भार ॥
वहुरि आपही ते सहज, करते खसे हत्यार ॥ ३३ ॥
चलैं न वाहन रुकत सव, पुनि भट मुख रति हीन ॥
दीन चित्त गदगद गिरा, भये अंग वल छीन ॥ ३४ ॥
विन घन झंपो भानु नभ, फरक वाम भुज नैन ॥
पुनि पुनि वोलहिं लूक अरु, शिवा सृगाल डरै न ॥ ३५ ॥
पल आहारी द्विज फिरैं, ऊपर मंडल वाम ॥
पुनि दक्षिण मुख केतु पर, वैठो गिद्ध निकाम ॥ ३६ ॥
घोर गर्जना मेघ कर, पशुरथ त्यागि परात ॥
कसा सारथी हाथते, वाहत भो महिपात ॥ ३७ ॥
गिरो ध्वजा रथ शिखर महि, वाहन दृग जल जात ॥
गर्दभ दरशो क्रूर स्वर, सन्मुख शोर करात ॥ ३८ ॥
सन्मुख आयो रिक्त घट, शुष्क काष्टको भार ॥
तिय विधवा अरु नग्न गज, रुदन करत शिशु चार ॥३९ ॥
विप्र लखो इक नैन को, तेलकार चटकार ॥
तीन मिले ब्राह्मन वहुरि, रोवत तिया अपार ॥ ४० ॥
वहु पक्षिगण पल भषी, शीशन पै मडरात ॥
चुंच हनत वैठत भजत, वाहन भभरि परात ॥ ४१ ॥
इनहि आदि अशकुन विविध, लखे सुरारि प्रवुद्ध ॥
सो न गिनै कछु मृत्युवश, भो अवुद्ध भरि क्रुद्ध ॥ ४२ ॥

तोमर छंद।

इमि यातुधान प्रचंड। करि कढे शोर उदंड ॥
सव करत जै दशमाथ। जै जैति निश्चरनाथ ॥ ४३ ॥
लखि दूरिते रिपु सैन। कह राम राजिव नैन ॥
इहि लंक नगर मझार। इ वीर को नहिं पार ॥ ४४ ॥

सो सुनि कही रघुवीर। हे लंकपति छल वीर॥
क्यों करहु मिथ्यहि गर्व। है विदित तव बल सर्व॥ ५९॥
जब हरी सीतहि चोर। तब गयो बल किहि खोर॥
अब करत बात बढ़ाय। निज सुयश निज मुख गाय॥ ६०॥
हौं आज दृढ प्रण ठान। नहिं बचहि अब तव प्राण॥
हो सकल छलबल जौन। दरशाव वेगहि तौन॥ ६१॥
दोहा-राम वचन सुनिकै तबै, हँसिभाखी दशमाथ॥
हौं याही हित ठानिकै, युद्ध करों तुव साथ॥ ६२॥
हों साँचो रावण जु पै, हो साँचे तुव राम॥
दुहुँ प्रभाव साँचो अबै, लखो परै इहि ठाम॥ ६३॥
कै हौं तुमहिँ सँहारिकै, अवहीं होत विशोक॥
कै रणमें तनु त्यागि कै, बसों जाय सुरलोक॥ ६४॥
सो०-तब सुनिकै रघुनाथ, भाषी मृदु मुसक्यायकै॥
तुव छल निश्चरनाथ, हौं जानो सब हीय को॥ ६५॥
याते तुव रुचि जोय, समर मरनकी है सु अब॥
वेगहि पूरित होय, जों न जाहु रणभूमि तजि॥ ६६॥

तोमर छंद।

सुनि राम वैन मुरारि। करि क्रोध वंक निहारि॥
करि वेगि धनु शर धारि। धायो प्रचंड प्रचारि॥ ६७॥
किय अमित वाण प्रहार। भंजे सु राजकुमार॥
तिन खंडि अतिहि उताल। सायक तजे रघुलाल॥ ६८॥
लाघव दशानन वीर। खंडित किये सब तीर॥
इमि दोउ दुहुँ बलवान। हठि हनत अगणित बान॥ ६९॥
तिहि समय युद्ध निहार। चहुँ होत जैति पुकार॥
सुरपाल यह चित दीन। हैं राजसुत रथहीन॥ ७०॥
तब मातलीहि बुलाय। दीनी उताल रजाय॥
तुम वेगि मम रथ साज। लै जाहु ढिग रघुराज॥ ७१॥
सुनि सूत सहित उमंग। सजि रथहि हरित तुरंग॥
बहु शस्त्र विशद विशाल। भेजे प्रभुहि सुरपाल॥ ७२॥

पुनि भूरि अचरज और। देखो परै इहि ठौर ॥
जैसे नशे रण माहिं। तैसे बहुरि दरशाहिं ॥ ४५ ॥
सुनि राम बैन उताल। भाषो बिभीषण हाल ॥
कह लंकपति पुनि ईश। है एक इक दशशीश ॥ ४६ ॥
अरु भूरि निश्चर आन। बहु रूप नाम समान ॥
हैं एक सरिस अनेक। जिन माहिं भेद न नेक ॥ ४७ ॥
इमि लंकपति रघुराज। कह निरखि लंक समाज ॥
ताछिन भयो अतिशोर। धाये निशाचर घोर ॥ ४८ ॥
सो सुनि उठे रघुनाथ। सजि वेगि धनु शर भाथ ॥
लछमनहु चाप निषंग। धारण लगे निज अंग ॥ ४९
सो लखि कही रघुराज। तुम युद्ध करहु न आज ॥
सुनि बंधु कह कर जोर। यह नाथ धर्म न मोर ॥ ५० ॥
बोले बहुरि रघुवीर। हौ बंधु अति रणधीर ॥
पै हौं करौं प्रण आज। ध्रुव हतौं निश्चरराज ॥ ५१ ॥
याते सु जाय अकेल। हौं करौं युद्ध सकेल ॥
हैं भालु कपि बहुवीर। हनुमंत आदिक धीर ॥ ५२ ॥
उत सदल इक दशमाथ। इत सदल इक रघुनाथ ॥
जो लरिय मिलि दुहुँ भाय। तो आज उचित न आय ॥
इमि राम दृढ़ प्रण ठान। किय गमन सजि धनुवाण ॥
भट कीशभालु अपार। धाये कुधर तरुधार ॥ ५४ ॥
रामहि निरखि दशभाल। करि बीस लोचन लाल ॥
सन्मुख सु आय उताल। बोलो सकोप कराल ॥ ५५ ॥
हे राजसुत रणधीर। हौं भानुवंश सुवीर ॥
पुनि अस्त्र शस्त्र प्रवीन। सब भाँति हौं लखि लीन ॥ ५६
पै मोर रावण नाम। जानो भली विधि राम ॥
हौं तुमहि अब यमलोक। पठवाय होत विशोक ॥ ५७ ॥
याते प्रथम तुम भूर। करि लेहु निज बलपूर ॥
अभिलाप तुव न रहाय। तब लखो मम बल आय ॥ ५८

सो सुनि कही रघुवीर। हे लंकपति छल वीर॥
क्यों करहु मिथ्यहि गर्व। है विदित तव बल सर्व॥ ५९॥
जब हरी सीतहि चोर। तब गयो बल किहि खोर॥
अब करत बात बढ़ाय। निज सुयश निज मुख गाय॥ ६०॥
हौं आज दृढ प्रण ठान। नहिं बचहि अब तव प्राण॥
हो सकल छलबल जौन। दरशाव वेगहि तौन॥ ६१॥
दोहा–राम वचन सुनिकै तबै, हँसिभाखी दशमाथ॥
हौं याही हित ठानिकै, युद्ध करौं तुव साथ॥ ६२॥
हों साँचो रावण जु पै, हो साँचे तुव राम॥
दुहुँ प्रभाव साँचो अबै, लखो परै इहि ठाम॥ ६३॥
कै हौं तुमहिँ सँहारिकै, अवहीं होत विशोक॥
कै रणमें तनु त्यागि कै, वसों जाय सुरलोक॥ ६४॥
सो०–तब सुनिकै रघुनाथ, भाषी मृदु मुसक्यायकै॥
तुव छल निश्चरनाथ, हौं जानो सब हीय को॥ ६५॥
याते तुव रुचि जोय, समर मरनकी है सु अब॥
वेगहि पूरित होय, जों न जाहु रणभूमि तजि॥ ६६॥

तोमर छंद।

सुनि राम बैन सुरारि। करि क्रोध वंक निहारि॥
करि वेगि धनु शर धारि। धायो प्रचंड प्रचारि॥ ६७॥
किय अमित बाण प्रहार। भंजे सु राजकुमार॥
तिन खंडि अतिहि उताल। सायक तजे रघुलाल॥ ६८॥
लाघव दशानन वीर। खंडित किये सब तीर॥
इमि दोउ दुहुँ बलवान। हठि हनत अगणित बान॥ ६९॥
तिहि समय युद्ध निहार। चहुँ होत जीति पुकार॥
सुरपाल यह चित दीन। हैं राजसुत रथहीन॥ ७०॥
तब मातलीहि बुलाय। दीनी उताल रजाय॥
तुम वेगि मम रथ साज। लै जाहु ढिग रघुराज॥ ७१॥
सुनि सूत सहित उमंग। सजि रथहि हरित तुरंग॥
बहु शस्त्र विशद विशाल। भेजे प्रभुहि सुरपाल॥ ७२॥

सो सहित स्यंदन लाय। रघुवीरही शिरनाय॥
करि विविध अस्तुति गूढ। कह होउ प्रभु आरूढ॥७३॥
सुनिकै प्रदक्षिण लाय। पुनि रथहि शीश नवाय॥
बैठे सु दशरथ लाल। युत कवच शस्त्र विशाल॥७४॥
तिहि समय व्योम मझार। सुर लखत समर अपार॥
रामहि रथी अविलोक। भे सकल भक्त विशोक॥७५॥
दशवदन हेरि रिसान। शर छाय दशहु दिशान॥
दिय राम स्यंदन झंप। तिहि समय भो महि कंप॥७६॥
तब आग्नि शर रघुवीर। तजि किये भस्म सु तीर॥
कपि भालु चहुँ दिशि धाय। दिय अपर दल विचलाय॥७७॥
पुनि यातुधान प्रचंड। गहि विविध शस्त्र उदंड॥
कीशन सु ऋच्छन मार। तरु कुधर तेउ प्रहार॥७८॥
भिरि राम रावण वीर। वर्षहिं अपार सु तीर॥
तिहि समय दुहुँ दल युद्ध। अति होत अनुपम उद्ध॥७९॥

घनाक्षरी–कवित्त।

ठोंकि भुज दंड वीर प्रबल प्रचंड भिरे उद्धत विरुद्ध रुद्ध क्रुद्ध दल दंडि दंडि। अट्टत सुभट्ट औ दपट्टत उचट्ट चट्ट भट्टन के ठट्ट कट्टत हैं खंडि खंडि। हथ्थ लथ्थ हथ्थनते मथ्थ गथ्थ [illegible] मथ्थत समथ्थ पथ्थलेत रथ छंडि छंडि। रसिकविहारी राम जैति जै उदंड शोर छावै नवखंड नभमंडलमें मांडि मंडि॥८०॥

टिकत न वीरनके प्राण रण भूमि मध्य क्रुद्ध वुद्ध रुद्ध उद्ध युद्ध [illegible] गये अवा॥ इष्ट वल पाय फेरी प्रबल वरिष्ठ भिरे झुंड झुंड रुंड मुंड गिरत दुहूँ जवा॥ यातुधान कपिन कपिंद गहि यातुधान भंजत भं[illegible] माय फारि फेकत अनी नवा॥ चारहू दिशान वान वरपत आन आन रसिकविहारी झरि लाई हैं मनो मवा॥८१॥

दंडक।

दोउ दल उद्ध यों क्रुद्ध अवरुद्ध ह्वै कराहिं वहु युद्ध नाहिं शुद्ध [illegible] प्रानकी॥ दंत कट कटत भट भालु मर्कट विकट कटत फिरि अ[illegible]

जै रटत बलवानकी ॥ गजन गज मर्दके रथन रथ गर्दके बाजि बाजीन हनि शस्त्र शस्त्रन दलैं ॥ रुंड रुंडन झटकि मुंड मुंडन पटकि झुंड झुंडन झटकि चापि कर पद मलैं ॥ ८२ ॥ रैनिचर चंड शर शक्ति कर खंडते कीश ऋच्छन सु उद्दंड खंडित करैं । उच्छलत पुच्छ गुच्छाहि धरि धरणिमें पटकि तिन पट्ट शिर कट्ट प्राणन हरैं ॥ होत यों समर थर हरत धर धर धरा रुधिर धारा तबहिं धरणि नहिं मात्रहीं॥शीश कर चरणके ढेर चहुँ फेर ते वहुलरनभूमिमें मेरुसे छावहीं ॥८३॥ खग्गगण मुदित नभ मग्ग ह्वै धायके मुंड कर पग्गले सग्ग उडि भग्गहीं ॥ योगिनी वृंद सानंद नच्चैं सुभारिखप्परन रुधिर करि पान अनुरग्गहीं ॥ शोर चहुँ वोर छाई कबंधन धरा छिनहि छिन उठत फिरि गिरत लरि गज्जिकै ॥ प्रबल निश्चरन दल दलत कपि ऋच्छ भट सबल अरु अबल भज्जत समर तज्जिकै ॥ ८४ ॥ यातुधानेश लखि सबल दल विचल निज भालु कपि छलन हित प्रबल माया ठनी ॥ अमित हनुमंत सुग्रीव अंगद लपण प्रगटले आपनी आप वालैं अनी ॥ ऋच्छ वानर भये चकित तव रैनिचर निधन किय तिनहिं अवकाश लहि ता घरी ॥ वीर रघुवीर सो हेरि अति वेगही एकही तीर ते सकल माया हरी ॥ ८५ ॥ फेरि वहु कोपि कै धाय रथ लाय ढिग राम निज चंड कोदंड मंडित लियो ॥ सायकन घाल बलशाल दशभालको सहित धनुवाण तनत्राण खंडित कियो ॥ क्रोध भरि चाप लै आन तिहि तान कै लंकपति अमित शर आतुरी ते हने ॥ सर्व रघुवीर ते तीर निज तीर ते भंजि पुनि तासु तनु तीर वेधे घने ॥ ८६ ॥

हरिगीतिका छंद ।

तव क्रोध भरि दशभाल ठानो अस्त्र युद्ध अपार सो ॥
रघुवीर ते सब भंजि डारे कीन अमित प्रहार जो ॥
पुनि लंकपति शतवाण मारे भो विकल सुर सारथी ॥
कर धार तिहि वेगै उठायो रामचंद्र महारथी ॥ ८७ ॥
जो लग उठायो राम सूतहि दशवदन तौलग घने ॥
शर घालि रथको केतु काटो वेगि चहुँ वाजी हने ॥

लखिके तुरंगहु राजपुत्र सँभारि स्यन्दनमें सजे ॥
ताही समै भुजवीस राघव गात पै बहु शर तजे ॥ ८८ ॥
रघुवीर कछु दुख पाय पुनि ह्वै सजग बाणन खँडिकै ॥
रथ सारथी ध्वज बाजि तासु नशाय डारे खंडिकै ॥
द्रुत आन स्यन्दन बैठि घालो घोर शूल प्रचारि कै ॥
रघुवीर सुरपति शक्ति छोडी भस्म दुहुँ दुहुँ जारिकै ॥ ८९ ॥
पुनि क्रोध कर शरतीस वेधे वीस भुज दशशीशमें ॥
तब भये अंतरधान निश्चर ईसभरि बहु रीसमें ॥
रहि गुप्त घाले बाणवर बहु व्योमतें आवन लगे ॥
ते विविध रूप कराल भालु कपीन चहुँ खावन लगे ॥ ९० ॥
ह्वै बाण शूकर सिंह श्वान शृगाल अहि गज धावहीं ॥
मारत पछारत भखत मर्दत सकल सैन नशावहीं ॥
पुनि वृष्टि कीन अपार सिक्ता उष्ण सब व्याकुल भये ॥
फिर लागि बरषै आगि सब भट भागि प्रभु शरणै गये ॥ ९१ ॥
द्रुत वरुण अस्त्र चलाय राघव सकल छल किय दूरसो ॥
पुनि वीर विद्या आसुरी प्रगटी दशानन भूर जो ॥
बहु भूत प्रेत पिशाच योगिनि खड्ग खप्पर धारिकै ॥
चहुँ ऋच्छ कीशन भक्षिवे हित धावहीं मुख फारिकै ॥ ९२ ॥
तिन देखि वानर ऋच्छ इतर बिहाल डारि डारि भाजहीं ॥
हनुमंत आदिक वीर ते बहु मर्दि मर्दि सु गाजहीं ॥
पुनि अपर माया कीन दशमुख पवनसुत प्रगटे घने ॥
ते धारि तरु गिरि उपल रामहिं धाय चहुँ दिशि ते हने ॥ ९३ ॥
रणधीर श्रीरघुवीर पावक तीर सपदि चलायके ॥
माया हरी सब निरखि दौरे सुभट हिय हरपायके ॥
तरु शैल हनि हनि निश्चरन पुनि भालु कपि गंजन लगे ॥
दंतन नखन तल मुष्टि लातन कोपकारि भंजन लगे ॥ ९४ ॥
भट विकट मर्कट ऋच्छ युद्धत क्रुद्ध ह्वै उद्धत महा ॥
अब करहु निश्चर हीन लंक निशंक यों सबही कहा ॥

तिय पुरुष बालक तरुण वृद्ध सु यातुधान न छंडिये ॥
जे नगर अरु रण मध्य होवैं वेगि ते सब खंडिये ॥ ९५ ॥
ताछिन दशानन आय प्रगटो रूप कोटिन धारिकै ॥
चहुँधाय लच्छन कीश ऋच्छन करत भच्छन मारिकै ॥
इक एक वानर भालुपे इक एक रावण धावही ॥
धर मार फार पछार यों बहु घोर शोर मचावही ॥ ९६ ॥
तिहि समय राम सुकंठ हनुमत अंगदादिक वीरजे ॥
करि कोप बहु दशमुखनको भंजैं निशंक सुधीरते ॥
सुरवृंद निरखि अनेक रावण विकल ह्वै वागन लगे ॥
लै लै विमानन हाय करि करि व्योमते भागन लगे ॥ ९७ ॥
तब सुरन व्याकुल जानि राघव प्रबल अस्त्र प्रहारिकै ॥
इक बाणते दशकंठके सब रूप लोपे जारिकै ॥
सो हेरि बहुरे देव प्रमुदित छाय नभ जै जै करी ॥
अवलोकि धायो व्योम दिशि बहु कहत वाणी रिसभरी ॥९८॥
रे खलहु तुम कहँ एकही में कोटि सम आयो अबै ॥
पुनि करत हाहाकार नभते देवगण भागे सबै ॥
तब कूदिकै कपि वीर अंगद ताहि पदगहि जोरतें ॥
झकझोरि वेगहि भुमिडारो खैंचिकै नभ ओरते ॥ ९९ ॥
पुनि उछलि अंगद वेगि रघुवर पास पहुँचे जायकै ॥
दशकंठ उठि रथ बैठि धायो कुपित चाप चढायकै ॥
हनिबाण अगणित रामको तनु त्रान खंडित कीन सो ॥
तब वीर रघुवर शरनते किय तासु दशशिर छीनसो ॥ १०० ॥
शिर गिरत दशहू और नूतन फेरि प्रगटे तसही ॥
सोऊ विभंजे राम सबही बहुरि उपजे वसही ॥
इमि रामशर शतवार खंडे माथ दश दशमाथके ॥
ते कटत होत नवीन लखि हिय आचरज रघुनाथके ॥ १०१ ॥

अ० रा० ॥ यु० कां० स० १०९ ॥ श्लोक० ॥

रावणस्य शिरोच्छिद्यच्छ्रीमज्ज्वलितकुंडलम् ॥ तच्छिरः पतितं भूमौ दृष्टं लोकैस्त्रिभिस्तदा ॥ ११ ॥ तस्यैव सदृशं चान्यद्रावण-

स्योत्थितं शिरः ॥ तच्छिन्नं क्षिप्रहस्तेन रामेण क्षिप्रकारिणा ॥ २ ॥
द्वितीयं रावण शिरश्छिन्नं संयति सायकैः ॥ छिन्नमात्रं च तच्छीर्ष
पुनरेव प्रदृश्यते ॥ ३ ॥ तदप्यशनिसंकाशैश्छिन्नं रामस्य सायकैः ॥
एवमेवं शतं छिन्नं शिरसां तुल्यवर्चसाम् ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

पद्धरीछंद ।

शिर कटत फेरि प्रगटात और । भो मुदित लंकपति निरखि डौर ॥
हौं अमर सत्य दृढ ठान लीन । यों गुणि निशंक पुनि युद्ध कीन १०२
सुर कीश भालु लखि सकलत्रस्त । सुनि भई जानकी शोकग्रस्त ॥
निश्चर समस्त आनंद छाय । रंण रुपे वोलि जे लंकराय ॥ १०३ ॥
रावण सकोप शर तान तान । रामहिं प्रहार कर आन आन ॥
रघुवीर सर्व करि खंड खंड । वालत अपार इषु चंड चंड ॥ १०४ ॥
प्रभु निकट विभीषण शस्त्र धार ॥ रथ संग धाय निश्चरन मार ॥
लखि कुपित होय दशमुख उताल। गरु भूर शक्ति घाली कराल १०५
लखि वेगि राम ह्वै अग्र आप । झेलीस्वहीय सो शक्ति दाप ॥
निज गुणि विभीषणै अभय कीन। दृढ शरणपाल प्रण राखि लीन १०६
सो शक्ति हीय वेधी कराल । मुर्च्छित कछूक भे नृपति लाल ॥
लै गदा विभीषण कोप धार । तुरधाय भ्रात उर किय प्रहार॥ १०७ ॥
दशकंठ व्यथित गिरि धरणि माहिं। पुनि उठिपछारि तिहि पकरि वाहिं॥
सो सँभरि फेरि भिरि कीन युद्ध । दुहुँ क्रुद्ध वृद्ध अवरुद्ध उद्ध १०८ ॥
भे कछुक विभीषण श्रमित अंग । हनुमंत वीर हेरो सु ढंग ॥
घालो प्रचंड गिरि धाय गाजि । डारे नशाय रथ सूत वाजि ॥ १०९ ॥
दशमुखहि कीन पुनि पद प्रहार । सो त्यागि बन्धु कहँ रोषधार ॥
धायो सुकीश परजंग जोम । हनुमान वेगि कूदे सु व्योम ॥ ११० ॥
उच्छलत लंकपति पकरि पुच्छ । भापी सु खैंचि कहँ जाहि तुच्छ ॥
वरवीरकीश भुजवीश युक्त । गो गगन सो न लंगूर मुक्त ॥ १११ ॥
दुहुँ भिरे वरिनभ अंतारिक्ष । हैं सवल सर्व रण रीति शिक्ष ॥
करि कोप एक एकहि प्रहार ।नाहिं गिरत कोउत न बल अपार ११२

तब सुमिरि राम कपि कीन घात। भो विकल भूमि दशवदन पात ॥
तहँ आय कीश पुनि किय प्रहार। सो सँभारि फेरि हनुमतहि मार११३
बजरंग कोपि तिहि मुष्टघाल। भो लगत लंकपति कछु विहाल ॥
तिहि समय कूदि कपि कुधरधार। चहुँ धाय धाय निश्चरन मार११४
दशमौलि सजग ह्वै आनरथ्थ। द्रुत ह्वै अरूढ़ धनुवाण हथ्थ ॥
धायो कपीन भंजत उताल। तिहि समय क्रोध भरिऋच्छपाल११५
तिहि लात घात कीनो प्रचंड। मुरझाय गिरो भो चापखंड ॥
दशमुखहि सारथी विकल हेरि। गहि भुज विठाय रथ मध्य फेरि११६
घटिका सु एकमधि चेत लाय। ह्वै सजग फेर लंकाधिराय ॥
करि घोर शोर भरि क्रोध वीर। छाँडे प्रचंड बहु विशिख तीर११७॥
रघुराज पत्र पत्रीन छाय। ध्वज वाजि रंचहू नहिं लखाय ॥
दशमथ्थ रथ्थहू बाणजाल ॥ चहुँ झंपि दीन दशरथ्थ लाल॥११८॥
इमि द्वंद्व युद्ध पुनि होत भूरि। दशहूँ दिशान गे बाण पूरि ॥
तब रामचंद्र दश शर कराल। वेधे उताल दशभाल भाल ॥ ११९ ॥
तिन लगत भयो विह्वल अपार। सारथि प्रवीन सो गतिनिहार ॥
रथ वाहि वेगि लै गो सु दूरि। रावण अचेत जल नैन पूरि॥१२० ॥
द्वै दंड मध्य आयो जु होस। लखि सारथीहि भाषो सरोस ॥
रणविमुख कीन रे मूढ़ मोहिं। सेवक विचारि नहिं वधहुँ तोहिं१२१॥
रथवाह वेगि पुनि राम पास। हौं करौं आज रिपुकर विनाश ॥
तब कही सारथी जोरि हाथ। अपराध क्षमिय प्रभु लंकनाथ १२२॥
है सूत कर्म यह धर्म तात। महि समय लखै जय अजय वात ॥
लखि प्रभुहि विकल बहु समर माहिं।लायो उताल स्यंदनहि वाहिं१२३
सुनि सूत बैन दशमुख सराहि। दीनो जु हस्त भूषण उमाहि ॥
धारण सुकीन लै नाय मथ्थ। पुनि वाहि वेगि लायो सु रथ्थ १२४॥
दशकंध वेगि वर धनुपधार। रघुवरहि कीन बहु शर प्रहार ॥
ते सकल राम तिहि दीन काटि। वेधे अनेक निज बाण डाटि१२५ ॥
पुनि शक्ति शूल शरखड्ग चंड। गहि गदा चक्र तोमर उदंड ॥
इमि अपर शस्त्र अरु अस्त्र भूरि। दशमौलि रामपर दीन पूरि १२६॥

ते सकल रामभंजन करांत । पुनि विशिप बाण तिहि हनत जात॥
त्यों हीं बहोरि लंकेश वीरं । तिन खंडि फेरि वेधत सु तीर ॥१२७॥
तिहि समय राम रावण सु वीर ॥ छिन हो अधीर छिन धरत धीर॥
कीनो अभूत दुहुँ समर घोर। छायो अपार तिहिं लोक शोर१२८॥

ह० गी० छंद।

इमि राम रावण युद्ध देव विलोकिकै सब चकित भे ॥
कपि भालु निश्चर निकर दुहुँ बल हेरिकै अति चकित भे॥
सुर कहत अबलग याहि राम समान नहिं भेटो वियो ॥
दशमुख बहत्तर चौयुगी भरि राज बहु संयुग कियो ॥ १२९॥

प्र० ॥ सुंदर रामायणे लंकाकांडे ॥ सर्ग ५१ ॥ श्लोक ।

राज्यं चकार लंकेशो द्विसप्ततिचतुर्युगम् ॥
त्रिषुलोकेषु नप्राप्तस्तंरामसदृशो बली ॥ ९ ॥

ह० गी० छंद ।

तिहि समय वेगि अगस्त्यऋषि श्रीराम संनिधि आयकै॥
आदित्यहृदय अनूप किय उपदेश अतिहि दुरायकै॥
दै सविधि उत्तम कवच मंत्र उताल मुनि पुनि जात भे॥
रघुवीर लहि जय अस्त्र अतुल अमोघ अति हरपात भे॥१३०॥
ताछिन विभीपण राजसुत सों विलखि यौं वाणी कही॥
दशकंठ नाभी मध्य एक पियूप कुंड विराजही॥
जौलों न प्रभु तिहि सोपि हो तौलों न यह खल नाशि है॥
बरिबंड चंड सुरारि छिन छिन भालु कीशन त्रासि है॥१३१॥
सुनिकै विभीपण वैन शर इकतीस श्रीरघुवीर लै॥
आदित्यहृदय उचारि विधि युत लंक पतिहि सुधीर दै॥
ते कालदंड समान वाण प्रचंड धनुपर तानिकै॥
कीने सपदि संधान प्रभु बलवान दृढ प्रण ठानकै॥ १३२॥
तिहि समय झंपी सकल दिशि कंपी अपार वसुंधरा॥
चहुँ उठी पावक दाह रावण गात हू बहु थरहरा॥
श्रीराम छोडे चंड सायक चलत अमित प्रकाश भो॥
अति घोर शोर दुरंड मदि पाताल मध्य अकाश भो॥ १३३॥

ते प्रबल शर इकतीस चालि दशशीश के दशशीशमें ॥
इक नाभि शर शोषो अपर लागे सपदि भुज वीसमें ॥
शिर बाहु लै नाराच गवने रुंड रावण कंपिकै ॥
द्रुत गिरत भो रणभूमि मध्य सु भूरि दुहुँ दल चांपिकै ॥ १३४ ॥
विन मुंड रुंड बहोरि उठि बहु गार्जि धायो मंडिकै ॥
रघुवीर तिहि युग खंड करि महि डारि दीनो खंडिकै ॥
भुव गिरतही अति शोर किय हा राम हाहा जानकी ॥
यों कहत निकसो जीव पूजी आश सब बलवानकी ॥ १३५ ॥
तिहि समय पावकझार रावण अंग ते अनुपम कढी ॥
बहु तेज विशद प्रकाश अद्भुत तासु द्रुत ज्वाला बढी ॥
सो आय अतिहि उताल कीन प्रवेश मुख श्रीरामके ॥
सब निरखि चकृत कहत भेद अलक्ष प्रभु गुण ग्रामके ॥१३६॥
तिहि समय रावणवध विलोकि समस्त सुर आनँद लहे ॥
जै राम जै रणधीर जै रघुवीर जै जै सब कहे ॥
बहु भाँति अस्तुति करहिं प्रभुपर सुमन वर बरसावहीं ।
दुंदुभि बजाय बजाय श्रीरघुनाथको यश गावहीं ॥ १३७ ॥
कपि भालु कूदें जैति जै करि शोर चहुँ बिलकारहीं ।
पुनि धाय धाय अनंद भरि भरि राम वदन निहारहीं ॥
तिहि समय लछमन दौरि भ्रातहि अंकभरि हुलसायकै ।
नखशिख विलोकें प्रेमयुत वर विजय मोद अचायकें ॥ १३८ ॥
सुग्रीव अंगद ऋच्छपति लंकेश हनुमतनील जे ।
इन आदि अपर अपार वानर भालु हैं बलशील ते ॥
सबको महाआनंद कविप कौन विधि कहिजाय जो ।
ज्यों होत प्रमुदित भापि सकहि न मूक मिष्टहि खाय सो १३९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सरसिज सुभट समूह वर फूल चारु पूरण प्रतापसो प्रकाश अति ही जयो ॥ निशिचर सेन रैन तम दशमाथ भागि विनशि समस्त शोक लोक तिहुँ ते गयो ॥ रसिकविहारी देवलोक वृंद भे अनंद दशहू

दिगंतमें अनंत जैति जै छयो ॥ कौशलाधिराज रघुराज उदयाचलतें
तेज पुंज विजय दिवाकर उदै भयो ॥ १४० ॥

हरिगी० छंद।

इत मोद इमि उत लंक निश्चर निश्चरी अकुलावहीं।
दशमाथके गुण गाथ कहि धुनि माथ बहु विलपावहीं ॥
मंदोदरी आदिक अनेक सुतीय विह्वल धायकै।
बेहाल आय उताल रोवत गिरीं पतिपद धायकै ॥ १४१ ॥

दोहा–निरखि विभीषण भ्रात गति, कियो विलाप अपार ॥
तिनहि धीर दीनी विविध, दशरथ राजकुमार ॥ १४२ ॥
पुनि भाषी लंकेश प्रति, रघुवर दीनदयाल ॥
मृतककर्म दशकंठ को, सविधि करौ ततकाल ॥ १४३ ॥
तबहि विभीषण जोरि कर, कही छुवौं नहिं याहि ॥
तव निंदक पुनि शत्रु मम, अरु अधर्म रत आहि १४४ ॥
सुनि बोले रघुवंश मणि, यह मम निंदक नाहिं ॥
अरु अधर्मरतहू न है, हौं जानौं मनमाहिं ॥ १४५ ॥
वैर जियतलों राखिये, मरण भये नहिं मान ॥
अंत समै रिपु मित्र सम, जानै वही सुजान ॥ १४६ ॥
याते सविधि निशंक सब, करौ भ्रात कृत जाय ॥
जाते तव रावण सहित, दोनों लोक बनाय ॥ १४७ ॥
राम रजायसु शीश धरि, सकल तियन समु झाय ॥
मृतक कर्म दशकंठके, किये विभीषण जाय ॥ १४८ ॥
सविधि कृत्य करि तियनको, लंका मध्य पठाय ॥
वेगि विभीषण राम ढिग, आय खरे सचुपाय ॥ १४९ ॥
तव रघुवर शर तून धनु, कवच कृपाण उतार ॥
रथते आये भूमि पर, सप्तम दिवस मझार ॥ १५० ॥
चले देव निज निज भवन, राम रजायसु पाय ॥
शीश नाय स्यंदन सहित, गयो सूत हरषाय ॥ १५१ ॥
हरषि राम सुग्रीवसे, कहे बैन भर अंक ॥

तब सहाय बलते सखा, पाई विजय उतंक ॥ १५२ ॥
यों कहि पुनि अवधेश सुत, सकल भालु कपि मान ॥
यथाउचित सादर निरखि, किय बहु विशद बखान ॥१५३॥
निरखि विभीषण ओर पुनि, लषणहि कही बुझाय ॥
लंकापति अभिषेक हुत, करो सदल तुम जाय ॥ १५४ ॥
तब सुकंठ हनुमंत अरु, अपर भूरि बलवंत ॥
सहित विभीषण लंकमें, आये लषण तुरंत ॥ १५५ ॥
बोलि सचिव द्विज ज्ञाति सब, सविधि साज सजवाय ॥
किय अभिषेक विभीषणे, लंक निसान बजाय ॥ १५६ ॥
श्वेत छत्र चामर विजन, साज समाज समेत ॥
चले विभीषण लषण सँग, रामदरशके हेत ॥ १५७ ॥
आय वेगि प्रभुपद गहे, उठि रघुवर उर लाय ॥
प्रीति रीति नृप नीति युत, दीन मान हुलसाय ॥ १५८ ॥
दास भाव कर जोरि कै, ठाढे निश्चरनाह ॥
निरखि राम उठि फेरि तिन, बैठारे गहि बाँह ॥ १५९ ॥
रीत प्रीत नृप नीति मय, कहे राम बहु बैन ॥
सो सुनि निश्चर भालु कपि, सब हिय छायो चैन ॥ १६०॥
पुनि तहँते उठि सेन युत, आनंदित श्रीराम ॥
चलि सुवेल गिरि पै सुथल, आय कियो विश्राम ॥ १६१॥
रसिकबिहारी आजते, भयो परम आनंद ॥
सब सुर मुनि भाषं,मुदित, जैजै दशरथ नंद ॥ १६२ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० युद्ध० रावणयुद्धवध
वर्णनो नाम विंशोविभागः ॥ २० ॥

दोहा–राम लषण लंकेश अरु, अपर समाज अपार ॥
शोभित शैल सुवेल पर, विजे मोद उर धार ॥ १ ॥
तब हनुमत दिशि हेरिकै, बोले रघुकुल चंद ॥
हे कपि रिपु दल जीति अब, भये सकल सानंद ॥ २ ॥

महाराज लंकेश की, लै रजाय तुम जाय ॥
सियहि सुनावो जै कुशल, कहो तासु पुनि आय ॥ ३ ॥

प्र० वा० ॥ यु० कां० ॥ स० ११४ ॥ श्लो० ।

ततः शैलोपमं वीरं प्रांजलिं प्रणतं स्थितम् । उवाचेदं वचो रामो हनुमंतं प्लवंगमम् ॥१॥ अनुज्ञाप्य महाराजमिमं सौम्य विभीषणम् ॥ प्रविश्य नगरीं लंकां कौशलं ब्रूहि मैथिलीम् ॥ २ ॥

दोहा–सुनि हनुमत लंकेश प्रति, बूझि गये द्रुत धाय ॥
शीश नाय सीतहि कही, विजै कुशल हुलसाय ॥ ४ ॥
जनकसुताके हिय भयो, ताछिन इमि अहलाद ॥
मुदित मयूरी होत जिमि, सुनि पावस घननाद ॥ ५ ॥
कही सीय संदेश सम, कछु न तिहूँ पुर माहिं ॥
कहा देउँ कपि तोहिँ अब, कबहुँ उऋण मैं नाहिं ॥ ६ ॥
कही कीश कर जोर तब, हौं पायो सब मात ॥
महाराज विजयी भये, आप लखी कुशलात ॥ ७ ॥
पै जननी इक मोहिँ ये, रुचि सो कीजै पूरि ॥
हो रजाय तौ निश्चरिन, हनौं कुटिल ये भूरि ॥ ८ ॥
सुनि सिय कोमल हिय कही, करौ पुत्र जनि रोप ॥
पराधीन सिगरी कहा, इन दीननको दोप ॥ ९ ॥
भये मौन हनुमंत पै, तिनै विलोकत वंक ॥
सिय पाछे बैठीं सबै, मिलि इक ठौर सशंक ॥ १० ॥
कही तबै कर जोरि कपि, करिय मातु उपदेश ॥
वेगि जाय भापौं सकल, प्रभुसों तव संदेश ॥ ११ ॥
सुनि सिय बोली पवनसुत, अंतर्यामी नाथ ॥
सब जानत हैं हीय की, कहा कहौं बहु गाथ ॥ १२ ॥
मो दिशिते पद परसिकै, विनय करीजो तात ॥
दरश विना इक एक छिन, कोटि कल्प सम जात ॥ १३ ॥
सुनि कपि गमनो नाय शिर, आयो रघुवर पास ॥
सिय दिशि ते प्रभुचरण गहि, कह्यो सकल स हुलास ॥ १४ ॥

सुनिकै प्रिया सँदेश प्रिय, हिलकि हृदय भरि लाल ॥
दीह श्वास दृग जल उमड़ि, ह्वै सनेह बेहाल ॥ १५ ॥
महि विलोकि लंकेश सों, कहे सु मंजुल बैन ॥
सिय अन्हवाय शृँगारि कै, द्रुत आनौ मति ऐन ॥ १६ ॥
पाय रजाय सु रामकी, लंकापति मतिधाम ॥
जाय सीय ढिग मातु गुनि, किय कर जोरि प्रणाम ॥१७॥
पुनि रघुवर आज्ञा सकल, बरणी शीश नवाय ॥
सुनि लंकेशहि सिय कही, अतिअनंद उमगाय ॥ १८ ॥
सुन मो उर अभिलाष यह, प्रभुपद प्रथम विलोक ॥
पुनि मंजन शृंगार हौं, करौं जु होय विशोक ॥ १९ ॥
सुनत विभीषण पुनि कही, जननी हो सर्वज्ञ ॥
तव सन्मुख मैं कह कहौं, अति अयान अल्पज्ञ ॥ २० ॥
पै कछु विनवौं दीन ह्वै, क्षमियो मम अपराध ॥
जानतहौं हे स्वामिनी, है हिय कृपा अगाध ॥ २१ ॥
नेम धर्म जप योग तप, ज्ञान ध्यान अरु दान ॥
पति आज्ञा पालन सरिस, सुखद सुकृत नहिं आन ॥२२॥
याते मो विनती यही, जो प्रभु कही पठाय ॥
सोई करिवो उचितहै, पुनि जिमि होय रजाय ॥ २३ ॥
इमि कहि रुचि लखि निश्चरिन, दी लंकेश रजाय ॥
विशद विभूषण वसन ते, लाईं साज सजाय ॥ २४ ॥
तब सिय पिय रुचि गुणि कियो, मंजन सकल शृँगार ॥
पुनि बैठी शिविका सुभग, पतिपद हियबिच धार ॥ २५॥
विशद निश्चरी यूथ बहु, सहित साज भट भीर ॥
राम दरश हित सिय चलीं, संग विभीषण धीर ॥ २६ ॥
सिय आगम सुनि दरश हित, वानर भालु अपार ॥
अपर निशाचर निश्चरी, धाये जैति उचार ॥ २७ ॥
बेतपाणि रक्षक तिनै, वारन करत दुराय ॥
शिविका सह आवरण वर, प्रभु ढिग चले [.

ताछिन भो बहु शोर चहुँ, दूरहि ते लखि राम ॥
कह लंकेशहि बोलि द्रुत, करि दृग दोउ ललाम ॥ २९ ॥
कीश भालु मेरे सकल, प्राणहु ते प्रिय भूर ॥
पुनि हैं मम सुत बन्धु सम, तिनहिं निवारत दूर ॥ ३० ॥
कहा हेत आवर्णको, कह शिविकाको काज ॥
मम समीप आगमनमें, काह मैथिलिहि लाज ॥ ३१ ॥
यों कहि पुनि लंकेश प्रति, भाषी राम सप्रीत ॥
समय पाय सोहै सबै, भीति रीति नृप नीत ॥ ३२ ॥
बहुरि होत याते कहो, जो नहिं निर्मल जीय ॥
शुभ अरु अशुभ समस्त कृत, निभत आपने हीय ॥ ३३ ॥

सवैया—कवित्त ।

हो न कछू बहु वस्त्र न शस्त्रसे धाम न कोटकी ओट लियेते ॥
भाषनते कटु भाषनते जन लापनते न कपाट दियेते ॥
हैं रसिकेश घने नृप साज सु और अनेक प्रबंध कियेते ॥
नाहिं रहै तियकी परदा जु न राखहि सो निज आप हियेते ॥ ३४ ॥
दोहा—सो विचार यह हीयको, पै जगरीति जु होय ॥
यदपि उचित सब भांति है, तदपि समय लखि सोय ॥ ३५ ॥

सवैया—कवित्त ।

भूरि विपत्ति परै जबहीं अरु पीड़ित होय महारुज माहीं ॥
औ मख व्याह स्वयंवर युद्ध गुरू नृप मातु पितापति पाहीं ॥
ऐसे समय शुभ रीति समेत लखै तिय काहुकि कोउ कहाहीं ॥
नारि विलोकनको रसिकेश कहौं दृढ रंचहु दूषण नाहीं ॥ ३६ ॥
दोहा—सो सीता या छिन दुखी, तिनहिं लखे कह रोष ॥
पुनि मोढिग कोऊ कवौं, दरश लहै निरदोष ॥ ३७ ॥

प्र० घा० ॥ यु० कां० ॥ स० श्लोक ११६ ॥

न गृहाणि न वस्त्राणि न प्राकारास्तिरस्क्रियाः ॥ नेदृशा राजसत्कारा वृत्तमावरणं स्त्रियः ॥ २ ॥ व्यसनेषु न कृच्छ्रेषु न युद्धे न

स्वयंवरे ॥ न क्रतौ न विवाहेषु दर्शनं दूष्यते स्त्रियः ॥ ४ ॥ सैषा विपद्गता चैव कृच्छ्रेण च समन्विता ॥ दर्शनेनास्तिदोषोऽस्या मत्समीपे विशेषतः ॥ ५ ॥

दोहा–याते अवहीं सीयको, शिविकाते उतराय ॥
वेगि पियादे लावहू, लखैं सबै शुचि भाय ॥ ३८ ॥
सुनि लंकापति मौन ह्वै, सकुचि प्रभुहिं शिरनाय ॥
तिमि लाये सीतहि यथा, रघुवर दई रजाय ॥ ३९ ॥
आय सियापति चरण गहि, लज्जित वसन समेटि ॥
वैठीं हेरि सुवाम दिशि; आनंदित भुजभेटि ॥ ४० ॥
झीने पट ह्वै लखति सिय, पियको वदन मयंक ॥
राजकिशोर विलोकहीं, सकुचि विलोकन वंक ॥ ४१ ॥
ह्वै प्रमुदित लखि सीय सों, वचन कहे रघुराज ॥
राजसुता मम सफल भो, सकल परिश्रम आज ॥ ४२ ॥
यों कहि राम सुनीतिवर, अंतर नेह अपार ॥
प्रगट वचन कटु जानकिहि, कहे लोक अनुसार ॥ ४३ ॥
सुनहु मैथिली तुमहि लखि, मों हिय उपज कलेश ॥
कछु न काज मम निकट अव, जाहु रुचै जिहि देश॥४४॥
दशमुख सवल महीप पुनि, युत ऐश्वर्य अकर्म ॥
युवा सुन्दरी तिहि सदन, रहो न ह्वैहै धर्म ॥ ४५ ॥
याते तुव दे वर तिहूं, पुनि सुकंठ लंकेश ॥
अथवा और जु रोचही, तिहि मिलि रहो हमेश ॥ ४६ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कांड । सर्ग ११७ ॥ श्लोक ।

तां तु पार्श्वस्थितां प्रह्वां रामः सम्प्रेक्ष्य मैथिलीम् ॥ हृदयान्तर्गतं भावं व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥६॥ प्राप्तचारित्रसंदेहा मम प्रतिमुखे स्थिता दीपो नेत्रातुरस्येव प्रतिकूलासि मे दृढा ॥ ७ ॥ तद्गच्छत्वनुजानेद्य यथेच्छं जनकात्मजे॥एता दशदिशो भद्रे कार्यमस्ति न मे त्वया॥८॥ तदद्य व्याहृतं भद्रे मयैतत्कृतबुद्धिना ॥ लक्ष्मणे वाथ भरते कुरु बुद्धिं यथासुखम्॥९॥शत्रुघ्ने वाथ सुग्रीवे राक्षसे वा विभीषणे ॥

सीते यथा वा सुखमात्मनः ॥१०॥ न हि त्वां रावणो दृष्ट्वा दिव्यरूपां मनोरमाम्॥मर्षयत्यचिरं सीते स्वगृहे पर्यवस्थिताम्॥११॥इत्यादि॥

दोहा—सुनि सीतापति वचन कटु, लागी करन विलाप ॥
लज्जित बोली मंद स्वर, बढो हृदय संताप ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

ये हो प्रभु इतर तियान सम जान मोहिं दोष अनुमान कटु बैन इमि बागौना ॥ रसिकविहारी तुव नारी पति धर्मचारी काहूके सिखाये धनुधारी नेक लागौना ॥ विवश परी हौं घरी युगसी भरी है लाल हृदय जुडानो आज फेरी दुख दागौना ॥ हाय श्यामसुंदर सुजान सरवज्ञनाथ करुणा अगाध अपराध विन त्यागौना॥४८॥

चौ०यौं कहिसिय पियरुख अनुमानी ❀ बोली विलखि लषणसों बानी
राजपुत्र द्रुत सर राचि देहू ❀ अब नहिं मैं राखों यह देहू ४९
लछमन रामहि लखि रुख जानी ❀ विरचो सर वेगै निज पानी॥
पावक ज्वलित देखिकै सीता ❀ उठिपियपदगहिकहीअभीता५०

दोहा—जो अनन्य मन वच करम, हौं सेये श्रीराम ॥
तौ रक्षो मुहिं अनल तुम, व्यापक हो सब ठाम ॥ ५१ ॥

चौ०यौं कहि सर प्रवेश सिय कीना ❀ निजपति चरण चित्त दृढदीना
ताछिन भयो शोर बहु घोरा ❀ हाहाकार करत चहुँ ओरा५२॥
सकल सुरासुर करत पुकारा ❀ है अदोष सीतावर दारा॥
ताछिन शिव ब्रह्मादिक आई ❀ रामहि बहु विधि विनय सुनाई५३॥
तब पावक सुदिव्य तनु कीने ❀ सीतहि मुदित अंक निजलीने॥
सरते प्रगटि राम ढिग आई ❀ कही उच्च स्वर सबहि सुनाई५४॥
परम शुद्ध यह सीता देवी ❀ सदा राम पतिपद दृढ सेवी॥
यौं कहि राघव ढिग बैठारी ❀ सब हर्षे जै जैति उचारी ॥ ५५ ॥

दोहा—सीताराम चरित्र यह, भयो काहको जान ॥
दंडकवन उत लंक इत, गुप्त प्रगट गतिमान ॥ ५६ ॥

चौ०ताछिन भूपति बैठि विमाना ❀ आये देखि हृदय हुलसाना ॥
पितहि विलोकि वेगि उठि रामा ❀ सिया बंधु युत कीन प्रणामा॥५७॥

ाराज तिहुँ अंक लगाई ❀ विषम विरहकी ताप सिराई ॥
ुरि परस्पर म अघाई ❀ गये धाम वर दशरथ राई ॥५८॥
छिन देवराज हुलसाई ❀ कही राम कह होत रजाई ॥
। बोले रघुवर हुलसाई ❀ मृतक जियें मम भट समुदाई ५९
रु जहँ वसैं ऋच्छ कपि भूरी ❀ रहै अशन जल तहँ नित पूरी॥
द्वै वर सुरनायक दीजे ❀ सकल मनोरथ पूरण कीजे६०॥
नि कह एवमस्तु सुरराजा ❀ जिये सकल कपि भालु समाजा॥
ल फल फूल पत्र तरुछाये ❀ निरखि राम आनंद अघाये६१

दोहा—बहुरि जोरि कर विनय युत, सुरन बिदा किय राम ॥
ते सवही शिरनायकै, गमने निज निज धाम ॥ ६२ ॥
जनककिशोरी राजसुत, दोऊ दुहूँ निहार ॥
प्रगट सकुच जन मध्य पै, अंतर प्रेम अपार ॥ ६३ ॥
लषण कीशपति लंकपति, हनुमानादिकवीर ॥
रसिकविहारी मुदित सव, निरखि सिया रघुवीर ॥ ६४ ॥
कहत सवे जे राम सिय, जैति लषण कपिराज ॥
जे हनुमंत सुवीर वर, जै जै जै सुरराज ॥ ६५ ॥

इति श्रीरा० र० यु० विधाने श्रीसीताराम मिलन
वर्णनो नामएकविंशोविभागः ॥ २१ ॥
इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रंथे युद्धचरित्र
वर्णनो नाम षष्ठोविधानः ॥ ६ ॥

दोहा—श्रीसीता रघुवर लषण, अपर समाज अपार ॥
शोभित शैल सुवेल पर, विजय मोद उरधार ॥ १ ॥
इहि विधि वीते द्वै दिवस, रावणवध उपरंत ॥
राम लषण सीता निरखि, सवहि अनंद अनंत ॥ २ ॥
तव लंकापति रामसों, कहे वैन कर जोरि ॥
तजिय सहानुज मुनि वसन, हे प्रभु यह रुचि मोरि ॥ ३ ॥
अरु धन भूषण वसन गृह, देश ग्राम वर नाम ॥
कपि ऋच्छनको दीजिये, पूरित लंक ललाम ॥ ४ ॥

सुनि बोले प्रभु हे सखा, तुमते विलग न नेक ॥
भरत सहित तनु साजहूँ, सो राखो मम टेक ॥ ५ ॥
अरु ये प्यारे प्राण सम, हैं कपि ऋच्छ अपार ॥
सबहीको सब भाँति ते, करौ उचित सत्कार ॥ ६ ॥
बहुरि चाहिये जतन वह, द्रुत हम करहिँ पयान ॥
नतरु अवधि बीते भरत, नहिं राखैं निज प्रान ॥ ७ ॥
सुनि भाषी लंकेश तब, पुष्पकयान विशाल ॥
तामधि प्रभु पधराय हौं, चलिहौं अवध उताल ॥ ८ ॥
यौं कहिकै लंकेश द्रुत, जाय सु लंक मझार ॥
धारे पुष्पकयान मधि, भूषण वसन अपार ॥ ९ ॥

दोवई छंद ।

लै पुष्पक वर नभ मंडल ह्वै वेगि विभीषण आये ॥
अंतरिच्छ ते अमित अनूपम भूषण वसन लुटाये ॥
कीश ऋच्छ सब राम रजायसु पाय मनुज तनु धारे ॥
सजि सजि अंग उमंग रंगते प्रभुहि जुहारत सारे ॥ १० ॥
पुनि पुष्पकविमान लंकापति वेगि राम ढिग लाये ॥
तामधि लषण सीय युत रघुवर बैठे लखि हुलसाये ॥
तब सबही सनमानि यथोचित बोले वच अभिरामा ॥
सकल भालु कपि प्राणपियारे जाहु सु निज निज ठामा ॥ ११ ॥
ऋच्छराज कपिराज लंकपति तिहूं सखा मम प्यारे ॥
बसिहो रैनि दिवस हिय अंतर ह्वैहो छिनहु न न्यारे ॥
अब सब निज निज धाम सिधारो करो राज निरशंका ॥
आवत जात अवध मधि रहियो सहित वीर वर बंका ॥१२॥
सुनि प्रभु वैन ऋच्छ कपि सिगरे तिहुँ नृप युत हनुमंता ॥
गदगद कंठ अवध दरशनहित कीनी विनय अनंता ॥
तब रघुवीर धीर दै वनचर विपुल विदा करि दीने ॥
यूथपमुख्य शोधि तिहुँ भूपति सह सेवक सँग लीने ॥ १३ ॥

पुप्पकथान प्रभाव अनूपम जेते होयँ सवारा ॥
यथायोग सबहेत सुखद वर तितो रहै विस्तारा ॥
ता मधि कोटिन कीश भालु युत सिया लषण रघुलाला ॥
लंक ऋच्छ कपिपति केसरि सुत बैठे सदल उताला ॥ १४ ॥
ताछिन पुप्पक इच्छा चारी उत्तर दिशहि सिधायो ॥
सियहि राम सब ठाम दिखाये सागर दरश करायो ॥
तब लखि सेतु लषण इमि भाषी जो यह सदा रहाई ॥
तो पयोधि अरु लंक दुहूँ की ह्वै है अति लघुताई ॥ १५ ॥
सुनि रघुवीर रजायसु दीनी अनुज वेगि सजि तीरा ॥
कीनो भंग सेतु तहँ जलमें परी भौंर गंभीरा ॥
भो खंडित बहु ठौर जहां जहँ तहँ तहँ भँवर महाना ॥
इक इक भँवर सिंधु जलमाहीं योजन योजन माना ॥ १६ ॥
तिन ऊपर नभ पंचकोशलग पक्षिहु नाहिं उडाई ॥
महावेगते भँवर सिंधुमधि अगम पंथ चहुँघाई ॥
इमि प्रबंध करिके पुनि तहँ ते पुप्पक वेगि चलायो ॥
सेतु भंग मग अगम लंक गुणि लंकपाल सुख पायो ॥ १७ ॥
दोहा–सेतु शिवालय सीयको, दरशायो रघुनंद ॥
तिनकी महिमा अमितविधि, भाषी अतिसानंद ॥ १८ ॥

म० ॥ वा० ॥ यु० ॥ कां० ॥ स० १२५ श्लोक ।

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः ॥
एतत्तुदृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ॥ १ ॥
सेतुबंधे इति ख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितम् ॥
एतत्पवित्रं परमं महापातकनाशनम् ॥ २ ॥

चौवई छंद ।

सिंधुतीर रामेश्वर दरशन पूजन सबही कीना ।
बहुरि उताल चले श्रीरघुवर भरत नेम चित दीना ॥
अतिहि सपदि किष्किन्धा आये नभ मग ह्वै दरशायो ॥
जनकसुता रुचि पाय राजसुत तहँ विमान त्रिलमायो ॥ १९

तब सिय कही राम सों प्रभु मो हीय एक रुचि भारी ॥
तारा रुमा चलैं मो सँग अरु अपर ऋच्छ कपिनारी ॥
सुनि रघुचंद सुकंठहि भाषी वेगि सकल ते आवैं ॥
जनकनंदिनी प्रीति मानिकै अवधहि साथ सिधावैं ॥ २० ॥
सुनि सुग्रीव ऋच्छ कपि संयुत जाय वेगि सब आनी ॥
नारि रूपते सकल वानरी तिमि अनूप दुहुँरानी ॥
यथायोग सियमिलि बैठारी पुष्पकयान मँझारी ॥
बहु आनंदसहित पुनि अवधहि किय पयान धनुधारी ॥ २१ ॥
भरद्वाज आश्रम मधि आये तिथि पंचमी प्रमाना ॥
ताही दिन मनुवर्ष सु पूंजे भानु अंशते जाना ॥
सहित समाज मुनिहि शिरनाई बूझी गृह कुशलाई ॥
अवध कथा तब सकल सुमंगल ऋषि रघुवरहि सुनाई ॥ २२ ॥
सुनि सब कुशल मुदित मुनितें पुनि वर माँगो रघुराई ॥
नाथ भालु कपिगण हित बहु तरु फूलैं फलैं सदाई ॥
एवमस्तु कहि ऋषिवर तादिन प्रभुहि सु आश्रम राखे ॥
तब हनुमंतहि अवध गमनके अर्थ राम द्रुत भाषे ॥ २३ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कां० स० १२६ ॥ श्लोक ॥

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां भरताग्रजः ॥
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववंदे नियतो मुनिम् ॥ २ ॥

दोवई छंद ।

तब अंजनि सुत मुदित सिधाये धरि द्विज रूप अनूपा ।
प्रभु आगम कहि मिलि निषादसों जाय लखे तुरभूपा ॥
शीश नाय भरतहि इमि भाषी सिय सबंधु प्रभु आये ।
सुनि उठि सपदि कपिहि सो भेंटे अति आनंद अघाये ॥ २४ ॥
कथा बूझि सब कपिहि भरत अति वेगहि सचिव बुलाये ।
चहूँ ओर पुर सरित बाग मग अनुपम साज सजाये ।
राम लषण सिय आगम सुनिकै महामोद भो भारी ।
अकथ अपार अनंद मातु उर भे नर अचर सुखारी ॥ २५ ॥

पुर परिजन नर नारि साज साजि सकल दरश हित धाये ॥
राम पादुका भरत शीश धरि वेगि चले हुलसाये ।
उत हनुमंत जाय सब भाषी सुनि मुनि पद शिरनाई ।
गमने राम निषाद लखे मग आये अवध तुराई ॥ २६ ॥
दोहा—लखि सुरसरिहि प्रणाम करि, मज्जन अरु जलपान ॥
सिया सविधि पूजी सरित, पूरव कथित प्रमान ॥ २७ ॥

दोवई छंद ।

चले वेग लखि अवध लषण सिय युत समाज श्रीरामा ॥
उठि करजोरि नवाय शीश सब कीनो पुरिहि प्रणामा ॥
सरयू अवध महातम रघुवर वर्णत विविध अपारा ।
आये नंदिग्राम सन्निध तहँ पुष्पकयान उतारा ॥ २८ ॥
दोहा—लषण सिया प्रभु निरखिकै, धाये सब नर नारि ॥
राम भरत दृग ज्ररत दुहुँ, उमगे दुहूँ निहारि ॥ २९ ॥
भरत धाय प्रभु पद परे, राम लिये उरलाय ॥
मिले परस्पर प्रेम युत, यथा उचित चहुँ भाय ॥ ३० ॥
भरत हरषि सो पादुका, रामचरण पधराय ॥
पुनि सबंधु सियके गहे, पद पंकज हुलसाय ॥ ३१ ॥
राम लषण सीता सहित, गुरु द्विज पद धरिशीश ॥
विनय करी करजोरि बहु, पाई सुखद अशीश ॥ ३२ ॥
राम लषण हुलसायकै, जाय जाय उमगाय ॥
गहेमातु गणके चरण, सबहि लये उरलाय ॥ ३३ ॥
मात सुमित्रा कौशल्या, ताछिन जो आनंद ॥
कहि न सकै सो कल्प शत, शेष शारदा वृंद ॥३४॥
सखा यूथ प्रमुदित मिले, अपर अमित नर नारि ॥
यथायोग सिय लषण प्रभु, भेंटे सबहि निहारि ॥ ३५ ॥
ताछिन चरित अनूप भो, जे जन सकल अपार ॥
इक इक प्रति छिनमें उचित, भेंटे राजकुमार ॥ ३६ ॥
भये मुदित नर अवर सब, अमित नारि नर वृंद ॥

सो न भेद कोऊ लखो, कह जै जै नृप नंद ॥ ३७ ॥
सुग्रीवादि नृपाल तिहुँ, हनुमानादिक वीर ॥
भरतादिक सब सबहि सों, मिले यथोचित धीर ॥ ३८ ॥
सिय सासुनके पग परीं, सब लीनी उर लाय ॥
भगिनी पुरवासिनि सखी, मिलीं हीय हुलसाय ॥ ३९ ॥
तारादिक सब तीय वर, उचित रीत युत नीत ॥
मिलीं परस्पर नारि बहु, यथायोग सह प्रीत ॥ ४० ॥
मिले परस्पर सबहि सब, यथा उचित हरषाय ॥
राम कही तब भरत सों, प्रमुदित सबहि सुनाय ॥ ४१ ॥
सखा ऋच्छपति लंक पति, दृढ अंजनिसुत दास ॥
प्राणहुते प्रिय अपर सब, कीश भालु बलरास ॥ ४२ ॥
हम तुम लछमन शत्रुहन, तिमि सुकंठ कपिराज ॥
मिले पंच भ्राता अबे, सुखद समै शुभ आज ॥ ४३
इहि विधि अतिहि अनंद दै, पुष्पक सबहि बिठार ॥
आये श्रीरघुवंश मणि, नंदिग्राम मँझार ॥ ४४ ॥
तहां आय उतरे तबै, कही पुष्पकहि राम ॥
जब सुमिरें तब आइयो, जाहु सु पूरव धाम ॥ ४५ ॥
राम रजायसु शीश धरि, गो कुबेर ढिग यान ॥
निरखि धनेश अनंद ह्वै, कियो तासु बहु मान ॥ ४६ ॥

चौ०—इमि सब मिले परस्पर लोगा ॥ मिटे सकल दुखजनित वियोगा ॥
नंदिग्राम बहु जुरो समाजा ॥ बैठे जन युत अगणित साजा ॥ ३७ ॥
तब उठि भरत राम पहँ बोले ॥ धर्म सत्य मय वचन अमोले ॥
मातु पिता आज्ञा जो दीना ॥ सो प्रभु अरु मैं शिर धरि कीना ॥ ३८ ॥
अब मम विनय मानिये ताता ॥ राज दीन मो कह पितु माता ॥
निज दिशिते हौं देहु सु लीजे ॥ येती कृपा दीन लखि कीजे ॥ ३९ ॥

वा० ॥ रा० ॥ यु० का० ॥ स० १३० ॥ श्लोक।

अब्रवीच्च तदा रामं भरतः सकृताञ्जलिः ॥
एतत्ते सकलं राज्यं न्यासं निर्यातितं मया ॥ ८ ॥

अमित विनय सुनि दीन दयाला ❀ भरतहि बोले बैन रसाला ॥
नेह धर्म तव अति वरियारा ❀ याते करौं सु अंगीकारा ॥५०॥
राम वचन सुनि सब नरनारी ❀ कह जै जै अति भये सुखारी ॥
भरत हुलसि प्रभुपद शिरनायो ❀ रघुवर बंधुहि अंक लगायो ५१॥
पुनि तिहुं बंधु जटा रघुनाथा ❀ किये सप्रीति विलग निजहाथा॥
प्रेम सहित सबही अन्हवाये ❀ विशद विभूषण वसन सजाये५२
पुनि तिहुँ बंधु सविधि सजिसाजा ❀ मिलि बहु सेवक सखा समाजा॥
राम जटा निरवारि सुधारे ❀ वर मंजन कराय तनु सारे ५३॥
भूषण वसन अमोल अनूपा ❀ नख शिख सज शृंगार सुरूपा ॥
तन छिन चहुँ इमि लगत सुहाये ❀ चहूँ वेद जनु तनु धरिआये५४॥

दोहा—पुनि रिपुहन द्रुत साजलै, सेवक सखा प्रवीन ॥
तिहुँ नृप कपिपति आदिको, सकल शृंगार सु कीन ॥५५॥
रामसखा सेवक अपर, यथायोग चहुँ जाय ॥
कीश ऋच्छ निश्चरनको, सजे अमल अन्हवाय ॥ ५६ ॥
उत कौशल्यादिक सकल, सियहि मुदित अन्हवाय ॥
नख शिख भूषण वसन सुठि, साजे प्रीति बढाय ॥ ५७ ॥
तारादिक जे सकल तिन, पुत्र वधू सम जान ॥
राम मातु सखि गण रचित, सजी सहित सनमान ॥५८॥
सियभगिनी अरु आलिगण, पुनि सबही नर नारि ॥
साजे वर शृंगार निज, रचित सु साज सवाँरि ॥ ५९ ॥

चौ०—इमि सबही शृंगार सुधारे ❀ भोजन पान कीन शुचि सारे॥
पुनि किय अवध चलन तयारी ❀ अति आनंद सकल नरनारी ६०
मंगलमय सब साज सुधारे ❀ रथ तुरंग गज विविध सँवारे ॥
तिन पर यथायोग असवारा ❀ भये भयो चहुँ जैजकारा ॥ ६१ ॥
नर सरन्व वर कुंजर साजे ❀ तिनपर भूरि भालु कपिराजे ॥
वाहन अपर अनेक अपारा ❀ यथायोग जन भये सवारा॥६२॥

शिविका सुभग अनेक अनूपा ❀ बहु सिय युत तिय बैठि सुरूपा ॥
हरि सहस्र मय स्यंदन साजा ❀ तिहि सोहै सबंधु रघुराजा ॥६३॥
बजे बाजने अमित अनूपा ❀ नृत्यगान ठानो वर रूपा ॥
बंदीजन बहु विरुद बखाने ❀ ध्वज फहरत घहरात निसाने ६४
तडपाहिं तोप घोर बहु छायो ❀ दीपावली प्रकाश सुहायो ॥
छत्र चमर व्यजनादि नवीने ❀ बंधु सखा सेवक चहुँ लीने ६५॥
इहि विधि पुर प्रवेश किय रामा ❀ बैठी अटन अमित वर वामा ॥
रोचन लाज सुमन वरसावैं ❀ मंगल गीत मनोहर गावैं ॥६६॥
दरश देत सबहीको रामा ❀ आये सन्ध्या समय सुधामा ॥
धन भूषण वारे मन माहीं ❀ परे कोउ तिन बूझत नाहीं॥६७॥
माता करि आरती उतारे ❀ सहित समाज भवन पगधारे ॥
पूजन दान मंगलाचारा ❀ नृप गृह नगर सु भये अपारा ॥ ६८ ॥

दोहा–तब सुरनायक भरतसों, कही समस्त बुझाय ॥
सबहि निवास सुपास युत, वेगि करावहु जाय ॥ ६९ ॥

चौ०–राम बंधु तब आतुर जाई ❀ संग सचिव सेवक समुदाई ॥
सबहि यथोचित दीन निवासा ❀ सदन साज करि सकल सुपासा७०
वर अशोक वाटिका विशाला ❀ तहँ राखे सुकंठ हरिपाला ॥
रंग भवन लंकेश रहाये ❀ वन प्रमोद ऋच्छेश टिकाये ॥७१॥
अंगदराज बागके माहीं ❀ विशद कोट अंजनिसुत काहीं ॥
अपर धाम आराम मझारा ❀ यथा योग कपि ऋच्छ अपारा७२
अवधि विचारि अवध मधि आये ❀ देश देश के भूप सु छाये ॥
सरयू तट निषाद किय वासा ❀ अपर सकल चहुँ सहित सुपासा७३
विविध ऋच्छ कपि नारि अपारा ❀ तिन सबही रनिवास मँझारा ॥
यथा योग वर दीन निवासा ❀ बहु प्रकार करि सकल सुपासा७४

दोहा–इहि विधि सबहि निवास भो, सादर सहित सुपास ॥
उमगो अति आनँद अवध, घर घर होत विलास ॥ ७५ ॥
तिहुँ नृप कपिपति आदि अरु, वानर भालु जु भूरि ॥
सबहीको यश अमल बहु, रहो अवधमें पूरि ॥ ७६ ॥

लंक विजय करि ते सबै, वानर भालु अपार ॥
धरे मनुजतनु सुभगवर, आये अवध मझार ॥ ७७ ॥
त्यौंहीं वहु निश्चरन युत, लंकापति नर रूप ॥
तिलक भाल गलमाल वर, शोभित सुभग अनूप ॥ ७८ ॥
तिमि तारादि रुमादि सब, सुभग मानुषी रूप ॥
कोश ऋच्छ तिय सुंदरी, सजे शृँगार अनूप ॥ ७९ ॥
तिनके गुण गण सुनत सब, पुरवासी नर नारि ॥
धाय लखत निज गति सरिस, चकृत होत निहारि ॥ ८०॥
प्रात राम अभिषेक सुनि, सब हिय भरी उमंग ॥
होत जागरन सदन प्रति, नृत्यगान सुखरंग॥ ८१ ॥
रसिकविहारी प्रातही, होय राज अभिषेक ॥
ताहित निज निज साज सब, साजत सुभग अनेक ॥८२॥

इति श्री रा० र० वि० अ० श्रीरामचंद्र अवध आगमन
वर्णनो नाम प्रथमोविश्रामः ॥ १ ॥

दोहा–आये श्रीरघुवर अवध, भयो परम आनंद ॥
घर घर होत वधावने, मुदित नारि नर वृंद ॥ १ ॥
ताही निशि गुरु सचिव अरु, सेवक सखा अनंत ॥
सकल साज अभिषेकके, लीने साज तुरंत ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद ।

गुरु भरत मंत्री अपर जन वहु प्रात साज समेतसो ॥
कीने सविधि सतकर्म जो अभिषेकके हित हेतसो ॥
दिन मध्य औसर जानि आये देव सकल हुलासमें ॥
श्रीराम राज उछाह वर अवलोकिवेकी आशमें ॥ ३ ॥
शुभ समय जानि वसिष्ठ द्विज वर सविधि नैगागमको ॥
अभिषेक कीनो विप्रगण युत मंत्र पढ़ि पढ़ि सामको ॥
शृंगारि पुनि दोउ विराजे रत्न सिंहासन जबै ॥
वर ब्रह्म निर्मित कीट रघुवर शीश गुरु धारो तबै ॥ ४ ॥
पुनि गंध अक्षत तिलक कीन वसिष्ठ गुरु रघुरायके ॥

सुर विप्रवृंद महीप दीनो भाल जग सुखदायके ॥
तिहिसमय जै जै शोर भो नभदुंदुभी देवन हनी ॥
गुण गान करि उर प्रेम भरि वर सुमन झरि लाई घनी ॥ ५ ॥
अतिमुदित निर्तहिं अप्सरा वरबाजने बहु बाजहीं ॥
सुर नाग नर गंधर्व निज निज कलाकरि छबि छाजहीं ॥
सुखकौशला सिय हीयको कहि शेप पार न पावहीं ॥
सब मातु पुर परिजन अनंदित अमित वित्त लुटावहीं ॥ ६ ॥
कंचनमई शत कंजमाला विशद वर अनुपम नई ॥
सो पवनदेव प्रसन्न ह्वै पहिराय श्रीरामहि दई ॥
बहु रत्न युक्त विशाल मुक्ताजाल संयुत हारसो ॥
सुरपाल गल रघुलालके धारो सुक्रांति अपार जो ॥ ७ ॥
तिहिसमय चारहु वेद निज निज रूप विशद सुधारिकै ॥
आये नवायो शीश रघुवर छटा अमित निहारिकै ॥
ब्रह्मादि सुर मुनि नारदादिक एक ठौर समग्र ह्वै ॥
अस्तुति करत हैं राम-सियकी चहूँ निगमन अग्रकै ॥ ८ ॥

मणिप्रवाल रीति ॥ कुमारदंडकछंद।

जयति जय सज्जनानंद कर धर्म धुर चंड कोदंड धारी खरारी प्रभो पाहि पूर्णावतारी कृपाले ॥ जैति लंकाधिपति शमन सीतारमण सर्व देवाधि राजेश अवधेश सुत भक्त अनुरक्त जैजक्तपाले ॥ जयति गर्वापकर्पण प्रहर्पण प्रणत कारुणीकात्म सौंदर्य्य रूपावधी स्वेच्छा नंत लीला विहारी॥जैति दुप्पार पाथोध बंधान कृत क्रुद्ध युद्धारूढोद्भट भीम वपु दुष्ट दल दलन दृढ विजयकारी ॥९॥ जैतिसद्बुद्धि विचक्षण विपुल अस्त्र शस्त्रादि संहार वारणनिपुणस्वक्ष सर्वात्म विज्ञान सिंधो ॥ उद्भव स्थिति प्रलय कर्म कर्ता प्रबल धैर्य सौर्य्यादिपार्थिवं सिद्धीश वर कौश लाधीश दीनार्तबंधो॥काम क्रोधोद्भवा पार क्लेशागार जन्म जन्मार्जितानेक पापघ्न ध्रुव भक्ति मुक्त्यादि स्वेच्छार्थ दाता चंड कालानल ज्वाल दग्धा कुलित तत त्रैताप तापार्त पादांति श्रीपत तासु भक्त सुत्राना ॥ १० ॥ सकल संगीत गीतज्ञ गीत

महा सर्व शृंगार सारावधीच्छा जनित कोटि कंदर्प दर्पापहर्ता॥राम श्यामांगनीलोत्पलो फुल्ल द्युति दिव्य पीतांवरा भरण शर चाप धृत राज राजेन्द्र त्रैलोक भर्ता ॥ सदय जन हृदय सर हंस नृप मौलि मणि भानु वंशावतंशाति कीर्तीशवर सत्य व्रत शुद्ध प्रेमानुगामी ॥ अखिल ब्रह्मांड व्यापक चराचर प्रभो जानकीनाथ सद्नाथ रक्षक प्रणत दीन दासोस्मि मां पातु स्वामी ॥ १६ ॥ जयति जनकात्मजा जक्तजननी प्रवल असुर संहार कारणि उधारणि धरा राम राजेन्द्र पद पद्मसेवी ॥ नाग नर यक्ष गंधर्व किन्नर अमर कन्यकाभिस्त्वमपि वंदनीया सदा त्वच्चरण सर्व पूज्यादि देवी ॥स्वक्ष सद्गीत ज्ञेया सिध्येया सित्वं रूप लावण्य स्वेच्छावपुपधारिणी धर्मधर प्रीतमाज्ञानुवर्ती ॥ रामरामाभिरामारमाधीश्वरी शुभ्र सिंहासनारूढ सौभाग्यनीराघवे वामभागानुवर्ती ॥ १२ ॥

दोहा—कुरु कुशलं प्रणमोस्तुते, देहि भक्ति निष्काम ॥
वंधुभिश्च सहसीतया, वस हृदये श्रीराम ॥ १३ ॥
सो०—इमि सुर निगम अपार, करी विनय सिय राम प्रति ॥
होत सु जैजैकार, भयो राज अभिपेक लखि ॥ १४ ॥

हरिगीतिका छंद।

तिहि समय रघुवर लक्ष धेनु सवत्स विधियुत साजिकै ॥
दीनी सु विप्रन विनय पूरक राज गादी राजिकै ॥
पुनि तीसकोटि सु हेममुद्रा दान कीनो रीतिसे ॥
गज वाजि स्यंदन वसन भूपण अमित दिये वहु प्रीतिसे ॥१५॥
पुनि पवनदत्त सु माल दीनी हर्पिकै कपिराजको ॥
भुजवंद चन्दसमान दीनो वालिसुत युवराजको ॥
वरहार जो वासव समर्पित हुलसि सो सीतहि दयो ॥
जिहिको उजास प्रकाश वहु आवासमें चहुँ दिशि छयो ॥१६ ॥
वहु वार धार उतार पुनि सो हार सियकर धारिकै ॥
छिन लखहि हनुमत ओर छिन गहि जाहि पियहि निहारिकै ॥
सो समुझि हियकी श्याम बोले देहु जिहि जिय भावही ॥
लखि लीन हम तब अंतर्गति जाहि उर उमगावही

तब सिय सकुचि हनुमंतको वह माल दीनी प्रेमते ॥
उठि कीश लै धरि शीश धारी कंठ निज दृढ नेमते ॥
पुनि तासु मणि मुक्ता अमोल सु एक एक निहारही ॥
तिन दाबि दंतन फेर हेर निवेरकै कर धारही ॥ १८ ॥
सो देखि सिय हिय कहतिहै कपिरत्नगुण कह जानही ॥
अनमोल मणि मुक्ता अनूपम तिनहि दंतन भानही ॥
यौं गुणि जु सीता मधुरबूझी वीर काह निहारहू ॥
क्यों विमलमाल विशाल दशननशाल सकल विदारहू ॥ १९ ॥
हनुमान तब कर जोर भाषी मात और न पेखहूँ ॥
या में खचितकै नाहिं है श्रीराम नाम सु देखहूँ ॥
सुनि सीय मृदु मुसक्याय बूझी कहौ कपि तव गातमें ॥
कह नाम लिपि है सो लखौं उर माथमें कै हाथमें ॥ २० ॥
हनुमंत तब निज नखनते उर बाहु चर्म विदारिकै ॥
कर जोरिकै सीतहि दिखायो चकित अंग निहारिकै ॥
हेरो सिया कपिगात अंतर राम नामहि लिपि चहूँ ॥
तिल मानहू भुज हीयतिहि बिन वपुप नहिं सूनो कहूँ ॥ २१ ॥
हनुमंत भक्ति अनन्य सत्य विलोकि सिय हर्षित भई ॥
चिरुजियहु ईश प्रसीदहीं सुत सपदि वर आशिष दई ॥
सो लखि समस्त समाज सुर नर कपिहि धन्य बखानहीं ॥
ते धन्य जन जे पवनसुतको ध्यान निज उर आनहीं ॥ २२ ॥
सो०—इहि विधि सकल समाज, लखि कपिभक्ति अनन्य दृढ ॥
कहत भक्त शिरताज, हैं हनुमान सुजान वर ॥ २३ ॥
होय राम जय शोर, तिहूँ लोक अति सुख छयो ॥
दान मान चहुँ ओर, नीति प्रीति शुभ रीति मय ॥ २४ ॥
पुनि प्रमुदित श्रीराम, वसन विभूषण विशद बहु ॥
भूमि ग्राम धन धाम, कपि ऋच्छन दीने उचित ॥ २५ ॥
लंकापतिहि अनूप, सहित निशाचर वृंद बहु ॥
दीनों रघुकुल भूप, यथा उचित नृप साज सजि ॥ २६ ॥

जाम्बवन्तको राम, मणिन जटित भूपण विविध ॥
वसन अनूप ललाम, दीने संयुत प्रीत वहु ॥ २७ ॥
पुनि वहु याचक वृंद, किये अयाची सकल विधि ॥
इमि श्रीदशरथनंद, दान मान तोपे सवै ॥ २८ ॥
चौ०--पुनि रघुवीर हिये हुलसाई ॐ लपणहि कही सनेह बढाई ॥
करों बंधु तुम कहँ युवराजा ॐ या छिन मध्य समस्त समाजा२९॥
सुनि लछमन वोले कर जोरी ॐ नाथ एक विनती है मोरी ॥
हों लघु भरत जेठ मम भ्राता ॐ तिनहि उचित पदवी यह ताता३०
तव प्रमुदित भरतहि रघुराजा ॐ युत अभिपेक कीन युवराजा ॥
लपण अधीन सकल दल राखा ॐ न्याय काज रिपुदमनहि भाखा३१
वृद्ध सुजन प्राचीन प्रवीने ॐ ते तिहुँ बंधु निकट करि दीने ॥
अपर अपार समस्त प्रधाना ॐ यथायोग राखे युत माना॥३२॥
जे जन दशरथ नृप ढिग केरे ॐ तिने राम राखे निज नेरे ॥
दान मान प्रथमहुते भूरी ॐ सबकी सब अभिलाप सु पूरी३३
वाल सखा सेवक बहुतेरे ॐ उचित मान कीने सब केरे ॥
इमि सुर नर अनंद माँधि फूले। निज निज धाम काम सुख भूले३४
दोहा—सप्त दिवसको एक दिन, भयो न अथये भान ॥
रामराज आनंदमें, कछू न कोऊ जान ॥ ३५ ॥
पुनि नट नर्तक कौतुकी, अपर अनेक समाज ॥
नर नारी तिन भूरि धन, दीनो कौशलराज ॥ ३६ ॥
ताछिन द्वै गंधर्व जे, चित्रसेन इक नाम ॥
दूजो विश्वावसुगुणी, दोऊ वर मतिधाम ॥ ३७ ॥
ते रामहि कर जोरिके, उठि वोले हुलसाय ॥
महाराज रघुवंश मणि, मम विनती यह आय ॥ ३८ ॥
पंचवर्प वय नाथकी, रही तवे हम आन ॥
महाराज अवधेश ढिग, कियो दुहूँ वहु गान ॥ ३९ ॥
ताछिन प्रभु तिहुँ बंधु युत, पितु ढिग रहे विराज ॥
सुर गुरु मंत्री नृप सखा, सेवक सकल समाज ॥ ४० ॥

तब अगस्त्य मुनि राम सों, बहु विधि करि निरधार ॥
सकल निश्चरनकी कथा, कही सहित विस्तार ॥ ५ ॥
पुनि बोले ऋषि रामसों, निश्चर प्रबल महान ॥
तब ते अति जवते दयो, पार्वती वरदान ॥ ६ ॥
जन्मतही निश्चर तुरत, माता वैस समान ॥
होत प्रौढ ताही समैं, समर योग बलवान ॥ ७ ॥

प्र० ॥ वा० उ० कां० ॥ स० ४ ॥ श्लोक ॥

पुरमाकाशगं प्रादात्पार्वत्याः प्रियकाम्यया ॥
उमयापि वरो दत्तो राक्षसीनां नृपात्मज ॥ १ ॥
सद्योपलब्धिर्गर्भस्य प्रसूतिः सद्य एव च ॥
सद्य एव वयः प्राप्तिं मातुरेव वयःसमम् ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—याते बाढत अमित नित, देत सबहि संताप ॥
सो गति अजहूँ पै अबै, करि न सकैं बहु पाप ॥ ८ ॥
गो द्विज हत्या रैनि दिन, करत हुते खल भूरि ॥
रही दुखित बहु भूमि सो, भयो सकल दुख दूरि ॥ ९ ॥
अब सु ब्रह्महत्या सदा, रही चार अस्थान ॥
प्रभुहि विदित कारण सकल, है बहु ठौर बखान ॥ १० ॥
चार मास पावस विषे, एक अंशते खास ॥
चंड ब्रह्महत्या करै, सरितन माहिं निवास ॥ ११ ॥
बहुरि ब्रह्महत्या प्रबल, सो इक अंश सदाहिं ॥
रहै निरंतर रैनि दिन, ऊपर धरणी माहिं ॥ १२ ॥
तिय रजवंतिनमें सदा, तीन दिवस लग जोय ॥
वास ब्रह्महत्या प्रबल, एक अंशते होय ॥ १३ ॥
सदा ब्रह्महत्या रहै, एक अंश तिन माहिं ॥
गो द्विज तिय शिशु आत्महन, अरु मिथ्या बतराहिं ॥ १४ ॥

प्र० वा० ॥ उ० का० ॥ स० ८६ ॥ श्लो० ॥

देवानां भाषितं श्रुत्वा ब्रह्महत्या महात्मनाम् ॥ संदधौ स्थानमन्यत्र वरयामास दुर्वसा ॥ ३ ॥ एकेनांशेन वत्स्यामि पूर्णोदासु नदीषु वै ॥ चत्वारो वार्षिकान्मासान्दर्पघ्नी कामचारिणी ॥ ४ ॥ भूम्यामहं सर्वकालमेकेनांशेन सर्वदा ॥ वसिष्यामि न संदेहः सत्येनैतद्ब्रवीमि वः ॥ ५ ॥ योयमंशस्तृतीयो मे स्त्रीषु यौवनशालिषु ॥ त्रिरात्रं दर्पपूर्णासु वसिष्ये दर्पघातिनी ॥ ६ ॥ हंतारो ब्राह्मणान्ये तु मृषा पूर्ववदूषकान् ॥ तांश्चतुर्थेन भागेन संश्रयिष्ये सुरर्षभाः ॥ ७ ॥

दोहा–इन विहाय अब और थल, रहो न पातक लेश ॥
राम कृपाते रावरी, सुखी भये सब देश ॥ १५ ॥

चौ०–जो प्रभु लंकनाथको मारा ❀ सो प्रसिद्ध तिहुँ लोक मझारा ॥
जासु तेज बल गुण प्रभुताई ❀ आपहि प्रथम समस्त सुनाई॥१६॥
जे कुकर्म वश जीव अपारा ❀ परे दुखित बहु नरक मझारा ॥
तिन उद्धारक तिहुँ पुर माहीं ❀ तुम बिन कोउ सुरासुर नाहीं१७॥
सो रावण यम जीतन काजा ❀ गो यमपुर जब सहित समाजा ॥
लखि नारकी विकल बिललाये ❀ दशमुखते सब जीव छुड़ाये १८॥

प्र० वा० ॥ उ० का० स० २१ ॥ श्लोक० ॥

रावणो मोचयामास विक्रमेण बलाद्बली ॥
प्राणिनो मोक्षितास्तेन दशग्रीवेण रक्षसा ॥ ८ ॥
सुखमापुर्मुहूर्तं ते ह्यतर्कितमचिंतितम् ॥
प्रेतेषु मुच्यमानेषु राक्षसेन महीयसा ॥९॥ इत्यादि ॥

चौ०–सो रावणहि सहित परिवारा ❀ संयुत सैन समर संहारा ॥
पुनि नृप तिलक विभीषण सारा ❀ को प्रभु सम बलवंत उदारा१९॥

दोहा–इहि विधि मुनिवर बहु कथा, कहि पुनि अस्तुति कीन ॥
भई साँझ तब सबहि प्रभु, उचित वास वर दीन ॥ २० ॥
रघुवर सादर प्रीत युत, राखे मुनिवर वृंद ॥
अपर कथा नित होत बहु, छायो परमानंद ॥ २१ ॥

मिथिलाधिप केकयनृपति, काशि नृपादि अनूप ॥
जुरे अवधमें मुदित बहु, देश देशके भूप ॥ २२ ॥
द्विज मुनि कविकोविद निपुण, याचक गुणी अपार ॥
ज्ञातिवर्ग वर धनिक बहु, नर तिय वरन सुचार ॥ २३ ॥
अपर अमित जन अवधमें, छाये सब कहँ राम ॥
मान दान सादर सकल, करि राखे निज धाम ॥ २४ ॥
बीते बहु दिन प्रीति वश, राम जान नहिं देत ॥
ते अतिही आनंदमें, भूले सकल निकेत ॥ २५ ॥

चौ०—तब मुनिगण रामहि समुझाई ❀ गये अनंदित बिदा कराई ॥
विपुलमहीप राज धन धामा ❀ रामहिं अर्पि लहो विश्रामा ॥२६॥
राम उदार धर्म धुर धारी ❀ यथा उचित नृपनीति निहारी ॥
दीन बहोरि राज्य तिन काही ❀ कोऊ यह न कीन कोउ नाहीं२७॥
राम नीति युत सब रुचि राखी ❀ तिन प्रति मधुर गिरावर भाषी ॥
सहित प्रीति नृप नीति रसाला ❀ भये बिदा मुद सकल भुपाला२८
प्रभु अनुजनलै संग नरेशा ❀ गये प्राय रघुवीर निदेशा ॥
तिनहिं राज धन अर्पण कीना ❀ उचित बहोरि ताहि सो दीना २९
विपुल वस्तु धन राज समाजा ❀ लाये अनुज निकट रघुराजा ॥
सो लखि तुरत राम सब दीने ❀ यथा योगपरितोषित कीने३० ॥
याचक भये समस्त अयाची ❀ ऋधि सिधि फिरैं अवधमें नाची॥
इहि विधि होत अनंद सदाई ❀ रामराज वसुधा सुखछाई ॥३१॥
प्रति दिन होम दान सुरपूजा ❀ करि पुनि करैं काज निज दूजा॥
ऊंच नीच जे गुणि जन आवैं ❀ तिन सबकी अभिलाष पुजावैं३२
देश कोश कृत नैनन देखैं ❀ न्याय माहिं निजपर नहिं लेखैं॥
पालैं प्रजहि पुत्र सम जानैं ❀ यथा योग सबही सनमानैं॥३३॥

दोहा—साम दान अरु दंड पुनि, भेद पराक्रम बुद्धि ॥
कृपा रोष वसुगुण उचित, चहिय भूप महँ शुद्धि ॥ ३४ ॥
ते सब युत रघुवंश मणि, राज करत निरद्वंद्व ॥
सकल चराचर लोक तिहुँ, रहत सदा सानंद ॥ ३५ ॥

चौ०—कबहुँ अहेर करें बनजाई ❀ संग सखा सेवक तिहुँ भाई ॥
कबहुँ सैन जोरें इकठाई ❀ निरखें वीर शस्त्र निपुणाई॥३६॥
होहिं प्रसन्न देहिं बकशीशा ❀ करें अनेक जनन जन ईशा ॥
कबहुँ सकल गुणि गणन बुलावें ❀ गुनाहिं परस्पर प्रगट करावें ३७॥
कबहुँ सब पुरवासिन जोरें ❀ करि बहु नीति निदेश निहोरें ॥
कबहुँ सखा सेवकन बुलाई ❀ सिखवहिं रीति प्रीति हुलसाई ३८
कबहुँ प्रात सरयू अस्नाना ❀ करहिं देहिं विप्रन बहु दाना ॥
गृह अनुजनके कबहुँ सिधारें ❀ कबहुँ सखनके भवन पधारें ३९॥

दोहा—उचित प्रजा सेवक कबहुँ, विनय करें युत प्रीति ॥
राम जात ताहू सदन, भक्ति वश्य सह रीति ॥ ४० ॥

चौ०—सब मातनके भवन सिधावें ❀ चहूँ बन्धु समभाव बढावें ॥
जननी सखी जिती बहु बामा ❀ मातसरिस सब जानत रामा४१॥
त्यों सिय सब सासुन सम जानें ❀ तिहुँ देवरन पुत्र इव मानें ॥
भगिनी नित्य आय शिर नावें ❀ जनकसुता बहु प्रीति बढ़ावें ४२॥
तिहूँ बंधु नित सिय पगपरसें ❀ बाल सखाहू चरणन दरसें ॥
पुरवासिनि रनिवास सिधारें ❀ दान मान सबही सतकारें ॥४३॥
सखा ज्ञाति गृह औसरमाहीं ❀ सासु संग आज्ञा लै जाहीं ॥
पुत्रवधू चहुँ धर्म सयानी ❀ प्रमुदित रहें निरखि सब रानी४४
तिहुँ भगिनी सिय रीति निहारी ❀ करें उचित कृत तिहि अनुसारी॥
सीता सबहि सुनीति सिखावें ❀ सो लखि सकल सासु हुलसावें४५

दोहा—पुत्रवधू चहुँ पुत्र चहुँ, परम परस्पर प्रीत ॥
धर्म रीति मर्याद कुल, संयुत सब नृपनीत ॥ ४६ ॥
इहि विधि अति आनंद युत, रहत सर्व नर नारि ॥
धन्य धन्य सुर मुनि सकल, वर्णत अवध निहारि ॥४७ ॥
प्रजा धर्मरत ज्ञान युत, विरुज सुखी गुणवंत ॥
संतति संपति सुखनिमग्न, आनँद दशहु दिगंत ॥ ४८ ॥
जन इच्छित बर्सें जलद, धरणी धान्य अपार ॥
रामराज प्रमुदित नंद, होत सु जै जै कार ॥ ४९

सीतारामहि सुमिरिकै, दृढ विश्वास कराय ॥
रसिकविहारी हीयकी, सब अभिलाष पुजाय ॥ ९० ॥
ब्रह्मादिक सुर वृंद अरु, नारदादि ऋषिराज ॥
नित प्रति आवत अवधमें, राम दरशके काज ॥ ९१ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० श्री० रामचंद्र राज्यरीति वर्णनो नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

दोहा—इहि विधि दशरथ चक्कवै, नृप सुत वर श्रीराम ॥
सार्वभौम दृढ राज्य शुभ, करत धर्म युत कांम ॥ १ ॥
मात बंधु सेवक सखा, अपर सकल नर नारि ॥
धन्य राम सब कहत हैं, प्रीति सुनीति निहारि ॥ २ ॥
समै समै प्रति होत हैं, सकल काज सब ठौर ॥
अवध भूप श्रीराम इक, तिहूँलोक शिरमौर ॥ ३ ॥
एक दिवस रघुवंशमणि, विचरत सरयूतीर ॥
संग बंधु सेवक सखा, अपर विविध जन भीर ॥ ४ ॥
लखि सरयूतट रेणुवर, मृदुल विमल रघुराज ॥
राजे ताहिंच मुदित महि, संयुत सकल समाज ॥ ५ ॥
ताछिन बहु नर नारि तहँ, ऊंच नीच सब कोय ॥
यथायोग प्रभु दरश लहि, अति आनंदित होय ॥ ६ ॥
विविध प्रजा चहुँ वरण अरु, मुनि तापस वर संत ॥
दरश करत आवत चलत, बैठत जात अनंत ॥ ७ ॥
यूथ यूथ मिलि विविध जन, इत उत निकट सुदूर ॥
बैठि यथोचित परस्पर, बतरावत सुख पूर ॥ ८ ॥
श्रीरघुनंद समीप इत, होत परम आनंद ॥
कहत सुनत रस बैन बहु, प्रमुदित सज्जन वृंद ॥ ९ ॥
सो०—[illegible] आय, [illegible] इक ॥
[illegible] अति ॥ १० ॥

सवैया कवित्त।

उत वीत गई लरकाइँ सबै वा अजानतामें कछु जानो नहीं ॥
तिमि जात जवानी कुसंगहिमें छिन एक सुसंग जु आनो नहीं ॥
कर पाय सुधा तजि दीनो मैं हाय हलाहलखाय अघानो नहीं ॥
रसिकेस वृथा यह जन्म भयो सिय रामको नाम कमानो नहीं ११

दोहा–यौं कहि पुनि कर जोरिकै, भापि विनय युत वैन ॥
अधम उधारन नाम सुनि, हौं आयो तुव ऐन ॥ १२ ॥

सोरठा–तासु विनय सुनि लीन, कछु विहँसे तिहि ओर लखि ॥
पै नहिं उत्तर दीन, तव वोले पुनि दीन वह ॥ १३ ॥

सवैया कवित्त।

गीध गयंदगनी गनिका सवरी कपि रीछहि आदि अनेकू ॥
तारे तवै रसिकेस तिनै हितकीन न लीन अलीन विवेकू ॥
पातकी मोहिँ महा लखि राम न त्यागो दयालु जु आपनि टेकू ॥
पाँवरो वावरो डावरो धावरो रावरो है अवलंब जु एकू ॥ १४ ॥
टेरत दीन ह्वै दीन जवै तवही तिहिकी सुधि लेतहो लाघो ॥
रावरि रीति सदाकी वँधी अव सो मरयादकी लीक न नावो ॥
पातक पुंज भरो रसिकेस पै धाय परो तुव पाय पै रावो ॥
राखत आयेकी लाज सबै प्रभु सामुहे जाय तौ खाय न वावो १५

दोहा–यों कहि पुनि बोलो निडर, मोहिं नहीं कछु लाज ॥
कठिन ताहि जाको विरद, होय गरीवनिवाज ॥ १६ ॥

सवैया कवित्त।

खैंच कसी है कुकर्मनते कटि शीश अधर्मनको धरो गट्टा ॥
मोहिँ न जानि परै कछु भार करौं नितकार यही हिय कट्टा ॥
योंहीं चहूं वह डोलतहौं दुहुँ कंध रटायके लोभकेलट्टा ॥
देखि दशा रसिकेस कियाजग राम जुरावरो होत है ठट्टा ॥१७॥

दोहा–सुनि रघुवर मुसक्यायकै, पुनि हेरे तिहि ओर ॥
कछू न उत्तर दीन तव, वोले वचन कठोर ॥ १८ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

करम खुटैला वरणाश्रम टुटैला मंत्र धरम छुटैला जानि पाँतिनि रँटैला है ॥ दीनको लुटैला और मलीनको कुटैला सदा आन वान

कान सान मान ते रुठैला है ॥ मनको मुटैला पातकीनको पुटैल चित्त चाहको चुटैला झूठ यशको झुठैला है ॥ रसिकविहारी तोहि नीकी भांति जानौं राम द्विजको कुटैला भीलनीको तू जुठैला है१९॥ शबरी अहल्या गणिकादि दुराचारी भारी ऐसी ऐसी घनी अधम कुनारिनको रंगी तू ॥ वायस निषाद गीध राकस अपावन ये गज कपि रीछ भूर कूरनको अंगी तू ॥ काम क्रोध लोभ मोह विवश मलीन दीन दुःखित दरिद्री इमि रागिनको ढंगी तू॥रसिकविहारी भली भाँति पहिचानो राम हौंतो तोहिं जानो है सदाते नीच संगी तू ॥ २० ॥

सवैया–कवित्त।

लूटि लयो तिहुँ लोकनमें यश भारी न काम कहूँ कछु कीधो॥
पाहन भील निशाचर कीश उधारे तिनै रहो काम सुसीधो ॥
दीनदयालु कहाय भले रसिकेस सुगीधेहो तारिकै गीधो ॥
जानि परै तुमैं राम तबै जब मोसम पातकिसे हठि वीधो ॥ २१॥

दोहा–सुनि हँसि विकल सु दीन गुणि, कृपा करी रघुवीर॥
हनुमंतहि आज्ञा दई, तिहि धराय बहु धीर ॥ २२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ये हो अंजनीके पूत देत हौं रजाय यह रसिकविहारी मो अनन्य भक्ति पावही ॥ काम क्रोध लोभ मोह दुरित दरिद्र दोष कोऊ दुख याके नेक निकट न आवही ॥ नाम रूप लीला धाम बहु गुण ग्राम सत्य सकुल चरित्र मो समस्त दरशावही ॥ सहित अनंद निर्द्वंद यश गावै भूरि फेरि ह्वै निशंक मम संनिध रहावही ॥ २३ ॥

दोहा–सुनि प्रभु आयसु पवनसुत, कही धीर दै ताहि ॥
हम तुव रक्षक हैं सदा, दोऊ लोक बनाहि ॥ २४ ॥
सुनि सुदीन कर जोरिकै, भाषी हनुमत पाहिं ॥
मो अवगुण जित देखियो, निज दिशि लखो सदाहिं ॥२५॥

घनाक्षरी–कवित्त।

कछु सकल कर्म करिहों करे मैं करों तिनकी प्रतीतिहि धारी है ॥ रसिकविहारी दृढ राखो है विश्वास येही केशरी

किशोर मम रक्षक सु भारी है ॥ ह्वैहै लोक दोऊ सुख संपति सुयश सदा सुधरै सुधारी सुधरैगी बात सारी है ॥ मेरी प्रभुताई करौ प्रभुता तिहारी यह जो पै लघुताई करौ लघुता तिहारी है ॥ २६ ॥ जानत हों नीकी भांति मेरे मैं कुकर्मनको याते अकुलात उर आवत न धीरता ॥ ये हो रामदूत अब ऐसी कृपा कीजे जाते सकल अनंद होय धार चित्त धीरता ॥ नीके कर्म कीने सब नीको फल देत सोई कीनी तुम यामें का कहावै तुव मीरता ॥ रसिकविहारी कर्म खोटे हू किये पै मोहिं नीको फल दीजे तो तिहारी वीर-वीरता ॥ २७ ॥

दोहा– सुनि हनुमत भाषी तवै, त्याग सकल अब सोक ॥
राम कृपा तुव सबहि विधि, शुद्ध भये दुहुँ लोक ॥ २८ ॥
रसिकविहारी दीन तव, कहि जैजै रघुचन्द ॥
करन लगो विनती विपुल, पुलकित परमानन्द ॥ २९ ॥
तव रघुवीर कृपालु तेहि, सादर निकट बुलाय ॥
अभय कियो कर शीश धर, गयो सुपद शिरनाय ॥ ३० ॥
रसिकविहारी दीन द्रुत, तहँ ते मुदित सिधार ॥
आय पुकारो पाहि कहि, कनक भवनके द्वार ॥ ३१ ॥
दीन गिरा सुनिकै सिया, भेजी अली उताल ॥
सपदि आय बूझो सुतव, बोलो सब निज हाल ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

रहत अनीता रंचनीता ना पुनीता कर्म धर्म ते अतीता ज्ञान गुणत न गीताको ॥ जन्म सब बीता विपरीता अंकुरीता बीच सहज अभीता हौं सभीता नाहिं भीता को ॥ काल यों व्यतीता नेक मनको न जीता कबौं कीनी ना सुरीता औ भरो ना हियरीताको ॥ वेद ना अधीता पुण्य पूरन न कीता मोहिं रसिकविहारी है भरोसो एक सीताको ॥ ३३ ॥ जाकी ओर ताकी नेक,नजरकृपा की कोर ताकी करताकी लिपि दूर कर ताकी है ॥ अमित गुण की तो क्षमा की यह काकी वाणि कीरति सुधाकी चंद्रमा की समता की है ॥ शारदा रमाकी मति छाकी क्यों समाकी होय रसिकविहारी दिन दैन किमि थाकी है ॥ दीनसुखदाकी खल मन दुख दाकी शुभ दृष्टि पुन्यपाकी मिथिलेशकी सुताकी है ॥ ३४ ॥

दोहा—रसिकविहारी दीन इमि, कह्यो नवाँहि शिर ॥
हौं आयो स्वामिनि शरण, कहिय रोगि कर जोर ॥
अली दयालु सुजाय इत, सियहि कह्यो सब हाल ॥
सुनि शिशु जानि समीप निहि, लियो बुलाय [illegible]
रसिकविहारी दीन तब, धाय चरण गहि लीन ॥
त्राहि त्राहि कहि जोरि कर, पुनि बहु विनती कीन ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कुटिल कुपंथी है कुकर्मी औ कुसंगी बड़ा कुमति कु[illegible] कपटी कुकामको ॥ कायर कलंकी क्रुद्ध कुयशी [illegible] कुवसी कठोर औ कुचाली हौं कुठामको ॥ दुष्ट दुराचारी [illegible] दरिद्री द्रोही दाया हीन दंभी दोष भाजन अदामको ॥ [illegible] सुखकारी अवलंब मोहिं स्वामिनी तिहारे पदपंकज ललाम[illegible] कीरति तिहारी तिहुँ लोक उजियारी भारी भाषे वेदचारी [illegible] दीन जनकी ॥ हौं तो हठधारी यही हृदय विचारी निज काय गति रावरे चरनकी ॥ रसिकविहारी ओरहेरिकृपा[illegible] राखेही बनेगी लाज किंकर करनकी ॥ काहु की न आश [illegible] निराश भयो मोको बडी आश सिया स्वामिनी शरनकी । जाय हौं न और ढिग दीनता सुनाय हौं न ध्याय हौं न और [illegible] को न गायहौं ॥ खायहौं न औरको प्रसाद चित्तलाय हौं न[illegible] न और शीश और को न नायहौं ॥ रसिकविहारी मैं क[illegible] रामजूको भूलिहूके कबहूं न औरको कहाय हौं ॥ गहे हठ[illegible] तौ सकल अभीष्ट फल स्वामिनी तिहारे पद पंकज ते पाय[illegible]

चौ०—दीन वचन सुनि जनकदुलारी ॥ कृपा दृष्टि करि ताहि [illegible]
रसिकविहारी शिर कर धारी ॥ कियो अभै दुहुँ लोक मझ[illegible]
सखी चारुशीलाहि बुलाई ॥ कर गहि सौंपो हिय [illegible]
शरण लह्यो मम रसिकविहारी ॥ याहि सदा राखियो सुखा[illegible]
तब सो अति अनंद उमगाई ॥ सविनय स्वामिनि पद शि[illegible]
कहनलगो दंपति गुण गाथा ॥ रसिकविहारी अति सुख[illegible]

दोहा–स्वामिनि हियकी मृदुलता, इत अलि करैं बखान ॥
उत रघुवर उर सरलता, लखि सबही सुखमान ॥ ४४ ॥
रसिकविहारी दीन ह्वै, भाषे वचन कठोर ॥
सो क्षमिकै पुनि अति कृपा, कीनी राजकिशोर ॥ ४५ ॥
क्षमा दया श्रीरामकी, लखि सब करैं बखान ॥
धन्य धन्य रघुवीर सम, स्वामी कोउ न आन ॥ ४६ ॥
ताछिन बोले राम सों, कपिपति दुहुँ कर जोर ॥
सब कहँ आदर देत प्रभु, निरखि चकित चित मोर ॥ ४७ ॥
रंच दीन ह्वै आय फिरि, करैं कोटि अपराध ॥
सो क्षमिकै कीजै कृपा, प्रभु हिय दया अगाध ॥ ४८ ॥
तब रघुवर हँसिकै कही, सुनो सखा दृढ़ बैन ॥
बडो कहावो लोकमें, यह साधारण है न ॥ ४९ ॥
धन ते गुन ते रूप ते, कुल ते वयते नाहिं ॥
बडो कहावै जाहि ते, ते लक्षण ये आहिं ॥ ५० ॥
दीननके अवगुण क्षमै, मेटै दुखित कलेस ।
यथायोग सब आदरै, सोई बडो सुदेस ॥ ५१ ॥

सवैया–कवित्त ।

जू कहि बोलै यथोचितसों अरु तू कहि बोलै न बोल कड़ो ॥
आसन देत बिठारत पास औ आवत जात जु होवे खडो ॥
योग जितो जिहि आदर होत तितो तिहि हेत सदा उमड़ो ॥
और की राखै बड़ाई भली विधि सो जगमें रसिकेस बड़ो ॥ ५२ ॥

दोहा–पुनि जगमें छोटे बडे, सब प्रकारके लोय ।
पै ऐसे अति स्वल्प हैं, शुद्ध हृदय जिहि होय ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ढूँढ़े नर नारी बहु बालक जवान बूढ़े रूढ़े और गूढे तिन बुद्धि ते बिचारे भाफ ॥ देखे तौ दुरंगी कोउ काहु के न अंगी होत स्वारथके संगी परकाज हेत आवै जाफ ॥ रसिकविहारी यही रीति में निहारी चहूँ तब या उचारी बात साँची चूक कीजो माफ ॥ दानी गुनी ज्ञानी मानी जगमें घनेरहि पै होत हैं करोरनमें

कोऊ एक जीको साफ ॥ ५४ ॥ खूबीमें खुवत कोऊ डूबत डिमाक माहिं कोऊ गरकाव है गरूर भूरमें गडे ॥ कोऊ मतवारो मतवारो वनि बैठत है कोऊ आन आन के कहे ते आन में अडै ॥ वित्त वसुधा औ वाम हेत तजि हेत सबै जिते अवलोकौ तितै एक एक ते लडै । रसिकविहारी कोउ सज्जन मिलै है तबै ताको अविलोकि घनो चैन चित्तमें चडै ॥ ५५ ॥

दोहा–तब भाषी कर जोरिकै, भरत सुमति प्रभु पाहिं ॥
काहूको कह दोष सब, माया विवस भुलाहिं ॥ ५६ ॥
काम क्रोध मद लोभ अरु, मोह प्रबल ये पांच ॥
इनके होत अधीन तब,सबहि सुरासुर नाच ॥ ५७ ॥
हैं पांचहु ये प्रवल पै, अधिक सबहि ते लोभ ।
दुहूँ लोक नाशक दुखद, करै सदा मन छोभ ॥ ५८ ॥

सवैया कवित ।

ज्यों मद मत्त मतंग बली निबली अति होत जुपंक रहै खुभि॥
ज्यों वर वीर सुधीरहु होय अधीर जबै दृग तीर अडै चुभि ॥
दारु विधीरसिकेसमालिंद ज्यों होत अधीन सुपंकजमें गुभि॥
त्यों मतिमंत रु संत गुणी बहु बेबस होत जु लोभ परै लुभि५९॥

दोहा–सो सुनि बोले लषण ते, लोभ करै भल काज ॥
विन धनके जगमें कछू, होय नहीं सुख साज ॥ ६० ॥

सवैया कवित्त ।

पैसहिते सुख होय सबै अरु पैसहिते दुख छूटत गाढू ॥
पैसहिते जग काम चलै अरु पैसहिते सतकार हो वाढू ॥
पैसा नं हो तब और कहा सुमबंधिहु होत सुद्रार न ठाढू ॥
पैसा रहै रसिकेस जु पास तो होय घने श्वशुरे अरु साढू ॥६१॥

दोहा–सो सुनि बोले शत्रुहन, सबकी है मर्याद ॥
मर्यादा युत काज भल, त्यागे ताहि विपाद ॥ ६२ ॥

सवैया कवित्त ।

ख्यात चहूँ यह ताहि कहूँ न मिलै सुख जो मर्याद चलै नवि॥
सूखतहै अति वेगहि सो जल जो सरिता सर सीम वहै नवि॥

याते अनंद चहै रसिकेस तौ लोक दुहूनकी लीक नहीं नघि ॥
देखहु कैसो कलेश लहो मिथिलेशसुता धनुरेख कढी नघि६३॥
चौ०–तबहिं विभीषण बात उचारी ❀ जो मम भ्रात सरिसनरनारी
करै सकल मर्याद विहाई ❀ ताहि कहौ का चलै उपाई ॥६४॥
सो०–सुनत वचन श्रीराम, मुसक्याने मुख वसन दै ॥
जाम्बवंत मतिधाम, तब भाषी लंकेशप्रति ॥ ६५ ॥
कोऊ हो नर नारि, क्रूर कृपण वर धर्मगत ॥
ताको संग न कारि, सबते उत्तम यत्न यह ॥ ६६ ॥
तब बोले रघुचंद, सत्य कही ऋछराजपै ॥
जो मन होय प्रबंद, करै कोउ तिहिको कहा ॥ ६७ ॥
ताछिन पवनकुमार, विनय करी कर जोरिकै ॥
कहा प्रबल उपचार, जाते मन बंधन रहै ॥ ६८ ॥
सुनि बोले श्रीराम, मन बंधन करिबो कठिन ॥
बहु सुर मुनि मतिधाम, बिबसरहैं याते सदा ॥ ६९ ॥
विविध उपाय उदंड, सो मन बन्धन हेत हैं ॥
साँचो सदा अखंड, सबते उत्तम यत्न यह ॥ ७० ॥
मनबंधनके काज, प्रीति करै सज्जन विषै ॥
त्यागि सकल जग काज, तो पुनि वेवस होय सो ॥७१॥

सवैया कवित्त।

है मति क्रूर महाबल भूर छुटै तब काहुके हाथ न लागा ॥
ज्ञान विराग जंजीरन ते जकरो तिन तोरि फिरै चहुँ भागा ॥
जो रसिकेसनिशंक चहै तरु लाज ढहावत है मदपागा ॥
सो मन मत्तमतंग अधीन ह्वै आप बँधै हठि प्रेमके धागा ॥७२॥
दोहा–यों कहि बोले फेरि पै, कीजे प्रेम विचारि ॥
हो अनंद दुहुँ ठौर जिहि, सो लीजे निरधारि ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त ।

प्रीति निभै न कबौं तिहिसों जिहिके हिय मां हिम अंनग्हायद ॥
तासों मिलै न कबौं सुख काहुको जा मनमें कट मध्य बसायप॥

[illegible] [illegible] [illegible] इहिसों जिय जाको सदा सर और जनाय
जो [illegible] इहि भाँति तौ नंदके आदि हमेश मिलाय
दोहा—[illegible] जो कान न कीजिये, जाते लघुता होय ॥
नीति [illegible] [illegible] [illegible] करै काम भल सोय ॥ ७६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लौकी वात तासों कहै जाको जो गंभीर होवै वासों कहिये
जो कहत फिरै चहूँ ॥ जैसे [illegible] पात्र जो गयेको पास राखै
जौन मान राखै तौ न जैसे [illegible] होनहूं ॥ रसिकविहारी होय नेही
सनेह कीजे नेही जो न होवै त्यागि दीजे भूपहो जहूँ ॥ आन
मान सान कान निज [illegible] [illegible] [illegible] ठान ठानै घर वाहर रहैंकहूँ७
दोहा—ताहिन [illegible] [illegible] [illegible] दुखमें सुधि न रहाय ॥
तब [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहै धीर सो आय ॥ ७७ ॥

सवैया कवित्त ।

ठूठहु नाहिं रहै तरु कोट नवै जब लागत है वन ठाढा ॥
वृक्ष जु कोउ नरै उजरै विन शाख सुपत्र रहै तहँ ठाढा ॥
सो फिरि होत हरो रसिकेश सपल्लव फूलै फलै वहु वाढा ॥
त्यों सुख आन न त्यागै कवौं कहुँ कैसहु आय परै दुख डाढा७८
दोहा—कोउ सौंचे जीयते, शुभ प्रणगहै दिढाय ॥
ताहि प्रथमहो दुखहुतो, अंत सुखहु ध्रुव आय ॥ ७९ ॥

सवैया कवित्त ।

ज्ञास कछू न कवौं तिहिको जिहिको जिय रंचहु होय न काचू ॥
चाहै इकंतरहै नितही अरु बैठहि चाहै सदा मिलि पांचू ॥
सत्य सुसत्यहि सत्य भलो रसिकेश कहौं ध्रुवरेखहि खांचू ॥
देखो सिया प्रहलाद भिया इमि साँचहि आवै कवों नहिं आंचू८०
दोहा—राम वचन सुनिकै तवहि, कह सुकंठ कर जोरि ॥
नाथ सिया प्रहलाद सम, ह्वैहै दृढ़ता थोरि ॥ ८१ ॥
[illegible] रघुवर भाषी सखा, लोक अमित नरनारि ॥
। अवगुण मिश्रित सकल, हेरो बुद्धि विचारि ॥ ८२ ॥

पैहो दुर्गुण गुण कहूँ, गुण कहुँ दुर्गुण होय ॥
प्रकृति समै अरु विवश वश, गुण अवगुण दुहुँ जोय ॥८३॥
याते जे बुधिमंत ते, करत समस्त विचार ॥
सत्य शुभाशुभ शुद्धता; सब विधि लेत निहार ॥ ८४ ॥
केते अंतर शुभ सकल, ऊपर लगत कुभेष ॥
केते अंतर अशुभ पै, प्रगट परैं शुभ देख ॥ ८५ ॥
सो अंतरगति लपणकी, बुद्धि सहज नहिं होय ॥
करै घनो सतसंग सो, ज्ञान चहै जो कोय ॥ ८६ ॥
विना ज्ञान गति अंतरी, नहीं परै पहिचान ॥
विन पहिचाने शुभ अशुभ, कर्म किये बहु हान ॥८७॥
याते मो मत है यही, भाषों सहित उमंग ॥
सकल कुसंगहि त्यागि कै, सदा करै सतसंग ॥ ८८ ॥
सुनि रघुवरके बैनवर, मुदित भये सब कोय ॥
दृढ़ धारी सतसंगते, दुहूँ लोक सुख होय ॥ ८९ ॥
इहि विधि वाक्य विलास बहु, होत अनेक प्रकार ॥
कहत सुनत सब जन उचित, सह चहुँ राजकुमार ॥ ९० ॥
अपर अनेक विनोद वर, नृत्य गान रस रंग ॥
हास विलास सुहोत बहु, सब उर भरी उमंग ॥ ९१ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० वाक्य विलास
वर्णनो नाम चतुर्थो विभागः ॥ ४ ॥

दोहा—श्रीकोशलपति निकट इत, होत अपार अनंद ॥
इत जहँ तहँ बैठे विविध, कहत सुनत जन वृंद ॥१॥
संत विप्र मुनिमंडली, जुरी होत सतसंग ॥
वर्णत सुमुख मुनीशवहु, प्रभु यश सहित उमंग ॥ २ ॥
ताछिन सुमुख मुनीशने, बोले रूपि सुवज्ञ ॥
कहिय कृपानिधि शैनिधि, मुनिवर वर सर्वज्ञ ॥ ३ ॥

चौ०-सुनि मुनि सुमुख परम सुखमाना ❀ तिन सराहि बोले मतिमाना
हो वसिष्ठ सुत परम प्रवीना ❀ तुमहि विदित सब हम लखि लीना॥४॥
पै कछु निज मतिके अनुसारा ❀ कहिहों यदपि सुभेद अपारा॥
है परन्तु यह गुप्त बखाना ❀ याते वरणौं सभा प्रमाना ॥५॥
पुनि कबहूं येकांत मझारा ❀ कहि हैं हम समेत विस्तारा॥
यह उपासना रीति अनूपा ❀ जानिलहै जन शुद्ध स्वरूपा ॥६॥
यों कहि पुनि बोले मुनिनाथा ❀ सुनिय सुयज्ञ विशदवर गाथा॥
परम गुप्तसो गुप्तहि रापौं ❀ है प्रसिद्ध योगै सो भापौं ॥७॥

दोहा—सुर नर सब रघुचंदको, ध्यावैं मन वच कर्म ॥
करैं अनन्य उपासना, लहैं शुद्ध पद पर्म ॥ ८ ॥
सो उपासना पंचविधि, मुख्य प्रथम शृंगार ॥
सख्य दास्य वात्सल्य पुनि, है ऐश्वर्य विचार ॥ ९ ॥
जो अपने हित सत्य यह, राखे सदा विचार ॥
हम दंपति की हैं सखी, सो जानौं शृंगार ॥ १० ॥
याही अंतर दासिका, आदिक भाव अनेक ॥
मिथिला अवध प्रसंग युत, जानौ सहित विवेक ॥ ११ ॥
जो दृढ जानै हीय दृढ, अपने हेत सदाय ॥
राजकुँवरके हम सखा, सोई सख्य कहाय ॥ १२ ॥
सुहृद नर्म सचिवादि बहु, भेद सकल इहि माहिँ ॥
जाति विजाति कुटुंब कुल, रीति घनी दरशाहिं ॥ १३ ॥
जो ध्रुव दशरथनंदको, सेवहि स्वामी जानि ॥
सत्य दास हो आपतिहि, दास्य उपासन मानि ॥ १४ ॥
मात पिता गुणि आप कहँ, जो दृढ प्रीति कराय ॥
बाल लखै दशरथ सुतहि, सो वात्सल्य कहाय ॥ १५ ॥
जो श्रीराजकिशोरको, परब्रह्म दृढ मानि ॥
ध्यावै सबचर अचरमें, सो ऐश्वर्य बखानि ॥ १६ ॥
ये वर पंच उपासना, तिनके निज निज ठाम ॥
सकल उपासक जन लहैं, जहाँ मोद विश्राम ॥ १७ ॥

चौ०-जिते उपासक हैं शृंगारी ❀ तिहूँ लोक कोउ नर नारी ॥
तिनको पूजनीय है जानो ❀ कनकभवन वर मुख्य बखानो १८
सख्य उपासक हेत प्रमाना ❀ रंगभवन है पूज्य प्रधाना ॥
दास्य जनन लग रतन सिंहासन ❀ जो वरराज्य तिलकको आसन१९
वातसल्य जन हित सो ठामा ❀ जन्मसदन जहँ प्रगटे रामा ॥
थल ऐश्वर्यिनको वह आई ❀ बैठि जाहिं जहँ ध्यान लगाई२०

दोहा-पंच उपासकहेत ये, मुख्य पंच अस्थान ॥
अपर सवहि सव पूज्य है, सरयू अवध प्रधान ॥ २१ ॥
याही विधि सिय रामको, ध्यावत हैं सव कोय ॥
भुक्ति मुक्ति वर भक्ति रुचि, होय सुपूरित होय ॥ २२ ॥
जे प्रवीन ते भूलिहू, भक्ति मुक्ति नहिं चाय ॥
निज सुभक्ति सिय रामकी, चाहत कृपा सदाय ॥ २३ ॥
अति उदार मृदु चित्त पुनि, समरथ सीताराम ॥
रसिकबिहारी हीयके, पूजें सवही काम ॥ २४ ॥
अतिसमर्थ सिय राम सों, होहि भक्ति आधीन ॥
भक्ति नाम आधीन है, नाम सुगुरु आधीन ॥ २५ ॥
गुरु सतसंग अधीन है, संग सुभाग्य अधीन ॥
भाग्यहीन वहु जन्मके, ले पति कर्म मलीन ॥ २६ ॥
सो कुभाग्यको जो चहै, हो सुभाग्य सुखधाम ॥
तौ अनन्य दृढ नेम ते, सुमिरै सीताराम ॥ २७ ॥
सुनि सुयज्ञ आनंद है, कही सहित सनमान ॥
धन्य धन्य ऋषिराज वर, वहु गुणज्ञान निधान ॥ २८ ॥
ताछिन अपर सुभक्त वर, बोले शीश नवाय ॥
मुनिवर पुनि उपदेश कछु, कीजे कृपा दिढाय ॥ २९ ॥
जाते दोऊ लोकको, होय शुद्ध निरवाह ॥
सोई शिख शुभ दीजिये, दाया युत मुनिनाह ॥ ३० ॥
तब मुनि बोले प्रेम युत, प्रश्न करौ तुम जोय ॥

दुहूँ लोक अनुकूल हम, उत्तर देवैं सोय ॥ ३१ ॥
सुनि प्रमुदित है सुमति जन, है इक मुख सब कोय ॥
करत प्रश्न मुनि तासुको, उत्तर वर्णत जोय ॥ ३२ ॥

प्रश्न ॥ करैक्या ? ।

उत्तर–सिया राम भजिये सदा, करै दान सनमान ॥
सतसंगति दाया क्षमा, येही बात प्रधान ॥ ३३ ॥

प्रश्न ॥ संग किसका करै ? ।

उत्तर–संत सुजन पंडित चतुर, इनको कीजे संग ॥
कै अपने दृढ़ मीतको, जानो वैन अभंग ॥ ३४ ॥

प्रश्न ॥ सज्जन कौनहै ? ।

उत्तर–दयावंत दानी गुनी, रामभक्त रतधर्म ॥
अविरोधी सज्जन भले, शुभ संतत सत कर्म ॥ ३५ ॥

प्रश्न ॥ दुर्जन कौनहै? ।

उत्तर–धर्म विरोधक पापरत, कपटी लोभी जान ॥
रामविमुख दुर्जन लखौं, वचन सबै दृढ़मान ॥ ३६ ॥

प्रश्न ॥ सुखकाहेमेंहै? ।

उत्तर–राम भजन दानादि बहु, सुख है प्रीय मिलाप ॥
येकाकी सुनिरास पुनि, जानो सज्जन आंप ॥ ३७ ॥

प्रश्न ॥ दुखकाहेमें है ? ।

उत्तर–राम विमुख दाया रहित, दुखहै प्रीय विछोह ॥
परवश निर्धन निर्गुणी, वचन सबै जन जोह ॥ ३८ ॥

प्रश्न ॥ मित्र कौंहै? ।

उत्तर–विद्यामित्र बखानिये, पुनि चित भावै सोय ॥
तन मन धनते जो चहै, लखौ सुजन सब कोय ॥ ३९ ॥

प्रश्न ॥ पढ़ै क्या? ।

उत्तर–सधै लोक परलोक दुहुँ, बढै हिये आनंद ॥
सोई पढ़िबो चाहिये, होवै बुद्धि अमंद ॥ ४० ॥

प्रश्न ॥ सुनिये क्या ? ।

उत्तर–राम कथा सुनिये सदा, चतुराईकी बात ॥
विविध प्रसंग सुग्रंथके, लखौ सुजन अवदात ॥ ४१ ॥

प्रश्न ॥ रहिये किस रीति?।

उत्तर–सबसों नमि रहिये घने, मनमें दीन सदाय ॥
लोक वेद दोऊ लिये, समुझौ सुजन दिढाय ॥ ४२ ॥

प्रश्न ॥ जाना किस जगे?।

उत्तर–जैयेकैती स्थनकै, राम कथा जहँ होय ॥
कै दुहुँ लोक बनै तहाँ, यह समुझौ सब कोय ॥ ४३ ॥

प्रश्न ॥ कमावै क्या?।

उत्तर–नाम कमावै रामको, कै यश लोक मझार ॥
कै सुख दोऊ ठौरको, लीजे वचन विचार ॥ ४४ ॥

प्रश्न ॥ विचारै क्या?।

उत्तर–लोक और परलोकको, कीजे सदा विचार ॥
आपरूप पररूपको, वचन सुनौ यह सार ॥ ४५ ॥

प्रश्न ॥ त्यागिये क्या?।

उत्तर–कामादिक चारहु तजो, पुनि जो सियवर हीन ॥
अरु कुसंग अभिमानको, जानौ वचन प्रवीन ॥ ४६ ॥

प्रश्न ॥ गहिये क्या?।

उत्तर–गहिये सकल सुधर्म निज, गुणधीरज मन नैन ॥
नेह नेम अरु शत्रुकों, ये जानौ दृढ़ बैन ॥ ४७ ॥

प्रश्न ॥ शत्रु को है?।

उत्तर–तन धन हित घातक रिपू, अरु कामादिक जान ॥
कुसमय सम शालक सदा, वचन लेहु दृढमान ॥ ४८ ॥

प्रश्न ॥ विश्वास किसका करै?।

उत्तर–श्रीसीता अरु रामको, चहिये दृढ विश्वास ॥
कै पुनि साँचे मित्रको, मानो वचन सुपास ॥ ४९ ॥

प्रश्न ॥ गुरू को है?।

उत्तर–भव बन्धन छोरै सबै, ताको गुरू बखान ॥
रक्षक अरु शिक्षक लखौ, हेरो दरपि सुजान ॥ ५० ॥

प्रश्न ॥ मोक्ष कैसे होवै?।

उत्तर–राम भक्ति हिंसा रहित, जानौ मोक्ष प्रमान ॥
सँच सुपर संतापमें, गहियो वचन प्रधान ॥ ५१ ॥

प्रश्न ॥ नरककाहे से होयहै? ।

उत्तर–पर पीडित निंदा निरत, हिंसक राम विरोध ॥
गुरु द्विज शाप सुमित्रकी, नरक होय जिय शोध ॥ ५२ ॥

प्रश्न ॥ अमर कौन है? ।

उत्तर–सुकृती सुयशी रामरत, योगी योग प्रवीन ॥
सदा अमर सो जानिये, वेद वचन रसलीन ॥ ५३ ॥

प्रश्न ॥ मृतक कौन है ? ।

उत्तर–राम विमुख अयशी सदा, मृतक समान सुजान ॥
नीच देव सेवक सबै, देखों वचन प्रमान ॥ ५४ ॥

प्रश्न ॥ सार क्या है ? ॥

उत्तर–प्रीति राम द्विज संतमें, दया अधिक जिय माहि ॥
ज्यों चाहै त्योंही रहै, सार गहै शुभ ताहि ॥ ५५ ॥
इहि विधि प्रश्न अनेकके, मुनिवर उत्तर दीन ॥
पुनि सबही दिशि हेरिकै, बोले वचन प्रवीन ॥ ५६ ॥
लोक और परलोकमें, सुखद सत्य शुभसार ॥
राम नाम सांचो सदा, अपर असत्य असार ॥ ५७ ॥
यातें कैसहु कीजिये, भजन बनै जिमि जोय ॥
भाव कुभाव सुविधि अविधि, राम जपे सुख होय ॥ ५८ ॥
सियाराम की भक्ति दृढ, सियाराम गुणग्राम ॥
सियारामकी ध्यान नित, सियारामको नाम ॥ ५९ ॥
नाम प्रभाव अपार है, विधि हरि हरहु न जान ॥
मैं वरणौं किहि भाँतिते, अति मतिमंद अजान ॥ ६० ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ताप दूर करबेको सीतकर सोहैसीत तमके नशायवेको भानुकी समान है ॥ बुद्धिके बढायवेको शारदासे बुद्धिवंत वित्तपूरिवेको जो कुबेर सो महान है ॥ पालिवेको विष्णु उपजैवेको विरंचि , खलके संहार हेत शंभुसो प्रधान है ॥ अभिमत देनवारो रामनाम

कामतरु रसिकविहारी भला राम नाम गान है॥६१॥काम क्रोध लोभ मोह मारवेको मारन है विधि हरि हर आदि मोहिवेको यंत्र है॥ महा दुख दारिद्र त्रितापको उच्चाटन है आकरपवेको सुख संपतिको तंत्रहे ॥ कठिन कुचालरत इन्द्रिनके हेत असतंभन प्रबल भूरि परम सुतंत्र है ॥ रसिकविहारी राम नाममें प्रयोग पट रामवश्य करवेको वसीकर मंत्रहे ॥ ६२॥ जगत अथाह सिंधु भरोहै कुमति नीर पावत न थाह कोऊ सुर मुनि राज हैं ॥ काम क्रोध लोभ मोह भँवरगंभीर परे तामें जलजंतु भूर वासनादराज हैं ॥कोऊ बहें बूडे कोऊ बूड बच डूब पुनि कोऊहैं विकल चढे ज्ञानकी जहाज हैं॥ तेईहैं निशंक भये रसिकविहारी पार रामनामसेतुपे चले जे तजिकाज हैं ॥६३ ॥ नामके भरोसे सब भाँतिते निशंकरहैं लोक परलोकको उपाय ना करत हैं॥ नामके भरोसे उपजावैं विधि पालैं हरि हरहू संहारे नाम ओटले तरत हैं॥नामके भरोसे भील सबरी सुगीध कीश भये बडभारी राम जाको सुमिरत हैं ॥ रसिकविहारी राम नाम अवलंब वडो जाते दिन रैनि यमराज हू डरत हैं ॥ ६४ ॥

दोहा—ऐसो नाम अनूप जो, नहिं सुमिरै मन लाय ॥
कोऊ कैसहु होय तिहि, जन्म अकारथ जाय ॥ ६५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

योग जप साधे कोटि देव अवराधे करै संयम समाधि निरूपाधि हो न पावना ॥ ज्ञान अरु ध्यान मान पूजा असनान दान निगम पुरानके बखान सुख आवना ॥ तीरथ घनेरे नेम यज्ञ बहुतेरे प्रेम रसिकविहारी रूप फेरते सुहावना ॥ येते हैं निकाम कोऊ कामके न काम कछु हू हैं नहिं काम जौलौं राम नाम ध्यावना ॥ ६६ ॥ पढो चारो वेद औ अठारह पुराण पट शास्त्र यंत्र मंत्र तंत्र आदिक प्रवीनता ॥ गान तान आदिक अनेक विद्यामें प्रधान बहु गुन ज्ञान धन मानननमें पीनता ॥ रूपमेननीके मनिमंत औ कहावै नंत फिरेमे दिगंतनमें जैदना अधीनता ॥ रसिकविहारी नव भाँति भलो चाहो-तोपे जपो राम नाम जाते मिटत मलीनता ॥ ६७ ॥

सवैया कवित्त।

सी कहते सब सिद्धि मिलै अरु ता कहते तन आनँद आवै॥
रा कहते रस होत महा कहतेही मकार महत्व बढ़ावै॥
जो रसिकेस प्रतीति समेत सुवर्ण भले ये चहूँ चित लावै॥
होय उजागर लोक तिहूँ विचताहि हिये सियराम लगावै॥६८॥

दोहा—कहत राम सीता मिलत, सीता कहतहि राम॥
रीति अनोखी देखिये, सुमिरत सीता राम॥ ६९॥
राम विना सीताभजै, सीता विन जो राम॥
होय ताहि फल है सकल, पूरो पुजैन काम॥ ७०॥
जे जन प्रीति प्रतीति युत, सुमिरें सीता राम॥
सुख पावैं दुहुँ लोकते, लहैं सदा विश्राम॥ ७१॥

प्र० ॥ गुणावली ग्रंथे ॥ श्लो० ।

सीतया सहितं रामं सीतां रामेण संयुताम्॥
न स्मरेत्स फलं पूर्णं लभते न कदाचन॥ १॥

घनाक्षरी कवित्त।

प्रीति राम नाम सों प्रतीति राम नाम सों सुरीति राम नाम सों सबहि भाँति भांतिये॥ आशराम नामसों विलास राम नाम सों सुपास राम नाम सों अनेक विधि जानिये॥ लोक राम नाम परलोक राम नाम सों हे रसिकविहारी सो विचार चितठानिये॥ राम नामको विहाय पावै जो पियूष सोहै हलाहल की समान तामें धूर सानिये॥ ७२॥

दोहा—करे लोकपरलोकके, साधन वृथा निकाम॥
भये सकल निष्फल जु पै, भजे न सीता राम॥ ७३॥

सवैया कवित्त।

मूड़ मुंडाय न्हाय के साधु लगाई विभूति कहा तो भयो॥
जग लोग रिझाय बने रसिकेश रचोहन धाम कहा तो भयो॥
नख केश बढाय बिछायके चाम धरो बक ध्यान कहातो भयो॥
हठनेह न लायो सियावर सों नरजन्म लियेही कहातो भयो॥७४॥

घनाक्षरी कवित्त।

रूप गुण धनमें जु शंका अति होत आय त्याग औ विरागमें अनेक विघ्न लेखिये ॥ रसिकविहारी यज्ञ योगमें उपाधि भारी देहमें मरन नेहमें विछोह पेषिये ॥ भूत प्रेत पूजे गति अंतकी नशात सबै जगमें वृथाही पचि दुःख अवरेखिये ॥ जामें अव-लोकौ एक एक है कलंक तामें सीता राम नामैं निकलंक सदा देखिये ॥ ७५ ॥

दोहा–सीता राम सुनाम यह, सकल सिद्धिको मूल ॥
ताहि त्यागि साधत अपर, साधन मति भ्रम भूल ॥ ७६ ॥
सो यह भ्रम सतसंग विन, कवौं न होवै दूर ॥
याते तजै कुसंग सब, जो चाहै सुख पूर ॥ ७७ ॥

सवैया–कवित्त।

ग्राम नशै धन धाम नशै सुत वाम नशै सब काम कुढंगू ॥
राज नशै सुख साज नशै जग लाज नशै औ नशै वर अंगू॥
मान नशै तन प्राण नशै गुण ज्ञान नशै दुख होय अभंगू ॥
याते सुदूर रहौ रसिकेश जु भूलि कवौं करियो न कुसंगू ॥७८॥

दोहा–पै कहुँ कहुँ संसारमें, धूतहु धरत सुभेप ॥
याते बुद्धि विचार युत, संग कीजिये देख ॥ ७९ ॥

सवैया–कवित्त।

डिंभ दिखावत लोगनको अति झूठे सुनावत ज्ञानके गाथे ॥
औरनको उपदेशैं विराग सु आप वने जगजालमें गाथे॥
वैलसे डोलत हैं नित गल करैं वहु फैलहु लोभसे नाथे ॥
ऐसन ते रसिकेसवचै हठि सोई नशै जो लगैं इन साथे ॥ ८० ॥
औरहि कारि सुझावहि ते सुजन अपनेहीं न औगुण सूझे ॥
औरहि कारि बुझावहि ते नर आपुहिं जे सब भाँति अवूझे ।
औरहिते सुरझावहिका अति आपुहि जे जग जाल अरूझे ॥
भापतहैं रसिकेस सुनौ लखि भेप पनावनहीं विनवूझे ॥ ८१ ॥

अंकन भागे गुणे उनपै उन अंकन भागि गुणे न करै हठु॥
जो गति गूढ विचारो चहै रसिकेश तौ रामको नाम भले पठु१००
दोहा–ग्रह साँचे फल सत्य पै, राम नामको इष्ट॥
जाहि न सो जाने कहा, निजपर इष्ट अनिष्ट॥ १०१॥
सो सुनिकै इक मंत्रविद, विप्र कही हुलसाय॥
नाम मुख्य पै औरहू, मंत्रादिक सु उपाय॥ १०२॥
ग्रन्थन माहिं अनेक हैं, देव सिद्ध समुदाय॥
जाते कारज सिद्धिं सब, गति त्रिकाल दरशाय॥ १०३॥
तब तापस तिहि प्रति कही, कही सत्य तुम जोय॥
जाने नामप्रभाव तिहि, और न भावे कोय॥ १०४॥

सवैया कवित्त।

टूटत है जग मोह जबै तब छूटत है सब दुःख विषादू॥
होत विराग विशेष हिये कछु फेरि न भावत वाद विवादू॥
रामके नामहिमें दृढ प्रीति प्रतीति रहे रसिकेस अनादू॥
नाम बिहायकै और सुहाय न मंत्र न यंत्र न तंत्र न जादू १०५॥
दोहा–यों कहि भाषी जटिल पुनि, सबहि सुनाय पुकार॥
राम नाम बिन और जो, जपै तासु मुख छार॥ १०६॥
तापस परम प्रवीन लखि, सुमुख सुयज्ञ तुरंत॥
सादर कर गहिकै निकट, बैठारो गुणि संत॥ १०७॥
ताछिन एक सुभक्त वर, कह सुयज्ञ प्रति दीन॥
काह करौं जिहि नाशहीं, मोकृत कर्म मलीन॥ १०८॥
सुनि सुयज्ञ बोले मधुर, हरि गुरु कृपा विहाय॥
कोटि जतन कोऊ करै, तऊ न दुरित नशाय॥ १०९॥
जो कोऊ गुरु विमुख हो, अथवा गुरू न कीन॥
कृपा आश प्रभुकी धरै, सोई है मतिहीन॥ ११०॥

सवैया कवित्त।

ढेर सुमेर सो कंचन दान करै नित जायकै क्षेत्र कुरू॥
धेनु अलंकृत कोटिन देतन अक्षत नीरते रीते चुरू॥

मान प्रमान यही रसिकेश चहूँ युग भाषत धर्म ध्रुहू ॥
कैसहु राम न रीझत काहु पै तो लग जौलों द्रवै न गुरू॥१११॥

दोहा—गुरुद्वारा प्रभु शरण है, सदा जपै शुभ नाम ॥
तो दुहुँ लोक अनंद हो, कृपा करैं सियराम ॥ ११२ ॥
राम नाम सुमिरै सदा, करै शक्तिसम दान ॥
तो नित सुख संपति बढै, होय नहीं कछु हान ॥ ११३ ॥
सुन सुभक्त सविनै कही, कहिय भजो नित सोय ॥
तव द्विज दै नामावली, कह याते भल होय ॥ ११४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सीतानाथ १ सीतावर२सीताकंत ३ सीतापति ४ सुंदर५ सुजान६ सुखमानिधान ७ शोभासिंधु ८ ॥ रसिकविहारी ९ हृषिकेश १० रघुचंद ११ राम १२ बुद्धिवर १३ दाता १४ वेद ज्ञाता १५ वीर १६ विद्यासिंधु १७ धाता १८ दीनत्राता १९ दुष्टघाता २० दुःखहाता २१ दोषदारिद्रनिपाता २२ देव २३ पाता २४ दाता२५ दयासिंधु २६ ॥ अवधभुवाल २७ भक्तपाल २८ रघुलाल २९ प्रात लेवें तीस नाम ये सप्रेम द्रवैं—दीनबंधु ३० ॥ ११५ ॥

दोहा—पुनि सुयज्ञ भाषी तवै, सवही प्रति दृढ़ वात ॥
याते सवही नारि नर, हो भुव मंडल ख्यात ॥११६॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

झंडा औ निसान के निसान ते न जाने कोऊ जाने है न कोऊ द्वार दुंदुभी वजायेते ॥ ऊंचे महिलानके उठानते न जाने कोऊ जाने है न कोऊ मत्त गजके बंधानते ॥ सानते न जाने औ गुमानते न जाने धन धाम ते न जाने कोऊ कोटिहू विधानते ॥ रसिकविहारी चार वातते जहान जाने विद्या दानि ध्यान ते कृपान ते सुदानते ॥ ११७ ॥

दोहा—सुनि सुभक्त आनंद है, हृदै धरे दृढ़ वैन ॥
अपर विविध जन मुदित भे, जे बुधि विद्या ऐन ॥ ११८ ॥
इहि विधि सरयूतीर मधि, वाक्य विलास उमंग ॥
राज समाज समेत वहु, भयो विशद सत्संग ॥ ११९ ॥

धर्म नीति वरज्ञान कथा कहि सबहि सुधीर धराई ॥
पुनि बोले तुम सकल हमारे हिय विच बसो सदाई ॥
सखा सुकंठ प्राण ते प्यारे तुमते उऋण सु नाहीं ॥
तिमि लंकेश ऋच्छपति मेरे भरत लषण सम आहीं ॥ ६ ॥
हनूमान अंगद नीलादिक सकल प्राण सम प्यारे ॥
मो जियहोत यही काहूको छिन भरि करों न न्यारे ॥
पै नृप धर्म प्रजापालनको सो न आप विन होवै ॥
याते जाहु सदल तिहुँ भूपति सकल सुजन मुख जोवै ॥ ७ ॥
सुनि सब विनय करी बहु प्रभु सों भरे नैन विच नीरा ॥
पुनि वर नीत प्रीत मृदु कहिकै दई राम तिन धीरा ॥
यों कहि निकट बुलाय सुकंठहि दीन सु अंग प्रसादा ॥
निजकर सखहि विभूषितकीने भरे हृदय अहलादा ॥ ८ ॥
ऋच्छपाल लंकेशहि रघुवर सादर निज कर दीने ॥
भरत वेगि उठिकै दुहुँ भूपन प्रमुदित भूषित कीने ॥
अपर यथोचित राज साज बहु सादर दिये कृपाला ॥
सनमाने सब भाँति नेह युत राम तिहूँ भूपाला ॥ ९ ॥
अंगद नील नलादि मुख्य तिन लछमन अरु रिपुशाला ॥
हित करि यथायोग पहिराये शिख नख साज विशाला ॥
बहुरि विभूषन वसन अनूपम रघुवर भूर मँगाये ॥
कीश भालु निश्वरन यथोचित सन्मुख सबहि दिवाये ॥ १० ॥
ताछिन हनूमान उठि वेगें रामचरण धरि माथा ॥
पुलकित गात दीन ह्वै विनती करी जोरि युगहाथा ॥
मो अभिलाष नाथ यह तव पद सेवों निकट सदाई ॥
जबलग प्रभु चरित्र महि तबलग श्रवण करों हुलसाई ॥ ११ ॥
लखि हनुमंत प्रीति रघुनंदन उठि गहि अंक लगायो ।
एवमस्तु कहि विशद हार निज लै प्रमुदित पहिरायो ॥
पुनि अंगदहि गोदलै सुत सम कियो प्यार बहु रामा ॥
तासु भार सुग्रीवहि दीनो भापि वन सुख धामा ॥ १२ ॥

संध्या वंदन करि मुदित, सकल समाज समेत ॥
द्वै घटिका बीती निशा, गवने राम निकेत ॥ १२० ॥
यौंही नित प्रति होत है, अवध परम आनंद ॥
कहैं नारि नर वृंद सब, जै जै जै रघुचंद ॥ १२१ ॥

इति श्री रा० र० अ० वि० सत्संगवर्णनो नाम पंचमो विभागः ॥ ५ ॥

दोहा—इमि नित सुखमधि बीति गो, मास अधिक इक वर्ष ॥
नृपति सुकंठादिक तिहूँ, दल युत रहैं सहर्ष ॥ १ ॥
कीश ऋच्छ निश्चर सकल, पल मद मधु पकवान ॥
अशन पान प्रमुदित करैं, सहित प्रीत सनमान ॥ २ ॥

प्र० वा० ॥ उ० कां० ॥ स० ३९ ॥ श्लोक ॥

ते पिबंति सुगंधीनि मधूनि मधुपिंगलाः ॥ मांसानि च सुमिष्टानि मूलानि च फलानि च ॥ १ ॥ एवं तेषां निवसतां मासः साग्रो ययौ तदा ॥ मुहूर्तमिव ते सर्वे रामभक्त्या च मेनिरे ॥ २ ॥ रामोपि रेमे तैः सार्धं वानरैः कामरूपिभिः ॥ राक्षसैश्च महावीर्यैर्ऋक्षैश्चैव महाबलैः ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—ऋच्छ कीशतिय भूरि तिन, नित रनिवास मझार ॥
सादर बहु नूतन विविध, होत सकल सतकार ॥ ३ ॥

दोवई छंद ।

लंकनाथ हरिपाल ऋच्छपति सदल सकुल यह चावैं ॥
इतहि रहिय नित कबहुँ नाथ अब हमें न गेह पठावैं ॥
तिनको परमनेहु रघुवरमें राम प्रेम तिन माहीं ॥
दोऊ हिये परस्पर चाहैं कोउ न छिन बिलगाहीं ॥ ४ ॥
तब रघुवीर ज्ञाननिधि हियमें दृढ विचार ठहरायो ॥
राज साज धन धाम कुटुम इन मो हित सकल भुलायो ॥
पै अब निज निज गेह सिधारैं लखैं काज जन जाई ॥
इमि गुणि सभा मध्य प्रभु बैठे लीजे सबहि बुलाई ॥ ५ ॥

धर्म नीति वरज्ञान कथा कहि सबहि सुधीर धराई ॥
पुनि बोले तुम सकल हमारे हिय विच वसो सदाई ॥
सखा सुकंठ प्राण ते प्यारे तुमते उऋण सु नाहीं ॥
तिमि लंकेश ऋच्छपति मेरे भरत लषण सम आहीं ॥ ६ ॥
हनूमान अंगद नीलादिक सकल प्राण सम प्यारे ॥
मो जियहोत यही काहूको छिन भरि करों न न्यारे ॥
पै नृप धर्म प्रजापालनको सो न आप विन होवै ॥
याते जाहु सदल तिहुँ भूपति सकल सुजन सुख जोवै ॥ ७ ॥
सुनि सब विनय करी बहु प्रभु सों भरे नैन बिच नीरा ॥
पुनि वर नीत प्रीत मृदु कहिकै दई राम तिन धीरा ॥
यों कहि निकट बुलाय सुकंठहि दीन सु अंग प्रसादा ॥
निजकर सखहि विभूपितकीने भरे हृदय अहलादा ॥ ८ ॥
ऋच्छपाल लंकेशहि रघुवर सादर निज कर दीने ॥
भरत वेगि उठिकै दुहुँ भूपन प्रमुदित भूपित कीने ॥
अपर यथोचित राज साज बहु सादर दिये कृपाला ॥
सनमाने सब भाँति नेह युत राम तिहूँ भूपाला ॥ ९ ॥
अंगद नील नलादि मुख्य तिन लछमन अरु रिपुशाला ॥
हित करि यथायोग पहिराये शिख नख साज विशाला ॥
वहुरि विभूपन वसन अनूपम रघुवर भूर मँगाये ॥
कीश भालु निश्चरन यथोचित सन्मुख सबहि दिवाये ॥ १० ॥
ताछिन हनूमान उठि वेगें रामचरण धरि माथा ॥
पुलकित गात दीन ह्वै विनती करी जोरि युगहाथा ॥
मो अभिलाप नाथ यह तव पद सेवौं निकट सदाई ॥
जबलग प्रभु चरित्र महि तबलग श्रवण करौं हुलसाई ॥ ११ ॥
लखि हनुमंत प्रीति रघुनंदन उठि गहि अंक लगायो।
एवमस्तु कहि विशद हार निज लै प्रमुदित पहिरायो ॥
पुनि अंगदहि गोदलै सुत सम कियो प्यार बहु रामा ॥
तासु भार सुग्रीवहि दीनो भापि बैन सुख धामा ॥ १२।

उत तारा अरु रुमा आदि पुनि ऋच्छतिया जे हूरी ॥
सादर सवहि अमोल साज वर दये सुरानिन भूरी ॥
कौशल्यादि सियादि प्रीति युत अपर सखी पुरनारी ॥
सह सनमान उचित मिलि भेंटी भरे सकल दृग वारी ॥ १३ ॥
इहि विधि इत रघुवीर निकट अरु उत रनिवास मझारा ॥
अतुल साज धन धाम ग्राम दै भयो अमित सतकारा ॥
ताछिन पुष्पकयान राम ढिग विचरत नभ मग आयो ॥
समै प्रमाण तासु आगमलखि प्रभु उर आनँद छायो ॥ १४ ॥
तव रघुवीर मुदित उठि तिहुँ नृप सादर अंक लगाये ॥
अपर यथोचित कीश भालु मिलि पुष्पक मधि बैठाये ॥
त्यौं कपि ऋच्छ तीय गण पद नमि भई अरूढ विमाना ॥
यौं सब सबहि उचित मिलि गमने हृदय प्रेम उमगाना ॥ १५ ॥
निज निज धाम सबहि पहुँचाई पुष्पक वहुरि सिधारी ॥
राम धनद पद वंदि व्योम चहुँ विचरत इच्छाचारी ॥
हनूमान आनंद सहित नित रघुवर निकट रहाहीं ॥
राम चरित्र सनेम प्रेम युत सुनत अंग पुलकाहीं ॥ १६ ॥
तारा रुमा सहित उत हरिपति प्रमुदित करैं विहारा ॥
दये ग्राम धन वहु कपि ऋच्छन ते सब सुखी अपारा ॥
निज तिय अरु मंदोदरि युत त्यौं लंकनाथ विलसावैं ॥
चहूँ मुख्य निश्चर समस्त पुनि परमानंद रहावैं ॥ १७ ॥
पुनि लंकेश विभीषण प्रमुदित निज लघु सुतहि बुलाई ॥
मत्तगयंद नाम तिहि सादर दीनी हुलसिरजाई ॥
जाहु पुत्र मम दिशि ते प्रभुकी सेवा करौ सदाई ॥
पितु आज्ञा सुनि अति अनंद सों साजि चले शिरनाई ॥ १८ ॥
आये वेगि राम ढिग प्रमुदित शीश नाय कर जोरे ॥
कही विनय युत पूर्व जन्म कृत सुकृत उदैभे मोरे ॥
सादर तिहि बैठारि निकट प्रभु सुत सम प्यार वढाई ॥
बूझि कुशल पुनि आज्ञा दीनी इतही रहौ सदाई ॥ १९ ॥

यौं कहि भूषण वसन अनूपम अपर यथोचित साजा ॥
मत्तगयंदहि अरु हनुमंतहि दियो सभा रघुराजा ॥
किय लंकेशसुतहि निजपुरको रक्षक अधिप महाना ॥
गढ़पति पवनपुत्रको थापो सबही मध्य प्रधाना ॥ २० ॥
पुनि बहु सखा सुसेवक पुरजन परिजन अपर अपारा ॥
यथायोग बहु राज काज तिन सौंपे सहित विचारा ॥
इहि विधि कौशलपाल कृपानिधि धर्म नीतिमय राजा ॥
करहिं निदेश न्याय पालन वर संयुत सकल समाजा ॥ २१ ॥

इति श्री रा० र० वि० अ० सुग्रीवादि गमनवर्णनो
नाम षष्ठो विभागः ॥ ६ ॥

सो०—श्रीदशरथ सुत राम, करत राज मर्याद युत ॥
सबहीके मन काम, यथायोग पूजैं सदा ॥ १ ॥
सिंह पौरि कछु वार, बैठत हैं रघुराय नित ॥
करैं विनय सब झार, तहँ निबंध नहिं काहुको ॥ २ ॥
दोहा—सभामध्य राजैं तबै, छिनहीं छिन सुधिलेत ॥
विनय कार कोऊ विमुख, जाय न आय निकेत ॥ ३ ॥
एक दिवस इक श्वान तहँ, आय पुकारो द्वार ॥
सुनतहि राम कृपालु तिहि, लिय बुलाय दरबार ॥ ४ ॥
बूझी तिहि कह विनय तुव, तब सो शीश नवाय ॥
कही नाथ हौं पंथ विच, बैठो सहज सुभाय ॥ ५ ॥
अमुक ठाम वासी जु द्विज, मोकों विन अपराध ॥
कियो प्रहार सुन्याय मम, कीजे बुद्धि अगाध ॥ ६ ॥
सुनि रघुवर तिहि विप्रको, वेग सभा बुलाय ॥
बूझी श्वान प्रहारको, हेत कहो सतभाय ॥ ७ ॥
तब द्विज बोलो श्वान यह, बैठो पंथमझार ॥
भयो शंक वश अतिहि मैं, याको रूप निहार ॥ ८ ॥
दूरहिते बहु वार हौं, कही दूर हो दूर ॥
रहो तहांई श्वान यह, टुरो नहीं मदपूर ॥ ९ ॥

हुतो क्षुधित मैं तासमे, आयो क्रोध अपार ॥
तबहिं भजायो याहि मैं, करके दंड प्रहार ॥ १० ॥
हनो जु इहि अपराध विन, मोतें भो अपराध ॥
क्षमादंड जो उचित सो, कीजे नीति अगाध ॥ ११ ॥
सो सुनि प्रभु बूझी द्विजन, उचित दंड इहि काह ॥
विप्र अवध्य अदंड सव, कह पुनि रुचि नरनाह ॥ १२ ॥
ताछिन बोलो श्वान पुनि, न्याय करिय प्रभु जोय ॥
तौ जो कछु हौं भापहूँ, याहि दण्ड सो होय ॥ १३ ॥
सुनि तिहि बूझी राम तव, कह कूकुर शिरनाय ॥
चित्रकूट ढिग शिव सदन, ग्राम कलिंजरमाय ॥ १४ ॥
कीजे तहँको अधिप इहि, सुनि रघुवीर तुरंत ॥
किय अभिपेक चढाय गज, भेजो थापि महंत ॥ १५ ॥
राज साज गज वाजि जन, पाय मुदित भो विप्र ॥
राम रजायसुते तहाँ, गयो अधिपह्वै क्षिप्र ॥ १६ ॥
निरखि श्वान रुचि चकित सव, तव बूझी तिहि राम ॥
कही दिवायो दंड यह, भाप प्रगट मनकाम ॥ १७ ॥
कही श्वान तव सुनिय प्रभु, हौंहूं अधिप सुआउ ॥
तिही पापते योनि यह, पाई चहूँ भ्रमाउ ॥ १८ ॥
शिव निर्मायल वस्तुको, ग्रहण करत जो कोय ॥
प्रगट पुराणनमें सकल, ताको पाप जु होय ॥ १९ ॥
कहुँ पुनि मुखिया आपही, भपै सुवस्तु अकेल ॥
संनिध जनहिं न देय सो, परै नरक महँ पेल ॥ २० ॥
सो द्विज तहँको अधिप ह्वै, करिहै येई पाप ॥
मोसम ह्वै है श्वान ध्रुव, सदासहै संताप ॥ २१ ॥
यों कहि श्वान नवाय शिर, गयो तासु गति सोच ॥
कहत सबै पर भागको, खैवो है अति पोच ॥ २२ ॥

सुनि पुरजन यह न्याय गति, कहत मुदित वरबैन ॥
धर्म नीति ज्ञाता नृपति, और राम सम है न ॥२३॥
चौ०—यौंहीं सब चर अचर सुखारी ❀ रामराज नहिं कोउ दुखारी ॥
दान मान अरु न्याय विचारा ❀ होय नीत संयुग कृत सारा२४॥
इक दिवस कौशलपति रामा ❀ सहित समाज सकल मतिधामा
सभा सदन मधि आय विराजे ❀ निज निज काज साज सब साजे२५
ताछिन द्वै पक्षी तहँ आये ❀ भूरि परस्पर वाद बढाये ॥
इक उलूक इक गृद्ध कराला ❀ झगरत दुहूँ सकोप विहाला२६
आय प्रभुहि दुहुँ शीश नवायो ❀ निरखि राम तिन विस्मय छायो॥
अतिहि उताल प्रथम ह्वै दीना ❀ अस्तुति कीनी गिद्ध प्रवीना२७
पुनि बोलो प्रभु मोर अगारा ❀ यह उलूक लेवै बरियारा ॥
याको न्याय नाथ ध्रुव कीजे ❀ सत्य विचारि रजायसु दीजे२८॥
सुनि तिहि वचन उलूकहि रामा ❀ बूझी भाप कौनको धामा ॥
दुहूँ बखान सुनैं हम जबहीं ❀ न्याय विचार करैं पुनि तबहीं२९
सुनि उलूक बोलो हे नाथा ❀ दिवा अंध मुहि जानि अनाथा ॥
सदन मोर यह गीध सु लेवै ❀ वृथा सकुल मोको दुख देवै३०॥
सुनि दुहुँ वचन गुणी महिपाला ❀ जानो परै गीध वाचाला ॥
प्रथमहिं अस्तुति मधुर बखानी ❀ कही बहोरि विवाद कहानी ३१॥
दोहा—धूत होत ते काज निज, साधत चित्त लुभाय ॥
छल बल गुण धन दीनता, मन वच कर्म दिखाय ॥३२॥
यौं गुनि पुनि दुहुँ ते कही, भाषो सत्य प्रमाण ॥
है वह केते वर्षको, निर्मित तव अस्थान ॥ ३३ ॥
चौ०—सुनि उताल पुनि गिद्ध बखानी ❀ जबते भूमि सृष्टि उपजानी ॥
तबही ते वह आलय मेरो ❀ इमि प्राचीन कह्यि निरवेरो३४॥
सुनि उलूक सत वचन सुनायो ❀ प्रभु जबते वह तरु प्रगटायो ॥
तब ते तिहि ऊपर मम धामा ❀ गुणि कीजिये न्याय श्रीरामा३५

सुनि रघुवीर सुहीय विचारा ❀ जब ते प्रगट भयो संसारा ॥
तबको द्रुम अवलग किमि रहई ❀ मिथ्या बात गीध यह कहई ३६॥
याते गृह उलूकको आही ❀ यौं गुणि राम दिवायो ताही ॥
गीध हारि गमनो सकुचाई ❀ भो उलूक मुद आलय पाई॥३७॥
शीशनाय द्विज गयो सुधामा ❀ इमि वर न्याय करत श्रीरामा ॥
सकल चराचर परम सुखारी ❀ धर्मराज चहुँ आनँदकारी॥३८॥

इति श्री रा० र० वि० अ० न्याय वर्णनोनाम सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

पद्धरी छंद ।

इक समय राम प्रमुदित विराज । शोभित समस्त सज्जन समाज ॥
ताछिन सुमंत तहँ वेगि आय । किय विनय जोरि कर शीश नाय॥१॥
भार्गव मुनीशच्यवनादिनाथ । आये समस्त मुनि विशद गाथ ॥
सुनतहि बुलाय लीने सुधाम । सत्कार उचित सब कीन राम ॥ २॥
जल सर्व तीर्थ लायें मुनीश । फल फूल दीन प्रभु लीन शीश ॥
बहु कुशल परस्पर बूझि दोउ । बैठे प्रसन्न मन सबहि कोउ ॥ ३ ॥
तब कही राम कहहै रजाय । दीजे सु लेहुँ निज शिर चढ़ाय ॥
सुनि मुनि समस्त बोले उताल । रघुलाल धन्य जन भक्तपाल ॥४॥
दीनो उतार प्रभु भूमिभार । अब एक दुष्ट मधुपुर मझार ॥
मुनि जनन देत सो दुख अपार । द्रुति चहिय,नाथ ताको सँहार॥५॥

सो०—है लवणासुरनाम, चंड शूलधारी सबल ॥
ताहि बधे बिनराम, अजहुँ चराचर दुखित बहु ॥ ६ ॥
शूल रहै करमध्य, जबलों मधु सुत लवणके ॥
तब लों निडर अबध्य, है इमि वर हरदत्त तिहि ॥ ७ ॥
गज मृग बाघ अपार, अपर जीव मानुप विपुल ॥
नित सो करत अहार, याते होत विनाश चहुँ ॥ ८ ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि तबहि कीन रघुवर विचार । कोकरहि जाय तिहि को सँहार ॥
तासमय शत्रुहन जोरि हाथ । भाषी रजाय मुहिं होय नाथ ॥ ९ ॥

भु भरत लपण बहु कीन काम । हों रहों आजलग अवध धाम ॥
वा सु एक यह मैं कराउँ । वध हेत तासु अब द्रुतहि जाउँ ॥१०॥
नि बन्धु बैन आनँद समेत । दीनी रजाय तिहि वधन हेत ॥
तुरंग सेन कीनी जु संग । प्रिय वीर धीर वर युद्ध ढंग ॥ ११ ॥
नि दीन बाण इक प्रबल चंड । कह होय याहिते शूलखंड ॥
मि भापि सोधि दिन साजि साज । किय विदा बन्धुको अवधराज १२

दोहा—चलत कही प्रभु बन्धुसे, जिते सु सेवक संग ।
सादर सबको राखियो, सब विधि सुखी सुढंग ॥ १३ ॥
धन गुन बल तिय बंधु हित, तिमि न देय आराम ॥
प्रीतिपाल सेवक सुजिमि, सदा करै रुचि काम ॥ १४ ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि भ्रात सीख वर गुण दमान । मिलि शीशनाय कीनो पयान ॥
मुनि बाल्मीकिते भेंटि वीर । मधुपुरहि गये सह सुभट भीर ॥ १५ ॥
सो लवण सदाही प्रातकाल । चहुँ जाय गहत बहु जीव घाल ॥
त्यौं नित समान लै शूल आन । उठिकै प्रभात कीनो पयान ॥१६ ॥
इत वीर शत्रुहन समय पाय । औचकहि आय मधुपुर तुराय ॥
धनुवाण साजिके नगर द्वार । ठाढे सचेत चहुँ दिशि निहार ॥ १७ ॥
दिन युगल याम भो तब सुरारि । आयो अपर मृत जीव धारि ॥
लखि राजसुतहि सो क्रोध लाय । बूझी मनुष्य तू कौन आय ॥१८॥
तब रामबन्धु निज नाम ठाम । भाषो निशंक कुलग्राम धाम ॥
सुनि लवण रोष करिके उताल । बोलो प्रचारि वाणी कराल ॥ १९॥
तुव भ्रात रावणहि कीन घात । हौं सुनि तबही ते जरत गात ॥
तिहि बन्धु आज मो निकट आय। अब फेरि नाहिं गृह जियत जाय २०
टुक धीर धार हे नृपति बाल । हौं गेहजाय आऊँ उताल ॥
वर चंड शूल लाऊं तुरंत ॥ तब लखहुँ फेरि तुव बल अनंत॥२१ ॥

दोहा—सुनि भाषी रिपुदमन तब, अरे असुर मतिमंद ॥
अब गृह जैबो सहज नहिं, परो वीरके फन्द ॥ २२ ॥
स्ववश पायके शत्रुको, जो नहिं साधत काज ॥
दुख पावै पछताय सो, पुनि हो अधिक अकाज ॥ २३ ॥

याते खल याही समै, यमपुर पठऊं तोहि ॥
शूल आश तजि अंगवल, जो दरशाव सु मोहि ॥ २४॥

पद्धरी छंद ।

शत्रुघ्न वैन सुनिकै सुरारि । घालो विशाल इक द्रुम उखारि ॥
तिहि राम बंधु बहु शर प्रहारि । करि खंड खंड दिय भूमि डारि२५॥
तरु घात देखि निष्फल सुभूरि । पुनि किय प्रहार सो वृक्ष पूरि ॥
ते सकल शत्रुहन कीन छिंद । बहुवाण मारि तन तासु भिंद ॥२६॥
तब लवण कोपि गहि विटपचंड । घालो भ्रमाय वल करि उदंड ॥
सो लगो आय ततकाल भाल । महिगिरे शत्रुसूदन विहाल ॥ २७॥
जानी सुरारि भो मृतक वीर । याते निसंक ह्वै धार धीर ॥
गवनो न धाम लायो न शूल । तिन भपण हेतु धायो सुभूल ॥ २८॥
तत्क्षण सचेत ह्वै शत्रुशाल । उठि गहो द्वार अतिही उताल ॥
साजो सुबाण जो राम दीन । तिहि समय त्रसित भे लोक तीन२९॥
सो चंडवाण तिहि उर मझार । किय शत्रुशाल क्रोधित प्रहार ॥
भ्रमि गिरो लवण भूमधि तुरंत । ह्वै हृदय चूर भो प्राण अंत ॥३०॥
तेहि निधन देखि सुर भे निहाल । रव कियो जैति जै शत्रुशाल ॥
वरपे प्रसून दुंदुभि बजाय । तिहुँलोक रहो आनँद छाय ॥ ३१॥
तिहि मारि शत्रुहन सहसमाज । मधुपुरी मध्य कीनो सु राज ॥
तहँ रहे वर्ष द्वादश प्रमाण । बहु प्रजापाल परबंध ठान ॥ ३२॥
बहु सैन सचिव सेवक प्रवीन । तहँ राखि आप पुनि गमन कीन ॥
आये उताल श्रीराम पास । कीनो प्रणाम संयुत हुलास ॥ ३३॥
उठि राम बंधु लिय अंक लाय । सब मिले उचित आनँद अघाय ॥
रघुवीर अनुजको बहु सराह । वर मान दीन कीनो उछाह ॥ ३४॥
इमि सत दिवस तिन भवन राखि । दीनी रजाय बहु नीति भाखि ॥
प्रभु कही जाहु मधुपुर उताल । विन भूप आनको नजाहि ॥
सुनि प्रभु रजाय रिपुदमन वीर । कछु ह्वै उदास पुनि धारि धीर ॥
साजि साज ईश आयसु प्रमाण । नमि कीन वेगि मधुपुर पयान३५॥

तहँ जाय सबहि आनंद दीन। रिपुदमन राजधानी सु कीन ॥
मधुपुर निवास कर सह समाज। तिय सचिव सखा सेवक विराज ३७॥
लखि समय कबहुँ सो अवध आय।रहि कछु दिवस पुनि तितहि जाय॥
इहि भाँति शत्रुहन युत समाज। सानंद करत मधुपुर सराज ३८॥
इत भरत लषण युत रामचंद। कर अवध राज अतिही अनंद॥
निज सँमे सँमे सब होत काज। बहु दान मान नृपनीति भ्राज ३९॥

इति श्रीरामरसायन वि० अ० लवणासुरवधवर्णनो
नाम अष्टमो विभागः ॥ ८ ।

सो०—एक सँमै रघुवीर, सभामध्य शोभित सदन ॥
ताछिन निपट अधीर, वृद्ध विप्र आयो रुदत ॥ १ ॥
तासु पुत्र वर एक, योवन वय ज्ञानी गुणी ॥
संयुत परम विवेक, सो सुठि बालक मृतक भो ॥ २ ॥
मात पिता मृत बाल, लाये भूपति द्वार पै ॥
रोवत विकल विहाल, कहि नृपके पातक मरो ॥ ३ ॥
भूपति करै अनीति, होय दुखी तिहि फल प्रजा ॥
प्रजा करै अनरीति, नृपहि पाप सो लागही ॥ ४ ॥
यों कहि द्विज सो बाल, राज द्वार धरि दीन हठि ॥
प्रभु ढिग आय उताल, भाषी हत्या लेहु मम ॥ ५ ॥
कै नृप कै ते लोग, राज काज अधिकार जिन ॥
कारज करै अयोग, प्रजा दुखी हो पाप तिहि ॥ ६ ॥
सो तव पाप कदंब, जाते मम बालक मरो ॥
हौं इत सहित कुटुंब, प्राण देहुँगो राज पै ॥ ७ ॥
सुनि विप्रहि कर जोर, समुझायो बहु राम मृदु ॥
कही मोर जो खोर, होय सकल निर्णय अबहि ॥ ८ ॥

चौ०—यों कहि करुणाकर अकुलाये ※ मंत्री द्विज गुरु वेगि बुलाये॥
नारदहू विचरत तहँ आये ※ सादर सबहि राम बैठाये ॥ ९ ॥
बुझी राम द्विजन कर जोरी ※ कहिये कह अनीति है मोरी ॥
तब त्रिकाल दरशी वर ज्ञाता ※ नारद मुनि बोले बच ※

सुनहु राम सतयुगके माहीं ॐ सदा तपस्या विप्र कराहीं॥
तव काहू नाहिं होय कलेसा ॐ रहे न रंचहु पातक लेसा॥ ११॥
त्रेता मध्य करे तप क्षत्री ॐ तव इक पदधर पाप धरत्री॥
पुनि द्वापर तपवैश्य दिढावे ॐ महि पातक द्वै चरण जमावै॥१२॥
कलिमें नीच शूद्रगण आदी ॐ करें तपस्या मूढ विवादी॥
तृतिय चतुर्थ चरण तव पापा ॐ धरत भूमि वाढै तिहुँ तापा॥१३॥
जव कलि करे शूद्र तप भूरी ॐ रहे पाप तव चहुँ पद पूरी॥
अल्प मृत्यु दारिद्र दुख नाना ॐ तिहि फलते सव लहत निदाना१४

दोहा—सिद्ध साधुको भेप वहु, लेत नीच जन नष्ट॥
निजते उच्च तिनै सुते, करत विविध विधि भ्रष्ट॥ १५॥
वेद पुराण प्रमाण जो, सो नाहिं करै प्रमाण॥
नूतनगाथा जोरकै, ठानैं महत बखान॥ १६॥

सवैया—कवित्त।

ज्ञान अखंड पखंड कथैं रसिकेश भरो उर लोभ अगाधू॥
जोरत दाम सँवारत धाम भये ममता मदमें अति आतू॥
धूत महा अवधूत बने बहु देतहैं पूतन धैं जगनाधू॥
कर्म कुकर्म करैं कपटी जन ते कलिकाल कहावत साधू॥१७॥

दोहा—हो विरक्त अथवा गृही, चहिय विप्रकुल जन्य॥
तप महत्व पद उचित तिहि, अनुचित करै जु अन्य॥१८॥
बिन द्विज कुल जे सुर सदन, पूजन पाक कराय॥
करता कारयिता दुहुँ, ते ध्रुव नरकहिं जायँ॥ १९॥
विना विप्र तिहुँ वरण जे, कोऊ गृही विरक्त॥
देत मंत्र गुरु शिष्यते, दुहूँ नरक अनुरक्त॥ २०॥
द्विज कुल विन जे सत कथा, कहि सुनाय विधि युक्त॥
सो वक्ता श्रोता दुहूँ, हों न नर्कसे मुक्त॥ २१॥
ऐसे पातक भूरिते, होत सदा कलिमाहिं॥
जाते जग नर नारि सब, संतत दुखी रहांहि॥ २२॥

ताही पातकते नृपति, होवै धन सुत हीन ॥
पुनि रुजपीड़ित रहत हैं, प्रजा नशै सुख छीन ॥ २३ ॥
महा पाप यह जानिये, शूद्र बनै जो सिद्ध ॥
यह प्रबंध भूपहि उचित, होय न कर्म निषिद्ध ॥ २४ ॥
सो जु शूद्र तप पाप है, द्वापर कलिहू घोर ॥
त्रेताहीमें होय तौ, पातकको कह छोर ॥ २५ ॥
प्रजा जासु अवनीशके, संतत पाप कराय ॥
राज्य नाश हो ताहि ते, पुनि नृप नरकहि जाय ॥ २६ ॥
कृषी जनित धन धान्य अरु, पाप पुण्य ये चार ॥
षष्ठम भाग प्रजानते, लहै भूप अधिकार ॥ २७ ॥
याते भूपहि उचित है, प्रजा करै जो पाप ॥
ताहि निवारै जतनते, तौ न होय संताप ॥ २८ ॥
आप प्रजा सेवक सहित, रहै सधर्म नरेश ॥
तौ काहू कबहूँ कष्ट, होय न रंच कलेश ॥ २९ ॥

प्रमाण ॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकांडे । सर्ग ७३॥ श्लोक ॥

रामस्य दुष्कृतं कर्म महदस्ति न संशयः ॥ यथा हि विषयस्थानां बालानां मृत्युरागतः ॥ १ ॥ रामद्वारे मरिष्यामि पत्न्या सार्धमनाथवत् ॥ ब्रह्महत्यां ततो राम समुपेत्य सुखी भव॥२॥ राजदोषैर्विपद्यंते प्रजा ह्यविधिपालिताः॥ असद्वृत्ते हि नृपतावकाले म्रियते जनः॥३॥ यद्वा पुरेष्वयुक्तानि जना जनपदेषु च ॥ कुर्वते नच रक्षास्ति तदा कालकृतं भयम् ॥ ४ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ स० ७४ ॥ श्लोक ॥

श्रुत्वा कर्तव्यतां राजन्शृणुष्व रघुनंदन ॥ पुरा कृतयुगे राजन्ब्राह्मणा वै तपस्विनः ॥५॥ अब्राह्मणस्तदा राजन्न तपस्वी कथंचन ॥ तस्मिन्युगे प्रज्वलिते ब्रह्मभूते त्वनावृते ॥ ६ ॥ अमृत्यवस्तदा सर्वे यज्ञिरे दीर्घदर्शिनः ॥ ततस्त्रेतायुगं नाम मानवानां वपुष्मताम् ॥७॥ क्षत्रिया यत्र जायंते पूर्वेण तपसान्विताः ॥ वीर्येण तपसा तेऽधिकाः पूर्वजन्मनि ॥८॥ तस्मिन्युगेप्रज्वलिते धर्मभूते

अधर्मः पादमेकं तु पातयत्पृथिवीतले ॥ ९॥ ततः पादमधर्मस्य द्वि
तीयमवतारयत ॥ ततो द्वापरसंख्या सा युगस्य समजायत ॥ १०
अस्मिन्द्वापरसंख्याने तपो वैश्यान्समाविशत्॥त्रिभ्यो युगेभ्यो त्रीन्व
र्णान् क्रमाद्वै तप आविशत् ॥ ११ ॥ त्रिभ्यो युगेभ्यो त्रीन्वर्णान्ध
र्मश्च परिनिष्ठितः ॥ न शूद्रो लभते धर्मं युगतस्तु नरर्षभ ॥ १२
हीनवर्णो नृपश्रेष्ठ तप्यते सुमहत्तपः ॥ भविष्यच्छूद्रयोन्यां हि तपश्च
र्या कलौ युगे ॥ १३ ॥ अधर्मः परमो राजन्द्वापरे शूद्रजन्मनः
स वै विषयपर्यंते तव राजन्महातपाः ॥ १४ ॥ अद्य तप्यति दुर्बुद्धि
स्तेन बालवधो ह्ययम्॥योऽद्य धर्ममकार्यं वा विषये पार्थिवस्य तु १५
करोति चाश्रीमूलं तत्पुरे वा दुर्मतिर्नरः ॥ क्षिप्रं च नरकं याति स च
राजा न संशयः ॥ १६ ॥ अधीतस्य च तप्तस्य कर्मणः सुकृतस्य
च ॥ षष्टं भजति भागं तु प्रजा धर्मेण पालयन् ॥ १७ ॥ षड्भाग
स्य च भोक्तासौ रक्षते न प्रजाः कथम् ॥ सत्वं पुरुषशार्दूल मार्गस्व
विषयं स्वकम् ॥१८॥ दुष्कृतं यत्र पश्येथास्तत्र यत्नं समाचर ॥ए
चेद्धर्मवृद्धिश्च नृणां चायुर्विवर्धनम् ॥ भविष्यति नरश्रेष्ठ बालस्यास्य
च जीवितम् ॥ १९ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ॥ ब्राह्मे ॥

ये च भागवताः शुद्धास्ते नूनं मम मूर्तयः ॥ तान्विप्रान्ये न
मस्यंति ते मामेव नमंति वै ॥ २० ॥ शुद्धा भागवताः पूज्या
द्रष्टव्याः सर्वदा नृभिः॥विशेषेण कलौ ब्रह्मन्द्विजरूपो ह्यवस्थितः२१॥

विष्णुपुराणे ।

वर्णाश्रमाचारवता पुरुषेण परः पुमान् ॥
विष्णुराराध्यते पंथा नान्यत्तत्तोषकारकम् ॥ २२ ॥

वसिष्ठसंहितायाम् ।

ज्ञानिनोऽज्ञानिनो वापि यावद्देहस्य धारणम् ॥
तावद्वर्णाश्रमप्रोक्तं कर्तव्यं कर्म मुक्तये ॥ २३ ॥

मनुस्मृतौ ।

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम् ॥
स शूद्रवद्बहिःकार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥ २४ ॥

लक्ष्मीतंत्रे ।

सर्वलक्षणसंयुक्तो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ पट्कर्मनिरतः शांतः पंचकालरतः शुचिः ॥ २५ ॥ न स्थूलो न कृशो ह्रस्वो न काणो नैव रोगवान् ॥ नांधो न बधिरो मूढो न खल्वाटो न पंगुकः ॥ २६ ॥ न हीनांगोतिरिक्तांगो न श्विन्नी न च दांभिकः ॥ क्रोधनो नैव दुष्कर्मा लोभोपहतचेतनः ॥ २७ ॥ अकुलीनं दुराचारं शठं जिह्मं च वर्जयेत् ॥ दयादमशमोपेतं दृढभक्तिं क्रियापरम् ॥ २८ ॥ कुर्याल्लक्षणसम्पन्नमाचार्यं चारुहासिनम् ॥ एवं गुणगणाकीर्णं गुरुं विद्यात्तु वैष्णवम् ॥ २९ ॥ उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः ॥ सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ ३० ॥ पाराशरस्मृतौ ॥ दुःशीलोपि द्विजः पूज्यो नतु शूद्रो जितेंद्रियः ॥ कः परित्यज्य गां दुष्टां दुहेच्छीलवतीं खरीम् ॥३१॥ महाभारते ॥ श्वचर्मणि यथा क्षीरमपेयं ब्राह्मणादिभिः ॥ तद्वच्छूद्रमुखाद्वाक्यं न श्रोतव्यं कथंचन ॥३२॥ पंडितस्यापि शूद्रस्य शास्त्रज्ञानरतस्य च ॥ वचनं तस्य न श्राव्यं शुनोच्छिष्टं हविर्यथा ॥ ३३ ॥ कर्मसिधौ ॥ भविष्यंति नरा मूढाः कलौ धर्मच्युतास्तथा ॥ अमर्यादां करिष्यंति प्रमादाद्विष्णुमंदिरे ॥ ॥ ३४ ॥ अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा अमर्यादां करोति यः ॥ इह लोके भवेद्भ्रष्टः परलोके विनश्यति ॥ ३५ ॥ विष्णुस्थानेषु कुर्वंति अमर्यादां च ये नराः ॥ नो बुधाः न च धर्मिष्ठाः न भक्ता न च वैष्णवाः ॥ ॥ ३६ ॥ आचारहीना ये कार्या भवंति विष्णुमंदिरे ॥ तस्यापराधान्नश्यन्ति धर्माः स्थानाधिकारिणः ॥ ३७ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वाचारसमन्विताः ॥ सर्वे कार्याणि कुर्वंति साचारैर्विष्णुमंदिरे ॥ ३८ ॥ पूर्वाचार्यकृतां शुद्धां मर्यादां यो समाचरेत् ॥ तस्य सर्वसुखं भूयात्सदा विष्णुः प्रसीदति ॥ ३९ ॥ विष्णुस्थाननिर्णयः ॥ स्वयंव्यक्तिस्तु या मूर्तिर्वेदमंत्रात्प्रतिष्ठिता ॥ भवेद्यत्र हि तत्स्थानं विष्णुस्थानं निगद्यते ॥ ४० ॥ विष्णुस्थाने योग्यायोग्यनिर्णयः ॥ पाकपाकाधिकाराय पूजनाय महत्पदे ॥ विष्णुस्थानेषु तिष्ठेयुर्वैष्णवा द्विजातयः ॥ ॥ ४१ ॥ द्विजवैष्णवनिर्णयः ॥ पंच द्राविडगौडाश्च ब्राह्मणा दश

ज्ञातयः ॥ तेषां मध्येपि भूयासुर्वैष्णवा द्विजवैष्णवाः ॥ ४२ ॥ वैष्णवपरत्वे कार्यनिर्णयः ॥ अन्ये तु वैष्णवाः सर्वे सर्वकार्याधिकारिणः ॥ चत्वारि नहि कार्याणि योग्यानि विष्णुमंदिरे ॥ ४३ ॥ विष्णुस्थानातिरिक्ता हि वैष्णवाः सर्वज्ञातयः ॥ सर्वेष्वप्युचितं पाकं पूजनं विष्णुहेतवे ॥ ४४ ॥ पंचसंस्कारसंयुक्ता वैष्णवाः सर्वज्ञातयः ॥ पूजनीयाश्च ते,सर्वे स्थानमर्यादसंयुताः ॥ ४५ ॥ स्पर्शनिर्णयः ॥ स्पर्शास्पर्शं न चिंतेयुर्विष्णवर्चायां हि ये नराः ॥ ते च्युताः सर्वधर्मेभ्यो नरके यांति रौरवे ॥ ४६ ॥ वेदसंस्कारसंयुक्ता विष्णुमूर्तिः प्रतिष्ठिता॥ नैवान्यस्पर्शनीया सा विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ ४७ ॥ द्युत्तरे ताम्रपर्ण्याश्च पुरुषोत्तमपुरीष्वपि॥ स्पर्शनेपि च पाकार्चे स्पर्शदोषो न विद्यते ॥ ४८ ॥ पाकनिर्णयः ॥ विष्णुस्थानेषु यो मूढो विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ कुर्यात्पाकार्चनं विष्णुर्नो गृह्णाति कदाचन ॥ ४९ ॥ स्वयं व्यक्तां तथा मूर्तिं वेदसंस्कारसंयुताम् ॥ नार्पयेदन्यकृतपाकं विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ ५० ॥ द्विजवैष्णवकृतपाकमार्पितं हि हरेसदा ॥ पाकार्चा तत्कृता नूनं विष्णुस्थाने सदोचिता ॥ ५१ ॥

विष्णु पुराणे ।

सर्वे ब्रह्म वदिष्यंति संप्राप्ते तु कलौ युगे॥नानुतिष्ठंति मैत्रेय शिश्नोदरपरायणाः ॥५२॥ यदा यदा सतां हानिर्वेदमार्गानुवर्तिनाम् ॥ तदा तदा कलेर्वृद्धिरनुमेया विचक्षणैः ॥ ५३ ॥ वासिष्ठस्मृतौ ॥ श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममकृत्वा यश्चरेन्नरः ॥ विकर्मस्थः स विज्ञेयः सर्वकर्मविगर्हितः ॥५४॥ यो वेदार्थं गर्हयति धर्माधर्मं न विंदति ॥ न बुध्यते परं लोकं स नास्तिक उदाहृतः ॥५५ ॥ उक्तधर्मं परित्यज्य यो प्रवर्तते ॥ पतितः स तु विज्ञेयः सर्वधर्मबहिष्कृतः॥ ५६ ॥ महाभारते॥ श्रुतिः स्मृतिर्ममैवाज्ञा यस्तामुलंघ्य वर्तते ॥ आज्ञाछेदी मम द्रोही मद्भक्तोपि न वैष्णवः ॥ ५७ ॥ श्रुतिस्मृती उभे नेत्रे ब्राह्मणानां प्रकीर्तिते । एकेन विकलः काणो द्वाभ्यामंधस्तथैव च॥ ५८ ॥ इत्यादि॥

दोहा—यातें हौं जानौं अबै, करत सूद तप कोय ।
ताहि दंड दीने तुरत, द्विजसुत जीवित होय ॥ ३० ॥

चौ०-सुनि नारदहि राम शिरनाई ❀ वेगि कही लछमनहिं बुझाई ॥
द्विज सुत मृतकहि जतन समेता ❀ राखौ सबहि भाँति सह चेता ३१॥
तौंकहि पुनि किय पुष्पक ध्याना ❀ आयो अतिहि उताल विमाना॥
सजि सब साज बैठि द्रुत रामा ❀ कियो पयान लखे बहु ठामा ३२॥
पश्चिम उत्तर पूरब देखी ❀ दक्षिण दिशा जाय चहुँ पेखी ॥
इक तडाग तहँ विशद निहारा ❀ सैवल गिरि अरु विंध्य मँझारा ३३॥
तहाँ अधोमुख इक नर झूलो ❀ करहि तपस्या आनँद फूलो ॥
ताहि जाय बूझो रघुराजा ❀ को तू तप साधे किहि काजा ३४॥
सुनि सो कही शूद्र मम जाती ❀ देव होन हित यह तप थाती ॥
है शंबूक नाम मम नाथा ❀ हौं नहिं भापों वचन अकाथा ३५॥
सुनतहि राम खड्ग खरधारा ❀ अति उताल तिहि कंठ प्रहारा ॥
तापस प्राण गयो प्रभु हाथा ❀ दुरित दूर ह्वै भयो सनाथा ३६॥
तापस शूद्र भयौ वध जबहीं ❀ बालक विप्र जियो सो तबहीं ॥
सो लखि जन समस्त हुलसाये ❀ मात पिता आनंद अघाये ३७॥
उत तिहि वध लखि सब सुर हरषे ❀ अस्तुति करत सुमन वर वरषे ॥
ताछिन मुदित कही सुरराजा ❀ निज रुचिवर याँचौ रघुराजा ३८॥
तब रघुवर बोले सुरराई ❀ दीजे सो द्विज पुत्र जिवाई ॥
इंद्र कही इहि मरतहि वीरा ❀ जियो सुबाल मिटी सब पीरा ३९॥
सुनि हुलसाय सुरन शिरनाई ❀ पुनि बैठे पुष्पक रघुराई ॥
आय अगस्त्य मुनिहि श्रीरामा ❀ गहि सप्रेम पद कीन प्रणामा ४०
ऋषि रघुवर कर आदर कीना ❀ भूपण इक अमोल वर दीना ॥
तब करजोरि मुनिहि शिरनाई ❀ मधुर वचन बोले हुलसाई ४१॥

दोहा—क्षत्रिन काहू दानको, लेवो उचित न आय ॥
अरु द्विज धनतौ कैसहू, ग्रहण अयोग कहाय ॥ ४२॥
सो हम क्षत्रिय बहुरि नृप, प्रभु मुनिवर द्विजराय ॥
उचित कहा करतव्य है, दीजे नाथ रजाय ॥ ४३ ॥
तब अगस्त्य ऋषि रामको, बहु विधि कियो बखान ॥
नीति धर्म संयुत बहुरि, बोले सत्य प्रमाण ॥ ४४ ॥

देव गुरू नृप पितर द्विज, साधु प्रजा सह तोष ॥
सादर देवे वस्तु कछु, लिये न काहू दोष ॥ ४५ ॥

चौ०—मुनि आज्ञा सुनिके रघुराई ॥ लिय कर भूषण शीश चढ़ाई ॥
पुनि तिहि भूषण कथा विशाला ॥ ऋषिवर कही सुनी रघुलाला ॥ ४६ ॥
तिहि निशि मुनि आश्रम वसिरामा ॥ प्रात चले करि दंडप्रणामा ॥
पुष्पक बैठि अयोध्या आई ॥ उतरि विमानहि दई रजाई ॥ ४७ ॥
द्वारपालते खबर जनाई ॥ आये भरत लषणदुहुँ भाई ॥
करि प्रणाम रामहि कर धारी ॥ गये भवन जन आनँद कारी ॥ ४८ ॥
द्विज अशीश दे प्रमुदित भारी ॥ गयो सदन संयुत सुत नारी ॥
राम सुयश वर्णत सब कोई ॥ तिहूँ लोक नित आनँद होई ॥ ४९ ॥

दोहा—दान मान वर न्याय नित, करत राम नृप काज ॥
पालत प्रजहि सुधर्म युत, प्रमुदित सकल समाज ॥ ५० ॥
राजसूय आदिक विविध, मख कीने श्रीराम ॥
अमित दान दीने सविधि, धेनु धाम धन ग्राम ॥ ५१ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ युद्धकांडे सर्गे १३० श्लोक ॥
पौंडरीकाश्वमेधाभ्यां वाजिमेधेन चासकृत् ॥
अन्यैश्च विविधैर्यज्ञैरयजत्पार्थिवात्मजः ॥ ५९ ॥

इति श्री रा० र० अ० वि० द्विजपुत्रसंजीवन-
वर्णनो नाम नवमो विभागः ॥ ९ ॥

दोहा—श्रीरघुवर गुण गण विमल, सुर मुनि करत बखान ॥
कहत सबै को राम सम, है त्रिलोक बलवान ॥ १ ॥
जो दशमुख निज बाहुबल, जीति लये सब लोक ॥
ताहि मारि रघुवीर प्रभु, कीने सकल विसोक ॥ २ ॥
सो अस्तुति सुनि राम सों, कही सिया मुसक्याय ॥
देखहु सब लघु बातको, वर्णत किती बढाय ॥ ३ ॥
तब रघुवर मन मापिकै, बोले बैन उताल ॥
किमि लघुबात जु वध कियो, महा प्रबल दशभाल ॥ ४ ॥

चौ०–सो सुनि भापी जनकदुलारी ❀ कहाहुतो रावण बल भारी॥
लघु निश्चर ताको प्रभु मारा ❀ यामहँ कौन वीर गुण सारा ॥५ ॥
मिथिला माहि सुनी हौं ख्याता ❀ गौतमऋषि वरणी वर ज्ञाता ॥
त्रैरावण इक लंक रहाही ❀ दूजो सो पाताल वसाही ॥६॥
त्रितिय महारावण जिहि नामा ❀ जाके सहस शीश अभिरामा ॥
रहैसु पुष्कर द्वीप मझारा ❀ दशमुख सम तिहि दास अपारा ७॥
सुनतहि राम क्रोध उरलाई ❀ दई सपदि मंत्रीन रजाई ॥
सकल सैन चतुरंग सजावो ❀ अरु चहुँ दिशिके भूप बुलावो॥८॥
पुष्कर द्वीपहि वेगि सिधारैं ❀ सुभट महा रावण तिहि मारैं॥
सुनि मंत्री द्रुत पत्र पठाये ❀ सदल भप वहु अवधहि आये॥९॥

दोहा–तव रघुवर ध्यायो सपदि, आयो पुष्पक यान ॥
वंधु सैन युत वैठि तिहि, कीनो सुदिन पयान ॥ १० ॥
राम संग सुग्रीव अरु, जाम्ववंत लंकेश ॥
अपर भूप निज निज विपुल, साजे सेन सुदश ॥ ११ ॥
अंगद हनुमत नील नल, आदिक वीर अपार ॥
यह दल ताहूते अधिक, रहो जु लंक मझार ॥ १२ ॥

चौ०–पुष्करद्वीपहि जाय उताला ❀ परो घेरि चहुँ कटक विशाला॥
रावण सुनी सदल रघुनाथा ❀ आये युद्ध करन मम साथा॥१३॥
सहज विहँसि सो वैन उचारे ❀ करैं समर कह राम विचारे ॥
हौं तिनाहित क्यों सेन सजाऊँ ❀ एक वाण ते सवहि भजाऊँ ॥१४॥
यों कहि सहज वाण धनु लीनो ❀ चलो महारावण मद भीनो ॥
आप एकदल सन्मुख आवा ❀ तिहि लखि राम कटक किय धावा१५
तवै महारावण धनुताना ❀ छाँडो सहज एक वर वाना ॥
तिहि शर जनित प्रचंड समीरा ❀ लागि उडे सव प्रभु दल वीरा १६॥
उडे सवंधु सदल श्रीरामा ❀ परे आय कोशलपुर धामा ॥
जाम्ववंत अंगद कपिराई ❀ गिरे सुभट किष्किधा जाई ॥१७॥
परे लंकपति लंक मझारी ❀ संयुत सकल निशाचर धारी ॥
सैन समेत अपर नृप जेते ❀ निज निज ठाम गिरे सव तेते१८॥

दोवई छंद।

शोणित बिंदु परै भूतल मधि असुर अंगते जेते॥
होयँ महारावण तिन कणते प्रगटते तत्क्षण तेते॥
गति विलोकि यह महा कालिका निज रसना विस्तारी॥
झंपित करी वेगि ताही ते सो रण धरणीसारी॥ ४२॥
तब तिहि तनुते रक्तबिंदु जो गिरैं सकल सो चाटैं॥
गहि कर खड्ग महारावणके शीश भूरि ते काटैं॥
महा कालिका शक्तिन संयुत इमि ताको संहारा॥
असुर मरन लखि सुर हरषाये किये सु जैजैकार॥ ४३॥
वरषि सुमन दुंदुभी बजाई अस्तुति करी कदंबा॥
सो सुनि क्रोध त्यागि शक्तिन युत गुप्त भई जगदंबा॥
सिय ह्वै प्रगट राम ढिग धाई लखे निपट बेहाला॥
ताही छिन विधि शंभु इन्द्र तहँ आये अतिहि उताला॥ ४४॥

दोहा—तब विरंचि प्रभु अंगपर, प्रमुदित फेरो हाथ॥
विनय करी बहु चेतलहि, हरषि उठे रघुनाथ॥ ४५॥
सिय महिमा सुन राजसुत, लहो परम आनंद॥
दुहुँ अस्तुति करिकै मुदित, गये सकल सुरबृन्द॥ ४६॥
रघुवर सिय हनुमंत युत, बैठि सुपुष्पक यान॥
आये कौशलनगर मधि, कोनो विदा विमान॥ ४७॥
राम सिया आगमन सुनि, धाये तीनहु बन्धु॥
आय परे पग प्रेम भरि, उमगाये सुखसिंधु॥ ४८॥
पुर परिजन सिय राम लखि, भये परम आनंद॥
घर घर भये वधावने, कहैं जैति रघुचंद॥ ४९॥
भयो महा रावण निधन, शोर छयो तिहुँ लोक॥
सिय प्रभाव वर्णत सबै, मिटो सकल दुख शोक॥ ५०॥
सीताराम अनंद युत, राजत अवध मझार॥
सुर मुनि नर यश गावहीं, होत सु जै जैकार॥ ५१॥

इति श्रीरा० र० अ० वि० महारावणवध वर्णनो नामदशमो विभागः॥ १०॥

दोहा–एक समै श्रीरामसों, हनुमत कह कर जोरि ॥
भुव मंडल हेरौं चहूँ, है प्रभु यह रुचि मोरि ॥ १ ॥
हो रजाय इक दिवसकी, आऊँ निरखि उताल ॥
सुनि कपि रुचि आज्ञा दई, पुनि बोले रघुलाल ॥ २ ॥
जैयो सबही देशपै, बंग देशके माय ॥
है सुंदर इक रतन वन, तहँ न धारियो पाय ॥ ३ ॥
सुनि प्रभु सिख शिर नायकै, उछले कपि बरजोर ॥
अवलोको द्वै याम मधि, भुव मंडल चहुँ ओर ॥ ४ ॥
आये प्राची दिशि तबै, लखि कौशिक अस्थान ॥
गये मुनिहि शिरनायकै, बोले कपि हनुमान ॥ ५ ॥
मुनिनायक मम स्वामि गुरु, मो हिय शंका भूर ॥
कृपा सहित उपदेश करि, कीजे सो भ्रम दूर ॥ ६ ॥
विधि विरचित यह सृष्टि मधि, सुख दुख रूप कुरूप ॥
किहि गुण औगुण होतहैं, सो वरणिय मुनि भूप ॥ ७ ॥
तब सादर कह गाधिसुत, सुनौ वीर हनुमान ॥
जीव लहै संसार फल, पूरब कृत्य प्रमाण ॥ ८ ॥
प्रथम किये जप योग तप, दान जीव सो आय ॥
धन गुण प्रभुता रूप बल, सुख युत जग विलसाय ॥ ९ ॥
जिन कुकर्म कीने तिनै, दुख होवें दुहुँ ठौर ॥
हौं भाषों संक्षेप इमि, गुणि लीजो बहु और ॥ १० ॥
परधन तिय सुत हरनते, होतामिश्र जु नर्क ॥
गो द्विज पितृ बध द्रोहते, कालसूत्र संतर्क ॥ ११ ॥
दंडा दंडहि देत सो, शूकरमुख माधि जात ॥
अंध कूपते परहिं जे, सुरस अकेले खात ॥ १२ ॥
गरलद अग्निद चोर ते, सारमेय मधि जायँ ॥
दंदसूक पावैं पिसुन, निंदक रौरव मायँ ॥ १३ ॥
चौ०–जे विश्वासघात कछु करहीं ॥ ते जन शूल नर्क महँ परहीं ॥
मिथ्यावादी वीचिहि जाहीं ॥ गुरु श्रुति विमल सुनाए रहाहीं १४

इमि अनेक जे पातक आहीं ❀ तिहि कृत जीव नर्कमधि जाहीं॥
भोगि पाप पुनि जग महँ आवें ❀ तिहि प्रमाण सब चिह्न जनावें॥१५

दोहा—श्याम दंत मद पीलखाँ, वादी खंडित अंग ॥
निंदक हो खल्वाट अरु, परहासक दृढ़ भंग ॥ १६ ॥
मातागामी लिंग विन, कन्यागामी कुष्ट ॥
भगिनीगामी के हृदे, होय महा व्रण पुष्ट ॥ १७ ॥
मित्रतियागामी जु सो, रहे भारजाहीन ॥
स्वामिगम्य तिय गमन ते, गंडमाल दुख दीन ॥ १८ ॥
राखै तियन प्रतीतिपै, तिनते करै अधर्म ॥
तासु अंगमें दुखद बहु, रुज होवै गज चर्म ॥ १९ ॥
उच्च जात जो आप ते, तिहि तिय भोग कराय ॥
ताके मस्तकमें सदा, महा रोग सरसाय ॥ २० ॥
आत्मघाती हस्त रुज, मिथ्यावादी मूक ॥
परसुख अनदर्शी हिये, उठै सदाही हूक ॥ २१ ॥
देवनिंद प्रिय बधिर हो, कुब्ज कुटिलता पाय ॥
वट पारी पद रुज रहै, पिशुन श्वास उपजाय ॥ २२ ॥
गर्भपात कारिहि सदा, क्षई जलोदर जान ॥
छर्दि विपद धूर्तहि मृगी, मत्त कृतघ्नी मान ॥ २३ ॥
अग्निदाह कारीहि बहु, होय रक्त अति सार ॥
शतकृत बाधकके रहै, रुज नित उदर मझार ॥ २४ ॥
शिशुघाती सुतहीन अरु, तियघाती धनहीन ॥
गोद्विज स्वामी घात ते, गलित कुष्ठ तनु छीन ॥ २५ ॥
मृषा पक्षकारी स्रुतिहि, होवै पक्षाघात ॥
गुदरोगी जल सुर सदन, जे विट मूत्र करात ॥ २६ ॥
इहि विधि चिह्न अनेक ते, नर नारीके अंग ॥
पूरव कृत पातकनके, लखे परैं सब ढंग ॥ २७ ॥

प्र० ॥ पद्म० श्लोक ॥

परवित्तं परापत्यं कलत्रं हरते च यः ॥
तस्य पातं तु तामिस्रे कुर्वन्ति यमकिंकराः ॥ १ ॥ इत्यादि ॥

तत्रैव ।

मातृगामी च पुरुषो जायते लिंगवर्जितः ॥
स्वसुतागमने चैव रक्तकुष्ठं प्रजायते ॥ २ ॥ इत्यादि ।

चौ०–यों कहि भाषी गाधिकुमारा ❀ है नहिं पापं पुण्यको पारा ॥
याते सबहि उचित यह बाता ❀हरिहि भजे दुहुंलोक सुत्राता २८॥
सुनि सुनि वचन वीर हुलसाने ❀ धन्य धन्य ऋषिवरहि बखाने ॥
शीशनाय गवने बजरंगा ❀ वश भवितव्य भई मतिभंगा ॥२९॥

दोहा–किय विचार कपि ईश मुहिं, क्यों वरजो तहँ जान ।
चलि हेरौं तौ देश वह, किमि सुरत्न वन थान ॥ ३० ॥
यों विचारि हनुमत सपदि, जाय लखो सो देश ।
पुनि अवलोको रतन वन, परम अनूप सुदेश ॥ ३१ ॥
रजत हेम विद्रुम विटप, मणि मुक्ताफल फूल ।
द्विज सजीव बहु रत्न मय, सरित तडाग अतूल ॥ ३२ ॥
तिहि वन चहुँ प्राकारवर, चारु चार दृढ द्वार ।
परम विचित्र विशाल बहु, तासु मध्य आगार ॥ ३३ ॥
तहाँ द्वार रक्षक तिया, एक वृद्ध बलरास ।
तेज पुंज दुर्बल अतिहि, बैठी सहित हुलास ॥ ३४ ॥
ताढिग हनुमत आयकै, कही लखौं वनजाय ।
सो बरजी तब तिहि निदरि, चले वीर बरियाय ॥ ३५॥
तब वह तिय कपि पगपकरि, फेंके भूरि भ्रमाय ।
राम निकट हनुमंत द्रुत, परे अवधमें आय ॥३६॥
लखि सकुचे कपि प्रभु हँसे, तब हनुमत करजोरि ॥
विनय करी रघुवर क्षमौ, आज्ञाभंग जुलोरि ॥३७॥
निज अपराध क्षमायकै, रहे मुदित हनुमंत ॥
राम स्वभाव कृपालुता, यश वर्णत सबसंत ॥ ३८ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० हनुमत पर्यटन वर्णनो
नाम एकादशो विभागः ॥ ११ ॥

सो०—श्रीरघुवर गुणग्राम, कथा होत तिहुँलोक मधि ॥
सुर नर मुनि वसु याम, यूथ यूथ वर्णत सुनत ॥ १ ॥
चौ०—मुनि अगस्त्य इक समै सुजाना ❀ करतहुते रघुवर यशगाना॥
ताछिन ऋषि वोले हुलसाई ❀ करौं कहाँलग रामबडाई ॥ २ ॥
दोहा—लखौ कीश नल लंकमें, किमि कीनो अपराध ॥
अपनायो तिहि करि क्षमा, ऐसे कृपा अगाध ॥ ३ ॥
सुनि बूझी सब चकित ह्वै, कहा कियो नलनाथ ॥
तब मुनिवर ऋषि गणनते, वर्णन लगे सुगाथ ॥ ४ ॥
चौ०—कीनी लंक विजै जब रामा ❀ तब वर भूषण वसन ललामा॥
तीजे दिवस सबहि बहु दीने ❀ कीश भालु परितोषित कीने ५॥
तादिन पट भूषण सजि नाना ❀ नल कपि धारि नरतनु बलवाना॥
हाट बाट चहुँलंक मझारी ❀ निरखत पुर शोभा सुखकारी ६॥
ताछिन एक निश्चरी बाला ❀ ऋतु मंजन किय युवा रसाला॥
मोहित भई नलहि सो हेरी ❀ कीशहु दृष्टि नारि सों भेरी ॥७॥
धाय आय सो निश्चर वामा ❀ कपिहि बोलि लैगई स्वधामा॥
बहु सन्मान सहित बैठारे ❀ सकुचि विहँसि मृदु वचन उचारे८॥
कीन आजहौं ऋतु अस्नाना ❀ तुमहि निरखि मोचित्त लुभाना॥
लावो हीय न और विचारा ❀ मोमिलि करौ निसंक विहारा ९॥
तासु वचन सुनि कपि हिय सोचा ❀ परतिय गमन कर्म अति पोचा॥
बहुरि कीश यह उर ठहराई ❀ उत्तर दीने नाहिं भलाई ॥१०॥
दोहा—तिय सपष्ट मुख आपने, जो माँगै रतिदान ॥
है समर्थ नहिं देय तौ, तिहि सम दोष न आन ॥ ११ ॥
यों गुणि भाषी कीश तिहि, सुनौ सुंदरी वाल ॥
तुम निश्चरी अनूप हौ, नव योवना रसाल ॥ १२ ॥
पै विशुकर्मा देवके, अंश जनित हम आहिं ॥
सुर निश्चरी विहारमें, पातक दुहूँ लगाहिं ॥ १३ ॥
तब बोली वह निश्चरी, सुनौ एक इतिहास ॥
सत्य प्रमाण बखानहूँ, मानौ दृढ़ विश्वास ॥ १४ ॥

सो०—श्रीरघुवर गुणग्राम, कथा होत तिहुँलोक मधि ॥
सुर नर मुनि वसु याम, यूथ यूथ वर्णत सुनत ॥ १ ॥
चौ०—मुनि अगस्त्य इक समै सुजाना ❀ करतहुते रघुवर यशगाना॥
ताछिन ऋषि बोले हुलसाई ❀ करों कहाँलग रामबडाई ॥ २ ॥
दोहा—लखौं कीश नल लंकमें, किमि कीनो अपराध ॥
अपनायो तिहि करि क्षमा, ऐसे कृपा अगाध ॥ ३ ॥
सुनि बूझी सब चकित ह्वै, कहा कियो नलनाथ ॥
तब मुनिवर ऋषि गणनते, वर्णन लगे सुगाथ ॥ ४ ॥
चौ०—कीनी लंक विजै जब रामा ❀ तब वर भूपण वसन ललामा॥
तीजे दिवस सबहि बहु दीने ❀ कीश भालु परितोपित कीने ५॥
तादिन पट भूपण सजि नाना ❀ नल कपि धारि नरतनु बलवाना ॥
हाट बाट चहुँलंक मझारी ❀ निरखत पुर शोभा सुखकारी ६॥
ताछिन एक निश्चरी बाला ❀ ऋतु मंजन किय युवा रसाला ॥
मोहित भई नलहि सो हेरी ❀ कीशहु दृष्टि नारि सों भेरी ॥७ ॥
धाय आय सो निश्चर वामा ❀ कपिहि बोलि लैगई स्वधामा ॥
बहु सन्मान सहित बैठारे ❀ सकुचि विहँसि मृदु वचन उचारे८॥
कीन आजहौं ऋतु अस्नाना ❀ तुमहि निरखि मोचित्त लुभाना॥
लावो हीय न और विचारा ❀ मोमिलि करौ निसंक विहारा ९॥
तासु वचन सुनि कपि हिय सोचा ❀ परतिय गमन कर्म अति पोचा॥
बहुरि कीश यह उर ठहराई ❀ उत्तर दीने नाहिं भलाई ॥१० ॥
दोहा—तिय सपष्ट मुख आपने, जो माँगै रतिदान ॥
ह्वै समर्थ नाहिं देय तौ, तिहि सम दोप न आन ॥ ११ ॥
यौं गुणि भापी कीश तिहि, सुनौ सुंदरी बाल ॥
तुम निश्चरी अनूप हौ, नव योवना रसाल ॥ १२ ॥
पै विशुकर्मा देवके, अंश जनित हम आहिं ॥
सुर निश्चरी विहारमें, पातक दुहूँ लगाहिं ॥ १३ ॥
तब बोली वह निश्चरी, सुनौ एक इतिहास ॥
सत्य प्रमाण बखानहूँ, मानौ ~

पुनि अति अंतरंगिनीजोई ❀ गवनी निकट मंदगति सोई ॥
दंपति पद सरोज मृदु चापे ❀ मधुर मधुर सुर गीत अलापे ६॥
दोहा–तब दंपति निद्रा विगत, उठि बैठे सानंद ॥
बलिहारी सखि लेत सब, लखि दोऊ मुखचंद ॥ ७ ॥
पुनि दंपति उठि सेजते, सेन सिंगार उतारि ॥
अपर वसन धारे विशद, निज निज कुंज पधारि ॥ ८ ॥
चौ०–यथायोग दंपतिहि अलीगन ❀ निज निज थल सेवैं प्रसन्न मन॥
सकल सौच करि कर पद धोये ❀ वदन प्रछालि नींद सब खोये॥९॥
पुनि स्नान कुंज मधि आये ❀ सखिन सविधि मंजन करवाये ॥
वर शुचि पीतांबर तनु धारे ❀ कीने देव नित्य कृत सारे ॥१०॥
दोहा–होम ध्यान जप यजन वर, दान विधान अपार ॥
यथा उचित कीने सकल, दंपति सहित विचार ॥ ११ ॥
स्वर्णदान गोदान अरु, अन्नदान महिदान ॥
अपर दान बहु सविधि किय,सह श्रद्धा सन्मान ॥ १२ ॥
चौ०–पुनि शृंगार कुंजपग धारे ❀ भूषण वसन सु अंग सँवारे ॥
विविध सुगंध प्रसूनन माला ❀ साजि कियो शृंगार रसाला ॥ १३॥
इहि विधि सखिन दुहूँ शृंगारे ❀ पुनि इक सिंहासन बैठारे ॥
शुचि फल मेवा सरस सुहाये ❀ कछुक दंपतिहि अशन कराये१४॥
पुनि सरयू जल पान कराई ❀ कर प्रक्षालि वर विरी पवाई ॥
साजि आरती अलिन दुहुँ कीनी ❀ सविधि चतुर्दश आवृति दीनी१५
दोहा–चरणवेद ४ दृग २ लंकमुख, शशि १ वासर७सब अंग ।
इमि चतुर्दश१४ वृत्ति सो, सविधि आरती ढंग ॥ १६ ॥
प्र० ॥ नाभाजी कृत अष्टजामे ।
दोहा–चार आवरत चरण पुनि, कटि युग मुख पर एक ॥
सप्त अवरत सर्व अंग, विधि युत करि सविवेक ॥२॥इत्यादि
चौ०–पुनि तहँ ते दंपति पग धारे ❀ संग सखीगण यूथ अपारे ॥
छत्र विजन चामर बहु साजा ❀ लिये यथोचित अली समाजा १७
विलग विलग सिविका मधि राजे ❀ निरखि छटा रति मनसिज लाजे॥
सखियन दुहुँ पालकी उठाई ❀ प्रमुदित निज निज ओर सिधाई१८

चौ०-एवमस्तु तव कही दिनेशा ❀ पुनि बो
कीनी कृपा यथा दिनराई ❀ तिमि कृ

दोहा-इमि वर दै ग्रहपति गये, सो आ
दिनईशहि नित ध्यावहीं, मुदित

चौ०-सप्तसहस्र वर्ष अब बीते ❀ ति
ते कलि मध्य करैं महिराजा ❀ इ
न्याय नीति तत्पर मतिधामा ❀
विसुकर्मा सुदेव शुभ अंशी ❀
अपर अनेक अनूपम काजा ❀
भूरि काल लग राज्य कराहीं
इहि विधि विपुल कथा मुनि गाई
सुनि सुर नर ऋषि संत अपार

इति श्री० रा०
वर्णनो नाम

इति श्रीरसिकविह
चरित्र वर्ण

दोहा-यथा योग व
अष्ट याम म

चौ०-चार दंड निशि
आय द्वार द्विज
बाजै वर नौब
कुंज कुंज अलि

दोहा-है श
पुनि

जे नृप सुत संगी सखा, सेवक बैठे द्वार ॥
सब दिशिकी वर वंदना, अलिगण करी उचार ॥ ३३ ॥
ो०—ताछिन कौशल्या महरानी ❀ आलिन प्रति भाषी मृदुवानी॥
धुर सरस मेवा पकवाना ❀ लावो साजि थाल वर नाना ३४॥
ुनि सखिगण अति आतुर जाई ❀ भरि भरि थार सौंज ले आई॥
त्र सब सुतन सखान समेता ❀ निज कर परसि मात भरि हेता ३५॥
य पकवान सविधि फल मेवा ❀ मात कराये सबहि कलेवा ॥
ीर प्याय वर बिरी खवाई ❀ निज पट मुख पोछो हुलसाई ३६॥
ुनि जे द्वार सखा सेवकगण ❀ अशन पान तिन पठे मुदित मन॥
निज सुत सों सवहीको प्यारा ❀ किय महरानी परम उदारा ३७॥
त केकयी सुमित्रारानी ❀ अपर भूरि हिय अति सुख मानी॥
ुत्र वधुन आलिन युत तेऊ ❀ करवायो मन मुदित कलेऊ ३८॥
दोहा—सखा बंधु युत राम पुनि, मातनशीश नवाय ॥
चले विपुल जन संग चहुँ, दिवस याम इक आय ॥ ३९ ॥
सभा धाम मधि आयके, श्रीरघुराज विराज ॥
जुरे विप्र सुर संत मुनि, अपर अनेक समाज ॥ ४० ॥
ौ०—तहां वेद वर शास्त्र पुराना ❀ नीति धर्म इतिहास जु नाना ॥
होत कथा सतसंग अनूपा ❀ कहत सुनत कौशल पुर भूपा ४१॥
इहि विधि दिन आयो द्वै यामा ❀ दीनी सबहि रजायसु रामा ॥
अपर सकल निज धाम सिधारे ❀ रहे संग जे जेवन हारे ॥४२ ॥
ताछिन राजसदन ते आई ❀ सेवक वृंद सुविनय सुनाई ॥
सो सुनि गमने राजकुमारा ❀ संग सखा सेवक सरदारा ४३॥
आय सकल शृंगार उतारा ❀ ह्वै सब शुचि पीतांबर धारा ॥
बैठे हेम पीठ रघुराजा ❀ यथायोग सह बंधु समाजा ४४॥
दोहा—कंचनमय मणि जटित वर, पात्र अनूप अपार ॥
अशन पान बहु वस्तु सब, परसी सुमति सुआर ॥ ४५ ॥
चौ० पंच ग्रास युत भोजन कीना ❀ पुनि सब मुदित आचमन लीना॥
बहुरि सकल सेवक हरषाई ❀ कियो सुअशन प्रसाद अघाई ४६॥

अंतर मग ह्वै जनकदुलारी ❀ रानी वंदन हेत सिधारी ॥
जाय सासु ढिग राजकुमारी ❀ पदगहि कीन प्रणाम सुखारी१९ ॥
उत सिय भगिनी विशद सुहाई ❀ रानी सदन सखिन सँग आई ॥
ते तिहुँ सासु सियहि नमि सोही ❀ सबही मुदित चहूं मुख जोही२०॥

दोहा--राम मातके ढिग जुरीं, रानी अपर अनेक ॥
तिन सबको सादर बधुन, किय प्रणाम सविवेक ॥ २१ ॥

चौ०--पुत्र वधुन सब दयो अशीशा ❀ बैठारी सुघ्राण करि शीशा ॥
इत रघुवीर कनक गृह द्वारे ❀ अलिगण संग मुदित पग धारे२२॥
तहाँ सखा सेवक बहु राजे ❀ निज निज साज समय सम साजे ॥
आवतही उठि सकल प्रवीना ❀ प्रमुदित उचित सुवंदन कीना२३॥
यथायोग रघुवर सनमाने ❀ सवहीं अति आनंद अघाने ॥
पुनि सिविकाते राज कुमारा ❀ उतरि भये स्यंदन असवारा॥२४॥
तव अलिगण मिलि महल सिधारी ❀ सियके निकट गईं ते सारी ॥
इत रघुवीर समेत समाजा ❀ गमने गुरु पद वंदन काजा॥ २५ ॥

दोहा—नित्य कर्म करि बंधु दुहुँ, अपर सखा सरदार ॥
जुरे आय जन वृंद बहु, रंगभवनके द्वार ॥ २६ ॥
तहँ आये रघुवंश मणि, उचित वंदि सब कोय ॥
मिलि गमने गुरु गेहको, सहित भक्ति मुद होय ॥ २७ ॥

चौ०--आय सबंधु गुरुहि शिरनाये ❀ दिय आशिष वसिष्ट हुलसाये॥
जुरे सुविपुल विप्रतिहि ठामा ❀ सबहि कीन रघुवीर प्रणामा॥२८॥
पुनि गुरुपत्निहि शीश नवाई ❀ चले राम शुभ आशिष पाई ॥
आये मात भवन हुलसाई ❀ संग सकल सज्जन समुदाई२९॥

दोहा—बाल सखा अरु बंधु वर, संग लिये रघुराय ॥
अपर द्वार थपि मातु ढिग, गवने विदित कराय ॥ ३० ॥
जाय सकल जननीन पद, सादर नायो शीश ॥
कंठ लाय शिर घ्राण करि, सवही दयो अशीश ॥ ३१ ॥
बैठारे सादर सबै, राम मात हुलसाय ॥
कियो प्यार सुत लखनसों, अति उमंग उमगाय ॥ ३२ ॥

जे नृप सुत संगी सखा, सेवक बैठे द्वार ॥
सब दिशिकी वर वंदना, अलिगण करी उचार ॥ ३३ ॥
चौ०—ताछिन कौशल्या महरानी ❀ आलिन प्रति भाषी मृदुवानी॥
मधुर सरस मेवा पकवाना ❀ लावो साजि थाल वर नाना ३४॥
सुनि सखिगण अति आतुर जाई ❀ भरि भरि थार सौंज ले आई॥
तब सब सुतन सखान समेता ❀ निज कर परसि मात भरि हेता३५॥
पय पकवान सविधि फल मेवा ❀ मात कराये सबहि कलेवा ॥
नीर प्याय वर बिरी खवाई ❀ निज पट मुख पोछो हुलसाई३६॥
पुनि जे द्वार सखा सेवकगण ❀ अशन पान तिन पठै मुदित मन॥
निज सुत सों सबहीको प्यारा ❀ किय महरानी परम उदारा ३७॥
उत कैकयी सुमित्रारानी ❀ अपर भूरि हिय अति सुख मानी॥
पुत्र वधुन आलिन युत तेऊ ❀ करवायो मन मुदित कलेऊ३८॥
दोहा—सखा बंधु युत राम पुनि, मातनशीश नवाय ॥
चले विपुल जन संग चहुँ, दिवस याम इक आय ॥ ३९ ॥
सभा धाम मधि आयकै, श्रीरघुराज विराज ॥
जुरे विप्र सुर संत मुनि, अपर अनेक समाज ॥ ४० ॥
चौ०—तहां वेद वर शास्त्र पुराना ❀ नीति धर्म इतिहास जु नाना ॥
होत कथा सतसंग अनूपा ❀ कहत सुनत कोशल पुर भूपा४१॥
इहि विधि दिन आयो द्वै यामा ❀ दीनी सबहि रजायसु रामा ॥
अपर सकल निज धाम सिधारे ❀ रहे संग जे जेवन हारे ॥४२ ॥
ताछिन राजसदन ते आई ❀ सेवक वृंद सुविनय सुनाई॥
सो सुनि गमने राजकुमारा ❀ संग सखा सेवक सरदारा ४३॥
आय सकल शृंगार उतारा ❀ ह्वै सब शुचि पीतांबर धारा ॥
बैठे हेम पीठ रघुराजा ❀ यथायोग सह बंधु समाजा ४४॥
दोहा—कंचनमय मणि जटित वर, पात्र अनूप अपार ॥
अशन पान बहु वस्तु सब, परसी सुमति सुआर ॥ ४५ ॥
चौ०पंच ग्रास युत भोजन कीना ❀ पुनि सब मुदित आचमन लीना॥
बहुरि सकल सेवक हरषाई ❀ कियो सुअशन प्रसाद अघाई४६॥

यौंहीं तिहुँ भगिनी युत हेता ❀ अपर नारि वर सखिन समेता ॥
राम भामिनी भोजन कीना ❀ दासी जन प्रसाद सब लीना४७॥
पुनि सब सासुन शीशनवाई ❀ निज निज भवन वधू मुद आई॥
इत रघुवीर रजायसुपाई ❀ गवने बंधु सखा समुदाई ॥४८॥
सैन कुंज मधि जाय सुरामा ❀ कीनो द्वै घटिका विश्रामा ॥
पुनि उठि साजि शृंगार अनूपा ❀ आये सभा अवध पुर भूपा ४९॥
रत्न सिंहासन मध्य विराजे ❀ सेवक सखा सचिवजन भ्राजे ॥
राज काज अधिकारी जेते ❀ आये सभा समै लखि तेते॥५०॥
मंत्र निदेश न्याय नृप काजा ❀ यथायोग किय सब रघुराजा ॥
वासर रहो दंड युग जबहा ❀ उठे सभा ते रघुवर तबहीं॥५१॥
प्रमुदित रंगभवन मधि आये ❀ मुख प्रक्षालि शृंगार सजाये ॥
बंधु सखा सेवक हित, संगी ❀ तहाँ जुरे सब जन बहु रंगी॥५२॥
वाहन विविध वाजि गज स्यंदन ❀ शिविका अरु विमान वर वृंदन ॥
पदचर वीर शस्त्र धर भूरी ❀ बहु चतुरंग सैन अति रूरी ५३॥
छत्र चमर व्यजनादिक साजा ❀ लिये यथोचित सुजन समाजा॥
वाद्यकार गायननर्तक गन ❀ वेतपाणि रक्षक बंदीजन ॥५४॥
भूषण वसन वित्त बहु लीने ❀ कोशप मुख निरखे दृगदीने ॥
इमि सब राज साज वर साथा ❀ सहसमाज गवने रघुनाथा॥५५॥
यथायोग वाहन सब राजे ❀ रघुवर शत्रुंजय पर भ्राजे ॥
मंद मंद विचरत पुरमाहीं ❀ चले राम जन दरश कराहीं५६॥
नगरनिवासी उचित जुहारें ❀ मान सहित रघुवीर निहारें ॥
कर उठाय सबही सनमानें ❀ नमें ताहि जिहि भूसुर जानें५७॥
वसन विभूषन वित्त अपारा ❀ कोशप बरषत गज असवारा ॥
यहि विधि संध्या लग रघुवीरा ❀ पुर निरखनमें मग्न तीरा ॥५८॥
बहुरे सदन जन संयुत प्रेमा ❀ संध्या वंदन कियो सनेमा ॥
पुनि गाथी विधि सहित मनाना ❀ आये भानुनंदन रघुराजा॥५९॥

जननी पद गहि वंदन कीने ※ सोलखि सुतहि अंक भरि लीने॥
कंचन जटित पीठ वैठारी ※ करि आरती लई वलिहारी६०॥
पुनि कछु पय मेवा पकवाना ※ अशन कराय दये मुख पाना॥
सखा वंधु युत रामहि माता। कियो प्यार इमि प्रफुलित गाता६१

दोहा—पुनि जननिहि शिरनायके, गवने सहित समाज॥
रंगभवन आये मुदित, कौशलपति रघुराज॥ ६२॥
दई रजायसु अपर वहु, गमने निज निज ठाम॥
सखा वंधु सेवक उचित, रहे निकट अभिराम॥ ६३॥
मणिनजटित वरमंच मधि, सोभित श्रीरघुराय॥
राजे सादर उचित वहु, वंधु सखा समुदाय॥ ६४॥
नृत्य गान वर वाद्य वहु, कौतुक हास विलास॥
भयेरैनि इक याम लों, रंग सदन विचखास॥ ६५॥
पुनि उठि वंधु सखान युत, वोलि संग सरदार॥
राजमहल आये मुदित, दशरथ राजकुमार॥ ६६॥
मिलि वैठे संग अपर सव, भोजन कीन अघाय॥
रंच रंचही ग्रास लिय, वंधु सहित रघुराय॥ ६७॥

चौ०—यौं सव मिलि तहँ भोजन कीना। सेवक वृंद प्रसाद सुलीना॥
दई रजाय तवहि श्रीरामा। गये अपर जन निज निज धामा६८
वंधु सखा सेवक अति प्यारे ※ तिन युत कनकभवन पगधारे॥
द्वार आय दिय सवहि रजाई ※ निज निज सदन गये शिरनाई६९
साज सहित प्रथमहि सखि वृंदा ※ खरीं तहाँ लखि समय अनंदा॥
तिन सँग अंतर महल पधारे ※ मुदित उठीं सिय पीय निहारे७०
कर गहि सिंहासन पधराये ※ राजकुँवर लखि आनँद छाये॥
सादर मधुर वचन कहि प्यारी ※ वाम भाग निज ढिग वैठारी ७१
ताछिनसाँज साजि सखि आई ※ करी आरती हिय हुलसाई॥
पुनि दंपति शृंगार उतारे ※ रैनि साज वर अपर सुधारे ७२॥
दुहुँ रुचिमय दुहुँ कियो शृँगारा ※ साजि परस्पर करि करि प्यारा॥
अंगराग शुचि वसन विभूषण ※ सुमन सुगंध धारि प्रमुदित मन७३

[illegible] ॥ [illegible] बैठहि आजे ॥
[illegible] ॥ [illegible] सुहागि न जाई ७४
[illegible] ॥ [illegible] स्वाद प्रमाना ॥
[illegible] ॥ [illegible] बहु धारा ७५॥
[illegible] ॥ [illegible] पान करावै ॥
[illegible] ॥ [illegible] विलास रिझावै७६
[illegible] ॥ [illegible] स्वादवर ॥
[illegible] ॥ [illegible] एकप्रति एका ७७॥
[illegible] ॥ [illegible] लीन दुहुँ पाना ॥
[illegible] ॥ [illegible] सानंद प्रसादा ७८॥
[illegible] ॥ [illegible] भवन पगधारे ॥
[illegible] ॥ [illegible] साज सब साजे ॥७९॥
[illegible] ॥ [illegible] अनूपा ॥
[illegible] ॥ [illegible] दिखावैं॥८०॥
इहि विधि रंग [illegible] ॥ [illegible] मझारा ॥
पिय प्यारी आनंद [illegible] ॥ [illegible] दुहुँ [illegible] ॥८१॥
युगल याम यामिनि [illegible] आई ॥ [illegible] छाई ॥
लखि सखि वृंद लई बलिहारी ॥ [illegible] निज निज [illegible]८२

दोहा—परम अंतरंगी सखी, रहीं निकट कछु दूर ॥
अपर गई निज निज थलहि, कियो शैन सुख पूर ॥ ८३॥
[illegible] मसाले सुमन शुचि, मादक असन सुनीर ॥
अपर साज सब साजि सखि, धरे सेजके तीर ॥ ८४ ॥
इहि विधि सकल विलासयुत, आनंद भरे अछेह ॥
शैन कियो दंपति मुदित, पगे परस्पर नेह ॥ ८५ ॥
[illegible] अलीगण शस्त्र धर, पुरुष वेष वर जोर ॥
[illegible] ॥ ८६ ॥

मणि दीपक वहु भवन चहूँ, छायो परम प्रकाश ॥
तासु छटाहै अकथ जो, रहसि विलास अवास ॥ ८७ ॥
अष्टयाम सिय राम इमि, करत रीति युत काज ॥
नीत प्रीत मर्याद लखि, प्रमुदित सकल समाज ॥ ८८ ॥
अष्टयाम प्रति रीति जिमि, करत काज श्रीराम ॥
तिहुँ बन्धुन तिमि निज उचित, रहत सदा मतिधाम॥८९॥

इति श्री० रा० र० विहारविधाने अष्टयामरीति-
वर्णनो नाम प्रथमो विभागः ॥ १ ॥

दोहा–अवध नगर आनंद अति, नित नव होत उछाह॥
ब्रह्मादिक वर विविध वहु, आवत दरश उमाह ॥ १ ॥

पवंगम छद

देश देशके भूप अवध पुर आवहीं । सब रघुवर नृपनीतिहेरि हुलसावहीं । अखिल प्रजा गुणवंत आप चहुँ ओरके ॥ दरश करैं सानंदित राजकिशोरके ॥२॥ यथायोग सनमान दान अधिकायके सबहि देत सुख राम सुआश पुजायके । कोऊ वर महिपाल समय लखि रामको ॥ युत समाज लेजाहिं मुदित निज धामको ॥ ३ ॥ कबहूँ मिथिलानाथ सप्रेम बुलावहीं ॥ लक्ष्मीनिधि चहुँ भगिनि आय ले जावहीं । भरत लषण रिपुदमन जाय तिन लावहीं । कबहूँ नेहवश रामहिं आप सिधावहीं ॥ ४ ॥ मिथिला अवध समाज जबै इक ठौरहो । ताछिनको आनंद अकथ कछु औरहो ॥ राम सियाकी वर्ष ग्रंथि प्रति वर्षके ॥ को वरणै किमि सो जिमि होय सहर्षके ॥ ५ ॥ जनक नगरते विविध वस्तु वर आवहीं ॥ नृपरानी जन विपुल सप्रेम पठावहीं । इहि विधि बहु व्यवहार लोक कुलरीति के ॥ सब राखत रघुवीर सहित नृप नीतिके ॥ ६ ॥ अगणित उत्सव होत यथोचित मोदमें । हुलसैं नर नारि समस्त विनोदमें ॥ सकल सिया सानंद सदा रनिवासमें ॥ छकी रहैं निज उचित उछाह हुलासमें ॥ ७ ॥

दोवई छंद ।

कबहूँ सखा बन्धु सेवक युत ऋतुवसंत रघुराई ॥
प्रमुदित जाय लखैं वन बागन बहु वर साज सजाई ॥
अशन पान अरु नित्य गान तहँ मृगया हास विलासा ॥
होतरहै मरयाद मोद मय सहित सखी रनिवासा ॥ ८ ॥
ग्रीषम ऋतु कबहूँ जल विहरैं सखन सहित रघुवीरा ॥
कबहुँ रहसि सरयूमधि सिय युत रमैं सखिनकी भीरा ॥
कबहुँ सुमन कुंजमहँ राजैं कहुं उशीर गृहमाहीं ॥
दशरथ सुत अरु जनकनंदिनी इमि सानंद विलसाहीं ॥ ९ ॥
दोहा–प्रति ऋतु अति अनुपम अवध, शोभा बढ़त अपार ॥
पपावस ऋतुमें छटा, और बहु सुखसार ॥ १० ॥
परमरम्य सुरसदन वे, जिनते सुखद न आन ॥
तिनते उत्तम अवधमें, लघु सेवक गृहजान ॥ ११ ॥
जहाँ सिया रघुवीर नित, रहत अवध पुर सोय ॥
तिहि समान तिहुँ लोकमें, दूजो थलकिमि होय ॥ १२ ॥

हरिगी० छंद ।

सुंदर विराजै भूमि सिता मणि जटित छवि छावही ॥
तहँ गजमहल लच्छमनकी सोभा अतुल सरसावही ॥
तहँ ओर कंचन चारि गनित अमोल बहु माणिक लगे ॥
तहँ सिखिर कलसा के सुभग निसान नवरंगनरंगे ॥ १३ ॥
तहँ चारु चंद्र विशाल सुभग कपाट सोभित अति भले ॥
मनि नील अरुन अनूपगति [illegible] [illegible] ॥
सुंदर पैंडिया स्वच्छ मुक्तामालरौं [illegible] ॥
सित [illegible] नील सुरंग पीत अनेक [illegible] मनोहर ॥ १४ ॥

[illegible] छंद ।

[illegible] नित नित [illegible] ॥
[illegible] ॥

पुनि तीनहुँ भैया मोद भरैया सुख युत करत कलोलैं ॥
रघुवर रुचि लीने रहत प्रवीने संग सखनकी गोलैं ॥ १५ ॥
रघुनंदन संगी सखा सुढंगी निज निज महलन राजैं ॥
जिनकी प्रभुताई वरणि न जाई लखि धनेश मन लाजैं ॥
सब भाँति सुपासा भोग विलासा करत दास अरु दासी ॥
मिथिला पुरवासी अवधनिवासी सकल सुकृतकी रासी ॥ १६ ॥

भुजंगी छंद ।

छटा औधकी को सकै गायकै । सिया राम राजैं भले भायकै ॥
सदाही प्रभामंत सो धाम है । पुरी सातमें मुख्य जो नामहै ॥ १७ ॥
कहूं गेह सो हैं बने रंगके । सुचित्राम राजैं भले अंगके ॥
कहूं हाट बाटै सुगंधैं सिची । कहूँ चांदनी है चहूंघाखिची ॥ १८ ॥
कहूँ फूल डाली धरी हैं घनी । सुधासी कहूँ वस्तुकेती बनी ॥
मिली झुंड गावैं सुनै नीकहू । कहूँ कौतुकी खेलठाने चहूँ ॥ १९ ॥
कहूं मल्ल जोरी भिरैंजंगसे । कहूं बाल खेलैं बने रंगसे ॥
कहूं लेततानैं सुरावर्त की ॥ कहूं नृत्य ठानैं भले नर्तकी ॥ २० ॥
कहूं विप्र उच्चारहीं वेदको । हरैं वेगि कामादिके खेदको ॥
कहूं छैल डोलैं भरे मोदमें । कहूं बाललीने तिया गोदमें ॥ २१ ॥
कहूं वाम सोहैं पिया संगमें । हिंडोरे सुझूलैं छकी रंगमें ॥
भरे मोदमें औधवासीरहैं । सिया लालके सो उपासी रहैं ॥ २२ ॥
बने जन्मलों शेष जो गावहीं । प्रभा धामकी पार ना पावहीं ॥
कही कौनैप जात सोभामहा । विहार स्थली लाडिलेकी जहां २३ ॥

दोहा—पुनि सबही ते रुचिर अति, शैन सदन तिहि ठाम ॥
शिव अगस्त्य आदिक अमित, कहो जासु गुणग्राम ॥२४॥

पद्धरी छंद ।

श्रीकनक भवन आनंद रूप । शोभा अभंग अतुलित अनूप ॥
तिहि नवावरन विचित्र सोह । जिहि देखि कोटि सुरधाम मोह २५॥
निय रघुनंदनको केलि भौन । तिहि की समता कवि कहहि कौन ॥
सो महल मध्य सखिगण अनूप । जहँ श्रान हौन नाहिं कुरूप रूप २६॥

इकराज कुँवर प्यारे विहाय । तहँ सखी वृन्द सवही लखाय ॥
निज निज सेवाकी सौंज साज । सेवें नित दम्पति रसिकराज २७॥
सेवैं श्रीसियपतिको सदाय । ते धन्य सखी दम्पति सुहाय ॥
प्रति कुंज कुंज शोभा अपार । सुखधाम नित्य लीला विहार २८॥
कहुँ सुभग लसत अस्नान कुंज। सजि अमित वस्तु जहँ अलिन पुंज ॥
तहँ मंजन करत जु सीयलाल । वहु भांति परस्पर होत ख्याल २९॥
कहुँ सुखद सुभग शृंगार कुंज । जहँ लहि सुगंध बहु मधुप गुंज ॥
नव बसन विभूषण अंगराग । साजैं अलि दम्पति करि विभाग ३०॥
कहुँ भोग कुंज सुंदर अनूप । जहँ अमित वस्तुवर अमृत रूप ॥
सखि वृन्द सबै निज सौंजसाज । सेवैं नित दंपति रसिकराज ३१ ॥
कहुँ शैन कुंज शोभा अभंग । जिहि देखि लजैं शतरति अनंग ॥
जहँ लाल लाडिली सुख समेत । विहरत दोऊ आनंद लेत ॥ ३२ ॥
कहुँ रास कुंज अतिही ललाम । जहँ लहत मोद सुखधाम श्याम ॥
संगीत निपुण तहँ विविधि बाल । निज निज सेवा तत्पर विसाल३३॥
कहुँ शरद कुंज अति स्वक्ष चारु । जहँ करत सीय रघुवर विहारु ॥
तहँ सखी वृंद नितैं सुढंग । जिहि रूप देखि लजरति अनंग॥ ३४॥
हेमंत कुंज सुखमा ललाम । जहँ करत विहार जु सीय श्याम ॥
वहु केलि साज साजे अभंग । सरसात मोद सुनि राग रंग ॥ ३५ ॥
कहुँ शिशिर कुंज शोभा लखात । बहु दीप माल दुति जगमगात ॥
नव वसन मसाले गृह सुहाय । निरखत ग्रीषम जिहि अति लजाय३६॥
कहुँ लसत अनूप वसंत कुंज । जहँ सरस सुहाई अलिन पुंज ॥
विलसत पिय प्यारी मुदित हीय।रसऋतुरति सुरपति लजत जीय३७॥
कहुँ ग्रीषम कुंज विशाल सोह । लखि जाहि शिशिर हेमंत मोह ॥
जहँ सकल सुशीतल विविध साज।राजतपिय प्यारी युत समाज३८॥
कहुं पावस कुंज अनूपराज । जहँ मुदित पीय प्यारी विराज ॥
तहँ सदा लखिय प्राविट अभंग । द्रुम वेलि फूल नभ सरस रंग३९॥
कहुँ फाग कुंज शोभा अपार। हिंडोल कुंज कहुँ अतिसुढार ॥
कहुँ सखी भवन सोहैं अनूप । मुद रसिकविहारी निरखि रूप४० ॥

सो०–इहि विधि कुंज अपार, कनक भवन मधि राजहीं ॥
एक कोश विस्तार, शैन धाम सिय रामको ॥ ४१ ॥
पुनि सरयू तट कुंज, बाग वाटिका वन विविध ॥
यूथ यूथ अलि पुंज, रहैं यथोचित सकल थल ॥ ४२ ॥
श्री सरयू तट धाम, अपर अमित तिय नरनके ॥
उचित घाट वर ठाम, परमरम्य शोभित सरित ॥ ४३ ॥

कुंडलिया।

नीके घाट सुहावहीं, मणि गण जटित विचित्र ॥
बहु सोपान अनूप अति, मोहत मनहिं पवित्र ॥
मोहत मनहिं पवित्र तीर सुर मंदिर राजैं ॥
सुखद सुभग आराम सरस वन उपवन भ्राजैं ॥
रसिकविहारी मधुर शब्द शुक पिक अलि नीके ॥
विप्र वृंद उच्चरत वेद धुनि मृदु रव नीके ॥ ४४ ॥
राजैं नर नारीनके विलग विलग शुचि घाट ॥
पुनि न्यारे मज्जत जहाँ, विपुल वाजि गज ठाट ॥
विपुल वाजि गज ठाट अमित गोवृंद पियत जल ॥
उत्तम मध्यम नीच गहत अपने अपने थल ॥
विविध वृंद वृंदारकानके बहु छवि छाजैं ॥
रसिकविहारी युगल ध्यान युत मुनि गण राजैं ॥ ४५ ॥
रामघाट अति सुभग जहँ, मज्जतहैं सव भाय ॥
करत विविध विधिकेलि तहँ, सखन सहित सुखदाय ॥
सखन सहित सुखदाय अधिक आनंद लहैं जाति ॥
निरखि सकल पुरलोग हृदय पावत प्रमोद गति ॥
रसिकविहारी मानरहत शारद नारद मति ॥
को वरणै छवि अतुल स्वच्छ वर राम घाट अति ॥४६॥

चौ०–सुभग जानकी घाट विशाला ॐ मज्जैं अंतरंगिनीबाला ॥
तहँ प्रमोद वन परम सुहावन ॐ कोटिन अमरावती -

लतिका छंद।

सुखद सुंदर वन प्रमोद विराजही । विमल सरयू तट अधिक छवि छाजही। जहाँ पावस प्रगट रूप दिखावही॥ सो सदा सिय श्यामके मन भावही॥ ४८॥ कलित कदलि कदंव तरु राजत वने॥ बकुल विविध रसाल सरस सुहावने॥ पनस पाकर पल्लवित सोहैं भले॥ सुफल समय निहारि निज निज सो फले॥ ४९॥ ललित लतिका तरुन तनु लपटावहीं॥ मोर निर्तत सुखद शब्द सुनावहीं॥ शोर करि पपिहा घनो पी पी रटै॥ जाहि सुनि बिरहीनकी छाती फटै॥ ५०॥ झूमि झुकि झुकि पवन झोका लेत हैं॥ करत घन घनघोर अति सुख देत हैं॥ दामिनी दमके चहूँदिशि धायके॥ नीर वरसत भूमि मंडल छायकै॥ ५१॥ श्यामघन चहुँओर सुंदर घेरही॥ अरुण नील सुपीत रँग बहु फेरही॥
इंद्र धनुप विशाल कबहूं दरशई। सुखद पावसकी छटा अति सरसई५२

दोहा-इमि अति सुभग प्रमोद वन, बाढ़ी छटा अपार॥
पावसऋतु उत्सव समय, वर हिंडोल विहार॥५३॥
श्रावण शुक्ल सु तीज तिथि, लखि औसर अलिवृंद॥
वन प्रमोद हिंडोलनव, सजो सुभग सानंद॥ ५४॥

लतिका।

हेम खंभ विशाल मणि गण खचित है। बेल बूँटे रंगके बहु रचित है॥ मुकुर अगणित भाँतिके लागे घने। मनो मनसिजके सुभग करते वने॥ ५५॥ रुचिर डाँडी राजहीं बहु रंगकी। जगमगत जिहि ज्योति सरस सुढंगकी॥ नगन जटित अमोल चारौं चारु है॥ मनौ सुखमाकी सुखद सुखसार है॥ ५६॥ लाल बेलन चाखडी चित्रित घनी। ललित चमकत चहूँ दिशि मर्कत मनी॥ झूमका वहु स्वच्छ मोतिनके बने।:बीच बिच कहुँ लाल पन्नासों वने ५७॥ सुभग पटुली अरुण विद्रुम मय लसै। मध्य चहुँ बहु मणिनकी अवली वसै॥ झालरें नव रंग जरित जरावकी। अमल मोतिन युक्त नवल वनावकी॥ ५८॥ म्रदल रेसम डोर पचरंगी

खरी। अधिक छवि सरसात मोतिनसों भरी ॥ कहूँ गाथे नव सुगंधित फूल हैं। जहाँ अलि कल रव करैं अनुकूल हैं ॥५९॥ शिखर सुंदर अरुण मणिमय राजहीं। निरखि सो छवि बालरवि द्युति लाजहीं ॥ हरित नीलमणीनके बहु मोर हैं। नचत मनहुँ सजीव करत न शोर हैं ॥ ६० ॥ सखिन साजि हिंडोल सबही भांति सो। अति विचित्र अनूप निज गुण जाति सो ॥ झूलि हैं सिय पीय दोऊ मोदसों। करति अलि अभिलाप सकल विनोदसें ॥ ६१ ॥ समय लखि सखिगण चलीं शृंगार कै। वसन भूपण सरस अंग सुधारकै ॥ जाय दंपति ढिग रहीं कर जोरकै ॥ वैन मृदु हँसि कहत दुहुँन निहोरकै ॥ ६२ ॥ सुभग पावस चहूँ दिशि छवि छै रही। त्रिविध सरस समीर अति सुख दै रही॥ हरित भूमि विशाल उपवन राजही। मधुर शब्द सुहावने घन गाजही ॥ ६३ ॥ ललित लघु बुंदन फुही सुंदर परै ॥ निरखि सावन रूप मन मनसिज हरे। हुलसि प्यारी पीय मुदित सिधारिये ॥ झूलिये गल बाँह दे सुखकारिये ॥ ६४ ॥ सुनि सखिनके वैन मृदुल सुहावने। भये दंपति मुदित सुख सरसावने ॥ पीय मुख सिय सीय मुख पिय देखिकै। धरे दुहुँ गल बाँह आनँद पेखिकै ॥ ६५ ॥ वन प्रमोदहि चले सखि गण संगमें। होत कौतूहल विविध रस रंगमें ॥ लिये अलि सुखपाल दंपति राजहीं। निरखि छवि रति मैन कोटिन लाजहीं ॥ ६६ ॥ सरयुतीर प्रमोद वन शोभा महा। नित्य पिय प्यारी विहारस्थल जहाँ ॥ गये युगल किशोर हिय आनँद भरे ॥ झूलहीं सिय पीय भुज अंस न धरे ॥६७॥ भाँति इहि झूलत सदा दंपति भले। गीत वाद्य सँगीनके नवरँग रले ॥ नचति गावति सखीगण प्रमुदित सबै। सबै निज निज रागिनी सुंदर फबै ॥ ६८ ॥ कोउ झोका देत अली झुलावहीं। कोउ भर आनँद विजन डुलावहीं ॥ कोउ प्यारे दृग दृगनसों जोरहीं ॥ कोउ बलिहारी करें तृण तोरहीं ॥ ६९ ॥ कबहुँ झोका देत प्यारे रमकिकै। डरपि डर लगि जात प्यारी झमकिकै ॥ कबहुँ सिय गहि लेत पियको अंकमें ॥ कबहुँ हँसि कनगन दोउ

रँग भरे इहि भाँति झूलत सोहहीं ॥ निरखि छवि रति काम कोटिन-मोहहीं ॥ कहति प्यारी लाल धीरे झूलिये॥डरति हम सुकुमारि क्यों इमि भूलिये ॥ ७१ ॥ वीरके सुतवीर हौ तुम श्यामजू ॥ डरति अधिक अधीरहैं हम वामजू ॥ तुमहिं धनु तोरत न लागी वारहे ॥ हमहिं निज शृंगारहीको भार है ॥ ७२ ॥ सुनि रसीले वैन प्यारीके नये ॥ प्राणप्यारे सुरसहिय प्रमुदित भये ॥ चाह उर वाढी घनेरी लालके ॥ वहुरि झोका दियो मिसकारि ख्यालके ॥ ७३ ॥ लखि निठुरता लालकी अति लाडिली ॥ मानिकै मनमान उठि तहँ ते चली॥लसत पावस कुंज वहु सोभाजहाँ ॥मोरि मुख नख लिखत महि बैठी तहां ॥ ७४ ॥ देखि अलिगण मान चकित जहँ तहीं ॥ कछूसियजूसंग कछु पिय ढिग रहीं ॥ विकल वोलत वैन प्यारे दीन हैं ॥ धरत धीर न नीर विन जिमि मीन हैं ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोऊ जाय सुघर सहेली लाडिलीको यह विनय हमारी कर जोरकै सुनावो धाय ॥ हमतौ तिहारे रस रूपके अधीन बने तुम हौ प्रवीन निठुराई यौं धरी क्यों हाय ॥ रावरो निहारि रुख रहत सदाही मोद तन मन प्राण भये विकल वियोग पाय ॥ रसिकविहारी प्यारी डारि गलबाहीं वेगि विरह कटारी लगी भारी सो सँभारो आय ॥ ७६ ॥ चंद्रकला परम प्रवीन गुण आगरी हो जाय प्राणप्यारी ढिग कहो कर जोरिकै ॥सुभग सलोनी तुम सुंदर चतुर बाल प्रियाको मिलावो वेगि नेह रस बोरिकै ॥ रसिकविहारी हेमा क्षेमादिक प्यारी अली क्यौं न अब विरह सुनावो हाय दौरिकै ॥ विनै हम ओर ते जु कीजो चारुशीला चारु काहे चित्त चोरि आज बैठी मुखमोरिकै॥७७॥जाय सखि वृंद पाय औसर विलोकि रुख जोरि कर मंद मृदुवचन उचारे हैं ॥ स्वामिनी सुजान प्राणप्यारी सुनि लीजै विनै विकल विहाल लाल विरह तिहारे हैं ॥ खान पान भूषण वसन सुख सैन सबै रावरे वियोग वश निपट विसारे हैं ॥ रसिकविहारी चलि कीजिये सुखारी वेगि मन वच कर्म प्यारे रसिक तिहारे हैं ॥ ७८ ॥ पलक विछोह

जासों आज लों भयो ना कहूँ तासों मुख मोरि मान गहि कै रहीजे क्यौं॥हाय प्राणप्यारी जक लागी तबही ते यह दया हिय लाय तिनै आनँद न दीजे क्यौं ॥ रसिकविहारी बरसावन सुहायो चहूँ प्यारे संग झूलि सुख सुंदर न लीजे क्यौं ॥ घेरि घहरावैं घन घुमड़ प्रमोद वन गह्व भुज डार प्यारी रमन न कीजे क्यौं ॥ ७९ ॥

सो०–हे प्यारी सुखदान, जैसी तुम गुण आगरी ॥
त्यों प्यारे रसखान, योग विरंचि भलो रचो ॥ ८० ॥
कीजे तहँ न विछोह, तुम विन प्यारे विकल अति ॥
दुहुँन दुहूँ मिलि सोह, दुहुँ विन लखिय मलीन दुहुँ ८१॥

सवैया कवित्त ।

क्यों हठि मान कियो नवला तुम जीवनमूर ललाकि सदाई ॥
श्याम निरंतर रावरे हीय बसैं छिनहूँ विलगाय न जाई ॥
रीति नई विपरीति कहा यह रूठि रही पिय सों अनखाई ॥
लाडिली रोप विहाय सबै रसिकेश मिलौ हिय सों हियलाई ८२
आज दशा लखि लालनकी सखियान सबै उर बाढत पीर है ॥
रावरो मान विलोकतही तनु प्राण घनो विधि होत अधीर है ॥
राजकुमारि विनै सुनिये रसिकेश मिलो सजि भूपण चीर है ॥
हो मिथिलेशसुता इततो उत वे अवधेश तनै रघुवीर है ॥ ८३ ॥
शील दया अरु प्रीति सुरीति हिये बिच रावरे सोह विशेखी ॥
ज्यों वन दामिनि फूल सुवासहि कोऊ कहूं विलगात सुपेखी ॥
प्यारी विना पिय प्यारी विना पिय रंच लहै सुख है किन लेखी ॥
त्यों रसिकेश तिहारे विषे सुइती निठुराई न आज लों देखी ८४
चौ०-इहिविधिसखिप्यारिहिसमुझावैं ❀ करिमृदुविनयसुमानछुटावैं ॥
तौ लग राजकुमर अकुलाई ❀ बोले मधुर प्रिया ढिग आई॥८५॥

सवैया कवित्त ।

नेक निहारो प्रिया इत तो किहि हेत इती निठुराई धरी है ॥
लाडिली क्यों न कहो हँसिकै सु कहा हम ते बड़ि चूक परी है॥
चंद्रकला विमलादि सखी विनती हम ओरते केती करी है ॥

रंच दया नहिं आई हिये अजहूँ दृग सैन सुरोप भरी है ॥ ८६ ॥
कहूँ घनसों तड़िता मिलि जात लता लपटी तरु मध्य चहूँ॥
चहूँ दिशि प्रावट रूप अनूप भलो दरशै ऋतु माहिं छहूं ॥
छहूं अरु चार अठारहमें प्रिय हीन प्रमोद लखो न तहूं ॥
तहूं पुनि हीय विचारो प्रिया कोउ सावन मान करै न कहूं ८७॥
नव रूप उजागरि नागरि आगरि रोप तजौ किन भूतनया ॥
इन मोरनको निक सोर सुनौ कह बोलत हैं पपिहा छनया ॥
रसिकेश विचारहु प्यारी हिये यह योग भलो विधिने बनया ॥
हम हूँ अवधेश किशोर प्रिया तुमहूँ मिथिलाधिपकी तनया ८८॥
सुनि बैन सिया जू कहो हँसिकै हम जानतिहैं तुम प्यारे छली ॥
पिय बोले जू जैसे हैं तैसे तिहारे प्रिया जू भला तुम तौ हौ भली॥
रसिकेस लखो अलिके गुणकैसे तऊ रस देत प्रसून कली ॥
कपटी सब कारे सुनौ घनश्याम मलिंद विचारेकी काह चली८९
स्वारथ के तुम मीत लला कछु रंच दया नहिं हीय तिहारे ॥
पीर पराई न जानत हौ छल छंदनमैं सुप्रवीन अपारे ॥
जीय रुचै सु करौ न डरौ सिगरे हम रावरे फैल निहारे ॥
आये मनावन बोलत मीठे सु बैन इतै जु भले पग धारे ॥९०॥
कारे भले सब प्यारी सुनौ जगजीवन दायक हैं घनकारे ॥
नैन रुचैं कजरारे हिये रसिकेश सुकेश सुहात हैं कारे ॥
कोकिल कारे कितो सुख देत सिंगार मनोज सुभावत कारे॥
रावरी आयसु पालैं तिहूँ पुर सो कमलापतिहू अतिकारे ॥
लाल सुनौ इककारे भुजंग डसैं जिहिको वह होत अचेत है ॥
पावसरैनि जु कारी अंध्यारी घनो विरहीन हिये दुख देत है ॥
कारो हि है विरहा कपटी जिन कोटिन प्राण लये विनहेत है ॥
कारे ठगी मिथिलापुरकी तिय ऊची उसाँस सो आजलों लेत है९२
लाल कही हँसि प्यारी सुनौ हम तौ न कछू छलछंद न जानैं ॥
नागरि होति प्रवीण वनी जिहिकी रति लोकहु वेद वखानैं ॥

रावरो आनन पंकज सो तिहिकी रस चाह मलिंद समानैं ॥
वा दिन दीजिय दोप प्रिया रसिकेश बनैगी दया उर आने ९३॥
झूलतहीं मिचकी निक देत धरो तुम रोप प्रिया ज्ञु विशेखो ॥
चूक निहारि किती विनती कर जोर करी सु कछू नहिं लेखो ॥
रावरो कोमल चित्त घनो सुन कानन रंचन नैंनन पेखो ॥
प्यारी पिया सों कहूँ रसिकेश इतो हम मान न आजलों देखो९४॥

घनाक्षरी कवित्त।

सरस रसीले व्यंग्य वचन दुहूँके होत ताही समै घेरि घन घटा वहरानी है॥ झोकि झोकि पवन प्रचंड तरु तोरैं लगी धाराधर धारा धरा मध्य सरसानी है ॥ रसिकनिहारी कारी रैनि अँधियारी अति दामिनी दमंकि मेघ मंडल समानी है॥ नवल किसोरी देखि पावस ससंकित ह्वै नृपति किशोर उर दौरि लपटानी है ॥ ९५ ॥

दोहा–भयो मान मोचन दुहूँ, हृदय बढो आनंद ॥
करी आरती वेगही, मुदित सहचरी वृंद ॥ ९६ ॥
पुनि आनंदित नित्य प्रति, झूलत युगल किसोर ॥
परम परस्पर प्रीति लखि, सखि डारैं तृण तोर ॥ ९७॥

सवैया कवित्त।

सुंदर दंपति की छवि देखनको पुरवासिनि आवैं घनी ॥
सब चंद्र मुखी तिय साजे शृंगार स्वरूप अनूपम अंग बनी ॥
रसिकेस परस्पर बैन कहैं बहु भाग्य सराहत मोदसनी ॥
हम धन्य लखैं भर नैनन जो सिय स्वामिनि औ रघुवंशमनी ९८॥
कोऊ कहैं सियजू पटरानी मिली वडभागी नरेश लला ॥
कोऊ कहैं इनकी सम को कमला विमालादिक चंद्रकला ॥
कोऊ कहैं तिय प्यारिहि धन्य जु त्यागत पीय न एको पला ॥
कोऊ कहैं हमसों जगको रसिकेस लखै छवि जो अमला ९९ ॥
कोऊ पसारकै अंचलको विधिसे कर जोर कै येही मनावैं ॥
औध निवासिनि होवैं सबै हम जोरी अनूप निहारि सुहावैं ॥
हेरैं कृपा करि लाल सिया रसिकेश सदा सुख सों अपनावैं ॥
प्यारी पिया पदपंकजमें नित नेह बढै यह आशिख पावैं॥१००॥

कोऊ कहैं इन राज किसोर की आँखनमें है सखी कछु टोना ॥
जाके विंधें उर अंतरमें तिहि फेर सुहाय नहीं सुख सोना ॥
कोउ कहैं मुसक्यान कृपान ह्वै लागत दुःख परै री सहो ना॥
कोउ कहैं रसिकेश सबै तनु सुंदरहै कछु जात कहो ना ॥१०१॥
कोउ कहैं सखिरी निरसंक ह्वै प्रीतमप्यारी निहारिवो कीजे ॥
कोउ कहैं तजिये कुलकान भटू इनसों मिलि के कह लीजे ॥
कोउ कहैं रसिकेश सुनौ अव एक उपाय भलो चित दीजे ॥
योगिनि ह्वै तनु लाय विभूति सुऔधकी वीथिन वीच रमीजे १०२

दोहा—इहिविधि नेह भरी सवै, वचन परस्पर भाप ॥
प्रतिदिन सुख पावत रहैं, सिय सियवर हिय राख ॥१०३॥
झूलत अष्टादश दिवस, यों सिय पिय मिलि दोउ ॥
मणि पर्वत वन महल कहुँ, जवै जहाँ रुचि होउ १०४ ॥
कोऊ सिय कृत मानको, भ्रम कछु हीय न मान ॥
प्रथम लिखे जे ग्रंथ वर, तिन महँ लखौ सुजान ॥ १०५ ॥
वहुरि स्वकीया मानको, है वहु ठौर प्रमान ॥
भेद लखौ साहित्यके, तहाँ सकल विलगान ॥ १०६ ॥

प्र० । रसमंजरीग्रंथे । सूत्र ।

स्वामिन्येवानुरक्ता स्वकीया । स्वीया तु त्रिविधा । मुग्धा मध्या प्रगल्भा चेति । मध्याप्रगल्भे प्रत्येकं माना वस्थायां त्रिविधे ॥ धीरा अधीरा धीराधीरा चेति ॥ इत्यादि ।

इति श्रीरा० र० वि० वि० हिंडोल विहार
वर्णनं नाम द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥

दोहा—इमि अगणित आनंद नित, पुनि पावसके अंत ॥
आई शरद अनूप ऋतु, सब हिय मोद अनंत ॥ १ ॥
संतत प्रति ऋतु शरदमें, करैं सखी गण रास ॥
निरखैं सिय रघुवर मुदित, बाढत हृदय हुलास ॥ २ ॥
कबहूँ दंपति नेह युत, अति अनंद उमगाय ॥
सखिन मध्य एकांत थल, नटत मनोहर गाय ॥ ३ ॥

यातें सब आली सदा, सजे रहैं सब साज ॥
नृत्य गान बहु वाद्य नित, ठानैं तीयँ समाज ॥ ४ ॥

हरिगी ० छंद ।

कबहूँ सुभैरव १ मालकोश २ हिंडोल ३ दीपक ४ गावहीं ॥
श्री ५ मेघ ६ ये षट राग नारि समेत शुद्ध सुहावहीं ॥
कबहू जु शंकर रागिनी बहु सरस सुरन उचारहीं ॥
तिहुं ग्राम इकविस मूर्छना युत सकल भेद सचारहीं ॥ ५॥

दोवई छद ।

भैरव तिय भैरवी १ सिंधवी २ मधुमाधवी ३ रसाला ॥
बंगाली ४ वैराड़ी ५ सुंदर गान करैं वरवाला ॥
मालकोसकी नारि गुणकली १ खंबावती २ अनूपा ॥
ककुभा ३ अरु टोडी ४ सुठि गौरी ५ गावैं सखी सुरूपा ॥६॥
पटमंजरी १ विलावल २ सुंदर रामकली ३ मनहारी ॥
अरु देसाख ४ ललित ५ ये गावैं हैं हिंडोलकी नारी ॥
कामोदी १ देशी २ केदारा ३ नट ४ कान्हरा ५ सुढंगा ॥
ये दीपक तिय गान करैं तिय शुद्ध सुरनके संगा ॥ ७ ॥
आसावरी १ मालश्री २ मालव ३ अरु धनाशिरी ४ नीकी ॥
सुभग वसंत ५ सरस सुरगावैं सखी नारि ये श्रीकी ॥
मेघतिया सुठि टंक १ मलारी २ देशकार ३ भूपाली ४ ॥
गखद गूजरी ५ शुद्धरीत सोंगान करैं वर आली ॥ ८ ॥
दोहा—पंच पंच तिय सहित जे, हैं षट राग रसाल ॥
गान करैं आली सबै, शुद्ध समय सुरताल ॥ ९ ॥
पुनि जे शंकर रागिनी, रागिनि राग मिलाय ॥
तिनहुँ सखी सब गावहीं, शुद्ध सुरनसन्नाय ॥ १० ॥

दोवई छंद ।

ईमन १ हंस २ हमीर ३ फेरी ४ मारू ५ गौड ६ नदाना ७॥
दरबारि ८ काफी ९ सिंदूरा १० सूहा ११ तिलक १२ अड़ाना ॥१३॥
भोलशिरि १४ चड़हंस १५ अहीरि १६ सरपरदा १७ अन्न १८ गारा १९

पीलू२०बरवा२१माझ२२शंकरा२३लूम२४तिलंग२५बहारा २६
सिंधुभैरवी२७ ककुभ बिलावल२८चैती२९जाजमलारा ३० ॥
मुलतानी३१घाटी३२प्रदीपकी३३परज३४कमोद मलारा ३५ ॥
चौरा अष्टक३६मंगल अष्टक३७गौंडकली ३८भटियारा ३९ ॥
लंकदहन सारंग ४०सावनी ४१पट४२हिंडोल बहारा४३॥१२॥
सोरठ ४४रामपूरिया४५जँगला४६पंचम४७नट कल्याना४८ ॥
जैजैवंती ४९ भीमपलासी ५० देवगिरी ५१ कल्याना ५२ ॥
नट नारायण ५३ चैती गौरी ५४ युगिया ५५ गौडमलारा ५६
श्याम५७शंकराभरन ५८ त्रिवेनी ५९ सारंग ६०देवगंधारा ६१॥१३
लंकदहन ६२ पूरबी ६३ झंझोटी ६४ खेमखरज ६५ सुघरैया६६ ॥
तिलक कमोद ६७ विहाग ६८ विहंगा ६९ कुंभावती ७० अड़ैया७१
नटसारंग ७२ विभास ७३ पहाडी ७४ फरोदस्त ७५ सामंता ७६ ॥
जैतशिरी७७पूरिया ७८ मनोहर७९जैत ८० बहारवसंता ८१॥१४॥
दोहा–नट मलार ८२ बागेसरी ८३, अरु ईमनकल्यान ८४ ॥
देश मलार८५विहागडा८६,देश ८७ श्यामकल्यान८८॥१५
सरस्वती ८९ बंगालश्री ९० और लूम सारंग ९१ ॥
सिवरी ९२ कुंभारी ९३ तथा, अपर गौडसारंग ९४॥१६ ॥
गौरीकालँगडा ९५ रुचिर, अरु सोरठमल्लार ९६ ॥
पुनि सारँग बड़हंस ९७ सो, वर धूरिया मलार ९८ ॥ १७॥
बहुरि सु गौरी कान्हरा ९९, अपर झूम सारंग ॥ १०० ॥
अरु सोहनी१०१सुईमनी,१०२पुनि सामत सारंग१०३ १८॥
झूम१०४धूरिया१०५नारदी१०६,अरु कान्हरा मलार १०७
गिरिनारी सोरठ१०८तथा भगवंती१०९गिरि नार११०॥१९

दोवई छंद ।

श्रीबहार १११ भैरवी कलंगडा ११२ काहल ११३ नटकेदारा११४
काफी सिंधु ११५ सिंदूरा सोरठ ११६ अरु कान्हरा बहारा ११७॥
सूर मलारी ११८ राम मलारी११९ यमन मलारी १२० बाला१२१

इनहि आदि शंकर सुरागिनी गावैं सखी रसाला ॥ २० ॥
खरज १ ऋषभ २ गंधार ३ सु-मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ हीके ॥
अरु निषाद७ ये सप्त सुरनको लै स १ रि२ ग३ म४ प५ ध६ नी७के
औडव १ अरु षाडव २ संपूरण ३ अस्थाई १ आरोही २ ॥
अवरोही ३ संचारी ४ संयुत गान करैं मनमोही ॥ २१ ॥
इकताला १ अद्धा २ अरु रूपक ३ धीमा ४ जलद तिताला ५ ॥
सूल ६ झपक७त्यौंरा ८ धमार९ पुनि आडा १० शुध चौताला११॥
असावरी १२ तिमि फरोदस्त १३ इन आदि ताल अभिरामा ॥
ब्रह्म १४रुद्र १५लक्ष्मी १६गणेश१७अरु विष्णु१८बजावैं वामा२२॥

दोहा—इमि अपार संगीतके, भेद सकल नित ठान ॥
नृत्य गान बहु वाद्य युत, साजे रास विधान ॥ २३ ॥
सो लखि दंपति मुदित ह्वै, दीनी हुलसि रजाय ॥
शरद रैनि अब रास वर, ठानौ साज सजाय ॥ २४ ॥
सरयू उत्तर तीर थल, परमरम्य सुखधाम ॥
त्रै योजन मंडल विशद, रचौ रास तिहि ठाम ॥ २५ ॥
कुंजवाटिका बाग वन, सरि सर सुभग सुढार ॥
तिहि थल रास विहारको, आनँद होय अपार ॥ २६ ॥
लहि रजाय आलि वृंद तहँ, सपदि सजे सब साज ॥
गये सु दंपति मोद भरि, संयुत रहशि समाज ॥२७॥
शुभ्र वसन भूषण विविध, दंपति कियो शृँगार ॥
सब ललनागण त्यों सजे, नख सिख अंग सुढार ॥ २८ ॥

दोषई छंद।

चंद्रकला १ उर्वशी २ मेनका ३ चंद्रमुखी ४ बरबाला ॥
मृगलोचना ५ चारुशीला ६ अरु क्षेमा ७ रूप रसाला ॥
त्यों राधा ८ रंभा९ सुमालिनी १० सुठि सुलोचना ११ नारी॥
हरिणी १२ ये द्वादश आली हैं सियकी प्राणपियारी ॥ २९ ॥
हेमा १ वीणाधरी २ हंसिनी ३ गुणवल्लरी ४ ललामा ॥
चंद्रावली ५ सुभद्रा ६ पदमा ७ मनोरमा ८ अभिरामा ॥

सुखद चंद्रभागा ९ सुमोदनी १० पदमगंध ११ मतवाली ॥
सरस वरारोहा १२ द्वादश ये राजकुंवरकी आली ॥ २० ॥
दोहा—चतुरविंश ये मुख्य सखि, इनके यूथ अपार ॥
मिलि सुरासमंडल रचो, सजि अनूप शृंगार ॥ २१ ॥
अधिक चतुर्दश त्रिशत अरु,चौविस सहस२४३१४सुवाल
रचो रासमंडल रुचिर, लखत सिया रघुलाल ॥ २२ ॥
चंद्र चंद्रिका चारुचहुँ, राका शरद प्रकाश ॥
मणिदीपक भूषण प्रभा, मिलि भो अमित उजास ॥२३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

श्यामा श्याम सुभग सिंहासन विराजे चारु आली सब साजे साज सहित उमंगके॥ वीणा औ मृदंग वेणु मधुर मंजीर मंजु बाजने बजावें वर विविध सुढंगके ॥ ठानो गति कार झनकार घुँघुरून छाई रसिकविहारी पद न्यास बोल संगके ॥ थेईततथेईतातिथैयाथुंग तत्ता थेई आदिक सचारें भेद जैसे गीत अंगके ॥२४॥ पद चपलाई कोमलाई मधुराई मंजु कर कमनीयताई अति छवि छाई है॥ लंककी लटकलोनी लोचन चटक चारु मटक उतंक वंक भ्रकुटी निकाई है ॥ ग्रीवकी डुलन शोभा खुलन सुअंगनकी हार नथ कुंडल की झूलन सुहाई है ॥ रसिकविहारी रासमंडलके मंडल की कुंडली विलोकि विज्जु कुंडली लजाई है ॥ २५ ॥ मंजु मृगनैनी पिकबैनी सुखदैनी बाल करें कलगान कोकिलानकी समानके॥ सम सुर ताल लै विराम रिक्त पूर भूर गीत पद छंद बंद विविध विधानके ॥ निर्तत नवेली तांडवादि जे अनेक गति कर पद जानुभेद सकल कलानके॥ रसिकविहारी सुरनारी अवलोकि सारी दंग है किये हैं मान भंग अप्सरानके ॥ २६ ॥ अमित उमंग है अभंग वर अंग भरी अंतरंग अरु बहिरंग ढंग छावै है ॥ नैन सैन बैन कर चैन औ अचैन दशा शिख हाव भाव शुद्ध दरशावै है॥ दीप कुंभ कंदुक कृपान माल कलावारी चित्रकारी ये सु नृत्य सरसावैं हैं॥रसिकविहारी गुण- नौल नारी सारी रुचि अनुसारी श्यामा श्यामको रिझावैं हैं२७

हरिगीतिका छंद ।

इमि रास बहु सुखरास ठानो शरदरैनि प्रकाशमें ।
गंधर्व किन्नर अमर तिय मिलि लखहिं दुरि आकाशमें ॥
तिहि समय सरयू सलिल खग मृग अपर जड़ चेतन जिते ॥
सबही थकित ह्वै रहे जहँ तहँ भये अति मोहित तिते ॥ ३८ ॥

दोहा—शिव विरंचि सुर राज रवि, नारदादि ऋषिराय ॥
लखत रासमंडल सबै, दुरि नभ मंडल आय ॥ ३९ ॥
उडुगणपति उडुगण सहित, अचल भये लखि रास ॥
गति मति भूले मुदित अति, कीनो अमित प्रकाश ॥४०॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दरन पै द्वारन पै कलित किवारन पै द्रुमनपै डारन पै लोनीलतिकानपै
हाटन पै बाटनपै नीके नव घाटनपै गेहनपै सेजनपै अमलअटानपै॥
बागन पै वन पै निकुंजन पै पत्रन पै फूलन पै कूलनपै सर सरितान
पै ॥रसिकविहारी सुखदाई चहुँवाई भाई छाई यह शरद जुन्हाई
वनितान पै ॥ ४१ ॥

दोहा—सो चंद्रिका विलोकिकै, हुलसे सिय रघुचंद ॥
नाहिं मायो सुख हीयमें, उमगो अधिक अनंद ॥ ४२ ॥
उठि दंपति अनुराग भरि, नृत्य साज सब साज ॥
आय रास मंडल विषे, ठाढ़े मध्य समाज ॥ ४३ ॥
निरखि व्योम दिशि अर्ध निशि, जानी राजकुमार ॥
रही याम द्वै यामिनी, हिय माधि कियो विचार ॥ ४४ ॥
कही सियहि तब रैनि अब, वीति गई द्वै याम ॥
या छिन बाढ़त रामको, छिन छिन सुख अभिराम ॥ ४५ ॥
शरदनिशा यह आजकी, जुपै रहै इक वर्ष ॥
तौ प्यारी अभिलाष भरि, होय नानगुन हर्ष ॥ ४६ ॥
सुनि बोलीं सिय लाडिले, होय यही भलि बात ॥
हैरो रास अनंद अब, छिन छिन प्रति अधिकात ॥ ४७ ॥
तब रघुवर भाषी प्रिया, ऐसिहि अब ध्रुव होय ॥
आज रैन इक वर्षकी, रहै न जाने कोय ॥ ४८ ॥

इत इमि दंपति हिय रुची, उत सब देव समाज ॥
यही चहैं आनँदछके, प्रात होय नहिं आज ॥ ४९ ॥
भई तैसिही रैनि वह, एक वर्ष परमान ॥
सुर मायावश भेद सो, कोऊ कछू न जान ॥ ५० ॥
करहिं रासलीला मुदित, सहित सीय रघुचंद ॥
रीझत रिझवत परस्पर, अलिदंपति सानंद ॥ ५१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कौशलाधिराज सुत राम रमणीय जैसे तैसी मिथिलेश सुता सिय अभिराम हैं ॥ रसिकबिहारी सुखकारी छबि धारी दोउ नृत्य गान वाद्यमें प्रवीण गुणधाम हैं ॥ पूरण मयंकराका शरदनिशामें रास करत उमंग संग रंग भरी वामहैं ॥ दम्पति सुरूप उपमाको है न रूप कहूं श्यामा श्याम रूपसे अनूप श्यामा श्याम हैं ॥ ५२ ॥

दोहा—छाई सुंदर शरद ऋतु, सुखदाई चहुंओर ॥
निरखि छटा आनंद भरि, निर्तत युगल किशोर ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

गुंजत मलिंद पुंज नव नव कुंजनमे छाके मत्तडोलै मकरंद पान करिकै ॥ शीतल सुधाकरहू मुदित मयूखन ते श्रवत पियूप सोचको रहेत धरिकै ॥ रसिकबिहारी सुखकारी चंद्रिका अनूप हदै हुलसात अनुरागराग भरिकै ॥ निर्तत सुढंग रस रंग श्याम श्यामा संग अंग अंग मोरत अनंग मान हरिकै ॥ ५४ ॥ ता छिन अपार सुख छायो रासमंलडको जेते जड़ चेतन ते सकल लुभायगे॥झूमि भूमि चूमें डार अंबन कदंबनकी पक्षी ते निपक्षीसे अचेत महि आयगे॥ चित्र सम ह्वैकै रहे परम विचित्र मृग मुछैं सुर सुरताकी सुरति भुलायगे ॥ रसिकबिहारी सो निहारी छबि भारी सबै तन मन प्राण हीय आनंद छकायगे ॥ ५५ ॥

दोहा—जड चेतन मोहित भये, काहु कछू सुधि नाहिं ॥
अति मूर्छित ह्वै चंद्र तहँ, गिरो सु धरणी माहिं ॥ ५६ ॥
ता छिन भयो प्रकाश अति, निरखि सीय रघुराज॥
उझकि चौंकि चितये चहूं, संयुत सकल समाज ॥ ५७ ॥

लखो मयंकहि विकल तब, जनकसुता अकुलाय ॥
करुणाकरि धाई सपदि, परम कृपा उर लाय ॥ ५८ ॥
वर सरयूतट रेणुमाधि, धावत अतिहि उताल ॥
चणकत्वचाइक शुष्क अति, चरण चुभी तिहि काल ॥५९॥
सो लखि सिय दीनो तबै, घोर शाप रिसलाय ॥
कबहूँ इहि थल आज ते, चणक नहीं उपजाय ॥ ६० ॥
यों कहि पुनि उमगायकै, धाय चंद्रढिग आय ॥
परसायो तिहि शीशकर, सुतसम गोद उठाय ॥ ६१ ॥
सियकर परसत चेत भो, लहो परम आनंद ॥
शीश नाय सकुचायकै, गयो व्योम मधि चंद ॥ ६२ ॥

दोवई छंद ।

सो लखि मुदित राम तब भाषी चंद्रगिरो इहि ठामा ॥
सिय पालो याते या थलको चंद्रपालहै नामा ॥
यों कहि गहि प्यारी कर सानँद गवने अतिहि उताला ॥
ता छिन भयो प्रभात पक्षिगण कीनो शोर रसाला ॥ ६३ ॥
तब सब रास शृंगार उतारे ताछिन जनकदुलारी ॥
कछु मुसक्याय मधुर पिय कर गहि मंजुल गिरा उचारी ॥
वर्ष प्रमाण होय रुचि कीनी भई रासनिशि सोई ॥
एकहि दिवस शेष यह तामधि दीनो चंद्र विलोई ॥ ६४ ॥
दोहा—कही तबै रघुवर प्रिया, कीजत रास सदाहि ॥
पै यह इक दिनशेपसो, ह्वै है द्वापर माँहि ॥ ६५ ॥
यों कहि अति आनंद युत, ठानत हास विलास ॥
सिय समाज युत महल मधि, आये सहित हुलास ॥ ६६ ॥
इमि प्रति दिन प्रति शरद ऋतु, होय रास अभिराम ॥
अपर अमित उत्सव सदा, विहरत सीताराम ॥ ६७ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० वि० रासविहारवर्णनं
नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

दोहा–श्रीसीतारघुवर सदा, विहरत अवध मझार ॥
समै समै उत्सव उचित, होत अनंद अपार ॥ १ ॥
एक समय मिथिलाधिपति, लक्ष्मीनिधिहि पठाय ॥
परम प्रेम युत रामको, बुलवाये हुलसाय ॥ २ ॥
लषण शत्रुसूदन अपर, सेवक सखा अपार ॥
लै सानँद रघुवर गये, मिथिलापुर ससुरार ॥ ३ ॥
जनक सुनैना आदि बहु, निमिवंशी नर नारि ॥
पुरवासी सबही मुदित, रघुवर रूप निहारि ॥ ४ ॥
नई पहुनई प्रति दिवस, होय नगर रनिवास ॥
सिद्धा आदिक नारि बहु, ठानैं हास विलास ॥ ५ ॥

दोवई छंद ।

जनकनगर नर नारि अनंदित राघव छटा निहारी
कहैं सकल मृदु बैन परस्पर छिन छिन लै बलिहारी ॥
धनुषभंग कीनो जबही अति हुतो सुभग वर रूपा ॥
पुनि आये तब और बढी छबि अब कछु और अनूपा ॥ ६ ॥
तब बोली इक तिया बुद्धि वर अति अचरज यह आही ॥
छबि अधिकात सदा पैवयवपु एकै सरिस जनाही ॥
ता छिन विशद नारि भाषी यौं मुनि मुख सुनो प्रमाना ॥
सियारामको रूप रहै नित षोडश वर्ष समाना ॥ ७ ॥
इहि विधि निरखि श्यामसुंदर छबि छाकी हैं बहु नारी
तिनमें एक वाम इमि मोही दियो प्राण तन वारी ॥
तासु दशा लखि संग सहेली जानि लई गति जीकी ॥
हृदय सनेह भूरि ऊपर कटु कही वात हितहीकी ॥ ८ ॥

सवैया कवित्त ।

न्यारी चलै सब ते नितही अरु संग सखीन ते न्यारी रहै छट ॥
न्यारहि ठाट सुन्यारिहि वाट औ न्यारहि घाट रहै सरिता तट ॥
जानि परै रसिकेस न तो गति वात कहा तुव हीय गई जट ॥

बोल भटू घटको अटको घट आय भरै तब आय भरै घट ॥९॥
दोहा–यों कहि पुनि बोली अली, बात लई हौं जान ॥
प्रथम दई सिख फेर हौं, कहों लेहु सो मान ॥ १० ॥

सवैया कवित्त।

डीठ बचायकै पीठ दै ईठहि ढीठ ह्वै ढीठ सों डीठहि जोडौ ॥
जो कहिये कछु प्रीत ते नीतकी रीत तबै सुनि भौंह मरोड़ौ ॥
मानौ कही रसिकेश यही हौ बडे घरकी कुल कान न तोडौ ॥
फेरभली पछतैहौ लली नित या गलिको अली आयबो छोडौ ११॥
टक दै तिहि देखनकी टक छोड भटू यह तोटक हैं न भली ॥
चहुँ चौचँद चोल चवाई करैं पुनि चोज चले चरचाजु चली ॥
रसिकेश रसीली रहौ रसमें रसतें रस राखहु रंग रली ॥
गुणलेहु कहों गुणके गुण बातन औगुणको गुण मान अली १२॥
दोहा–पुनि हेली यह प्रीत सम, और न दुख जगमाहिं ॥
जान परै जब जिय लगे, तब सब गुण दरशाहिं ॥ १३ ॥

सवैया–कवित्त।

लाज तजै निज साज तजै गृह काज तजै सुख दूर धरै सो ॥
मान तजै तन प्राण तजै कुलकान तजै दुख भूर भरै सो ॥
लोक तजै परलोक तजै हिय शोक तजै सब धूर परै सो ॥
योग औ भोग,स्वलोग तजै तबही रसिकेश सु प्रीति करै सो १४॥
दोहा–पुनि हेली ये नैन निज, निपट प्रपंची जान ॥
मिले रहे मिलि मारहीं, ऐसे धूत महान ॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मिलत अगाऊ जाय नेकहूँ न माने शंक फेरे ना फिरैहैं लोक लाज सब डारि तोरि ॥ लावत मिलाय वेगि आपने सजातिनको आसन दै चित्तको हिये सो नेह लावैं जोरि ॥ रसिकबिहारी भने रसनाको रसनासो रसनाके रसहि पिवाय मति डारैं भोरि ॥ ऐसे ठग नैननको कर ना प्रतीत ये तो देत पर हाथ मन माणिक वृथाहीं छोरि ॥ १६ ॥

दोहा—प्रीति बुरी वैसहि सखि, फेर विदेशी संग ॥
जिहि बिछुरे मिलिवो कठिन, विरह दहै नित अंग ॥ १७॥

सवैया—कवित्त।

गिरिसे गिरवो मरवो विषसे निज हाथसे काटवो नीको गरेको॥
पावकमें जरवोहै भलो नहिं खेद हिमालैमें जाय गरेको ॥
त्यागवोहै दुहुँ लोकको लोनो नहीं है कछू दुख नर्क परेको ॥
रसिकेश कलेश न जो इतनेमें सु होत विदेशीसे प्रीत करेको१८॥

दोहा—सुनि बोली वह वाम तव, कहो सत्य सखि वैन ॥
कहा करों अव विवशहूँ, दरश विना नहिं चैन ॥ १९ ॥
अली श्याम गुण रूपको, कहँ लग करौं वखान ॥
तुमहि विदित है सकल अरु, मो हियकी हिय जान ॥२०॥

सवैया कवित्त।

आननकी उपमा अरविंदसी इंदु कलासी कोऊ अनुमानैं ॥
नैन कुरंगसे कोऊ कहै अलिखंजन मीनसे कोऊ वखानैं ॥
शेप न भापिसकै छबिसो रसिकेश हिये शत शारदा आनै ॥
साँवरेकी वा निकाई भटू अँखियानें ते मेरी लखैं सोई जानै २१॥

घनाक्षरी कवित्त।

आसन किधौं है रूप भूपतिके शोभा देत कीधौं यह पंचवानहींके नौल घर है ॥ कीधौं पंथ आनँदके रसिकविहारी स्वच्छ कीधौं वास हेत नैन मीननके सर है । प्रेम के विलोकिवेके कीधौं द्वै मुकर राजैं कीधौं मन मोहिवेके यंत्र वसी कर हैं ॥ लालके कपोल कीधौं कामने दिखाये युग सुमन गुलावके बनाये आप कर हैं ॥ २२ ॥

खुलत चहूँवा खुशबोईके खजाने खूब वह महबूब जब आयकै चढै अटा ॥ अलकैं अनूप अति अतर भरी सो चारु मुख पै परैं हैं जनु चंद पै घिरैं घटा॥ रसिकविहारी रूप सरसरसीलो मंजु कोहै जो न जो हैं मन मोहे छैलकी छटा । आनन विलोकि अंग भान न रहैरी वीर मार नैन वानन ते प्राणन करै कटा ॥ २३ ॥

दोहा—सुनि बुझाय पुनि अलि कही, करौ भटू वह काज ॥
जाते सवही भाँति तुव, रहै लोक कुल लाज ॥ २४ ॥

चौ०—तब वह वाम नेह मद माती ❀ सत्य विशुद्ध राम रँगराती ॥
संग सहेलिन प्रति झहराई ❀ वचन कहे दृढ सबहि सुनाई२५॥

सवैया कवित्त।

होत नहीं कछु काहुहिते जग लोग वृथा समुझाय के छूटें ॥
प्राण रहै किन जाय भले धन धाम सो काम नहीं कोउ लूटै ॥
भूमि चलै नभ मेरु हलै बरु ऊपर ते शशि सूरहु टूटै ॥
होय सबै अनहोनी तऊ रसिकेशलगी यह प्रीति न छूटै ॥ २६॥
डौंडी बजाय के प्रीति करी तब कौन कहौं अब लाज लजौं ॥
जो कछु होनी हुती सु भई पुनि औरहु होय सु होय अजौं ॥
शंक न काहु की है रसिकेश रही पग रोपि कहा मैं भजौं ॥
नेह न छोडौ कबौं उन सों सजनी वरु गेह औ देह तजौं॥२७॥
टोकौं नहीं अब रोकौं नहीं हमसे सजनी न वृथाहिं अरूझौ॥
लाज बड़ाई घनी कुलकान की रारमें जाय तुमै सब जूझौ ॥
हौंतौ रँगी रँग साँवरेके कछु होत न कोउ किते कहुँ झूझौ ॥
होरसिकेश कहूँ टुक काहू सनेही सों नेहकी रीति तौ बूझो २८॥

दोवई छंद।

तासु वचन सुनिकै सब बोलीं लोक लाज जौं त्यागो ॥
तौ तप करौ भस्म तनु लावो ब्रह्म ज्ञानमें पागो ॥
तब वह वाम राम अनुरागिनि तिन दिशि देखि रिसानी ॥
भाषी बहुरि संग आलिन सों परम तत्त्व मय बानी ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

टौवा ये वनौवाजाय औरकों सुनावो हम नेह कथा छोड़ बात दूसरी सुनें नहीं ॥ रसिकबिहारी श्यामसुंदरको त्यागि और दूजो ज्ञान ध्यान हीय काहूको गुनें नहीं। प्रेम वारि शीतलको मंजन बिहाय नित्य योग ज्वाल मध्य निज देहको भुनैंनहीं। नीको मनमोहनके नेहमें पगौहे हम ब्रह्मज्ञान सीख वृथा शीशको धुनें नहीं ॥ ३० ॥

दोहा—यों कहि पुनि बोली तिया, मैं बहु सुने पुरान ॥
राम भक्ति ते अधिक कछु, कोउ न कियो बखान ॥ ३१ ॥

आये विचरत बाग मधि, लखि पावस चहुँ ओ
सबही प्रति हिय हुलसिकै, बोले राजकिशोर।

घनाक्षरी कवित्त।

घिरन लगेहैं घन घूम घूम चारौं ओर पावसके फिरन लगे किधौं ॥ दौरि दौरि दामिनी दमंकन ल विरहिनि कामिनी चमंकन लगी किधौं॥ रसिकविहारी लगेहैं मंजु रसिकविहारी रंगराचन लगे किधौं ॥ चलन शीतल समीर आज मनसिज वीर तीर घालन लगो वि

दोहा—इमि वर्णत विचरत बहुरि, आये धाम मझार
ताछिन लाये पत्रिका, अवध नगर ते चार ॥
अपर पत्र सबही सुने, सियकर लिपि कर धार
लखि सुख दुख छायो हिये, रघुवर करत विच

घनाक्षरी कवित्त।

भोगभरी योग भरी सकल संयोग भरी प्रेम भरी ताकी रीतकी । साम भरी दान भरी दंड अरु भेद भर परम अभेद भरी नीतकी ॥ रसिकविहारी बहु चाह भ क्षेम भरी क्षमा भरी भरी शुभ गीतकी । मोद भरी वि भरी आई आज पाती लाडिलीकी किधौं थाती यह प्रीत

दोहा—इमि मिथिला में रामको, बीतगयो इकवर्ष ॥
जात न जाने रैनि दिन, नित नव आदर हर्ष ॥
सुंदर शेखर शीलनिधि, तेज रूप रशिकेश ॥
इनहि आदि बहु प्रियसखा, रघुवर संग सुदेश ॥
तिन सखानकी तीय अरु, सिया सखी समुदाय
निज निज पिय दरशन बिना, सकल हीय अकु
चौ०—वर अशोकवाटिका प्रमारी ॐ सिया सहित ...

घनाक्षरी कवित्त।

चौर चौर द्रुमन लगेहैं फल ठौर ठौर शोभितहै झौर झौर पल्लव प्रसून पेखु ॥ मौर मौर मंजुल मलिंद मडरात मत्त रसिकविहारी सुखकारी सबही कौ लेखु ॥ और और बोलै कीर कोकिल सु तौर तौर डौर डौर वल्ली लपटानी जो कहा विशेखु ॥ चौर झौर मौर और तौर चहुँ ठौर भये दौर दौर आली आज आयो ऋतुराज देखु ॥ ॥ ९४ ॥ झौर झौर ठौर ठौर झूमत रसाल मौर पीवैं मकरंद लै मलिंद वृंद धापि धापि ॥ सबे जड चेतनके अंग उमँगो अनंग लपटीं सुमालती तमालतरु ढापि ढापि॥ रसिकविहारी हैं संयोगिनी सुखारी हीय कोकिला अलापैं सुर पंचमको थापि थापि ॥ सुनि सुनि कूकैं उर विरह भभूकैं उठैं निरखि वसंत रहैं विरहिनि कापि कापि ॥९५॥ पेखिये पलाशन पै प्रबल हुताशन है पाय अनुशासन विरह सरसायोहै॥ कोकिलाकी कहिये हूकसी उठावतहै लूकसी लगावत समीर अधिकायोहै ॥ रसिकविहारी मैन मनकों मरोरतहै भौंरन को शोर जोर अधिक जनायो है ॥ संतहै असंत प्राण लैहै विनकंत हेली आज विरहनपे वसंत चढि आयोहै ॥ ९६ ॥

दोहा—यौंकहि दीह उसाँसलै, पुनि बोली अकुलाय ॥
कहादोप ऋतुराजको, है वियोग दुखदाय ॥ ९७ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

हेलीहौं विकल विललाता तबही तें घनी जबते विदेश गौन भयो प्राणप्यारेको ॥ रसिकविहारी तोहिं बूझों यह बात भटू कौन विधि देहुँ धीर हृदय विचारेको.। विरह सतावै दिन रैनि दुख कासों कहौं ऐसो को मिलावै हाय प्रीतम हमारेको । हेम लंकदाही कपि नीको मैन जारो शंभु कोऊ नाव रायो या वियोग दई मारेको ॥९८॥

दोहा—तोछिन दूजी बाल इक, पिय सुधि करि अकुलाय ॥
सुधि बुधि भली विरहवश, बोली सखिहि रिसाय ॥ ९९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

भौन दधि राखै ताकौ भौनहौं न राखौं वीर कं है जो गणेश ताहि देश तें निकारौंगी। ज्योतिप पढैगो मेरे ग्राम ते कढैगो वह थान

जो बवैगो ताकी सान मैं बिगारौंगी। रसिकबिहारी यह डौंडी फिरवाय देरी आज ते चहूँघा यही आज्ञा अनुसारौंगी। प्रथम भई सो भई अब तौ समै पै सदा सासु औ ननँदकै प्रबंद बंद पारौंगी६०

दोहा—इमि निज निज प्रीतमसुरति,करि करि होय अधीर॥
जनकनंदिनी प्रीति युत, तिनहिं धरावैं धीर ॥ ६१॥
ग्रीपमऋतु आई तबै, बोली बिरहिनिबाल॥
अब किमि बचिहैं प्राण ये, एक अंग द्वै ज्वाल॥ ६२॥

सवैया—कवित्त।

यौं मुरझाय रहीं द्रुम बेलि हुताशनसी जंनु लागी प्रहारन॥
नीर ते छीन भये सरिता सर कौन सहै यह आतप झारन॥
है रसिकेश अनंद पिया संग या ऋतु है बिरहीनके कारन॥
एक तो जारततो बिरहा पुनि दूजहु ग्रीपम लागी है वारन॥६३॥

घनाक्षरी कवित।

कीधौं शेष मुख झाल कीधौं बड़वाग्नि ज्वाल कीधौं भानु काला भानु भानु कीनो वास है। कीधौं हर तीजो नैन खोलो फेरि क्रोधित ह्वै कीधौं शंभु कंठते कढो जो विष त्रास है। कीधौं महा प्रलयको आतप प्रचंड अति कीधौं महाकाली क्रोप प्रगट प्रकाश है॥कीधौं यह ग्रीपमकी तपन समेत पौन रसिक बिहारी कीधौं बिरही उसीस है ६४॥

दोहा—यौं बिलपत ग्रीपम गई, पावस आई घेरि॥
जनकसुता सखियान सों, कही चहूँ दिशि हेरि॥६५॥

घनाक्षरी कवित्त।

मोरनमें मगमें मनोजमें सु मीननमें मनमें महीमें गति औरहि छई है आज। तरुन तमालनमें तालनमें तरुनीमें तममें तमीमें यति औरहि ठई है आज। रसिकबिहारी रस रंगनमें रागनमें रीति रमनीमें गति औरहि नई है आज। पवनमें पावसमें पत्रनमें पुष्पनमें प्रीतिमें सु पीमें मति औरहि भई है आज ॥ ६६॥ वेई मेघमंडल मढ़े हैं नभमंडलमें वेई मोर कोकिला कलाप करें नीके री॥वेई बन वेई बाग सघननिकुंज वेई वेई राग रंग जो प्रमोद दानही केरी। वेई नवनागरी

सहेली संग वेई रैनिकारी हित वेई कोंधा दामिनी केरी।रसिकविहारी वेई पावस मनोज वेई साज सव पीके विन दाहकहैं जीकेरी ॥६७॥ आवन न दीने पिय चारौं दिशि रोकि राखी चातक शिखंडी व्यंग्य वाणी सो उचारी है। विरह विलोकि मेरो दामिनी हँसतहेली रैनि दिन संधि पाय होत अरु नारी है । इंद्र धनु भ्रकुटी चढाई करि कोप येरी पवन प्रचंड दूती सीखदें सिधारी है ॥ रसिक विहारी हम जानी री, सयानी सुनौ पावस नहीं है यह सवति हमारी है ॥ ६८ ॥

दोहा—सुखछावन सावन छयो, तिय मनभावन संग ॥
झूलें हुलसि हिंडोरने, हृदय वढाय उमंग ॥ ६९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

वृन्द वृन्द ज्ञुरिकें अनंद भरी चंद्रमुखी झूलतीं हिंडोरे हिय हुलसि वढाय चाव ॥ रसिकविहारी सजे भूपन अनूप अंग वसन सुरंग रंग रंग रचिकै वनाव ॥ गाय गाय उमग अभंग उमँगाय उर भाय भाय सरस जनाय पिय प्रीत भाव ॥ सावन अपार सुखछावन सुहावन है प्यार ते वुलावें मनभावन पियारी आव ॥ ७० ॥

दोहा—इमि सवके पिय प्यार करि, झूलें प्रिया समेत ॥
राजकुँवर विन या समै, हम उसाँस नित लेत ॥ ७१ ॥
इमि पावस सोचत गई, छायो शरद प्रकाश ॥
राम सुरति करि सिय कही, लै अति दीह उसास ॥ ७२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

आतपसी चांदनी तपन तन दूनी देत लागत हिये में चंद्र किरनै करदसी ॥ आवत उसाँस ऊंची सुखद सुवास लहि त्रिविध समीर धीर शालत दरदसी ॥ रसिकविहारी है संयोगिनी अनंद सव विकल वियोगिनी न लागत शरदसी ॥ आशने निराशहै निराशहूने आश पाय मरि मरि जीवत हैं चौपर नरदसी ॥ ७३ ॥

दोहा—यौं सवही अकुलायकै, वर्ष विताई वाम ॥
आई फेर वसंत पै, नहिं आये घनश्याम ॥ ७४ ॥

अवध नगर ते सिय सहित, तिय अति विह्वल होय ॥
निज निज पिय हित पत्रिका, पठवत हैं सबकोय ॥ ७५ ॥

दोवई छंद।

उत रघुवर बहु जनक राजसों गमन रजाय सु चाहैं ॥
पै विदेह राखत मिसही मिस नित नव नेह उमाहैं ॥
जे मिथिलावासी निमिवंशी वर किशोर सुठि रूपा ॥
तिन मिलि राम परस्पर अतिही बाढ़ी प्रीति अनूपा ॥ ७६ ॥
ते सांचे रघुवीर मित्र सब छिनहु संग नहिं त्यागैं ॥
वनविहार मृगयादि खेल बहु केलि ठनैं अनुरागैं ॥
जब जब अवध चलनकी चर्चा राजकिशोर चलावैं ॥
तब तब सकल मित्र कछु उत्सव रचैं तहाँ बिलमावैं ॥ ७७ ॥
दोहा—यों बहु काल व्यतीत भो, तब भाषी रघुचंद ॥
अहो मित्र अब हमहिं शिष, देहु सकल सानंद ॥ ७८ ॥
सुनि सब भाषी रामसों, लखो जनकपुर माहिँ ॥
जिमि सुखहोत बसंत तिमि, कहुँ त्रिलोक मधि नाहिँ ७९॥

दोवई छंद।

माघ मास शित पक्ष पंचमी शुभमुहूर्त सुखधामा ॥
ऋतुपतिको प्रस्थान दिवस है अति पुनीत अभिरामा ॥
तादिन ते ऋतुराज दशौं दिशि छावत करत विहारा ॥
याते ख्यात वसंत पंचमी नाम त्रिलोक मँझारा ॥ ८० ॥
दोहा—सो आनँद अरु फाग लखि, चलैं अवध सब फेरि ॥
लक्ष्मीनिधि सों राम तब, कही कंठ भुज गेरि ॥८१॥
जनक नगरके नारि नर, सबही मंत्र प्रवीन ॥
पढि भुरकी डारी कहा, हमै स्ववश करि लीन ॥ ८२ ॥
अनुज सखा सेवक जिते, तेऊ पगे सनेह ॥
अवध सुरति काहू नहीं, भूल गये सब गेह ॥ ८३ ॥
यों कहि बोले राम पुनि, राजपुत्र तुव बैन ॥
कबहूँ काहू भाँति हम, रंच टलंवि सकैन ॥ ८४ ॥

याते तव रुचि राखि हम, और रहैं इक मास ॥
फाल्गुन अर्ध विते विदा, दीजो सहित हुलास ॥ ८५ ॥
तव लक्ष्मीनिधि राम रुचि, पालि कही दृढ ठान ॥
राज कुँवर ह्वैहैं यही, सत्य लीजिये मान ॥ ८६ ॥
यों विचार ठनि कै सवै, रहे परमआनंद ॥
भो वसंत उत्सव महा, जुरे नारि नर वृंद ॥ ८७ ॥
लागो फाल्गुनमास तव, रंग रचे सव कोय ॥
अवधनिवासी छैल वहु, खेलैं प्रमुदित होय ॥ ८८ ॥
इक होरी ससुरार पुनि, कहा लाजको काज ॥
धूम करैं घर घर चहूँ, रंग गुलालहि साज ॥ ८९ ॥
डफ मृदंग वंशी वजै, जनक-नगर चहुँ ओर ॥
रैनि दिवस छायो रहै, होरी होरी शोर ॥ ९० ॥
वचियोरी वचियो कहैं, एकहि एक पुकार ॥
अवधनिवासी लोगते, सवै वडे फगुहार ॥ ९१ ॥
राम अनुज रिपुदमन ते, औरहु चपल प्रवीन ॥
संग सखन लै फिरत हैं, रंग गुलालहि भीन ॥ ९२ ॥
इहि विधि मिथिलावासिनी, कोउ कहं सकुचाय ॥
कोऊ ह्वै सन्मुख रचैं, फाग रंग वरसाय ॥ ९३ ॥
कोउ तिय जुरिकै रहसि, करैं परस्पर वात ॥
सखी न होरी होइ यह, वरजोरी दरशात ॥ ९४ ॥
ताछिन वोली एक तिय, सुन गोरी मम वात ॥
अवकी फागुन माहँ यह, नये ढंग दरशात ॥ ९५ ॥

सवैया–कवित्त ।

धूँधर लाल गुलालकी छाई चहूं दिशि केशर रंग रह्यो मचि ॥
गावत हैं डफ ताल वजावन गारी दै लंक लचावत हैं नचि ॥
होरी कहा वरजोरी भट्ट रसिकेश भई सव रीति नई मचि ॥
लचल मोसों कहूं सजनी इहि लागकी फाग ने भाग दुगों वचि ९६

दोहा—ताछिन बोली अपर तिय, सखी एक खिलवार ॥
अवध निवासी कौन धौं, है वह बडो धुतार ॥ ९७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छेकत गलीमें छैल नवल छबीलिनको छाती छै छिपात जो छरीले तिहि धावै तौ ॥ गजब गरार गारी गावत गरूर भरो गुण गनं वाके गिनै पार नहिं पावै तौ॥रसिकबिहारी रूप चतुररसीलो अति रिसहू करौ जो रस रीति तें रिझावै तौ ॥येरी यह गांव छोड़ि अनत वसीजे अब कीजैकां उपाय जाते लाज रहि जावै तौ ॥९८॥

दोहा—तासु वचन सुनि एक तिय, बोली अतिहि उताल ॥
हौं भाषौं तोसों भटू, सुन होरीको हाल ॥ ९९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लीने पिचकारी कर झोरिन गुलाल भरे खेलत छबीले छैल होरी मद छाकि छाकि ॥ रंग बरसावैं अंग जोबन अभंग भीनैं घालत हैं कुंकमा कपोलन पै ताकि ताकि ॥रसिकबिहारी सबै सुघर खिलारी भारी देखि नौल नारी गाय गारी देत वाकि वाकि ॥ तूतो है भली पै अली चरचा चली मैं सुनी जात या गली ह्वै छली तेरो भौन झांकि झांकि ॥ १०० ॥

दोहा—सो सुनि कही प्रवीन तिय, कहा आपनो जोर ॥
ह्वैहै प्रति दिन दिन घनो, फाग रंगको शोर ॥ १०१ ॥
याते हौं हित बात यह, भाषौं सबहि बुझाय ॥
होरी बरजोरी रचै, कहा दोष तिहि आय ॥ १०२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

होरी में मचैगी धूम धूँधर चहुँ दिशान गानवान ताननमें कानन पगैयो जनि ॥ रंग पिचकारिनकी धारनमें भीजि भीजि आवैंगी सहेली सबै दोष त्यों लगैयो जनि ॥ रसिकबिहारी है अनोखे खिलवार इहाँ नीकै नैन वैननकी सैन भूलि जैयो जनि । हौं तो इहि फागुनमें फाग ना रचौंगी वीर कोऊ रंग डारैं वरजोरी कछूकैयो जनि ॥ १०३ ॥

दोहा–इमि बतरात हुतीं सबै, ताछिन तहँ इक बाल ॥
आई भाजत रंग सनी, बोली निपट विहाल ॥ १०४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

थोरी वैस कोरी मोसे करि बरजोरी गोरी डारिकै ठगोरी मेरे गरभुज मेलिगो ॥ वेनी लै विथोरी माल तोरी तनी छोरी भटू झोरी भरि रोरी कहि सोरी तनु झेलिगो ॥ काह मैं कहोंरि रस चोरी में खरोरी छैल रसिकविहारी अंग अंग रंग रेलिगो ॥ होरी में भयोरी जो नयोरी स्वाँग देखो वीर कोधौं खिलवार आज ऐसी फाग खेलिगो ॥ १०५ ॥

दोहा–इहि विधि मिथिलानगर मधि, मची फाग चहुँओर ॥
अरु सिद्धा रनिवास मधि, सकल सखिनको जोर ॥१०६॥
कोशलराज किशोरको, अनुज सखनके संग ॥
रंग अवीर गुलाल भरि, रचैं तियाके अंग ॥ १०७ ॥
परमानंद समेत इमि, सब हिय भरि अनुराग ॥
फागुन द्वादश दिवस लग, खेली नित प्रति फाग ॥१०८॥
पुनि लक्ष्मीनिधिते कही, रघुवर नेह बढाय ॥
अब नृपरानिहि विनय करि, दीजे हमें रजाय ॥ १०९ ॥
तब लक्ष्मीनिधि वेगही, मातु पिताहि समुझाय ॥
रामविदा को साज सब, साजो अमित सजाय ॥ ११० ॥
तब सब संगी मित्रते, रामहि कहैं सुबैन ॥
हम चलि हैं सँग रावरे, क्षणहू विलग रहै न ॥ १११ ॥
सुनि रघुवर तिन धीर दे, समुझाये हिय लाय ॥
तब सो कोऊ दीन ह्वै, बोले कोउ रिझाय ॥ ११२ ॥

सवैया कवित्त।

चाहो न चाहो पियारे हमैं दिन रैनि सदा जिय ह्नसे बने रहो ॥
बोलो न बोलो हँसो न हँसो गर लागो न लागो जुरे सजने रहो॥
जो जिय भावे करो रसिकेश भले सुख साज में सार सने रहो ॥
नैननसे लखि लीजे लला युग कोटिनलों तुम नीके बने रहो११३

पहिले छलते मन मोहि लयो अब क्यों जियरा तरसावत हो ॥
मृदु बैन सुनावत ऊपरसे हियमें न दया कछु लावत हो ॥
निठुराई तजो रसिकेश सबै तुमतो दिलदार कहावत हो ॥
हम जानि लई हौ बड़े कपटी तव तौ ममप्राण सतावत हो ११४
भौंर दयो जिय पंकज पै तनु दीपमें जारत धाय पतंगी ॥
त्यौं हम मित्र जु साँचे भये अजहूँ तुम यार न त्यागि दुरंगी ॥
ठौर घनी अनरीति लखी जिहि दीजिये प्राण सु होय न संगी॥
नेह दुहूँ सु भले रसिकेश है हाय जरे यह प्रीत इकंगी ॥११५॥

दोवई छंद।

राम मित्र मिथिलावासी बहु इमि अति होय दुखारी ॥
कोऊ मृदु कटु कोउ नेह वश विह्वल गिरा उचारी ॥
सुन उमंगाय लगाय अंकसो समुझाये रघुनाथा ॥
दै बहु धीर काहु तहँ राखे काहु लये निजसाथा ॥ ११६ ॥
उत सिय मात प्रेम भर प्रमुदित पुत्रिन निरखन हेता ॥
सिद्धाकी प्रिय सखी विचित्रा ताहि समाज समेता ॥
दई रजाय जाव कौशलपुर सो आनंद अघानी ॥
तिहि सँग अपर भूरि पुरवासिन गईं दरश रुचि ठानी ॥११७॥
तब मिथिलेश बिदा किय रामहि दै बहु साज समाजा ॥
परम सनेह उमंग यथोचित मिले सबहि रघुराजा ॥
दुघरी शोध पयान कियो द्रुत संग विपुल नर नारी ॥
अति उताल पुर सन्निध आये सप्तम दिवस सुखारी ॥ ११८ ॥
दोहा—इत सिय ढिग बहु नारि मिलि, करहिं परस्पर बात ॥
भये घने दिन तबहिं ते, नित शुभ शकुन जनात ॥११९॥

घनाक्षरी कवित ।

डेरी भौंह डेरी आँख डेरो भुज डेरो कुच डेरे अंग मेरे सब फरक रहे हैं री। आजहूँ न आये कहँ छाये प्राणप्यारे लाल मेरी जान कोऊ वाल गाढे कै गहे हैं री। रसिकविहारी यह कारण कहा है वीर आँगीमें

न मानै मो उरोज उमहे हैं रीहोत हैं शकुन वेई पीके मिलिवेके नित्त तीके हेत नीके नीके नीके जे कहे हैं री ॥ १२० ॥

दोहा–सो सुनि बोली एक तिय, सत्य कहौं मैं वाल ॥
हों जानौ मो प्राणप्रिय, आवन चहत उताल ॥ १२१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

हिय हुलसात मन मोद सरसात भटू अंचल उडात वाम नैन बाहु फरकै । दाहिने कुरंग पाँत काग शुभ बोलि जात रसिकविहारी त्यौं उरोज युग थरकै । गनक बुलायो प्रात सोउ कही नीकी वात शकुन दिखात लोन नीवी फंद सरकै । हेली हम जानी मिलो चाहत हमारे प्यारे वार वार आज कंचुकीके वंद तरकै ॥ १२२ ॥

दोहा–ताछिन बोली मैथिली, स्वपन लखो हम आज ॥
कौशलराजकिशोर जनु, आये सहित समाज ॥ १२३ ॥
इमि वतरात हुतीं सबै, ताछिन इक अलि धाय ॥
आय कही सानंद अति, आवत हैं रघुराय ॥ १२४ ॥
तासु वचन सुनिकै मुदित, सिय निज निकट बुलाय ॥
दीने भूषण वसन वर, परमप्रेम उमगाय ॥ १२५ ॥
भरत साज साज जायकै, लाये नगर लिवाय ॥
घर घर भये वधावने, मिले सबै हुलसाय ॥ १२६ ॥
मिथिलाते आई अली, जासु विचित्रा नाम ॥
ताहि सिया सादर निकट, राखी हरषि सु धाम ॥ १२७ ॥
फागुन मास अनंदको, आये सब निज गेह ॥
मिले परस्पर नारि नर, हिय उमँगाय सनेह ॥ १२८ ॥
रचो रंग निज निज सदन, खेलत सबही फाग ॥
बहु दिनके बिछुरे मिले, बाढ़ो अति अनुराग ॥ १२९ ॥
इहि विधि ते रघुवंश मणि, अनुज सखान समेत ॥
करि विहार मिथिला सुदिन, आये अवध निकेत ॥ १३० ॥
इत सीता सखिगण सहित, सखन सहित उत राम ॥
दुहुँ दिशि फाग उमंग भरि, सजे साज सुखधाम ॥ १३१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० मिथिलाविहारवर्णनो नाम चतुर्थोविश्रामः ॥ ४ ॥

दोवई छंद।

आये कौशल नगर मुदित सब रची फाग सुखरासी ॥
जनकनगर वासी नर नारी मिले अवध पुरवासी ॥
जे तिय पुरुप भूरि मिथिला ते राघव संग सिधारे ॥
ते अरु प्रथम हुते जे सिगरे जरे एक ह्वै सारे ॥ १ ॥
जबते सिय आई कौशलपुर तबते बहु नर नारी ॥
जनकनगर वासी सानंदित निवसे अवध मझारी ॥
तिनके सदन अपार अनूपम विस्तृत भूरि सुवासा ॥
पुनि आवत तेऊ तहँ विलसत सब विधि सकल सुपासा ॥ २ ॥
तिहि वर वास मध्य रघुवरके अनुज सखा प्रति वर्षा ॥
होरी धूम करैं कबहूँ तहँ रामहुँ जात सहर्षा ॥
सो मिथिलावासी नर नारी भये अवधपुर वासी ॥
तदपि सकल सम्बंध यथोचित रचैं फाग सुखरासी ॥ ३ ॥
ते सब हीय उमंग भरी अति ठानी फाग सुहाई ॥
रघुवर अनुज सखा सानंदित करी धूम तहँ जाई ॥
इत रघुवंशी छैल सुभग उत निमि वंशी नर वामा ॥
यूथ यूथ मिलि होरी खेलत सुख शोभा अभिरामा ॥ ४ ॥
दोहा—इमि माची नित धूम तब, एक तिया चहुँ धाय ॥
जे आई नव नारि तिन, सबही कही बुझाय ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छैल नित याही गैल आयकै मचावैं फैल भौंह मटकावैं औ नचावैं नैन गारी दे ॥ देखि नव गोरी वरजोरी करि धावैं ताहि रंगमें भिजावैं ताकि तन पिचकारी दे ॥ रसिकविहारी हैं अनोखे फगुहार फेर पकर बनावैं नर भेष हँसैं तारी दें॥ याते प्राणप्यारी सीख मानियो हमारी दुरि बैठियो अटारी चहुँ ओर ते किँवारी दे ॥ ६ ॥
दोहा—यों कहि पुनि बोली भटू, जे रघुवंशी छैल ॥
तिहूँ लोकते अवधमें, तिनकी न्यारी गैल ॥ ७ ॥

चैतमास आरंभकी, रंग पंचमी होय ॥
पुनि त्रैदिन लग अष्टमी, फाग गिनै सब कोय ॥ ८ ॥
इहि विधि मिथिलावासिनी, करैं परस्पर बात ॥
छिन छिन प्रति दिन दिन चहूँ, होरी सुख सरसात ॥ ९ ॥
उत खेलत पुर माहिं सब, नर नारी सानंद ॥
रची फाग इत महल सिय, सहित सखिनके वृंद ॥ १० ॥
आई मिथिला ते सखी, तिहि सिय दई रजाय ॥
होहु सजग अलि यूथ मिलि, सुठि सिंगार सजाय ॥ ११ ॥
सुनि सिय आयसु हुलसिकै, सुभग विचित्रा नारि ॥
सजे अंग भूषण वसन, वर शृंगार सुधारि ॥ १२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

जावक लगायो युग पाँयन सुरंग अति घेरदार घाँघरो नवीन पहिरायकै ॥ नीलरंग चूनरी चटकदार चातुरी ते चुनि चुनि चारु राखी सरस उढ़ायकै॥रसिकविहारी भली तियहि सिंगारी अली माँग रचि दीनी वर सेंदुर भरायकै ॥ मानो रसराजको विदारि आयो रौद्र रस लालमन जीतिवेको विजय वढाय कै ॥ १३ ॥

दोहा–तासु छटा लखि परसपर, कहैं अवधकी तीय ॥
याको शिख नख सुभग पै, पीठ कहा कमनीय ॥ १४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कंचन पटी कै अँगनाई मैन मंदिरकी जोवन महीपके विराजिवेको कैधौं पीठ ॥ कैधौं मान गढकी दिवाल है विशाल अति रूप परदाकै कोऊ ढीठकी परै ना डीठ ॥ रसिकविहारी हेरि हेरि मति हारै घनी ऐसी है अनूप जाकी उपमा मिलै है नीठ ॥ कैधौं कदलीको पत्र कोमल नवीन मंजु कैधौं यह शोभित नवेली नागरीकी पीठ१५॥

दोहा–निरखि विचित्राकी छटा, तिय बोलीं हुलसाय ॥
हो सुंदरि तुत्र नाम यह, सत्य रूप मम आय ॥ १६ ॥

सवैया कवित्त।

धुर वृद्ध भयो करतार अबै थहरै तनु औ कटि कंठ लपो ॥
इहितै तिहितै वर रूप बनै न बनावत पै उर अपि चपो ॥
अति तो छबि हेरि अनूप हिये रसिकेश यही दृढ हेत थपो ॥
विरची विधि तोहिँ भटू जबहीँ तब रंच कहूँ कर नाहिँ कपो १७
भृंग चहूँ भ्रमते मड़रात विलोकतहैं दृग पंकज फूले ॥
आवत कीर हिये ललचात लखैं अधरारुण विम्ब अतूले ॥
चंदके धोखे चकोर लखैं सुख है रसिकेश सदा अनुकूले ॥
तो छबि हेरतही नवला निरपक्ष कहा पुनि पक्षिहु भूले ॥ १८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

खंजन मलिन्द मीनहूते गुण चौगुणो है ऐसे दृग दोऊ जिनै निरखि लजाय कंज ॥ मधुते सुधाते बसै छैगुणो मिठास जामें वाणी यों अनूप सुनि सकल नशात रंज ॥ रसिकविहारी रूप नौगुणो गुलाबहूते जिनको कपोल ये ललाम मदकाम भंज ॥ शीतकरहूते अति शीतकर सौगुणो है येरी प्राणप्यारी तेरो वदन मयंक मंजु १९॥

दोहा—सुनत विचित्रा सकुचिकै, कहे भाव युत वैन ॥
अवधवासिनी धन्य तुव, पद रज सम हम हैं न ॥२०॥
इमि अति आनंदित सबै, सखिगण कियो शृँगार ॥
आईं सिय ढिग मणिजटित, पिचकारी कर धार ॥ २१ ॥
सिय शृँगार तिहि समय को, वरणि सकै कवि कोय ॥
जिहि भाषै बहु शारदा, तऊ थकित मति होय ॥ २२॥
सो मिथिलाधिप नंदिनी, संयुत सखी समाज ॥
शोभित महल उमंग भरि, फाग साज सब साज ॥२३॥
साजे होरी साज सब, सकल अनूप अनेक ॥
सो अवलोकत ही बनै, वर्णत बनै न नेक ॥ २४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मृगमद चूर औ कपूर धूर भूर पूर कुंकुमा करोरनतें सु लघु विशाल हैं ॥ मेरु सम चारों फेर अबिर गुलाल ढेर स्वच्छ गुच्छ विपुल

प्रसूननकी मालहैं ॥ केशर कुसुंभ रंग पूरे कुंभ कुंड रूरे अतर तमोल येला अमित निरालहैं ॥ रसिकविहारी इमि फागकी तयारी संग जनकदुलारीके उमंग भरी वाल हैं ॥२५॥अनुज सखान वृंद युत रघुचंद सजे अतिही अनंदते प्रबंद करि होरीके ॥ रसिकविहारी करधारी पिचकारी मंजु सहित अबीर औ गुलाल भर झोरीके ॥ रंग रंग रंगके अपार घट लीने संग वाजत सुढंग ते मृदंग डफ जोरीके ॥ मिथिलानिवासिनमें अति अनुराग भरि खेलि फाग आये भौन जनककिशोरीके ॥ २६ ॥ देखि रघुराईको विचित्रा उठि धाई वेगि सखिन समेत आय रंग झरिलाई सो ॥ करि चपलाई लँगराई औ ढिठाई भूरि मसलि गुलाल मुख औचक दुराई सो ॥ रसिकविहारी चारु परम प्रवीन नारी सकल खिलारिनकी सुमति छकाई सो ॥ सरस अनूप रूप हेरि मन मोहित ह्वै जानी सव येही मिथिला ते वाल आई सो ॥ २७ ॥

दोहा—निरखि विचित्राकी छटा, चकित भये रघुनंद ॥
करत विचार सु हीयमें, पूरो परमानंद ॥ २८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मेरो चित्त निश्चल छलैबे छल ठानि सीय गुण बलते धौं प्रगटाई यह भामिनी ॥ कैधौं किन्नरी है कै नरी है के सुरी है कोउ कैधौं घन त्यागि इत आई आज दामिनी ॥ रसिकविहारी रूपधारी है अनूप नारि कहांते सिधारी प्यारी ढिग अभिरामिनी ॥ कैधौं भारती है कै रतीहै कै सती है नीय शरद शशीकी जोन्ह कैधौं भई कामिनी॥२९॥कैधौं भूप जोबनके चपल तुरंग युग कैधौं दलपंकजके सरस सलोने ये॥कैधौं मदगंजन निरंजन हैं खंजनके कैधौं मृग मीन हेत भये अनहोने ये॥ कैधौं मन मोहिवेके उभय अभूत दूत कैधौं सुखदेत लेत अमीविष दोने ये ॥ रसिकविहारी कैधौं हरन सुधीके पीके लोचन सुतीके अतिनीके रचे कौने ये ॥३०॥ कैधौं शशि अंकमें विराजै शनियाल रूप कैधौं कंज कलिकापै सो है भृंग नीको है ॥ कैधौं हेम संपुटमें जटित सु नीलमणि कैधौं धरो आरसी पै फूल

अरसीको है ॥ कैधौं शुभ्र आसन पै बैठो है मनोज भूप कैधौं जंत्र मोहन है मोहन सु जीको है ॥ रसिकविहारी कैधौं डीठ काहूकी है गडी कीधौं यह आनन पै गुदना सु तीको है ॥ ३१ ॥

दोहा—इमि विचार करि राजसुत, बहुरि लखे तिहि ओर ॥
ताछिन कमला धायकै, दये रंगमें बोर ॥ ३२ ॥
लखि रिपुसूदन कुंकुमा, घालो तासु कपोल ॥
मुख गुलाल मलि मेनका, धाय मिली निज टोल ॥ ३३ ॥
ताछिन आलीगण उमँगि, रंग गुलालहि छाय ॥
अनुज सखन युत श्यामको, नख शिख दये रचाय ॥ ३४॥
तिहि औसर छवि फागकी, अकथ अभूत अनूप ॥
सो सुख जानै नैन मन, जहँ छायो वह रूप ॥ ३५ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

बरसत रंग तिय दामिनी सी दैरैं दुरि घन अँधियार है गुलाल अवरोधमें ॥ गरजत मेघसे मृदंग मन पौन झोंके होत कलगान कोकिलानके प्रबोधमें ॥ फागुन पलट भयो सावन सुहावन सो रसिकविहारी कहौ निज मति शोधमें । सरिता नवेली उमड़ी है नेह नीर भरि धायकै मिलीहैं जाय प्रीतम पयोधमें ॥ ३६ ॥

दोहा—इहि विधि इत होरी मची, कोऊ कछू नैं जान ॥
राम विचित्रा डीठ लखि, सिय उत ठानो मान ॥ ३७ ॥
मिसकरि उठि तहँ ते सिया, विमलहि निकट बुलाय ॥
रहसि भवन मधि लै गयी, भाषी भौंह चढ़ाय ॥ ३८ ॥
सखिन हौं आयसु दई, पै सु विचित्रा नारि ॥
आवतहीं नृपनंद ढिग, धाई रूप निहारि ॥ ३९ ॥
पुनि श्यामहु की डीठ हौं, पहिचानी तिहि ओर ॥
चकित भये टक लाय दृग, मानो शशिहि चकोर ॥ ४० ॥
याते हौं अब लाल ढिग, जाय न खेलौं फाग ॥
सुनि विमला समुझायकै, बोली युत अनुराग ॥ ४१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

नृपतिकिशोरी मोरी विनय सुनीजे इती कहति निहोरी करजोरी मान लीजिये ॥ गोरीते सु जोरी डीठ होरी में न चोरी कछू खोरी तिन ओरी है न जीमें ठान लीजिये ॥ जोरी श्याम गोरी विधि जोरी या करोरी युग अचल सदाही सत्य नेह जान लीजिये ॥ राम एक नारी व्रतधारी मुनि झारी कहैं रसिकविहारी बात सारी छानि लीजिये ॥ ४२ ॥ हम सब आली दिन रैनि नित दंपतिको सेवैं हैं सदाही जीय गति पहिचानें हैं ॥ रहसिरसैंहैं दरशैंहैं परसैंहैं अंग बोलैंहैं हँसैं हैं औ विनोद मोद ठानैं हैं ॥ रसिकविहारी धीर अवधविहारी सत्य धर्म धुरधारी सो सुनीति रीति जानैं हैं॥मन वच कर्मते सु भूलिहु कबौं न लाल रावरे विहीन काहु बाल उर आनैं हैं ॥ ४३ ॥

दोहा—यों कहि पुनि विमला सुमति, बोली परम सुजान ॥
धनि दंपति जोरी मिली, दोऊ दुहूँ समान ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

प्यारे सों न कोऊ एक नारी व्रतधारी और प्यारीसी पतिव्रता पुनीत कहूँ नारी ना ॥ अवधविहारी ऐसे कितहूँ न रूपमंत नृपति दुलारीसी सुतीय छविवारी ना ॥ रसिकविहारी दुहुँ दोऊ अनुहारी इमि काहु ठौर दंपति सनेह सत्य कारी ना ॥ एक मुख कैसे यह भाग्यकी बडाई करों गिरिजा रमाहु सम स्वामिनी तिहारी ना॥४५॥

सवैया कवित्त।

ब्याह भयो जबहीते पिया तुव रूप लखैं नितही दृग दीने ॥
रंच न त्यागत हैं रसिकेश तिहारहि नेह सुधारस भीने ॥
रावरे अंगकी देखि प्रभा ललकैं पलकैं नहिं देत प्रवीने ॥
हौ बड़ भागिनि राजसुता रघुनंदनको अपने वश कीने ॥ ४६॥

घनाक्षरी कवित्त।

परमसुजान ज्ञान गुणकी निधान मंजु अति मतिमान मुददान प्राणप्यारेकी ॥ मेरी विनै मान मान त्यागौ अनुराग प्रिया मिलइ सखीको आज यह गति न्यारेकी ॥ कीजे फाग विजय सु ढंग गहि

लीजे धाय सुथरी भली है या गुलालके अँध्यारेकी ॥ रसिकविहारी प्यारी रंग बरसावो चलि पिय दरशावो द्युति आनन उज्यारेकी४७॥

दोहा—यौं कहि विमला सीय मुख, लखि पुनि कर गहि लीन ॥
नैननाय मुसकाय फिर, बोली अली प्रवीन ॥ ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त

झेलि झेलि झोरिन अबीर रंग रेलि रेलि मेलि मेलि कुंकुमा गुलाल भरि मूठि मूठि ॥ खेलो फाग आई अनुराग भरी भाग्यनते काहे इतरात बात बोलतीहौ तूठि तूठि ॥ रसिकविहारी कौन बानि या तिहारी प्यारी प्यारेको वृथाही क्यौं लगावो खोरि झूठि झूठि ॥ मानो सीख मेरी वैस थोरी पै न भोरी वीर होरीमें न गोरी बरजोरी चलो रूठि रूठि ॥ ४९ ॥

दोहा—सुनि आलीके वर वचन, हँसि लगाय तिहि हीय ॥
सीय कही विमला सखी, हौं अति मति कमनीय ॥ ५० ॥
यौं कहिकै आनंद भरि, लै पिचकारी हाथ ॥
कोउ न जानो भेद सिय, मिलीं सखिनके साथ ॥ ५१ ॥
बरसत है दुहुँ ओरते, रंग गुलाल अपार ॥
कोऊ लखै न काहुको, छायो अति अँधियार ॥ ५२ ॥
छिन छिन कहत उमंग भरि, सखी सखा दुहुँ ओर ॥
जै मिथिलाधिप नंदिनी, जै अवधेशकिशोर ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बरसत दोउ ओर रंग पिचकारिनते मृगमद मिश्रित गुलाल धुंधछाईहै ॥ रलित कपूर धूर पूरोहै अबीर चहूँ केशरकी कीच वीच महल मचाई है॥चलत अपार चारु कुंकुमा प्रसूनगुच्छ रसिकविहारी गान धुनि सरसाईहै ॥ अवधकिशोर अरु जनककिशोरी गोरी खेलैं आज होरी आज होरी अधिकाई है ॥ ५४ ॥

दोहा—इमि खेलत होरी दुहूँ, आय भये इकठौर ॥
जनकनंदिनी राजसुत, रसिकनके शिरमौर ॥ ५५ ॥
ताछिन पिय कर गहि सिया, बोलीं मृदु मुसक्याय ॥
कितते विचरत रँग भरे, आये हो इहँ ठाय ॥ ५६ ॥

सवैया कवित्त।

फौज लिये फगुवारनकी सब सौंज सजे निज मौंजमें सूबे ॥
लाल गुलाल ते लाल भये छवि छाक छके दृग हैं मद ऊबे ॥
हो रसिकेश उमंग भरे रसरंगमें अंग सु रंगमें डूबे ॥
सांचि कहौ किहिके घर जाय लला बनिआये हौ आज अजूबे५७॥

दोहा–सुनि हँसिकै बोले तबै, रघुबर प्रेम प्रवीन ॥
इन दिन मिथिलावासिनी, भई सबै रसलान ॥ ५८ ॥
तिनके सदन सखान युत, कियो जाय रसपान ॥
अब इत आये तब सखी, सब करिहैं सनमान॥ ५९ ॥
इमि बतरातहि औचकै, चंद्रकला अलि आय ॥
अंजन रेख कपोल करि, बेंदी दई लगाय ॥ ६० ॥

सो०–ताछिन लषण प्रवीन, गहि बोरी तिहि रंगमें ॥
भरत धाय धरि लीन, हेमा मुख रोरी मली ॥ ६१ ॥
तुरत विचित्रा नारि, आई कर कज्जल लिये ॥
रिपुहन ताहि निहारि, गहि सोई तिहि मुख मलो ॥ ६२ ॥
ताछिन ताहि निहारि, पहिचानी रघुवीर ध्रुव ॥
यह सु विचित्रा नारि, सिद्धाकी प्यारी सखी ॥ ६३ ॥
अति उताल रघुलाल, मारी मूठ गुलाल तिहि ॥
सो प्रवीन वर बाल, भजी श्याम मुख चूमिकै ॥ ६४ ॥
ताछिन अलिगण धाय, गहि लीने बहु सखनको ॥
नारी वेष बनाय, पाँय पराये सीयके ॥ ६५ ॥
लषण शत्रुहन धाय, गहि लाये सखियानको ॥
वर नर रूप सजाय, राम पाँय डारी मुदित ॥ ६६ ॥
सो लखि सिय उमँगाय, रँगगुलाल अरु कुंकुमा ॥
सहित सखी समुदाय, पिय तन ताकि बरसन लगी ६७॥
अनुज सखन युत श्याम, होरी होरी शोर करि ॥
रँग गुलाल अभिराम, चहुँ दिशिते लाई झरी ॥ ६८ ॥

दोवई छंद।

लषण विचित्रा अंग शत्रुहन चंद्रकला पर मेलैं॥
भरत चारुशीला मिलि रघुवर जनकनंदिनी खेलैं॥
सखा सखी अरु अपर अनेकन भरि भरि हृदय उमंगा॥
गेंद प्रसून गुलाल कुंकुमा घालत बरसत रंगा॥ ६९॥
बजत मृदंग झांझ डफ दुहुँ दिशि होत मनोहर गाना॥
अतर मलत मुख पान देत हठि अति अनंद उमगाना॥
राजकुँवर मिथिलेशनंदिनी दोऊ सुघर खिलारीं॥
खेलत दुहूं परस्पर होरी भरे सनेह सुखारी॥ ७०॥

घनाक्षरी कवित्त।

श्यामा श्याम सुघर खिलारी हुसियारी करि रसिकविहारी धाय धाय दोऊ रेलै हैं॥केशरके रंगमें सुअंग सराबोर भीजे ताकि ताकि कुंकमाकपोलन पै मेलैं हैं। लाल मुख लाल सोहैं सहित गुलाल तापै अलकैं अबीर भरी झूमैं छवि झेलैं हैं। पीत जरतारी झँगा पहिरे भुजंग छोना मानो बाल भानु संग धाय धाय खेलैं हैं॥ ७१॥

दोवई छंद।

ताछिन धाय अली कमलादिक औचकही द्रुत जाई॥
चारहु राजकिशोरन गहिकै निज सु गोल मधि लाई॥
नैन आँजि वेदी लिलारदै फूल माल गल डारी॥
आय खरे कीने सिय सन्मुख हँसीं सकल दैतारी॥ ७२॥
लखि मुसकाय कही सिय प्यारे अब कहँ सखा तिहारे॥
मन भावै सो रचिय रूप चहुँ बोलि देहु किन हारे॥
तब रघुचंद मंद हँसि भाषी प्रिया सदा हम हारे॥
हैं अबला सबला सहाय जिहि मनसिज धनु शरधारे॥ ७३॥
सुनि सिय नैन नवाय विहँसिकै पिय दुहुँ कर गहि लीने॥
कही लाल मिलि अनुज सखन इत आय फैल बहु कीने॥
फगुवा देहु छैल तब छूटो नत ये मिथिला नारी॥
साजि तिया शृंगार नचे हैं चहूँबंधु धनुधारी॥ ७४॥

कही तबै रघुचंद मंद हँसि वर फगुवा हम देहीं ॥
अनुज सखा ये जिते तिते सब सखी एक इक लेहीं ॥
हमैं लेहु प्यारी तुम याते कह उत्तम सो दीजे ॥
पुनि बहु सखा सखिनको भूषण वसन विभूषित कीजे ॥ ७५ ॥
दोहा–सुनि सिय पिय वाणी विहँसि, बोली हम लखि लीन ॥
सखा अनुज संयुत लला, हौ सब कला प्रवीन ॥ ७६ ॥
यों कहि सिंहासन विशद, बैठारे रघुचंद ॥
श्याम वाम दिशि लाडिली, शोभित परमानंद ॥ ७७ ॥
अशन पान मादक विविध, अतर तमोल सु माल ॥
वसन विभूषण विशद बहु, सकल रसाल विशाल ॥ ७८ ॥
यथायोग सादर सकल, देत लेत युत मोद ॥
भरे परस्पर प्रेम सब, छाके फाग विनोद ॥ ७९ ॥
पुनि तहँ ते निज निज भवन, गवन कियो सब कोय ॥
इहि विधि फाग अनंद अति, अवधनगरमें होय ॥ ८० ॥
बहुरि परस्पर करत सब, निज निज भवन उछाह ॥
अनुज सखा सेवक सखी, सहित सनेह उमाह ॥ ८१ ॥
सर सरिता गृह बाग वन, विहरत निज निज टोल ॥
भोग राज कौतुक करें, ठानें विविध कलोल ॥ ८२ ॥
इहि विधि फाग अनंद अति, होय अवध पुर माहिं ॥
जो सुख लखि सुरपालहू, निज सुख तुच्छ गिनाहिं ॥ ८३॥
परमानंद समाज युत, कोशलनगर मझार ॥
इहि विधि सीताराम नित, करें अनेक विहार ॥ ८४ ॥
इति श्रीरा० र० वि० वि० फागविहार वर्णनो नाम पंचमो विभागः ॥ ५ ॥

हरिगीतिका छंद।

इहि भांति श्रीरघुवीर सिय युत करत नित लीला नई ॥
अवलोकि पुर परिजन यथोचित रहत सब आनँद मई ॥

वर बंधु सेवक सखन संयुत मुदित शहर निवासके ॥
वर विशद विधि मय सकल तीरथ किये सहित हुलासके ॥ १ ॥
दशसहस वर्ष सहर्ष बीते विविध विपुल विहारमें ॥
छाके रहैं नर नारि निशि दिन सब अनंद अपारमें ॥
रघुवीर निश्चल राज काज सुरीति संयुत वहु करैं ॥
नित नगर चरचा चरनते सुनि सुनि सुयशनिज सुख भरैं ॥ २॥
इक समय सियके सदन रघुवर मध्य दिन माधि जायकै ॥
बैठे वरासन प्रियहि लखि भाषी हृदय हुलसायकै ॥
हे मैथिली कछु दिन व्यतीते सुभग संतति पाय हौ ॥
सुत गोदलै करि प्यार छिन छिन निरखि मुख सुख छाय हौ॥३॥

प्रश्न । रामाश्वमेधे । अध्याय ॥ ५५ ॥ श्लोक० ।

रामो राज्यमयोध्यायां भ्रातृभिः सहितोऽकरोत् ॥
धर्मेण पालयन्सर्वं क्षितिखंडं स्वया श्रिया ॥ १ ॥
सती दधार तद्बीजं मासाः पंचाभवंस्तदा ॥
अत्यंतं शुशुभे देवी त्रयीव पुरुषं धरा ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद ।

सुनि सीय हिय सकुचाय शीश नवाय कछु मुसकायकै ॥
करि वदन अंचल ओट निरखैं पीय मुख हुलसायकै ॥
रघुचंद पुनि सानंद बूझी काह तव रुचि भामिनी ॥
अभिलाष उर जो होय सो सब पूजही गज गामिनी ॥ ४ ॥
सुनि जानकी आनंद भरि मृदु बैन यौं पिय ते कहे ॥
तव कृपा कंत अनंत सब सुख विविध भाँतिन ते लहे ॥
है और कछु नहिं चाह इक अभिलाष यह उरमें रही ॥
बूझी दया ते नाथ जानौं सोउ अब पूजे सही ॥ ५ ॥
दोहा–सुनि बोले पुनि राजसुत, भाषो प्रिया उताल ॥
जो तुव उर अभिलाष सो, सब पूजे इहि काल ॥ ६ ॥

दोवई छंद।

तव सिय कही जोरि कर प्यारे यह रुचि मो मन माहीं ॥
बहु मुनि नारि तपोवन वासिनि सुरसरि तीर रहाहीं ॥
तिनके दरश करौं इक वासर प्रमुदित तितहिं रहाऊँ ॥
अशन वसन भूपण दै पूजौं पुनि प्रभु ढिग द्रुत आऊँ ॥ ७ ॥
सुनि सानंद कही रघुनंदन प्रिया प्रात द्रुत जावो ॥
सकल साज संयुत तिन पूजौ प्रमुदित दरश करावो ॥
इमि रजाय दै प्रीति रीति युत तहँ ते राम सिधारे ॥
राजे आय मध्य कच्छा विच चरवर विविध जुहारे ॥ ८ ॥
उत सिय साज सजन लागी बहु उर अनंद उमँगाई ॥
सखिन कहैं चलि मुनिनारिनके दरश लहैं सुख छाई ॥
इत रघुवर ढिग विजय मत्त मधु भद्र आदि वर चारा ॥
वर्णत नगर कथा सानंदित हास विलास अपारा ॥ ९ ॥
तव कौशलपति सकल चरनते बूझी सहज विलासी ॥
हमहिं सियहि बंधुहि पितु मातहि काह कहैं पुरवासी ॥
भद्र दूत भाषी तव प्रणमित प्रभु सव सुयश अपारा ॥
वर्णत सकल नारि नर प्रमुदित चहुँ दिशि नगर मँझारा ॥ १० ॥
दोहा—सुनि वोले क्षितिपाल तव, यह जगरीति न आय ॥
सव सवही शुभही कहैं, कोउ न अशुभ कहाय ॥ ११ ॥
सो मम शपथ निशंक जिय, भाषो सत्य जु होय ॥
यही काज हित नियतहौ, सदा सु चर सव कोय ॥ १२ ॥
चौ०-तव कर जोरि भद्र चर भाषो ❀ हों प्रभुते कछु गुप्त न राखो ॥
इक यह वर सेवक गति होई ❀ स्वामिनिंद सुनि कहै न कोई १३
पै मुहिं अव निज शपथ दिवाई ❀ याते भाषौं कौशलराई ॥
सो अपराध क्षमा प्रभुकीजे ❀ कुमति वचन पर चित्त न दीजे १४
वसै रजक इक नगरमँझारी ❀ भो विषाद रूठी तिहि नारी ॥
सो सव दिन कहुँ अनत रहाई ❀ संध्या समय गेह मधि आई १५॥
रजक ताहि ताडन करि भाषी ❀ हौं नहिं राम लेउँ तुहि राखी ॥

ते वर भूप रुचै सो करहीं ❀ हमतौ दुहूँ लोकते डरहीं ॥ १६ ॥
यौं सकोप है ताहि निकारी ❀ दीनी त्यागि रजक निज नारी ॥
इमि पुनि अपर कुमति जन वृंदा ❀ करत परस्पर कछु प्रभु निंदा १७
कहत लोग सिय लंक मझारी ❀ रही ताहि पुनि रघुवर धारी ॥
भूपतिही जो ठान अनीती ❀ तो किमि करै प्रजा शुभरीती १८

दोहा–दूत वचन सुनि राम उर, भयो महादुख शोक ॥
गुणत सीय वर धर्म धर, दोप देत तिहि लोक ॥ १९ ॥
पै कछु हो वे शुभ अशुभ, लोक देश कुलरीति ॥
निपट त्यागि वो ताहुको, नीति प्रमाण अनीति ॥ २० ॥
कर्म शुभाशुभ कैसहू, जाते निंदा होय ॥
सुजन प्रतिष्ठित काज सो, भूलि करै नहिं कोय ॥ २१ ॥
इमि विचारि हिय विविध विधि, लिय उसाँस रघुराय ॥
वेगि बुलाये अनुज तिहुँ, सेवक सुमति पठाय ॥२२॥
तिहि औसर शत्रुघ्नहू, रहे अवधपुर माय ॥
आये तीनहु बंधु द्रुत, राज रजायसु पाय ॥ २३ ॥

चौ०–तव सव दूत गये सिख पाई ❀ रहे इकंत चारहू भाई ॥
बंधुन प्रति प्रभु कीन उचारन ❀ पुरचरचा निज हिय दुख कारन२४
तब तिहुँ अमित भाँति समुझाये ❀ पै रघुवर हिय तोप न लाये ॥
लै उसाँस अनुजन प्रति भापी ❀ आवो सियहि गंगतट राखी॥२५॥
सुनत वचन भे बंधु विहाला ❀ तब बहु शोक सहित रघुलाला ॥
कही अनुज तिहुँ धर्म धुरीना ❀सो मम आयसु चित्त न दीना२६॥
सुनि लछमन बोले शिरनाई ❀ प्रात करौं जिमि होय रजाई ॥
तब नृपाल सब बंधुहि भापी ❀मुनि तिय दरशन रुचि सिय राखी२७
ताही मिस सीतहि लै जावो ❀ तहां राखि पुनि वेगहि आवो ॥
इमि कहि सबहि विदा किय रामा ❀गये मौन तिहुँ दुखित सुधामा२८
प्रात होत लछमन रथलाई ❀ तामधि जनकसुताहि चढाई ॥
सूत सुमंत लपण सियसंगा ❀ गवने मुनि आश्रम तट गंगा॥२९॥

पूजन दान साज वहु भांती ॐ लिये संग सिय हिय हुलसाती ॥
मुनि तिय गण दरशन करि आऊं ॐ निज उरकीअभिलाप पुजाऊं२०
वालमीकि आश्रम मधि जाई ॐ लपण सियहि भाषी शिरनाई ॥
दीनी नाथ रजायसु येही ॐ कछु दिन रहैं तहां वैदेही ॥ २१ ॥
पति आज्ञा सुनि हिय अकुलानी ॐ पुनि तिय धर्म रीति अनुमानी ।
वाल्मीकि आश्रम मध सीता ॐ सवहि पूजि वर वसी पुनीता॥२२॥
लपण सुमंत राम ढिग आई ॐ कही सकल सिय गति शिरनाई ॥
यह चरचा सुनि पुर नर नारी ॐ भये सकल वहु हीय दुखारी ॥२३॥
अति वह रजक हीय पछताता ॐ कहत कढी कह मो मुख वाता ॥
तव तिहि पूर्वजन्म सुधि आई ॐ जानी यह भवितव्य रहाई ॥ २४ ॥
हम शुक रहे जनकपुर माहीं ॐ तिय युत तजे प्राण सिय पाहीं ॥
ताते जन्म अवधमें पायो ॐ सो वदलो सीतासे आयो ॥ २५ ॥

दोहा—अपर नारि नर अमित विधि, करत परस्पर वात ॥
सुमति कुमति वहु शुभ अशुभ, जो कछु जिहि उपजात २६

प्र० रा० ॥ अ० ५ ॥ श्लो० ।

तत्र नीचजनाच्छ्रुत्वा सीतायाअपमानताम् ॥
स्वां च निंदां रजकतस्तां तत्याज रघूद्वहः ॥२॥

दोहा—उत मुनि आश्रम जानकिहि, वीते चार सु मास ॥
तव प्रगटे द्वै सुत विशद, पितु सम जासु प्रकाश ॥ २७ ॥
वाल्मीक मुनि दुहुँनकी, दृढ रक्षा वर कीन ॥
भये संग याते तिनै, को वड छोट न चीन ॥ २८ ॥

चौ०-तव मुनि नाथ समेत विचारा ॐ पूरव पर उतपति निरधारा ॥
जेठे सुतहि नाम कुश राखा ॐ पुनि कनिष्ट पुत्रहि लव भापा२९॥
सीता लखि दुहुँ सुत अभिरामा ॐ पायो अति अनंद विश्रामा ॥
रहैं निकट सखि मुनि जन नारी ॐ सेवैं सियहि प्राणते प्यारी॥३०॥
इहि विधि वडे भये दुहुँ भाई ॐ मुनिवर विद्या सकल पढ़ाई ॥
अस्त्र शस्त्र मधि परम प्रवीना ॐ गीत वाद्य संगीत धुरीना ॥ ३१ ॥
विरचित वाल्मीकि मुनिनाथा ॐ राम चरित पटकांड सु गाथा ॥
सो लव कुश सुरताल प्रमाना ॐ कंठ मनोहर करें सु नाना ॥ ३२ ॥

दोहा–सिय तिय मुनि सुत अरु मुनिन, निकट सदा तिहि जान॥
इन विहाय कुश लव दुहूँ, नहिं काहू पहिचान ॥ ४३ ॥
चौ०–वाल्मीकि ऋषि गुरू हमारे ❀ हैं क्षत्रिय दुहुँ बंधु करारे॥
यों गुनि मुनि सेवा दुहुँ करहीं ❀ कानन धनु शर धारि विचरहीं४४
राम पुत्र दुहुँ तेज निधाना ❀ छवि गुण बल वपु पिता समाना॥
तिनयुतरहतिसियामुनिआश्रम ❀ करति सदापतिनामभजनश्रम ४५
इत रघुवीर अवधपुर माहीं ❀ राज काज सव सविधि कराहीं॥
पै दिन रैनि प्रिया को ध्याना ❀ राखत हृदय सहित वर ज्ञाना४६
वहुरि भये द्वैद्वै सुत नीके ❀ भरत लपण रिपुसूदनजीके॥
सबही निज निज पितु अनुहारी ❀ सुंदर बली गुणी शुभकारी४७॥
तक्ष और पुष्कल शुभनामा ❀ ये द्वै भरत पुत्र अभिरामा॥
अंगद चित्रकेतु दुहुँ वीरा ❀ हैं लछमनके सुवन सुधीरा॥४८॥
इक सुवाहु अरु शत्रुघाति वर ❀ ये शत्रुघ्न पुत्र दुहुँ धनुधर॥
चहूँ राजसुत सब गुणराशी ❀ रूपतेज बल धर्म प्रकाशी॥४९॥
प्रमुदित रहत सदा सब कोई ❀ समय समय वर कारज होई॥
लोक वेद कुलरीति प्रमाना ❀ उत्सव करत सकलविधि नाना५०
दोहा–तिहूँ लोक नर नारि अरु, अपर चराचर जोय॥
श्रीरघुवरके राजमें, सुखी रहैं सवकोय॥ ५१ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० कुशलवादिजन्मवर्णनो
नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०–इमि रघुवर मतिधीर, करत राज वर नीति मय॥
भरत लपण दुहुँ वीर, सेवत युत सेवक सखा ॥ १ ॥
चौ०–एक समय रघुवर करजोरी ❀ वोले गुरुहि सप्रीतिं निहोरी॥
प्रभु वहु वार सकल मख कीने ❀ यथाशक्ति दानहु कछु दीने॥२॥
पै कृपालु यह रुचिहै मोरी ❀ अश्वमेध मखहोय वहोरी॥
सुनि वसिष्ट आदिक ऋपिराई ❀ भये प्रसन्न परम सुखपाई॥ ३ ॥
वोले राज विलंब न कीजे ❀ साज सजनहित आयसु दीजे४॥

सुनि मंत्री सेवकन बुलाई ❀ यथा योग सब दई रजाई ॥
पुनि दशहूँ दिशि दूत पठाये ❀ यज्ञ निमंत्रन सबहि दिवाये ॥
कपिपति जाम्बवंत लंकेशा ❀ आये सदल साजि वर वेशा ॥५॥
अपर भूप सुर नर मुनि नागा ❀ जिनके हिय रघुवर अनुरागा ॥
ते सब सदल यज्ञ हित आये ❀ राम सकल सतकार कराये ॥६॥
कोऊ नृपति वीर अभिमानी ❀ कियो विलंब युक्ति कछु ठानी॥
कोऊ हय सँग गमन विचारा ❀ ते गृह रहे साज सजि सारा ७ ॥
इहि विधि भई अवध अतिभीरा ❀ जुरे भूरि जन सुमति सुधीरा ॥
कोऊ अतिहि उताल सिधाये ❀ कोऊ कछु विलंब ते आये ॥८॥

दोहा–कोऊ द्विज मुनि संतवर, कीनो हृदय विचार ॥
यज्ञ अंतलग जुरहिं जन, ह्वै है मोद अपार ॥ ९ ॥
याते जुरै समाज बहु, तब चलिये हुलसाय ॥
काहू कियो विलंब इमि, अरु छाये सब आय ॥ १० ॥
भूप प्रजा ज्ञानी गुनी, सब संयुत परिवार ॥
साज समाज समेत बहु, आये यज्ञ मझार ॥ ११ ॥
सुथल नैमिपारण्य मधि, भयो सकल मखकाज ॥
अशन वसन धन धाम वर, अपर उचित बहुसाज ॥ १२ ॥
कंचनमय तिय सविधि सुठि, रची सीय अनुहारि ॥
विधि विशुकर्माहू चकित, जाकी बनक निहारि ॥ १३ ॥
सकल अनूपम साज सजि, सविधि प्रथम श्रीराम ॥
बन्धु सखा सेवक अमित, पठै दये मखठाम ॥ १४ ॥
तिन तहँ साजो साज सब, तिहि पाछे रनिवास ॥
अपर अमित जन यज्ञ थल, गवने सहित हुलास ॥ १५ ॥

चौ०पुनि शुभ समय मध्य रघुराजा ❀ नैमिप गये समेत समाजा ॥
लखि थल साज सकल हुलसाये ❀ राम यथोचित काज दिढाये १६॥
कीश ऋच्छ नर निश्चर नाना ❀ करैं काज जिमि जाहि बखाना॥
अरु कपि भालु रैनिचर नारी ❀ लागीं उचित कृत्य महँ सारी १७॥
यथायोग सबही रनिवासा ❀ सखा सखी दासी अरु दासा ॥
पुर परिजन पाहुन नर नारी ❀ करैं काज निज निज अनुहारी १८॥

दोहा—सब प्रबंध वर हेरि कै, ह्वै प्रमुदित रघुनाथ ॥
किय़ो अरंभ सु यज्ञको, विशद विप्र मुनि साथ ॥ १९ ॥
श्यामकरण तनु गोरवर, पुच्छ पीत मुख लाल ॥
तरुण सुलक्षण सर्व गति, बली तुरंग विशाल ॥ २० ॥

प० रा० अ० ९ श्लोक ॥

गंगाजलसमानेन वर्णेन वपुषा शुभः ॥
कर्णे श्यामो मुखे रक्तः पीतः पुच्छे सुलक्षितः ॥ १ ॥
मनोवेगः सर्वगतिरुच्चैःश्रवस्समप्रभः ॥
वाजिमेधे हयः प्रोक्तो शुभलक्षणलक्षितः ॥ २ ॥

दोहा—हेम पट्टिका राम यश, लिखित बँधी तिहि माथ ॥
साजि सविधि वाजी तजो, सदल शत्रुहन साथ ॥ २१ ॥
सदल वाजि तजि अवधपति, ह्वै सनेम विधि उक्त ॥
निकट शृंग मृग हेम सिय, मखकर मुनि द्विज युक्त ॥ २२ ॥
प्रतिदिन आवत विपुल जन, होत सकल सत्कार ॥
दान मान तिहि समयको, को कहि पावै पार ॥ २३ ॥
उत रामानुज शत्रुहन, संग तुरंग प्रधान ॥
चले परम आनंद कहि, जैति राम बलवान ॥ २४ ॥

दोवई छंद ।

भरत पुत्र पुष्कल सिय भ्राता लक्ष्मीनिधि बलवाना ॥
नील रत्न रिपुताप उग्रहय प्रतापाग्र नृप नाना ॥
जाम्बवंत सुग्रीव सु हनुमत आदि ऋच्छ कपि वीरा ॥
सकल भूप युत सैन राम दल रिपुहन संग सु धीरा ॥ २५ ॥
सचिव सुमति वर सखा सु सेवक सदल विभीषण भूपा ॥
इहि विधि अमित सैन तिहि पाछे अग्र तुरंग अनूपा ॥
जहाँ जहाँ निज रुचिते वाजी गवनत तहँ सब जावै ॥
नृपति अनेक आय रिपुशालहि शिर नमि संग सिधावै ॥ २६ ॥

सुंदरपुरी नाम अहिछत्रा तहाँ सुमद नरनाथा ॥
आवतही सो राज्य समर्पण कियो नाय पद माथा ॥
रिपुहन तासु पुत्र कहँ नृप करि सदल भूप लिय संगा ॥
परमानंद चले पुनि तितहीं गमनो जितै तुरंगा ॥ २७ ॥

चौ०-यों विचरत मख वाजि अनूपम ❀ आयो च्यवन मुनीके आश्रम॥
राम बंधु नमि ऋषिहि सप्रीती ❀ गवने पुनि सुनि कथा सुनीती २८
विचरत संग सैन चतुरंगा ❀ गयो नीलगिरि निकट तुरंगा ॥
जहँ चक्रांकापुरी अनूपा ❀ तहाँ सुबाहु नाम वर भूपा २९॥
तासु कुमार दमन जिहि नामा ❀ समर धीर वर गुणबल धामा ॥
सो नृपसुत मृगयाहित आयो ❀ मख तुरंग वन तिहि दरशायो ३०

दोहा–नख शिख साज अमोल वर, साजो वाजि विशाल ॥
यह रघुवर यश खचित सो, पत्र लसै तिहि भाल ॥ ३१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

श्रीयुत सकल धर्मधारी चक्रवर्ती ख्यात क्षत्री भानुवंशी दशरत्थ अवधेशके ॥ परम पवित्र पुत्र राजा रामचंद्र वीर ठानो अश्वमेध जो दलैया निश्वरेशके ॥ तिनको तुरंग याहि कोऊ हो बली सो गहै जीतैं शत्रुशाल ताहि सदल सदेशके ॥ नतरु नवाय माथ हाथ जोरि आवै साथ रसिकविहारी ह्वै अधीन कौशलेशके ॥ ३२ ॥

चौ०-इमि लिपि देखि दमन करि क्रोधा। कही राम विन और न योधा ॥
यों हठि गयो धामलै वाजी ❀ चतुरंगिनी अनी द्रुत साजी३३॥
लै दल दमन युद्ध हित आयो ❀ प्रतापाग्र लखि कटक चलायो॥
भिरे दुहूँ दिशि वीर जुझारा ❀ भयो समर तिहि समय अपारा३४
प्रतापाग्र नृप इत रणधीरा ❀ भूपति पुत्र दमन उत वीरा ॥
अस्त्र शस्त्र दुहुँ दुहुँन प्रहारे ❀ मुरैं न कोउ दोउ भट भारे ॥३५॥
तब नृपसुत वर बाण प्रहारा ❀ बिधो सु भूपति हृदय मझारा ॥
प्रतापाग्र अति भये विहाला ❀ तिन रथ लैगो सूत उताला ३६॥
सुनि रण हाल शत्रुहन धीरा ❀ पठयो भरत पुत्र वरवीरा ॥
पुष्कल सदल आय ततकाला ❀ दमन संग किय युद्ध कराला३७

भरत पुत्र शर अग्नि प्रहारा ❀ होन लगो तिहि दल जरिछारा ॥
वरुण वाण तब दमन चलावा ❀अनल बुझी बहु जल चहुँ छावा३८
शर वायव्य सु पुष्कल छोरा ❀ छाई पवन भजे घनघोरा ॥
पर्वत अस्त्र तजो सो उद्धा ❀ भो गिरि कोट वायु बलरुद्धा३९॥
भरत पुत्र तव हनो वज्र शर ❀ गिरे कुधर ह्वै चूर धरणिपर ॥
पुनि दमनहि इक वर इषु शाला ❀ भयो राजसुत लगत विहाला४०

दोहा—दमनहि निरखि विहाल अति, वर सारथी प्रवीन ॥
तिहि युत रथ लै नगरगो, नृपहि विदित सब कीन ॥ ४१ ॥
सुनि सुबाहु निज सुत व्यथा, दुखित सकोप उताल ॥
साजि सैन चतुरंग लै, चलो महीप विशाल ॥ ४२ ॥

चौ०-नृपसुत इक चित्रांग ललामा ❀ दूजो है विचित्र जिहि नामा ॥
दोऊ दमन अनुज ये वीरा ❀ भूपति बन्धु सुकेतु सुधीरा४३॥
ये तिहुँ अपर अनेकन योधा ❀ लै गंमनो नृप सुभुज सक्रोधा ॥
ताछिन दमनहु भयो सचेता ❀ चलो सोउ वर सैन समेता४४॥
आय भिरे भट सकल जुझारा ❀ दुहुँ दल एकहि एक प्रचारा ॥
उत सुबाहु जय होत पुकारा ❀ इत शत्रुघ्न जैति उच्चारा ॥ ४५ ॥
लक्ष्मीनिधि सुकेतु दुहुँ युद्धे ❀ पुष्कल अरु चित्रांग निरुद्धे ॥
संयुग धीर सुभुज नरनाथा ❀ ठानो समर शत्रुहन साथा॥४६॥

दोहा—युद्ध करैं रिपुतापते, उद्धत दमन सुधीर ॥
लरत विचित्र विचित्र गति, नील रतनते वीर ॥ ४७ ॥
अपर वीर बहु वीर सँग, नर निश्चर कपि ऋच्छ ॥
अस्त्र शस्त्र वर मल्ल युध, करत सबै रण शिच्छ॥ ४८ ॥
रुंड मुंड कर पद रुधिर, समर भूमि मधि छाय ॥
भयो जु हाहाकार चहुँ, निज पर कछु न जनाय॥ ४९॥
तब पुष्कल चित्रांगको, वध कीनो हनिबान ॥
सुभुज नृपति लखि सुत मरन, शोक दुःख अकुलान ॥५०॥
पुनि धरि धीर सकोप अति, धाय सुबाहु नृपाल ॥
अति उताल शत्रुघ्न पर, घाले बाण कराल ॥ ५१ ॥

चौ०–ताछिन धाय पवनसुत वीरा ❀ वीचहि गहि भंजे सब तीरा।
मर्दन किय स्यंदन हय सूता ❀ गिरे भूप कपि सुबल अकूता ५२।
तब हनुमंत क्रोध करि ताही ❀ चरण प्रहार कीन उर माहीं।
गिरो भूमि भूपाल विहाला ❀ मुर्छित ह्वै अचेत ततकाला ५३॥
तब तिहि तजि कपि अपर निरुद्धे ❀ सो लखि क्रुद्ध उद्ध भट युद्धे।
बहु सेवक जन धाय उताले ❀ घेरि रहे ह्वै विकल नृपाले ॥५४।
ताछिन भयो आचरज भारी ❀ जो न होत रणभूमि मझारी।
मुर्छित परो अचेत जु भूपा ❀ तबै लखो यह स्वप्न अनूपा ॥५५।

हरिगीतिका छंद।

श्रीराम शोभाधाम प्रमुदित यज्ञशाल विराजहीं॥
ब्रह्मांड अगणित देव ब्रह्मादिक अमित तहँ भ्राजहीं॥
ते सकल सुर मुनि नारदादि अपार अस्तुति ठानहीं॥
गंधर्व किन्नर अप्सरा बहु सुयश कर वर गानहीं॥ ५६॥

प्र०॥ रा०॥ अ० २८॥ श्लोक॥

तदा तु मूर्छितो राजा स्वप्नमेकं ददर्श ह॥
रण मध्ये कपिवरप्रपदाघातताडितः॥ ३॥
रामचंद्र स्त्वयोध्यायां सरयूतीरमंडपे॥
ब्राह्मणैर्याज्ञिकश्रेष्ठैर्बहुभिः परिवारितः॥ ४॥
तत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र ब्रह्मांडकोटयः॥
कृतप्रांजलयस्तत्र स्तुवंति स्तुतिभिर्मुहुः॥ ५॥

हरिगीतिका छंद।

यह लखत स्वप्न सुबाहु नृपहीं चेत भो मुरछा गई॥
उर ज्ञान आयो तबहिं श्रीरघुवीर प्रभुता हिय छई॥
उठि वेगि वरजे युद्धते सुत बंधु सेवक धायके॥
पुनि सकल युत शत्रुघ्नके पद शीश नायो आयके॥ ५७॥
सो०–कीनी विनय अनंत, नृप सुबाहु कर जोरिके॥
राम अनुज मतिवंत, तब भूपहि उरलाय लिय॥ ५८॥
रामबंधु बलवान, किय सन्मान बखान बहु॥

नृप गुण ज्ञान निधान, राज समर्पो प्रभुहि निज ॥ ५९ ॥
तब रिपुदमन उदार, दमनहिं करि अभिषेक पुनि ॥
संयुत सैन अपार, चले संग लै नृप हरिहि ॥ ६० ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० अश्वमेधयज्ञारंभ सुबाहु
युद्धवर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा–इहिविधि श्रीरघुवीरको, मख तुरंग चहुँ ओर ॥
निज इच्छित गमनत मुदित, संग सैन वरजोर ॥ १ ॥

दोवई छंद ।

विचरत वाजी गयो तेजपुर तहँ वर भक्त भुवाला ॥
सत्यवान जिहि नाम हरषि सो आयो अतिहि उताला ॥
शीशनाय निज राज समर्पो तब रिपुदमन प्रवीना ॥
तासु पुत्र रुक्महिं अभिषेको चले नृपहि सँग लीना ॥ २ ॥
तहँते कछुक दूर गमने तब औचक भो अँधियारा ॥
धूरि पूरि नभ विज्जु चमंकी ह्वै घन गर्ज अपारा ॥
वरषि रुधिर कच अस्थि उपल मल तम करि खल दल धायो ॥
दशमुख मित्र सु विद्युन्माली नाम निशाचर आयो ॥ ३ ॥
भयो विकल दल कछु नहिं सूझै ताछिन सो निशिचारी ॥
अंतरिक्ष ह्वै हरि हरि लैगो दुष्ट सु मायाकारी ॥
पुनि ताही छिन मिटो सबै तम दशहू दिशि उजियारा ॥
यातुधान नभ मंडल छाये गर्जहिं विकट अपारा ॥ ४ ॥
सो बिलोकि सब दल अकुलायो तबै शत्रुहन वीरा ॥
भाषी अवहिं निश्चरन नाशैं हो भट सकल सुधीरा ॥
सुनि पुष्कल लक्ष्मीनिधि हनुमत आदि अमित बलवाना ॥
रामबंधु युत भये सु उद्धत समर हेत प्रण ठाना ॥ ५ ॥
समरधीर वर वीर दुहूँ दल भिरे क्रोध करि भारी ॥
पुष्कल संग सु विद्युन्माली ठनो युद्ध बलकारी ॥
तासु भ्रात जो उग्रदंत सो लै धनु खड्ग विशाला ॥
मिथिलापति लक्ष्मीनिधि साथे संयुग कियो कराला ॥ ६ ॥

अपर वीर वहु दुहुँ दिशि युद्धत उद्धत ह्वै करि शोरा ॥
हटत न यातुधान तव धायो कपि केशरी किशोरा ॥
तरु गिरि उपल दंत नख मुष्टन चरण चपेटन मारे ॥
आय जाय महि व्योम छिनहि छिन निश्चर निकर सँहारे ॥७॥
यातुधान ह्वै विकल थकित तव निज माया विस्तारी ॥
मृतक पषाण रुधिर मल वरषो भयो चहूँ तम भारी ॥
भभरि भगे नर भालु कीश भट लखि रामानुज वीरा ॥
छिनमहँ दूर कियो सो खल छल मोहनास्त्र हनि तीरा ॥ ८॥
सो विलोकि निश्चर पुनि ठानो अस्त्र शस्त्र वर युद्धा ॥
व्याकुल भये सदल रामानुज तव छायो वहु क्रुद्धा ॥
राम सुमिरि नाराच प्रहारे लगत दुहूँ वलवाना ॥
उग्रदंत अरु विद्युन्माली गिरे भूमि गत प्राना ॥ ९॥
तव अनाथ ह्वै विकल भीतिवश लै तुरंग द्रुत धाई ॥
यातुधान सव रामवंधुके परे चरण माथि आई ॥
भये मुदित सव विजय वाजि लहि कियो सु जैजैकारा ॥
तहँ ते चलि पुनि विचरन लागो मख हय दल युत सारा॥१०॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० विद्युन्मालीयुद्ध
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

चौ०—इमि विचरत वाजी वर वीरा ॥ पहुँचो रेवा सरित सु तीरा ॥
तहँ आरण्यक मुनि वर ज्ञाता ॥ तिनहि मिले सादर प्रभु भ्राता१
तहँते गमन कियो जन सारे ॥ तव हय सेवक आय पुकारे ॥
सरिता तट तडाग वर भारी ॥ तामहँ पान करत भो वारी ॥२॥
जल पीवतही तुरँग न जाना ॥ भयो मध्य सर अंतरध्याना ॥
सो गति सुनि रिपुहन अकुलाये ॥ सुमति सकल मिलि मंत्र दृढाये३
तव रिपुहन पुष्कल हनुमंता ॥ सर प्रविशे जल मध्य तुरंता ॥
लखो गंभीर नीरतल धामा ॥ मणि कंचनमय परम ललामा ४॥
तामहँ इक तिय तेज विशाला ॥ शोभित युत अनेक वर वाला ॥
तहां सु वाजि निवंधित देखा ॥ सवहि भयो आचरज विशेखा ५

रिपुहन आदि सकलधरि धीरा ॐ नायो शीश जाय ...
सो बूझी गति तव हनुमंता ॐ वरणी सत्य समस्त तु...
सुनि योगिनी कही हम काहीं ॐ जीतें कोउ सुरासुर...
पै तुरंग मम प्रभुकर याते ॐ किमि हाँ गहाँ जाहु ले...
यों कहि पुनि योगिनी प्रवीना ॐ एक अस्त्र रिपुदमनहि...
भाषी लैरै वीरमणि राजा ॐ तहँ ऐहै तुमरे यह काज...
सुनि सबही आनंद अघाई ॐ लै तुरंग गवने ...
सरजलते कढि दल मधि आये ॐ चले मुदित ज शोर मच...
विचरत मख वाजी अभिरामा ॐ आये नगर देवपुर ...
तहँ गिरि वन सरि सुभग पुनीता। लखि तृण जल गो अश्व...

दोहा—नृपति देवपुरमें प्रबल, नाम वीरमणि जासु ॥
शंकर नित रक्षा करैं, प्रगट सगणके तासु ॥ ११
हैं अनन्य शिवभक्त नृप, तासु पुत्र बलधाम ॥
परमरम्य गुणवंत वर, रुक्मांगद जिहि नाम ॥ १२
सो तिय गण संयुत मुदित, वनविहार करवीर ॥
लखि तुरंग शिर पत्र पढि, गहि लायो रणधीर ॥
पितहि बखानो हाल सब, सुनि शिव सहित नृपाल
कही कियो अनुचित महा, ह्वै है युद्ध कराल ॥
पुनि पुरारि भाषी नृपहि, लाभ महारण माहिं ॥
हम तुम दोउनको इहाँ, रघुवर दरश मिलाहिं ॥ १...

प०। रा०। अ० ३९॥ श्लोक।

परमत्र महालाभो भविष्यति रणांगणे ॥
यद्रामचरणांभोजं द्रक्ष्यामः स्वीयसेवितम् ॥ १

दोहा—सुनि नृप उठि तिहि वाजिके, निज कर चरण प्र...
किय निबंध दै अशन जल, वर हय शाल विशाल
सचिव सैन पति बोलि पुनि, कही वीरमणि वीर ॥
सजौ सैनहौं देखिहौं, किमि रिपुहन रणधीर ॥ १५

तिहुँ पुरके सुर असुर जो, युद्ध करैं मम साथ ॥
तौ नहिं पावैं वाजि अब, बिन आये रघुनाथ ॥ १८ ॥
नृप रजाय सुनि वेगही, सजी सैन बलपूर ॥
जै महेश कहि वीरमणि, चलो संग भट भूर ॥ १९ ॥
नृपसुत रुक्मांगद प्रथम, द्वितिय शुभांगद नाम ॥
वीरसिंह भूपति अनुज, अपर अमित बलधाम ॥ २० ॥
इमि सुत बंधु अनीक युत, गमन कियो भूपाल ॥
इत रिपुसूदन सजग ह्वै, विरचो व्यूह विशाल ॥ २१ ॥

चौ० ताछिन आय भूप कटकाई ❀ कहि जै जैति बाण झरिलाई ॥
कीश ऋच्छ निश्चर नर धाये ❀ इतते गिरि तरु शस्त्र चलाये २२॥
भिरे सुभट दुहुँ कटक विरुद्धे ❀ उद्ध प्रबुद्ध सु युद्ध निरुद्धे ॥
अस्त्र शस्त्र बहु करत प्रहारा ❀ लरत मरत भो हाहाकारा २३ ॥
ताछिन भूप कटक विचलाना ❀ सो लखि रुक्मांगद धनुताना ॥
धाय भिरो पुष्कलसे योधा ❀ दोऊ हनत दुहूँ भरि क्रोधा २४॥
तब पुष्कल तिहि अस्त्र प्रहारा ❀ भ्रमो सरथ नभ मंडल सारा ॥
भानु निकट जातहि हय स्यंदन ❀ दग्ध भयो व्याकुल नृपनंदन२५॥
तासु हस्त इक भो जरिछारा ❀ गिरो विकल ह्वै धरणि मझारा॥
रुक्मांगदहि बिहाल निहारी ❀ भगे भीति भरि बहु भटभारी२६॥
लखिसुत गति करि क्रोध कराला ❀ धायो गहि धनु बाण भुवाला ॥
मारि सायकन दल विचलावा ❀ निरखि हनूमत क्रोध बढावा२७॥

दोहा-धाय वीर कपि भिरि कियो, वीरसिंहते युद्ध ॥
पुष्कल अरु नृपवीर मणि, भये समर अवरुद्ध ॥ २८ ॥
पुष्कल रथ हय कवच धनु, दियो वीरमणि कोटि ॥
भये विकल पुनि सजग ह्वै, हने बाण तिहि डाटि ॥ २९ ॥
भरत पुत्र शरघातते, गिरो भूमि भूपाल ॥
नृपगति लखि दल विचलभो, भगे सु वीर विहाल ॥ ३० ॥
वीरसिंह तब क्रोध भरि, किय हनुमनहि विहाल ॥
शालि मुष्टिका भूमि तिहि, डारे अंजनिलाल ॥ ३१ ॥

चौ०—ताछिन कोपि शुभांगद वीरा ❀ कीनी सैन विकल हनि तीरा॥
रुक्मांगदहु सजग ह्वै धायो ❀ दुहूँ बंधु मिलि दल विचलायो२२॥
सो लखि हनुमानादिक वीरा ❀ धाय कियो नृप कटक अधीरा॥
नृपसुत वन्धु समेत अचेता ❀ निरखि भजे सब वीर निकेता२३॥
ताछिन शंभु क्रोध उर धारा ❀ भूत प्रेत गण संग अपारा॥
रथ अरूढ ह्वै गहि धनु धाये ❀ लखि रिपुहन सजि बाण सिधाये२४
महादेव रिपुसूदन धीरा ❀ पुष्कल वीरभद्र वर वीरा॥
नंदी हनुमत संग निरुद्धे ❀ इमि बहु एक एक मिलि युद्धे२५॥
चार दिवस भो समर महाना ❀ पुष्कल वीरभद्र बलवाना॥
अस्त्र शस्त्र दुहुँ दुहुँन प्रहारे ❀ एकहि इक मुर्च्छित करिडारे २६॥
तब करि वीरभद्र रिसि चंडा ❀ हनि त्रिशूल पुष्कल शिरखंडा॥
भरत पुत्र वध लखि सब बीरा ❀ सहित शत्रुहन भये अधीरा २७॥
पुनि धरि धीर वीर सब धाये ❀ युद्धे महा क्रुद्ध उर छाये॥
शंभु शत्रुहन दुहुँ बलवंता ❀ अस्त्र शस्त्र रण कियो अनंता२८॥

दोहा—इमि एकादश दिवस लग, युद्ध कियो दुहुँ वीर॥
हनो अस्त्र शर प्रबल हर, ह्वै हिय निपट अधीर ३९॥
सो पीडित शर शत्रुहन, मुर्छित धरणि मझार॥
गिरे निरखि गति विकल दल, हाहा होत पुकार॥ ४०॥
अपर शंभुगण क्रोध भरि, धाय धाय चहुँ ओर॥
बहु मुर्छित बहु वध किये, कपि नर भट वर जोर॥ ४१॥
यह गति लखि निज सैनकी, तब हनुमंत उताल॥
पुष्कल तनुको बहुरि पुनि, किय प्रबंध रथ घाल॥ ४२॥
आय शंभु सन्मुख सपदि, हनुमत कही सकोप॥
परम संत गुणवंत ह्वै, कियो धर्म सब लोप॥ ४३॥
तव शिर भापी सत्य कपि, पै हौं भक्ति अधीन॥
याते हौं कछु क्रोध भरि, याछिन संयुग कीन॥ ४४॥

प० ॥ रा० ॥ अ० ४४ ॥ श्लोक ॥

आगत्य सविधे रुद्रं समरांगणमूर्धनि॥
जगाद हनुमान् [illegible] सुराधिपम्॥ २॥

मया पुरा श्रुतं देव ऋषिभिर्बहुधोदितम् ॥
रघुनाथपदस्मारी नित्यं रुद्रः पिनाकधृक् ॥ ३ ॥
तत्सर्वं तु मृषा जातं शत्रुघ्नं प्रति युद्ध्यता ॥
पुष्कलो मे हतोः वीरः शत्रुघ्नोपि विमूर्छितः ॥ ४ ॥
इत्युक्तवंतं प्लवगं प्रोवाच स महेश्वरः ॥
धन्योसि वीरवर्य त्वं भवान्वदति नो मृषा ॥ ५ ॥
मत्स्वामी रामचंद्रो वै सुरासुरनमस्कृतः ॥
तदश्वमानयामास तद्रक्षार्थं मयागतम् ॥ ६ ॥
निवसामि पुर नित्यं तद्भक्त्यानुवशीकृतः ॥
यथा कथंचिद्भक्तोऽसौ रक्ष्यः स्वात्मा इति स्थितः ॥ ७ ॥
एवं वदति चंडीशे हनुमान्कुपितो भृशम् ॥
शिलामादाय कोपेन ताडयामास तद्रथम् ॥८॥ इत्यादि॥

चौ०–सुनि हनुमत करि क्रोध कराला। चालो गहि गिरि खंड विशाला॥
तिहि लागतहि सूत हय स्यंदन ॥ वचे शंभु तिहुँ भये निकंदन ४५
तव शंकर नंदी पर भ्राजे ॥ हनुमत वहुरि शैलहनि गाजे ॥
शंभु कपिहि वर शूल प्रहारा ॥ सो गहि कीश भंजि महिडारा ४६
पुनि हर कीशहि शक्ति प्रहारी ॥ तासु घात सो भयो दुखारी ॥
इहिविधि शंकर अरु हनुमाना ॥ उद्ध युद्धकर दुहुँ वलवाना ४७॥
जौ लग कपि प्रहार कृत तरु गिरि ॥ भंजत शंभु कीश तौ लग भिरि॥
मर्दत शंकर दलहि कराला ॥ हर सन्मुख पुनि होत उताला ४८
करते लरत शंभु ते वीरा ॥ दल पद पुच्छ दले रणधीरा ॥
इमि किय उद्ध युद्ध वहु कीशा ॥ सगणभये विह्वल गौरीशा ४९॥

प० ॥ रा० ॥ अ० ४४ ॥ श्लोक।

अत्यंतं विह्वलो जातो महेशानः प्रकोपनः ॥
क्षणेक्षणे प्रहारेण कुर्वंत्तं विह्वलं भृशम् ॥ ९ ॥

दोहा–लखि हनुमतकी वुद्धिवर, भये प्रसन्न महेश ॥
कही वीर कपि याचहु, वर जो रुचे सुदेश ॥ ५० ॥

तब कपि भाषी और हौं, कछु न चहौं बरदान ॥
जो प्रसन्न तौ रक्षिये, मम दल सकल महान् ॥ ५१ ॥
वायस गृद्ध शृगाल सुन, भूत प्रेत तब जोय ॥
मम दल घायल मृतक जे, तिनै भखै नहिं कोय ॥ ५२ ॥
हौं द्रोणाचल जायकै, वेगहि भेषज लाय ॥
करिहौं विरुज सजीव सब, रघुवर दल समुदाय ॥ ५३ ॥
चौ०सुनि भाषी शिव जाहु उताला ❀ करिहौं सदल सकल प्रतिपाला॥
तब कपि उछलि व्योम पथ धाये ❀ द्रोण शैल ढिग वेगहि आये५४॥
तहाँ इंद्रसेवक बलवाना ❀ भेषज ग्रहण हेत रण ठाना ॥
तिनहिं पराजय करि हनुमंता ❀ लै औषधि पुनि आय तुरंता ५५
दोहा—पुष्कल शिर धर जोरिकै, हिय धरि जीवन मूर ॥
राम ध्यान करिकै कही, सत्य प्रेम प्रण पूर ॥ ५६ ॥
जौ हौं मन वच कर्म ते, ध्याऊं राम अनन्य ॥
तौ ए होउ सजीव द्रुत, कर भेषज गुण धन्य ॥ ५७ ॥
यौं कहतहि पुष्कल उठे, ह्वै सजीव धनुधारि ॥
वीरभद्र दुरिगो कहाँ, भाषत चहूँ निहारि ॥ ५८ ॥
पुनि रिपुहन ढिग जायकै, धरि औषधि तिन हीय ॥
सियाराम पद सुमिरि कपि, बोले वच रमणीय ॥ ५९ ॥
ब्रह्मचर्य व्रत सत्य मम, जो आजन्म प्रयंत ॥
जिय सचेत तौ होयँगे, याही समय तुरंत ॥ ६० ॥
यों भाषतही शत्रुहन, उठि बैठे सर साजि ॥
इत उत हेरत कहत हैं, गये शंभु कहँ भाजि ॥ ६१ ॥
पुनि हनुमत चहुँ धायकै, भेषज कियो उताल ॥
धाये निरुज सजीव सब, नर निश्चर कपि भाल ॥ ६२ ॥
पुनि शिव दल अरु रामदल, भिरो भयो बहु चोप ॥
अति उद्धत युद्धत सुभट, कटत अटत सह रोष ॥ ६३ ॥

चौ०-ताछिन ह्वै सचेत धनु साजा ❀ धायो सदल वीरमणि राजा ॥
अस्त्र शस्त्र शिव नृप रिपु शाला ❀ हनैं परस्पर विशिख कराला६४
तव ब्रह्मास्त्र वीरमणि घाला ❀ सो विलोकि शत्रुघ्न उताला ॥
अस्त्र योगिनी दत्त विशाला ❀योजित करि शर हनो कराला६५
ब्रह्म अस्त्रको मर्दि सु तीरा ❀ मूर्छित कियो सदल नृप वीरा ॥
ताछिन एक शंभु बिनु जेते ❀ गिरे भूत नरगण सब तेते ॥६६॥
तव लखि पुनि क्रोधित शिव धाये ❀ अस्त्रन मारि वीर बिचलाये ॥
रिपुहन भये कंठगत प्राणा ❀ विह्वल हनुमतादि वलवाना ६७॥

दोहा-ताछिन रिपुहन विकल ह्वै, बोले वचन अधीर ॥
हाय नाथ हा भ्रात मम, पाहि पाहि रघुवीर ॥ ६८ ॥
यौं भापतही वेगि अति, प्रगट भये श्रीराम ॥
यज्ञ साज साजे सकल, श्याम अंग छवि धाम ॥ ६९ ॥
दरशतही रघुचंदके, सबही भये अनंद ॥
त्राहि त्राहि कहि पद गहे, धाय धाय जन वृंद ॥ ७० ॥
शंभु धाय कीनी विनै, कही क्षमिय अपराध ॥
सुनि रघुवर उर लायकै, बोले कृपा अगाध ॥ ७१ ॥
हौं प्रसन्न राखो भलो, भक्तपाल वर धर्म ॥
रंच विलग मानौं नहीं, मम तव हितहै पर्म ॥ ७२ ॥
मम तव भक्त सु एक है, मम तव हित इक आय ॥
पावैं नरक निवास जो, मम तव भेद कराय ॥ ७३ ॥

प० रा० अ० ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥

मया बह्वपकारा यत् कृतं कर्म तव स्फुटम् ॥
क्षम्यतां तत्कृपालो हि भवतोप्यभिधायकम् ॥ १० ॥
इति वाक्यं समाकर्ण्य महेशस्य रघूत्तमः ॥
उवाच धीरया वाचा कृपया पूर्णलोचनः ॥ ११ ॥
ममासि हृदये शर्व भवतो हृदये त्वहम् ॥
आवयोरंतरं नास्ति मूढाः पश्यन्ति दुर्धियः ॥ १२ ॥
ये भेदं विदधात्यद्धा आवयोरेकरूपयोः ॥

कुंभीपाकेषु पच्यन्ते नराः कल्पसहस्रकम् ॥ १३ ॥
ये त्वद्भक्तास्त एवासन्मद्भक्ता धर्मसंयुक्ताः ॥
मद्भक्ता अपि भूयः स्युर्भक्ता स्तव नतिकराः॥१४॥इत्यादि ॥

चौ०इमि दुहुँ राम शंभुआनँदभर ❀ मिले समर महि मध्य परस्पर॥
पुनि रघुवीर उताल सिधाये ❀ सदल नृपहि निज कर परशाये७४
विरुज सजीव वरिमाणि राजा ❀ उठो उताल समेत समाजा ॥
सकुल भूप जोरे युग हाथा ❀ विनय करी प्रभुपद धरि माथा७५
रिपुहन हनुमतादि जे वीरा ❀ सबहि मिले नृप सकुल सु धीरा॥
पुनि नृपराज साज बहु साजी ❀ प्रभुहि समर्पो युत मख वाजी७६
ताछिन रघुवर अंतरध्याना ❀ भये भेद कछु कोउ न जाना ॥
जै जै राम सबै उच्चारा ❀ दुहुँदिशि भयो अनंद अपारा ७७

सो०—सदल वीरमणि भूप, चले शत्रुहन संग मुद ॥
यज्ञ तुरंग अनूप, इमि विचरत इच्छित चहूँ ॥ ७८ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० वि० वीरमणियुद्ध
वर्णनो नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

दोहा—इमि विचरत मख वाजिवर, इक अरण्य मधि आय ॥
पंथ चलत औचकरुपे, भूमि अश्व चहुँ पाय ॥ १ ॥
अचल भयो हारि चलत नहिं, कीनेहुँ कसा प्रहार ॥
पुनि हनुमानादिक सुभट, गहि उठाय रह हार ॥ २ ॥
तहाँ विजन वन माँहि चहुँ, जन धाये अकुलाय ॥
दूरि गहन कानन विषे, शौनक आश्रम पाय ॥ ३ ॥
जाय शत्रुहन शीशनामि, कही सुगति अति दीन ॥
सादर मुनि प्रभु बंधु तें, कथा सुवर्णन कीन ॥ ४ ॥
पुनि बोले हे राजसुत, जहँ हय रुपो पवित्र ॥
तहाँ सविधि होवै कथन, सीताराम चरित्र ॥ ५ ॥
तौ हय पद मोचै तुरत, सुनि रिपुहन शिरनाय ॥
गये तहाँ हनुमत सविधि, कहो राम यश गाय ॥ ६ ॥

छूटे पाय तुरंगके, हरपाने रिपुशाल ॥
गमन कियो मखवाजि ले, कहि जै जै रघुलाल ॥ ७ ॥
इहि विधि विचरत यज्ञ हय, संग सुभट समुदाय ॥
सप्तमास डोलत भये, अवध नगर ते आय ॥ ८ ॥

पद्धरी छंद ।

इक नगर नाम कुंडल विशाल । जहँ सुरथ भूप वर धर्मपाल ॥
नृप प्रजा सर्व तहँ रामभक्त । कोऊ न अन्य देवानुरक्त ॥ ९ ॥
सुनि राम वाजि आगम नृपाल । सादर गहाय बाँधो उताल ॥
मिलि प्रजा भूप सेवक अपार । कीनो सहर्ष यह दृढ विचार १०॥
मिस याहि सबै प्रभु दरश होय । बिन राम वाजि पावै न कोय॥
इमि ठानि भूप चतुरंग सैन । साजी समस्त भट सुबल ऐन ११॥

दोवई छंद ।

चंपक १ मोहक २ सुभट रिपुंजय ३ अरु दुर्वार ४ प्रतापी ५ ॥
वल मोदक ६ हर्यक्ष ७ और सहदेव ८ शत्रु संतापी ॥
भूरिदेव ९ गुणमंत सुतापन १० ये दशवीर विशाला ॥
सुरथ वीरके पुत्र धनुर्धर रण कोविद रिपुशाला ॥ १२ ॥

पद्धरी छंद ।

नृपराज पुत्र अरु भट अपार । दृढ़ कवच शस्त्र वर विविध धार॥
इत राम बंधु करिकै विचार । भेजो सु दूत वालीकुमार ॥ १३ ॥
अंगद उताल नृप सुरथ पास । आये विलोकि छायो हुलास ॥
सब तिलक भाल गल माल राज।तुलसी सुपत्र शिर मध्य भ्राज१४॥
सादर बिठाय बूझी नरेश । तब वालिपुत्र बोले सुदेश ॥
त्यागिय नृपाल वर मख तुरंग । सोहै न दासरण ईश संग ॥ १५॥
पुनि वृद्ध भूप कीजे न युद्ध । हैं तरुण वीर रिपुदमन उद्ध ॥
तिमि पुष्कलादि भट अमित धीर।जिन हेरि सेन तवहो अधीर१६॥
तव सुरथ भूप भाषे सु बैन । श्रीराम रूपानिधि कमल नैन ॥
जौलौं सु आप इत आय हैं न। तौलौं सुछोड़ हय पाय हैं न ॥१७॥
अरु ईश दासको रण अयोग । ताकी सुरीति कह वीर लोग ॥

प्रभु ते सु युद्ध किहु उचित नाहिं। संयुग अदोप सेवकन माहिं१८॥
पुनि वैस नेम नहिं वीर केर । कीनो विचार बहु ठौर हेर ॥
सो यवा वृद्ध दुहुँ बल प्रशस्त । रण मध्य हेरि लीजो समस्त॥१९॥
तव सैन माहँ भट जे सगर्व । ह्वै हैं निबंधते सपदि सर्व ॥
हौं राम भक्त जानौं न आन । द्रुत कहौ शत्रुहन ठनहिं ठान ॥२०॥
सुनि सुरथ बैन अंगद उताल । रिपुहनहिं आय भाषो सुहाल ॥
तव रामबंधु वहु क्रोध छाय । ध्रुव होय युद्ध दीनी रजाय ॥ २१ ॥
सुनिसकल वीर इत साजि साजि । शत्रुहन जैति कह गाजि गाजि ॥
उत राम जैति वर कीन शोर । धायो नृपाल दल प्रबल जोर ॥२२॥
भिरि गये दोउ दल परम चंड । दुहुँ ओर राम सेवक उदंड ॥
भो द्वंद्व युद्ध तिहि समय भूर । दशहूँ दिशान मध बाण पूर ॥ २३ ॥

दोहा—चंपक अरुपुष्कल भिरे, मोहक मिथिलानाथ ॥
विमल रिपुंजय वीरमणि, भूरिदेवके साथ ॥ २४ ॥
है दुर्वार सुबाहुते, सत्यवान सहदेव ॥
प्रतापाग्र नृप युद्ध कर, संग प्रतापी एव ॥ २५ ॥
नीलरतन हर यक्ष अरु, अंगद सह बल मोद ॥
असुतापन उग्राश्व इमि, भिरे भरे रण मोद ॥ २६ ॥
अपर वीर दुहुँ ओरके, इहि विधि लरत अपार ॥
अस्त्र शस्त्र वर्षत विपुल, छायो हाहाकार ॥ २७ ॥

पद्धरी छंद ।

चंपकहि कीन पुष्कल विहाल । हनि अस्त्र शस्त्र अगणित कराल॥
तव राजपुत्र रामास्त्र घाल । लिय भरत सुवनको बाँधि हाल॥ २८ ॥
तब हनूमान धाये तुरंत । किय तासु संग संयुग अनंत ॥
नृप पुत्र पवनपुत्रहि उठाय । गहि पुच्छ भूमि डारो भमाय ॥ २९ ॥
पुनि सँभरि वीर पद पकरि तासु । फेंको फिराय बहु दूरि आसु ॥
मूर्छित विहाल भो नृपति बाल । हनुमंत पुष्कलहि छोर हाल ३० ॥
निज्ज विलोकि सुत मुख्य वीर । कीशहि प्रहार किय विपुल तीर ॥
हनुमंत धाय तब तासु चाप । गहि कीन भंग भरि कोहदाप ॥३१॥

पुनि धनुप आन लै नृपति मंड । कोदंड सोउ किय खंड खंड ॥
इमि असी चाप भंजे सुवीर । तव सुरथवीर अति है अधीर ॥३२॥
गरु चंड शक्ति कीनी प्रहार । हनुमंत ताहु धरि भंजि डार ॥
पुनि कीश तासु स्यंदन उछाल । तब भूप कोपि दृढ़ परिघशाल ३३॥
चौ० ताछिन तासु सूतरथ स्यंदन ❀ गहि पछारि महि कीन निकंदन॥
पुनि रथ आन बैठि नृप धावा ❀ सोऊ हनुमत वेगि नशावा ३४॥
इहि विधि एकऊन पंचाशा ❀ वीर सुरथ रथ करे विनाशा ॥
अस्त्र पाशुपति तव नृप घाला ❀ तासु घात कछु भये विहाला ३५॥
है सचेत धाये वरियारा ❀ तव नृप ब्रह्मअस्त्र पुनि मारा ॥
तऊ न नेक मुरे हनुमाना ❀ सुरथ महीप अतिहि अकुलाना ३६
तव रामास्त्र कपिहि नृप घाला ❀ गिरे भूमि हनुमंत उताला ॥
सुरथ कपिहि दृढ बंधन कीना ❀ गहिपुर गमन हेत चित दीना ३७॥

दोहा—तव बोले हनुमंत कपि, अहो सुरथ नृप धीर ॥
अपर अस्त्रते बांधते, तब हे सत्य सुवीर ॥ ३८ ॥
ताछिन कपिहि निबंध लखि, धाये पुष्कल वीर ॥
हने परस्पर दोउ दुहुँ, विविध विषम खरतीर ॥ ३९ ॥

तोमर छंद।

तव नृपति वहु अकुलाय । धनु चंड वाण चढाय ॥
पुष्कल हिये महँ शाल । भे तासु घात विहाल ॥ ४० ॥
भूमधि गिरे मुरझाय । रिपुदमन लखि दुख छाय ॥
पुनि समय सम धरि धीर । करि कोप धाय सुवीर ॥ ४१ ॥
भूपहि हने वहु वान । छिंदे सु वीर महान ॥
तव शत्रुहन रिस धार । वहु अस्त्र कीन प्रहार ॥ ४२ ॥
ते भये निर्फल सर्व । तव कही नृपति सगर्व ॥
प्रभु दास सत्यजु आहि । तिन पे न मंत्र चलाहि ॥ ४३ ॥
यों कहि सुरथ वलवान । रिपुदनहि हन इक वान ॥
तिहि लगतही रथ माहि । गिरि परे कछु सुधि नाहि ॥ ४४ ॥
पुनि भूप वाणन मारि । दिय अपर भट महि डारि ॥

तिहि समय रिपुहन सैन । चहुँ भजत धीर धरै न ॥ ४५ ॥
लखि कटक गति कपिराय । गरुशैल कर धरि धाय ॥
कीनो सकोप प्रहार । दीनों सुभूप विदार ॥ ४६ ॥
पुनि विपुल तरु गिरि वीर । घाले सु सब नृपधीर ॥
बाणन विभंजि बहाय । कपितन दिये शर छाय ॥ ४७ ॥
सुग्रीव धाय उताल । नख दशन तिहि तनु शाल ॥
तब सुरथ अस्त्र प्रहारि । कपिपतिहि दिय महि डारि ॥ ४८ ॥
तिहि समय प्रभु दल माहिं । कोऊ सुभट इमि नाहिं ॥
जिहि नृपन बंधन कीन । तव विजय दुन्दुभि दीन ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न आदिक वीर । मुर्च्छित सबै रणधीर ॥
कछु पवनपुत्रहि चेत । अरु समस्त अचेत ॥ ५० ॥
सो विवश कपि रणधीर । वर अस्त्र बद्ध सु वीर ॥
नृप सबहि रथ मधि घाल । आयो सु धाम निहाल ॥ ५१ ॥
बैठो सभा हुलसाय । हनुमतहि लै तिहि ठाय ॥
भाषी तबै नृप धीर । अब सुमिरहू रघुवीर ॥ ५२ ॥
श्रीराम आपहि आय । जौलौं न देइँ छुडाय ॥
तौलौं न कोटिन वर्ष । छूटै न अस्त्र प्रकर्ष ॥ ५३ ॥
तब सबहि निरखि अधीन । दृग नीर भरि अति दीन ॥
श्रीरामपद हिय लाय । हनुमंत कह अकुलाय ॥ ५४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सीतानाथ सुभग दयाल भक्तपाल वीर दासहों तिहारो या प्रचंड फास तोरिये ॥ रसिकविहारी दीन दुखित घनेरो त्राहि त्राहि त्राहि वेगि अब समय वहोरिये ॥ रावरोहि एक अवलंब है कदंब सत्य मेरे दोप देखिकै कबौं ना मुख मोरिये ॥ आपनी वडाई जानि कीजिये कृपालु कृपा पाहि पाहि पाहि मोहिं बंधनते छोरिये ५५

नीको हौं बुरो हौं सांचो झूठो हौं खरो हौं खोटो कैसहू हौं तोऊ सब भाषें रामदास है ॥ रसिकविहारी मन वच अरु कर्म गति नाथहि प्रसिद्ध सदा हृदय निवास है ॥ भेषज उपाय यंत्र मंत्र तंत्र देवी देव काहूको न मानौं एक रावरीही आश है ॥ मोको वेगि दुसह कलेशतें छुटावो राम यामें नत होत आपहीको उपहास है ॥ ५६ ॥

दोहा—इमि ध्याये हनुमंत तब, ताही छिन श्रीराम ॥
अति उताल दीनो दरश, करुणानिधि छबिधाम ॥ ५७ ॥
शोभित पुष्पकयान मधि, भरत लषण मुनि संग ॥
दूरहिते लखि कपि कही, भूपहि सहित उमंग ॥ ५८ ॥

सो०—देख नृपति मम नाथ, विनय सुनत आये सपदि ॥
भक्तपाल जिहि गाथ, सो विलंब किमि लावहीं ॥ ५९ ॥

चौ०यौं कहतहि कौशलपुर राजा ❀ आये द्रुत लखि सहित समाजा॥
धाय सुरथ रघुवर पद परसे ❀ जल आनंद नैन दुहुँ वरसे॥६०॥
राम कही वहु भाँति सराही ❀ क्षत्री वीर धर्म यह आही ॥
सुनि नृप विनय करी कर जोरी ❀ पूजी नाथ सकल रुचि मोरी६१॥
तब रघुवर सब वीर छुटाये ❀ दुहुँ दलके भट मृतक जिवाये॥
उठि रिपुहन भेंटे मुद भ्राता ❀ गहे कीश प्रभु पद जलजाता६२॥
अपर समस्त प्रभुहि शिरनाये ❀ प्रजा नारि नर दरश अवाये॥
तीन दिवस तहँ श्रीरघुराजा ❀ रहे भक्तवश सहित समाजा६३॥

दोहा—पुनि रघुवर मुनि वन्धु युत, बैठि सु पुष्पविमान ॥
गये मुदित नृप सुरथको, वहु विधि करि सनमान ॥६४॥
कोउ न जानत भेद कछु, कहा करत रघुवीर ॥
यज्ञ करत उत नित इतै, हरत भक्तकी पीर ॥ ६५ ॥
रसिकविहारी दुख सब, मिटे भयो सुखभूरि ॥
दुहूँ ओर आनंद है, चहुँ जै जै धुनि पूरि ॥ ६६ ॥
सुरथ चंपकहि थापि पुर, भये सदल हय साथ ॥
राम वन्धु गमने सुखी, कहि जै जै रघुनाथ ॥ ६७ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० सुरथयुद्धवर्णनो नाम दशमो विभागः ॥ १० ॥

दोहा—श्रीरघुवर मख वाजिवर, विचरत बहु दल साथ ॥
वाल्मीकि आश्रम तहाँ, आयो सुरसरिपाथ ॥ १ ॥
परमरम्य वन हेरिकै, डोलत चहुँ निशंक ॥
अशन करत तृण पियत जल, हिंसत हंक उतंक ॥ २ ॥
मुनि कुटीनते ठौर सो, योजन एक प्रमान ॥
तहँ मृगयाहित आवहीं, सिय सुत सजि धनु बान ॥ ३ ॥
तादिन लव आये तहां, कुश विन आप अकेल ॥
वन विचरत मुनि सुतन युत, करत मुदित बहु खेल ॥ ४ ॥
सो लव वरवाजी निरखि, वांचि तासु शिर पत्र ॥
गहि बांधो तरुते तहाँ, कही न भूमि निक्षत्र ॥ ५ ॥
प्रबल होत भवितव्य गति, कोउ न जानत भेद ॥
औचक प्रगटै बुद्धि जिहि, होवै खेद अखेद ॥ ६ ॥
वाल्मीकि षट कांड जो, सिय सुत करत सु गान ॥
सो तिन हिय भो भ्रम इतो, को हैं राम न जान ॥ ७ ॥
त्यौंहीं मति मुनि सुतनकी, ताछिन गई भुराय ॥
कही न कोऊ वाजि यह, तब पित मखको आय ॥ ८ ॥
ताछिन मुनि बालक लवहि, इमि भाषी समुझाय ॥
वर्ष पंचदश ते अधिक, निज मधि कोउ न आय ॥ ९ ॥
तजौ वाजि ह्याँते चलौ, करिय वाल कहँ युद्ध ॥
है हैं संग तुरंगके, रक्षक जन भट उद्ध ॥ १० ॥
पुनि मुनि शिष्यनको समर, उचित कहै नहिं कोय ॥
ताहू पै नृप दल अमित, तुम इक ते कह होय ॥ ११ ॥
तब लव भाषी हे सखा, तुम सब हौ द्विजबाल ॥
भोजन भिक्षा पढ़न तजि, और न जानौ हाल ॥ १२ ॥
क्षुधित तृषित ह्वै हौ अतिहि, जावो गेह पराय ॥
इत अबहीं ह्वै है समर, लखि तुव चित्त भ्रमाय ॥ १३ ॥
कही मित्र तुम सत्य यह, हैं अबहीं हम बाल ॥
पै क्षत्रीसुत शुद्ध सो, वीरनके उरशाल ॥ १४ ॥
रामहि इमि अभिमान है, जानत भूमि निक्षत्र ॥
बाँधो वैन उतंक लिखि, मख तुरंग शिर पत्र ॥ १५ ॥

कितहूँ वीर सु आजलों, मिलो न ह्वैहै कोय ॥
जानि परैगी सबहि अब, क्षत्रिय बल इमि होय ॥ १६ ॥
ताछिन हय सेवक तहां, आये वीर विशाल ॥
तिनहिं दूरहीते निरखि, भाजि दुरे द्विजबाल ॥ १७ ॥
लव अकेल सजि बाण धनु, रहे बाजिके पास ॥
सो बंधित लखि बाल ढिग, किय सेवक गण हास ॥ १८ ॥
ते सेवक लखिकै सपदि, छोरन लगे तुरंग ॥
लव बरजे माने न फिर, कीने नैन सुरंग ॥ १९ ॥
तव सीतासुत कोपिकै, सपदि धाय बहु डाट ॥
तिन सब हय सेवकनके, भुज डारे महि काट ॥ २० ॥
भजे विकल तहँते सकल, आये रिपुहन पास ॥
कही सबै गति बिलपिकै, ह्वै हिय निपट हिरास ॥ २१ ॥
शत्रुशमन सुनि चकित ह्वै, कहे विचारि सु बैन ॥
विष्णु होय कै शंभु ध्रुव, सो नर बालक हैन ॥ २२ ॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ६० ॥ श्लोक ।

नायं बालो हरिर्नूनं भविष्यति हयं धरः ॥
अथवा त्रिपुरारिः स्यान्नान्यथा मद्धयापहृत् ॥ १ ॥

दोहा—पै हरि हर हो कोउ सो, कहा विजय लै जाय ॥
श्रीरघुवर ते काहुको, छल बल कछु न चलाय ॥ २३ ॥
यों कहि पुनि रिपुदमन द्रुत, सेनापतिहि बुलाय ॥
दई रजायसु युद्ध करि, लावो बाजि छुटाय ॥ २४ ॥
सो०—कालजीत जिहि नाम, सकल सेनपति वीर वर ॥
लै बहु भट बलधाम, चलो साजि चतुरंग दल ॥ २५ ॥

भुजंगप्रपात छंद ।

चमूनाथ लै सैन आयो तहांई । अकेले सियापुत्र ठाढे जहांई ॥
कही सो तबै छोरि दे बाजि बाला। करै क्यों वृथा आपनी मृत्यु हाला २६
सिया सूनु भाषी तबै रे अयाना। जहांकाल तेरो सु क्यों बाल जाना ॥
कछू वीरता होय बेगै दिखावै । न तो सैनलै फेर पाछै सिधावै ॥ २७ ॥
तबै फेर सेनापती यों बखानी । लखौं राम सो रूप, दाया सुठानी ॥
भली है अजों छोडि दे यज्ञ बाजी। न तौ बाँधि ह्वा नोहि तौ होयराजी २८

तोटक छंद ।

सुनिकै लव वेगहि बाण सजे । धनुतान सँधान सकोप तजे ॥
छिनमें बहु सैन विदारि दई । वर वीरनकी मति हार गई ॥ २९
सजि सायक चाप अनीप घने । करि कोप महाबल अंग हने ॥
नृपराज सबै शर भंजि दिये । बहुरौ तिहि प्राण विहाल किये३०
पुनि स्यंदन खंडि चमूपतिको।किय हाल विहाल कहे गतिको ॥
तब सो द्रुत भीम गयंद चढ़ो । कर धारि गदा बहु कोप मढ़ो३१

तोमर छंद ।

सो गदा कीन प्रहार । लव भंजि तिहि दिय डार ॥
मारो परिघ पुनि चंड । किय सोउ नृप सुत खंड ॥ ३२ ॥
बहुरौ सु लै करवाल । गज शुंड काटि उताल ॥
तिहि दंभ पद धरि वीर । करि शीश चढि रणधीर ॥ ३३ ॥
कीनो मुकुट तिहि छिंदि । पुनि कवच वेगहि भिंदि ॥
दलपतिहि कच कर धार । डारो सु भूमि मझार ॥ ३४॥
तब कालजित अति पुष्ट । मारो लवहि दृढ मुष्ट ॥
पुनि लै कृपाण कराल । तानो सुहस्त उताल ॥३५॥
सो सपदि हनि शर चंड । सह खड्ग भुज किय खंड ॥
तब कोपिकै दलनाथ । लिय गदा वामहि हाथ ॥ ३६ ॥
सोऊ भुजा लव वीर । दिय छिंद हनि खर तीर ॥
तब कालजित वरियार । किय कोपि चरण प्रहार ॥ ३७ ॥
लव पगहु खंडित कीन । सो गिरत शिर हनि दीन ॥
तिहि वीरता लखि वीर । जिय कहत वीर सु वीर ॥ ३८ ॥
पुनि लै कृपाण प्रचंड । लव तासु शिर किय खंड ॥
फिरि विशिषबाणन मारि । दिय सकल सैन विडारि ॥ ३९ ॥
दोहा—लव लाघवता अकथ यह, लरत चमूपति संग ॥
आवत अमित हथ्यार ते, करत तिनहुँको भंग ॥ ४० ॥
लखि यह गति सब थकित ह्वै, पुनि दलपतिको घात ॥
विजय आश तजिकै सुभट, भगे विकल बिललात ॥ ४१ ॥
कही जाय रिपुदमन ते, रण गति सकल अधीर ॥
कालजीत दलपालको, वध कीनो शिशुवीर ॥ ४२ ॥

शत्रुशमन सुनि चकित ह्वै, कीनो शोक अपार ॥
पुनि धरि धीरज पुष्कलहि, कही समेत विचार ॥ ४३ ॥
वीर जाहु भट सैन लै, गहि लावो सो बाल ॥
भरतपुत्र सुनिकै सकल, साजो साज उताल ॥ ४४ ॥
ख० गगन०नभ० महि१ ग्रह९निगम४, स्यंदन इते सुढंग॥
हय गज पद चर अपर बहु, दल चतुरंग अभंग ॥ ४५ ॥
इमि सजिकै धाये सकल, सिया सुताहिं लखि वीर ॥
घेरि शस्त्र वर्षन लगे, शक्ति शूल असि तीर ॥ ४६ ॥

दोवई छंद ।

राज पुत्र तिन मध्य अकेले पद मंडल दै युद्धे ॥
खंड खंड करि चंड वीरते बाणन प्राण निरुद्धे ॥
गज तुरंग स्यंदन अरु पदचर लव निशंक बहु भंजे ॥
भये अधीर भरत तजि भागे सकल सुभट मद गंजे ॥ ४७ ॥
तौ लग पुष्कल आय वेगही सैन दशा अवलोकी ॥
फिरौ फिरौ कहि टेर धीर दै भगत अनी सब रोकी ॥
बचे वीर ते अपर भूरियुत भरत पुत्र द्रुत धाये ॥
सकल सुभट मिलि राम पुत्र पै अमित शस्त्र बरसाये ॥ ४८ ॥
लव ते सर्व हथ्यार शरनते छिंदि भूमि मधि डारे ॥
पुनि धनु तान बाण अगणित हनि विकल किये भट सारे ॥
तब पुष्कल बहु विशिख तीरते राजपुत्र तनुशाला ॥
सो फिरि सूत बाजि स्यंदन दलि वीरहि कियो विहाला ॥ ४९॥
गिरे भूमि पुष्कल तब हनुमत लवहि वृक्ष लै मारा ॥
सियसुत सपदि छिंदि बाणन ते सो तरु भूमि पँवारा ॥
पुनि करि क्रोध शैल पाहन द्रुत कीश अनेक प्रहारे ॥
सोऊ सकल वीर तीरनतें भंजि महीतलडारे ॥ ५० ॥
पुनि हनुमंत लपेटि पुच्छ मधि चाहो सपदि उछाला ॥
लव अकुलाय उताल मुष्ट हनि कपि लंगूरहि शाला ॥
तासु घात ह्वै विकल वीर तिन छोड दये ततकाला ॥
वेगि सीयसुत दलि बाणन ते कीशहि कियो बिहाला ॥ ५१ ॥

पुनि मुनि गण विन इहि विपिन,और न कोउ रहाहिं॥७७॥
सो सब गये अवंतिका, मुनि गण कुशहू साथ ॥
हाय करौं मैं काह अब, या छिन निपट अनाथ ॥ ७८ ॥
इमि अति विलपतही सिया, ताही छिन कुशवीर ॥
आये औचक मातु गति, निरखत भये अधीर ॥ ७९ ॥
त्रिकालज्ञ मुनि चरित सब, जानत परम सुजान ॥
भेद न प्रगटो रंचहू, मानों निपट अयान ॥ ८० ॥
मातहि शिर नमि जोरि कर, तब कुश बूझो हाल ॥
निज दुख भाषो जानकी, विलपत सकल उताल ॥ ८१ ॥

चौ०-सुनि कुश हीय भयो अतिक्रोधा॥मातहि करि बहु भाँति प्रबोधा
साजो द्रुत अभंग तनु त्राणा ❀ चर्म कृपाण शक्ति धनुबाणा८२ ॥
गवने मातु चरण धरि शीशा ❀ सीय दई जय सिद्धि अशीशा ॥
कुश धाये करि क्रोध अपारा ❀दूरहि ते लखि सबहि प्रचारा८३॥
रिपुहन आदि कुशहि जब देखा ❀ छायो हिय आश्चर्य विशेषा ॥
कहत वाल यह मायाकारी ❀ पुनि आयो दूजो तनुधारी ॥ ८४ ॥

दोहा–इक तनुते इत विवश ह्वै, परो सबहि भरमाय ॥
दूजो वपु धरि औचके, आयो अंग सजाय ॥ ८५ ॥
वय वपु शोभा साज सब, दोऊ एक समान ॥
ध्रुव यह सुरमाया कछू, भेद परत नहिं जान ॥ ८६ ॥
कहत परस्पर चकित इमि, सजग भये सब कोय ॥
ताक्षण लव मुर्च्छा जगी, अति अलक्ष चहुँ जोय ॥ ८७ ॥
भ्रातहि आवत देखिकै, भयो महाआनंद ॥
तौ लग कुश पहुँचे सपदि, कियो शोर जनवृंद ॥ ८८ ॥
ताक्षण तुर धनुवाण गहि, रथते उछलि उताल ॥
परे भ्रात ढिग वीर लव, सजग भये तत्काल ॥ ८९ ॥

चारी छंद ।

अति मुदित दुहुँ बलवंत सिय सुत सपदि चाप चढ़ाय ॥
चहुँ धाय धाय कराल वाणन बाल दल दिय छाय ॥
तब सकल वीर सुधीर गहि गहि शस्त्र अगणित उद्द ॥
रिपुशाल आदि विशाल भट बहु करन लागे युद्ध॥ ९० ॥

वर सुभट वनचर भालु मानुप यातुधान अपार ॥
तरु कुधर पाहन शक्ति शर असि परिघ शूल प्रहार ॥
दुहुँ वीर ते बहु तीर हनि हनि करत सबही चूर ॥
पुनि मारिकै सु प्रचंड बाणन सकल गातहि पूर ॥ ९१ ॥
तब कोपि रिपुहन वीर तीरन छाय दिय दुहुँ वीर ॥
रणधीर सियसुत तदपि भे तिहि समय कछुक अधीर ॥
कुश अग्नि अस्त्र प्रहार सो लखि वरुणते किय खंड ॥
वायव्य छोडो ताहि पर्वत घालकै चहुँ मंड ॥ ९२ ॥
वर वज्र ते गिरि चूर किय तब कुश महारिस लाय ॥
नारायणास्त्र प्रहार सो रिपुहनहि कछु न जनाय ॥
लखि सीयसुत अरि शाल ते भापी अहो नृप वीर ॥
अब तुमहिं डारत भूमि हौं सब भाँति होउ सधीर ॥ ९३ ॥
यों कहि प्रहारे तीन शर सो लगतही रिपुशाल ॥
बहु व्यथित है अकुलाय मूर्छित गिरे भूमि बिहाल ॥
तिहि समय हाहाकार भो धाये समस्त नृपाल ॥
तिन सबहि दोऊ बंधु बाणन वेधि डारे हाल ॥ ९४ ॥
सो गति विलोकि समीर सुत तरु कुधर अमित प्रहार ॥
तीरन विदारे सकल ते दुहुँ वीर राजकुमार ॥
पुनि कीश बहु द्रुम शैल पाहन घाल चहुँ दिशि छाय ॥
अकुलायकै सिय पुत्र कुश तब अतिहि कोप बढ़ाय ॥ ९५ ॥
संहार अस्त्र प्रहार कीनो तबहि पवनकुमार ॥
कहि राम राम अचेत मूर्छित गिरे धरणिमझार ॥
पुनि कोपिकै लव कुश दुहूँ बहु चंड बाणन मारि ॥
दल सकल किय विध्वंस भागे सुभट हाय पुकारि ॥ ९६ ॥
सो हेरिकै कपिनाथ धाये शैल तरु गिरि खंड ॥
दुहुँ बंधु पर बरषाय छाये कीन क्रोध प्रचंड ॥
ते सकल राजकुमार बाणन भंजि डारे भूमि ॥
सुग्रीव तब लंगूर घालो भूरि बल युत झूमि ॥ ९७ ॥
कुशवीर कपिपति अंगमें वेधे अनेकन तीर ॥
तोऊ सुकंठन न फिरत फिरि फिरि भिरन भट रणधीर ॥

सादर सहित उमंग, रहे मुदित मख दरशहित ॥ ३ ॥
लव कुश दोऊ वीर, जिन ठानों बहु युद्धवर ॥
पट कपाय द्रुम चीर, ते धारण कीने सुभग ॥ ४ ॥
चौ०-जाक्षण समर करो दुहुँ बाला ❋ ताक्षण औरहि छटा विशाला ॥
अब सुवेप मुनि शिष्य प्रमाना ❋ इनहिं कियो रण कोउ न जाना ५
वाल्मीकि हियकी हिय राखी ❋ राम पुत्र ये काहु न भाषी ॥
सन्निधि ऋपि जेते गति ज्ञाता । लखि मुनि रुचि किय कोउ न ख्याता
जब सीता मखवाजि छटायो ❋ सुनत तबै सब कहि समुझायो ॥
सो लव कुश जानैं यह बाता ❋ राम अवधपति हैं मम ताता ७॥
पै दोऊ गुरु आज्ञाकारी ❋ याते निज मुख कछु न उचारी॥
सदा रहैं मुनि शीश प्रमाना ❋ तिहि तजि काज करैं नहिं आना८
सो कुश लव तापसके भेपा ❋ शोभित नख शिख अंग सुदेशा ॥
गुरुकृत रामायण नित गावैं ❋ परम रम्य वर वीण बजावैं ॥९॥
राग रागिनी समय समाना ❋ शुद्धवर्ण स्वर ताल प्रमाना ॥
लय विश्राम सु भेद समेता ❋ गान करैं सह वाद्य सचेता॥१०॥
तिन लखि सब जन अति हरपावैं ❋ मुनि द्विज नृप निज निकट बुलावैं
सादर बारहिं बार गवावैं ❋ रामायण सुनि अचरज लावैं ११
सुनि रघुवर दुहुँ वेगि बुलाये ❋ गुणी समाज जोरि बैठाये ॥
तिन बिच रामायण तिन गाई ❋ सुनत सकल हिय विस्मय छाई १२
अति प्रसन्न है राम प्रवीना ❋ वसु दशसहस १८०००स्वर्ण तिन दीना
तब भाषी दुहुँ रघुवर पाहीं ❋ हम मुनि शिष्य लेत धन नाहीं १३॥
पुनि इमि भाषी राम नृपाला ❋ हम सुनिहैं सब ग्रंथ रसाला ॥
तव लै गुरु आज्ञा नित आई ❋ बहु दिन लग रामायण गाई १४
इहि विधि नित अनंद अधिकाना ❋ पूरण यज्ञ समै नागिचाना ॥
तव रघुवर निज हीय विचारी ❋ अब इत सिय आगम शुभकारी १५
पुनि मुहिं वाल्मीकि मुनिराई ❋ सिय अंगीकृत हित समुझाई ॥
याते जाय लपण लै आवैं ❋ यज्ञ दरश सीताहू पावैं ॥ १६ ॥
यों गुणि बंधुहि दई रजाई ❋ ऋपि आश्रम ते सीतहि लाई ॥
राख्यौ वाल्मीकि मुनि पासा ❋ सुनत लपण हिय भयो हुलासा १७
दोहा-वाल्मीकि मुनिके जु हैं, शिष्य महोदय नाम ॥

तिन युत रथ लैकै लपण, वेगि गये तिहि ठाम ॥१८॥
प्रभु आज्ञा कहि शीश नमि, लाये अति समुझाय ॥
वाल्मीकि ढिग सीयको, राखी राज रजाय ॥ १९ ॥

प्र० रा० ॥ अ० ६६ ॥ श्लोक ॥

इत्युक्त्वा लक्ष्मणो रामं रथे स्थित्वा नृपाज्ञया ॥
सुमित्रमुनिशिष्याभ्यां युतोगाद्भूमिजाश्रमम् ॥१॥ इत्यादि ॥

दोहा—जादिन मख पूरण हुतो, तादिन आई सीय ॥
सुनि अतिही आनँद भयो, पुर परिजनके हीय ॥ २० ॥
सो मखपूरण दिवस प्रभु, गुरु मुनि आयसु पाय ॥
दिये दान बहु सहित विधि, श्रद्धा भक्ति दृढ़ाय ॥ २१ ॥

दोवई छंद ।

पुनि जेते नृप अरु नृपरानी नरपति पुत्र समाजा ॥
नृपति पुत्र नारी ये सवही सहित उचित रघुराजा ॥
ह्वै पुनीत इकठौर भये तब गुरु वासिष्ट मुनि वृंदा ॥
लै शुचि जल समस्त अभिषेके बाढ़ो हृदय अनंदा ॥ २२ ॥
पुनि अगस्त्य मुनि खड्ग मंत्रि कै सविधि राम कर दीना ॥
सो लै वाजि पीठ प्रभुधारा दिव्यरूप तिहि लीना ॥
तजि पशुगात देव वपु ह्वै कै वैठि विमान सिधारा ॥
सुर नर मुनि अवलोकि तासु गति कियो म जैजैकारा ॥ २३ ॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ६७ ॥ श्लोक ।

करवाले धृते पृष्ठे रामेण स ह यः कृतौ ॥
पशुत्वं तु विहायाशु दिव्यरूपमविंदत ॥ २ ॥
विमानवरमारुह्य अप्सरोभिः समंततः ॥
चामरैर्वीज्यमानश्च वैजयंत्या विभूषितः ॥ ३ ॥
गतोसौ शाश्वतस्थानं रामपादप्रसादतः ॥
पुनरावृत्तिरहितं शोकमोहविवर्जितम् ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद ।

बहुरि देव सब सविधि तृप्त करि पूरण आहुति दीनी ।
अपर क्रिया मख अंत उचित सो सकल यथारथ कीनी ॥
अश्वमेध वर यज्ञ समापत भयो सुदित सब कोई ॥
नृत्य गान सन्मान दान बहु चहुँ जँज ध्वनि होई ॥२४॥

दोहा—पुनि गुरु मंत्री राम मिलि, कियो विचार दृढाय ॥
सबहि बिदा अब दीजिये, भयो वर्ष इत आय ॥ २५ ॥
चौ०-तब रघुबर जन निकट बुलाये ❀ सबहि यथोचित काज दृढाये ॥
भूपनके सतकारन हेता ❀ थपे अनुज तिहुँ परमसचेता ॥२६॥
द्विजगण आदर अर्थ महीशा ❀ दै शिख राखे निपुण कपीशा ॥
मुनि जन मानन काज कृपाला ❀ आरोपित किय लंकनृपाला ॥२७॥
अपर जनन परतोषन हेता ❀ राखे सेवक सखा सचेता ॥
तियन विदा रनिवास मझारा ❀ इमि प्रबंध रघुवर किय सारा ॥२८॥

दोवई छंद ।

इहि विधि विदा प्रबंध ठानि पुनि राघव हृदय विचारी ॥
ऋषि आश्रमते आये सीतहि बीत गये दिन चारी ॥
लषणहि पठै बोलि लीनी मैं पुनि मुनि पासहि राखी ॥
ऐसे समय शपथ होवे तो भली भूरिजन साखी ॥ २९ ॥
दोहा—यों विचारि श्रीराम तव, सभामध्य द्रुत आय ॥
दूतन प्रति आज्ञा दई, ताक्षण सबहि सुनाय ॥ ३० ॥
वाल्मीकि मुनिनाथको, मम दिशिते शिरनाय ॥
विनय करो सिय प्रात निज, शपथ देय नित आय ॥ ३१॥
तब चर मुनि ढिग जायकै, कही कही जिमि राम ॥
भाषी ऋषि आशीषदे, पुजे राज मन काम ॥ ३२ ॥
चौ०—भयो शोर चहुँ ओर सु भारी ❀ जुरे प्रभात अमित नर नारी॥
नित्य नेम करि श्रीरघुराई ❀ शोभित भये सभा मधि आई ३३ ॥
ताक्षण वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ आये लै सिय कुश लव साथा ॥
उठे राम नमि सहित समाजा ❀ आशिष दीन मुदित ऋषिराजा ३४॥
नख शिख अंग सु वस्त्र दुराये ❀ कर जोरे लज्जित शिरनाये ॥
वाल्मीकि पाछे सिय ठाढी ❀ शोक विरह व्रीडागिनि बाढी ॥३५॥
दोऊ नृपसुत मुनि पट धारी ❀ खरे मातु युत सभा मझारी ॥
त्यों सिय वसन कषाय निहारी ❀ भये सकल नर नारि दुखारी ३६॥

तव मुनि कही सुनौ रघुनाथा ❀ अति पुनीत सिययुत तवगाथा ॥
सीय समान पतिव्रत नारी ❀ नहिं तिहुँ लोक धर्मधुरधारी ॥३७॥
हम बहु नेम धर्म व्रत लीना ❀ विपुल सहस्र वर्ष तप कीना ॥
ते मम सब निरफल ह्वै जाहीं ❀ जो कछु दोष होय सिय माहीं ३८॥
ये कुश लव दुहुँ शिष्य हमारे ❀ हैं रघुवीर सुपुत्र तिहारे ॥
यों कहि सत प्रतीति मुनि दीनी ❀ सुतन सहित सिय सन्मुख कीनी ३९
तव करजोरि मुनिहिं शिरनाई ❀ सत्य वचन बोले रघुराई ॥
परम प्रमाण वाक्य तव नाथा ❀ प्रभु शिख हौं धारि लई सुमाथा ४०
पुनि बोले प्रभु मुनिहि विनीता ❀ हों जानों सिय परम पुनीता ॥
पै पुरजन कछु अनुचित भाषी ❀ तब कछु दिन प्रभु आश्रम राखी ४१॥
हैं मम पुत्र दुहूँ मैं जानो ❀ पूत मैथिली सत्य बखानो ॥
तात्क्षण सुर नर मुनि चहुँ ओरा ❀ कही शुद्ध सीता करि शोरा ४२॥
तिहि औसर पिय हिय गति जानी ❀ सिय निशंक ह्वै त्याग गलानी॥
हाथजोर पतिपद उर आनी ❀ महि टकलाय कही बखानी ४३ ॥

दोहा–जो अनन्य मन कर्म वच, सदा भजे रघुराय ॥
तौ मोको याही समय, विवर देहि महि माय ॥ ४४ ॥

प्रश्न॥ वाल्मीकिये ॥ उत्तरकांडे सर्ग॥ ९७ ॥

सर्वांस्तानागतान्दृष्ट्वा सीता काषायवासिनी ॥
अब्रवीत्प्रांजलिर्वाक्यमधोदृष्टिरवाङ्मुखी ॥ ५ ॥
यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिंतये ॥
तथा मे माधवी देवी विवरं दातु मर्हति ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोहा–यों सिय मुख ते कढ़त ही, धरणी भई दरार ॥
इक सिंहासन विवरते, प्रगटो तेज अपार ॥ ४५ ॥
शीश धरे तिहि नाग बहु, ताही क्षण महि आय ॥
सिंहासन पै सीयको, कर गहि लई बिठाय ॥ ४६ ॥
सो सिंहासन वेगही, पुनि गो धरणि मझार ॥
विवर भयो परित मपदि, रही न

जै जै छायो शोर चहुँ, व्योम पताल मझार ॥
सुरगण अति आनंद ह्वै, वरषे सुमन अपार ॥ ४८ ॥
अंतर्द्धान सियाहि लखि, सब नर नारि पुकार ॥
विह्वल बहु विलपात चहुँ, छायो हाहाकार ॥ ४९ ॥
श्रीरघुवीर अधीर अति, कियो भूमिपै कोप ॥
लषण लाव धनु शर अबै, करौं धरणिको लोप ॥ ५० ॥
तब सुर मुनि कर जोरिकै, विनय करी समुझाय ॥
है तव अरधंगी सिया, प्रभु विहाय कहँ जाय ॥ ५१ ॥
सियहि तजी बिन दोष प्रभु, यों तिहि मातु रिसाय ॥
लै गमनी निज धाम पुनि, देहै अवध पठाय ॥ ५२ ॥
अंतर मग प्रभुते प्रथम, गई सिया तव धाम ॥
सदा निरंतरसे इहै, लखि लीजो श्रीराम ॥ ५३ ॥
सुनि रघुवर प्रमुदित भये, देव गये निज धाम ॥
तादिन नैमिष मध्य सब, कीनो निशि विश्राम ॥ ५४ ॥
चौ०-प्रात समय पुनि जुरी समाजा ❀ भयो समस्त विदाको साजा ॥
ताक्षण वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ दै लव कुशही सप्तम गाथा५५॥
पुनि भाषी यह यज्ञ प्रयंता ❀ अबहीं कहैं सुनैं सब संता ॥
अंत कथा वह गुप्तहि राखौ ❀ सहस वर्ष पाछे पुनि भाषो॥५६॥
तब तिन निज गुरु शीष प्रमाना ❀ गायो सुनि सब अचरज माना ॥
ताक्षण शिव ब्रह्मासुर राजा ❀ बोले सकल सु देव समाजा५७॥
दोहा-प्रभु तव आविर्भाव ते, वर्ष सहस चौबीश ॥
प्रथमहि विरचो ग्रंथ यह, वाल्मीकि मुनि ईश ॥ ५८ ॥
सो कुश लवको कांडषट, प्रथम दये ऋषिराज ॥
दीनो सप्तमकांड यह, प्रभु तव सन्मुख आज ॥ ५९ ॥
वेदमात सर्वोपरी, गायत्री जगमूल ॥
चतुर्विंश वर वर्णमय, ब्रह्म अनादि अतूल ॥ ६० ॥
सो चौबीस सुवर्ण जे, वेदमातके आय ॥
सहस सहस अश्लोक प्रति, ते इक इक इहि माय ॥ ६१ ॥
याते उत्तम लोक तिहुँ, याते काव्य न आन ॥
परम प्रमाणिक ग्रंथ यह, है वर वेद समान ॥ ६२ ॥

भानु चंद महि सिंधु ये, जवलग विदित रहाय ॥
वाल्मीकिकृत ग्रंथ यह, तौलग अचल सदाय ॥ ६३ ॥
सुनि सु कांडलै सातहू, श्रीरघुवर हुलसाय ॥
हिय लगाय दिय हनुमतहि, लियो सु शीश चढ़ाय ॥६४॥
ताक्षण देव अदेव सब, अति आनँद उर आन ॥
कही धन्य जै जैति जै, वाल्मीकि भगवान ॥ ६५ ॥
इमि अतिही आनंद युत, नैमिप भयो समाज ॥
पुनि सबही सादर उचित, विदा किये रघुराज ॥ ६६ ॥
इहि विधि पूरण यज्ञ भो, परमसुखी श्रीराम ॥
विदा होय मिलि उचित जन, गये सु निज निज धाम॥६७॥

चौ०-पुनि समाज संयुत श्रीरामा ❀ आये अवध लहो विश्रामा ॥
सहित कुटुम्ब मुदित रघुराजा। करत नीति मय नित सब काजा६८
राम पुत्र कुश लवहि निहारी ❀ रहत सदा पुरलोग सुखारी ॥
सब जननी राखैं समप्यारा ❀ एक सरिस दुहुँ राजकुमारा६९॥
वाल्मीकि वर ग्रन्थ अनूपा ❀ सादर सुनत प्रजा अरु भूपा ॥
धन्य धन्य श्रीराम चरित्रा ❀ पंचम वेद सु परम पवित्रा ७० ॥

प०॥ रामाश्वमेधे ॥ अध्याय ॥ ६६ ॥ श्लोक॥

इत्युक्तौ तौ सुतौ रामचरित्रं बहुपुण्यदम् ॥
आगायतां महाभागौ सुवाक्यपदचित्रितम् ॥ ७ ॥
वीणाया रणितं श्रुत्वा तालमानेन शोभितम् ॥
निखिला परिपत्तत्र शालभंजीव चित्रिता ॥ ८ ॥
हर्षादश्रूणि मुंचंतो रामाद्या भूमिपास्तथा ॥
तद्गानं पंचमो वेदो विहितश्चित्रितैः पदैः ॥ ९ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० अश्वमेधयज्ञांतवर्णनो नाम द्वादशो विभागः१२॥

चौ०-इहि विधि पुनि बहु वर्ष बितीते ❀ पूरित सकल मोद सबहीते ॥
राम मातु वय वृद्ध सुखारी ❀ युत अनंद सुरलोक सिधारी १॥
पुनि क्रम क्रम सब दशरथ रानी ❀ गई देवपुर आनँदसानी ॥
ते सब जाय रहीं पति पासा ❀ सेवैं प्रभुहि समेत हुलासा ॥२॥
सबके सकल यथोचित कर्मा ❀ समय समय प्रति संयुत धर्मा ॥
कीने राम सप्रेम अपारा ❀ लोक वेद कुल

तिहि पाछे बीते कछु वर्षा ❀ अंगिरादि ऋषि आप सहर्षा ॥
भाषी केकय भूप युधाजित ❀ पठये हमहिं नाथ ढिग या हित ४॥

दोहा—कही निकट मम देशके, है नद सिंधु अनूप ॥
तिहि दुहुँ तटवर भूमि तहँ, है गन्धर्व जु भूप ॥ ५ ॥
तीस कोटि वर वीर हैं, युद्ध उद्ध गन्धर्व ॥
तिनहिं जीति प्रभु लीजिये, तासु राज्य शुभ सर्व ॥ ६ ॥

चौ०-तव रघुवर द्रुत भरत बुलाई ❀ कही जाहु वहु ले कटकाई ॥
तिनहिं जीति दुहुँ सुत करि राजा ❀ आवो पुनि इत सहित समाजा ७॥
इमि कहि प्रभु दुहुँ सुतन बुलाये ❀ पुष्कल तक्ष आय शिरनाये ॥
दोउनको अभिषेक सु कीना ❀ प्रमुदित राज राजपद दीना ॥८॥
तब ले भरत अनीक अपारा ❀ ते मुनि गण दुहुँ राजकुमारा ॥
वेगि गये मातुल मिलि साजे ❀ भिरे जाय दोऊ दल गाजे ॥ ९ ॥
सप्तदिवस निशि युद्ध अपारा ❀ भयो भरत तब अस्त्र प्रहारा ॥
सो संवर्त्त अस्त्र ते सारे ❀ तीसकोटि गंधर्व सँहारे ॥ १० ॥
भरत विजय करि नगर निहारे ❀ परम अनूप सुभग सुखकारे ॥
तक्ष शिलापुर तक्षहि दीना ❀ पुष्कलावती पुष्कल कीना ॥११॥
भूरि भूमि वर राज अपारा ❀ दुहुँ पुर साजविशद बहु सारा ॥
पंचवर्ष तहँ भरत रहाये ❀ करि प्रबंध पुनि अवध सिधाये॥१२॥

दोहा—मिलि सबही प्रमुदित रहे, इतै भरत हुलसाय ॥
तिय युत निज निज राज उत, करत सदा दुहुँ भाय ॥१३॥
इत रघुवर पुनि लषणके, दोऊ सुतन बुलाय ॥
करि अभिषेक सुबंधु सँग, दीने सदल पठाय ॥ १४ ॥
विशद कारुपथ देश जो, उत्तर भूमि मझार ॥
तहँ अंगद पुर राजसो, अंगद लहो अपार ॥ १५ ॥
मल्लभूमि मधि सुभग थल, चंद्रकांति पुर नाम ॥
चंद्रकेतु किय राज तहँ, सुभग देश सुखधाम ॥ १६ ॥
इमि दुहुँ सुतन सुराज दै, करि कछु दिन तहँ वास ॥
भरत लषण पुनि मोदयुत, आये रघुवर पास ॥ १७ ॥
इहि विधि राम सुनीति युत, बंधु सुतन दै राज ॥
प्रमुदित कौशल नगर नित, रहत समेत समाज ॥ १८ ॥

चौ०-एक समय इक तापस आयो ❀ श्याम रूप तनु तेज सु छायो ॥
विदित कराय सु आयसु पाई ❀ जाय सु बैठो शीश नवाई ॥१९॥
आदर तासु राम बहु कीना ❀ बोलो तापस परम प्रवीना ॥
कछु विनवौं एकांत मझारी ❀ सुनिय कृपा करि अवधविहारी २०
तब द्रुत लषणहि राम बुलाई ❀ कही द्वार रक्षौ दृढ जाई ॥
जौ लग करैं बात हम दोई ❀ तौ लग इत आवै नहिं कोई ॥२१॥
याक्षण कोउ भूलि ढिग ऐहै ❀ सो ध्रुव दंड प्राण बध पैहै ॥
सुनि लक्ष्मण धनु बाण सजाई ❀ ठाढे भये द्वारपर जाई ॥ २२ ॥
तब रघुवर अरु तापस दोऊ ❀ रहे भवन तीजो नहिं कोऊ ॥
ताक्षण तिहि बूझी रघुनाथा ❀ सुनि भाषी सु जोरियुग हाथा २३
मो कहँ विधि प्रभु पास पठाई ❀ शीश नाय यह विनय कराई ॥
सत्यसिंधु राघव प्रणपालक ❀ जनरक्षक दुर्जन दल घालक २४
एक समय प्रभु करी रजाई ❀ हम सुर लोक लखहिंगे आई ॥
तब मैं बूझो समय प्रमाना ❀ ग्यारह सहस वर्ष प्रण ठाना ॥२५
सो अब अवधि आय नियराई ❀ याते प्रभुको सुरति दिवाई ॥
पुनि जिमि नाथ हृदय रुचि होई ❀ कीजे राज रजायसु सोई ॥२६॥
सुनि बोले रघुवर तिहि पाहीं ❀ हम मिथ्या प्रण नाहिं कराहीं ॥
पै विधि जानत मो हिय बाता ❀ मुहि तजि अवध न और सुहाता २७
याते सदा अवध पुर माहीं ❀ रहैं मुदित हम अनत न जाहीं ॥
जु पै हेतु वश कितहु सिधावैं ❀ तौ पुनि वेगि अयोध्या आवैं २८
पुनि चर अचर अवधपुर वासी ❀ हैं अनन्य मम परम उपासी ॥
एकहु दिवस दरश नहिं पावैं ❀ तौ सबही क्षण क्षण अकुलावैं २९
ये मुहि सकल प्राणते प्यारे ❀ काहू करौं न क्षण भर न्यारे ॥
मैं इनको मेरे सब आहीं ❀ दोऊ हिय दुहुँ सदा बसाहीं ३०
याते हौं निज समय प्रमाना ❀ करौं सत्य सो जो प्रण ठाना ॥
लखि सुरलोक अवध पुनि ऐहौं ❀ पै प्रियजन सबही सँग लैहौं ३१
इमि रघुवीर तापसहि भाषी ❀ चलन चहो सो मन उर राखी ॥
तौ लग दुर्वासा मुनि आये ❀ राम द्वार द्रुत वचन सुनाये ॥३२॥
कहाँ राम हम तिन ढिग जैहैं ❀ वेगि कहा नत शाप सुनैहैं ॥
तब करजोरि लषण शिरनाई ❀ दीन गिरा करि विनय सुनाई ३३
नाथ नाथ कछु मंत्र कराहीं ❀ तहाँ गमन हित ...

दुहुँ पुत्रन इमि राजदै, आये अवध उताल ॥
मिले चरण गहि भ्रात लखि, मुदित भये रघुलाल ॥
पुनि रघुपति निज सुतनको, कीनो वर अभिषेक ॥
सरयू दक्षिण राज कुश, उत्तर लव सविवेक ॥ ६२ ॥
करत राज कुश लव दुहूं, पितु आज्ञा अनुसार ॥
राम सरिस सब कृत्य वर, बल गुण धर्म विचार ॥ ६३॥
इति श्रीरा० र० वि० वि०राज्यविभागवर्णनोनाम त्रयोदशोविभागः ॥

हरिगीतिका छंद ।

श्रीराम दोऊ सुतन दै सब राजभार प्रमोदमें ॥
नित करत विविध विहार लीला सुजन सहित विनोदमें ॥
कपि केसरीसुत सेवहीं सानंद प्रभु पद प्रीतिसे ॥
मुनि रचित रामचरित्र वर्णत सुनत सादर रीतिसे ॥ १ ॥
जबसे लखो वर वाल्मीकि सु ग्रंथ हनुमत प्रेमते ॥
तबसे सहर्ष प्रकर्ष आपहु रचत प्रभु यश नेमते ॥
हनुमाननाटक नाम धरि शुभ ग्रंथ कीनो स्वक्ष जो ॥
मुनि कृतहुते अति रुचिर छंद प्रबंध सह पद लक्षसो ॥ २ ॥
पाषाण पत्रन पै लिखो नखते विशुद्ध सुधारिकै ॥
राखो सुकंठ समस्त रामचरित्र विशद विचारिकै ॥
करिकै सु पूरण एक दिन औसर विलोकि अनंदको ॥
कर जोरि निज कृत ग्रंथ नाटक विदित किय रघुचंदको ॥ ३
कपिकाव्य उत्तम मुनिहुते सुनि राम अति प्रमुदित भये ॥
बहु बार बार सराहि कौशहि पुलकि अंक लगा लये ॥
ऋषि विप्र कवि कोविद सुरासुर श्रवण करि ज्ञाता सबै ॥
भाषी हनूमत सरिस तिहुँपुर कोउ नहिं बुधिवर अबै ॥ ४ ॥
श्रीराम तब हनुमंत सों बोले अतिहि सकुचायकै ॥
हे वीर हम कछु चाहहीं सो देहु हिय हुलसायकै ॥
सुनि दीन ह्वै कपि कही कौन पदार्थ इमि बहु श्रेय है ॥
तनु प्राण हौं अर्पित कियो दृढ बहुरि काह अदेय है ॥ ५ ॥
तबःमुदित ह्वै रघुवीर कह तुव रचित ग्रंथ अपार जो ॥
नाटक उताल दुराय आवो सिंधु नीर मझार सो ॥

इहि देखिकै वर वाल्मीकि प्रभाव लघु जन मानि हैं ॥
सो गाथ है जग पूज्य तिहि लघुता किये बहु हानि हैं ॥ ६ ॥
सुनि ईश आयसु वीर गवने पै कछू मुख दीन भो ॥
लखि राम दिय बरदान जाते मुदित कीश प्रवीन भो ॥
कलिकाल मधि तुव ग्रंथ यह कछु कोउ नृप प्रगटाय है ॥
हनुमाननाटक विदित रैहै श्रम वृथा नहिं जाय है ॥ ७ ॥
सुनि वेगही कपि जाय प्रमुदित सिंधु वन गंभीर में ॥
लिपि उपल डारे सब गिरे बहु मध्य कछु तट नीरमें ॥
द्रुत आय पुनि प्रभु पास सहित हुलास विनय सुनायकै ॥
सेवन लगे नित चरण सादर परम प्रेम बढाय कै ॥ ८ ॥
जहँ होत रामचरित्र तहँ हनुमंत वेगि सिधावहीं ॥
सादर सुनैं कर जोर शिर धरि नैन भरि पुलकावहीं ॥
याते सबै करि नेम आसन प्रथम कपि हित राखहीं ॥
शुचि सविधि प्रेम समर्थ श्रद्धा सहित प्रभु यश भाषहीं ॥ ९ ॥

प्रश्न० ॥ वाल्मीकिटीकायाम् ॥ श्लोक। -

यत्र यत्र रघुनाथकीर्त्तनं तत्र तत्र कृत मस्तकांजलिम् ॥
वाप्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ १ ॥

हरिगीतिका छंद।

कोऊ करै विधि भंग कहुँ अस्थान अरु अभिमान ते ॥
अपराध अनुचितनेक सो सहिजाय नहिं हनुमान ते ॥
तब कीश ठानी देहुँ शिक्षा सबहि यों हिय दृढ गुनी ॥
करि हंक शोर उतंक भाषी शीख जो तिहुँपुर सुनी ॥ १० ॥
जो सुनहिं वर्णहिं रामचरित सदाहिं संयुत नेमसों ॥
सब भाँति सो दुहुँ लोकमें सानंद रहैं क्षेमसों ॥
यह गाथ विशद त्रिलोक पूजित वेद पंचम जानिये ॥
इक एक वर्ण अनंत पातक प्रबल घातक मानिये ॥ ११ ॥
शुचि नेम उत्सव यज्ञ दान सु मान साज सजायकै ॥
श्रद्धा सनेह प्रतीति नीति समेत हिय हुलसायकै ॥
वक्तासु पुस्तक पूजि सविधि समस्त सुनहिं सुनावहीं ॥
यह राम चरित प्रभावते अभिलाष ..
प्रति दिवस वा प्रति मास वा

सर्व्येपिच महादेवी व्यवसायस्तथाग्रतः ॥ ९ ॥
शरानानाविधाश्चापि धनुरायत्तमुत्तमम् ॥
तथायुधाश्चतेसर्वेययुः पुरुषविग्रहाः ॥ १० ॥
वेदा ब्राह्मणरूपेण गायत्री सर्वरक्षिणी ॥
ॐकारोऽथवषट्कारः सर्वेराममनुव्रताः ॥ ११ ॥
तथातामनुगच्छंति ह्यंतःपुरचराःस्त्रियः ॥
सवृद्धबालदासीकाः सवर्षवरकिंकराः ॥ १२ ॥
सांतःपुरश्चभरतः शत्रुघ्नसहितो ययौ ॥
रामं गतमुपागम्य साग्निहोत्रमनुव्रतः ॥ १३ ॥
तेच सर्वे महात्मानः साग्निहोत्राः समागताः ॥
सपुत्रदाराः काकुत्स्थमनुजग्मुर्महामतिम् ॥ १४ ॥
मंत्रिणो भृत्यवर्गाश्च सपुत्रपशुबांधवाः ॥
राघवस्यानुगाः सर्वे हृष्टा विगतकल्मषाः ॥ १५ ॥
ऋक्षवानररक्षांसि जनाश्च पुरवासिनः ॥
आगच्छन्परया भक्त्या पृष्ठतस्तु समाहिताः ॥ १६ ॥
यानि भूतानि नगरेप्यंतर्धानं गतानि च ॥
राघवं तान्यनुययुः स्वर्गाय समुपस्थितम् ॥ १७ ॥
यानि पश्यन्ति काकुत्स्थं स्थावराणि चराणिच ॥
सर्वाणि रामगमने अनुजग्मुर्हि तान्यपि ॥ १८ ॥
नोच्छ्वसत्तु ह्ययोध्यायां सुसूक्ष्ममपि दृश्यते ॥
तिर्यग्योनिगताश्चैव सर्वे राममनुव्रताः ॥ १९ ॥
अध्यर्धयोजनं गत्वा नदीम्पश्चान्मुखाश्रिताम् ॥
शरयूं पुण्यसलिलां ददर्श रघुनंदनः ॥ २० ॥ इत्यादि ॥

चौ०—आये मुदित तहाँ रघुवीरा ❀ संग अपार चराचर भीरा ॥
तातरण ब्रह्मादिक सब देवा ❀ धाये मुदित करनहित सेवा ४१॥
शतकोटिन विमान नभ छाये ❀ विशद विशाल अनूप सुहाये ॥
अस्तुति करहिं देव मुनि वृन्दा ❀ नटहिं अप्सरा परम अनंदा ४२
तब रघुवर सरयू करि मज्जन ❀ सजो शृँगार मुदित लखि सज्जन
पुनि प्रभु कही चराचर जोई ❀ द्रुत स्नान करे सब कोई ४३॥
[illegible]य तिथि निकट विमाना ❀ जासु तेज शत भानु समाना ॥
[illegible] श्रीसंयुत श्रीरामा ❀ शोभित भये सबंधु ललामा ४४

अपर चराचर सरयू न्हाई ॐ ह्वै सु दिव्य शृंगार सज
वैठे सकल विमानन माहीं ॐ तिनहिं देखि सुरवृन्द सिहाहिं
जै जै करें देव समुदाई ॐ दुंदुभि हनें सुमन वरस
नभमंडल ह्वै सकल विमाना ॐ कियो सजन सुरलोक पयान
निरखत जन चहुँ सुगति विचित्रा ॐ देवधाम वहु सुभग पवि
सुरपुर भई भीर अति भारी। चकित होत लखि लखि नर नार
वैठे वर विमान पुरवासी ॐ देव सरिस अति रूप प्रका
पहुँचे वेगि सहित श्रीरामा ॐ यथायोग पाये सब धामा॥
जनकनंदिनीयुत रघुराई ॐ संग अनुज तिहुँ आनँद छ
कीनो वास उच्च वर धामा ॐ देव मुदित लहि दरश ललाम
ब्रह्मादिक सुर विविध अपारा ॐ युत अस्तुति किय वहु सतक
इमि रघुवर निज वचन प्रमाना ॐ लखो देवपुर सब सुखमाना

दोहा–जिते चराचर राम सँग, आये सुरपुर माहिँ ॥
ते विधि हरि हर से सकल, जिन लखि देव सिहाहिँ
सरयू अवध प्रभाव अरु, राम कृपा फल जानि ॥
तिनहिं सराहत देव सव, सुकृत सुभाग्य वखानि ॥
पै जेते चर अचर सब, अवध निवासी जोय ॥
कहा अधिक आनँद इहाँ, यों भाषें सब कोय ॥ ९३ ॥
कव चालिये पुनि अवधमें, सवही जिय उमगाय ॥
कोशलपुर सुख सामुहें, सुरपुर काहु न भाय ॥ ९४ ॥
इमि वहु भापत पै विवश, प्रभु आज्ञा आधीन ॥
वहु सुख साज समेत पुनि, वास देवपुर कीन ॥ ९५ ॥
सीतारामहि नेह युत, नित सेवत सुरवृंद ॥ ९६ ॥
पुरजन परिजन चर अचर, विहरत सव सानंद ॥९६ ॥
देव भक्ति आधीन तहँ, रहे यदपि श्रीराम ॥
पै समाज संयुत सदा, सुमिरत अवध सुधाम ॥ ९७ ॥
इमि रघुवर सुर प्रेममें, मग्न रहे वहु काल ॥
दुष्ट दरन संकट हरन, करन भक्त प्रतिपाल ॥ ९८ ॥
पुनि सब देवन धीर दै, कहि मृदु वचन वुझाय ॥
देव लोकते मुदित ह्वै, गमन कियो रघुराय ॥ ९९ ॥
ऋतु वसंत लखि श्रीरमण, [illegible] पार ॥

पूरब सम सानंद द्रुत, आये अवध मझार ॥ ६० ॥
सिया बंधु तिहुँ मातु पितु, सेवक सखा समाज ॥
पुर परिजन चर अचर सब, युत आये रघुराज ॥ ६१ ॥
तिहूं लोक आनंद भो, छायो जैजै शोर ॥
रसिकविहारी सुख भरे सब अपार चहुँ ओर ॥ ६२ ॥
नितप्रति लीला होत बहु, प्रमुदित सकल समाज ॥
सुख शोभा लखि अवध पुर, अति सिहात सुरराज ॥ ६३॥
सीताराम समाज युत, परमानंद अपार ॥
सदा निरंतर अवधमें, करंत अनेक विहार ॥ ६४ ॥
नित्य राम सिय अवध नित, नित्य नाम गुण रूप ॥
नित्य चरित लीला सकल, नित्य समाज अनूप ॥ ६५ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥स० ॥१२०॥ श्लोक ॥

यावदावर्त्तते चक्रं यावती च वसुंधरा ॥
तावत्त्वमिह लोकस्य स्वामित्वमनुवर्तय ॥ २१ ॥

पुनः पद्मपुराणे ।

रामस्य नाम रूपं च लीलाधाम परात्परम् ॥
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानंदविग्रहम् ॥ २२ ॥

पुनः॥ महारामायणे ॥

श्रीअयोध्यां परित्यज्य पदमेकं न गच्छति ॥
अशोकवाटिकायान्तु रमते सर्व देवहि ॥ २३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा– जे जन ज्ञाता विमल दृढ, राम भक्त मतिवंत ॥
ते यहि भेदहि जानहीं, हरि गुरु कृपा अनंत ॥ ६६ ॥
कल्प कल्पके चरित बहु, कोऊ लहै न अंत ॥
निज निज मति अनुसार कछु, वर्णत सुर मुनि संत ॥ ६७॥
पै निज निज कृत ग्रंथमें, धरत अनूपम युक्ति ॥
सो सुबुद्धिते लखिय तो, एक मिलै सत उक्ति ॥ ६८ ॥
पक्षवाद भ्रम तर्क तजि, अवलोकै सदग्रंथ ॥
अर्थ व्यंग्य ध्वनित मिलै, सबको एकहि पंथ ॥ ६९ ॥
हेरौ पद्मपुराण में, अश्वमेधके अंत ॥
परम प्रमाणिक उक्ति सत, किमि राखी मतिमंत ॥ ७० ॥
युत समाज श्रीरामको, नर सुरलोक विहार ॥
पुनि आगम श्रीअवधमें, कियो युक्ति निरधार ॥ ७१ ॥

गजेंद्रं सीतया साकं गच्छंतं सरितं प्रति ॥
विलोक्य मुदिता लोकाश्चिरं दर्शनलालसाः ॥ २४
अनेकराजकोटीभिः परितः परिवारिभिः ॥
जगाम स सरिच्छ्रेष्ठां पक्षिवृंदसमाकुलाम् ॥ २५
तत्र गत्वा स वैदेह्या रामः कमललोचनः ॥
प्रविवेश जलं पुण्यं वसिष्ठादिभिरन्वितः ॥ २६
अनु प्रविविशुः सर्वे राजानो जनता तथा ॥
तत्पादरजसा पूतं जलं लोकैकवंदितम् ॥ २७ ॥
परस्परं प्रसिंचंतो जलं यंत्रैर्मनोरमैः ॥
सुशोणनयनाः सर्वे हर्षं प्रापुर्मनोधिकम् ॥ २८
स रामः सीतया सार्द्धं चिरं पुण्यजलप्लवे ॥
क्रीडित्वा जलकल्लोलैर्निरगाद्धर्मसंयुतः ॥ २९ ॥
दुकूलवासाः सकिरीटकुंडलः केयूरशोभांचितकंकणान्वि
कंदर्पकोटिश्रियमुद्वहन्नृपो राजा च सर्वैरुपसंस्तुतो च

दोहा—यहि विधि अमित प्रमाण मय, है श्रीरामचरित्र ॥
कछु संदेह न कीजिये, गुणिये ग्रंथ पवित्र ॥ ७२ ॥
जनम१ब्याह२वन३सियहरण४, शोध५युद्ध६अभिषेक
राज८केलि९मख१०सुत११पे, राम चरित्र अनेक ॥ ७
धन्य राम यश कहहिं अरु, श्रवण करें ते धन्य ॥
धन्य धन्य सिय रामके, जे दृढ भक्त अनन्य ॥ ७
राम रसायन ग्रंथ यह, प्रगट भयो सुख...
अवलोकत तुलसायहैं, जे शुनि सुमति ...
गिरा गुरू सिय राम कपि, यह ...
प्रगटायो ग.रि...
मैं मतिमंद
जन्म
...

छंदनाम	इस छंदके चारों चरणों इतने वर्ण सही	इस छंदके चारों चरणमें इतने वर्णोंके अनुमानसे	यह छंद बत्तीस वर्णके हिसाबसे इतने श्लोकका है	यह छंद ग्रंथभरमें सब इतने हैं	यह सब छंद भरके इतनी ग्या ३२ हिसाबसे हैं
मालिनी	६०		३।।।=		
उपजाति	४४		१।=	१	२
शार्दूलवि०	७६		२।।=	१२	१८
श्रुति	५८			७	१६
इंद्रवज्रा	४४			९	२
वसंततिलका	५६			२	३
उपेंद्रवज्रा	४४			२	४
रथोद्धता	४४			७	१०
अनुष्टुप	३२			१	१
कुमारदंडक	१५२			३५७	३५७
घनाक्षरी	१२४			४	१९
दोहा	३६			४०३	१५६२
चौपाई	४८			२४५१	२७५७
सोरठा	३६			१४४७	२१७०
काव्य	५६			२६७	३००
हरिगीतिका	८०			८	१४
सवैया	९६			१२७	३१८
पद्धरी	५२			१३१	३९३
	११२			२८९	४७०
	४०			१	३
				२७९	७०